नीलकंठ पाखी की टोह

[प्रथम भाग]

अतीन बंद्योपाध्याय

अनुवादक
प्रबोधकुमार मजुमदार

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नयी दिल्ली

भूमिका

प्रकृति के साथ सपर्क स्थापित करना ही भारतीय कला की विशेषता है। उस अनुष्टुप छन्द का स्मरण करें—शब्द वाल्मीकि के हैं

> मा निषाद प्रतिष्ठात्वमगम शाश्वती समा।
> यत क्रौंचमिथुनादेकमवधी काममोहितम॥

समग्र सस्कृत साहित्य म प्रकृति के लिए प्रेम और उद्वेग वार-वार घम फिर कर आता रहा है। राम क वनवास पर लका की छाया जब तक नही पडी तब तक निर्वासन की क्लेश यातना उभर कर नहीं आयी, चित्रकूट पहाड, माल्यवती नदी और दडकारण्य की स्निग्धछाया ही पडती रही। स्वर्गारोहण के पथ पर पाडवों का अनुसरण किया था एक कुत्ते ने और यह दिखाई पडा कि पूरा रास्ता तय करने की शक्ति उसी म है। वस्तुत जीवजगत के लिए सस्कृत साहित्य म चरित्र की सृष्टि नही हुई, प्रकृति के साथ आत्मिक योग से ही मनुष्य को वहा पूर्णता प्राप्त हुई है। यहा तक कि गुप्त युग म, जिन दिनों प्राचीन भारत आर्थिक दृष्टि से सबसे उन्नतिशील था, तपोवन का आदश मलिन नहीं हुआ था। कालिदास का काव्य ही उसका श्रेष्ठ प्रमाण है। विना आश्रम के शकुतला की कल्पना

ही नही की जा सकती अलका तक पहुचने से पूव मेघदूत को भारत के विभिन्न प्रातो के पहाड पवत नदी नगर पार करने पडे। मस्कृत काव्य म मृगया की हिंसकता नही पशुपक्षियो के आत्तरव ही सुनाई पडते हैं। कादबरी के कथाकार बाणभटट की दीप्त वन्ना कितनी ही शताब्दियो को पार कर आज भी हृदय को छू लेती है। एक समकालीन बगला उपन्यास की भूमिका लिखते समय इतनी सारी बातें करने की आवश्यकता थोडी ही देर म स्पष्ट हो जायेगी। एक जाति के पास जो अनुभव धरोहर क रूप म रहता है अगल युग के लेखक उसी को पूजी बनाकर अकमर सफलता का सेतु ढूढ लेते हैं इसी प्रकार हृदयावेग विनिमय की राह अविच्छिन्नता प्राप्त कर लेती है। भारतवष की सस्कृति बहुरगी, बहुधर्मी होने हुए भी मूलत एक है क्योकि इस परपरा की अभिव्यक्ति सहस्र आचलिक विभिन्नताओ के बावजूद एक प्रीति सत्र से जुडी हुई है।

भारत गीत वदे मातरम के रचयिता बकिमचद्र चटटोपाध्याय (1838 94) *बगला भाषा क सही अर्थों म प्रथम उपन्यासकार हैं। सन 1865 म दुर्गेशनदिनी* के प्रकाशन के माथ माथ बगला उपन्यास की जययात्रा शुरू हुई। राममोहन राय (1772 1833) और ईश्वरचद्र विद्यासागर (1820 91) के हाथो यथाक्रम इस विद्या का बीजारोपण और अकुरोद्गम हुआ और बकिम तक आते वह फूलने और फलने लगा। मणालिनी (1869) दुर्गेशनन्दिनी सीताराम (1887) देवी चौधुरानी (1884) आनद मठ (1884) की प्रकाशन तिथि के बजाय यदि उनके विषय विन्यास के अनुसार इन उपन्यासो को क्रम बद्ध करें तो देखेंगे कि इनम बकिम का इतिहासकार बोलने लगा है मुसलमानो के आक्रमण से लेकर वारेन हैस्टिंग्ज क समय तक (1772 85) बगाल का इतिहास इसमे अतर्निहित है। मुगल राजपूत द्वद्वकथा है राजसिह (1882)। इतिहास की पृष्ठभूमि मे लिखे इन उपन्यासो म बकिम की मूल प्रेरणा है स्वाधीनता की इच्छा। लेकिन उसके साथ व्यक्तिगत भागवासना का परिमाण भी भाषा की वर्णोज्वल ओजस्विता लेकर प्रकट हुआ है। देश को इट-काठ पत्थर की समष्टि न मानकर साहित्य म उस माता क रूप म उन्होने प्रतिष्ठित किया। जिस प्रकार आनद मठ मे वदेमातरम का गायन होने से पहले विद्रोही नायक भवानद के मुख से सुनते हैं हम लोग कोई दूसरी मा नही मानत— जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। हम लोग कहते हैं जन्मभूमि ही जननी है हम लोगो क न मा है न बाप है न भाई है न पत्नी,

न पुत्र है न घर द्वार, हमारे लिए है तो केवल वही सुजला, सुफला, मलयज शीतला, शस्य श्यामला !" समाज के निकट कलाकार का जो उत्तरदायित्व होता है, बगला उपन्यास के जन्मलग्न मे बकिम ने उस पर तिलक लगा दिया। राममोहन का गद्य विचारक और समाज सुधारक का गद्य था, विद्यासागर का भी वैसा ही था, किंतु उनकी शैली काफी सुसाध्य थी और वे शिक्षादाता तो थे ही। उपन्यास म स्वदेशीपन लाने का श्रेय बकिम को है। उनके विरुद्ध कुछ लोग साप्रदायिकता का अभियोग लगाते हैं लेकिन किसानो के प्रति उनके प्रेम मे हिंदू मुसलमान का भेदभाव नहीं था। साम्य (1879) निबध ग्रथ इसका यथेष्ठ प्रमाण है। अपने उपन्यासो म उन्होंने मुसलमान आक्रमणकारियो के सामने हिंदुओ के पराभव के चित्र अधिक अकित किये हैं इस तथ्य से भी इनकार नही किया जा सकता। बकिम ने बगाली हिंदुओ की उन्नति चाही थी यह सत्य है किंतु अन्य धर्मों के प्रति द्वेष लेकर नही। जीवन के अतिम वर्षों म लिखे एक लेख म उन्होंने यह मनोभाव व्यक्त किया है जब सर्वत्र समानता हो, सभी को आत्मवत समझना ही वष्णव धम है तब हिंदू और मुसलमान में छोटी जाति और बडी जाति कहकर भेद भाव नही करना चाहिए।' अतीन वद्योपाध्याय ने नीलकठ पाखी की टोह' लिखते समय जिस उदार दृष्टिकोण से निम्नवित्त मुसलमान जीवन देखा है उसकी जडें बगला उपन्यास के क्षेत्र म बकिम तक प्रसारित हैं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861 1941) तक हम लोग एक कदम और आगे बढ जाते हैं। सन् 1906 मे प्रकाशित अपने उपन्यास 'नौका डूबी' क प्रसग म परिवर्तन काल की एक उक्ति म उन्होंने स्वय कहा है "इस युग म कहानी का कौतूहल मनोविश्लेषिक हो गया है। घटनाओ का वर्णन गौण हो गया है।' चरित्रो का विश्लेषण कर उन्हें स्वभावधम मे पहुचा देना ही उपन्यासो म रवीन्द्रनाथ का लक्ष्य है। यहा भी उनकी कविसत्ता उनसे अलग नही हुई बल्कि व्यजना के गुण से अभिव्यक्ति को बल ही देती रही। प्रारभिक रचनाए 'बउ ठाकुरानीर हाट' (1883) या राजर्षि (1887) उन दिनो समादृत होने पर भी आज के विचार में दोषमुक्त नहीं हैं। चोखेर बालि (1903) मे वे अपने उपन्यास तथा उसकी भाषा म एक नया मोड ले आये। इसम आख्यान भाग अपेक्षतया कम है। उनका रुझान चरित्र चित्रण की ओर अधिक रहा हैं। महात्मा गाधी ने उनको 'गुरुदेव' की पदवी दी थी और वे अपने कथासाहित्य में एक चिंतक क रूप म सामने आये।

कहीं कहीं जैसे गोरा (1910) या घरे बाहिरे (1916) में स्वदेशी आंदोलन को नवीन राष्ट्रवाद में परिणत करने के विरुद्ध में तर्जनी उठाई गई है। चार अध्याय (1934) राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा किस प्रकार मानवीय प्रवृत्तियों को नियंत्रित करती है उसका मर्मान्तक रूप है। आदर्शवाद के साथ यथार्थ अध्यात्मवाद का द्वंद्व चतुरंग (1916) में फिर तब ही साथ सामाजिक प्रश्न का प्रस्फुटन व दांपत्य जीवन में नीरसता के परिवार में सत्ता के रूप में सन् 1929 में प्रकाशित दो उपन्यास 'शेषेर कविता' और 'योगायोग' को लेकर प्रस्तुत होते हैं। किंतु मूल मंतव्य रवींद्रनाथ के उपन्यासों में प्रतिभा नहीं कविता के कवित्व विकास का पक्ष है।

लेकिन बंगाली जीवन का सारा का सारा रूप रवींद्रनाथ में चित्रित नहीं है। समाज में पतिता के बारे में सर्वप्रथम शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय (1876-1938) ने चार खंडों में प्रकाशित 'श्रीकांत' उपन्यास में लिखा (1917-33) स्वयं रवींद्रनाथ की भाषा में 'शरत् की दृष्टि ने बंगालियों के हृदय में डुबकी लगायी है।' बंगालियों की उस कोमलता का निदान शील में बसन्त दिखाया है शरत्चंद्र में चरमोत्कर्ष है। समाज में अनाचार होने पर भी इसमें अच्छे संस्कारों की कमी नहीं अतः उनकी रचनाओं में विवेकवान पात्रों की बहुतायत है उनका सामाजिक पक्ष भी नजर-अंदाज नहीं हो पाता। उपन्यासों में शरत्चंद्र का मुख्य अवलंबन है प्रेम उन्होंने केवल रूमानी कहानी या गार्हस्थिक जीवन की जटिल समस्याओं को लेकर दत्ता (1918) या देना पावना (1923) का वर्णन ही नहीं किया वरन् पतिहीना या यहां तक कि सधवा नारी की परपुरुष में आसक्ति जैसे विषय को भी उन्होंने ममता से रूपान्तरित किया है 'पल्ली समाज (1916) और 'गृहदाह (1910) में। हालात के दबाव से अक्सर मजबूर होने के कारण पेशा अपनाने वाली को पतिता या कलुषिता कहना उचित नहीं है। बंगालियों के मन में शरतचंद्र ने यह गहरी अनुभूति और करुणा जगा दी। अपनी तिरपनवीं वर्षगांठ के अवसर पर दिये भाषण में उनका मूल्यबोध स्पष्ट है त्रुटि विच्युति, अपराध, अधर्म ही मनुष्य का सब कुछ नहीं। उसके बीच की असली वस्तु है मनुष्य —जिसे आत्मा भी कहा जा सकता है—वह उसके सारे अभाव, सारी आपत्तियों से बढ़कर है।

किंतु रवींद्रनाथ की असामान्य मेधा और शरतचद्र के भावप्रवण लेखन से प्रथम महायुद्धोत्तर लेखक वग का मन पूरी तरह सतुष्ट नही हुआ। मुक्त यौनाचार और स्वच्छद जीवन धारा से पूण उनकी रचनाए 'कल्लोल (1923 29) पत्रिका म प्रकाशित हुइ और व कल्लोल गुट नाम स विख्यात हुए। उनसे सबद्ध एक लेखक शलजानद मुखोपाध्याय (1900) न कहानियो म अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की। उन्होंने हा 'सोलह आना (1925) या 'शहर थेके दूरे' (1947) आदि उपन्यासो म आचलिकता का पुट लाकर एक नये पथ का सकेत दिया। ताराशकर बद्योपाध्याय (1898 1972) ने इसी शैली को रूपायित किया है अपनी 'धात्री देवता (1939) 'कालिंदी (1940) 'गण देवता—पचग्राम (1942-43) 'हासुलि बाकेर उपकथा' (1947) आदि विशिष्ट रचनाओ मे। दिगतविस्तृत राढ अचल के सौंदय-स्थल मयूराक्षी की आकस्मिक बाढ, घेंटू के गीत, नवान्न म नगाडो की ध्वनि, डकतो के सकत जमींदारी ठाठ-बाट—यत्र उद्योग के सस्पश म आयी ग्रामीण अथ-व्यवस्था किस प्रकार पुनव्यवस्थित हो रही है इसकी अतरग झाकी इन उपन्यासो म है। इसी शैली में पद्मा नदीर माझी (1936) में पूर्वी बगाल के जनजीवन की सुगठित कथा को मानिक बद्योपाध्याय (1908 56) न वण्य विषय बनाया यद्यपि ताराशकर से उनका कथावस्तु भिन्न है शहर के मध्यवग और निम्नवग के लोगों की समस्याओ को ही उन्होंने मुखरित किया है। अरण्य प्रातर का सौंदय अवलोकन करना हो तो जाना पडगा विभूतिभूषण बद्योपाध्याय (1894 1957) के पास। पथेर पाचाली (1929) 'अपराजित' (1932) 'आरण्यक (1938) आदि उपन्यास हम अनुपम प्राकृतिक सौंदय के सम्मुख खडा कर देते हैं। वस्तुत ताराशकर के 'धात्री दवता के अत म बुआ से नायक शिवनाथ का श्रद्धा निवेदन और अपराजित' के अत म विभूतिभूषण के उद्धरण निवेदन से साफ-साफ समझा जा सकता है कि बगाली जीवन पर रवींद्रनाथ का प्रभाव कितना गहरा और स्पष्ट है—प्रादेशिक को सावजनिक और क्षणिक को चिरतन बनाने के अभिप्राय से उनकी विशेषता स्वत स्पष्ट है।

'जीव की धात्री जो धरित्री हैं जाति म वे ही तो देश हैं मनुष्य के निकट के वे ही वास्तु हैं उसी वास्तु की मूर्तिमता हो तुम। तुम ही ने मुझे वास्तु से परिचित कराया है और उसी से मैंने देश को पहचाना है। आशीर्वाद दो,

धरती को पहचानने के बाद तुम्हारी पहचान भी पूरी कर सकू।'

—'धात्री देवता —ताराशकर।

तीस, पचास सौ हजार, तीन हजार वष बीत जायेंगे। उस समय भी ऐसी जिहरी ऐसी ही बैसाखा आधी आयगी तीन हजार वप बाद के बशाख के अत म। उस समय भी इसी तरह पछी चहवेंग इसी तरह चाद निकलेगा। नि शब्द शारदीय दोपहर मे वनपथ पर क्रीडारत उस नौ साल के बालक के मन की विचित्र अनुभूतियो का इतिहास कहा लिखा रहेगा ?

—'अपराजित —विभूतिभूपण।

ताराशकर विभूतिभूपण मानिक—आधुनिक बगाली उपन्यासकारो की पथ प्रदशक के रूप म अतीन बद्योपाध्याय साभार स्मरण करते ह। व्यक्तिगत रूप स उनक प्रिय लेखक है बकिमचद्र और अवनीद्रनाथ ठाकुर (1871 1951)—जो कि रवीद्रनाथ के भतीजे थ और उपन्यासकार न होने पर भी कथासाहित्य म जिनका सहज सुरीला लहजा बगला भाषा म लासानी है। उपन्यास लिखना अतीन के लिए आत्मकथन के समान ही है, नालकठ पाखी की टोह के माध्यम से अपनी स्वीकारोक्ति म उन्होने अपने को पेश करना चाहा है। हालाकि लिखा वही है जो कला माध्यम से लिखा जा सकता है। वास्तव म उस मे कल्पना की रगीनी का विन्यास है। रचना के देशकाल को ध्यान म रखना जरूरी है—घटनाओ का प्रमुख केंद्र वही है। ढाका जिले क राइनादी गाव म सन 1930 म अतीन बद्योपाध्याय का जन्म हुआ। पूरा नाम है अतीद्र शेखर बद्योपाध्याय। पूर्वी बगाल के जिस वातावरण म नीलकठ पाखिर खोजे की कहानी गढी गयी है उसके साथ उनके किशोर वय की स्मृति जुडी हुई है। वह पश्चिम बगाल के बहरामपुर जिले म आय और वही स प्राइवट मट्रिक पास किया। वह वाणिज्य के छात्र थ, कुछ दिना तक पत्रिका के दफ्तर म भी काम करते रहे। फिर 1953 म जहाज मे शिक्षार्थी क रूप मे लगभग साल भर विभिन्न बदरगाहो का अनुभव सचित कर बगला साहित्य के क्षेत्र मे नयी प्रतिभा क रूप म उभर कर सामन आय। मानिक बद्योपाध्याय क नाम पर मानिक स्मृति पुरस्कार से सम्मानित हो सन् 1960 म समुद्र मानुप' उपन्यास प्रकाशित होते ही उनको प्रतिष्ठा मिल गयी। अब तक उन्होने बाइस उपन्यास लिखे है। विभिन्नाकार म प्रकाशित इन सारी कलाकृतियो मे जो मूल स्वर निकलता है वह उनकी उक्ति के अनुसार नीलकठ पाखी की टोह म ही मिल जायगा। 1961

स 1971 तक—दस वर्षों मे आपने इतना लिखा है।

'नीलकठ पाखी की टोह' मे कौन है और जा है वह किसलिये ? यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि उपन्यास म ग्रथित हान स पूव शुरू के अठारह परिच्छेद कहानियो के रूप म लिखे गय थे। इसीलिए य परिच्छेद स्वतत्र होत हुए भी इनके कथानक म एक तारतम्य है।। सप्रति वे एक प्रयोगात्मक बगला कहानियो की पत्रिका के अन्यतम सपादक हैं। नीलकठ पाखी की टोह एक अकेले चरित्र या उसस सबधित घटनावली की खोज नही बल्कि बहुकाणीय जिज्ञासा का मिश्रफल है। कौतूहल मिटाने के लिए हालाकि पहले ही अध्याय म स्पष्ट निर्देश हैं। वाकई अब बडे मालिक दोना हाथ ऊपर उठाय तालियाँ बजाने लगे मानो आकाश के किसी छोर म उनके पाले हुए हजार नीलकठ पाखी हो गये हैं। तालियाँ बजाकर उनको लौटान की कोशिश कर रहे हैं। देखने स लगता है कि मध्ययुगीन कोई नाइट रात क अधेरे म पाप की तलाश मे भटक रहा है।" बड मालिक यानी मणीद्रनाथ नीलकठ पाखी के प्रतीक म जिसे ढूढत फिर रहे हैं वह पलिन है—जिसके साथ भेंट हान की सभावना अब नही रही वे पहुच के बाहर चली गयी हैं फिर भी उसी के आकपण स मणींद्रनाथ हाथी की पीठ पर अचानक ही लापता हो जात हैं पड की शाखो से अपने को बाध रखते हैं, नदी मे लक्ष्य भूल जाते हैं। व्यक्ति विशेष न होकर पलिन अब कल्पसत्य है अप्राप्य किंतु अतिवाछित अछूती लेकिन मानस नेत्रा म इतनी ही स्पष्ट कि भटकाव स थके मणींद्रनाथ उनको खिडकिया के बाहर हेमलाक वक्ष क नीचे खडी पाते हैं इतनी मोहिनी कि अभिव्यक्ति की क्षमता खोकर कविता की पक्तियो मे मणीद्रनाथ आवग की गूज ढूढ लेत

स्टिल स्टिल टू हियर हर टेंडर टेक्न ब्रीथ
एड टु लिव एवर —आर एल्स स्वून टू डय।

तो फिर 'नीलकठ पाखी की टोह' एक रोमाटिक अन्वेषण है एक ऐस सौंदय की तलाश है जो कायाहीन होने पर भी आशा की सीमा स परे नही। मध्ययुगीन वष्णव साहित्य से जो हृदयावेग बगला साहित्य मे सचारित है उसी की चचलता

धरती को पहचानने के बाद तुम्हारी पहचान भी पूरी कर सकूं।"
—'धात्री देवता'—ताराशंकर।

'तीस पचास सौ हजार, तीन हजार वर्ष बीत जायेंगे। उस समय भी ऐसी जिहरी, ऐसा ही बसाखी आंधी आयेगी तीन हजार वर्ष बाद के बशाख के अंत में। उस समय भी इसी तरह पंछी चहकेंगे इसी तरह चांद निकलेगा। निःशब्द शारदीय दोपहर में वनपथ पर क्रीडारत उस नौ साल के बालक के मन की विचित्र अनुभूतियों का इतिहास कहां लिखा रहेगा ?
— अपराजित —विभूतिभूषण।

ताराशंकर विभूतिभूषण, मानिक—आधुनिक बंगाली उपन्यासकारों को पथ प्रदर्शक के रूप में अतीन बंद्योपाध्याय साभार स्मरण करते हैं। व्यक्तिगत रूप से उनके प्रिय लेखक हैं बंकिमचंद्र और अवनींद्रनाथ ठाकुर (1871 1951)—जो कि रवींद्रनाथ के भतीजे थे और उपन्यासकार न होने पर भी कथासाहित्य में जिनका सहज सुरीला लहजा बंगला भाषा में लासानी है। उपन्यास लिखना अतीन के लिए आत्मकथन के समान ही है नीलकंठ पाखी की टोह के माध्यम से अपनी स्वीकारोक्ति में उन्होंने अपने को पेश करना चाहा है। हालांकि लिखा वही है जो कला माध्यम से लिखा जा सकता है। वास्तव में उसमें कल्पना की रंगीनी का विन्यास है। रचना के देशकाल को ध्यान में रखना जरूरी है—घटनाओं का प्रमुख केंद्र वही है। ढाका जिले के राइनादी गांव में सन् 1930 में अतीन बंद्योपाध्याय का जन्म हुआ। पूरा नाम है अतींद्र शेखर बंद्योपाध्याय। पूर्वी बंगाल के जिस वातावरण में नीलकंठ पाखिर खोंजे की कहानी गढी गयी है उसके साथ उनके किशोर वय की स्मृति जुडी हुई है। वह पश्चिम बंगाल के बहरामपुर जिले में आये और वहीं से प्राइवेट मैट्रिक पास किया। वह वाणिज्य के छात्र थे, कुछ दिनों तक पत्रिका के दफ्तर में भी काम करते रहे। फिर 1953 में जहाज में शिक्षार्थी के रूप में लगभग साल भर विभिन्न बंदरगाहों का अनुभव संचित कर बंगला साहित्य के क्षेत्र में नयी प्रतिभा के रूप में उभर कर सामने आये। मानिक बंद्योपाध्याय के नाम पर मानिक स्मृति पुरस्कार से सम्मानित हो सन् 1960 में 'समुद्र मानुष' उपन्यास प्रकाशित होते ही उनको प्रतिष्ठा मिल गयी। अब तक उन्होंने बाइस उपन्यास लिखे हैं। विभिन्नाकार में प्रकाशित इन सारी कलाकृतियों में जो मूल स्वर निकलता है वह उनकी उक्ति के अनुसार 'नीलकंठ पाखी की टोह' में ही मिल जायगा। 1961

स 1971 तक—दस वर्षों में आपने इतना लिखा है।

नीलकठ पाखी की टोह' में कौन है और जो है वह किसलिये ? यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि उपन्यास म ग्रथित होने से पूर्व शुरू के अठारह परिच्छेद कहानियों के रूप म लिखे गये थे। इसीलिए ये परिच्छेद स्वतत्र होने हुए भी इनके कथानक म एक तारतम्य है।। सप्रति व एक प्रयोगात्मक बगला कहानियों की पत्रिका के अन्यतम सपादक हैं। नीलकठ पाखी की टोह एक अकेले चरित्र या उससे सबधित घटनावली की खोज नहीं बल्कि बहुकोणीय जिज्ञासा का मिश्रफल है। कौतूहल मिटाने के लिए हालांकि पहले ही अध्याय म स्पष्ट निर्देश हैं। बाबई अब बड़े मालिक दोनों हाथ ऊपर उठाये तालियां बजाने लगे मानो आकाश के किसी छोर म उनके पाले हुए हजार नीलकठ पाखी हो गये हैं। तालियाँ बजाकर उनको लौटाने की कोशिश कर रहे हैं। देखने से लगता है कि मध्ययुगीन कोई नाइट रात के अधेरे म पाप की तलाश म भटक रहा है।' बड़े मालिक यानी मणीद्रनाथ नीलकठ पाखी के प्रतीक म जिसे ढूढते फिर रहे हैं वह पलिन है—जिसके साथ भेंट होने की सभावना अब नहीं रही व पहुच के बाहर चली गयी हैं फिर भी उसी के आकर्षण से मणीद्रनाथ हाथी की पीठ पर अचानक ही लापता हो जाते हैं पेड़ की शाखों से अपने को बाध रखते हैं नदी में लक्ष्य भूल जाते हैं। व्यक्ति विशेष न होकर पलिन अब कल्पसत्य है अप्राप्य किंतु अनिवार्छित अछूती लेकिन मानस नेत्रों म इतनी ही स्पष्ट कि भटकाव से थके मणीद्रनाथ उनको खिडकियों के बाहर हेमलाक वृक्ष के नीचे खडी पाते हैं इतनी मोहिनी कि अभिव्यक्ति की क्षमता खोकर कविता की पक्तियों म मणीद्रनाथ आवेग की गूज ढूढ लेते

स्टिल, स्टिल टू हियर हर टेंडर टेकन ब्रीथ
एंड टू लिव एवर —आर एल्स स्वून टू डेथ।

तो फिर 'नीलकठ पाखी की टोह एक रोमांटिक अन्वेषण है, एक ऐसे सौंदर्य की तलाश है जो कायाहीन होने पर भी आशा की सीमा से परे नहीं। ... वैष्णव साहित्य से जो हृदयावेग बगला साहित्य म सचारित है उसी की ...

मणीद्रनाथ के लहू म हम पाते हैं। ज्ञानदास की भाषा मे

अमिया सागरे सिनान करिते
सकलि गरल भेल ।।
सखि, कि मोर करमे लेखि ।

(अमृत के सागर मे स्नान करते हुए सभी विषमय हो गया। सखि मेरे भाग्य म क्या लिखा है।)

मणीद्रनाथ की अभिलाषा निर्बाध है वे विक्षिप्त हैं। लेकिन 'नीलकठ पाखी की टोह' के अन्याय चरित्र भी निर्दोष नहीं। शुद्ध वासना के खिचाव से उनकी मनोवृत्ति का अनुभव किया जा सकता है। स्त्री चरित्र म जोटन शादीशुदा होने पर भी तृप्ति नही पाती, मालती का वधन्य दुस्सह है। कामना के साथ विवेक का द्वद्व यही प्रखर है। जोटन अपने को धिक्कारती है—'इबलिस का जिस्म—बस खाऊ खाऊ।' मालती का प्रेम गुप्त रूप से बाल सखा रजित की ओर प्रवाहित होता है लेकिन अत म उसके साथ जाने का सौभाग्य पाने पर भी उससे पूव अपहृत हो पाशविक भूख का शिकार बन जाती है। और एक नारी भी अपने आवेश अस्वीकृत होते पाती है—मझली बीवी के साथ फेलू के मिलन की सभावना नही रह जाती। फेलू अपने यौवन की सामर्थ्य खोकर समझ जाता है कि अन्नू बीवी को रखने की शक्ति उसमे नही रही। सस्कार और भावावेश के इस घात प्रतिघात की प्रतिक्रिया स वृद्ध महेंद्रनाथ को भी क्षत विक्षत होते देखते हैं। चिता पर चढते समय भी व शका करते हैं कि पुत्र मणीद्रनाथ उनकी भत्सना करेगा। 'नीलकठ पाखी की टोह' के लेखक ने जिस पशन की रक्ताभा को अकित करना चाहा है उसकी सबसे काव्यमय अभिव्यक्ति शायद पिता के प्रति उद्दड पुत्र क इस तिरस्कार म है। आप वही व्यक्ति हैं जिन्होंने मेरी आत्मा के निकट रहने वाली युवती पलिन को, जिसकी नाक लबी और आखें नीली हैं दूर हटा दिया है। समुद्र मैंने देखा नहीं किंतु वसत का आकाश देखा है आकाश के नीचे सुनहरे रेत वाली नदी का जल देखा है—जल म उसका मुखडा तिरता है। आकाश का कोई बडा नक्षत्र जब जल म प्रतिबिंब डालता है तो लगता है वही लडकी कितने दूर देश से पुकार

रही है मनी, चलोग नही। विला पाडी के बगल म बठकर हम लोग सातावलाज के बारे म बातें करेंगे। चलोगे नही। और देखा है सर्दियों के मैदान मे घास पर ओम की बूदें। ओस की बूद जैसा वह पवित्र मुखडा आपने छीन लिया है बाबा।"

पलिनको ग्रहण करने में महेंद्रनाथ का धम बाधक बना। और यही धम बागला देश के दो बहुत्तम सप्रदाय—हिंदू और मुसलमान के बीच दीवार की नाईं खडा हो गया था। हालांकि सदा से नही। ग्रथ के आरभ में ढाका के दगे की खबर सुनने के बाद भी आबिद अली सरीखा हिंदू विरोधी नहीं बन पाता "मुसलमान जिबह होने पर वह जाने कसे जोश म आ जाता है—लेकिन बडे मालिक और बगल के गाव के अय अनेक हिंदुओ की उदारता पीढियो से आता आत्मीय सबध सारे दुख और उत्तेजना को धो पोछ देते हैं। शम्सुद्दीन न जब पहने चुनाव मे मुस्लिम लीग का पक्ष लिया तो उनकी बीवी अलीजान ने प्रश्न किया—"वजह क्या है?" लेकिन विद्वेष का बीज गहराई में था आर्थिक विषमता मे। कौवा खदेडते वक्त फेलू के मन की बात लेखक बता रहे हैं 'भीतर ही भीतर इन सारे सुखी हिंदू परिवारो के विरुद्ध उसका आक्रोश भयकर रूप म उसको पीडित करने पर शामू मानो मौला मौलवियो की तरह कुछ इस्लामी की बातें सुना सकता है। शामू की लीग पार्टी जिदाबाद—हमारे लिए एक देश चाहिए। साप्रदायिक कट्टरता और कुछ निहित स्वार्थ के निर्देशन स खुलकर सघष मे आने मे इसके बाद देर नहीं लगती।' आनदमयी के मकान के बगल की जमीन पर मुसलमान किसान-हलवाहे लोग नमाज पढेंगे। वह मसजिद नहीं है। ढहा हुआ प्राचीन कोई गढ है जो कि ईशा खान का हो सकता है, चाद राय केदार राय का बनाया हुआ भी हो सकता है। अब उस ढहे गढ म नमाज पढाने के लिए लोगो को उकसाया जा रहा है। आज सवेरे ऐसी ही इत्तला कचहरीबाडी मे देने आये थे—मुसलमान लोग खास तौर से बाजार के मौलवी साहब जिनके दो बडे-बडे सूत के कारोबार हैं जिनके पास चाकी पर धान की लबी जमीन है खास मे हजार बीघे है, वही आदमी बाबुओ के पीछे पड गया है। यह जो देवी है, शायद इसी देवी की महिमा से सब कुछ बिला जायेगा। किसकी मजाल जो देवी के विरुद्ध खडा हो जाय। मानो हाथ का पना खडग अब उस महिषासुर का वध करने को उद्यत हो। इसी प्रकार शास्त्र से शस्त्र आता, पारस्परिक हत्या मे लोग उन्मादी बन जाते, लेकिन फिर भी मनुष्यत्व के

लक्षण कभी विलुप्त नहीं होते। जफर द्वारा मालती के अपहरण का वाकिदपुर मुसलमानो ने इकट्ठे एतराजी का बनाया, मालती की ध्वस्त देह का जोगन ने उद्धार किया और जोटन ही के पास कुछ दिनो के निरपेक्ष के अन्त की ओर रजिन मालती को सौंप आने के बारे म सोचता है। इसी के साथ-साथ दूसरा एक प्रश्न उभरता है—आक्रोश का निशाना कौन है जफर या सतोष दरोगा जो देश प्रेमी को देखते ही हथकडी डाल देने की बात सोचता है ? विशेष कोई कम हकीकत नहीं लेकिन उद्धार का पथ भी बराबर खुला ही था आजाद बगला देश के निर्माण म जिसका परिचय हम मिलता है। यह कोई आश्चर्य नही कि नीलकठ पाखी की टोह उपन्यास बगबधु शख मुजीबुरहमान को निवेदित है क्योकि राष्ट्र के कर्णधार के रूप म उन्होने ही अपने देशवासियो को युगातर के तोरण-द्वार तक पहुचाया है।

नीलकठ पाखी की टोह उपन्यास म सामाजिक और व्यक्तिगत घात प्रतिघात मे से आगे बढते चरित्रो के जुलूस म हम अन्य एक सत्ता की उपस्थिति निरतर लक्ष्य करते हैं—भारतीय साहित्य के साथ जिसका सयोग अति निकट है और वह है—प्रकृति। कहानी भाग के प्रारभ म नवजातक की वार्ता लेकर ईशम शेख के आगमन स ही इसकी शुरुआत है उसको देखकर लगता है कि तरबूज के खेत से या सुनहरे रेतवाली नदी की चाकी स सिर्फ ऐसी ही खबर सुनाने के लिए वह उठ आया है। बाद म भाषा के विस्तार मे कितने ही विचित्र दृश्य जुड जाते हैं तरबूज का खेत गुआफल, शीतलक्ष्या का जल और बस उसी के साथ आकाशी प्रवाह की तुलना हो सकती है चिरयाचुनमुन की चहचह और पशुओ का समावेश भीड लगाने लगते हैं। एक स्वतत्र जगत प्राणियो के अधिकार मे। यहा तक कि मछलिया जो साधारणतया भोजन की तालिका म होती हैं जलाली की मृत्यु के बाद वे भी मानो अपना अधिकार जताने लगती है। मच्छ के शरीर पर ताजिदगी कितने ही मनुष्यो के कौंच या भाले के चिह्न हैं। मच्छ की देह पर कौंच के छोटे छोटे फाक। वही मच्छ अब उल्लास और जोश से झील मे जल भेद कर आसमान की ओर उछल पडा। इसके बाद किनारे खडे लोग जो अकेली पतीली बहती जा रही देखकर हाय हाय कर रहे थे उन लोगो ने देखा झील के जल मे ऐसा एक मच्छ नही हजारो लाखो मछलिया उस प्राचीन झील के जल को भेद कर आसमान की ओर जा रही हैं और उतर आ रही हैं। भय और विस्मय से लोगो

ने देखा अनत जलराशि के भीतर बडे-बडे राक्षसीय गजार, मच्छ घन्ियाल जैसे पानी पर उचक आय हैं। वे मानो सभी को चुपके से चेतावनी दे रहे हो—अरे भाइयो देखो, ेखो हम लोगो का तमाशा दखो हम जल के जीव हैं हमारा सारा सुख जल मे है।'

खास अतर नही, पशुजगत और मनुष्यजगत पडोसियो की तरह पारस्परिक सबध का विनिमय करते हैं। सोना पुत्र का जब जन्म हुआ उस समय खेता म कछुओ का अडा देने का समय था और इससे दूरी अधिक कही नही वन्ती। आरभ म ही मैंने बताया था, भारतीय साहित्य की विशेषता, प्रकृति के साथ मित्रता स्थापित करने मे है। बक्मि से लेकर विभूतिभूषण तक बगला उपन्यास की धारा पर हम ऐसी एक कहानी तक जा पहुचे जिसका रूमानी उच्छवास घर टूटने का हाहाकार भूख मिटाने का सग्राम साम्प्रदायिक सकीर्णता मानवीय मूल्यबोध ऐसे एक प्रतीक द्वारा वर्णित हुए हैं जो शाखानिर्भर होते हुए भी नभोचारी गति से स्वग और मय के केंद्रबिंदु म अपने नाम का प्रसार करते हैं धूलिकण और तारागण के युगपत आकषण से वही है नीलकठ पाखी।

—निखिलेश गुह

सुनहरे रेत वाली नदी की चाकी पर धूप ढलने लगी है। ईशम शेख मड़ैया के नीचे बठा तमाखू पी रहा है। हेमत की तिजहरी। नदी के कछार से हाकर गाव के लाग हाट से सौदा लेकर लौट रहे हैं। दूर-दूर तक सारे गाव खेत दिखाई पड रहे हैं। तरबूज की बेल इस समय गगनमुखी है। तमाखू पीते हुए ईशम सब कुछ देख रहा था। हवा मे कुछ फतिंग उड रहे हैं। खेतो म सुनहरे धान की गध। अगहन के इन अतिम दिना मे झील-नहरो से पानी उतरने लगा है। उतर कर नदी म आ रहा है। पानी उतरने का यह शब्द उसके काना म आ रहा है। सूरज खेतों के उस पार उतर गया है। रेतीली चाकी पर बरगद की छाह आ पड़ी है। बगल म कुछ गरम जमीन। ठड पडने लगी है। मछलिया अब सर्दी के कारण पानी म खास कोई हरकत नही कर रही हैं। सिफ किसी किसी सोनकीडवा की आवाज। वे धान-खेत पर मडरा रहे है और कुछ पछिया की छाया जल मे। दक्खिनी मदान से वे बम धीरे धीरे आने ही लग हैं। एसे ही समय कुछ लोगा का एक दल गाव की सडक स उतर कर इधर आ रहा है—जाने वे आपस म क्या बातचीत कर रहे हैं। मानो एक मानुस इस दुनिया म जन्म ल रहा है ऐसा ही एक समाचार। ठाकुर बाडी के घनकत्ता के अगहन की ढलती बेला म बेटा हुआ है।

सुनते ही ईशम शेख न छाजन की खपच्ची से नारियला लटका दी। चिलम उलट दी। फिर घुटना के बल बाहर निकल आया। ऊपर आकाश नीचे तरबूज का यह खेत और सामने सुनहरे रेत वाली नदी। जल, बिल्लौर सा स्वच्छ। ईशम इस छाह घिरती पृथ्वी पर पश्चिम की ओर मुह कर खडा हो गया। बोला सुभान अल्लाह। फिर वहा ठहरा नही। नदी का कछार पार कर वह सडक स चलन

लगा। धनकर्त्ता के बेटा हुआ है—कितना ही आनद, कितनी खुशी। सभी कुछ खुदा की मेहरबानी है। सडक के दोनो तरफ बस धान और धान—जाने कितनी दूर तक धान के ये खेत चले गये हैं। ईशम ने आखें उठाकर सब कुछ देखा। क्षितिज पर के इन विचित्र रगो को निहारते हुये उसके मन म आया—अगल-बगल के सारे गाव—उसके कितने जाने पहचाने कितने ही दिनो के कुटुब हैं सब—नीचे नहर मछलिया पानी म फुदक रही हैं। उसने सडक के एक किनारे अगोछा बिछा लिया। नीचे घास है घास पर गिरी ओस से अगोछा भीगता जा रहा है। उसने इस ओर कोई ध्यान नही दिया। दोजानू होकर वह बैठ गया। नहर का पानी लेकर उसने वजू किया। दाढी पर उसने कई बार हाथ फेरे। जमीन पर कई बार सिर टेकने के बाद आसमान देखते देखते जाने कैसा विभोर हो गया। अगहन के झिल-झिल ईशम नमाज पढ रहा है। सूर्य अस्ताचल को जा रहा है इसलिये उसकी परछाही दूर तक चली गई है। नहर का जल काप रहा है। उसकी छाया भी जल म काप रही है। कुछ पीले से फतिंगे सिर के ऊपर उड रहे हैं। सूरज के सुनहरे रग म उसका चेहरा अनूठा लाल सा दीख रहा था। मानो किसी फरिश्ते की आभा इस इसान के मुख पर आ पडी हो। नमाज से फारिग होकर वह चलने लगा और रास्ते मे जिससे भी मुलाकात हो गई उसी से कहा अगहन के आखिरी बेले म धनकर्त्ता के बेटा हुआ है। उसको देखकर लगता है कि तरबूज के खेत से या सुनहरे रेत वाली नदी की चाकी से सिर्फ ऐसी ही एक खबर सबको सुनाने के लिये वह उठ आया है। सडक पार कर वह सुपारी-बाग म गया। बैठक म लोगो की भीड। बाहर भी कई लोग खडे इतजार कर रहे है। उसने लगभग सभी को आदाब अर्ज किया और भीतर दाखिल हो अपनी जगह पर बैठ चिलम भरने लगा।

सुनहरे रेत वाली नदी म सूरज डूब रहा है। कछुवे धानगाछ के अधेरे म दुबके पडे है। इन कछुओ को जरा नरम मिट्टी मिलते ही ये किनारे उठकर अडे देने लग जाएग। टोडरबाग के मदार म बहुत सारे सियार फेंकरने लगे। एकाध जुगनू दलदल के किनारे दिपदिपाने लगे। जुगनू अधेरे म उन फलाकर उडने लग गये। पछियो का आखिरी जत्था गाव के ऊपर से उड गया। ये सारे गाव खेत जन शून्य और शात हैं। अधेरे म भी पता चल जाता है कि सिर के ऊपर से पछी उडे जा रहे हैं। वह जानता है कि वे कहा जाते हैं। वे हसनपीर की दरगाह जाते हैं।

पीर की दरगाह मे वे रात बिताते हैं। सर्दी का पहाड उतर आने पर व दक्खिन की झील म चले जायेंगे। ईशम अब उठ खडा हुआ।

ईशम ने गुहारा नानी जी मैं आ गया।

दरवाजे से बाहर निकल छोटे मालिक आकर खडे हो गये। —क्यो रे ईशम आ गया तू ?

—जी आ गया। धनकत्ता का सदेशा भजोगे न ? भेजना हो ता मुझे भेज दो। सदेश दे आऊ। एक तहमद वसूलूगा।

छोटे मालिक ने कहा तो फिर चला जा। धनदादा मे कहना, कल ही रवाना हा जायें। चिता की कोई बात नही। धनवहू खरियत से ही है।

—वाहे न कहें। अपनी कहो। नानी जो कहा हैं ?

—अम्मा सौर म है। तू बल्कि वडी भौजी से भात देन को कह।

ईशम ने खुद ही केले का पत्ता काटा और खुद ही लाटाभर पानी लेकर अदर जाकर खाने बठ गया। बोला हमै द देव वडी भाभी।

वडी बहू न कहा पत्ता धो लो।

ईशम ने पत्त पर पानी छिड़क दिया और कहा, लाओ दव।

वडी बहू न ईशम को खाना दिया। ईशम जब खाता है तब बडे ही एकाग्रता स खाता है। भात का एक दाना भी नही छोडता। ऐसा खाते देखना वडी वहू को अच्छा लगता। ईशम की ओर देखत हुए उसकी बीवी याद आ गई। ईशम का टूटा घर पगु बीवी सरकडा की बाड और टूटे फूस आवास के बारे मे सोचती हुई वडी बहू को कुछ तरस आ गया। अन्य दिनों की तरह ही वह बोली, पेट भर कर खाओ ईशम। दाल दू या मछली ? बहुत दूर जाना है तुम्हें जाते जाते रात विहान हा जायगी।

ईशम मगन होकर खा रहा है और दस हाथ दूर बन सौरी वाले छप्पर को देख रहा है। वहा धनभाभी हैं नानी जी हैं। ईशम न कोठरी के कोने-कोने म बेंतकी पत्तिया झूलते हुये देखा। दरवाजे पर भटकटैया की डाली। कोठरी म दीया जल रहा है। बच्चा दो बार टिहा टिहा करके रोया। ओदा लकडी की बू धुए की बू धूप की गध—सब मिलमिलाकर इस घर म एक नवजातक का जन्म हुआ है। टीन और लकडी के बने घर, कमरख दरख्त की छाह धनभाभी वडी भाभी और, इस घर व बडे मालिक पागल हैं यह बात याद आते ही ईशम

ने कहा, बड़ी मामी बड़े मामा नहीं दिखाई पड़ रहे हैं।

बड़ी बहू ने फटी फटी आँखों से ईशम को बस देखा। कुछ बोली नहीं। मानो बोलते ही आँखों से सारे दरबन्द खुल जाएँगे। ईशम ने मामी की आँखें देखकर ही भाँप लिया है कि बड़े मामा इस वक्त घर में नहीं हैं। वो कब कहाँ जाते हैं कहाँ रहते हैं कोई भी इसकी खोज खबर नहीं रखता। रखने की फुरसत ही नहीं मिलती। या जरूरत नहीं पड़ती। ईशम ने दोनों में मानो भात मिलाकर मक्खन की तरह भकोस डाला। इस समय बड़ी मामी रसोई में नहीं। बैठक में लोगों की भीड़ छटने लगी है। बड़ी मामी का बड़ा बेटा और छोटी मामी का बड़ा बेटा रसोई में बैठ झटपट खाए ले रहे हैं।

ईशम ने बैठक से एक लाठी ली और हाथ में एक लालटेन भी। ईशम ने अँगोछे की पगड़ी बाँध ली सिर पर। इस अगहन की ठंड में कोस-भर की राह तय करनी है। पूल पार करने होंगे, झील पार करनी होगी। सिर पर अँगोछा बाँध वह पाँच कोस रास्ता तय करेगा। कहाँ नहरों की कगार से होकर तो कहीं पुल से। कभी चुपचाप तो कभी मल्हार का गीत गाते हुए ईशम यह लंबा रास्ता तय करेगा। रसोई के पास से गुजरते वक्त ईशम ने देखा बड़ी मामी कुएँ की जगत के बगल में खड़ी अँधेरे में किसी की बाट जोह रही हैं। ईशम को देखकर बड़ी बहू ने कहा, ईशम तनिक देख लेना तुम्हारे बड़े मामा टेवा के बरगद तले मिलते हैं या नहीं। तुम तो बरगद तले होकर ही जाओगे।

बसवाड़ी पार कर मैदान के अँधेरे में उतर जाते वक्त ईशम ने कहा, आप घर जाएँ। चलते वक्त अगर मिल गये तो भेज दूँगा। यह कहकर ईशम धीरे धीरे अँधेरे मैदान में विला जाने लगा। ईशम अब दिखाई नहीं पड़ता। सिर्फ मैदान के बीच लालटेन हिलती जा रही है।

ईशम के दाहिने हाथ में लाठी और बाएँ में लालटेन। अगहन का महीना। ओस गिरने लगी है। अब भी धान-खेत के भीतर मेड़ अच्छी तरह से बन नहीं सके हैं। खेतों के बगल में सकरी पगडंडी। रास्ते से बरसात का पानी उतर गया है—रास्ते की मिट्टी गीली गीली कीच मिट्टी में पैर धँस धँस जाय। फिर भी धँसते नहीं—नम नम मिट्टी के लाद पर पैर रखते हुये ईशम चला जा रहा है। अँधेरा गाढ़ा होने के कारण अपने चारों ओर सिवाय लालटेन की रोशनी और अपने अस्तित्व के वह कुछ भी न देख सका। इस इलाके में हेमंत ऋतु में ही सर्दी पड़ने

लपती है। सर्दी के कारण झाड-झखाड के कीडे मकोडे भी जाने कैसी चुप्पी मा
हैं। लालटेन उठाये ईशम जब टीलिया जमीन पर चढ गया। बगल म करेले क
खेत। ऊपर टेवा का पोखर और वही बरगद। यहा काफी रात गये तक व
मालिक बठे रहते हैं। कितनी ही गहरी रातो म बडे मालिक यही ढूढे मिले है
ईशम न लालटेन उठा उठा कर झाड झखाड मे बडे मालिक को ढूढा। हर था
मे जुगनू। बरगद की जटायें जमीन तक उतर आई हैं। पुरानी जटायें हान
कारण, जटाओ ने भिन भिन कोठरिया-सी छायाओ का सजन किया है। उस
गुहारा, बडे मामा हैं? उसे कोई जवाब नही मिला। फिर भी लालटेन उठाये व
पड के चारो तरफ ढूढता रहा—फिर जब उसन यह जान लिया कि बडे मा
वहा नही हैं वे और कही पदयात्रा पर निकल पडे हैं तो वह फिर निचली जमी
पर उतर गया और वहा चलते समय दूर-दूर सारे गाव, गाव की रोशनिय
हाशिम की शौकीन चीजो की दूकान स आती हैजक की रोशनी देखत देखत ना
के किनारे आकर उसे मानो आदमी की आहट मिली।

वह बोल उठा, कौन जाग रहा है?

अधर से जवाब आया तुम कौन हो?

—मैं हू ईशम शेख। साकिन टाडरबाग। ईशम ने मानो कहना चाहा,
गहोना* नाव का माझी था। अब ठाकुरबाडी क अन्न पर पलता हू। अंधेरे
परवाह नही। बाबू शुरफा के साथ मेरा रहन-सहन है। नदी की चाकी
तरबूज-खेत व पट्टे पर हू। ठाकुरबाडी का बदा हू मैं। उम्र बढ रही है
मुझस गहनी नाव चलाई नही जाती।

—अंधियारी रात म मैं हासिम भुइया जागू। साकिन कलागाइछा।

—ओह हासिम भाई। यहा क्या कर रहे हो?

—मछली पकड रहे हैं। देखत नही, पानी उतर रहा है। कवई मछली
जाल गिराये बठा हू। घुप्प अधेरे म किधर को चल पडे?

—जाना है मुडापाडा। धनकर्त्ता के बेटा हुआ है। यही सदेशा लकर
रहा हू।

—भला धनकर्त्ता के कितन बटे?

—इसका लेकर दो। तुम्हारे पास काम्ी तो नही बीडी सुलगा लता।

*यात्री सध्या में मसाफिर ढोने वाली नाव।

ईशम ने बीड़ी सुलगा ली। बड़े मालिक के लिये उसका मन करक रहा है। रात को बड़े मालिक नहीं लौटेंगे तो बड़ी भाभी अंधियारे में जागती बैठी रहेगी। उसने कहा बड़े मामा को तो नहीं देखा?

—दुपहर को देखा था—कछार पर चले जा रहे थे।

उदास स्वर में ईशम ने कहा भाई रे तुम्हारे हमारे दुख छोटे-मोटे हैं। ईशम फिर चलने लगा। वह सनसनाता चला जा रहा है। हाट टूटने से पहले अगर वह पहुंच जाय तो गुदाराघाट का घटवार मिल जायगा। वर्ना इस सर्दी में तैरकर कूला पार करना पड़ेगा। सर्दी की बात सोचते ही वह सिमट सा गया।

चाहने पर ईशम एक संक्षिप्त रास्ता अख्तियार कर इससे पहले ही कूला के घाट पर पहुंच गया होता। लेकिन एक अज्ञात भय। खासतौर से वामदिघी का बूढ़ा सेमल और गाज गिरने से उसकी जली हुई दो शाखें ही इस भय का कारण है। उसके नीचे कब्र हैं जाने किस जमाने में लोगों के कब्र हजार होंगे ज्यादा भी हो सकते हैं—ईशम मारे डर के उस रास्ते से नहर किनारे नहीं पहुंच पा रहा है।

ईशम ने हाथ की लाठी और भी मजबूती से पकड़ ली। डर लगते ही वह आसमान की ओर निहारता है। अल्लाह मेहरवान है। वह मानो आसमान में उस मेहरवान को ढूंढ रहा हो। अनगिनत तारे अब बुंदकियां में टिमक रहे हैं। नीचे बस गाढ़ा अंधेरा है। दूर दूराज में गांव की रोशनियां हैजक की रोशनी—उसकी प्रकाश रेखायें पेड़ों की संध और झाड़ झखाड़ों में अब भी नजर आती हैं। परापरदी के पथ से कुछ लोग पानी में चल रहे हैं—उनके हाथ में कोई बत्ती नहीं—पानी हटाने में उनकी पदचाप सुनाई पड़ती। कुछ बातचीत की भनक भी ईशम को सुनाई पड़ती।

वह क्रमशः कूला की ओर उतरता जा रहा था। उसके घुटने तक धान के बिरवों की ओस से भीग रहे हैं। ईशम क्रमशः परापरदी के पथ से दाहिने सरकता जा रहा है। इस इलाके में उसे लोगों की कोई आहट नहीं मिल रही है। मैदान मानो अंधेरे में एक गाभिन गाय सी चुपचाप लेटी हुई है। रास्ते पर हाट से लौटने वालों में कोई नहीं चल रहा है। फसल के वजन से बिरवे रास्ते पर झुक आए हैं। वह अपनी लाठी से बिरवों को हटाकर रास्ता बनाकर उतरता चला जा रहा है।

कूला के किनारे पहुंचकर देखा गुजारा बद है। घटवार दूसरी ओर नाव रखकर चला गया है। नाव धुधली धुधली सी दिखाई पड रही है। कई कदम वह बायी ओर चला। उसे लगा ज्यादा दूर नही, आकाश म एक लालटेन जल रही है। ईशम जानता था कि इन दिनो मछुवा की बस्तिया होगी—बरसात का पानी अब कूले और नहरो स उतरता जा रहा है। जो जल ज्वार म इस खित्ते भर मे आ गया था अब अगहनी खिवाव म उतर जायेगा और पानी के साथ-साथ मछली और कछुवे भी। मछुए खडा जाल लेकर आए हैं। कूला मे जाल डालकर दुबके बठे हैं अधेरे म। ईशम कूला के किनारे किनारे उस लालटेन तक चला गया। कछार पर खडा हो गया और गुहारा—मैं ईशम हू। मुझे पार पहुचा दो। मैं एक सदेश लेकर जा रहा हू। धनकर्त्ता के बटवा हुआ है। फिर चारो ओर निगाह दौडाकर उसन पुकारा बड मामा हैं, बडे मामा। बडी मामी आपके लिए जागती इतजार कर रही ह। घर जाइए। कोई जवाब नही आया। सिर्फ एक नाव दूसरी ओर स इधर चली आई। कोई बोला, धनकर्त्ता के बेटा हुआ है ?

ईशम न कहा, हा।

—तो फिर कल चले जायेंगे—एक तगडी मछली लेत जायेंग। मछली देकर एक सलूका माग लूगा। कहकर उसन पटवतन उठाकर अधेरे म एक बडी-सी मछली निकाली। ईशम की लालटेन की रोशनी म नीले रग की ताजा मछली पटवतन पर फदकन लगी। आख बडी अबोल हैं। मानो एक पगला सा आदमी निरतर इन मदाना म भटकता फिर रहा है। फूल फल पछी देखता फिर रहा ह—एसी आखें देखन पर उस पगले शख्स की आखें ही सामने तिरती रहती। बडी मामी बडी-बडी आख किये प्रत्याशा म बठी है कि कब वह आदमी लौटेगा। उसन कहा बडे मामा को देखा ?

उस आदमी न कहा, बडे मालिक आज तो नही दिखाई पडे।

ईशम आगे और कुछ भी न बोला। इन सब खेत मदाना म वह पागल आदमी रात दिन घूमते फिरत हैं। किस अधेरे म कहा वे किसके उद्देश्य म चले जा रहे है ईशम समझ नही पाता। कूला पार कर लेन के बाद वह खेता म से बस चलने लगा।

अब वह पटसन के खेत पार कर रहा है। अब यहा कोई फसल नही। उडद, खेंसारी होना चाहिए—पर कुछ भी नही है। सिर्फ खसखसी दाढी जसी पटसन की खूटिया झाक रही हैं। जोगी टोला म इतनी रात गए भी करघे चल रहे हैं।

खेत से ही उस करघा की आवाज सुनाई पडी। गाव मे जाने के लिए वह तिरछे चलन लगा है। मछुवो की नावें अब दिखाई नही पडती। सिफ खडे जाल के सिर पर बास के सिरे स बधी लालटेन मानो ध्रुवतारा हो—उसका पथनिर्देश दे रही है। कितना रास्ता वह चलकर आया और किस ओर उसको जाना है—अधरे म यही एक जोत उसे सब बतलाय दे रही है। इस मदान के अत म ही वह बूढा सेमल मानो क्रमश काया अपनाने लगा है। दिन को इस जमीन से वह दरख्त साफ दिखाइ पडता है। उसी दरख्त क बगल के गाव म एक बार वबा फली थी—ईशम कुछ कुछ डरता हुआ सा चलने लगा। सेमल की दूरी ईशम को किसी तरह स भी भय स छुटकारा नही मिला पा रही है। वह जितनी ही दूर स जाता उस लगता वह दरख्त उसकी आर पदल चला आ रहा है। दाहिने बाजू अगर आधा कोस चलकर जाओ ता वह दरख्त मिलता और उसके नीचे है कब्रिस्तान—चूकि टोलिया जमीन स उसन एक बार उस दरख्त को दखा था एक बार हाट से लौटते रात के वक्त उसन दरख्त के सिर पर रोशनी जलते देखा था इसलिए ईशम डरकर जागीटोला चला आया। किसी के देख लते ही बोल पडेगा कब्रिस्तान म से होकर आ रहा हू—क्या ईशम जसा दिलेर मद कोइ नही—इस जवार म वह एसा ही हिम्मती है। लकिन ईशम कभी भी अपन भय के बारे म खुलकर नही बताता। वह हिम्मती है तभी दिल म हौल लुकाये आखें मूदे चलता रहता। जोगीटोला म आते ही लोगो की बाता चरखा की आवाज और करघे की कभी-कभी की आवाज स भय दूर हो गया। फिर परिचित गले की आवाज सुनकर बोल पडा अमीर चाचा की आवाज सी लगती है।

—तुम—?

—मैं ईशम हू।

—इत्ती रात गय?

—मुडापाडा जाना है। धनकर्त्ता के बटा हुआ है—सदेश लेकर जा रहा हू। आपकी तबीयत कसी है?

—कोई अच्छी नही है बेटा। अच्छी नही। फिर जरा ठहरकर बोला, बडे मालिक का दिमाग अभी तक दुरस्त नही हुआ?

—नहा चाचा।

—सुना कि बूढ मालिक आखा स दख नही पात।

—नहीं। दिन भर घर ही में पड़े रहते हैं। बड़ी मामी और बूढ़ी मालकिन देखभाल किया करती हैं।

—बेटा पागल हो गया तो हमारे मालिक की आँखें जाती रहीं।

—जी चाचा।

—हाँ, तो बैठो तनिक। तमाकू पीओ।

—फिर कभी चाचा। आज इजाजत दो। बातें करते हुए ईशम मयन मिस्त्री के मोला का मचान पार कर रामपद जोगी की अमराई में हेल गया। फिर गांव की मसजिद पार कर मदान में उतरते ही सेमल पेड़ याद पड़ गया। उसने जबरन मन में हिम्मत वगैरह के लिए यहां दुआही भरा था। यह दरख्त मानो धीरे धीरे शैतान बनता जा रहा है। शैतान सा ही पीछे पड़ा है। कभी-कभी हाथ की लाठी और लालटेन उसको भारी लगने लगती। उसने सोचा—ऐसा तो नहीं होना चाहिए। उसने सोचा कितनी ही रातों में, कितने ही दूर-दराज इलाकों में कितने ही लोगों की भली और बुरा खबरों का सदेशी बनकर वह गया है लेकिन आज अभी तक वह फासले का चक्र भी तय नहीं कर सका। सेमल उसका बहुत नजदीक लग रहा है। कभी पीछे से खदेड़ रहा है तो कभी सामने से। उसने अपने सिर के ऊपर लाठी उठाकर दन दन घुमाई। उस लठैती का पटा-बनेठी का खेल याद आ गया। लठैती में उस्ताद ईशम इस मदान में दरख्त को प्रतिपक्ष मानकर बीच-बीच में लाठी घुमाता रहा। लालटेन को बाएं हाथ में थामे दाहिने हाथ से वह लाठी अपने सिर के ऊपर घुमा रहा है जो कि धीरे धीरे नीचे की ओर उतरती जा रही है। धान के बिरवे जब पैरों से लिपट जाते तो लाठी से उनको सरकाकर वह फिर चलने लगता। लाठी से बीच-बीच में वह धान के बिरवों को हटाता कुछ अपने को अन्यमनस्क करने के लिए तो कुछ रास्ता साफ करने के लिए। मदान में उतरते ही ईशम का जिस्म ठंडा पड़ता जा रहा है। ईशम का जिस्म बड़ा ही गठा हुआ ताकतवर और मजबूत है। इस बूढ़ी उम्र में भी वह अपनी गर्दन को मजबूत बनाये हुए है। लेकिन यह रात, अंधियारा, विशाल झील वाला मदान और वह सेमल का पेड़ जो इतनी देर से उसको खदेड़ता आ रहा है—सभी कुछ मिल मिलाकर उसको एक अजीब गोलमाल में फंसा चुके हैं। ईशम को मानो लालटेन की रोशनी में रास्ता नहीं दीख रहा है। यह झील पार करने के बाद ही गांव मिलेगा फिर गांव का रास्ता, गोलाबादाल का भूतहा पुल

और पूरी पूजा का मदान। फिर एन के बाद एक गाव फिर बुनना की बाउडी और नमशूद्रो का पुरवा पडाव, पोनाव और मानाव गाव।

अधरे के कारण ही आकाश म इतने ज्यादा तारे दमक रहे थ। गरम जमीन नीचे उतरत उतरत मानो पाताल म उतर गई है। मड के रास्त अभी तक ठीक तरह स शक्ल अख्तियार नही कर सके हैं। अगहन के बाद धूप आने पर और धान कट जाने पर ये रास्ते साफ दिखाई पडेंगे। इस झील म रास्ता पहचान कर दूसरी ओर पहुच जाना इस समय बडा ही तकलीफदेह है।

बहुत दर तक ईशम एक परिचित मड का पथ ढूढता रहा। जो लोग मल म जाते है या बनी म व इसी मड पथ स झील क दूसर कछार पर पहुच जाते हैं। धान क खेतो की आड म जाने कहा वह रास्ता छिपा हुआ है। बडी सावधानी स वह बिरवा को उठा उठाकर दख रहा है और आग बढ रहा है। शायद यही वह रास्ता हे लेकिन कुछ दूर चलते ही लगता कि वह ठीक रास्त स नहा आया है—वह रास्ता उस लक्र इस झील क बीच लुकाछिपी खेल रहा है। फिर उसन सोचा ढलवा जमीन क किनार किनारे चलत रहन पर बेशक वह बगल के गाव पहुच जायगा। मन ही मन फिर उसने उच्चारण किया दुहाही भरोसा तेरा। उस इस रात म यह झील यह मदान पार करना ही होगा। अधर म रास्ता कितना भी अनचीन्हा हो शतान की आखें कितनी भी खौफनाक क्या न हो—वह इस मदान को पार कर दूसर मदान म जरूर जा पहुचेगा। धनकर्त्ता का सदेशा पहुचा कर रहगा।

कभी तो उसन दिल को मजबूत किया। फिर कभी सशय म पडकर जान कसा कमजोर होता जा रहा है। वह मानो धीरे धीरे इस झील म डूबता जा रहा है। और उस लग रहा है कि घूम फिर कर वह एक ही जगह बार बार चला आ रहा है। वह कतई आग नही बढ पा रहा है। घम फिरकर वह एक ही जगह लौट रहा है या नही इसको परखने क लिए उसन हाथ की लाठी धान के बिरवे हटाकर कीच म गाड दी। उसने निर्धारित स्थान को पहचानने के लिए कुछ बिरवे उखाड डाल। सलीब की शक्ल म उनको जमीन पर बिछा दिया। फिर उसने चारो ओर एक गोल सा दाग बनाया।

बडी देर स यह झील और रास्ता उसके साथ मसखरी कर रहे हैं। थोडा-सा वह बठ गया। सारा विश्वचराचर सन्नाटा मारे। लगने लगा कि यह झील भी

उस पगले ठाकुर जैसी ही रहस्यमय है। अपन ही मन उसने हँसने की कोशिश की। लेकिन गला खुश्क है। गले से जग सा बलगम निसर आया। यह शब्द तेजी से झील के चारों ओर फैलता जा रहा था। कोई अनात-सा शब्द वहीं। उसने कान पसारा। जब यह मदान उसके लिए पगले ठाकुर जैसा रहस्यमय नहीं निस्मय मैदान अगहन की ओस में आदा होकर उसकी पशु बीवी की तरह सो रहा है या रात के सारे कीड़े-मकोड़े सारे झींगुर सर्दी के मौसम के लिए आर्त्तनाद कर रहे हैं। कब जाने सर्दी आएगी खेत खाली हो जायेंगे अनाज के दाने मेंता में पड़े रहेंगे हम लोग उड़ उड़कर खायेंगे घूमेंगे फिरेंगे नाचेंगे-गलेंगे। जितना ही वह यह सब सुनता रहा, जितनी ही ये सारी चिंताएं उदास होने लगीं उतना ही वह भयावह सेमल का दरख्त सिर पर बत्ती जलाये उसकी ओर बढ़ता आ रहा है।

समल के सिर की बत्ती जल रही है और बुझ रही है। या बुझकर अगिया बेताल बनी जा रही है। दूर दूर मानो झील के इस सिरे से दूसरे सिरे तक वह अगिया-बेताल नाच नाचकर उसे तमाशा दिखा रहा है। उसने कहा भली रे भली। इस तरह बैठे रहने से यह खौफ उसको गुज-मुज बना देगा। वह अगर उल्टे पांव कहीं तेज दौड़ जाय तो किसी न किसी गांव पहुंच जायगा।

इसलिए वह हाथ की लालटेन लेकर तेज भागने लगा। हाथ की लालटेन दो बार लप्प-लप्प कर भभक उठी। लालटेन बुझ जायेगी इस डर से वह तेज न भाग सका। उसको अपने घुटनों में बल नहीं मिल रहा है। बार-बार वह पीछे की ओर देख रहा है। उसने इस बार देखा, साफ-साफ देखा कि वह सेमल का पेड़ सचमुच आगे बढ़ा जा रहा है। उसने देखा दरख्त के सिर पर बत्ती और डालियों में लटकती बबाओं की लाशें। वह उन बिरवों से बनाये सलीब वाली जगह पर लौट आया है। समल का पेड़ सहसा जीवन हो उठा। तब तो इतनी देर से वह एक ही वृत्त में चक्कर लगाता रहा है। भय में विवश ईशम ने जमीन पर देव की तरह लात जमाई। उखाड़े हुए बिरवे चील की प्रचंड हवा में उड़ते रहे।

उसने शैतान के उद्देश्य में कहा शैतान के पिल्ले, तुमने सोच क्या रखा है? झील के पानी में मुझे डुबो कर मारना चाहते हो। कहकर ही उसने लाठी उठाकर ऊपर की ओर घुमायी। जिस तरह मुहर्रम के दिन बाजे के साथ-साथ वह सामने-पीछे ऊपर-नीचे या दाहिने-बाएं लाठी घुमाता था, लाठी को आगे बढ़ा देता या पीछे हटा लेता था ऊपर की ओर चलते समय वह यही सब करतब दिखाता हुआ

चला। इस झील की जमीन और सेमल पेड़ म गोफ ग थ जा पर मनने लगा है। लेकिन करतब दिखाने से क्या होगा—जान कौन सब उस पीछे स दाव रहे हैं। जाने कौन उसके चारा आर चक्कर लगा रहे हैं। लग रहा है झील भर म लोगो की पछट सुनाई पड रही है। कुछ विदेही शतान उसके साथ नाच रहे हैं पर बोल नही रहे हैं। अधेरे म ऊपर उठन की बजाय वह बस नीचे हा उतरता चला आ रहा है। अब वह चिल्ला उठा ऐ खुदा यह क्या हुआ। अरे धनकर्त्ता, मुझ पर कानावाला सवार हो गया है। लालटेन और लाठी फेंककर वह रातो की मडा पर चक्कर लगाने लगा। धान की पत्तिया स पैर कटे जा रहे हैं। बार बार घूम फिर कर वह एक ही जगह आ पहुचता। और ऐसे ही समय उसने देखा कि वह भुतही रोशनी बिलकुल आखो के सामने जल बुझ रही है। वह रोशनी हजार आखो वाली हो गई अधेरे म भूत की आखें दमक रही हैं। ईशम स आग और जूझा न गया मेड पर वह बेसुध गिर गया।

सामने हाथ म लालटेन लिए सुदर अली। पीछे पीछे धनकर्त्ता। उसको चार दिन पहले धनबहू स खत मिला है। धनबहू ने लिखा है—तबीयत ठीक नही चल रही है। ऐसे म अगर तुम पास रहते। धनबहू का खत मिलने पर चद्रनाथ ने कोई देर नही लगाई। बड़े शरिस्तखाने म मझले दादा रहते हैं। उनके पास जाकर उसने कहा दादा मैं एक बार घर जाने की सोच रहा हू। आपकी बहू ने खत भेजा है। उसकी तबीयत ठीक नही—एक बार घर हो आऊ। भूपेंद्रनाथ ने साथ म सुदर अली को कर दिया है। पहुचने मे रात हो जायगी। शरिश्त म ज्यादा काम आ पडा है वर्ना वे खुद घर जाते। बच्चा हुआ है यह जानने पर शायद चद्रनाथ इतने उद्विग्न न होते। वह तेज चाल चला जा रहा है। सुदर अली को लेकर लालटेन हाथ म लिए वह उतरता आ रहा है। शीतलक्ष्या के किनारे किनारे कुछ दूर आकर बाजार को बाए हाथ रख मासाब पोनाब होकर बुलता वाली बावडी पार कर आगे बढ रहा है। कारिंदा सुदर अली बीच-बीच म खास रहा था। उसके मुह से यह शब्द भी नही। निडर खामोश वे इन खेतो म उतर आए हैं। यह मदान पार करते ही फाओसा का कूला, फिर दो-कोस रास्ता। घर पहुचने म अब कोई देर नही। ऐसे ही समय सुदर अली चिल्ला उठा, नायब साहब खून। लगा सुदर अली के हाथ से लालटेन गिर जायेगी। सुदर अली ने

पीछे की ओर भाग जाना चाहा।

धनकर्त्ता हक्का-बक्का हो गय—इस जगह खून-डकैती।

सुदर अली ने कहा, ऊपर मदान मे चले चलिए मालिक। नीचे स होकर नही जाऊगा।

धनकर्त्ता न अब जोर की घुडकी लगाई, इधर आ, देखें भी कसा खून है, कौन खन हो गया। धनकर्त्ता न लालटन उठाकर सावधानी से उस आदमी के मुह के पास थामा। यह आदमी बडा जाना-पहचाना सा लगता है। उसने उसे हिलाया। देखा सास चल रही है। उसने पुकारा, ईशम, तुझे हो क्या गया है? ईशम, ऐ ईशम। ईशम के शरीर पर कोइ चोट की निशानी नही। उसन बारीकी स अग-अग देख लिया।

ईशम क बगल मे बठकर धनकर्त्ता ने उसकी आखें खोलकर देख ली। नही सभी कुछ तो दुरस्त है। अब लगा—झील वाले इन गरग खेता म अधियारे म ईशम भटक गया है। वह झील से पानी ले आया। रूमाल भिगो भिगो कर मुख और आखो पर पानी डाला और जब होश लौट आया तो उसस कहा क्या तुझको डर न घर दबोचा था। मैं हू तेरा धनमामा।

ईशम न आखें खोलकर धीर धीरे देखा। शुरू शुरू म वह पहचान न सका। फिर बेएतबारी स्वर म पुकारा धनमामा। आप धनमामा है। धनकर्त्ता को देखत ही वह रो पडा।—ऐ मामा हम पर कानाकाना सवार है। सारे खेत मदान झील म भटकाता रहा। मर गया मैं। मरे बदन म अब कोई कूवत ही नही मामा।

—आहिस्ता आहिस्ता चल। झील म क्या आया था तू?

इतनी देर म ईशम को सब कुछ याद पड गया। क्या वह इस मदान म आया था, कहा जायगा क्या सदेशा दना ह सभी कुछ एक एक कर याद आ गया। धनमामा, आपके बेटा हुआ है। मैं आपके पास जान के लिए ही निकला हू। रास्त म यह मानरा—कानावाला।

विशाल झीलवाले खेता म अधेरे उजाले म खडे धनकर्त्ता को सूझा नही कि क्या जवाब दें। आसमान म वसे ही हजारो तारे टिमक रह हैं। ठडी हवा म धान की महक। ईशम ने तब कहा, चलिए मामा, धीर धीरे चलें। चलत समय बहुत ही सकुचाते हुए उसन कहा, मुझे एक तहमद दना पडेगा।

चलते चलते व किसी समय टेबा के तालाब के किनार आए। पीपल का दरख्त

पार करके मगर ईशम ने पुकारा बड़े मामा ? बड़े मामा। कोई जवाब नहीं मिला। कगार पर सजग से नाद लगाई। इस रात में उस अंधेरे में कोई धँस रहे तो किसी तरह से उसका पता नहीं चलेगा। भीतर कोई है या नहीं—फिर भी पता नहीं चल पाता। ईशम और चन्द्रनाथ ने फिर आगे बढ़कर पुकार पुकार नहीं मचाई। करना का गर पार कर धान गार में उतर आते ही पता चला धान-खेत के भीतर कुछ गर गर आवाज हो रही है। धान गार में पानी-पानी पानी। पर ये तनुय डूबे कि न डूबे। ईशम ने लालटेन उठाई ही देखा—बड़े मालिक। धान-खेत के भीतर बड़े मालिक उकडूं बैठे हैं। ईशम गार के भीतर घुस क्या और वाला उठिए। घर जाना है। कभी मामी तरह लिए जाते रहे हैं। लेकिन उन्हें मालिक ने चन्दर पर कोई जकिन ना। जम बैठे थे बस ही बैठे रहे। किसी बन्दर नहीं उठ रहे हैं। जान किस पर सवार बैठे हैं। पता के नीचे अंधेरा और धान के बिरवे। धान-खेत शान्त। बिरवे हिल रहे हैं। लालटेन नीचे करते ही उसने देखा एक बड़ा सा कछुवा। एक बहुत बड़े कछुवे को चित्त कर के उसके सीने पर जम कर बैठे हैं। कछुवा पर निकाले और मुंह निकालकर काटने की कोशिश कर रहा है। लेकिन उनके पैरों तक पहुंच नहीं पाता। सिर्फ बिरवे हिल रहे हैं। ईशम कुछ कहने जा रहा था कि साथ ही साथ कछुवे के सीने पर बैठे बड़े मालिक लनवार उठ गतचारतसाता।

ईशम ने कहा बड़े मामा यह आप क्या कर रहे हैं ? इतने बड़े एक कछुवे को पकड़े आप बैठे हैं। फिर उसने कहा आप घर चलिये। धनमामा आए हैं। धनमामा के एक बेटा हुआ है।

धनकर्ता ने कहा उठ आइए बड़े दा। कछुवा ईशम ले जायगा।

बड़े मालिक ने भले मानुस की तरह धनकर्ता का अनुसरण किया। जाने कब बड़े मालिक दौड़ने लग जाय जाने कब हाथों से ताली बजाने लग पड़े—इन सारी घटनाओं से मुठभेड़ करने धनकर्ता बड़ी ही सावधानी से पीछे पीछे धनकर्ता चलने लगे। बड़े मालिक ने अंधेरे में दौड़ लगाना चाहा तो धनकर्ता ने कहा मेरे हाथ में लाठी है बड़े दा। अगर आप दौड़े तो टांग पर दे मारूंगा। टांग तोड़ दूंगा।

चंद्रनाथ के मुंह ऐसी बात सुनकर बड़े मालिक पलट कर खड़े हो गये। मुझे तुम फटकार रहे हो चंद्रनाथ। ऐसा ही एक करुण मुखड़ा लिए वह चंद्रनाथ को

देखने लगे। वे कभी कोई बात नही करते इस समय भी बिना कुछ कहे वे अपलक देखते ही रहे।ऐसी आखें देखतेही लगने लगता यह चालीस पार व्यक्ति शायद अब आकाश के छोर तक हाथ उठाकर ताली बजायेंगे।चाद की नीमजुन्हाई अब आकाश मे सवत्र। वाकई अब बडे मालिक दोना हाथ ऊपर उठाये ताली बजाने लगे मानो आकाश के किसी छोर म उनके पाले हुए हजार नीलकठ पाखी खा गये है। तालिया बजाकर उनको लौटान की कोशिश कर रहे हैं। और धनकत्ता न खड-खडे सब कुछ नये ढग स गौर किया—बडे दा की बडी-बडी आखें, लबी नाक चौडे माथे के बगल मे बडा सा मसा, सबसे बडी बात सूरज सा अनूठा रग बदन का और साढे छह फुट का सीधा तना शरीर। देखन पर लगे कि मध्ययुगीन काई नाइट रात के अधरे म पाप की तलाश म फिर रहा है। चद्रनाथ ने देखा बडी बडी और गहरी आखें दिनभर के उपवास स कोटरो म धस गई हैं। पीडा से चद्रनाथ आखा म आसू न रोक सका। बाला, बडे दा आप अभी कितना कष्ट और झेलेंगे और सब लोगो के दिल को दुखाएगे।

बडे मालिक उफ मणीद्रनाथ न सिफ कहा, गत्चोरेतसाला। फिर वे आकाश की छोर पर ताली बजान लग गय। ताली की वह आवाज इतने बडे मदान मे जाने कैसी विस्मयकर एक ध्वनि की सृष्टि कर रही है। य सारी ध्वनिया गाव मदान पार कर सुनहरे रत वाली नदी की चाकी पार कर मानो इस समय तरबूज खेत पर झूल रहा हो। मणीद्रनाथ की बडी आकाक्षा है जीवन के सारे खोये हुए नीलकठ पाखी लौटकर रात के सन्नाटे म मिला जायें—लेकिन व उतर नही रहे हैं—यह भावना बडी ही कष्टदायक है।

चद्रनाथ का अनुसरण कर घर की ओर चलते चलत अब मानो उन्होंने कहना चाहा चद्र, तुम्हारे बच्चा हुआ है बडा खुशी है। लेकिन बाता के अवयव म एक ही अभिव्यक्ति गतचारतसाला। इस बार व अपनी अभिव्यक्ति के इस अभाव से जाने कैसा दुखी हो गये—आकाश म इतने सारे तारे हैं लेकिन काई भी उनकी पागल चिता का समभागी नही बनना चाहता। सभी माना उनकी टाग ताड देना चाहते हैं। बिना कुछ कहे मणीद्रनाथ अपने मझल भाई के पीछे पीछे चलन लगे।

ढाक-ढोल का बाजा सुनाई पड़ रहा है। बैंड पाइप बजाया जा रहा है—लग रहा है कि कोई नगाड़ा भी बजा रहा है। लोगों का दल ढाक-ढोल बजाता हुआ कछार से ऊपर आ रहा है। शचीन्द्रनाथ तालाब के किनारे खड़ा यही आवाज सुन रहा था। शायद नारायणगंज से फलू लौट रहा है। फलू के गले में काला फीता बंधा हुआ। वह कबड्डी खेल कर लौट रहा है। कप मडली के हाथ में दिख रहा है।
तो फिर इस बार भी फलू गोपालदी के बाबुओं के विरुद्ध गया था?
मुँह पर काले सूखे पत्ते-सी दाढ़ी हिलाते और कंधे पर हरे—हमेशा लाल अंगोछा डाल रहने से फलू की बनियाइन के ऊपर छाती कछुवे की तरह—कितनी चौड़ी नापी नहीं जा सकती। लेकिन नजदीक आने पर लगा यह मडली फलू की नहीं कोई दूसरी ही मडली है। तो क्या इस बार फलू हार कर आया। उसकी मडली क्या लौट नहीं रही? शायद यही पहली बार फलू की मण्डली हार गई है। तो फिर फलू की जवानी चली जा रही है। जब उसकी जवानी थी तो इस जवार में दो ही आदमी थे—फलू और शावू—बड़े खिलाड़ी कबड्डी के खिलाड़ी। इन दिनों इस इलाके में विश्वासटोला नयाटोला या दस-बीस कोस दूर या गोपालदी के मैदान में और नदी पार कर मघना की उस चाक़ी पर उन लोगों का खेल देखने के लिये कतार में लोग—फलू जब चल कबड्डी चल् कबड्डी कह कर दाग के ऊपर बाघ की तरह टूट पड़ता था—तब फाइनल खेल का नगाड़ा बजता या बैंड पाइप बजता था उस वक्त फेलू का मुख देखने से लगता था कि फलू गजब का उस्ताद खिलाड़ी है। उस वक्त कितने ही तमगे उसके गले से झूलते रहते थे।
अपनी मडली के लिये जाने कितने कष्ट वह ले चुका है। न रात समझा न दिन, बीस-पच्चीस कोस पैदल चल कर फेलू खेलने चला गया है। एक बार बड़े शहर में खेलने गया था तो पालकी में लौटा। फेलू की जय जयकार। पालकी के दोनों बाजू पर दो आदमियों के सिर पर दो बड़े-बड़े कप डे-लाइट जला कर नगाड़ा बजाते हुये वे शहर से गांव लौटे थे। लागल बंद के मैदान और नदी पार करने के बाद गांव के लोग और बहू बेटी देखने के लिये जो खड़े हो गये तो उसकी इन्तहा ही नहीं। वे फेलू को देख रहे थे दो बड़े बड़े कप देख रहे थे—गले में काला फीता बांधे कबड्डी दल के खिलाड़ियों को देख रहे थे—मानो ठाकुर का झूलन यात्रा जलूस जा रहा हो। वही फलू इस बार हार गया है। दूसरे दल के लोग जय गोपालदी के बाबुओं की जय—नारे लगाते चले जा रहे हैं। जाने क्यों

शचीद्रनाथ को इस समय फेलू का मुख देखने की बडी इच्छा हुई। फेलू शायद हार कर पहले ही घर चला गया है। शायद कुछ और करने म असमर्थ वह अपनी बीवी अन्नू की ही पिटाई कर रहा हो।

चद्रनाथ इस समय अपना जातक देख रहे हैं। सौर म शशीवाला ने चद्रनाथ से और जरा चुकने को कहा। धनवहू ने पान खाया है। होठ लाल हैं। एक दिन सेंदूर लगाना मना है—इसलिये माथा साफ है। कोठरी के भीतर भीगी लकडी जल रही है। कुछ फटे चुने लत्ते। कोने म आग दहक रही थी। दोनों हाथो स धनवहू ने जातक को सामने उठाया, चद्रनाथ ने बेटा न देख धनवहू का मुख देखा, कसा सफेद पड गया है मुख कुइ के पत्ते जसा रग मुख का। धनवहू फिर मा बन सकने से चमक रही थी। कलाईकी लोहे की चूडी लाल किनारी वाली धोती, दोनो हाथा से जातक को उठा कर दिखाने का अदाज सब-कुछ मिल मिलाकर मानो एक फुस फुसाहट जसा हो—कसा देख रहे हा ? किस पर जायेगा ? तुम पर कि मुझपर ?

उस समय मणीद्रनाथ एक पीपल के नीचे आकर खडे हो गय। इसी रास्ते स कवडडी वाला दल चला गया है। वे कप, मडल और लोगो का उल्लास देखने के लिये उनके पीछे पीछे निकल पडे थे—अब वे नयाटोला के मैदान म उतर गये हैं। वे उनके साथ उतनी दूर नहीं गये। इस पीपल के नीचे आते ही मानो उनको दूर एक दुग दिखाई पड जाता है। दुग म शायद कुछ नौजवान घुडसवार गश्त लगा रहे हैं। दुग का दरवाजा खुल जात ही जस हजारो सैनिक चौकोर मैदान म आकर कवायद दिखात हैं—इस समय उसी तरह दरख्त के ऊपर हजारो गगामैना सिर के ऊपर उड उड कर खेल दिखा रहे हैं। जो अभी नदी से लौटे नहीं, जो नदी की चाकी पर या झील म कीडे मकौडे पकड-पकड कर खा रहे हैं व अब लौट आयेंगे। उनके लौट आते ही व इस पड के नीचे अपने ही मन मे एक मनारम ससार बनाय बठे रहेगे।

इस दरख्त के नीचे कुछ भटकटया के पड कुछ बेंत की झाडिया और जगली घास का जगल। कुछ कत्रथिया पछी लगातार झाडी और जगल म फुदकते फिर रहे हैं। मणीद्रनाथ दरख्त की परिक्रमा करन की तरह झाड झखाड के चारो ओर चक्कर लगाने लग। इत्ता बडा दरख्त। यह दरख्त मानो ईश्वर जसा उनके सामने खडा है। और वे मानो ईश्वर की ही परिक्रमा कर रहे हैं ऐसा ही भाव है उनके चेहरे पर। मुह उठाय वह दरख्त को देख रहे हैं और जाने क्या

बुदबुदा रहे हैं। तब मुसलमान गांव के लोगों ने आते-जाते आभास किया। वे बोले, क्या आदमी था क्या बन गया। वे बोले, पर चलिये—पहुंचा आवें। मणीद्रनाथ उनकी बातों पर हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये। फिर जसे ही वे चल गये—चुपके से झाड़ी के भीतर घुसकर वे बैठ गये। चुपचाप झाड़ी के भीतर बैठे भटकटैया की टहनी तोड़ कर दांत मांजने लगे। मानो कितने दिनों से उन्होंने दांत नहीं माजे हैं, कितने दिनों से सब भूलभाल कर बैठे हुये हैं—मुंह की बदबू दूर करने के लिये वे घिसघिस कर दांतों को सफेद बना रहे हैं। आबिद अली गांव आ रहा था, उसने देखा झाड़ी के भीतर पागल ठाकुर बैठे हैं। उसने कहा मालिक घर जाइये, आसमान के आसार कुछ अच्छे नहीं।

मणीद्रनाथ झाड़ी के भीतर रह कर आबिद अली की बात सुनकर भी हंस पड़े। मुसलमान बीवियां भसीड़ उखारकर घर लौट रही थीं। झाड़ी के भीतर खसर पसर आवाज सुनकर उन लोगों ने झांका। पगला ठाकुर झाड़ी के भीतर बच्चे की तरह घुटरुओं के बल कुछ ढूढ़ रहे हैं। बीवियों ने कहा मालिक घर जाइए। माई जी फिक्र करेंगी—आसमान में बड़ा तनाव आ गया है।

घर में दाखिल होने के बाद आबिद अली ने सोचा—मालिक को पकड़ कर ले गये होते। लेकिन बूढ़ी अम्मा शशीबाला के बारे में सोचते ही सकुच सा गया। अगर वे नाखुश हो जायें, अगर कहें तू क्यों इसको पकड़ कर लाया। फिर उसको नहलाना पड़ेगा। यही सब सोच विचार कर वह आंगन में ठहरा नहीं। वह चंद की नाव में काम करता। नाव नदी में रहती। कई दिन के बाद वह घर लौटा है—थका मांदा। फिर भी जाने किस कष्ट के बारे में सोचकर आसमान की ओर देख उसे डर लगने लगा। आसमान फट कर अगर आंधी-पानी आ जाए तो वह शख्स भीग भीग कर मर जाएगा। वह मदान में उतर आया। और नदी की चाकी पर जिधर ईशम का छप्पर है उधर चलने लगा। ईशम को इत्तला कर वह घर लौटेगा।

झींसियां गिरने लगी। ठंडी हवा चलने लगी। आसमान की हालत देख लोग खेतों से गांव की ओर चल पड़े। गाय बछिया लिए गृहस्थ घर लौट आए। आंधी-पानी हो सकता, ओले पड़ सकते—आसमान धीरे धीरे काला पड़ गया। दो एक सफेद बगुले इधर उधर उड़ उड़ कर जाने किस ओर चले जाने लगे। काफी गुमसुम सा ऊमस। पेड़-पौधे कतई नहीं हिल रहे। मुसलमान गांव में मुर्गे

वालने लगे। जितना ही आकाश काला होता चला जा रहा है जितना ही धरती भयक्र बनती जा रही है मणीद्रनाथ उतना ही उल्लास से फटे पड रहे हैं। उल्लास और उल्लास। वे मानो घूम घूम कर नाच रहे हैं। वे माना आकाश देख कर पगलाया सा आकाश देखकर जस वह खुश होकर ताली बजाते हैं सारे भुवन मे तालिया वजती रहती—वे नाच-नाच कर तालिया बजान लगे। टप्पा-टोइया बारिश, पेड पत्ते भीगे जा रहे हैं। गरमी म दिमाग ठप हुआ जा रहा है। यह टप्पा-टाइया वारिश आकाश का ठडा सा भाव उनको सहज बनाये दे रहा था। लेकिन अभी शची आ जा सकता है, चद्रनाथ आ सकता है। वे आकर उसे जबर-दस्ती ल जा सकत हैं। ईश्वर सरीखे दरख्त के निकट से उसे ले जा सकते हैं यह सोचते ही वह धोती के पल्ले से डालिया स तरह-तरह की गाठ बाधन लगे। आधी उनको ठेल नहीं सकेगी गाव के लोग उनको पकड कर नहीं ले जा सकेंगे। उन्हाने सारी धाती खोलकर दरख्त के साथ अपने को बाध डाला।

टाडरबाग स उतर कर आबिद अली सडक से चलने लगा। घर का काम छोड, नमाज छोड वह ईशम के लिए नदी की चाकी म उतरता जा रहा है। उसने छप्पर के नीचे कोई लालटेन जलती हुई नही देखी। मेड पर खडे होकर उसन पुकारा आ, ईशम चाचा हैं आप? बारिश स आबिद अली का सारा बदन भीग रहा है। ठडी हवा की वजह स सर्दी लग रही है। लिहाजा वह ज्यादा देर तक इतजार न कर सका। अपन घर लौट कर घर म दाखिल होन स पूव उसने पुकारा, जब्बर का मा मैं आ गया। दरवाजा खाल। लेकिन कोई आहट न मिलने मे कुछ बौरा सा गया। वह चिल्ला उठा तुम लाग मर-खप गये हो क्या?

बारिश की आवाज की वजह स या और किसी कारण जब्बर दरवाजा खोलने म देर लगा रहा है। आबिद अली बार-बार टट्टर के दरवाजे पर धक्का मारता रहा। जब्बर के दरवाजा खोलन पर उसन पागल की तरह चिल्ला कर कहा, तरी मा कहा है रे?

—मा शामू के घर गई है।

—क्यो गई। आबिद अली न तहमद म अपना मुह और बदन पोछा।

—शामू के घर म जलसा है।

तीन चार दिन के बाद आबिद अली घर लौटा है। इसलिए गाव म क्या हो रहा है इसकी उस कोई जानकारी नहीं। आबिद अली चदा की बडी नाव

लेकर नारायणगंज सौदा करने गया था। दरी के बाजार में पता की तरफून की दुकान है। आखिर अभी गांव की बड़ी गाय का मल्लाह है। पर बैठ उसके मन को जो मैंने शांति नहीं मिल रही थी। उसका मन कर रहा था। अब भी शायद वहे मालिन शादिया में ही बैठे हैं। पर के लोग इस रस्त के लिए फिक कर रहे होंगे। शायद कोई दूसरे भी निकल पड़ा हो। उसने अब अपने बेटे की ओर देखा—बोला जब्बर एक काम करोगे बेटा।

जब्बर ने कुछ सुर्ग आवाज में कहा क्योंकि कितनी ही सारी बातें यह बुजुर्ग आदमी उससे कह सकता है जाओ रात से पुआल उठा लाओ। पानी में भीग जाने पर गाय नहीं खायेगी।—जाने क्या करने को कह बैठे।

पहले सोचा बीवी के बारे में कहेगा। यह आया है—कहां तो बीवी आकर इस वक्त खाने-पीने का इंतजाम करेगी या मतलब कुछ बातचीत—और ऐसा न कर वह गई है जलसे में मन बहलाव करने। उसने गुस्सा हो कहा—अपनी मां को तो बुला ला।

—मां क्या अभी आएगी भी ?

—क्या नहीं आएगी वे। तीन दिन से लगी ठलता रहा हूं—इस जान के लिए क्या तुम लोगों के दिल में कोई दुख-दर्द नहीं।

—अब और ज्यादा दिन झलना नहीं पड़ेगा अब्बा।

ऐसी बात सुनकर आबिद अली मानो कुछ भाप गया बात पड़ा हुए चुप हो जा।

जब्बर चुप्पी साधे फटी चटाई के एक सिरे पर बैठा रहा। सहसा बोल पड़ा हुक्का पीएंगे अब्बाजान।

आबिद अली समझ गए कि जब्बर भी इस वक्त जरा हुक्का पीना चाहता है। खुशमिजाजी लाने के लिए उसने कहा भर दे फिर।

जब्बर ने हुक्का तयार किया। बाप को दिया। फिर खुद भी दो कश लगाने के बाद बोला आप नमाज पढ़ें मैं भात परोस रहा हू।

—नमाज नहीं पढूंगा। आबिद अली जब उठा। बारिश के पानी से बधना भर लिया। और हाथ मुंह धो लिया। बाहर जोरों की बारिश हो रही है। बीच बीच में आसमान को कोई चीरे दे रहा है। मानो कोई बीच-बीच में आसमान पर सोने की लतर फलाए जा रहा है—टुकड़ों में फटे आसमान से गरज उठ रही है—

आविद अली का घर मानो ढह जाएगा। छप्पर का पूस गल चुका है। छत से पानी टपकता हुआ नीचे आ रहा है। सँटी की बनी बाड सड चुकी है। वास पर फटी शीतल पाटी और क्यरी तकिये और जमीन पर फटी चटाई। आविद अली फटी चटाई पर खाने बैठ गया। बारिश के साथ हवा भी चल रही है—लखौट की डाली टूट पडी। आविद अली ने पुकारा, ऐ जब्बर। जब्बर। बडे धीरे और लाड भरे स्वर मे पुकारा।

—मुझसे कुछ कह रहे हैं ?

—एक काम कर सकते हो ?

—कैसा काम ?

—बेटा तू एक बार ठाकुरों के घर जाकर कह आ बडे मालिक कब्रिस्तान वाले बरगद के नीचे बैठे हैं। बेटवा रे, बडे मालिक को बडी पीर है—जा, जाकर मालिक के घर म इत्तला कर आ।

—मुझसे नहीं होगा अब्बाजान। मुझे कोई दूसरा काम बताइए।

खाना छोड कर आविद अली उठ खडा हुआ। जब्बर के मुह के सामने जाकर खौखिया उठा—मानो जब्बर को वह मार ही डालेगा—पीठ के पास पर ले जाकर भी जाने क्या सोच हटा लाया। बोला, सुसरे तुम हमारे अब्बा हो, तुम्हारे कहने पर मैं चलू ?

जब्बर बस ही सिर झुकाय बठा रहा।—मुझे किसी दूसरे काम के लिए कहिए। मानो उसने मन ही मन कुछ फैसला कर रखा है। सुख और खुशहाली मे दिन नही गुजरते—बाप आज कितने दिन के बाद घर लौटा है। आकर कहा तो दो मीठी मीठी बातें करेगा—बजाय इसके गंध बिलाव जैसा फो फो करने लगा है। भीतर ही भीतर इतनी दर से वह जो जाहिर करना चाहता था बाप की मर्जी देख उसकी बेरहम सूरत देखकर वह अड सा गया—कि फिर उसके बाप ने कुछ कहा तो वह बक ही देगा।

—क्या नही जायेगा ?

—नही। मुझे दूसरा कोई काम बताइए।

—तो फिर मेरी बात नही रहेगी।

—नही।

—क्यो, हुआ क्या है ? आविद अली न आवाज धीमी की।

शची पदल चला जा रहा था। आगे आगे ईशम जा रहा है। चलत चलते, ससार म जाने कितनी तरह के दुख दद उभरते ही रहते हैं—यह जो वडे मालिक तिपहर से लापता हो गये—जाने कहा गये—आधी-पानी म जाने अब कहा हैं—यही सब कह रहा था।—दुश्मन के साथ भी ऐसा न हो। हमेशा अशाति और उलझन। मर भी जाते तो सोच लेता कि गए। ईश्वर ही जाने कब तक यह झेलना पडेगा।

इस आधी-पानी और सर्द हवा म शची कापन लगा। ईशम भी ठड से काप रहा है। आधी-पानी म वे तेज चाल चले जा रहे थे। बहुत सारी जमीन तय करने के बाद मुसलमानटोले क भीतर घुसते ही देखा, इस्मत अली का वडा वटा मजूर वरामदे पर वठा है। सामने कुरान शरीफ और ऊपर रस्सी से वधी लालटेन। आधी-पानी मद्धिम पड गया है। रोजाना साझ को वह जिस तरह पढन वठता है। वसे ही पढने वठत वक्त उसने देखा है—गाव आधी-पानी से वहा जा रहा है। गाया का गुहाल म रख बत्तखा को दरवे म डालकर दरवाजे खिडकी वद कर वह वठ गया था। आधी-पानी के थमत ही उसने दरवाजे और खिडकिया खोल दी हैं। आसमान अव पहले जसा नहीं रहा। इसलिए उसन दोना परा को मोड कर नमाज पढने की मुद्रा मे वैठने समय देखा लोकी की मचान पर रोशनी आ पडी है। फिर वह रोशनी जब घर की ओर वढ आई तो उसन देखा—ठाकुरबाडी का छोटा मालिक शची ठाकुर। साथ म ईशम। इतनी रात गये ये लोग—इस टोले म। वह झट नीचे उतर आया। बोला, मालिक, ऐसी वदली म निकल पडे हैं।

—वडे दा को देखा है इधर ?

—जी नही मालिक। आज इधर तो नही आए वे।

मजूर न लालटेन हाथ म ली। वोला, आप लोग वठें। हम लोग सारा मुहल्ला ढूढ कर देखते हैं।

शची ने कहा, इस वारिश म तुम नाहक क्या करने निकलोगे। सव लोगो के हलकान होने से क्या फायदा। वह कर वह चलने लगा। मजूर कुछ भी नही बोला। सिफ साथ-साथ चलने लगा। ऐसे ही समय गाव मे कुछ कुत्ते भूकने लगे। फेलू का घर वसवाडी के नीचे अधेरे म डूवा है। शची के जी में आया कहे फेलू क्या हार गया है। फेलू के घर म इतना अधेरा क्यो। कुप्पी जलाकर उसकी वीवी नली म सूत भरा करती है। आज कोई आहट क्यो नही मिल रही है ?

लेकिन वह न सका। बेर के पेड से फूल की महक आ रही है। आधी-पानी के कारण कुछ फूल जमीन पर पड़े हैं। यह सब परो से रौन्दते आगे बढने पर शची ने अचानक देखा कि शामू के घर म कोई बडे किस्म की लाइट जल रही है। बडा-सा टीन और लकडी का बना घर चौडा बरामदा मूली बास की बाड और ऐन दहलीज पर बास से वह बत्ती जल रही है। सामने शामियाना लगाया गया था, खोल डाला गया है। आधी पानी बिलकुल थम जाने पर शामियाना फिर ताना जायगा। इस समय सारे लोग कमरे म बरामदे म और बठक म खचाखच भरे हैं। अधेरे गाव म इस रोशनी ने शची को अचभे म डाल दिया।

मजूर न मानो ताड लिया। मालिक के मन म शुबहा। मालिक जाने क्या सोच रहे हैं। उसन कहा खुलास से ही कहा जलसा है मालिक। सुन रहा हू कि शम सुद्दीन यहा लीग का एक दफ्तर खोलगा। ढाका स लौट कर हम लोगो का शामू लीग का पडा बन गया।

शची ने कोई जवाब नही दिया। शामू का यह मामला शची को कुछ जच नही रहा था।

मजूर ने कहा शामू को बुलाऊ मालिक। आप आए हैं।

शची ने कहा नही कोई जरूरत नही। काम म लगा है नाहक बुलाकर परे शान करने से क्या फायदा।

फिर भी मजूर ने इत्तला कर ही दी। छोटे मालिक तुम्हारे घर के पास से जा रहे हैं, तुम बठे बठे जलसा कर रहे हो। एकबार जाओ। मालिक से बठने को कहो पान तमाकू लेने को कहो।

खबर होते ही शमसुद्दीन झट बाहर निकल आया। बोला, आदाब मालिक।

—खरियत स तो हो शामू।

—जी तबीयत तो ठीक नही मालिक। सुना धनकर्त्ता के बेटा हुआ है।

—हां।

—तब तो मिठाई खिलाना पडेगा। एक दिन आऊगा।

शची इतनी देर स मन म जो सोच रहा था कि नही कहूगा दूसरी ही बातें करूगा पर जान मन म कसा गोल माल हो गया। बोला चेला शागिर्द जुटा लिया है। शची ने बडी उपेक्षा स यह बात कह डाली।—एकबयक नेता बन गए। पहले तो हम लोगो के बडे भक्त थे।

शमसुद्दीन कुछ सकपका सा गया। वह दूसरी बात छेडने लगा। बोला, मालिक तनिक बठ जाए।

मजूर ने कहा बडे मालिक की तलाश मे निकले हैं।

अब शमसुद्दीन शची के साथ-साथ चलने लगा। इन सब लोगो मे एक नैतिक दायित्वबोध सा है। ससार मे यह भी एक इसान है—ऐसा इसान मिलेगा नही—पागल हो जाता है। सब कुछ फेंक फाक कर—जो कुछ भी प्रिय है या जो कुछ भी सुख का—सब कुछ फेंक कर यह आदमी लापता हो जाना चाहता है। इसलिए सभी लाग खामोश चल रहे है। घर एक दूसरे से इतने सटे बने हैं कि शची को अक्सर ही झुक कर रास्ता तय करना पड रहा था, जरा सीधा होते ही छप्पर मिर से टकराएगा। इन घर द्वारा की कोई निश्चित सरहद नही—एक घर के साथ दूसरा घर सटा हुआ है—कौन सा घर किसका है कौन किस घर का मालिक है शची के लिए कूतना मुश्किल हो रहा है। आखिरी घर आबिद अली का है। घर के आगन मे दूसरा एक कमरा बनाया है। शची ने कहा, आबिद अली की दीदी जोटन बेशक लौट आई होगी। यह अलग कोठरी देखते ही वह अदाजा लगा सकता है। कुछ दिनो पहले भी जोटन बीवी थी, अब बेवा हो गई है। जोटन के कुल तीन निकाह हैं। शची ने हिसाब लगा कर देखा—इस बार वाल को लेकर चार होगा। तलाक के बाद या शौहर के मरने के बाद जोटन हर बार आबिद अली क पास लौट आती है। तब आबिद अली फूस और लतर से उत्तरी दरवाजे वाली एक छप्पर खडा कर देता है। बस जोटन से आबिद अली का इतना भर ही रिश्ता है। फिर कुछ दिनो तक जोटन का जीवन सग्राम चलता रहता। पडोसियों का धान कूट देना चिउडा कूट देना और जब बरसात खत्म हो जाती हिंदू गहस्थो के घर के तीज-त्योहार भी खत्म हो जाते तब जोटन कितन ही दुखियारे ईमानदारो के साथ भात हडिया धो-साफ कर पानी मे उतर जाती है। और कमलगटटे व भसीड के लिय सारे पटसन के खेता को रौंदती फिरती है। जब भसीड खत्म हो जाते तो आबिद अली से शिकायत करती—क्यो रे आबिद अली, क्या मुल्क म अब मर्द रहा ही नही। आगन मे राशनी देखकर उसी जोटन ने अपनी कोठरी से मुह निकाला। देखा, शची मालिक आगन से होकर जा रहा है। उसने एकबार पुकारने को सोचा, फिर इतने बडे आदमी को पुकारने की उसे हिम्मत न पडी।

शची चला जा रहा था कि आबिद अली का दरवाजा खुल गया। वे बहुत ही हल्के कदम रखत जा रहे थे। जब्बर के दरवाजा खोलते ही शची खडा हो गया। सारे मातबरो को देखकर जब्बर कुछ सहम-सा गया। शुरू म क्या कहे कुछ सूझा ही नही। बाद म शामू को देखकर उसे कुछ हिम्मत पडी। बोला, अब्बा आपके घर गये हैं मालिक।

—क्या भला ?

—बडे मालिक की खबर देने। बडे मालिक कब्रिस्तान म बठे हैं। अब उन लोगो ने कोई देर नही लगाई। सटपट आगन स उतर कर सडक की ओर चलने लगे। बारिश थम आई है। तूफानी हवा भी नही चल रही है। पेडो के सिर पर, झाड झखाडो म फिर जुगनू चमकन लगे है। रात के अधेरे म ये पाचो प्राणी मदान म उतर कर कब्रिस्तान के उस बरगद की ओर देखने लगे।

ईशम मानो सबसे पहले पहुचना चाहता है। उसने कहा, मालिक जरा कदम बढा कर चलें।

अगहन की शुरू शुरू की सरदी है तभी जुगनुओ की यह हल्की हल्की जोत है सरदी की शुरुआत के कारण ही कुरुर पछी इतनी रात गय भी नही बोल रहे हैं घास मिट्टी पानी स भीग सारा जल सोख चुकी है। सख्त जमीन। सडक पर कही भी रपटन नही—बल्कि शात स्निग्ध-सा रास्ता। बहुत दिनो के बाद पानी बरसने से धान के लिये अच्छा ही होगा—सुकाल आएगा, अकाल नही। ईशम लबे लबे डग भरता जा रहा है। कोई भी कुछ बोल नही रहा था मानो शची न उन लोगो की शरारत ताड ली है—मानो पीढियो से आते प्यार भरे रिश्ते म दुख और वेदना सचारित हो रही है। शमसुद्दीन मन-ही मन एक अजीब अपराधबोध से पीडित है—जिस कारण वह चुपचाप चल रहा था।

लालटेन उठाकर बरगद के नीचे ढूढते ही दिखाई पडा, बडे मालिक फास लगा कर झूल रहे है। फास गल म नही कमर म। धनुष जसा टेढे हो गये हैं। या सकस क तबू म खिलाडी जसा खेल दिखाता है वसा ही वह पीवाक का खेल दिखाना चाहते हैं। आधी पानी शरीर पर सफेद चिह्न छोड गय हैं। शरीर के भीतर कही कोई पीर है—प्यार की पीर या स्वप्न म एक मजिल है मजिल म जादू का परिंदा है और वही परिंदा उनक हाथो स निकल गया है। इस समय वे उसकी तलाश म हैं। लगता है परिंदा उड गया है प्रांतर पार कर सौदागरो का देश पार कर कहीं

जल परिया का देश है वही, वह परिंदा दु खी राजकुमार के सिर पर बैठा रो रहा है। उसी समय बडे मालिक को कोई तकलीफ-सी होती है—अपना हाथ वे खुद ही चबाने लगते हैं। उन लोगो ने देखा इस शख्स ने हाथ चबा चबाकर घायल कर दिया है और डाल स लटके हुये हैं।

ईशम भल्कटया के जगल म घुटनो के बल घुस गया। उसने हर पौधा तय कर बडे मालिक को जगल के भीतर से मुक्त किया। ठड से बडे मालिक का चेहरा उतर गया है। या व राता दिन पाना के नीचे डूबे हुए थे—जल से उठाकर कुछ लोग उन्हे इस जगल में टाल गये हैं। हाथ पर फक सफेद हो गये हैं। जगल से निकल कर ईशम न उनको अच्छी तरह से धोती पहना दी। बडे मालिक न अपनी कलाई से खुद ही मास नोच लिया है। हाथ मुह लहू-लुहान। बडे मालिक का शरीर और मुख इस समय वीभत्स सा लग रहा है। बडे बडे खून के धब्बे। पेडा की शाखो मे चिडिया का आत्तनाद—सुनसान मशान मानो सबका बेहद थका रहा है।

शची के लालटेन उठाकर मुख और कलाई देखते ही बडे मालिक हस पडे। बच्चा जसा ही सरल हास्य। शचा से देखा नही जाता। दूब घास उठाकर घाव पर शची न रस निचोड दिया। जलन और दद स मुख सिकुडा जा रहा है। लेकिन कुछ बोल नही रहे हैं। चिल्ला नही रहे हैं। सभी लोगो के साथ अब बाउल जसा ही वे झूमते हुए चले जा रहे हैं।

शमसुद्दीन न चलते चलते कहा, मालिक को लेकर काशी, गया, मथुरा घूम आए—कोई कुछ कर न सका। चगा न कर सका।

मजूर ने कहा, कलकत्ता ले गये बडे डाक्टर से दिखलवाया व भी कोई कुछ न कर सके।

शची कगल स भी अधेरे म हताशा ही फूट पडी। बोला, कोई कुछ भी नही कर सका। दस बारह साल म कितने देस परदेस का चक्कर लगाते रहे।

मजूर ने कहा, हमने पीर की दरगाह म सिरनी चढाई मैंने—नही कुछ भी नही हुआ।

शची अब कुछ भी बोल नही रहा है। सभी इस दुख से दुखी हैं। मानो यह दुख अगल-बगल के सभी गाव को झकझोरता रहा है। बडे मालिक के बारे म इन अगल-बगल के गावो में कितनी सारी आश-उम्मीदें बधी थी। कितने दिनो से बडे मालिक की अविस्मरणीय मेधाशक्ति का परिचय पाकर इस जवार के लोग

गौरव का अनुभव करते थे। हमारे जवार में भी एक है, एक को हम लोग राजकीय सम्मान से पेश कर सकते हैं। सभी लोगों की प्रीति और स्नेह मानो इस महाप्राण पुरुष को बड़े ही लाड-प्यार से मन में पालता रहा है—वही आदमी अब क्या बनता जा रहा है।

ऐसे समय मजर ने शची से पूछा, क्यों मालिक, अब्बाजान कहते हैं कि बूढ़े *मालिक ने जिंदगी में कभी झूठ नहीं बोला।*

शची ने कहा, सुना है लोग ऐसा ही कहते हैं।

—तो फिर इतना बड़ा शोक उनको क्यों मिला ?

शची कोई जवाब न दे सका। आसमान में जो बादल थे हवा से अब छितरते जा रहे हैं। कछार के रास्ते से तालाब के कगार पर नहीं चले वे लोग नरेन दास के गांव दरख्त के नीचे से रास्ते को संक्षिप्त कर चले। नरेन दास के आंगन में पहुंचकर देखा कोई बत्ती नहीं जल रही है। नरेन दास के करघे वाली कोठरी में कोई आवाज नहीं। इतनी जल्दी सब लोग सो गये ? शमसुद्दीन ने सोचा—नरेन दास की बहिन विधवा होकर लौट आई है—इसलिए रजो गम इस घर के चारों ओर सनसना रहा है। उसने एक दिन दूर से मालती को देखा। विधवा होने के बाद मालती ब्लाउज नहीं पहनती। मालती के कोई बाल-बच्चे नहीं। जिस साल झील के पानी में मगर आ फंसा था उसी साल मालती का ब्याह हुआ। नरेन दास ने ब्याह में खर्च-वर्च किया था। इसीलिए चार माह हुए होंगे मालती यह गांव छोड़ शहर गई थी। राज कुंवर सा खूबसूरत दुल्हा। शामू चाहे तो अब भी उस छोटे से आकार वाले व्यक्ति की आंखें याद कर सकता है। नसारी से नरेन दास ने चार ड लाइट मंगवा कर घर-बाहर हर कहीं रोशनी से जगमग कर नरेन दास ने आंसू गिराते हुए दुल्हा का हाथ थामे कहा था मालती की मां नहीं बाप नहीं तुम ही उसके सब कुछ हो। बहुत देर तक नरेन दास तम्न पर पड़ा रोता रहा। सभी लोगों के चले जाने के बाद घर सूना-सूना लगने लगे। फिर भी नरेन दास दो दिन तक तख्तपोश से उठा नहीं। छोटी बहन इस घर में तितली जैसी ही थी। दिन भर उड़ती ही रहती थी। पेड़ की छाया में पोखर किनारे के लटकन दरख्त की शाखों में वह लड़की मानो नीलकंठ पाखी ढूंढती फिरती थी। शामू रंजित तब बड़े अपने साथ थे।—कितने ही दिन वे पालम लान जाकर रास्ता भूल भटक गये हैं। मालती के विधवा होकर लौटने के बाद वह फिर उससे बोल नहीं सका

था। क्योंकि ढाका के दगे म उसका पति हलाक हो चुका था।

घर म दाखिल होकर शची ने पुकारा, मा पानी दो।

चाचा की आवाज सुनकर लालटू बठक से निकल आया। चद्रनाथ भी निकल आया। शशीबाला अब तक पति के परो के पास बठी थी आगन मे शची की आवाज पाते ही चली आई। महेंद्रनाथ अपने बेटे के लिये उद्विग्न थे। आजकल मणि पर यह नई सनक सवार हुई है—बिना कुछ कहे सुन घर स निकल पडना। इतने दिनो वह केवल बठक मे बठा रहता था—या तालाब के किनारे टहलता हुआ पेड-पौधे चरिंदे परिंदे से जाने क्या बुदबुदाता रहता था। बेटा लौट आया है सुनते ही उन्होंने टटोल कर कबल को मुह पर खीच लिया और करवट लेकर लेट गये। मन म घबराहट थी वह दूर हो चुकी है।

शशीबाला आगन म उतरकर बहुत सारे लोगो को देखकर बोली तू सब।

—जी मैं शामू हू मालकिन।

—मैं मजूर हू मालकिन।

बडी बहू खिडकी से सब कुछ देख रही हैं। पति की लबी डील और बलिष्ठ मुखडा और जान कैसी आत्मप्रत्यय की छवि—यह छवि बीच-बीच म हवा मे डोलने पर—बडी बहू हाथ उठा उठा कर ईश्वर म प्राथना करती—ईश्वर मेरे पुरप का तुम देखत रहना। सहन म लाग-बाग के होने के कारण वह नीचे नही आ सकी।

सभी लोगो से बठन का कह कर शशीबाला पूजा क कमरे म गई। थोडा-सा जल, तुलसी की पत्ती और चरणामृत लाकर उसने शची और मणि के शरीर पर छिडक दिया। बाल्टी भर पानी मगाया। चद्रनाथ कपडा फाडकर लाया। घाव पर गेंदे की पत्तियो का रस निचोडकर पट्टी बाध दी।

शमसुद्दीन ने कहा मालकिन हम चलें।

—जाओ। रात काफी हो आई है। सभलकर जाना। फिर जाने क्या सोच कर शशीबाला आगन के बीच म आकर बोली,क्यो रे शामू आज चार-पाच दिन से तेरी मा नही दिखाई पड रही है।

—मा की कमर म दद है। उठ नही पाती। लगता है बाई का दद है।

—ठहर। कहकर व कमरे मे गया और एक शीशी निकालकर ले आइ। बोली यह शीशी लेता जा शामू। कमर म तेल मालिश करने को कहना।

वे चले गये। नालटेन हाथ म लिये ईशम तरबूज के खेत म उतर गया। सुन हरे रेतवाली नदी की चाकी पर तरबूज क खेत म छप्पर तले वह सारी रात बैठा रहेगा। खरगोश और मूस तरबूज क न हे कोपला और फुनगिया को काट देते हैं। रात को बठ-बठे वह टीन का डका बजाया करेगा। बहुत दूर स कोई अगर किसी घडी जाग जाय और वह डका सुन ले तो फौरन जान जायगा—ईशम ठाकुरबाडी का बदा ईशम इस वक्त तरबूज के खेत म डका बजा रहा है। डका बजाकर चमगीन्ड चूहे सब कुछ भगाये दे रहा है।

छोटे मालिक शचीद्रनाथ अपने कमरे म बठे इस समय रोजमर्रे खर्चे का हिसाब लिख रहे हैं। बड मालिक का मुह हाथ साफ सुथरा कर उनको चौके म ल जाया गया। दाल देने पर उन्होने दाल खा लिया भात देने पर भात खा लिया मछरी या मास खात समय हडिडया लौन गये। कसी बडी बडी आखें किये वे रसोई घर देखने लग। तब शशीबाला न कहा मणि अब हम लागो का दिल और न दुखाओ तरकारी से भात सान कर खाओ।

मा की ऐसी बात पर मणीद्रनाथ न कीटस की एक प्रेम कविता शुरू स आखिर तक गभीर और प्रगाढ स्वर मे कठस्थ पढकर सुना दी। मा या चद्रनाथ उसका एक शब्द भी न समझ सक। बोलते बोलत वे बडी बहू की ओर अपलक देखते रहे। मानो कोई दारुण यत्रणा की बाते वे बार-बार इन कविताओ के माध्यम से दोहराना चाहते हैं। मानो यह पृथ्वी निरतर असहिष्णुता से पीडित है। मणीद्रनाथ इस समय अपने माथे और सिर पर हाथ सहलाते रहे। मा री तुम लोग मुझे दुतराओ—एसा ही भाव मणीन्द्रनाथ क चेहर पर उनकी अपलक दृष्टि मानो कह रही है—बडी पीर है मुझ बडा दद।

रिश्त म जोटन बीबी आबिद अली की नीदी लगती है।

उसी जाब्न ने सरकडे का टट्टर खीच कर बाहर मह निकाला। अब भी सवेरा नहीं हुआ रात भर जोटन की आखो म नीद नही। मसजिद म शामू आजान दे रहा है जोटन कमर म बठी-बठी अधर म फटी सरपत की चटाई और फटी कथरी

सरिया कर एक ओर रखने लायी। अंधेरा कट नहीं रहा है, इसलिये कमरे का असबाब धुंधला-सा है—सिकहर मे दो हंडिया दो सकोरे—दो दिन से जोटन को भात नहीं जुट सका, दो दिन मे जोटन भसींड उबाल कर खा रही है। जोटन ने सकोरा हटा कर हाडी म हाथ डाला और पाया कि कुछ उबले हुए भसींड अभी तक हैं। अंधेरे मे बठे-बठे ही वह भसींड खान लगी। सूख जाने के कारण गले म अटक रहा है—जोटन ने थोडा पानी पी लिया। फिर दरवाजा जरा-सा खोल उसने आसमान की ओर देखा—आसमान साफ है मुर्गे बाग दे रहे हैं—जोटन किवाड खोलकर बाहर आ गई।

मसजिद के उस ओर सूरज निकल आया है। आबिद अली बधना हाथ म लिए मदान से लौट आया। आबिद अली की बीबी जलाली पत्तियो से चूल्हा जलाये सहन के एक कोने मे भात राध रही है। आबिद अली को औसारे मे बठने देख जोटन बाल पडी क्यो रे वह आदमी तो कल आया नही।

—न आए तो मैं क्या करू। आबिद अली जोटन की इस इच्छा क विरुद्ध है। तीन-तीन बार के बाद भी निकाह का शौक।

दो दिन अनखाये जोटन भी भयानक हो उठी ह। उसने आबिद अली से कहा, ददी जात वक्त उस आदमी का पता लगा आना। वह आदमी जिदा है या मर गया आकर बताना।

—बताऊंगा। आबिद अली ने देखा जोटन की आखें कोटरा में धस गई हैं। —दोपहर को तुम मेरे घर पर खाना। आबिद अली ने अब जलाली का मुख देखा। पौ फट रही है इसलिये धूप का रग जलाली के खुश्क मुखडे का और भी खुरदरा बनाये हुए है और आबिद अली की इस बात पर जलाली का मुख बुल्लू मछली जसा ही फूलने लगा।—अरे अरे करती क्या है। तरा गाल जो फट जायेगा।

जोटन ताड कर बोली नही रे रहन द। मेर खान म क्या रखा है।

आबिद अली समझ गया कि जोटन नहीं खायेगी। उसने देखा जोटन आगन से उतरी जा रही है। जोटन रास्त पर उतर गई लेकिन सडक से नहा चली। जहा अब भी धान खेत मे पानी है या खेत की मेड उभर आ रहे है उन्ही रास्ता से जाने क्या ढूढती हुई चली जा रही है।

जोटन इस नम मिट्टी के आश्रय म कछुवा के अडे ढढ रही है। इस समय कछुवे मिट्टी की मेड पर अडे देंग। जोटन इस समय मिट्टी के इन *आश्रया* से अडे निकाल

कर पश्चिमटोला जाने को सोचने लगी और अड्डे देकर वह कहेगी मुझे एक टोकरी चावल दे दीजिये। वह एक एक कर झीलवाले खेतो की कितनी ही मेड़ तय करने लगी। सूर्य विश्वासटोले की सड़ से बहुत ऊपर उठता जा रहा है। धान गाछ की ओस, घास की ओस उड़द के खेत की थोग सब बुदकियाँ बनती जारही हैं और इद गिर्द धूप म खिला जा रही हैं। वह आदमी कल आया नहीं वह पान्नी बाध बठी थी, मौलवी साहब से भी बता रखा था, गवाह भी तय था—फिर भी वह आदमी आया नही। मुश्किल आसान* लकर वह आदमी उस दिन आंगन म पहुचकर हाथ लगा। लगा था यह आबिद अली का घर है न ? आबिद अली जलाली और बाकी सभी ने टीका लगवाया था—जोटन भी उठकर आई थी—टीका लगवा लिया था—यह आदमी पीर की दरगाह म रहता है। ऊचा लबा बडी-बडी आखें—नाभी के नीचे तक सफेद दाढी उतर आई है बदन पर फटा चुचा चोगा सिर पर एक फेंट बधी और गले म कितने ही अजीब किस्म की मालायें, तमबीह गडे और ताबीज। जोटन इस फकीर शख्स की मुहब्बत के लिए पहले ही दीदार म विस्मित रह गई थी और उस दिन बहुत रात गय भी जाड की नम धूप मानो उस पर छायी हुई थी।

जोटन मेड के किनारे किनारे तीखी निगाह रख चल रही है। यहा कछुवे के अडे नही हैं। वह चलती ही रही। उसने इधर उधर नजर दौडाई और धान की बालिया नोच कर कपडे म छिपा ली। उसके बगल से खेत मजूर दूसरे खेतो म चले जा रहे है—जोटन बठ गई—मानो वह सचमुच कछुवे के अडे ही इकट्ठे कर रही है। वह उठ नही रही है। खेत मजूर अब दूसरे खेता म धान काट रहे थ। जोटन धान नही काट रही है। हाथ का धारदार धाधा वह पेट के नीचे खोसे हुई है। दूसरे खेतो मे काम करने वाले किसाना को देखने के लिये उसने गर्दन के बल उचक कर झाका—खेत किसका है यह जानने के लिये। दूर गायो को उसने पानी म उतर जात हुए देखा—वह आदमी आया नही वही मुश्किल आसान वाला आदमी। तेरह बच्चो की जननी जोटन फिर मा बनने के लिये इस मड पर खडी कसा छट पटाने लगी। चालीस वष की रमणी जोटन खुदा को मानो इस धान खेत म ढूढ रही है—इस जागर से खुदा का महसूल नही हो रहा है ऐसा ही भाव लिये।

*एक विशष प्रकार का तीन मह वाला लप जिसे लेकर विशष सप्रदाय के फकीर लोकालय में मुश्किलकुशा की हाक लगा कर भीख मागते हैं।

मालती का ब्याह नही होगा—यानी जिन्दगी उसका जिस्म कोई महसूस अगर नही करेगा—अल्लाह नाराज होगा। यह जिस्म जमीन की तरह है, परती रखो तो गुनाह होगा। मालती के जीवन की, धर्म को नाहक काफिर की तरह मारने की इच्छा से शरीर की जडता को हटाकर म जोटन न देखा मालती कोना दरख्त के नीचे खडी है। चुपचाप और निस्सग। उसके बदन की सफेद बिना किनारी वाली धोती भार की हवा म उड रही है। जोटन न मालती को देख हाट पट सारे अडे भीगी मिट्टी से खाद पर निकाल लिये और पल्लू म बांध लिये।

और कोई दिन होता तो जोटन मालती स कुछ बातें करती। लकिन आज मालती का यह अकेलापन सचमुच उसके दिल को दुखा रहा था। एक अकारण अपराधबोध के कारण मालती स वह कोई बात भी नहा कर सकी। जोटन दूसी रास्ते से गई—अजनबी की तरह तवाकू के खेत म उठ गई। उसन देखा मालती कोना पेड पार कर लटकन पेड के नीचे स होकर पोखर के किनारे जाकर खडी हो गई और बत्तखो को पानी म तरते देखकर जाने कसी अनमना सी हो गई।

जोटन फिर न ठहरी। यहा खडे रहन पर तकलीफ बढेगी ही। फिर मसीड खाने से बदन म कोई कूवत नही महसूस हो रही। वह झटपट नरेनदास का घर पार कर गाव के रास्ते पर चलन लगी। मौलसिरी का पेड पार करन के बाद ठाकुरबाडी का सुपारी-बाग है। वह सावधानी स बाग म घुसकर पड तले सुपारी ढूढन लगी। ढूढ ढूढ कर जब उस एक भी सुपारी नहीं मिली तो उसने पेड क सिर की ओर दखा और प्राथना की भगिमा म बोली, अल्लाह एक डली दे। सभी पडा के सिर पर सुपारिया गजी हुई और पील रग की। पीले रग की इस सुपारी का छिलका छील कर एक गूदा मुह म डालन का बडा मन हो आया है जोटन का। उसन देखा एक कठफोडवा एक पेड स दूसरे पेड पर फुदकता जा रहा है। हाय र अल्लाह र एक दे दे न। तभी बूढी मालिन की आवाज उस सुनाई पडी। जोटन ने चुपचाप अपने को घने भरस पौधो के जगल म छिपा लिया। बहुत दर तक जोटन उस झाडी के भीतर उस पछी की दानशीलता क लिये बठी रही। पछी उड रहा है जोटन झाडी क भीतर स देखती उत्तजित होती रही। वह पछी अब सुपारिया के गुच्छे पर जम कर बठ गया दो बार चोच मारी और साथ ही साथ तीन चार सुपारिया पेड के नीचे आ गिरी—मानो मानिक हो। माना जोटन की मारे दिन की इच्छा अब इस दरख्त के नीचे रूप

ले रही है। जोटन ने चारो ओर अच्छी तरह से देखभाल लिया। पोखर के घाट पर बूढी मालकिन नहा रही हैं। वह सब कुछ देख रही है, लेकिन उसको कोई भी देख नही पा रहा है। वह तुरत पेड के नीचे लपकी। तीनो सुपारिया आचल म बाध वह चल रही है। उठक पार कर वह ठाकुरवाडी के भीतर चली गई। पुकारा—बडी मामी हैं क्या ? कहती हुई वह पिछवाडे के निकसार से घुस मोरी के सामने जा खडी हो गई। बोली धनमामी, एक बार लाल को तो दिखाइए। लाल के लिये कछुवे के अडे ले आई हू। बडी मामी को देख कर बोली, कछुवे के अडे रख कर एक टोकरी चावल दीजिए। चावल मिल जाने पर बोली दो पान लगी बडी मामी।

—ले न जाकर। पेड के नीचे कितने ही पान पडे होंगे।

जोटन न चावल पल्लू म बाध लिया। और बडे घर के पीछे काटेदार बेल के झुरमुट को पार कर एक सेंहुड के नीचे आ कर खडी हो गई। पान की लतर पेड से लिपटी हुई है उसने दोना हाथो जितना बन पडा पान बटोर लिया, तोड लिया। फिर वह घर क भीतर से होकर नही गयी। काटेदार बेल की झुरमुट को पार कर वह मदान मे उतर आई। कीच पानी रादकर फिर पूरबके घर के पोखर की कगार से होकर धान खेत की मड तक पहुचन मे उसने देखा मालती आकाश देख रही है। इस बार जाटन मालती मे कतराकर निकल नही सकी। वह जरा चलकर मालती के बगल मे आ चुपचाप बठ गई। पुकारा—मालती।

मालती कुछ न बोली। मालती रोई। जोटन मालती का मुख नही देख पा रही है फिर भी वह समझ गई मालती आसू ढरका रही है। जोटन ने फिर पुकारा, मालती मत रो। रो के क्या होगा ? नसीब है मालती, नसीब।

जोटन उठ खडी हुई। यह लडकी शाक से रो रही है रोवे। अपने तीन नबर खसम के बारे मे याद करने को होकर उसके दिल म शोक भरी एक हूक उठी। दिन चढ रहा है। पेट म गजब की भूख। जो चावल है जोटन के दो जून का काम बन गया। चलत समय कछार स उसने कुछ बथुआ बटूर लिया। फिर आबिद अली का घर पार कर आगन म पहुचत ही हैरान रह गई—जो शख्स कल रात को नही आया, जिस शख्स के लिये वह कल प्राय सारी रात जागती बठी रही वही अब फटी चटाई पर नमाज की मुद्रा म बठा तहमद सी रहा है। नीला कथरी जसा चोला, मुश्किल आसान का नप, भिन्न भिन्न तावीज की मालायें और

तसबीह—इन सब विचित्र स्वतुओ के समन्वय से फकीर साहब इस वक्त घुडदौड के पीर जसे लगत।

जोटन ने फकीर साहब स कहा—सलामआलेकुम।

फकीर साहब ने अब जोटन का देखा और कहा—आलेकुम सलाम।

जलाली कमरे के कोने म घूघट काढे बठी है। जोटन के भी जी म आया कि इस वक्त बडा-सा घूघट काढ कर छोटी कोठरी म बठी रहे। लेकिन खिदमत म दिक्कत होगी इसलिये शम हया के लिये दिल न खोल सकी। वह जलाली के कमरे म घुसकर बोली यह शख्स खाना खायेगा आखिर क्या खिलाऊ।

जोटन की यह गुप्त बात फकीर साहब ने सुन ली।—मेरे लिये फिक्र मत करें। दो कौर साग भात बना दें। देखिएगा कसे मजे म खाकर उठता हू।

जोटन ने कहा जलाली दो ठो पाठी सूखी हुई देना।

जोटन ने खाना बनाने के लिये सरकडो के गटठर से कुछ सरकडे निकाले। कोठरी के पिछवाडे जाकर सरकडो का तड-तड तोड डाला और उनको सहेज कर कोठरी म घुसते वक्त उसने देखा—फकीर साहब उस वक्त भी अपनी तहमद म पबद लगा रहे हैं बाड की सध से जोटन फकीर साहब का चौडा चकला सीना और उनकी कलाई देखती रही—जिस्म स खुदा का महसूल वसूल होते ज्यादा देर नही लगगी—इसलिये सुखी मन स जोटन खाना बनाने बठ गई। दो साल हो गये यह जिस्म प्राय रात को बेशर्मी से बईमानी करना चाहता है। रात को जितनी बार भी ऐसा होता था जाटन फटी चटाई पर बठ अल्लाह का याद कर इन नाहक ख्वाहिशा को खदेडना चाहती थी। तीन तीन बार तलाक पाकर जोटन मानो समझन लग गई है कि उसके जिस्म की आग ठडी करन की कवत मर्द म नही थी—इस लिए तलाक दिया—बोला इबलिस की भूख—बस, खाऊ खाऊ। उसने चूल्हे म फिर कुछ सरकड डाल दिये और टट्टर की सध से फकीर साहब का बदन देखा। सारा चावल ही उसने पका डाला। दो जने का भात। दोना सूखी मछलिया को वह आग म भून ले रही है वह बहुत से चटगावी लाल मिच पत्थर पर पीस रही है दो बडे-बडे प्याज काटकर सूखी मछली का भुर भुरा कर मिट्टी की थाली म एक किनारे रख दिया। फिर मिच प्याज और नमक म सूखी मछली का भुत्ता बनाने म उसकी जीभ पनिया गई अब वह चाहे तो दो जन का भात अकेला खा ल सकता है। लकिन घर पर महमान है—अपनी

व दाने गिर रहे हैं तो वे उगली के सिरे से उठा कर मुह में डाल ले रहे हैं माना यह मोटा भात खत्म हो जाने पर फिर नहीं मिलेगा—अल्लाह की बेशकीमती दौलत है। थाली का भात खत्म करते ही उन्होंने देखा जोटन और एक थाली भात सामने लाकर रख रही है। वह भात भी उन्होंने बड़े इतमीनान से खत्म किया। और भात के इंतजार में फिर भी बैठे रहे। सहसा आविष्कार की मुद्रा में वे चटाई और थाली से संलग्न भात भी उंगली के दबाव से उठा कर मुह में डाल फिर बैठ रहे। नमाज की मुद्रा में फकीर साहब के बैठे रहने का यह ढंग बड़ा ही आरामदायक है। जोटन कोठरी के भीतर से वह सब गौर कर शर्म से गड़ी जा रही है। उसने हंडिया में हाथ डाला। आखिर दो मुट्ठी भात थाली में डाल भुर्ते का अवशेष उसके द्वार पर रख चटाई पर रख दिया। फकीर साहब बोले बस करें। अब आप जाकर खाइए।

जोटन कमरे के एक कोने में बैठी रही। उसका सिर चकरा रहा है। वह खूंटी का सहारा लेकर बैठी। कमर से धारीदार साड़ी खसकने लगी है। आबिद अली नहीं जब्बर नहीं—वे रहते तो कहती मेरी कोठरी गिरवी रख कर एक बार के लिए पेट भर भात दे दें। भूख की तड़प जब बरदाश्त न हुई तो उसने बथुआ साग उबाला और खा लिया। कुछ अधपके बेंत फल तोड़ लाई और खा लिया। इस समय आंगन में पड़ा की छांह लंबी होती जा रही है। कौवे, मैना सभी झाड़ियों और जंगलों में ऊंघ रहे हैं। फकीर साहब फटी चटाई पर लेटे सो रहे हैं। जोटन से अब और बैठा न गया। जिस्म की जड़ता के कारण वह धारीदार साड़ी का आंचल बिछाकर फर्श पर पेट रख कर सो गई।

तिपहर को जब आंगन के ऊपर से चिड़िया चहचहा कर चली गई सात बहन जब लौकी के मचान के नीचे किच किच करने लगी या धान के गट्ठर लादे जब किसान सड़क से जाने लगे तब जोटन ने अपने थके और बेकल शरीर को ऊपर उठाया। फकीर साहब बैठे हुक्का पी रहे हैं। सारी पोटलिया तरतीब से बंधी हैं मानो अभी वे उठने वाले हैं, बस हुक्का पीना रह गया था। जोटन से अब रहा न गया। कमरे से ही बोली फकीर साहब मुझे न ले जाइएगा।

फकीर साहब ने झाली पोटली कंधे पर डालते हुए कहा आज नहीं। फिर किसी दिन। कुरबान शेख के मिलाद शरीफ में जा रहा हूं। कब लौटूंगा कोई ठीक नहीं। आंगन से उतर जाते समय दरवाजे की आड़ में जोटन के खुश्क चेहरे

पर दर्द की रेखाएं पन्दर उन्होंने उच्चारण किया—अल्लाह रसूल, हाय ख्वाहिशों की इस दुनिया में हम लोग कितनी दूर जाएंगे और कितनी दूर जा सकते हैं। फकीर साहब ने इसी ढंग से चिंता की। चलते हुए उन्होंने ताड लिया कि जोटन की आंखें अब भी उनका पीछा कर रही हैं या मानो जोटन न देखा मालती के शरीर पर हंस के पंख—इच्छा का जल उस पर फिसलता टपकता जा रहा है या पीर का शरीर मानो के गीत के मुख्य गायक की लाठी है मानो—चला जा रहा है चला जा रहा है—बाद ना मुंह बनाये चपटी-चपटी नाक और आंख में जोटन के सारे दुखों को देख रहा है। जोटन अब दहाड मार कर रो पडी—अल्लाह रे तेरी दुनिया में मर लिये कोई भी नहीं।

जाने कब से एक हल्दीया लगातार बोलता जा रहा है। घर के उत्तर में मोया घास का जंगल है। अब वहां तरह-तरह के कीडे पतंग उड रहे हैं। मगर जम बडे बने दो गोह लुढकते हुए झाडी के भीतर घुस गये। वह पंछी फिर भी बोलता जा रहा बोलता जा रहा है। मालती शरीफे के पेड के नीचे खडी सब सुनती रही। अधिक और नीचे जाने की उस हिम्मत नहीं पड रही है। एकादशी के अगले दिन मिचदार कुछ खाने को जी करता। बेंत का कोपल भात में उबाल कर खाने को जी कर रहा है। नम-नम कोपल जरा सरसों का तेल और हरी मिर्च हो तो क्या कहना। बेंत के नम कोपल काटने के लिए मालती शरीफे के पेड के नीचे खडी रही। बेंत की झुरमुट में वर्षा का छना झाडी के भीतर वह पंछी बोलता ही जा रहा है या साप अगर दौना खा डाले या चिडिया को लील ले—एस डर से मालती पेड के नीचे से हिल न सकी। मालती के हाथ में एक लंबा-सा बांस। बांस के सिरे पर वह एक छोटी-सी कटारी बांध लाई है। वह बस आनाकानी कर रही थी। पेड पर शरीफे के फूल की महक।

बैंगन का एक छोटा-सा खेत पार करते ही आभारानी का रसोई घर है। नरेनदास की कोई आहट नहीं मिल रही है। करघे वाली कोठरी में अमूल्य कपडा बुन रहा है। कभी-कभी उसका गाना भी तिरता हुआ आ रहा था।

वे दान गिर रहे हैं ता व उगली के सिर म उठा कर मुह म डाले ले रहे हैं मानो यह मोटा भात खत्म हो जाने पर फिर नहीं मिलेगा—अल्लाह की बेशकीमती दौलत है। थाली का भात खत्म करते ही उन्होंने देखा जोटन और एक थाली भात सामने लाकर रख रही है। वह भात भी उन्होंने बडे इतमीनान स खत्म किया। और भात के इतजार म फिर भी बैठे रहे। सहसा आविष्कार की मुद्रा म वे चटाई और थाली से सलग्न भात भी उगली के दबाव से उठा कर मुह म डाल फिर बैठे रहे। नमाज की मुद्रा म फकीर साहब के बैठे रहने का यह ढग बडा ही आरामदायक है। जोटन कोठरी के भीतर से वह सब गौर कर शम से गडी जा रही है। उसने हडिया म हाथ डाला। आखिर दो मुट्ठी भात थाली म डाल भुर्ते का अवशेष उसके छोर पर रख चटाई पर रख दिया। फकीर साहब बोले बस करें। अब आप जाकर खाइए।

जोटन कमरे के एक कोने म बैठी रही। उसका सिर चकरा रहा है। वह खूटी का सहारा लेकर बैठी। कमर स धारीदार साडी खसकने लगी है। आबिद अली नहीं जब्बर नहीं—वे रहते तो कहती मेरी कोठरी गिरवी रख कर एक बार के लिए पेट भर भात दे दे। भूख की तडप जब बरदाश्त न हुई तो उसने बथुआ साग उबाला और खा लिया। कुछ अधपके बैंत फल तोड लाई और खा लिया। इस समय आगन म पेडो की छाह लबी होती जा रही है। कौवे मने सभी झाडियो और जगलो म ऊघ रहे हैं। फकीर साहब फटी चटाई पर लेटे सो रहे हैं। जोटन स अब और बैठा न गया। जिस्म की जडता के कारण वह धारीदार साडी का आचल बिछाकर फर्श पर पेट रख कर सो गई।

तिपहर को जब आगन के ऊपर स चिडिया चहचहा कर चली गई सात बहन जब लौकी के मचान के नीचे किच् किच करने लगी या धान के गट्ठर लादे जब किसान सडक स जाने लगे तब जोटन ने अपने थके और बेकल शरीर का ऊपर उठाया। फकीर साहब बैठे हुक्का पी रहे हैं। सारी पोटलिया तरतीब स बधी हैं मानो अभी वे उठने वाले हैं बस हुक्का पीना रह गया था। जोटन से अब रहा न गया। कमरे स ही बोली फकीर साहब मुझे न ले जाइएगा।

फकीर साहब ने झोली पोटली कधे पर डालते हुए कहा आज नहीं। फिर किसी दिन। कुरबान शख के मिलाद शरीफ म जा रहा हू। कब लौटूगा कोई ठीक नहीं। आगन स उतर जाते समय दरवाजे की आड म जोटन के खुश्क चेहरे

पर दद की रेखाए पत्थर उन्होंने उच्चारण किया—अल्लाह रसूल, हाय, ख्वाहिशा की इस दुनिया म हम लोग कितनी दूर जाएग और कितनी दूर जा सकते हैं। फकीर साहब ने इसी ढग मे चिंता की। चलते हुए उन्होंने ताड लिया कि जाटन की आखें अब भी उनका पीछा कर रही हैं या मानो जाटन न देखा मालती के शरीर पर हस के पख—इच्छा का जल उस पर फिसलता टपकता जा रहा है या पीर का शरीर मासी के गीत क मुन्न गायक की लाठी है मानो—चला जा रहा है चला जा रहा है—चाद सा मुख बनाये चपटी-चपटी नाक और आख स जाटन के सारे दुआ को देख रहा है। जोटन अब दहाड मार कर रो पडी—अल्लाह रे, तेरी दुनिया मे मर लिय कोई भी नही।

जाने कब से एक हडगीला लगातार बोलता जा रहा है। घर के उत्तर म मोथा घास का जगल है। अब वहा तरह-तरह के कीडे पतगे उड रहे हैं। मगर जैसे बडे-बडे दो गोह सुस्ताते हुए झाडी के भीतर घुस गये। वह पछी फिर भी बोलता जा रहा बोलता जा रहा है। मालती शरीफे के पेड के नीचे खडी सब सुनती रही। आखिर और नीचे जाने की उस हिम्मत नही पड रही है। एकादशी के अगले दिन मिचदार कुछ खाने का जी करता। बेंत का कोपल भात म उबाल कर खाने का जी कर रहा है। नम-नम कोपल, जरा सरसो का तेल और हरी मिच हो तो क्या कहना। बेंत के नम कोपल काटने के लिए मालती शरीफे क पड के नीचे खडी रही। बेंत की झुरमुट म बर्रे का छत्ता झाडी के भीतर वह पछी बोलता ही जा रहा है या साप अगर छौना खा डाल या चिडिया को लील ले—ऐसे डर से मालती पड क नीचे से हिल न सकी। मालती के हाथ म एक लबा-सा बास। बास के सिरे पर वह एक छोटी-सी कटारी बाध लाई है। वह बस आनाकानी कर रही थी। पड पर शरीफे क फूल की महक।

बैंगन का एक छोटा-सा खेत पार करते ही आभारानी का रसोइ घर है। नरेनदास की कोई आहट नहीं मिल रही है। करघे वाली कोठरी मे अमूल्य कपडा बुन रहा है। कभी कभी उसका गाना भी तिरता हुआ आ रहा था।

नरेनदास की पत्नी आभारानी बरामदे पर बैठ मरगा साग म टटन काट रही है। मालती अब भी बेंत क कोपल सकर लौट नहा रही—उसन पुकारा। मालती आ मालती दिन चढ़ रहा है या नहीं।

शरीफा फूल की गध सूघती हुई मालती न सुना भी या नहीं। झाडी क भीतर से रह रह कर पक्षी का वह क्रन्दन। दूर म ज कर मत म हल चल रहा है। यह कौन सा महीना है फागुन भी हो सकता है या माघ का अत। मालती न खडे खड हिसाब लगाया। अभी जनार मिला वजह चला आ सकता है आकर कह सकता है मालती दीदी कपा भर पानी दीजिय। ऐसा ही सार स्वप्न देखत देखत या सुनत सुनत मालती न आवाज लगाई मामा मुझे जगल म घुसत हुए डर लग रहा है। हडगीला पक्षी तब स टिहकता चला जा रहा है।

—हडगीला टिहुक रहा है ना तेरा क्या?

—लगता है इस पक्षी का साप लील रहा है।

—तुमस कहा है।

मालती न बात नहीं बढ़ाई। मालती न देखा कछार पार कर शामू इधर चला आ रहा है। आकर कागज की तरह कुछ फेलू के जरिय पेड क तन स सटाये दे रहा है। मालती न पुकारा शा—मु—ऊ— श—शा—मू—ऊ।

शामू समझ गया कि मालती पति का शोक भूल जा रही है। समझा बचपन म जिस तरह मालती उससे झाड झखाड स फालसे मगवाती रही बेंतफल मगवाती रही या कूई—कोकावली के दिना म जिस प्रकार शामू कितने ही फूल फल तोड कर ला देता था उसी प्रकार आज भी शायद कुछ तोड लाने को कहेगी—उसने पड के नीचे स ही हाथ उठा कर जवाब दिया। बोला, आया। जरा इश्तहार तो टाग आऊ।

मालती पहल ही की तरह खुल गले स बोली कैसा इश्तहार है रे शामू?

—लीग का इश्तहार।

—वाह रे तेरे लीग। पहले सुन फिर लीग लीग करते रहना।

शामू के नजदीक आते ही बोली मुझे दो बेत के कोपल काट दे। कहकर कटारी और बास उसकी ओर बढ़ा दिया।

शमसुद्दीन ने कटारी बास के सिरे पर कस कर बाध ली। फिर झाडी के पास जाकर खडा हो गया। वह हडगीला अब उतना द्रुत नहीं टिहक रहा है। रह

रह कर बहुत दर-देर के बाद टिहक रहा है। वह जगल का रौंदता अदर घुम गया। तो कुछ कीडे पतिगे उड कर उसके शरीर पर बठ गये। उन कीडे-मकोडा का शरीर से उडा कर दा नम बेंत के कोपल वह काट लाया।—ले देख और भी चाहिए क्या।

—नही, मालती ने शामू से बास और कटारी जमीन पर रखने का कहा।

शामू ने बास जमीन पर रख दिया। मालती हल्के स उसे उठाकर चलने लगी। शामू पीछे पीछे आ रहा है, बिना मुह घुमाय ही मालती को इसका पता चल गया। मालती चाहती ह—शामू कटारी घर पर रख जाए। चलते चलते मालती को ख्याल हुआ—बदन पर ब्लाउज नही—खाली हाथ बहुत दूर तक उघरा हुआ बार बार धोती सभालने पर मानो वह अपने बदन को ढाप नही पा रही है। वह आदमी पीछे पीछे आत हुए उसके शरीर से—शरीफे फूल की गध ले रहा है सुगध लेन लते वह आदमी कितनी दूर तक जायेगा समझ नही पा रही है। मालती ने झट अपनी धोती के पल्लू से चदरे की तरह बदन को ढाप लिया। पीछे पीछे शामू आ रहा ह सोचते ही—शरीर म कोई कराकुल पछी है—वक्त वेवक्त बस बोलने लगता है कराकुल के बोल उठते ही मालती के रोए भरभरा उठे। इसलिए पीछे मुडकर ही बाली, शामू र शामू, तरे आने की कोई जरूरत नही। तू घर जा।

शामू ने खामोशी स कटारी नरेनदास के बरामदे पर रख खेतो म उतर गया। मालती बेंत का छिलका छीलती हुइ जाने कसी अनमनी हुई जा रही है। नम-नम लचीला गूदा। भात म पक जाने पर मक्खन-सा मुलायम हो जायगा। अरुवा चावल का सुवास,थोडा-सा घी और बेंत के कापल गले हुए—वधव्य का मनोरम भोज्य द्रव्य। एकादशी के (उपवास क बाद) अगले दिन ऐसा नम कापल पाकर मालती की जीभ पनियाने लगी। साथ ही साथ बचपन के कुछ चित्र उसकी आखा के सामने उभर आए। शमसुद्दीन रसो, रजित कितने ही दिन मालती को मदान से मजेंटा रग के फालसे ला दिये हैं। फिर किसी किसी मौसम मे बेंतफल, लटकन फल यहा तक कि मौलसिरी का फल जुगाड कर लान मे उन लोगो मे होड लग जाती थी। ऐसी सारी सुखद स्मृतियो म दिन बीतने पर भी मालती की रातें नही बीत पाती। खिडकी खुली छोडकर सफ़ेद जुहाई मे मदान की ओर देखते रहना उसे भाता। कभी-कभी उसी जुहाई म दानव सा एक

भाभी यह शामू पहले जैसा ही है। मैंने बुलाया और दौडता हुआ आया। बैंत का कापल काट दिया।

आभारानी ने कहा, क्या री, शामू ने तो कोई इम्तहान पास किया।

शामू ने अपने ननिहाल म रहकर इम्तहान दिया। तुम लागो के दामाद के पास एक नौकरी उसन तजबीज भी की थी लेकिन भाभी, क्या कुछ हो गया— इसस आग मालती कुछ बोल नही सकी, फफक फफक कर रोने लगी—भाभी अब मुझे जीने की इच्छा ही नही होती।

आभारानी ने कहा मत रो।

मालती भाभी के काम मे हाथ बटा रही है। धीरे धीरे उसने बेंत के नम कापलो को काट डाला। यह सब करत करते मन के भीतर ये सारी वाहियात घटनायें झाक जाए तो मालती चुप्पी लगा जाती। बडी बडी आखें किय वह गिरस्ती का सब कुछ देखती रहती और सभी कुछ निरथक सा लगने लगता। चुपचाप बठे रहन मे ही पति के साथ छोटे मोटे रूठ मनौवल की बातें याद पड जाती। आसुआ से आखो के कोर नम हो जाते। फिर मालती को कुछ भी अच्छा नही लगता। इसलिए बरामदे से उठ फिर बगन खेत पार कर जहा हडगीला बोल रहा था उस ओर चली गई। यह सुनसान जगह उसे अच्छी लग रही है। अनमने ढग से उसन नीबू के दरख्त से कुछ पत्ते नोच डाले। पत्ता को नाच नाच पर धर कर उसने चिता की। और अकारण के वस म हो प्रियतम का मुखडा सोचत-सोचत, अहा, कितनी सारी विचित्र मधुर स्मृतिया—फिर और भी न जाने क्या-क्या सोचकर उदास हो जाती।

यहा से वह हिज्जल का पेड साफ दिखाई दे रहा है। रास्ते से जो भी लाग गुजरे उन्होंने इश्तहार का झूलत हुए देखा। जो लोग पढ लेते हैं वे खडे हाकर इश्तहार पढ रहे हैं। शामू बकार है अत वह लीग का नेता है। शामू पेडो पर गाव-गाव म यह इश्तहार टागकर शाति का अनुभव कर रहा है। मालती को अब जोरों की इच्छा होने लगी कि इश्तहार पढकर देख लें। शामू ने इश्तहार मे क्या लिखा है। या चुपके से जाकर उसे फाड लावें। फाड डालने स किसी को पता भी नही चलेगा। शामू को पता चले तो सिफ पूछेगा, ऐसा क्यो किया ?

—क्यो नही करूगी। यह देश क्या तेरे ही जात बिरादरी वालो का है ?

—हमारे जात बिरादरी वाला का क्यो होगा। देश हमारा तुम्हारा सबका है।

—तो फिर इसलाम इसलाम की रट क्यों लगाये हो ?

—इसलिए कहता हूं कि हमारे जाति भाई गाय-बैल बने हुए हैं। आगे बढ़कर देख लें नौकरी तुम लोगों के लिए जमीन तुम लोगों की जमींदारी तुम लोगों की। शिक्षा-दीक्षा सब हिंदुओं के कब्जे में।

—बस। मन-ही मन मालती ने फैसला कर लिया और इश्तहार की ओर चलने लगी। इश्तहार झूल रहा है। सामने के धान-भरे खेत पार करने पर वह पेड़। पेड़ नरेन्द्रनाथ का है। मानो इस पेड़ पर इश्तहार टांगने का उद्देश्य है कि नरेन्द्रनाथ भी इसे एक बार पढ़कर देख ले—इसलाम खतरे में है। इस खतरे से पूरी कौम को नजात दिलाना है।

अब खेत सुनसान है। धान ऊपर यहां तक कि मटर के खेत भी सूने हैं। कुछ तबाकू और प्याज के खेत। वह मेड़ के ऊपर से जा रही है। सब लोगों ने मन में हल चला रखा है। सूखी जमीन। मिट्टी के बड़े बड़े ढेले। इस जमीन पर पग धरती वह सीधी चली गई। घुटने से ऊपर धोती उठाकर। तेज चलने के लिए धोती ऊंची कर वह भाग रही है। मिट्टी पर पैरों की छाप। शिशिर ऋतु के बाद आकाश नीलाभ स्वच्छ। मालती क्रमश पेड़ की ओर बढ़ती जा रही है। हवा में मालती के बाल उड़ रहे हैं। बगल की जमीन में कभी रसा और बड़ी डूब कर मर गये थे ऐसी स्मृति आते ही थोड़ी देर के लिये वह वहां ठहर गई। मानो आंसुओं से निरपेक्ष प्रेम के दायरे को इस जमीन पर लोगों ने कब अरसे से नींव डाल रखी है।

वह चलती रही। इश्तहार अब भी हवा में हिल रहा है। पेड़ के नीचे खड़े इश्तहार पढ़ते पढ़ते मालती उत्तेजित हो उठी। हक साहब ने नयी-नयी बात कही है। इश्तहार के एक कोने में नाजिमुद्दीन साहब की तस्वीर। मालती ने इस समय देखा दूर-दूर सारे खेतों में हल चलाये जा रहे हैं। वे हल जोत रहे हैं और गाना गा रहे हैं। शमसुद्दीन का यह विद्वेष मालती को सचमुच अच्छा न लगा। उसने इधर उधर देखा और सावधानी से इश्तहार को पेड़ से उतार लिया। फिर दनदनाती हुई घर की ओर चली आई और जहां हड़गीला सबेरे से बोल रहा है—वहीं खड़ी हो गई। पति का मुखड़ा याद आते ही उसके जी में आया कि चिल्लाकर कहे—मैं दुरुस्त किये देती हूं। शामू रे, तेरी सरदारी मुझे अच्छी नहीं लगती। तू तो बड़ा नेक आदमी था रे।

वह हुडगीला फिर बोलने लग गया है। कुहक-कुहक बोलता जा रहा है। झाडी की किस जगह से आवाज आ रही है—किसलिय यह निरतर बोलता चला जा रहा है मालती की समझ मे नही आया। आवाज मानो बहुत दूर स तरती चली आ रही है। मोथाघास के जगल मे पानी नही। पानी उतर गया है—पेड के तने पर पीला-सा दाग। वह पछी लगातार डहक रहा है—बेशक उसको कोई असह तकलीफ है। वह कई तरह से झाकने लगी—कभी बेंत की पत्तिया हटाकर, कभी ऊची डाली का सहारा लेकर तो कभी जमीन से एकाकार हो झाडियो जगला म वह पछी कहा है देखने के लिये वह उद्ग्रीव होने लगी। नागर माथा के जगल म घुसकर एडी ऊची किये उसनेझाका—पछी वहा नहीं है—यह शब्द झाडी के गहन अतराल से आ रहा है। घर स लग्गी लाकर भीतर की ओर कोंच कर देखेगी—ऐसा सोचकर पलटत ही उसने देखा भयकर काले रग का एक पानस साप रेंग रेंग कर झाडी के भीतर घुस जाने की कोशिश कर रहा है लेकिन हिल नहीं पा रहा है। लाल-लाल,बिलकुल अनार के दाने जसी आखें किये मालती को देख रहा है। पछी का आधा शरीर साप क मुह और गले के भीतर। इतन बडे पछी को भला कसे निगलने लगा है। मालती भय से चीख पडी भाभी आ के माजरा तो देखो। हुडगीला को पानस साप कस लील रहा है।

—अरी मरी तुझे काट खायेगा। कहकर आभारानी लपकती हुई आई और मालती को हाथ से पकडकर खीच ले आई। और मालती के ऊपर उठते ही उसने दखा शामू इधर ही दनदनाता चला आ रहा है। उसके मुख पर कार्तिक जैसी ही पतली मूछे और सारे अवयव पर रुठने के चिह्न। शमसुद्दीन आकर मालती के सामने खडा हो गया। नरेनदास की बीवी नगीच ही डरी-सहमी। लेकिन उसन देखा शामू बडा ही विनीत है। रुठे हुए जख्मी स्वर म वह बोला—तूने इश्तहार क्यो फाडा मालती।

—फाडा तो हुआ क्या ?

तुझे नही मालूम—कितनी परेशानी उठाकर इनका ढाका स मगवाना पडता है। आगे कभी न फाडना।

फाडूगी सौ बार फाडूगी—ऐसा कहन की इच्छा मालती को हुई। लेकिन शामू के मुख की ओर देख उससे यह कहा नही गया। उसने अब जाने क्या सोच कर कह डाला, देखा, कितने बडे हुडगील को वह साप लील रहा है।

शमसुद्दीन फौरन पलट कर खड़ा हो गया। और उसने देखा साँप पक्षी को पूरा ही लील चुका है और एक बार पूरा लील लेते ही रेंग रेंग कर शरीर को इधर ले आएगा। और अगर किसी वजह सांप के मुंह से यह पक्षी निकल जाय तो खैरियत नहीं। शामू ने अब घुड़की लगाई ऐ छोकरी तुझ कोई भय डर नहीं? जा घर जा।

—अरे वाह रे मुझ पर हुक्म चलाने वाले। मालती ने झगड़ालू औरत जैसे सहज में कहना चाहा। लेकिन नहीं बन सका तो ही ही कर हंस पड़ी।

—यह ठठाना धरा रह जायेगा मालती। मुंह से खाना फिसल जाय तो साँप का दिमाग काबू में नहीं रहता।

—आदमी का दिमाग क्या काबू में रहता है?

शमसुद्दीन ने आँखें कुछ छोटी छोटी करते हुए देखा। मालती को देखा। मालती के शरीर पर पूरब से बाढ़ आने की तरह या ज्वार पर आई नदी की तरह रूप और लुनाई का प्लावन आया हुआ है। विधवा होने पर क्या युवती औरत के शरीर पर रूप का सागर ठाठें मारने लगता है। मालती से शामू ने आखिरकार कहा जा घर जा। जंगल में मत खड़ी रह।

मालती हिली नहीं। मालती ने फिर झाड़ी के भीतर झांका। एक सूखी हुई शाख से साँप ने अपने शरीर को लपेट रखा है। लाल लाल आँखें अनार के दाने जैसी चमकती हुईं। वे जरा दूर आकर खड़े हो गये। वे अब बातें नहीं कर रहे हैं—चिड़िया को साँप के गले के भीतर गायब हो जाते देख रहे हैं। गला फूल फूल कर अचानक पतला हो गया। फिर साँप मुर्दे की तरह शाख से लटकने लगा।

अगले दिन सवेरे सवेरे डर कर मालती ने बत्तखों को हाक हाक कर तालाब तक पहुंचाया। फिर एक पेड़ की जड़ पर बैठ पानी में अपनी परछाहीं देखने लगी। तन पर सफेद धोती तन की लुनाई इस धोती के बेढंगे रंग के कारण दब नहीं रही है। मालती का सोनल तन—तितली सा मन। हालांकि रात को गहरी नींद के लिए इस समय पेड़ के इस तने जैसा ही मन बड़ा निर्बोध है।

पैर के पंजे डुबोये पेड़ की जड़ पर वह बैठी है। बत्तखें पानी में उतर कर तैरने लगेंगे। और एक तरह का खेल—वे पानी पर तैरते हुए या डुबकी लगा कर बहुत दूर तक चले जा रहे हैं और ऊपर निकल आते ही नर-बत्तख दूसरे बत्तखों पर झपटने लगता या वह नर बत्तख भागता हुआ—जिस प्रकार उसका आदमी भाग

भाग कर कमरे के भीतर या बाग के भीतर और रात अधेरी होते ही लुकाछिपी का खेल—छू ना तो जाने खेल—खेलत खेलते जब उससे और भागा नही जाता था तब वह आदमी उसको वाहा म भर लेता वाहा म उसका सारा शरीर उठा लेता और किसी पहाड या नदी के किनारे चला जाना चाहता था—कसा सुख सुख खेल—इस वक्त ये बत्तख वसा ही सुख-सुख खेल खेल रहे हैं। मालती के पर क्रमश सुन पडते जा रहे हैं—शरीर सख्त होता जा रहा है। खूबसूरत पर पानी के नीचे रामचिरैया की नाइ डूबत जा रहे हैं। रह रह कर बस रजित याद आ रहा है। वह तब बालक था। ठाकुरबाडी की बडी बहू का छोटा भाई। वह इस समय कहा है कौन जाने। सुना है कि वह अब लापता है। किसी को भी उसके बार म कुछ मालूम नही।

तालाब के दूसरे किनार की झाडी मे एक बडी सी मछली ने हरकत की। किशोर वय म मालती मछली पकडती थी—जब बरसात हुआ करती थी, जब गहनी नाव पर बादवान तन जाता था झोप-झाडी मे टुनी फूल खिले रहते थे, तब इसी घाट पर कितन ही चेलवा डारकीना और साढी पहनी हुई पौंठी मछली पतली-सी बसी मे मालती बरसात मे साडी पहनी हुई पौंठी मछलिया पकडा करती थी। एक दिन सुनसान शाम को बगल म खडे मछली पकडते हुए रजित न फुसफुसाकर कहा था—चलोगी ? चलोगी मालती ?

मालती जानती थी कि रजित इस बात के जरिय क्या कहना चाहता है। वह नासमझ जसा ही एक बाल बाल-सा भाव अपन चहरे पर बनाय रहती। रजित आग कुछ भी न कह पाता था।

मालती पड की जड पर बैठी रही। उठने का जी नही कर रहा है। तालाब का पानी नीचे उतरता चला गया है। इस पेड के तन को भी लुढ़का कर नीचे उतारा गया है। पड का तना सीढी जसा बना था—उस वक्त भी यह तना यहा था। रसो, रजित और शामू बरसात म तन से पानी म छलाग मारते थे डूबते उतराते या तरते बरसात के पानी मे झाप-झाडी म छिपकर मालती को डरात थे। रात के कुछ-कुछ सपन, तालाब का जल, बत्तखो का सुखी जीवन, सामने का मदान या जो गहू के खत कुछ किमाना का एक ही स्वर म फसल काटने का गीत गाना—सब मिल मिलाकर मालती को विभार बनाय रहा। रात के कुछ सपन धुधली स्मृतिया की तरह प्रियतम का मुखडा माना गधपादाल की झाडियो से

झाक रहा है। प्रकृति की यह नीरवता और प्रभात की यह माधुरी मालती का कलेश से मार रही है। हिज्जल पेड पर शामू न इश्तहार टांग दिया। छि य छि यह देश क्या से क्या होता जा रहा है। मालती अब तालाब स मुख हाथ धोकर ऊपर उठ आई। प्रियतम का मुख स्मृति के अथाह से निकाल कर ईश्वर का नाम स्मरण करते हुए मालती ने पाया कि उसकी आखो म आसू हैं।

नरेनदास पश्चिमटोला से लौट रहा है। उसके हाथा म बड़े झीगा माछ हैं। उसने देखा मालती खडी खडी वेसुध सी हो वत्तखो का तरना देख रही है। नरन दास ने जानबूझकर गले से अपनी उपस्थिति का एक शब्द सा किया और जब देखा सकोच से मालती इत्ती सी सिमट कर रह गई है मानो उसका कुछ ताड लिया गया है—यह जो खेल है बतखो का खेल—यह मन उसके निय इस जीवन म अब शायद नही होगा—सब कुछ समाप्त हो चुका है। उसन अदभुत विह्वलता से देखा। नरेनदास ने भी सरल बालक की तरह मानो वह कुछ भी भाप नहा सका है ऐसी आखो स देखा। बोला देख-देख कितने बडे-बडे झीग पकड लाया हू। मछलियो को भात म पका लेना। लेकिन तभी उस याद आया दास की वहिन मालती विधवा है। एक लबी-सी ठडी सास दबाकर वह घर के भीतर चला गया।

मालती दादा के साथ तालाब के किनारे से जाते वक्त बोली दादा यह शामू हिज्जल पर इश्तहार टाग देता है उस मना कर देना।

—मना कर दूगा तो कहीं और टाग देगा।

मालती समझ गई कि विरोध करने म नरेनदास सचमुच असमथ है। इसलिये महीने भर के बाद शमसुद्दीन जब फिर इश्तहार टागने आया मालती मदान पार कर पहुच गई। बोली इश्तहार नही टागोगे।

—क्या ?

—पेड हमारे दादा का है।

—तो क्या हुआ ?

—तेरा कोई पेड हो तो उससे टाग दे।

—यह मेरा पेड है। तुझसे जो बन पडे सो करना।

—बडी-बडी बातें मत करना शामू। कल का छोकरा अभी से बडे मातबर बन गये हो। तेरी नाक से अभी दूध की महक आती है।

—तेरी नाक म किसकी महक है री छोरी। कहकर पेड पर चढकर काफी

ऊ चोई पर उसन इश्तहार टाग लिया। —ले उतार जरा। देखें तेरी कूवत।

—अच्छी बात। मालती दनदनाती घर चली आई। गाव गाछ के नीचे आकर खडी हो गई।

शामू न मालती का यह गुस्सा देखा तो मन ही मन हसा। मालती पहल जसी ही जिद्दी मालती है। किंतु मन मे कोई शपथ बराबर काम किये जा रही है। गाव म चल जाते समय उसके मुख पर दृढता दिखाइ पडी। लेकिन गाव की हरियाली जगल झाडी देखकर उसका मन नम हो गया है। मालती के शरीर का रग अनाज के दाने जसा है—इसके अलावा बचपन की कुछ सुहावनी घटनायें पति की साम्र दायिक मौत और विधवा का वेश, सब कुछ मिलमिलाकर शामू के मन म अपार वदना का सचार कर रहा है। यह उग्र जाति-बोध उसे अच्छा न लगा। वह दौडने लगा। अब वह हिज्जल पड पर इश्तहार नही टागा करेगा, कही और जाकर इश्तहार टाग देगा। दौडत हुए मदान पहुचकर ही उसन दखा हिज्जल पेड के नीचे मालती—एक लबे बास से—लगता है वही बास जिससे उसन बेंत के कोपल काट थे—खींच खीच कर इश्तहार नीचे उतार रही है। जान कैस शामू के पैर का सारा खून दिमाग पर चढ गया। जोश से अधीर शामू स्थिर नही रह सका। नजदीक आकर क्रुद्ध चेहरा ने खडे होते ही मालती हस पडी।—क्या, देख लिया न उतार सकती हू या नही।

मालती की इस उछाह का अपमानित करने की स्पृहा है शामू की। इस थोडा घडी की घटना म अपनी कमजोरी का जिम्मेवार समझ कर बडे ही रूखे और रूखी आवाज म वह बोल पडा, तू विधवा हो गई है न मालती? यह हसी तेरे मुह पर सुहाती नहीं।

—हाय—र—शामू। इश्तहार के साथ मालती ढलक-सी पडी और पेड की जड पर बठ गई। बच्चे की तरह रुलाइ म फूट पडी। फफकने लगी। विधवा का हसना नही चाहिये। मानती विधवा है शामू ने बार-बार इस बात की याद दिलायी। मालती का एसा चेहरा बरदाश्त न कर सकने की वजह स शामू गाव की ओर चला जा रहा है। मालती क्रमश शात हो गयी। पैर के पास इश्तहार। मदान सूना है। उसन अब मुह उठाकर दखा, शामू नही है—दूर गाव की ओर चला जा रहा है। मेल के कुछ ढोर डगर जा रहे हैं। उनके गल मे घटिया बज रही हैं। कुछ लटकन के दरख्त, इस समय बसन्त का मौसम है इसलिए दरख्त पर

कोई फल नहीं। तरह तरह के पछी उडकर इस इलाके म आ गये हैं। झील का पानी घट गया है—उस बडे झील म, बाबुआ के हाथी के आन की बात है क्योंकि इन दिनों झील के जल म तरह-तरह के हस उडकर आयेंग। उस ख्याल हुआ, मुद्दत स वह उस हाथी, मुडापाडा क हाथी के गल की घटा सुन नहीं सकी है। यह हाथी देखने पर उसका साहस मिलता है।

फिर इस इलाके की घास फूल पछी चन की गम हवा को झलते हुए काल वशाखी (वशाखी आधी) की प्रतीक्षा म रहे। अब मदान भाय भाय कर रहा है। आसमान कासे के बरतन की तरह रग स धूसर बन गया है। कुछ परिंदे आस मान मे उडने पर लगता है कि खर पतवार उड रहे है। मानो यह मदान और नदी और तरबूज सेन जलकर खाक हो जायेंग। सूरज का रग नारगी क छिलके की तरह। पलाश के पड नग-नग स। समल पर नए पत्त आ गए हैं। धान क खत उडद के खत सभी इस समय जोतने गोडन लायक हो गय हैं। इस समय जोतने पर फसल अच्छी होगी खर पात-दूब नहीं उगेंग। ठाकुरवाडी के छोट मालिक खता की जुताई गुडाई कसी हो रही है देखकर लौट रहे हैं। मालती ठाकुरवाडी के धनकर्त्ता के छोटे बेटे सोना को गोद म लकर आ-आत तू करती या मेरा सोना लाल रे कहती पड के नीच खडी तिजहर की हवा सेवन कर रही थी। माझी बाडी के श्रीशचद ददी क हाट जायगा नरेनदास को एक बडल सूत खरीद देगा—यही सब जानन क लिए इधर चला आ रहा है। मालती को देख कर उसने पूछा—तरा दादा कहा है ? मालती ने कहा दादा करघे पर ताना पाई कर रहे हैं। आपकी तबियत तो ठीक है चाचा ?

जवाब म श्रीशचद ने कहा बस ऐसी ही है। अब हाट का कोई मजा नहीं रहा बेटी। परापरदी क बाजार म सार मुसलमान इकट्ठे हो गय हैं। उन लोगा ने तय किया है कि हिंदुआ की दुकान से आग कुछ भी नहीं खरीदा करेंग।

जाने क्या हो गया इस दश म। मालती अब एक पलाश की ओर देखती हुई ऐसा सोचने लगी। सोना उसके सीन स चिपटा हुआ है। शायद अब सो जायगा। हर कहीं ठडी हवा चलने लगी है। शरीर ठडा हो रहा है। शरीर और मन दोनो ही हल्के लग रहे हैं। शामू ढाका चला गया है। इस मुहल्ल म शामू बहुत दिना से नहीं आ रहा है। शायद पछताव स नहीं आ रहा है। ऐसा ही जब वह सोच रही थी मालती ने देखा एक मानवर किस्म के मिया आकर हिजल पेड

कोई फल नही। तरह-तरह के पछी उडकर इस इलाके म आ गय है। झील का पानी घट गया है—उस बडे झील म बाबुआ के हाथी के आन की बात है क्योकि इन दिना झील के जल म तरह-तरह के हस उडकर आयेंग। उसे ख्याल हुआ मुद्दत स वह उस हाथी, मुडापाडा के हाथी के गल की घटी सुन नही सकी है। यह हाथी देखने पर उसका साहस मिलता है।

फिर इस इलाके की घास फल पछी चन की गम हवा को झेलत हुए काल वशाखी (वशाखी आधी) की प्रतीक्षा म रहे। अब मदान भाय भाय कर रहा है। आसमान कास के बरतन की तरह रग स धूसर बन गया है। कुछ परिंदे आस मान म उडने पर लगता है कि खर-पतवार उड रह हैं। मानो यह मदान और नदी और तरबूज खेत जलकर खाक हो जायेंगे। सूरज का रग नारगी के छिलके की तरह। पलाश के पड नगे नगे स। सेमल पर नए पत्ते आ गए हैं। धान के खत ऊन्द के खेत सभी इस समय जोतने गोडन लायक हो गये हैं। इस समय जोतने पर फसल अच्छी होगी खर पात दूब नहीं उगेंग। ठाकुरवाडी के छोट मालिक खेता की जुताई गुडाई कसी हो रही है देखकर लौट रहे हैं। मालती ठाकुरवाडी क धनकर्त्ता के छोटे बेटे सोना को गाद म लेकर आ जात तू करती या मेरा सोना लाल रे कहती पेड के नीचे खडी तिजहर की हवा सेवन कर रही थी। मामी बाडी क श्रीशचद ददी के हाट जायगा नरेनदास को एक बडल सूत खरीद देगा—यही सब जानने के लिए इधर चला आ रहा है। मालती को देख कर उसन पूछा—तेरा दादा कहा है ? मालती न कहा दादा करघे पर ताना पाई कर रहे हैं। आपकी तबियत तो ठीक है चाचा ?

जवाब म श्रीशचद न कहा बस ऐसी ही है। अब हाट का कोई मजा नही रहा बेटी। परापरदी क बाजार म सार मुसलमान इकटठ हो गय है। उन लोगा ने तय किया है कि हिंदुआ की दुकान स आग कुछ भी नही खरीदा करेंग।

जाने क्या हो गया इस देश म। मालती अब एक पलाश की ओर देखती हुई ऐसा सोचने लगी। सोना उसक सीन म चिपटा हुआ है। शायद अब सो जायगा। हर कहीं ठडी हवा चलन लगी है। शरीर ठडा हो रहा है। शरीर और मन दोना ही हल्क लग रहे हैं। शामू दादा चला गया है। इस मुहल्ले म शामू बहुत दिना से नहीं आ रहा है। शायद पछताव म नहीं आ रहा है। ऐसा ही जब वह सोच रही थी मालती न देखा एक मातवर किस्म क मियां आकर हिजल पेड

मालती को बडा बेबस बनाये है। तब तक शमसुद्दीन सदर रास्त पर पहुच चुका है। उसने एकबार पलट कर भी नही देखा। मालती का लगा बहुत दिनों के बाद बडा मदान पार करते हुए वह भटक गई है।

इस प्रकार इस देश म बरसात आ गई। बरसात आते ही सारे जमीन-खेत कूला, झील नदी—सब डूब जाते हैं। सिफ गाव टापुओ की तरह तरत रहत हैं। बर सात आते ही बडी बडी नाव उज्जल चली जाती हैं। कूना झील मदान म बडी बडी मछलिया उठ आती। धान खेतो म कुररी अड देन के लिए घासल बनाती हैं। इस इलाके म रहने वाले नाते रिश्तेदार इसी समय घर घर म पहुनाई करते फिरेंगे। कुई-कोकावेली पानी पर खिल रहगे। जलपीपी फूल के ऊपर एक पर उठाये सतकता से पानी की ओर शिकार की आशा म निहारती रहती।

बरसात के आते ही बूढे मालिक महेंद्रनाथ स कमरे क भीतर बठे नही रहा जाता। वे धीरे धीरे बठक के बरामदे पर आकर बठ जात। हिरन के एक चमड पर बठकर वे सारी तिपहरी बिता दते। उनकी उम्र अस्सी स ऊपर है। आजकल आखो से बिलकुल दख नही पाते। फिर भी घर के आगन म, हरसिंगार पर या बाग म जहा जो तरह तरह क पड हैं कहा कौन सा दरख्त है, कौन सा फूल खिला हुआ हैं यहा आकर बठत ही उनका सब पता चल जाता है। उनके यहा आकर बठते ही धनबहू सोना को लाकर उनके बगल म छोड जाती। एक चटाई पर सोना हाथ पर हिला हिला कर खेला करता। महद्रनाथ बीच बीच मे उससे बोला करते हैं। उनकी कमर म चादी की करधनी हाथ म सोने के कडे, यह बच्चा हस हसकर वद्ध को विभिन्न वय के चित्रा की याद दिला देता है। वे इस अति परिचित तिजहरी की गध लेते-लेते सोना के साथ गुजरे हुए दिना की बातें करते रहते हैं—दोना ही माना समवयस्क हैं एक दूसर की बेबसी को महसूस करते हा। सोना अ—आ—त—त्त करता और बूढे व्यक्ति तब मानो देख पाते—पटसन की सेंटिया आगन म खडी हैं। आगन पार करते ही दक्खिन का घर। उसका दरवाजा। इस बदरारे दिन फतिगें बेशक उड रहे होगे। यह शरद ऋतु

है। शरद आते ही भूपेंद्रनाथ मुड़ागाड़ा से नाव भिजवा देंगे। अष्टमी के दिन महाप्रसाद का खलियाए हुए समूचे बकरे का गोश्त लाया जाएगा।

तब बड़ी बहू इधर आई। हाथ में गर्म दूध। श्वसुर के सामने दूध का कटोरा रखकर पैरों के पास बैठ गई। सामने तालाब है। आम-जामुन के पेड़ों की छाँह। फिर मशान। वर्षागम होने से बस जल और जल। जहाँ पटसन के खेत थे—पटसन कट चुके हैं इसलिए समुद्र या बड़े झील की तरह—मानों लावण्या की वह झील जिसमें राजकन्या जल में बहती चली जा रही है। बड़ी बहू नदी, मैदान और पानी देखकर पर ऐसी बातें सोच सकती है। बड़ी झील याद आती—ब्याह के दिन वही नाव पर वह इस जवार में आई थी। इतनी बड़ी झील में आ पहुँचते ही बड़ी बहू का दिल धड़कने लगा था कि उन्हीं लोगों ने इस झील का किस्सा छेड़ दिया—किंवदंती के कथावाचक की तरह कहते हुए चले—सोने की एक नाव और चाँदी के चप्पू इस झील के नीचे डूबे हुए हैं, एक राजकन्या भी। राजकन्या का नाम है सोनाई बीबी। इस समय बड़ी बहू बरामदे गगन की ओर देखती हुई पहले दिन पति के मुँह सुनी हुई झीलवाली कहानी याद कर जरा अनमनी हो गई। पति के दिमाग में क्या तभी से उलझन का कोई कीड़ा घुस गया था? वर्ना वर्षा के दिन हट जाने वाले लोगों की नाई ऐसा किस्सा वे क्यों सुनायेंगे।

बड़ी बहू ने सोना के मुख का रंग देखा। देखते देखते लगा यह मुख बाप जैसा नहीं न माँ जैसा। यह मुख घर के पागल व्यक्ति की तरह है। बड़ी बहू कलकत्ते में बड़ी हुई हैं कुछ दिनों तक कान्वेंट में पढ़ी हैं। पागल ठाकुर अब उसे पागल सा नहीं लगता। मानो अब वह उसके तईं मासूम की नाईं है या किसी यूनानी पुराण के वीर नायक की तरह—युद्ध क्षेत्र में हार कर रास्ता भूल गया है। बड़ी बहू ने कहा, सोना का मुँह आपके बड़े बेटे पर जायगा, बाबा।

महेंद्रनाथ जरा मुस्काये। फिर विषादमग्न हो गये। बोले, मणि की कोई आहट नहीं मिल रही है।

—तालाब के किनारे बैठे हैं।

महेंद्रनाथ मुद्दत से एक बात बताने की सोच रहे थे। बड़ी बहू से कुछ कहने की इच्छा थी। जैसा कि बड़ी बहू के पीहर वालों की धारणा है—शायद मन ही मन बड़ी बहू खुद भी उसी पर विश्वास करती हों लेकिन मैंने तो जीवन में कभी झूठ नहीं कहा, धोखाबाजी नहीं की। इस उम्र में तुमसे एक बात बताता हूँ।

चाहे पतियाओ चाहे नही, पर बताता हू। ऐसा सोचकर उन्होने कहा, बडी बहू, मेरा तो वक्त पूरा हो रहा है। सोच रहा था बहू कि तुमसे एक बात बताऊ।

बडी बहू मुस्कायी। बोली, बताइए न।

—जानती हो बहू मणि जब छुट्टी लेकर घर आता था तो मैं गव से सीना ताने रहता था। इस जवार म किसका ऐसा योग्य बेटा है बताओ। इसलिए मैंने तुम्हारे पिताजी को वचन दे दिया। लोग कहते हैं कि मेरा बेटा पागल हो गया है यह मैं ब्याह से पहले ही जानता था।

बडी बहू ने कोई जवाब नही दिया। वह वद्ध के बगल म सोना को गोद मे लिए बैठी रही।

—जानती हो बहू जिस बार मणि एट्रास इम्तहान मे वजीफा लेकर अव्वल आया—सभी से मैंने कहा नारायण ने मेरी नाक रख ली है। और ब्याह के बाद ही जब पागल हो गया तो मैंने कहा मेरे नारायण तमाशा देख रहे हैं। ऐसे ही समय हाथ बढाकर जाने क्या वह ढढने लगे।

आखें स्थिर। गदली सी आखें। बाल इतन सफेद दाढी इतनी सफेद कि यह शख्स सातावलज जसा लगने लगा। चमडा ढीला पड गया है। बडी बहू ने कहा, आपकी लाठी दे दू ?

—नहीं बहू, अपना हाथ दो तुम।

बडी बहू ने हाथ बढा दिया। वद्ध ने उस हाथ को अपने दोनों हाथो म दबाते हुए कहा बहू कम से कम तुम यह विश्वास कर लेना कि मणि तुम्हारे ब्याह से पहले पागल नहीं था। जान बूझकर एक पागल के साथ घर करने मे तुमको लिवा नहीं लाया था। इतना कहकर वद्ध न एकदम चुप्पी साध ली। आखो से आसू ढुलक रहे हैं। मुख की रेखाओ म कोई सलवट नही। एक बेलौस सा मुख, मुख पर कोई इच्छा की रेखा नही उभरी है केवल उदासी और उदासी। मृत्यु का यात्री बनन के लिए मानो पथ्वी के मुसाफिरखाने म प्याऊ खोले बठ हैं जिंदगी भर सबको जल पिलात रहे हैं अत म उसी जल की तलछट से मुह हाथ धोकर दूर का तीथ-यात्री बनन को उन्मुख हैं। मानो बहुत दूर स वद्ध बोलने लगे मणि की मां की बात मान लत तो शायद ऐसा न हुआ होता। सुनो बडी बहू मैं घर का मुखिया हू मणि मेरा बडा बटा है—वह भला मुहब्बत करके मलेच्छ लडकी स शादी करगा। यह कोई ठीक नहीं बहू। यह कोई ठीक बात नही।

य सारी बातें सुनने पर बड़ी बहू फिर स्थिर नहीं रह पाती। आँखें भारी हो जातीं। मोनल नौनिहाल प्यार करके पागल है। बातें करते ही माना अभी झर-झर आखों में आसू आ जायेंगे। उसने दूसरी बात की चलिए बाबा, आपको कमरे में पहुंचा आऊं।

—मैं जरा और बैठ लू बहू। बठने से मन कुछ हल्का रहता है। बरामदे पर बठे रहने से बगान के जूई-नोकावली की गंध मिलती है। उस समय लगता है ईश्वर के बहुत नजदीक हू। तुम्हारी मा कहा?

—मा गई हैं पद्मपुराण सुनने। क्या बाबा, आपका जी नहीं करता पद्मपुराण सुनने को।

—पद्मपुराण तो मैं स्वय हू। मैया री—जिंदगी में चाद सौदागर की भूमिका अदा कर रहा हू और तू बेहुला की। वृद्ध अब विलबित लय मे बोलने लगे मानो इस अवस्था म केवल वर ही दिया जा सकता है—इस समय ऐसी एक आयु है उनकी, ऐसे एक व्यक्ति हैं वे—ससार म यह व्यक्ति प्राय ईश्वर के ही समान है मानो—विलबित लय म मानो बहुत दूर से बोल रहे हैं—बहू तुम सती-सावित्री हो, तुम हमारी बेहुला हो। सुहाग तुम्हारा अक्षय बना रहे बेटी।

गहरी रात। बड़ी बहू नींद मे बेसुध। कमरे मे एक बत्ती टिम टिमा रही है। वर्षा की जलभरी हवा कमरे म आकर बड़ी बहू के कपड़े-लत्तों का अस्त-व्यस्त किए दे रही है। बड़ी बहू ने दोनों हाथ अपने सीने पर प्राय प्रार्थना की मुद्रा मे रखे हैं। देखने पर लग, वह नींद में भी अपने आदमी के लिए ईश्वर के पास प्रार्थना कर रही है। उस समय मणीद्रनाथ कमरे म चहलकदमी कर रहे थे। उनकी आखो में नींद नहीं। सहसा उन्होंने दरवाजा खोल डाला। लगा नदी के उस पार व किसी का छोड आए हैं।

आकाश म अब भी इक्के-दुक्के नक्षत्र उजागर हैं। ठाकुरद्वारे के बगल म वह हरसिंगार फूल झर रहे हैं झर चुए हैं और कुछ अपने इच्छा से सलग्न हैं। व मिनमारे के लिए या धूप के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। मणीद्रनाथ न दोनो हाथों

से पेड के नीचे से कुछ फूल बटोरकर डंठल के पीले रंग को हाथ और मुंह पर मल लिया। रात खत्म हो आ रही है। जाने क्या सोचकर अब वे बसवारी के नीचे आकर खड़े हो गये। सामने घाट है—शायद वर्षा का जल आंगन में उठ आए। वे छोटे से कोषा नाव में उठकर लग्गी पर भार डालते ही नाव पानी मे उतर गई। कुछ गांव मैदान का चक्कर लगाकर वे उस नदी के किनारे चले जायेंगे—जहां उनका अन्य भुवन निस्संग निर्जन नदी तट पर सलता फिर रहा हो।

सिर में एक अनबुझा दर्द मणीद्रनाथ को सदा व्याकुल किये रहता। मणीद्रनाथ केवल निर्जनता ढूंढते रहते हैं।

कोषा नाव क्रमश गांव मैदान और धानखेत पार कर विशाल झील वाले जल में अदृश्य होती जा रही है। इस समय चारों ओर के गांव बड़े छोटे लग रहे हैं। आकाश के साथ सारे गांव मानो चित्र जैसे खिले हैं। कोई शब्द नहीं—भीषण सुनसान सन्नाटे से भरा प्रांतर। दूर में सुनहरे रेत वाली नदी की रेखा धीरे धीरे दृश्यमान हो रही है। मणीद्रनाथ पद्मासन किए बैठ रहे—साधु-संत जैसा ही उनके मुख का हावभाव। झीलवाली जमीन पर गहरा पानी—एक लग्गी से भी अधिक होगा। चुपचाप बैठ मणीद्रनाथ मानो इस जल में पलिन का मुखड़ा देख पा रहे हैं। जाने कैसे उसकी पलिन नदी के जल में खो गई। नदी किनारे कितने ही खेल सलत थे—कितने ही मल। हाय उस समय केवल वही दुर्ग याद आ जाता। बड़ा सा मकान मैदान के छोर पर दुर्ग दुर्ग से रह रह कर केवल फिरोजी कबूतर उड़ा करते थे। अब मणीन्द्रनाथ परमपुरुष की तरह खुले गले से कविता का पाठ करने लगे—कविता के अवयव में एक स्मरणचिह्न है मानो—कीटस नामक एक कवि थे—वे जीवित नहीं हैं। मणीद्रनाथ के मुंह से कविता सुनती हुई पलिन दुर्ग के गुंबद की ओर देखती अन्यमनस्क हो जाया करती थी।

सब्ज़ि-जल दरख्त पार करने पर नदी का घाट है। यह घाट पार करने पर मुसलमानों का गांव है। बहुत दिनों के बाद मानो उन्होंने इस घाट पर नाव बांधा। हर कहीं मन को प्यार गंवाये जा रहे हैं—सड़ाध आ रही है। इधर उधर जलकुम्भियां के गुच्छ—नीले और गाढ़े रंग के जलकुम्भी फूल और बतख घाट पर तैर रहे हैं। हर घाट पर कद्दू के मचान मचान के नीचे कद्दू के बेल उतर रहे हैं। गांव कुछ दूर भाग कर सतर्क पग रखते वे ऊपर उठ गये। एक निस्तब्ध गहन में पहुंचकर ही गांव के घाट से हमारा निवास आया। बाबा—

द बोलचाल ही निरथक है, फिर भी इतना बडा आदमी, भला उमर भी क्या होगी इस आदमी की वा जब हसन पीर की दरगाह म इस आदमी को उठे रहते देखा था—यह आदमी मानो बचपन पार कर जवानी म पैर रखे हैं जवानी से कतई हिल नही रहा, गठा हुआ जिस्म, जिस्म की बनावट बिलकुल द्रुतगामी घोडे की तरह—वह बोल पडा, हम लोग इतन दिन मे याद आए वडे भाई।

मणींद्रनाथ ने बडी बडी आखें किये हमीद को देखा। मुस्काये।

हमीद ने कहा, जरा बैठ जाइए बडे भाई।

मणीद्रनाथ उसके सहन म पहुच जान पर हमीद ने एक छोटी सी चौकी दी बठन के लिए। —बठिये बडे भाई। उसने सब लागो को पुकारत हुए कहा कौन कहा पर हो आओ देखो बडे भाई आए हैं। और साथ ही साथ हमीद की मा निकल आई हमीद की दो बीबिया आ पहुची। बेट बीबिया सब। और गाव भर में यह खबर दौड गई—सभी आकर मणीद्रनाथ को घेरकर खडे हो गये। सभी लोगा ने आदाब अज किया। मणींद्रनाथ काई बात नहीं कर रहे हैं जितनी देर न बोलें बेहतर। ऐसे समय हमीद ने भीड को हट जान के लिए कहा। मणीद्रनाथ सभी की ओर आखें फाड फाड कर देख रह हैं। हमीद ने तब अपनी छोटी बीबी स कहा बडे भाई की नाव पर एक कुहडा रख देना। माना पेड पौधा से जो कुछ अच्छा और नया मिलता हो—इस शख्स का बिना दिये खाना नही चाहिए।

फिर एक समय मणींद्रनाथ गाव मे चलने लगे। पीछे-पीछे गाव के छोटे-बडे नग बच्चे और बालक-बालिकाए गन्ने चूसते हुए मणीद्रनाथ के पीछे पीछे चलने लगे। वे उनसे कुछ भी कह नही रहे हैं। छाटे बडे गडढे गुच्चे बसवारी और कीचभरे रास्ते वाल रास्ते तय कर वे हाजी साहब क मकान के सामने आकर खडे हो गय। हुक्के की नली पर मुख रख कोलाहल सुन वृद्ध हाजी साहब ने भाप लिया कि आज बहुत दिनो के बाद पागल ठाकुर इस गाव म चला आया है। हुक्का छाडकर हाजी साहब लपके। बोले, ठाकुर बठ जाओ। इधर आत नही हो आजकल। हाजी साहब जानते हैं ये सारी बातें पागल ठाकुर के साथ करना निरथक है। फिर भी इतने बडे माननीय खानदान के हैं—कोई बात भी व उनसे न करें—पागल ठाकुर इस रास्त से चला जाए—यह कमा अटपटा सा लगता है।

मणीद्रनाथ यहा नही बठे। कई बार आखें उठाकर उन्होन हाजी साहब को देखा, फिर वही एक उच्चारण-गत् चारे तुसाला।

से पेड के नीचे से कुछ फूल बटोरकर डठल के पीले रग को हाथ और मुह पर मल लिया। रात खत्म हो आ रही है। जाने क्या सोचकर अब वे बसवारी के नीचे आकर खड हो गये। सामने घाट है—शायद वर्षा का जल आगन मे उठ आए। व छोटे स कोषा नाव म उठकर लग्गी पर भार डालते ही नाव पानी मे उतर गई। कुछ गाव मदान का चक्कर लगाकर वे उस नदी के किनारे चले जायेंगे—जहा उनका अय भुवन निस्सग निजन नदी तट पर खेलता फिर रहा हो।

सिर म एक अनबुझा दद मणीद्रनाथ को सदा व्याकुल किये रहता। मणीद्रनाथ केवल निजनता ढूढते रहत हैं।

कोषा नाव क्रमश गाव मदान और धानखेत पार कर विशाल झील वाले जल म अदृश्य होती जा रही है। इस समय चारो ओर के गाव बडे छोटे लग रहे हैं। आकाश के साथ सारे गाव मानो चित्र जस खिले हैं। कोई शब्द नही—भीषण सुनसान सन्नाटे स भरा प्रातर। दूर म सुनहरे रेत वाली नदी की रेखा धीरे धीरे दृश्यमान हो रही है। मणीद्रनाथ पद्मासन किए बठे रहे—साधु-सत जसा ही उनके मुख का हावभाव। झीलवाली जमीन पर गहरा पानी—एक लग्गी से भी अधिक होगा। चुपचाप बठे मणीद्रनाथ मानो इस जल म पलिन का मुखडा देख पा रहे हैं। जाने कसे उसकी पलिन नदी के जल म खो गई। नदी किनारे कितने ही खेल खलत थे—कितने ही मेल। हाय उस समय केवल वही दुर्ग याद आ जाता। बडा सा मदान मदान के छोर पर दुग दुग से रह रह कर केवल फिरोजी कबूतर उडा करत थे। अब मणीद्रनाथ परमपुरुष की तरह खुल गले स कविता का पाठ करने लगे—कविता क अवयव म एक स्मरणचिह्न है मानो—कीटस नामक एक कवि थे—व जीवित नहीं हैं। मणीद्रनाथ के मुह कविता सुनती हुई पलिन दुग क गुबद की ओर देखती अयमनस्क हो जाया करती थी।

पद्दह किनारा दरख्त पार करने पर नदी का घाट है। यह घाट पार करने पर मुसलमानो का गाव है। बहुत दिनो के बाद मानो उन्होन इस घाट पर नाव बाधा। हर कही मन की पगार सजाय जा रहे हैं—मडाथ आ रही है। इधर उधर जलकुभिया क झुड—नीले और सफेद रग क जलकुभी फूल और वत्तख घाट पर हिल डुल रहे हैं। हर घाट पर कद् क मचान मचान क नीचे कद् के बेल उतर रहे हैं। सब कुछ दख भाल कर सनक पग रखत व ऊपर उठ गये। एक निरन्तुर मस्जिद म पहुचते ही मस्जिद्न क पाछ स हमीद निकल आया। बाता—

सब बालचाल ही निरथक है, फिर भी इतना वडा आदमी भला उमर भी क्या होगी इस आदमी की, वो जब हसन पीर की दरगाह म इस आदमी को बठे रहते देखा था—यह आदमी मानो बचपन पार कर जवानी म पैर रखे हैं जवानी से कतई हिल नही रहा, गठा हुआ जिस्म, जिस्म की बनावट बिलकुल द्रुतगामी घोडे की तरह—वह बोल पडा, हम लोग इतने दिन म याद आए बडे भाई।

मणीद्रनाथ ने बडी बडी आखें किये हमीद को देखा। मुस्काये।

हमीद ने कहा जरा बैठ जाइए बडे भाई।

मणीद्रनाथ उसके सहन म पहुच जाने पर हमीद ने एक छोटी सी चौकी दी बठन के लिए। —बठिय बडे भाई। उसने सब लोगो को पुकारते हुए कहा, कौन कहा पर हो, आओ देखो, बडे भाई आए हैं। और साथ ही साथ हमीद की मा निकल आई, हमीद की दो बीविया आ पहुची। बेट, बीविया सब। और गाव भर म यह खबर दौड गई—सभी आकर मणीद्रनाथ को घेरकर खडे हो गये। सभी लोगो ने आदाब अज किया। मणीद्रनाथ कोई बात नही कर रहे हैं जितनी देर न बोलें बेहतर। ऐस समय हमीद ने भीड का हट जाने के लिए कहा। मणीद्रनाथ सभी की ओर आखें फाड फाड कर देख रहे हैं। हमीद ने तब अपनी छोटी बीवी से कहा बडे भाई की नाव पर एक कुहडा रख देना। माना पेड पौधा से जो कुछ अच्छा और नया मिलता हो—इस शख्स का बिना दिये खाना नही चाहिए।

फिर एक समय मणीद्रनाथ गाव म चलन लगे। पीछे पीछे गाव के छोटे-बडे नग बच्चे और बालक-बालिकाए गन्ने चूसते हुए मणीद्रनाथ के पीछे पीछे चलने लगे। व उनसे कुछ भी कह नही रहे हैं। छोटे बडे गडही गुच्चे बसवारी और कीचभरे रपटन वाले रास्ते तय कर वे हाजी साहब के मकान के सामने आकर खडे हो गये। हुक्के की नली पर मुख रखे कोलाहल सुन वद्ध हाजी साहब ने भाप लिया कि आज बहुत दिना के बाद पागल ठाकुर इस गाव म चला आया है। हुक्का छोडकर हाजी साहब लपके। बोले, ठाकुर, बैठ जाओ। इधर आते नही हो आजकल। हाजी साहब जानते हैं ये सारी बातें पागल ठाकुर के साथ करना निरथक है। फिर भा इतने बडे माननीय खानदान के हैं—काई बात भी वे उनसे न करें—पागल ठाकुर इस रास्ते स चला जाये—यह कसा अटपटा सा लगता है।

मणीद्रनाथ यहा नही बठे। कई बार आखें उठाकर उन्होन हाजी साहब को देखा, फिर वही एक उच्चारण-गत् चोरे तुमाला।

हाजी साहब हँस फिर नौकर को बुलाकर बोले पागल ठाकुर की नाव पर दो गौर केले रख आना। हाजी साहब ने मानो मणीन्द्रनाथ से कहना चाहा—ठाकुर ये केले ले जाओ पक जायें तो खाना। अपने दरख्त के केले हैं—तुमको दिये बिना खाने पर मन में एक कलक बना रहेगा। इसके बाद हाजी साहब ने मानो अल्लाह से शिकवा के अंदाज में कहा ऐ खुदा बूढ़े मालिक की तकदीर में यह भी लिखा था।

बरसात। बार-बार बारिश होने की वजह से रास्ते बेहद कीच भरे। कहीं घुटने तक डूब जा रहे हैं—इसलिए मणीन्द्रनाथ को चलने में दिक्कत हो रही थी। रास्ते के दाना और कूड़ा-करकट मल मूत्र की दुर्गंध। मणीन्द्रनाथ को इन बातों का कोई भान नहीं। गाँव की मुसलमान बीवियाँ पागल ठाकुर को देख पलभर में अपना को घर में छिपा ले रही हैं। वे बड़े निःस्व हैं। इसलिए बदन पर पर्याप्त कपड़ा नहीं। प्राय सभी मर्द इस वक्त खेतों में या और कहीं पटसन काटने चले गये हैं। वे शाम को लौटेंगे। गाँव का चक्कर लगा मणीन्द्रनाथ फिर आकर नाव में बैठ गये। फिर उद्योगी पुरुष जैसे सारी संगृहीत सामग्रियों को एक किनारे सजाकर रखने के बाद वर्षा के जल में नाव खेने लगे। घाट पर नंगे बच्चे, लड़के लड़कियाँ ने पागल ठाकुर को दुखी मन से बिदा किया। और इसी समय वे याद कर गये कि बड़ी बहू इंतजार करती रहेगी—और बड़ी बहू के लिए उनका दिल अकुलाने लगा। बड़ी बहू की उन गहरी आँखों ने मणीन्द्रनाथ को गृहाभिमुख कर दिया। लेकिन झील में उतरते ही मणीन्द्रनाथ के घर लौटने की इच्छा हवा हो गई? वे झील के भीतर चुपचाप बैठे रहे। कितनी देर तक वे इस तरह बैठे रहे कितनी देर तक वे सबेरे का सूरज देखते रहे विश्वासघोना नया टापा के ऊपर कौवों के एक झुंड का उपद्रव और धानखेत में कुरर का डुब-डुब शब्द कितनी देर तक उनको अनमना बनाये रहा उनको नहीं मालूम। वे पानी में उतर गये और निमग्न जल में तैरते रहे—शरीर में ढेर सारी गरमी है—इतनी बार डुबकी लगाने के बाद शरीर के भीतर का वह दहन वे दूर नहीं कर पा रहे हैं। इस सुनसान झील में आकर चुपचाप बैठे वे कितनी बार सोचते रहे हैं कि अपरिचित सारे शब्दों का अस्पष्ट उच्चारण से वे विघ्न होंगे। लेकिन नहीं हो पा रहा है। जाने कब से मानो कुछ क्रमशः स्पष्ट होता जा रहा है। सभी कुछ जाने कब स्मृति के अतल में डूबता जा रहा है। जीवन धारण के लिए क्या करना कर्तव्य है—केवल विचार

कर भी तय नही कर पा रहे हैं। तब भयकर भुनलाहट उनको और भी प्रगट कर देती। दोनो हाथ ऊपर उठाकर वे चिल्लात रहते—मैं राजा होऊगा।

शाम को भूपेंद्रनाथ कमस्थन से आए। कई रोज स काम काज के बीच बाप के लिए मन बडा बचैन सा लग रहा है। इस बूढे व्यक्ति स भूपेंद्रनाथ का बडा लगाव है। अब भी मानो वे सभी को अगोरे बठे हैं। प्रथम वय म भूपेंद्रनाथ के कुछ आदश थे। अब वे नही रहे। स्वतत्रता आएगी। स्वतत्र भारतवष के सपने आखा पर तरत थे। लेकिन वड दा पागल हो गये—इतनी बडी गिरस्ती सिफ जमीन और जजमानी से तो चलती नही। भूपेंद्रनाथ सपने देखना भूल गया। बूढ आदमी के लिए इतनी बडी गिरस्ती के लिए वह पैदल धान की नई बालिया लाने चला गया। ससार मे उसका जीवन मानो एक उत्सग किया हुआ प्राण हो। ब्याह नही किया जा सकता। चद्रनाथ का ब्याह कर दिया। अब केवल काम-काज के दरम्यान इस गाव मे चले आना और उस बूढे व्यक्ति के बगल म बठकर घर-गिरस्ती की बातें खेत-खलिहान की बातें, किस जमीन पर कौन सी फसल उगाने से अच्छी उपज होगी—ऐसे ही सारे सलाह मशविरे। लगता ही नही कि इस आदमी के जीवन म किसी और चीज की जरूरत भी है।

भूपेंद्रनाथ के नाव से उतरते ही घर के सभी लोगो को मानो पता चल गया—मुडापाडा स नाव आई है चावल, चीनी, केला नटटे-वतासे और अब बरसात है तो बडे-बड गन्ने आए होगे। धनबहू घट घूघट काढ कर कमर मे घुस गई। वे अब इसी रास्ते से चलकर आएगे।

घर मे पहुचत ही बरामदे पर छडी रख जिस कमर मे य बूढे व्यक्ति चुपचाप बठे रहते हैं उसम गय। मा को बाबा को, दडवत प्रणाम किया। बूढे व्यक्ति ने कुशल क्षेम पूछा। भूपेंद्रनाथ के प्रभु का कुशल पूछा। खरियत आदि पूछ लन के बाद लगा कि आगन मे कोई खडा है। बडी बहू होगी। बडी बहू को प्रणाम करना है। आगन मे उतरकर घर मे कौन-कौन से परिवतन हुए हैं गौर करन मे लगा कि मकान का वह शुष्क रूप नहीं रहा। घर के चारो ओर के झाड-झखाड बढ गय हैं। उत्तर वाला घर पार कर कमरख के पेड के पास एक मचान। मचान पर खीरा के लतर, पीले फूल। हरे मुलायम कुछ छोटे खीर भी एकाध झूल रहे हैं। बगल मे तोरई का मचान, करेला का मचान। बेशक चद्रनाथ ही इनका लगा गये हैं। उन दो नाबालिगा को वह ढूढता रहा। इस समय वे घर पर नही है—कहा

गये। समूचे घर का ये दो नाबालिग—लालटू पलटू चहल-पहल मचाये रहते हैं। उन्ही के लिए वह पीले रंग के मोटे मोटे गन्ने लेता आया है। मोटे और रसभरे। ये नम गन्ने उनको बडे प्रिय हैं। खुद तोड देने सकने पर उनका मन कुछ भर सा जाता है। गये कहा वे? ऐसा एक प्रश्न उनके मन म।

वे दो बालक तब दौड रहे थे। पलटू के मझले चाचा, लालटू के मझले ताऊ आए हैं। वे गाव म से होकर दौड रहे हैं। *उनको खबर मिल गई है कि मुडापाडा* से नाव आई है। नाव आने का मायने है कि उनके लिए गन्ने आए होगे सतरे के दिनो म सतरे आते तिलपट्टी के दिनो म तिलपट्टी। या आम-जामुन-जामरुल के दिनो मे विभिन्न किस्म के फल। उन लोगो ने आकर देखा अलीमद्दी सिर पर चावल दाल-तेल या करेला तोरई लाकर उतार रहा है। एक बडी सी मछली लाए हैं वह गलही के नीचे रखी थी लालटू पलटू दोनो मछली को लादकर ले आ रहे हैं। इस समय घर म उत्सव की सी रौनक। सिर्फ बडी बहू विषाद भरी आखो स चारो ओर किसी को दिनभर से ढूढ रही है। कोई उनका चला गया है लौटने की बात है, अभी आ नही रहा। बडी बहू की बडी-बडी आखें देखकर भूपेंद्रनाथ ताड गये कि बडे दादा फिर लापता हो गये हैं। साथ ही साथ भीतर कोईव्यथा जाग पडी। बडी बहू के मुह की ओर उनसे देखा नही गया।

शाम को ओर वे बूढे व्यक्ति भूपेंद्रनाथ के पास तरह-तरह की खबर सुनने के लिए बरामदे पर बठे रहे। भूपेंद्रनाथ परो के पास बठे सारी बातें बता रहे थे—यही उनकी आदत है। मुडापाडा से आते ही सारी दुनिया की खबरें पिता को सुनानी पडती है। बाबू लोग (जमीदार) अधसाप्ताहिक आनद बाजार अखबार पढा करते हैं। बाबू लोग पढ लेते तो भूपद्रनाथ उसका अक्षर अक्षर पढकर कठस्थ कर लेते। किसी के आते ही अखबार का समाचार मानो सारा जगत ससार ही उसके नख-दपण पर है। घर पर आने पर प्राज्ञ व्यक्ति सा वह देश के हालचाल कावर्णन करता। अखबार से किसीसमाचार का उल्लेख कर उसने कहा इसबार लीगी जिस तरह सरगर्मी से लगे हैं इससे बस दगा फसाद शुरू ही होने वाला है।

वद्ध ने बडे धीरे धीरे कहा, हाफिजद्दी के बेटे शामू को तो तू जानता होगा। सुनते हैं कि टोडरबाग मे उसने लीग का अडडा बनाया है। पेड-पेड पर इश्तहार टाग रहा है। समझ मे नही आता कि देश मे दिन ब दिन क्या होता जा रहा है।

भूपेंद्रनाथ बोले बाबा, अखबार मे विज्ञापन देखा गारो पहाड से शहर म एक

संयासी आया हुआ है। भूत भविष्य सब कुछ बता सकता है। सोच रहा था कि बडे दा को ले जाऊ।

—जाओ। जो ठीक समझो सो करो।

—साथ मे ईशम चला चले।

बडी बहू कमरे के भीतर बठी चावल, करीब दो बार चावल, पछार कर रखे दे रही हैं। जो सब्जी तरकारी आई है उसे तरतीब स रख रही हैं। पागल मानुस को ये लोग ले जायेंगे। आशा की तनिक सी रोशनी मन म जल उठी। लेकिन अगले ही क्षण वह बुझ भी गई। इस व्यक्ति को भला चगा करने की कितनी ही कोशिशें—दखते-देखत दस साल बीत गये। यह आदमी चगा नही हो रहा है।

—आजकल तो मणि दो-दो तीन तीन दिन तक घर ही नही आता। जाने कहा रहता है, क्या खाता है—ईश्वर ही जानते हैं।

भूपेंद्रनाथ ने मानो कहना चाहा था—इस तरह बिना खाये पिये घूम रहा, कहा रह रहा है कहा रात काट रहा है कोई भी कुछ बता नही पा रहा है—बल्कि इससे बेहतर है बाध रखना। लेकिन कह न सका। क्योकि इस कमरे म इस वक्त मा है बडी बहू है—वे मानो इस बात पर विश्वास ही नही कर सकेंगे। तो फिर बाबा शायद जो दो चार दिन और जिंदा रहत सो भी जिंदा नही रहग। लिहाजा उसन दूसरी बात की सोना को लाइए भी, जरा देखू कसा हुआ।

बडी बहू ने सोना का गोद मे दिया तो वह कुछ ताज्जुब करन लगा। बिलकुल बडे दा का मुख पाया है इसने। उसे कधे पर उठाकर वह बाहरी डयाढी म चला गया। सोना जिस तरह अ आ त-त्त बोलता है वसा ही तुतला रहा था। अजनबी देखकर थोडा सा भी नही रोया। बल्कि बीच-बीच मे कुट-कुट दाता से काट रहा था। चूहू जस दो छोटे छोटे दात सोना के निकल आए हैं।—बचवा, दखता हू बीमार पड जाओग तुम। कहकर उसन दात पर दो टूना दिया। मानो इस बच्चे के दात पर आघात कर भूपेंद्रनाथ इसकी कठिन बीमारी स उसकी रक्षा कर रहे हैं। सोना के बडे जोर स रो पडते ही बगल क घर के दीनबधु ने पीछे से पुकारा, मझले भाई सुना ढाका म फिर रायट होगा?

—हा, हो सकता है।

—कौन जीतेगा लगता है?

—कसे बताऊ? हार-जीत का रहस्य क्या है बताओ?

—कस उजडड हैं देखिए दूध के बच्चे साले म पुत्तर बात नहीं चीत नहीं चक्कू चला बठते है।

—देखा है तूने ?

—देखा क्या नही। मालतीक ब्याह म वक्त एक बार ढाका गया था। घूम फिर कर शहर का देखा। गजब का है—है न ?—रमना मे मदान गया, सदर घाट का तोप दखा।

शाम के बाद धनवहू पश्चिम के कमरे म लालटेन जला कर रख गई। हाथ पर धोने का पानी रख गई। एक छोटी चौकी लोटा और अगोछा रख गई। वह हाथ पर धोकर कमरे म दाखिल हो जायगा। फिर निकलेगा नही। क्योंकि गाव म यह खबर फल चुकी है। मुडापाडा से मझले मालिक आए हैं। दुनिया भर की खबर की उन्हे जानकारी है। गाव क पाल वाडी स माझी बाडी या चद-बाडी स प्रौढ वय के लाग हाथो म लाठी और लालटेन लिये खडाऊ पहने ठाकुर बाडी आ पहुचे और हाक लगाने लग भूपेन हो ? मझले मालिक हैं ?

भपेंद्रनाथ शायद उस वक्त तख्तपोश पर बठ ईश्वर का नाम ले रहा था या ईशम स खर आफियत पूछ रहा था। उस वक्त उसने एक एक दा दो करके खडाऊ के शब्द सुने। गाव के वयस्क लोग अब आकर भीड लगाएगे। गपशप करेंगे। और अखबार की खबरें सुनेंगे। देश का समाचार विदेश का समाचार, गाधीजी क्या साच रह है—एसी सारी खबरा के लिए वे उन्मुख रहते हैं। व उस वक्त उस अड्डे के प्राण बन जाते वह उस वक्त ईश्वर स भी बडा है उसकी बातें इन लोगा के लिए ईश्वर के समान हैं—यही सारे लोगा का विश्वास है। वह तब बालेगा देश की बडी बुरी हालत है हारान।

—क्यो चाचा ?

—कल सारे बजार भर म चक्कर लगाने के बाद भी बाबुर हाटवाली एक साडी नहीं मिली।

ऐसा क्या हुआ ?

—क्या जानें। जमादारी म कोई उगाही नहीं। इधर सारे भारत म गाधी कानून अवज्ञा आदोलन चला रहे है। अग्रेज भी कोई लिहाज नही कर रहे है। लाठी चला रह हैं। गाली चला रहे हैं। इधर तुम्हारे विलायत के प्रधान मत्री

लीग का पक्ष ले रहे हैं। लिहाजा समझते ही हो, लीग की पाचो घी म।

माझी-बाडी के श्रीशचद ने कहा, घोर कलजुग आ गया मझले भाई।

भूपेंद्रनाथ बोले, चारो ओर एक पडयत्र रच रहा है। आनदमयी कालीबाडी के बगल के वन जगल म एक पुराना मकान है एक बावडी है। कोई उसकी खाज खबर नही रखता। अब वो चाकी के मौलवी साहब कहते हैं कि वह एक मसजिद है। मुसलमान कहने लगहै हम नमाज पढेंग।

—तो फिर आप कहते हैं कि एक बवाल होगा।

—बाबू लाग क्या छोड देंगे ? जगह है अमत्तबाबू की। बगल म आनदमयी की कालीबाडी। आग भडकन म कितनी देर लगती।

—अ ह सुमर के पिल्ले दश म माना कोई नियाव ही नही। हम लोगा का जात धरम नही। पूजा पाठ तीज-त्योहार नही। कालीमायी निवश कर देंगी। तभी उमन देखा सहन म बठा ईशम तमाकू पी रहा है। मझले मालिक आन पर वह जरा देर स तरबूज के खेत म जाता ह। ईशम का देख मानी उमने जीभ काट ली। सहन मे यह आदमी बठा है इसका काई ख्याल ही नही किया उसने। अब जरा आवाज मद्धिम कर उदास ढग स कहा अब मझले भाई मेरे दुकान से मुसल मान खरीदार सौदा नही करना चाहत। कितने दिना के सारे खरीदार। कितन एतवारी—व सब सरिबद्दी की दुकान म जाते है।

इम समय सभी चुप हो गये। कोई भी कुछ नहीं कह मका। श्रीशचद अपन दुख की बातें कह कर खामोश हो गया है। भूपेंद्रनाथ हुक्का सुडक रहा है। तज हवा की वजह से बत्ती हल्के काप रही है। दूर सुनहर रेत वाली नदी स गहोना नावा से गुहार सुनाइ पड रही है। शचीद्रनाथ पूजा कक्ष म शीतलभोग चढा रह हैं। घट की ध्वनि गहाना नाव की हाक और ईशम की उदास आखें सभी को दुखी बनाय दे रही हैं। बूढे व्यक्ति कमरे म लेट-लेट रो रह हैं। उनका पागल बेटा इस समय कहा चलता फिर रहा है या किस पेड के नीचे लेटा हुआ है कौन जाने। बडी बहू पूरब घर की खिडकी खाले खडी है। सामने कमरख का दरख्त, दरख्त क बाद बेंतझाडी फिर गूलर का पड पार करन के बाद मदान। पड क सिर पर बडा सा चाद उठता आ रहा है। इम समय हर कही सफेद गुन्हाई छिडकी हुई। पड-पौधे स्पष्ट ह। सून खेना म धान के बिरवो पर मामूली कुहरे का पतला सा आवरण। वह पथ की आर निहार रही है—अगर किमी मनुष्य की छाया इस रास्त स उठ

कर आए, अगर वह आदमी सामने के मदान म लग्गी ठेलता हुआ आवे या किसी नाव की आहट आते ही वह चौंक पडती—शायद आ गया, साधू-स यासी जसा कोई उदासीन व्यक्ति शायद घर लौट आया। पागल मानुस की प्रतीक्षा म बडीबहू खिडकी पर खडी है। जान क्यो इस मानुस के लिए उसे बस रुलाई आ रही थी।

कुछ दूर आते ही मणाद्रनाथ की घर जाने की इच्छा फुर हो गई। वे बार-बार एक धानखेत के चारो ओर घूमते रहे और बीच बीच म नाव को फिरकी लगाकर लग्गी को सिर के ऊपर लाठी की तरह घुमाते रहे। यह जो नक्षत्रपुज है आकाश है और झील के जल ने कुरुर बोल रहा है—सभी कुछ मे उनका अदृश्य सग्राम छिपा हुआ है। पटौरी पर कूद रहे थे। मानो हाथ से कुछ पकड कर क जे म लाए है इसके बाद गला घाट कर उसकी हत्या। जितना ही वे लग्गी को घुमा रहे हैं उतना ही सन सन श द हो रहा है। दूर जो लोग पटसन काट रहे थ उन लागो ने देखा कि झील के पानी म नाव पर रही है और पागल ठाकुर सिर के ऊपर लग्गी घुमा रहे है।—क्या आदमी था और क्या हो गया ऐसी ही सारी चिंतायें।

वे नाव खेते हुए बहुत दूर चल आए थ। इसलिए घर लौटने मे काफी देर लगगी। बडी बहू की बडी बडी और गहरी आखें उनको अब क्लेश पहुचा रही हैं। एसा साच कर धानखेत रौद कर घर लौटने की स्पृहा से ज्या ही उ होने लग्गी उठाई उ होन देखा सुनहले रेत वाली नदी पर एक बडी पनसुही नाव। जाने क्या उनको भान हुआ—इस नाव म पलिन है। पलिन को लेकर यह नाव किसी अदृश्यलोक मे गुम हाती चली जा रही है। पटौरी के नीच स चप्पू निकाल कर पानी मे बडी बडी लहरें पदा करते ही नाव हडबडा कर नदी म जा पडी। बहाव पर वह बहती जा रही है। अब मणीद्रनाथ का कोई दिक्कत नहीं हो रही है—वे पनसुही के पीछे पतवार थामे केवल बठे हैं।

पनसुही के लोगा ने देखा। पीछे पीछे एक नाव आ रही है। पतवार पर एक लबी डील का गोरा सुदशन पुरप बठा है। धूप म जलकर रग कुछ तबई सा हो गया है। पतवार पर वह आदमी माना आखें प्राय मूद ही हुए है। यह वर्षा और यह बहाव जिधर चाहे ले जाए।—वे लोग आपस म हस रहे थे। भीतर जमीदार पुत्र और तवायफ बिलासी एक ही कमरे म एक बिस्तर पर। गान के समाप्त होने पर कुछ हसी मजाक की बातें। और सराद का टुग-टुग श द। तार पर हाथ रखे

दोना पर पसारे—हाय सजनवा, एस ही एक अदाज म पडी है। चेहरे पर आवेश छाया हुआ, नशे मे वे एक दूसरे की ओर देख नहीं पा रहे हैं। यह लवा रास्ता मणीद्रनाथ उनका अनुसरण करते रह। मराद की गभीर ध्वनि म स वे मानो एक लडकी का मुखडा देख पाते—वे पलिन के अवयव और उसका मुखडा उसके साथ प्रेम-मवधित सारी घटनायें इन धनखरा म, सुनहरे रत वाली नदी की चाकी म और जल म मवत देख पा रहे हैं। लेकिन किसी समय यह सभी कुछ गडडमडड हो गया। क्यो इतना लवा रास्ता पनमुही के पीछे-पीछे भागते चले आए हैं, किस रास्त से घर लौटना है सब कुछ मानो भूल गय। नदी स चाकी पर पहुचने के लिए अब उन्होने नाव का मुह घुमा दिया, कास के जगल म घुस कर फिर रास्ता न मिला। सूरज पश्चिम म ढल गया है—अब सूर्यास्त होगा—कुछ गगनभेरी पछियो का आर्तनाद आकाश के छोर पर सुनाई पड रहा था और दूर म लोग हाट से लौट रहे हैं। व अब नाव के पटवतन पर लेट गए। शरीर म कहीं कोई कष्ट है। व भूखे और प्यासे हैं। लेकिन क्या करने पर इस कष्ट से छुटकारा मिलेगा यह समझ नही पा रहे हैं। इसलिए चुपचाप लेटे-लेटे गगनभेरी पछी की चीख गगन-भेरी किस ओर वहा से उठ रही है यही ढूढते रहे। आकाश बिलकुल सूना है। कहीं भी न एक पछी न पतिंगा उड रहा है। उन्होने थके स्वर मे मानो कहना चाहा पलिन मैं तुम्हारे पास जाऊगा।

दूर कोई गाव है—वहा स घटे घडियाल की आवाज तिरती आ रही है। किसी मुसलमान गाव स आजान ध्वनि। कुछ-कुछ तारे आसमान म फूल जस खिल आए हैं। अब आकाश इतना निस्सग नही लगता। इन तारो का जगत कितनी दूर है—क्या चाहने पर वहा पहुचा नही जा सकता। इन सब नक्षत्रा क जगत म या नीहारिका पुज म नाव म बादबान तान मो जाय तो कसा हो। कितनी ही सारी विचित्र चिताओ म रत रहने के बाद सभी का सिलसिला खोकर अचानक वे उत्तेजित सा अनुभव करने लग।

धानगाछ की पत्तिया की ओट म कुछ जुगनू दमक रहे हैं। जुहाई म यह धरती शात और स्थिर है। मद मद हवा चल रही है। दिन भर की थकान इस मीठी हवा मे दूर हो गई। फिर पलिन का मुखडा याद आ रहा है। मणीद्रनाथ करवट पर लेटे थे और बुदबुदा रहे थे। देखने पर यही लगेगा कि इस वक्त वे दूर कलकत्ते म किसी योरोपीय परिवार म गुपतगू कर रहे हैं। लगेगा बडबडाते हुए

कुछ बक रहे हैं। जोर जोर से उच्चारित होती या अंग्रेजी के स्पष्ट उच्चारण में सारी बातें मालूम हो जातीं लेकिन हाथ पर गिरकर रहकर ताहक से बातें करना उसको केवल पागल ही सिद्ध करता है। मैं पलिन से प्रेम करता हूँ—राम के उक्ति के अपने परिवार के सम्मुख कर पाते तो शायद कुछ होता। लेकिन कुछ अन होनी हो गई। मणीन्द्रनाथ माना चित्रसम्य पालन करने शायाग बने गये। पिता आज्ञा शिरोधार्य करने में द्विधा और द्वंद्व में अंत में अमर ही पड़ गैरहाजिर पगला।

मणीन्द्रनाथ ने जब देखा कि गना में या मन्दी के जन में कहाँ भी किसी नाव की आहट नहीं आ रही है तब उन्होंने खड़े होकर कहना चाहा पलिन, मैं पागल नहीं हुआ। नाहक लोग मुझे पागल कह रहे हैं। तुम्हारे पास जाने ही मैं चंगा हो जाऊँगा। यही बातें इस समय गंगा में जल पर, जंगल में, पाम-पत्तों में सबत्र गूंजती फिर रही हैं—मैं पागल नहीं हुआ। नाहक लोग मुझे पागल कह रहे हैं।

रात बढ़ रही है। लालटू पलटू दक्षिण के घर में पड़े रहे हैं। ईशम आज शायद तरबूज खेत नहीं जायगा। जाड़े भी तो अधिक रात गये। वह दक्षिण घर में चटाई बिछाये लेटा है। धनवहू चौके में। शशीबाला दहलीज पर गाड़ में सोना सो गया है। वे ताड़पत्ते का पंखा झल रही हैं। गरमी गर्मी पड़ने लगी है। पश्चिम घर में जो लोग अब तक इन की हार रहे थे रात गहराने पर वे एक एक कर सभी चले गये। केवल दीनबंधु नहीं गया। वह मझले मालिक के पैरों के पास बैठा नारियली पी रहा था और जमीदारी शरिकेदारों के किस्से सुनाकर मालिक के दिल में जगह बनाने की कोशिश कर रहा था। इतने दिनों से जिस जमीन को वह बटाई पर उपभोग कर रहा था मालिक को खुश कर उस पर कब्जा चाहता है।

खाना पक जाते ही शशीबाला ने सबको खाने को बुलाया। बड़ी बहू ने कटहल की लकड़ी की पीढ़ियाँ बिछा दीं। लालटू पलटू के लिए छोटे पीढ़े। पानी रख दिया गया। बड़ा दालाला घर। बांस की खपचियों की दीवार सिमेंट का पक्का फरश। शशीबाला इस वक्त किवाड़ के चौखट से टेक लगाये खड़ी लड़कों का भोजन करना देखेंगी। बड़ी बहू परोसेगी धनबहू के कान के पास बातें फुस फुसाती हुई बातें—बड़ी बहू को सामान बढ़ा देगी।

खाने बैठते ही भूपेंद्रनाथ का जी भर आया। बड़ेदा का आसन नहीं बिछा

है। एक ओर खाली है। उधर देखते हुए भूपेंद्रनाथ ने पूछा, बड़े दा कब के निकले हैं ?

शचीन्द्रनाथ उस वक्त पंचदेवताओं के उद्देश्य से अन्न निवेदन कर रहा था, पानी से गड्डूष करने वाला था कि उसने मुंह उठाकर देखा। उसको अब इतना ध्यान भी नहीं रहता—बड़े दा का आसन खाली है, पानी का आचमन कर उसने कहा, परसों सवेरे भाभी जी ने उठकर देखा कि दरवाजा खुला है। घाट पर जाकर मैंने देखा नावनाव नहीं हैं। हाशिम का बाप कहता है कि वे झील की ओर दोपहर की ओर नाव खेते हुए चले गये हैं।

—चल जरा चलकर देखें—अलीमद्दी को ले चलेंगे।

—चलिए। लेकिन मुझे लगता है वे मिलेंगे नहीं। कहां रहते हैं, कहां जाते कोई नहीं जानता।

बड़ी बहू कुछ भी बोल नहीं रही थी। बैठे बैठे सब-कुछ सुन रही थी और आंखों में आंसू आ जाने पर उसने तनिक घूंघट काढ़ लिया। कोई भी शिकवा-शिकायत नहीं, ऐसा ही भाव चेहरे पर। किसी दिन भी उस सुदर्शन व्यक्ति ने दुलार कर कोई बात नहीं की। कोई भी प्रेम संबंधित सुहावनी घटना फिलहाल घटित नहीं हो रही है। केवल बीच बीच में, सो भी कभी कभार ही सीने के पास खींच कर डाकू की नाई जान कैसी आदिम प्रेरणा सी—आंखें गदली गदली सी—मनुष्य के रूप में पहचाना ही नहीं जाता। सीने के पास लेकर वनैले जीव की तरह करने लगता। बड़ी बहू अपना शरीर ढीला छोड़ देती—जो मर्जी सो करें—पागल मानुस का वह बच्चे की तरह, या संतान की तरह या तुम एक आदिम मानवी हो यह तुम कैसे भूल जाती हो—मुझे देखो, सेवो। वनैले जीव की तरह नजदीक खींच लेने की घटनाओं की संख्या भी वह उंगलियों पर गिन कर बता सकती—कितने दिन, कितनी बार—चांदनी रात थी कि अंधेरी, सब बता सकती है।

दो दिन से ऊपर हो गये हैं। वह आदमी लौट नहीं रहा है। बड़ी बहू पागल ठाकुर को अपने धन के रूप में जानती है। मणीन्द्रनाथ नामक व्यक्ति उसके लिए अजनबी है। ब्याह के पीढ़े पर उसने मानो इसी पागल आदमी को ही देखा था। अज्ञात पुरुष जीवन से मानो उनका सोने का हिरण खोता जा रहा है—टकटकी लगाये मुख की ओर देख रहे हैं मानो सराहने की वासना हो मन में और ऐसा

कुछ बक रहे हैं। जोर जोर से उच्चारित हानी ता अंग्रेजी व स्पष्ट उच्चारण म सारी बातें मालूम हो जाती लकिन हाथ पर गिर रजकर नाहक य बातें करना उसको केवल पागल ही सिद्ध करता है। मैं पलिन स प्रेम करता हू—काश यह उक्ति वे अपने परिवार के सम्मुख कर पाते तो शायद खुश होत। लकिन कुछ अन हानी हो गई। मणीद्रनाथ मानो पितसत्य पालन करन वनवास चल गय। पित आज्ञा शिरोधार्य करने म द्विधा और द्वद्व से अन मनमन ही पर गतृवारेनुसाला।

मणीद्रनाथ ने जब देखा कि खना म या नदी के जल म कहा भी किसी नाव की आहट नहीं आ रही है तब उन्होंने खड़े होकर कहना चाहा पनिन मैं पागल नहीं हुआ। नाहक लोग मुझे पागल कह रह हैं। तुम्हारे पास जात ही मैं चगा हो जाऊगा। यही बातें इस समय खेतो म, जल पर जगला म घास पत्ता म सवत्र गूजती फिर रही हैं—मैं पागल नहा हुआ। नाहक लाग मुझे पागल कह रह हैं।

रात बढ रही है। लालटू पलटू दक्खिन क घर म पड रह हैं। ईशम आज शायद तरबूज खेत नहीं जायेगा। जाय भी तो अधिक रात गय। वह दक्खिन घर म चटाई बिछाये लेटा है। धनबहू चौके म। शशीबाला देहलीज पर गोद म साना सो गया ह। व ताडपत्ते का पखा चल रही हैं। खासी गर्मी पडने लगी है। पच्छिम घर म जो लोग अब तक इनकी हाक रहे थे रात गहरान पर वे एक एक कर सभी चले गय। केवल दीनबधु नहीं गया। वह मझले मालिक के पग के पास बठा नारियली पी रहा था और जमींदारी शरिस्तेखाने के किस्से सुनाकर मालिक के दिल म जगह बनाने की कोशिश कर रहा था। इतने दिना से जिस जमीन को वह बटाई पर उपभोग कर रहा था मालिक को खुश कर उस पर कब्जा चाहता है।

खाना पक जाते ही शशीबाला ने सबको खान को बुलाया। बडी बहू ने कटहल की लकडी की पीढ़िया बिछा दी। लालटू पलटू क लिए छोटे पीढे। पाना रख दिया गया। बडा दोचाला घर। बास की खपचियों की दीवार सिमट का पक्का फरश। शशीबाला इस वक्त किवाड के चौखट से टेक लगाये खडी लडको का भोजन करना दखेंगी। बडी बहू परोसेगी धनबहू क कान के पास बातें फुस फुसाती हुई बातें—बडा बहू को सामान बना देगी।

खाने बठते ही भूपेंद्रनाथ का जी भर आया। बडेबा का आसन नहीं बिछा

है। एक ओर खाली है। उधर देखते हुए भूपेंद्रनाथ न पूछा, वडे दा कव के निकले हैं ?

शचींद्रनाथ उस वक्त पचदेवताओ के उद्देश्य से अन्न निवदन कर रहा था, पानी से गड्डूष करने वाला था कि उसने मुह उठाकर देखा। उसको अब इतना ध्यान भी नही रहता—वडे दा का आसन खाली है, पानी का आचमन कर उसने कहा, परसो सवेर भाभी जी ने उठकर दखा कि दरवाजा खुला है। घाट पर जाकर मैंने दखा कोयानाव नही हैं। हाशिम का वाप कहता है कि वे झील की ओर दोपहर की ओर नाव खेते हुए चले गये हैं।

—चल जरा चलकर दखें—अलीमद्दी को ले चलेंगे।

—चलिए। लेकिन मुझे लगता है वे मिलेंगे नही। कहा रहते हैं कहा जात काई नही जानता।

वडी वहू कुछ भी वोल नही रही थी। वठे वठे सब-कुछ सुन रही थी और आखों म आसू आ जाने पर उसने तनिक घूघट काढ लिया। कोई भी शिकवा-शिकायत नही, एसा ही भाव चेहरे पर। किसी दिन भी उस सुदशन व्यक्ति ने दुलार कर काई बात नही की। कोई भी प्रेम सबधित सुहावनी घटना फिलहाल घटित नही हो रही है। कवल वीच-वीच मे सो भी कभी कभार ही, सोने के पास खीच कर टाकू की नाइ जान कमी आदिम प्रेरणा सी—आखें गदली गदली सी—मनुष के रूप म पहचाना ही नही जाता। सीने के पास लेकर वनले जीव की तरह करने लगता। बडी वहू अपना शरीर ढीला छोड देती—जो मर्जी सो करें—पागल मानुस को वह वच्चे की तरह, या सतान की तरह, या तुम एक आदिम मानवी हो यह तुम कम भूल जाती हो—मुझे दखो, खलो। वनले जीव की तरह नजदीक खीच लने की घटनाओ की सख्या भी वह उगलियों पर गिन कर वता सकती—कितन दिन, कितनी बार—चादनी रात थी कि अधेरी सब वता सकती है।

दो दिन स ऊपर हो गय हैं। वह आदमी लौट नही रहा है। वडी वहू पागल ठाकुर को अपन धन के रूप म जानती है। मणींद्रनाथ नामक व्यक्ति उसके लिए अजनवी है। व्याह क पाडे पर उसने मानो इसी पागल आदमी को ही देखा था। अज्ञात पुरुष जीवन स मानो उसका सोने का हिरण खोता जा रहा है—टकटकी लगाये मुख की ओर देख रह हैं माना सरापन की वासना हो मन म और एसा

लग रहा था कि इस लावण्यमयी या वे अब निगल ही जाएंगे। इतना लोगबाग इतनी रोशनी और चहल पहल फिर भी बड़ी बहू को उस दिन डर लग रहा था। रात को दीदी को बुलाकर कहा था दीदी मुझे बड़ा डर लग रहा है। यह मन ही मानो मुझे गड़प जायगा। क्या देखकर तुम लोगों ने मेरी शादी की। ऐसे देहाती जगह में मैं कैसे रहूंगी। बाद में बड़ी बहू ने समझ लिया था—यह आदमी भोलाभाला और विक्षिप्त है। इतने दिनों में इस गुमशुदा व्यक्ति से वह प्राणों से भी अधिक प्यार करने लगी थी। इसलिए दुख को जीवन का नित्य सहचर जान कर आजकल अपने बारे में कतई नहीं सोचा करती—केवल उस मानुस के लिए रात को नींद नहीं आती केवल जागे बैठी रहती है कब वह आदमी लौटेगा।

रात गाढ़ी हो रही थी। बड़ी बहू घाट पर बरतन माज रही है। सोना रो रहा था सो धनबहू को भेज दिया है। अब वह इस घाट पर अकेली है। शशीबाला खाना खाकर अभी बड़े कमरे में चली गई हैं। सन्नाटे की रात में उस बूढ़ व्यक्ति की खासी की आवाज भी नहीं आ रही है। शायद इस समय सभी लोग सो गये हैं। नाव अलीमद्दी ने घाट पर नहीं बाधी है। सामने के पानी में लग्गी गाड़कर नाव बाध वह सो गया है। बड़ी बहू बरतन माज चुकी है फिर भी उठने को उसका जी नहीं कर रहा है। घाट के किनारे लालटेन की रोशनी में बड़ी बहू का मुख विषण्ण है। चान्दनी रात होने के कारण दूर मकान से नाव जाने पर स्पष्ट दिखाई देती। आज हवा में कुहरा नहीं। बड़ी बहू इस घाट पर उस लापता आदमी के लिए बैठी है। वे शायद आ रहे हैं अभी आ पहुंचेंगे। बड़ी बहू की आखें याद आ जाते ही वह आदमी उन्मादी की भांति घर की ओर भागने लगते हैं।

रात भीग रही है। अकेली घाट पर और बैठे रहने की हिम्मत नहीं पड़ी बड़ी बहू को। केवल जंगल झाड़ियों में कुछ अनजाने चरिंदे परिंदे कीड़े मकोड़े रात की घड़ियों को ऐलान करने में लगे हुए हैं। आलकुशी लतर की झाड़ी में ढुब ढुब की आवाज। गधपादाल झाड़ में झींगुर बोल रहे हैं। रात गहराने पर निशीथ की प्राणियां कितने हजार लाख होंगी इन लाख करोड़ प्राणियों का स्पंदन इस भुवन भर में। गहरी रात को जागती हुई बड़ी बहू को गोया मालूम हो जाता है कि वह मानुस अब निशीथ का जीव बनकर जंगल जंगल में फिर रहा है।

चौके में बरतन रख पूरब के घर में उठने वक्त ही उस घाट पर लग्गी की

आवाज सी मिली। बडी बहू का दिल धडक उठा। लपकती हुई घाट पर गई। वह मानुस चुककर नाव से उतर रहा है। नाव को खीचकर जमीन पर उठा लाया। किसी भी ओर दृष्टि नही। लबा ऊचा आदमी—कितना लबा और कितनी रहस्यमय आखें—इस सुहावनी जुन्हाई मे मानो गगन से कोई देवदूत उतर आया है। बडी बहू ने देखा इस मानुस के बदन पर काई वसन नही। बिल कुल उलग ही और बडी बहू को जागते देखकर बच्चे की तरह हस रहा है। नाव मे घुइया, कद्दू, केला। जिसके पेड-पौदे पर जो प्रथम फलन हुआ है उसने इस आदमी को दिया है। शुरू मे बडी बहू कोई भी बात नही कर सकी। मानो कोई सन्यासी लबी अवधि तक तीर्थ भ्रमण के पश्चात अपने डेरे पर आ पहुचा है। और कोई दिन होता झट कमरे मे घुसकर धोती ले आई होती। आज ऐसी कोई इच्छा नही हुई। इस सफेद जुन्हाई मे एक बच्चे सरीखे युवक के साथ सिर्फ खेलते फिरने की इच्छा हो रही है।

उस समय दोपहर ढल चुकी थी। वर्षा का जल खेतो मे लहरा रहा है। जोटन कछार पर जल हलने लगा। वह तर कर बगल के गाव मे चली जाएगी। वह जलज घास के बीच से झाड-जगल पार करती बस तरती ही जा रही है। तर कर ठाकुरबाडी के सुपारी-बाग पहुचकर उसने देखा कि एक भी सुपारी जमीन पर नही पडी है। घाट पर एक तीन-मल्लाही नाव बधी है। छाजन के नीचे दोमाझी खुर्राटे भर रहे हैं। पानी मे वह लगातार तरती ही रही है। साडी भीग गई है। अडहुल के पेड के नीचे खडी होकर उसने सावधानी से साडी खोल उसे निचोड डाला। फिर लपेट कर पहन लेते ही उसे लगा—कहीं कोई चिउडा कूट रहा है। ताड के बडे तले जा रहे हैं। उसने नथुने फुलाकर बास लिया। चिउडा कटने की आवाज आ रही थी। हम लोगो का अब भादो का महीना है। डीह पर भदई धान भदई धान का चिउडा—उसने सोचा, चिउडा कट दें तो नसीब खुल जायगा।

वह घर के भीतर घुस गई। देखा मझले मालिक पच्छिम वाले कमरे मे तख्त पोश पर बैठे एक मोटी पोथी पढ रहे हैं। मझले मालिक को देखकर ही जोटन

दरवाजे के सामने आकर खड़ी हो गई। कौन खड़ी है ? आँखें उठाकर देखो तो
क्या आखिर अ ती की दीदी जा रही है। आज का फकीर कुछ दुखता सा लग रहा
है। बाल खिचड़ी से और गाल भी धँस गए। मुख पर कोई झुर्री नहीं। उसके
जिस्म की बनावट मानो टूटी-सी रही है। नाक पर किसी चोट के कारण मुख
बड़ा बदसूरत-सा। भूल गई थी। यह तो वही जुग्गी है।

—जी मालिक मैं। फिर लौट आई हूँ।

—फिर तुझे तलाक दे दिया।

—हाँ। लेकिन पहले मैंने उस पर थूक दिया और तलाक लिया।

थूक नहीं दिया पर तो अच्छा किया। थूक मारकर सिपाही बना मना।

जोटन यह भलीभाँति समझती है इसलिए उसने और कोई बात नहीं की।
मझले मालिक ने फिर पानी के। और इशारा लगाया। पास के भीतर मालिक की
आँखें देखकर कहने की इच्छा हुई मझले मालिक मुझे पुराना धुराना कोई तय
कर दीजिए। लेकिन यह काम सही। माना कहो पर वह गुफा भी देखी—वह
फकीर साहब आया था महीना मखमल से जुगाया हुआ जो सबका था सारा
चावल और पीसी हुई गुड़ी मछली से सारा-का-सारा भाग्यवान पर जो गया सो
लौटा ही नहीं। गोया जोटन इस दरवाजे पर खड़ी याद कर रही है—फकीर
साहब हुक्का पी रहे थे, पोटली बकूची सब बंधी रखी मानो वे अभी उठेंगे हुक्का
पीना ही रह गया था। जोटन से धीर नहीं धरा गया यह बोल पड़ी थी—फकीर
साहब, क्या मुझ से नहीं चलेंगे। फकीर साहब अपनी झोला झोली कंधे पर लेते
हुए बोले थे—आज नहीं। किसी और दिन। कुरबान शाह के मिलाद शरीफ में
जाऊंगा तब लौटूंगा कोई ठीक नहीं। यह जो कहकर गये सो वे अभी तक नहीं
लौटे। लौटेंगे भी इसका कोई ठीक नहीं। उसके लिए एक ग्वाविद जुटाने मानो
वह दर दर की खाक छान रहे हैं।

मुझे एक पुराना धुराना कुछ भी हो तय कर दें—यह कहने की हिम्मत नहीं
पड़ी। तीन बार के तलाक ने मानो इस शरीर को दुगधमय बना दिया है। मझले
मालिक ने कहा कुछ कहेगी ?

—क्या कहूँ मालिक। मेरा गुजारा कैसे हो।

—फिर तुझ पर पागलपन सवार है। यह कोई ठीक बात नहीं। मझले मालिक
ताड़ गये थे कि वही आदमी तय कर देने की बात वह करने आई है। जोटन ने

मालिक के मुह य बातें सुनी तो फिर ठहरी नही। शरीफे के बाड के बगल स वह अदन्नी ड्योढी म चली गई।

धनमामी बडी मामी खडी हैं। हारानपाल की बीवी चिउडा कूटे दे रही है। साथ मालती भी है। जोटन ने कहा लाइए मैं चिउडा कूटती हू।

जोटन ने बडे कम वक्त म चिउडा कूटकर छबडी म फैलाकर दिखाया। वह चिउडा अच्छा कूट लेती है उसके चिउडे बडे-बडे होते हैं—छबडी म फलाकर माना उसने सबको दिखाना चाहा। जोटन ने अपन चिउडे दूसरे बेंत के ओडा म रख दिए। शशीबाला ऐसा चिउडा देखन पर खुश होगी। जाते वक्त एक दौरी चिउडा उसके आचल म डाल देगी।

धनबहू न कहा, सुना तुझे फिर शादी करने का शौक चर्राया है?

—हाय अल्लाह इते दिना म मालूम हुआ आपको। लेकिन मिल कहा रहा है?

—तुमम कूवत है जुटी।

—क्या कहत हैं आप लोग। शम-हया की बातो की न कह। यह है जागर तोडन की बात। आपके पास भी है मेरे पास भी। आपको सुख मिलता सो आप बोलती नही मालिक आत-जाते रहते हैं। मेरा कोई आदमी नहीं न आता है और न जाता है। सुख नही मिलता सो बोलती हू। यह सब कहकर जोटन फिर चिउडा कूटन लगी उसके मुख से एक प्रकार का शब्द, मानो कुरुर की बोली हो। भादो का महीना। तभी इतनी गरमी है और घर घर मे ताड के बडे बन रहे हैं—गाव भर म उसकी महक। खड मैदाना म भी। हारानचद की दुल्हन धान भून रही है भाड म और शशीबाला आगम सूखी लकडी डाल रही है। सभी लोग किसी-न किसी काम म लग। जोटन ने जरा पानी मागा। बडी बहू पानी लाने कुए पर गई। और ऐस ही समय जामुन क पड पर एक इष्टकुटुब पछी बोल पडा। दोना ओर बोरे बिछाते वक्त जोटन न आखें उठाकर देखा—पड पर पछी बोल रहा है। उसन कहा धनमामी पड पर इष्टकुटुब बोल रहा है। कोई मेह मान आएगा।

रसोई घर म पवन मालिक की घरवाली उसके बाल-बच्चे सभी घूमने आए हैं। यह सारी बरसात शशीबाला सार पीहरवाला की प्रतीक्षा मे बिता देती है। बरसात भर पाहुना। इस समय धनबहू साम भी नही ले पाती। बडी बहू को दिन भर चौके म बने रहना पडता ह। जुबान फिसल कर निकल ही गया था—बस

भी क्गे मेहमान की। लेकिन घर म पवन जी की घरवाली। वह कह नही सकी पछी उडा दे जुटी। बरसात भर बस पाहुना ही पाहुना। न रात न दिन—आवा जाही लगी ही हुई है। लेकिन बूढी मालकिन शशीबाला को पाहुना स बडा प्रेम है। कौन सा पाहुना क्या खाना पसद करता—शशीबाला को कठस्थ है।

इस समय मघना पद्मा नदिया म हिलसा मछलिया का झुड उठ आएगा। जोटन जानती है इस समय मालकिन पाहुनो के लिये आला-आला नियामत बनाएगी या पीहर वाले मद और औरतें घर भर म घूमती फिरेंगी आगन भर म बच्चे की धमाचौकडी, हर घाट पर नावें बधी हुई—ऐसे ही सारे दृश्य और जोटन ने तब देखा हारानपाल नाव से गडे भर हिलसे उतार रहा है। बडे बडे हिलसे चादी-सा उजला रग बेवक्त की धूप मे चमचमा रहा था। हिलसे देखकर जोटन आखें नही हटा पा रही है।

हिलसो ओर उसका निहारते रहना—बडा ही करुण और रहस्यमय-सा लगता —मानो कितने दिनो से इन मछलिया का जायका जोटन भूल गई है। शशीबाला यह सब गौर करती हुई बोली रात को यही खा जाना जुटी। जुटी की आखें सहसा चमक-सी उठी। उसने कहा बडी नानी मछलियो के पट मे लगता है अडे होगे।

—तुझे अडे भूनकर देने को कह दूगी।

उसकी समझ मे नही आया कि क्या कहे। वह ध्यान लगाकर फिर चिउडा कूटने लगी। कुरर की वह बाली अब भी उसके भीतर निसर रही है। उसकी फटी-नुची साडी अब तक सूख आई है। बडी बहू ने जोटन को एक दौरी चिउडा दिया खाने को पर उसने खाया नही। आचल मे बाध लिया। पलटू ने कई कच्ची सुपारिया ला दी। वह भी उसने आचल मे बाध ली। काफी रात हुई जा रही थी। केले का पत्तल धो बिछाकर वह बठी रही—खाना पक जाते ही उसे खाने को मिलेगा।

खान बठकर जोटन ने डटकर खाया। चाटचूट कर खाया। बड ही जतन से उसने सारा भात खाया। बगन के साथ हिलसा मछली का स्वाद और भदई चावल के मोटे भात न जोटन को इस परिवार की सहृदयता के बारे म अभिभूत कर डाला। बूढी मालकिन बडी बहू धनबहू सभी की उदारता माना इस परिवार के पगन ठाकुर जसी ही है। इस भोजन के साथ रात की चादनी और एक पागल मनुष्य का अस्तित्व बूढे मालिक क सात्विक विचार भूपेंद्रनाथ की ईमान

दारी—सभी कुछ मिलकर जोटन को निस्सग सुख पहुचा रह हैं। और ये सारे परिवार मानो कितने दिनों के कुटुब हो। उसने बडी बहू की आर रख कर कहा, मामी री, मुद्दत के बाद पेट भर भात खाया मैंने। यह खाना भूल नहीं सकती।

बडी बहू ने ऐसी टीसभरी बात सुनी तो कहा, तूने ता कहा कि किसी दरगाह के फकीर साहब तुझसे निकाह करना चाहते हैं।

—आप भी क्या कहती हैं मामी। ख्वाब तो कितने ही देख चुकी हू। लेकिन अल्लाह की मर्जी न हो तो आप हम कर भी क्या सकते हैं ?

—क्यो आविद अली तो कह गया कि फकीर साहब आया था।

—आया था। पेट भर भात भकोसा। भकोसने के बाद कहता क्या है कि आप रहिए मैं कुरवान शेख के मिलाद शरीफ म जा रहा हू। लौटते वक्त आपको लेकर लौटूगा। यह कहकर वह निपूता गया सो गया।

—कहके गया है तो जरूर लौटेगा।

जोटन आगे कुछ न बोली। उसने केले के पत्ते पर सारे जूठन समेट और जामुन के पेड के अधियारे को पारकर बडे घर के पीछे आकर खडी हो गई। गधपादाल की झाडी के उस पार उसने जूठन फेंक दिया। चादनी रात होने के कारण यह झाडी-झुरमुट वन जगल, दूर कहार, हरे धान खेत का धुधला-सा चिह्न उस सुहा वना लगता। उसने हिसाब लगाकर देखा कि उसका जिस्म दो साल से अल्लाह का महसूल अदा नहीं कर रहा है। खासतौर से यह रात और झाड-जगल के इर्दगिर्द अधियारे की तस्वीर या भरपेट भोजन के कारण एक पनी सी ख्वाहिश जोटन को उतावली कर रही है। इस समय फकीर साहब बहुत याद आने लगे।

उसने बडी मामी से एक पान माग लिया। एक समूची कच्ची सुपारी चबाती हुई वह बाग के भीतर घुस गई। एक मत्रवत् इच्छा शक्ति उसको बाग मे कुछ देर रोके रही—अगर एक पकी सुपारी पेड से टप्प से—यह शब्द घास मे होगा—वह कान पसारे रही—कहा यह टप्प का शब्द उभरेगा—कब चमगादड उडकर आएगा। लेकिन एक भी चमगादड उडकर नहीं आया। न टप्प शब्द ही हुआ। सिर्फ कच्ची सुपारी के रस से दिमाग कुछ भारी भारी-सा खुमारी म जसा लगन लगा। वह अब पानी मे हेल जायेगी। तर कर अपने गाव पहुचना है। चादनी रात। जल पर सफेद बगबग जुहाई और जोटन जल म उतरती जा रही थी। धीरे धीरे उसने कपडा घुटनो के ऊपर उठा लिया। ज्यों ज्यों पानी म उतरती गई

त्या त्यो कपड़ा ऊपर उठाती वह कमर के पास समट लाई। नही पानी बढता ही जा रहा है। कपडा खोल सिर पर रख वह एक गोह की तरह पानी म हेल गई। जोटन के पास एक ही धोती है। भीगे कपडो म रात काटना बडा तकलीफदेह है।

झाड झखाडा की आड से जोटन ने देखा नरेनदास के बरामद म एक कुप्पी जल रही है। पूरब वाले कमरे म करघे की कोई आवाज सुनाई नही पडती। अमूल्य उनका करघा चलाता है। अमूल्य घर चले जाने पर करघा बद रहता। तिस पर बाजार म सूत नही मिल रहा है। इसके लिये भी नरेनदास रात को करघा बद रख सकता है। अब जोटन और नरी नही भर पा रही है। जोटन न काफी तकलीफ उठाकर एक चरखा खरीद लिया और दो पसा कमाने लगी और जब उसने सोचा कि हिंदू घर की औरता की तरह कासे की एक छोटी सी थाली खरीद कर वह अमीर बन जाएगी तभी सूत की कीमत दो पसे से चार पसे हो गई और एक फकीर को पालने की जब लियाकत होने लगी ही थी कि बाजार मे सूत मिलना बद हो गया।

जोटन पानी काट रही थी। दोनो हाथो से मढक की तरह पानी पर तरती जा रही है। हाथ पर पानी के भीतर बुल्ल पदा कर रहे हैं। इस गरमी म पानी की ठडक आकाश की स्वच्छदता और पूरब की ओर के बडे चदा का हास्य जोटन के भीतर मुद्दत के बाद अल्लाह का महसूल वसूल करने को कह रहे हैं। भरपेट खाकर अब शरीर म जाने कितने शौक चर्रा रहे है। दूर प्रातर म रोशनी की एक बुदकी। सामन पटसन के खेत। पटसन कट चुके है—जल स्वच्छ है। हवा से चारो ओर से पानी म हिलकार। स्वच्छ जल म जोटन अपने बदन की गरमाई उडेल रही थी—माना जमाने से गाजी के गीत के साजिदा की तरह सूरज की गरमी न पाकर निढाल है। इस समय मुह पर पानी लेकर उसने आकाश की ओर फेंका। बोली अल्लाह यह बता कि तेरी दुनिया म मेरा क्या काम रह गया।

आकाश म उजाला है। जल म कूइ—कोकाबेली हैं और प्रातर क अत म आम जामुन परछाही डाले हैं—यही देखते रहना अच्छा है। कूद फूल जसा अपना मुख पानी स ऊपर उठा दो लकोट के पड पार करत ही उसन देखा कछार क बरगद के नीचे एक लालटेन और नाव की छाया। शायद एक आदमी की भी। झट जल म गुम हो जान क लिय उसन घास वन म अपन शरीर का ढाप लिया। लकिन भागत वक्त जल म शब्द। शायद कोई मछली भाग रही है। या कश्तियां म, बुआर

के कटिए मे कोई बडा बुआर माछ फस गया है। वह आदमी नाव लेकर मछली की टोह म आकर देखता—कोई आदमी-सा पानी के भीतर झाडिया म बहता जा रहा है। जोटन न फुर्ती स गले तक पानी मे डुबोकर घास-वन म अपना शरीर छुपाना चाहा। लेकिन छुपा न सकी। उसके मुख के पास लालटेन उठाकर मजूर कहन लगा, अरे, जोटन, तू है।

जोटन ने शम स आखें मूद ली। आखें मूदे ही बोली, हा, मैं ही हू।

—गई कहा थी ?

—ठाकुरबाडी गई थी। रास्ता छोडो, मैं जाऊ।

पानी के भीतर उसकी हालत भाप कर मजूर ने मुह फेर लिया था। उसने फिर मुह न फेरा। लेकिन बोला, मैंने सोचा शायद एक बडी मछली कटिया म फस गई है।

—और कुछ नही साचा।

—और क्या सोचना है। कहकर वह नाव पर बठ गया।

—क्यो, क्या और कुछ सोचा ही नही जा सकता। तू इधर क्यो ? कहकर जोटन ने आखें खोल ली। बातचीत स मानो सारा सकोच दूर हो गया है। देखा, मजूर नगे बदन है। कमर म महीन अगोछा। सो भी पानी म भीग कर काफी ऊपर उठ गया है। मजूर किसी तरह से भी जोटन की तरफ ताक नही रहा है। जोटन को बडी हसी आई। तेरे पास तो ढेर पसे हैं। बडा अगोछा एक खरीद नही सकता क्या ?

मजूर बोला तू जा भी।

—न जाऊ तो क्या कर लेगा। जोटन के भीतर वह इच्छा बहुत जोर मार रही है।

—करेंगे क्या भला। अपनी इस उपस्थिति के लिये उसने कारण दर्शाये। बोला। हाईजादी गया था। दवा लाने। लौटन म रात हा गई। कछार पर आया हू देखने कि कटिया मे मछलिया फसी कि नही। आकर तेरा यह माजरा देख रहा हू। चादनी रात म इस जगह तूने अधियारी छा रखी है। तेरे साथ मुलाकात होगी जानता तो तहमद पहनकर आया होता।

मजूर जोटन का हम उम्र है। बचपन की कुछ घटनाआ को वे इस वक्त सुमिर सके। कभी बचपन म इन पटसन खेतो की मेड पर वे विचरते रह हैं। जोटन ने

इन स्मृतिया को स्मरण करना चाहा लेकिन मारे सकोच के एक-दूसरे से कुछ भी कह नही पा रहे हैं। दो साल से अधिक यह देह जल जल कर धुधुआ रही है। जोटन ने दर्द भरे स्वर मे कहा, रास्ता दे जाऊ।

—मैं क्या तेरे को पकड़ हुए हू।

यह जल देख रात की जुन्हाई देख और भरपेट भोजन से तृप्त शरीर लिये जोटन किसी तरह से ही नाव का चक्कर लगा तक नही सकी। उसकी देह जाने कैसे धीरे धीरे पानी के उपर उभर आ रही थी। जल पर एक मढक सरीखी। मानो एक सुनहरा मढक जुगनुओ का ध्यान के लिये जल मे उभर कर मुह बाये है। मजूर कोई बात नही कर रहा है देखकर उसी ने कहा तेरी सूरत आसमान के चाद की नाइ है। लेकिन अब देखकर लगता अमावस की अधेरी रात है। बिलकुल कुम्हला गई है।

—कुम्हला गई है। तुझसे कहा है।

मजूर अपनी बीमार बीवी का मुख याद कर जरा सकपका गया। एक लबे अरसे से बीबी की बीमार देह उसके गरम कलेजे पर पानी नही छिड़क सकी है। मजूर बस सुलग रहा है तो सुलग ही रहा है। एक शादी का शौक न हुआ हो ऐसी बात नही, फिर भी मजूर अपनी बीवी से मुहब्बत करता है। मजूर ने मानो बडी कोशिश से कहा, अधेरी रात को क्या उजियाली कर सकती। और मजूर के मुह पलटते ही जोटन ने फिर अपना शरीर जल के नीचे डुबो लिया। सामने पीछे जलज घास। अच्छा खासा परदा बना हुआ है। जोटन ने इन जलज घासो के भीतर मजूर को लेकर डुबकी लगाना चाहा। और मजूर से रहा नही गया तो दोनो हाथो से मानो मरी मछली को नाव पर उठा रहा हो इस तरह खीच कर उस नाव की पटौरी पर रख दिया।

कुछ देर के बाद पटसन-खेतो के भीतर से रुलाई की एक आवाज गाव से तिरती हुई आई। जोटन सुन पा रही है मजूर भी सुन पा रहा है। नाव के ऊपर कुछ कीडे उड रहे थे। धनखर पर चादनी बडी माया भरी। सुख या आनद इस पट वतन पर इस समय लोट पोट रहा है। सारा दुख पानी मे बहता चला जा रहा था, सारा ताप चादनी की तरह ही गल गल कर झर रहा है। अरमानो की दुनिया मे कठपुतली बना मजर बीवी का मुर्दा चेहरा देखते हुए बोल पडा, कौन रो रहा है री ?

—लगता है तेरे ही घर से यह आवाज आ रही है।

—तो फिर बौठ़ीजान का शायद इतकाल हो गया।

जोटन ने देखा मजूर का चेहरा लकवा लगे मरीज की तरह। सारा उत्ताप
हा उडेल कर मजूर अब हो हा कर रो रहा है और नाव मे रहा है।

कुत्ते को कोई फेंक गया है। पानी म फेंक कर नाव लेकर भाग गया ह। जीने
की लालसा से वह कुत्ता पानी म जी जान से तैरता जा रहा है। किसी तरह से
पानी स ऊपर अपनी नाक भर निकाले है। फिर लगा कि जगह छिछली है। कुत्ता
मानो उठकर खडा हो गया। नही, दूर कोई गाव नहीं दिखाई पडता। निराशा से
उसका चेहरा घबराहट स भरा हुआ। बरसात का अंतिम छोर है अब। जल,
प्रान-स्वन स पटसन खेत म उतरता जा रहा है।

उस समय पागल ठाकुर नाव को मेडा पर खीच खीच करले जा रहे थे। सोना
पगोरा पर घुटरुआ के बल बढ रहा है। धान गाछ झुक गय हैं। सावन भादो का
वह स्वच्छ भाव अब नहीं रहा। पानी गदला। पानी से सडाध आ रही है। दोनो
ओर कीचड पानी भरे घाषे दुर्गधमय जलज घास। नाव को सरकार के खेत मे
डाल देते ही लगा एक कुत्ता खडा है। उसकी शक्ल पर घबराहट छायी हुई।
कुत्ता पागल ठाकुर को देखते ही भूक उठा भौ।

पागल ठाकुर खडे हो गये। फिर पुराने कायदे से हाथ मलते हुए बोल पड,
गतचोरतसाला।

कुत्ता फिर बोल उठा भौ।

पागल ठाकुर बोले गैतचोरेतुसाला।

पानी छिछला होने के कारण ही वह कुत्ता मेड के एक अलग खडा रह पा रहा
है। एक अलग खडे रह उसने इन लोगो के लिए रास्ता छोड दिया है। कुत्ते की
यह शराफत पागल ठाकुर को बडी भली लगी। वे फिर उसस कोई बुरे शब्द नही
बोले। व बगल स नाव खीचकर ले जाते समय जाने क्या सोच कर पीछे की ओर
ताके—कुत्ता मासूम बच्चे सा ताक रहा है। उन्होंने अब दुलारने की मुद्रा म मुह
से एक प्रकार शब्द निकाला ही था कि पानी मे छप्प छप्प शब्द करता कुत्ता बगल
म आकर खडा हो गया। पागल मानुस मणीद्रनाथ ने कुत्ते के मुह को चूमा और
उसे नाव पर उठा कर बोले गतचोरेतुसाला।

कुत्ता पगली के एक ओर दुबका सा पड़ा है। [illegible]। फिर उसके होंठ जुड़ाई सी सी और कांपने लगे [illegible] सीख लिये रहा। [illegible] हुए और नाना का [illegible] हाथ रहा है। कुत्ता लगातार दुम हिला रहा है। [illegible] अब लगातार [illegible]।

[illegible] नाना की आंखें [illegible] कर जाता। [illegible] नाना को [illegible] था। नाना अब भी कोई शब्द सीख सा नहीं पाता। [illegible] उस [illegible] गया। उसका सारा पहनावा [illegible] गया। अब वह रो रहा है। उस बार भी [illegible] उन्हीं बातों का दुहराव।

दो गज पार करते ही हमारे पीर की दरगाह है। जाड़े के मौसम का और [illegible] पत्थर सता गया है। उस समय पीर का मेला सा लगा था [illegible]। [illegible] साग आग थे और सामग्री [illegible] थे। इस समय साग साग की कोई आहट नहीं। [illegible] मस्जिद और पीर साहब के कब्र की दीवार पर कई कौवे लगातार उड़ रहे हैं और नाना की रुलाई किसी तरह से भी कम नहीं हो रही है। वे एक हाथ से नाना को सीने से लगाकर दूसरे हाथ से माथा ठोकने लगे। इतने पीर की पीठ पर [illegible] साथ बांध [illegible] आए।

कौवे दीवार पर शोर मचाए हैं। पीर साहब के कब्र के बगलवाले पलाश का पेड़ वैसा ही खड़ा है। पागल मानुस को देखकर कौवे उड़कर पलाश पेड़ पर जा बैठे। जगत मास्टर के बीच से दूर का माइनर स्कूल दिखाई पड़ रहा है। कभी मणीन्द्र नाथ पैदल चलकर इसी विद्यालय में विद्याभ्यास करने आया करते थे।

यह जमीन सीना जरा ऊंची है। कई आम के पेड़ कुछ चिरया चुनमुन फॅले की झाड़ियां फैंकड़े सांप और नागरमाथा घास जंगल लेकर पीर साहब कब्र के नीचे सो रहे हैं। बरसात का तनिक सा पानी भी पीर साहब को छू नहीं सकता। तब दूर के नदी नाला के कछुए भी नम मिट्टी की टोह में पीर साहब के पास चले आते थे। अंडे देने के लिए उन्हें आश्रय चाहिए अंडे सेने के लिए भी। अगहन का महीना। वर्षा थमने में अब कोई देर नहीं। सोना उस वक्त भी रो रहा था। कुत्ता इनके पैरों से चिपका चल रहा है। कब्र पर दो चार पत्तियां झर कर गिरीं। हेमंत की खुनकी सारे घास पत्ते चिरया-चुनमुन और पीर साहब की दरगाह की दीवार पर छाई हुई। दीवार के नीचे कितने ही तरह के बिल और

वानिया। कब्र की वेदी स टूटे शीशे उखड आए हैं।

सोना को गाद म लिय मणीद्रनाथ इस दीवार के चारो ओर चक्कर लगान लगे। इस वीरान बियावान दरगाह म अचानक आदमी देखकर कौव कुछ बौरा स गये। व मणीद्रनाथ के सिर के ऊपर मडरात उडत रहे। कितने दिनो क बाद मणीद्रनाथ पीर साहब की दरगाह म आए हैं, कितने दिना के बाद मणीद्रनाथ न पीर साहब से गल म फासी लगाकर मरने का कारण पूछना चाहा।

अब सोना रो नही रहा है। पागल ठाकुर ने साना को घास पर लिटा दिया। कुत्ता इतनी देर तक पैरा से सटा घूम रहा था। मणीद्रनाथ सोना को रख कर जरा सामन की ओर चले गय। कुत्ता साना के बगल म बठा रहा। जरा सा भी वहा से नही हिला। घास पर लटा साना अब हाथ पर हिला हिला कर खेल रहा है। मणीद्रनाथ जान कहा जा रहे हैं। व दीवार की दहली लाघ कर भीतर घुस गय और बोले, गैलचारेतसाला। साना उन्हान कहना चाहा पीर साहब, तुम्हारी दरगाह म मेला लगा है तुम हिंदू मुसलमान सभी लागा के पीर हो तुमन गले म फास क्या लगा ली कहकर वे वदी के बगल म जाकर खडे हो गय और एक सूखी टहनी इसी समय दीवार के उस पार टूट गिरन म उन्हान देखा छतिवन के धुर ऊपर वाली शाख पर कुछ गीधा न घासला बनाया है।

पागल मानुस न कहा गनचोरतसाला। मानो कहन की इच्छा हो, पीर साहब क्या आप भीतर हैं। वे वेदी के पास बठ गये और जमीन से कान लगा दिया—पीर साहब का चेहरा व याद कर सक उस वक्त पीर साहब बूढे जईफ हो गये थे। दूर के विद्यालय से पढ कर लौटत समय मणीद्रनाथ इस दरगाह म जाकर पीर साहब की लम्बी मूछ म शून्य मुख देखत थे। और वह पीर साहब एक दिन रात का जान क्या गल म फासी लगा कर छतिवन की डाला स झूलन लग। हाय इश्वर जानत हैं कि ऐसा इमान अमूमन मिलता नहा और कहा जाता था पीर साहब को खाद्य की जरूरत नहा पडती थी। पीर साहब का हुक्का चीलम कमर मे बधा रहता था। व इस दरगाह के चारा ओर बस चक्कर लगाया करत थे और रात के अधेर म जब दूर दूर सार गाव गहरी नींद म डूबे होन, जब दूर दूर गहाने नावा म इधर उधर एकाध रोशनी तभी वे साग पत्ती या पुरान छतिवन की डाली पर चढ कर गीध के अडे तलाशते थे। कछुव इस दरगाह म या कूला के किनार हमत के अन्त म और जाडे की शुरुआत म अडे दे जात थे—तलाश कर

उनको भी व कमरे म उठाकर रख देत थे।

अब साग पत्ता वे व पौधे इस दरगाह म नही हैं। सड-गल सूख-साख गए हैं। बरसात बीत चुकी है इसीलिए दरगाह के चारो ओर तरह-तरह क लमेरा का जगल—कुछ घास भी उग आए हैं कही कहा। नम घास पर सोना सो रहा है—इस समय याद पड जात ही वे दीवार क पास आकर खड हो गए। जब देख लिया सोना घास पर लट सा रहा है कुत्ता भी पहर पर ह ता व चले गय। दीवार के भीतरी तरफ काफी जगह है। बडे बडे गडढे, कब्र स मानो ढक्कन खोल कर कोई आदमियो को उठा कर ल गया है। बड-बडे पक्के स्लब पडे हैं। स्लब से ढक देने ही एक आदमी गायब हो जायगा। कोई भी नही जान सकगा कि स्लब के नीचे कोई आदमी गायब है। ढेर सी जगह देख घर बना कर रहने की इच्छा हो रही है मणीद्रनाथ को। मले के दिनो म जहा मामबत्ती जलाकर पीर साहब के नाम पर शीरनी चढाई जाती है उतनी ही सिफ साफ है। उसी जगह पर दूब घास और उसी जगह पर एक झोपडा या टूट घडे हाडा थे। पीर साहब के कुछ गुर थे—जिसकी बदौलत हसन चोर फकीर बना और कभी पीर बन गया। माला ताबीज गडे और तरह तरह की हड्डिया सग्रह करने की लत थी हसन की। दफ नाते समय सभी कुछ उसके कब्र म दे दिया गया है। अब लबी वदी पर बस गीध ही बीट कर रहे हैं। कौवे और दूसरे चिरया चुनमुन जस मन, इस दरगाह म बेहद भीड करने लग गये है। और हसन पीर ने ही कहा था तेरी पुतलिया ऐसी है कि आखें ही बताती हैं कि तू पागल हो जायगा।

—आप भी कसी बात करते हैं पीर साहब।

—मैं बात ठीक ही कर रहा हू ठाकुर। तेरा सारा लिखना पढना बेकार है। पीर-पगबर बनना हो तो तुझ जसी आखें होनी चाहिए तुम जसा जिस्म हो मुखडा हो। तुम जसी आख न हो तो न दीवाना ही हुआ जा सकता है और न किसी को दीवाना बनाया ही जा सकता है।

और फाट विलियम क रपट पर बठकर पलिन कहती थी तुम्हारी आखें बडी गहरी और विषादभरी हैं मणि। योर आइज आर ग्लूमी। या बोटानिकल के पुराने बरगद की छाया म पलिन अपने बाबकट बालो मे अगुलिया फेरती अग्रेजी म महीन स्वर म उच्चारण करती आओ हम दोनो एक साथ बठ कर कीटस की कविता पढें। देयर नन आई ग्रीव टू लीव बीहाइड बट ओनली ओनली दी।

तब दूर के नारियल वक्ष या गगावश पर जहाज की वसी या समुद्र स आए सारे पाखियो के पाखा के शब्द दाना को अयमनस्क कर देते। वे तव एक दूसरे को प्रगाढ रूप से निहारा करते। कविता उच्चारित होन के बाद पछी के पर से जसे हल्के एक विपाद म डूव कर दोना बातें ही न करते।

पलिन कहती, चलो, इन सब जहाजा पर चढ कर हम लोग किसी दूमरे समुद्र म चले जाए।

इस दरगाह म वठे मणीद्रनाथ इन सब स्मृतिया से इस समय व्याकुल हो रहे थे। उनके अरमानो के वक्ष म पलिन—सन् 1925 26 पलिन जब युवती थी, प्रथम विश्वयुद्ध मे पलिन के दादा की मृत्यु और उस परिवार में किसी रात के अधियारे मे मोमवत्ती के सामने ईसामसीह का चित्र पलिन का घुटना टेके वठे रहना—कैसी-कमी स्मृतिया वार-बार दिमाग म उभर आती, फिर बिला जाती। मणीद्रनाथ कुछ भी याद नहीं कर पाते। उनको अब केवल एक भले चगे व्यक्ति की तरह बातें करन की इच्छा हो रही थी, दरगाह के मालिक हुमन पीर स कहने का जी कर रहा था क्या पीर साहब क्या फिर वहा लौट नही सकता हू। लेकिन वातें करने के समय वही एक उच्चारण। और ऐसे ही समय पछी उडन लगे। हेमत की धूप ढल चुकी है। वरसात का पानी अब खेतो मे घुटनो तक उतर आया है। छोटी छोटी मछलिया और चादा खहामछलिया धानविरवो के तन के पास पूछ हिला हिला कर सहला खा रही हैं। मरदी का यह आभास सारे प्राणी जगत म काई अशुभ सदेश लकर आया है। फिर भी कितनी ही नागरमोथा की वाडिया रौदकर कितन ही वन-जगल लाध कर कितन ही नदी-नाले पार कर केवल फोर्ट विलियम का किला, उसका हराभरा मदान और गुवद के ऊपर फिराज़ी कबूतर उड रहे हैं—दरगाह की वदी पर वठे मणींद्रनाथ इस समय केवल किले के शीर्ष पर सूरज देख रहे हैं। माना पलिन सूरज की यह रोशनी इम अवले जाडे क खेता पर विखरती जा रही है।

सोना न वठा हुआ है और न घुटनों के वल चल रहा है। वह मा गया है। कुत्ता वठा है। हिल नही रहा। उसे भी कुछ नींद मी आ रही है। वह आखें वद किए थे। मणीद्रनाथ ने आर देखा हमत के धूप की पतली सी रखा दीवार म लगी है। सोने का जल जसी ही यह रखा चमचमा रही है। मणीद्रनाथ ने पलाश की डाली हटाकर आकाश म सिर डाल दिया और जहा स प्रकाश का वह जल धर

रहा है उसे दोनो हाथो से पकडना चाहा। वह अधेरा बडा उष्ण सा लग रहा है। लिहाजा कूद कर दीवार फाद गये। दोनो हाथ ऊपर उठाये उस प्रकाश के घर सूय को पकडने के लिए दौडने लगे। लेकिन जितना ही वे आगे बढते, सूय क्रमश उतना ही दूर खिसकता जा रहा है। घासो का जगल पार करते ही दरगाह की जमीन खत्म हो जाती है। वे क्रमश खेतो म उतरने लगे खेतो म घुटनाडुबान पानी, पानी हल कर वे आगे बढ़ने लगे—मानो वह सूय रथ पर भागा चला जा रहा है, वे उस रथ पर चढ बठेंगे। और घोडो की वल्गा थाम लेंगे। फिर सूय को लेकर भगोडा बन जाओ वहा के लिए जहा पलिन अब भी सोती हुई सपने देख रही है। और ऐसा अगर न हो तो सूय को लाकर वे पीपल की डाली से लटका देंगे। इस धरती का सारा कलक दूर करने, अधेरा हटाने के लिए वे सूय को पकड लाएगे। यानी वे मानो धरती को सारे कालुप कालिमा से रक्षा करने के लिए या यहा एक प्रिय निदशन रखने के लिए पागल की तरह धान खेत जाडा, पानी और झील कूला तैर कर जब टेबा के तालाब के भिडपर जा उठे तब देखा सूय पलातक सा पेड पाता के अय छोर पर उतर गया है। सूय को उस पार झील के जल म अदृश्य होते देख कर वे टूट से गये। पराजित सनिक की तरह एक पेड से टेक लगाये मानो बदूक की नली पर हाथ रखे हैं ऐसे ही एक अदाज म खड रहे। चारो ओर रात के सारे कीडे मकोडा की आवाज और दूर से आती हुई किसी बच्चे की रुदन ध्वनि। उनके सिर म फिर मे दद होने लगा। पीछे मानो कुछ छोड आए हैं बिलकुल कुछ भी याद नही। इतनी दूर स आती बच्चे की वह रुलाई—लगता है सारे खेतो म हजारो बच्चे उच्च रोल मे रो रहे हैं। उनको कुछ भी याद नही पड रहा है। कीच भरे रास्ते से वे घर लौट जायेंगे। यह रास्ता उनका बहुत पहचाना हुआ है। चारो और अधेरा उतरता आ रहा है मगर दूर से आती बच्चे की रुदन ध्वनि से वे दुखी हो रह थे। तिपहर को बरामदे म बठ सोना अकेले खेल रहा था, पागल ताऊ के साथ टूटी फटी बातें भी कर रहा था और वे उसको लेकर लाड से टोले की सर कराने निकल पडे थे मबक अनदेखे नाव लेकर—सोना देखो कसी धरती और खेत इसी धरती पर तुम बडे होगे यह तुम्हारी जन्मभूमि है मा से भी बडी ईश्वर से भी अधिक सत्य है यह घास फूल मिट्टी—लेकिन अब वे किसी तरह से भी उसे याद नही कर पा रहे हैं—कब वे घर स निकल पडे थे, कौन, कौन उनके साथ था।

देखो, सोना से कहा नक्श देखो—घास पतिंगे फूल-परिंदे देखो, जन्मभूमि देखो। फिर स्वयं देखा—आकाश पर अंकित है सोना का मुख, पलिन की आंखें। कुत्ता पटौरी पर खड़ा खामोश दुम हिला रहा है।

और भी कुछ अरसे के बाद। सोना तन्मय हो तरबूज के खेत म बठा मिट्टी खोद रहा था। बलुही मिट्टी इसलिए उसने काफी मिट्टी खोद निकाली। सुनहरे रेत की चाकी अब खुश्क है। चाकी पार करो तो नदी का जल पतले चादर जगा हिल कोरे म थिरक रहा है। स्वच्छ जल म नन्ही-नन्ही मालिनी मछलियां घूम फिर रही हैं। नारियल के खोल म सोना नदी से पानी ले आया। छोटे से गढे को पानी से भर दिया। चूंकि नदी म घुटनाडुबान पानी ढोर-डंगर गाडी-लढिया पार जाते हैं इसलिए घुटनेपानी मे उतर कर सोना ने एक मालिनी मछली पकड ली। मछली को अंजुरी म भर कर वह नदी से उस गढे के सामने आ कर खडा हो गया। पानी मे मछली छोड कर उसने तरबूज के पत्तो मे से खरगोश की तरह सिर ऊंचा कर देखा, दूर मडया के नीचे बठा ईशम तमाकू पी रहा है। सोना और तरबूज की ओर माना वह निगरानी रखे है। सोना ने अपने को तरबूज के पत्तो म और जरा ढाप लिया। नन्हा सा शरीर सोना का। शरीर का रंग रेतीली चाकी की तरह। सोना के पर नंगे हैं और यह वसतकाल है। नदी की चाकी से बासती हवा आ रही है। हवा जोर से चल रही है इसलिए तरबूज के पत्ते अलग बिलग हो जा रहे हैं। इसलिए पत्तो की आड मे सोना का शरीर स्पष्ट है। पत्तो की आड मे सोना को तन्मय बठा देखकर ईशम तनिक फिक्र करने लगा। उसने सोचा—यू सोनवा कहो बठे बठ तरबूज की लतिया तो नहीं उखाड रहा है। वह मडया स घुटनो के बल निकल आया। पुकारा, सोना मानिक कहा गये ?

सोना झटपट पत्ता म और छिप गया। पहली बात वह अकेले-अकेले घर से निकलकर इस जगत म आ गया है दूसरी बात, उसन गढा बना नदी से जल लाकर एक पोखर बनाया है। पोखर बनाने म तरबूज की दो लतिया उखड आई हैं। यह सारा अपराधबोध उसके मन मे काम कर रहा है। उसने एक बार

पत्तियों की आड से सिर ऊंचा कर देखा, ईशम सोना को ढूंढने के लिए इधर ही आ रहा है। सोना फुर्ती से पत्तों की आड में मिट्टी से सट कर रेंगने लगा। ईशम जितना ही उसकी ओर बढ़ने लगा वह उतना ही जमीन की आड लिए जौ के खेत में घुस गया और चुपचाप बैठा रहा।

ईशम ने सोना को जहां बैठा देखा था अब वह जगह सूनी है। तरबूज की दो लत्तियां उखड़ गई हैं। एक छोटे से गड्ढे में थोड़ा सा जल और उसमें एक मालिनी मछली तर रही है। पानी क्रमश कम होता जा रहा है। मालिनी मानो ईशम को देखकर पानी के गदले अंधेरे में छिप गई। ईशम ने फिर पुकारा, हो मेरे सोना मालिक। गये कहां?

नदी का कगार जहां ऊंचा होता हुआ गांव में मिल गया है वहां जौ के खेत हैं गेहूं के खेत हैं। इस समय गेहूं और जौ कटने का समय है। कुछ गंगामैना गेहूं और जौ के खेतों में उड़ रहे हैं। ईशम ने फिर पुकारा, सोना मालिक कहां गये जी। मैं क्या आपकी बराबरी कर सकता। आये जाओ मालिक फिर तुमको कंधे पर चढ़ा कर नदी पार ले जाऊंगा।

सोना ने पुकार सुन ली लेकिन ओट से जरा भी हिला नहीं। इस वक्त ईशम के साथ माना उसको आंखमिचौनी खेल का शौक हो आया है। वह जौ के खेत के भीतर और भी घने में बैठ गया। बैठे-बैठे वह सूखी घास नोचने लगा। जौ के बिरवे हिल रहे थे। ईशम खेत की मेड़ में सब भाप ले रहा था। तेज चलकर जौ के खेत में घुमकर सोना को उसने बांहों में भर लिया और कहा, अब कहां जाओगे मालिक?

जौ के खेत के भीतर ही सोना हाथ पैर फेंक रहा था। उसकी चीख-पुकार से जौ गेहूं के खेतों से सारे गंगामैना उड़कर ढलते दिन की धूप में उड़ गये। उड़ते उड़ते वे नदी की चाकी में उतर गये। सोना बोला, नहीं, नहीं जाऊंगा। मुझे आप छोड़ दें।

—आपसे क्या मैंने कुछ कहा है? मेरे साथ चलें। छप्पर के नीचे बैठेंगे और आसमान देखेंगे। कहकर, सोना को कंधे पर उठा ईशम चलने लगा।

अब सोना में कोई पराजित भाव नहीं। वह कंधे पर बैठ पैर डुलाने लगा। सुनहरे रेत वाली नदी में जल कुछ नाव और कुछ गांव के लोगों को सोना ने देखा। बसंत की हवा इस समय जौ-गेहूं के खेतों में घुसकर अदृश्य हो रही है।

शब्द मिला सोना को लेकिन फिर भी वह नहीं उठा। वह तन्मय होकर नदी की चाबी देख रहा है। यह अचल बड़ा सुनसान है। उसने गेहूं-जौ के खेतों में एक भालू का मुंह देखा। फुर्ती से मडया की ओर चले जाते वक्त ही उसे याद आ गया कि भालू का मुंह उसने एक चित्रभरी पुस्तक में देखा है। इसलिये डरने की कोई बात ही नहीं। छप्पर के नीचे घुसकर सोना ने कहा, निशि सुमरा मेरा भी दोस्त है। मैं किसी से नहीं डरता।

छप्पर नीचे पहुंचकर सोना कुछ देर तक उछलता रहा। मचान के नीचे बोरसी में ईशम ने तमाकू पीने के लिए आग रख छोड़ी है। धुआ उठ रहा था। बाहर आकर बठिए, देखिए आसमान तले कितना सुख है। ईशम ने कहा।

तरबूज के खेत मे ईशम पैर पसार कर बठा। सोना उसके गोद में बठकर बोला, मुझसे जो आपने कहा कि कंधे पर लेकर नदी पार करेंगे—सो तो नहीं किया। एक लंबे अरसे से सोना की नदी पार करने की तमन्ना है। लेकिन ईशम ने उसकी बात पर कुछ भी कहा नहीं तो मन ही मन वह रूठने लगा। दूर-दूर नदी का जल पतले चादर की तरह काप रहा था। जौ गेहूं के खेतों में से होकर नदी के किनारे किनारे दो बुर्का पहन बीबिया का उसने आते हुए देखा। अब वह सचमुच डर गया। अब वह ईशम से सटकर बठ गया। ईशम दादा की सुनाई हुई वे भूत की कहानिया उसे याद आने लगीं—दोनो आखें सफेद और कोई शरीर ही नहीं। रात को मा के बताये राक्षस खोक्कस की गंध मानो इस बालूचर पर रेंगती सी उतरी आ रही है। उसने बड़े ही विनीत ढंग से कहा ईशम दादा, मैं मा के पास जाऊंगा।

—जाइएगा, मेरे संग जाइएगा।

—नहीं मैं अभी जाऊंगा।

दो बुर्के पहनी हुई औरतें नदी में उतर रही हैं। पीछे नयावाड़ी के बड़े मिया। उसने जान लिया कि बड़े मिया की दो बीबिया हैं। लिहाजा उसने हाथ उठाकर पुकारा, ओ बड़े मिया बड़े मि   या। बड़े मिया से मिलने के लिए वह सोना को कंधे पर लेकर तरबूज के खेत पार करने लगा।

नदी के किनारे किनारे बड़े मिया चले आ रहे हैं। ईशम इस समय बालूचर पार कर रहा है। इन सब घटनाओं से सोना भीत और त्रस्त है। केवल बोल रहा है मैं नहीं जाऊंगा, मैं मा के पास जाऊंगा। फिर भी उसने देखा ईशम के

गल की आवाज म उत अवयव शून्य अधकार रग म दो गुडिया की तरह स्थिरता है। उसने जान लिया कि क्रमश व परस्पर क आमने-सामने आते जा रहे हैं। उसने फिर कहा मुझे डर लग रहा है मैं घर जाऊगा।

ईशम ने कहा, ओ बड मिया तनिक ठहर हो जाओ। अपनी बीबियो को दिखा जाओ। बुर्का पहन आ रही हैं देख कर सोना मालिक को डर लग रहा है।

वड मिया की शक्ल बडी बदसूरत और डरावनी है। चेचक के दाग चहरे पर और एक आख गायब और मरी हुई।

सोना, अब ईशम स लग कर लिपट गया। सोना मैं शरारत नहीं करूगा। मुझ छोड दीजिए।

सोना की ऐसी बात पर बड मिया बिना हस नहीं रह सके। बोले छनकर्ता का बेटा है ?

—हा। ईशम भी हसा।—डरते क्यो हैं ? आप लोगो के पुराने जमाने का नौकर है।

अब सुनहरे रेत वाली नदी के जल म सूय का अतिम आलोक सोने का राजहस जसा लग रहा है। वे काली और अवयव शून्य दोनो वस्तु नीरव और निश्चल मानो जादूगर के करिश्म स इन दो अपरिचित प्रेतात्माओ को बदी बना भूत का खेल दिखा रहा हो। सोना आखिरी बार ईशम स कसकर लिपट गया—सकस म सिंह का खेल देखने जसा ही अयाचित भय—सारे दृश्य रोमाचकारी।

ईशम ने कहा अब अपनी दोनो प्राणप्यारी बीवियो को दिखाइए। सोना मालिक का डर तो दूर कर दें। देखते नहीं जुबान पर ताला लग गया है।

चारो ओर जौ गेहू के खेत। किनारे किनारे लटकन के दरख्त और उन दरख्तो की डालियो पर नीलकठ पाखी जस ही मना ने आश्रय ले रखा है। चहचहाहट। दूर गाय का रभाना। सूय का आलोक स्वण राजहस जसा ही। उस विचित्र विस्मय मुग्ध प्रकृति की निस्तब्धता के भीतर बडे मिया ने अपनी दोनो बीवियो के नकाब हटा दिये—अनोखे मुखडे वाली इन युवतियो के छरहरे बदन। बडे मिया की दो बीवियां—दुर्गा प्रतिमा जसे मुख डौल, नाक म नथ और परो के पजनिया छम छम करती। सोना की कातर आख अब नदी के जल म अधरी रात मे नाव की रोशनी जसी—विस्मय से चमक रही हैं।

छोटी बीवी ने कहा, आइए मालिक गोद मे आइए। कहकर ईशम के गोद से

सोना को अपनी गोद म ले लिया और मुख के पास मुख रखकर बोली, आखें फाड फाडकर आप देख क्या रहे हैं ?

सोना से कोई जवाब दते न बना। उसने छोटी बीवी के मुख स आखें हटा लीं। ईशम को दखा। ईशम अब बड मिया के साथ फसल की बातें कर रहे हैं।

बडी बीवी न कहा, मालिक हमरे सग चले चलें।

सोना न आखें बद कर कहा, नही।

सोना न फिर छोटी बीवी के मुख की ओर दखा, बोला, आप मुझे बहुत पसद हैं। अजी बडे मिया, सोना मालिक मुझ पर निगाह डाल हैं। कहकर वह खिल खिलाकर हस पडी।

हमी सुनकर ईशम न कहा, तरी हसी पहले जैसी ही है। अचानक कुछ याद पड जान के अदाज म ईशम बोल पडा, जाबिदा, तेरी अम्मा कैसी है री ?

—अच्छी ही हैं भाई साहब।

छोटी बीवी ने सोना की ठोडी पकडकर कहा मालिक हमस निकाह करना हो तो बडी-बडी दाढी रखनी पडेगी। दाढी न हो तो शौक नही मिटा सकोगे। बडी-बडी आखें हैं। भरे भरे नाक मुह हैं, नदी की चाकी जैसा बदन का रग है। सभी कुछ है मालिक बडे ही खूबसूरत हुए हैं आप लेकिन गाल म दाढी नही। इतना कहकर कनखिया मे उसने बड मिया की ओर देखा। ऐसी बातो से बडे मिया की मरी हुई आखें भी सजग हो उठी। छोटी बीवी की आखो म उस समय माणिक दमक रहा था। हस कर बोली डरो मत। और सोना को छातिया म चापकर उसन सोचा अल्लाह सोना मालिक जैसा ही मुझे एक बटा दो।

वडे मिया ने कहा, चलें ईशम भाई। दिन ढल चुका है। घर लौटने म रात हो जायेगी। फुरसत मिले तो आइएगा।

छोटी बीवी ने कहा लीजिए भाई साहब अपने मालिक को लें। कहकर छोटी बीवी ने सोना को नीचे उतारकर चेहरे पर नकाब डाल लिया। फिर वे चलने लगे। वे नदी मे उतरते जा रहे हैं—वे क्रमश दूर सरके जा रहे हैं। सोना का दिल दुखने लगा—बडी-बडी आखें दुर्गा प्रतिमा जसा मुखडा, नाक मे नथ पैरो म पजनिया, अब भी छमछम शब्द कानो म लगा हुआ है। फिर चित्र वाला वह भालू सोना की आखो पर फिर तिर गया। उसने ईशम से कहा मा ने कहा है मुझे एक बदूक खरीद देगी।

ईशम भी अब तक जाने क्या सोच रहा था। बड़ी बीवी के जवानी के दिन या और कोई छोटी घटना शायद जवानी की याद उसका मुख दर्द के लिए अप्रमारथ किए हुए थी। और यह भी हो सकता है—सूर्य डूब रहा है गाँव की आवाजें अब सुनाई नही पडती घास लेकर खेत से मजूर लौट रहा है इसलिए घर लौटने का समय होते ही उसे पगु बीवी याद पड जाती है। बडे मिया की किस्मत म सुख लिखा है दो बीवियां लिए घर लौट रहा है। तभी सोना कहने लगा, बड़ा होकर मैं एक भालू मारूगा।

ईशम ने इस बार भी कोई जवाब नही दिया। सोना का हाथ थाम वह तरबूज खेत म हल गया। कई बड़े-बड़े तरबूज उठाकर उसने मडया के भीतर रख दिए फिर टटटर गिरा कर कहा चलिये चलें।

सोना मचान से नीचे उतर कर बोला मुझे कधे पर लेकर नदी नहीं पार करेंगे?

—आज रहने दो। साझ उतर आई है, धनमामी खोज-तलाश करेंगी। फुर्ती करें घर चलें।

तरबूज-खेत पार करते ही सोना को याद आया कि उसकी प्रिय मालिनी मछली तरबूज खेत म अकेली पडी है। उसने कहा जरा ठहर जाइए उस मछली को पानी म छोड आऊ।

सोना छलाग मार मार कर तरबूज के पत्त और फल फाद गया। जब ढूढ-ढाढ कर उसे अपनी निर्दिष्ट जगह नही मिली तो निराश सा तरबूज खेत म खडा रहा। बार-बार बुलाकर भी ईशम को जवाब नही मिला। नजदीक आने पर भर्राये गले से सोना ने कहा वह मालिनी मछली मिल नही रही।

सोना का हाथ पकडकर ईशम ने उसे गढे के सामने ला खडा कर दिया। गढे मे अब कोई पानी नही। मालिनी मछली बलुई मिट्टी म मुह खोसे पडी है। सोना गढे के पास बठ गया। हथेली पर मछली को रख उलट-पुलट कर जब उसकी समझ म आया कि सचमुच मछली मर गई है तब पीर भरी आखो से चारो ओर ताकता रहा। उसको अब उठने का जी नही कर रहा है। मालिनी मछली की आखें शायद उसे इस वक्त पीडित कर रही हैं—या छोटी बीवी की आखें—उसने अब धीरे धीरे मछली को बलुई मिट्टी पर लिटा दिया। पास की मिट्टी से मछली का सारा शरीर ढक दिया। फिर तरबूज का एक छोटा सा पत्ता उसकी

कंधे पर छावन सा रख दिया। फिर ईश्वर से इस छोटी सी मछली के लिए प्रार्थना करते समय उसने देखा, गेहूँ-जौ के खेतों के बीच बड़े मियां अपनी सफेद भरा आँखों से देख रहा है। मानो कह रहा है—आऊ माऊ खाऊँ—मानुस की गंध पाऊँ। लेकिन माना ने देखा वही एक से खेत हैं—जौ-गेहूँ के खेत, चाकी की रेत पर तरबूज का गाढ़ा रंग और नदी के जल में ढलती वेला को आखिरी धूप और नदी के उस पार से बड़ी खामोशी से वही एक मरी आँख मुख पर दाढ़ी लिए आग बनी आ रही है।

इसलिए सब कुछ छोड़कर, ईशम को छोड़कर चाकी की जमीन पर साना भागने लगा। उसको बार-बार यही लग रहा है कि लिशि उस पर सवार है। ईशम तक को उसने बछड़ा समझ कर इस अनजाने जगह से भाग जाना चाहा। वह भाग रहा है तो भाग ही रहा है। लेकिन ज्यादा दूर तक वह भाग नहीं सका। जौ-गेहूँ के खेत की मेड़ों में वह भटक गया। डर से उसका गला सूख गया। जोर गले में वह रो भी नहीं सका। भय से चेहरे की रंगत उड़ी हुई, चारों ओर जौ-गेहूँ की बालियाँ—उसका शरीर दिखाई नहीं पड़ता।

डर से आँखें मूँदे जब वह रास्ता ढूंढ रहा था, जब खेतों पर अँधेरा सचमुच उतर आया था और आसपास सियार फेंकरने लगे थे कि ईशम ने सोना को अपने सीने की गरमाई में भर लिया। बोला, मालिक, आप मुझे छोड़कर कहाँ चले जाएंगे?

इस बार साना ने आँखें खोलीं। देखा, वही परिचित जगह वही प्रिय मालसिरी दरख्त की छाँह में अनगिनत मौलसिरी फूल की सुगंध। साना ने अब निडर सा कहा, ईशम दादा, मैं फिर कहीं नहीं जाऊँगा आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा।

धीरे धीरे कुछ समय बीत गया। कई साल गुजर गये।

खेत में अनाज का आखिरी दाना भी घर चला गया है। अब चैत का मध्य है।

खेत अब धू-धू कर रहे हैं। सूखी जमीन में हल नहीं धंसता। हर कहीं खेती-किसानी के लिए बास बन्द है। जितनी दूर आँखें दौड़ाओ—सामने सफेद धुआं धुआं सा। सूखे सख्त जमीन पत्थर की तरह उभरी पड़ी है। चिरैया-चुनमुन सारे

लापता—या जल भुन कर खत्म हो गये है। लगता ही नही कि इस जमीन पर स्वर्णिम फसल उगती या यहा कभी बरसात म बाढ भी आ जाती है। झाडिया और जगल कुछ खाली खाली से। गरीब दुखी लोग झरे पत्ते इक्ट्ठा कर रहे हैं। मुसलमान खेतिहरो की बहू बेटिया इन झरे पत्तो को इकटठा करते समय आसमान देख रही थी।

जोटन भी आसमान देख रही थी क्योकि इस समय उसके दिन बुरे हैं। पाच साल पहल नाश्ता कर फकीर साहब जो मिलाद शरीफ का नाम लेकर चले गये सो आज तक नही लौटे। आबिद अली भी आसमान देख रहा था क्याकि काश्त कारी बिलकुल बद है। नाव का काम भी बद है। गहोना नाव का काम जाडे के मौसम से ही बद हो गया है। बारिश होने पर नई साग पत्ती धरती फोडकर निकलेगी इसलिए जोटन आसमान देख रही थी। इस इलाके म इन दिनो आसमान देखना सभी की आदत है। नई ताजी घास नये नये पत्ते और बारिश की भीगी भीगी महक—अहा क्या मजेदार सफर होगा नाव पर कुटमती जाते वक्त। जोटन बोली बरसात आने पर आबिद अली तू मुझे कुटमती ले चलेगा ?

आबिद अली न कहा कुटमती मे जाने वाली ठौर कौन सी है तेरी ?—काहे,—क्या हमारे बाल-बच्चे जिन्दा नही ?

—है। तेरे पास तो सभी कुछ है। लकिन तेरी कोई खोजखबर भी नही लेता।

जोटन न आबिद अली की इन रजभरी बाता का कोई जवाब नही दिया। वक्त आबिद अली क पास कोई काम नही था। आज दिन भर हिंदूटोल म घमन क बाद भी एक काम नही जुटा सका। इस समय चत का महीना है। सभी कुछ महगा है। आबिद अली ने गौर सरकार क घर का छावन छा दिया है। जो मिलगा—बहुत ही कम। पसे की बात उसने नही की। आबिद अली ने दिन भर काम किया है। मजूरी करने वालो की सख्या बहुत है और मुसलमानटोल म रोजी-कमाई ठप्प पडी है जिसके पास गाय है, दूध बेचकर एक जून भात और एक जून शकरकद उबाल कर खा रहा है। आबिद अली क पास न गाय है और न जमीन उसके पास है तो सिर्फ जागर ही। जागर बेचकर भी पसा नही मिल रहा। दिन भर की मेहनत मशक्कत के बाद गौर सरकार स पसा लेकर बदशक्ल हो गई। भद्दी भद्दी गालिया देकर आबिद अली चला आया।

आबिद अली की बीवी जलाली उस वक्त भी पट स पेट सटाये पडी है। दिन

भर से पेट म कुछ गया नही। जब्बरआसमानदी की चाकी मे गाना सुनने गया है।

जलाली जमीन से पेट सटाये ही बाली, मिला कुछ ?

आबिद अली ने कोई जवाब नही दिया। उसने अपने बगल से पोटली ढेले की तरह जमीन पर फेंक दी। सामने जोटन का झोपडा। झोपडे का टट्टर बद। पोटली देखते ही जलाली झटपट उठकर बैठ गई। और खडे होकर धोती की खुली गाठ फिर से कमकर पेट पर बाध ली। ध्यान बटाने के लिए आबिद अली हुक्का लेकर बठ गया। और जलाली झरे पत्ते आगन मे ठेलकर गदले पानी से हडिया पतीली खगार कर धोने चली गई।

आबिद अली का ध्यान ही नही रहा कि कब से वह हुक्का सुडक रहा है। उसने देखा चूल्हे के दूसरी ओर बठकर जलाली हडिया मे चावल डाल रही है। छोटी धोती। दोना घुटना के बीच पेट का थोडा सा हिस्सा दिखाई दे रहा है। साली, औरतिया को पेट उघार रखने की बडी आदत है। जिस्म साथ नही देता। फिर भी यह उघरा पेट आबिद अली को लुभाने लगा। आबिद अली जब ज्यादा देर तक बीवी को इस तरह बठे रहते दखता है तो कभी उस उडद का खेत तो कभी एक खाली मदान दिखाई पडने लगता है। उसने फिर अपना ध्यान बटाने के लिए कहा यह ज बरवा गया कहा ? कल से देख नही रहा हू।

जलाली मानो आबिद अली की शरारत भाप रही है। बाली ज भरवा गुनाई बीवी का गीत सुनन गया है। लकडी के कलछुल से भात का चावल हिलाती हुई जलाली बोली—गुनाई बीवी का गीत सुनने का मेरा भी मन करता है।

इतनी तगदस्ती म भी आबिद अली को हसी आ रही है। इतने दु ख म भी आबिद अली ने कहा—नदी नाला म जब बढ़िया आ जायेगी तुझे लेकर तब मैं पानी म बह जाऊगा।

जलाली की एसी ही बातें मानो आबिद अली के लिए छूट है। खेत म उतरने या जोतने की छूट।

आबिद अली की दीदी जोटन अब तक ओसारे मे बठी ये सारी बातें सुन रही थी। इतने सुख की बातें उसमे बरदाश्त नही होती। उसने चुपके से टट्टर बद किया। और बद कर चुपचाप बठी रही। काई काम नही—सार बदन म आलस। बालो की जडसे चिकोटी काट-काटकर जुआ ढूढ रही थी। और जलाली की इतनी सुखभरी बातें सुनते ही मानो बालो की जड स उसने एक जुआ पकड लिया।

जोटन के मुख पर इस समय बदला लेने की इच्छा है—मदार वक्ष के नीचे मजूर का चेहरा जाग आया। जुए को दो नाखुना के बीच रखकर टट्टर की आड से झाकते ही उसने देखा, आगन की दूसरी तरफ आबिद अली। शेर जमे कधे पर दात गडा कर या पजा मे शिकार ले कर भागता है वसे ही जलाली से वह लिपटा है। जलाली दो परा के बीच लतर सी झूल रही है। चत का महीना है यह इस लिये गाहे बगाहे चक्रवात। धूल का एक झपट्टा आया—आगन म अधेरा छा जाने से कमरे के भीतर शिकार लेकर आबिद अली क्या कर रहा है वह देख न सकी। रजो गम व गुस्से से अब वह मदान म निकल कर धूल के अधड म डूब गई।

चत का महीना। इसलिए खेत धूप मे भाय भाय कर रहे है। तालाबा म पानी नही। केवल सुनहरे रेत वाली नदी के पाट म उस वक्त भी महीन चादर जसा जल बहा जा रहा है। मसजिद के कूए म पानी नही। गाव के दुखी लोग बहुत दूर चल कर पानी ला रहे हैं। सुनहर रेत वाली नदी म घडे नही डूब रहे। नमशूद्र टोले की बहू बेटिया कतार म पानी लाने जा रही है। वे खोद खोद कर पानी निकाल रही हैं। टेबा के पोखर और सरकार क तालाब का गदला पानी। गाय बल के उतरने से पानी एकदम हरे रग का हो गया है। बडा ही दुर्दिन है इस वक्त। निकलते वक्त जोटन घडा लेकर निकली। सुनहरे रतवाली नदी से घडा भर पानी लेकर वह हाजी साहब के घर चली जायेगी। बूढे हाजी साहब के लिए इतनी तकलीफ उठाकर पानी ढो लाने पर शायद कुछ धान पान मिल जाय—पसा न भी हो गौनी भर चावल तो मिल ही सकता है। बाहर निकल आते ही उसने देखा मदान म कुछ लाग भागत लपकते जा रहे हैं। चिलचिलाती धूप म लोगा का एक दल भागा जा रहा है। उनके सिर पर शायद हैजा की देवी है। विश्रामटोल म हैजा लगा है। इतनी दूर स वह लोगा को साफ साफ पहचान नही पा रही है।

मदान म पर धरते ही जोटन को ख्याल आया—जलाली अब उधर कमरे क भीतर है। चूल्हे पर चावल पक रहा है। पत्ते टहनी या वन आदि म आग लगते लगते आग लग जान म कितनी देर लगती। नदी की ओर चलन के समय जोटन को एम सारे दृश्य याद आ रहे थे। चत म आग मानो बास फूस म छिपी ही रहती है। जोटन का मन भारी होन क कारण वह तेज चल रही है। अभी पानी लेकर जल्दी म घर लौट रहे हैं उसे भी जल्दी लौटना है। गाव-गाव म हैजा मारी की नाई। जो लाग धूप म दौडते जा रहे थे वे धार धार जोटन के

नजदीक हो रहे हैं। बिलकुल आमने-सामने। जोटन भट बगल म घडा रख घुटने टेक कर बैठ गई। गधे की पीठ पर ओला-ओठा (हैजा) देवी जा रही हैं। उनको सिर पर लिये ढाक बजाते हुए लोग चले जा रहे हैं। जोटन उनके पीछे-पीछे ज्यादा दूर तक नही गई। सडक के किनारे मदार का पड। उससे लीग का इश्तहार झूल रहा है। उस पड की छाह स होकर जोटन गाव की ओर चली गई।

रास्ते में फेलू से भेंट हो गई। फेलू ने कहा, जुटी, पानी किसके लिये ले आई ?

जोटन ने जमीन पर थूक दिया। इस शख्स के साथ बात करना भी गुनाह है। इस शख्स न एक ही बार मे अन्नू के मर्द को काट डाला था और अब अन्नू के साथ घर कर रहा है। आबिद अली न एक दिन यह सारा किस्सा सुनाया है। कितना सगदिल है। न खौफ न डर। अब शमसुद्दीन के साथ लीग की नेतागीरी कर रहा है। जोटन किसी तरह से भी उससे नही बोल रही। मेड के बगल मे खडे होकर उसके जाने का रास्ता छोड दे रही है।

लेकिन फेलू के लच्छन कोई अच्छे नहीं। वह सामने ही खडा रहा। खडे खडे कसा मुस्कियाता रहा। चेचक से उसकी एक आख जाती रही। चेहरा कितना हौलनाक और बदसूरत है। इन दिनो आधा चेहरा दाढी से ढका रहता। कबड्डी खेलने की उमग मुरझा गई। शायद जिस्म मे अब उतनी ताकत भी नही रही। फिर भी एक आख अब भी हौलनाक ढग से धधकती रहती। फेलू ने मुस्कुरा कर कहा क्यो जुटी, तेरा वह फकीर साहब फिर तो आता नही।

—ता फिर क्या करने को कहते हैं। जाटन ने फिर थूका।

फेलू ने अब दूसरी बात की। क्योकि जोटन की सूरत देखकर वह ताड गया कि इस भाडी जगल म खडे रहना वह पसद नही कर रही। उसने अब वडे ही भलेमानुस की तरह कहा य सारे लोग सिर पर क्या उठाये ले जा रहे हैं।

—ओलाओठा देवी को लिये जा रहे हैं।

—सिर तोड दिया जाए तो कसा हो ?

जोटन न इस बार भी दात कस लिये शायद कहना चाहा तेरा सिर तोड दूगी निपुते कहीं के। लेकिन मुह स उसन कोई आवाज नही की। इस आदमी से सभी को खौफडर है। किसका सिर किस समय उतार लेगा कौन जाने। हसते हसते सट्ट स सिर कलम करने में फेलू से ज्यादा माहिर कोई नहीं। इस शख्स को कोई छेडता नही। माना छेडते ही वह रात के अधियारे मे बिसमिल्ला रहमाने रहीम

बढ़कर कुरबानी में खस्सी की तरह गला काट देगा। कुरबानी के दिन तो यह आदमी और भी भयंकर है। इसलिये जोटन ने चाहा कि जल्दी से जल्दी जंगल के भीतर से निकल आए।

फेलू ने देखा चैत की आखिरी धूप बसवाडी के सिर पर। शमसुद्दीन अपनी टोली के साथ आगे बढ़ गया है। अब सामने का मैदान सूना है। सतरों की मुर मुट और सेहुड का जंगल और जंगल के बीच में वे दोनों। जरा मजाक मखौल करने की मुखमुद्रा बनाये वह सामने झुक पडा। फिर फुसफुसा कर बोला, दू एक हत्या तुझे ?

जोटन अब जान पर खेल कर बोल पड़ी तुझे हैजा हो जायेगा रे मुहझोंसा। रास्ता छोड दे वर्ना चीख पडूगी। न बात न चीत अचानक ऐसी एक घटना के लिये जोटन तैयार नहीं थी। फेलू ने हसते-हसते कहा खफा क्या होती हो। तुम्हारे साथ जरा हसी की। फिर चारो ओर देखभाल कर हसते हसते बोला शीतला माई का डर मुझे न दिखाना जोटन। अगर तू कहे तो आज ही रात को उसका सिर ले आऊ।

शमसुद्दीन अपने दल के साथ जा रहा है। लीग का जलसा होगा। शहर से मौलवी साहब आएगे। इसलिये फेलू नेता सा लग रहा है। चारखाने की लुगी पहने। बदन पर कटी बाह वाली काली बनियाइन। और गले में गमछा मफलर की तरह बधा हुआ। उसने जोटन के लिए रास्ता छोड दिया। वे काफी दूर आगे बढ़ गये है। उनको जा पकडना है। मेड पर बेतहाशा भागने लगा। मैदान से ओलाओठा देवी भी गाव में गायब हो गई। उस समय धुए का एक बगूला गाव खेत पार कर ऊपर की ओर उठता जा रहा है। उसने जो सोचा था वही होकर रहा। नदी नाले में पानी नही। खेत मैदान सूखे पत्तियां सूखी। और दिनभर धूप से पत्तों की छाजन तपी हुई सैंटियां की दीवारें भी। जोटन अपनी कमर पर घडा लिए भागने लगी। उसने देखा बगल के गाव से भी लोग दौडते आ रहे है। जो लोग सुनहरे रेत वाली नदी में पीने का पानी लाने गये थे वे भी इस दुस्समय में आग पर सारा जल डाल दिये।

लेकिन यह आग आग जैसी ही आग बयार से मिल जुलकर अशिक्षित और अनगढ हाथो से बने सारे गृह-आवास राख करने लगी। जोटन का घर जला जा रहा है। आबिद अली का घर सबसे पहले जल चुका है। आबिद अली ने जलाली

के अस्तव्यस्त शरीर को पहले जैसा ही बाहों मे जकड रखा है। वर्ना कही झपट कर आग म त फाद पडे। उसकी कथरी, तकिया, चटाई, तामचीनी की थाली मिट्टी की थाली सब चली गई। सब कुछ जला जा रहा है। भड भड बास फट रहे हैं—बरतन भाडों की भी आवाज सुनाई पडती। आग गाव भर म फल चुकी है। इसलिए हरा बास या केले का दरख्त या कीचड पानी सभी कुछ जरूरी है। चारो ओर वीभत्स दृश्य। जिनके पास तकिया-कथरी है वे उनको लाकर खुले मदान मे फेंक रहे हैं। जलाली उस समय आम के पेड के नीचे बठी माथा ठोक रही है। पूरब घर के नरेनदास एक दाओ (कटारी) लेकर आया है। जिन घरों मे आग नही लगी, अब लगन ही वाली है—लौ निकल कर लबी हो जाती और एक छप्पर से दूसरे छप्पर पर फलागती हुई चलती—उन छप्परो के छाजन को वह काटने लगा। घर को अलग-थलग किये दे रहा है। ताकि आग और आगे न फल सके। सारे लोग आग बुझान के लिए जुट गये हैं। कुए का पानी खत्म हो गया है। हाजी साहब के पाखर म जो नीचे बचा-खुचा पानी था वह भी खत्म हो गया है। मजूर के तालाव म केवल कीच रह गई है। अब लोग फावडा की सहायता से कीचड फेंक रहे हैं। छाजनो पर। उस समय दूर मे ओलाओठा देवी के सामने ढाक बज रहा था ढोल बज रहा था। विश्वासटोले मे हरिपद विश्वास हिचकी लेकर मर गय। सायकिल चलाकर गोपाल डाक्टर घर घर दौड रहा है—मरीज देखन के लिय, रुपये के लिय। जाते समय आग देखकर उसने इन जाहिल लोगो को गाली दी। हर साल किसी न किसी गरीब गाव म ऐसा हो रहा है। अनपढ कत्र गोपाल डाक्टर की अब पाचा घी म। मरीज देखकर रुपया गरीब लोगो को बुरे वक्त पर रुपया देकर सूद। मेड पर खडा गोपाल डाक्टर इस समय टिन टिन सायकिल की घटी बजा रहा है। माना कह रहा हो कौन हो,जाओ, आकर रुपया ले जाओ, दवा ले जाओ। रुपए देकर सूद अदा कराग उधार चुकाओगे।

खडाऊ पहने शचीद्रनाथ भी भागते हुए आया था। जोटन आबिद अली और गाव के अन्य लोग तसल्ली पाने के लिए उनको घेरकर खडे हो गय। शचीद्रनाथ न सभी का मुख देखा। सभी लोग इस समय आबिद अली और जलाली पर दोप थोप रहे थे। शचीद्रनाथ ने कहा नसीब।

शमसुद्दीन का जत्था काफी रात गये जलसा खत्म होने के बाद लौट आया। वे भी घूम फिर कर सबको दिलासा दने लगे। आग बुझाने की कोशिश म जब बास

की बडी-बडी लाठिया या कीच मिट्टी डालकर जब वे जान गये—कोई चारा नही, सब कुछ जल ही जायेगा—तब वे मसजिद की ओर चल पडे। मसजिद अब लप लप जल रहा है।

आखो के सामने सारा गाव जला जा रहा है। विश्वासटोले म अब भी ओला ओठा देवी की अचना हो रही है। मदाना मे या जोते हुए खेतो म लोग अपनी अपनी भस्म म से उठा लाई हुई धन सपत्ति अगोर रहे हैं। आग म उनके चेहरे साफ दिखाई पड रहे थे।

जब आग धीमी पड गई और चारा ओर ठडक-सी छाने लगी—जोटन शोक से व्याकुल होने लगी। चारा ओर घना अधेरा। रह रह कर धुआ उठ रहा है। उस अधेरे म जली राख के भीतर से धन दौलत बटोरने की उम्मीद म वह हाजी साहब के खलियान म हेल गई। वह फुदक फुदक कर चल रही थी। कुछ रास्ता वह चक्कर लगाकर भी गई। जलने की बू चिरायध। इद गिद सारे गरीब दुखी लोगो का हाय तोबा सुनाई पड रहा है। अधरे म परिचित गल की आवाज सुन कर जोटन बोली, फफा मेरा घर तो फुक गया। अच्छा ही हुआ। जिधर नजर जाय चली जाऊगी। घर के लिए बडा मोह था। उसके जी म आया कह दे—फकीर साहब शायद अब नही आएगे। जब वह आया ही नही तो किसकी आशा म वह यहा बठी रहेगी। परिचित व्यक्ति ने अधेरे म भाप लिया, जोटन बडे दुख से ये बातें कर रही है।

परिचित व्यक्ति न कहा आबिद अली को क्या पहर दुपहर का भी लिहाज नही।

जोटन अब पलट कर खडी हो गई। बोली किससे क्या बताऊ—कहिए। मदम नहीं। रात देखे न दिन—खाऊ खाऊ करता रहता है। लेकिन औरत जात होकर भी तूने पहर दुपहर का लिहाज नही किया। उघार कर जिस्म पर पानी उडेला।

जोटन फिर ठहरी नही। बकझक करती अधरे मे वह हाजी साहब के खलियान म घुस गई। बडे-बडे खलियान सब राख हो गये है। धान जलने की मसूर जलने की बू निकल रही है। इस गर्दिश म भी कही से एक मेढक टर टर कर उठा। जोटन ने आग को कोचा। नही कुछ भी निकल नही रहा है। अधेरे के भीतर कुछ राख ढकी आग दमक कर फिर बुझ गई। उस आग म जोटन का मुख गभवती

औरत की नाई—लालची और पेट—मवस्व सूरत उस आग म जोटन ने अधेरे म रास्ता पहचान लिया। उस समय ओलाओठा देवी के सम्मुख ढाक का बाजा, ढोलक का बाजा। उस समय हाजी साहब अपनी तीन बीवियो की गोद म टाग पसारे माथा पीट रहे हैं और हाजी साहब के तीन बेटो की तीन बहू खेत म जोती जमीन के ऊपर विस्तर बिछाये घात लगाये बठी हैं। मानो यह अच्छा ही हुआ। द दिलाकर लोट-पोट।

जोटन को लगा कि अधेरे मे कोई एक और आदमी ओना-कोना ढूढ रहा है। जोटन ने कहा कौन हो तुम ?

जोटन को लगा कि फेलू शेख है। वह अधेरे म दौलत चुराने आया है। या मझली बीवी के साथ उसका आशियाना है। हाजी साहब की मझली बीवी भी इस रात के अधेरे म जब कोइ भी कहीं जाग न रहा हो सभी खेतो म उतर गये हैं, कुछ छोड आय हैं इस बहाने अगर लौट आवे तो फेलू शेख चुपके स उसे पहचान लेगा। पता भला किसको चलना चाहिए ? फेलू की एक जलन—उसी जलन को मिटाने के लिए—वह जलन भी क्या ? उज्जल पर जात वक्त हाजी साहब भोला अचल के पास समदर के किसी किनारे से इस मझली बीवी को उठा लाये थे। उस समय फेलू उनके साथ था। फेलू ने ही फुसला कर रुपय की लालच दिखाकर मझली बीवी को हाजी साहब की नाव पर ला बिठाया था। उन दिनो हाजी साहब हाजी नही हुए थ उन दिना फेलू की जवानी बुलदी पर थी, उसकी कितनी शोहरत भी थी—जवामद फेलू मझली बीवी से आशनाई करने का बहाना ढूढ रहा था। शायद अब भी एकात म वह गाना मझली बीवी गाती होगी। जब कलिमुद्दी साहब हज करन गय और हाजी बनकर लौट आए तो मझली बीवी के गले म वही गाना लगा हुआ था। अकेली शरीफा वाले बाड के पास बठी-बठी गाया करती। फेलू घाट पर बठा रहता। वह उन दिना उन लोगो का बडी नाव का माझी था—वक्त-जरूरत पर उस बाजार-हाट जाना पडता था, सौदा लाना पडता था। इस लिय मझली बीवी के साथ इश्क लडाने के बहाने वह घाट का मानी बने बठा रहता था। लेकिन कलिमुद्दी हज करके लौटा तो सभी कुछ जान गया। उसने कहा मिया यही तुम्हारे मन म था। फिर फेलू हाजी साहब के घाट से भगा दिया गया। जाने कब की बातें हैं। तभी स फेलू फिर हाजी साहब के घर नही जा पाता कभी-कभी मझली बीवी का मुखडा उसके दिल म घनघोर बाढ ला देता। उस

समय मान लो अकेले मे वह पागल ठाकुर सरीखा ही है। वह कछार म या अधरी रात को चुपचाप पीपल के नीचे चला आता। थाडी-पुरमुट म दुबक कर बठ जाता। जाने कब शरीफा के बाढ के पास वह मुखडा झाक जाय। बीवी अन्नू आज कल हाजी साहब के घर आया जाया करती। छोटी बीवी के साथ अनू की बडी दोस्ती है। वही बीवी लुके छिपे उसे तेल देती दाल देती उडद की वरी देती। अनू कहती छोटी बीवी देती है—लेकिन जोटन का मन कहता यह सब मझली बीवी का काम है। मझली बीवी के साथ ही फेलू का आशियाना है।

जोटन सभी कुछ समझती है। अनू दिखावा करती है कि छोटी बीवी मे उसकी बडी दोस्ती है—सहेली अरी सहेली तेरे ही साथ पीर मेली।

और फेलू को जब भी उसियत की याद आ जाती उसस लमहे भर की देर नही की जाती। वह इम अधेरे मे आग के भीतर मझली बीवी का तन मन मुखडा देखने की तमन्ना लिये बठा है। चारो ओर हो-हल्ला—कौन कहा भाग-दौड रहा है—कौन कहा है कौन जाने। यही तो मौका है। लिहाजा वह यहा आकर बीवी के आने के इतजार मे। जान क्या जादू है बीवी के ननो म और कौन सा जादू है इस मन म। यह मन हर वक्त जाने क्या चाहता रहता है। फेलू हर वक्त जाने क्या चाहता रहता है। उसके घर मे युवती बीवी अनू फेलू की उम्र भी दो कौडी से ऊपर हो गई है—फिर भी जाने यह दिल क्या चाहता रहता है। इतने तगी गरीबी मे भी भीतर मे कुछ पाने की इच्छा सी होती रहती है। जाने सुख किसम है—इसी अनू के लिए क्या-कुछ नही कर डाला उसन। अलताफ साहब का गला उसने सट्ट से काट डाला है। पटसन खेत के भीतर अलताफ साहब की आखिरी निकाह की बीवी को ईद के त्योहार पर पीर की दरगाह म देखकर वह दीवाना सा हो गया था—क्या करे क्या किया जाए। फेलू कुछ भी सोच नही सका। फेलू की जवानी उतार पर थी। वह सारे जवार का फेलू था। इस ईद के अगले त्योहार म वह अलताफ साहब के घर मेहमान बन गया। उनसे उसने पटसन का व्यापार करन का कहा—मानो फेलू कितना बडा महाजन है। उन दिनो वह दाढी म अतर लगाता था बाबुर हाट से बढिया तहमद खरीद कर लाता था। दिलखश रहने पर गल म मेडल झुला लेता था।

बूढे अलताफ खेल कूद के बडे उत्साहदाता थे। फेलू से उनकी कितनी जान पहचान कितना बडा खिलाडी फेलू उनके घर मेहमान बनके आया है—बीवी

बेट भी इसको देख लें, खिलाड़ी फेलू को एक दिन जनानी ड्योढ़ी म वह ल गया। फेलू को माना इश्क करन के सारे दाव-पेंच मालूम हैं। मौका देखकर अलताफ की फूलकली जैसी छोटी बीवी को उसने एक दिन अपना कछुवा जैसा चकला सीना दिखा दिया। अन्नू ने उस सीन पर चमकते हुए तमगा का देखा। और अन्नू को उस समय अपने बचपन की बात याद आ रही थी। बालिका अन्नू खेल देखने गई थी — कबड्डी का खेल। परापरदी के हाट मे खेलने आया है फेलू। उस दिन हाटवाला दिन नहीं था फिर भी कितन ही लोग और लाग। दो—दस मील के दायरे म उस दिन घर मे कोई जवान आदमी नही रहा होगा। मेले जैसा ही मदान म थड़िया उड़ रही थी—मानो ईद मुबारक हो। उस मेले का प्राण था फेलू। खेल खत्म होते ही फेलू की जय-जयकार। अन्नू, बालिका—अन्नू उसी दिन फेलू के प्रेम म पड गई। वही फेलू आज महमान बनकर आया है—अलताफ साहब की बीवी न मानो अपने स ही पूछा—यही था तर दिल म। फिर मौका महल समझकर फेलू न सट्ट से गला काट डाला। पटसन-खेत के भीतर सट्ट से गले की नली काट डाली। जिस तरह कुरबानी के दिन दस-पाच कुरबानिया म वह चाकू चलाता है बिसमिल्ला रहमान रहीम कहता है, उसी तरह बिसमिल्ला रहमाने रहीम कहकर उसने सट्ट स अलताफ साहब का गला काट डाला। जिस दिन बुर्का पहनकर बीवी का वह ले आया उसी दिन उसने बीवी स पहला बार बताया कि उसन सट्ट से गला काट डाला है। अन्नू न सुनकर कहा, यही था तुम्हारे दिल म। कहकर विस्तीण मदान म हा-हाकर हस पडी थी। अन्नू का देखन पर पता ही नही चलता कि फेलू के कारण वह इतना बडा हत्याकाड हजम किये बैठी है।

अधेरे म फेलू उस ओर की एक छायामूर्त्ति देख रहा था और सोच रहा था। शायद मझली बीवी चोरी छिप आ गई है। लेकिन यह क्या—यह किसकी आवाज है, यह तो जोटन लगती है। वह पकडा जायगा, इस जली राख से वह धन-दौलत चुराने आया है—वह डर गया।

जोटन न तिरस्कार क अदाज म कहा नाम नही बता सकते मिया? मैं फला हू।

—मैं हू मतिउर। फेलू न अधेरे म खडे झूठ कह दी।

—तुम्हारे और सारे लोग कहा है?

—आग देख कर भाग गये हैं।

—तुम यहा क्या कर रहे हो ?

—अपनी थाली ढूढ रहा हू।

—हाजी साहब नही जानते कि उनका बठर ाला नही।

—आग से हाजी साहब को बेहद खौफ है। यह शख्स दूर ही से बातें कर रहा है। अधेरे से इस समय उन सभी को डर है। आवाज साफ नही। कभी तो फकीर साहब जसी तो कभी लगता फेलू ही मतिउर की आवाज म बातें कर रहा है। इसके बाद ही लगा उस आदमी को अधेरे म कुछ पडा मिल गया है। और मिलते ही दौड लगाया।

जोटन न कहना चाहा—पकडो पकडो। लेकिन कह न सकी। वह खुद भी एक थाली ढूढन आई है या कुछ चावल—जला हुआ धान भी कुछ बुरा नही, जली हुई कथरी मिल जाय तो भी क्या बुरा—उसे जो कुछ भी मिल सका लेकर उसन आम के पेड के नीचे इकटठा किया। जलाली बठी जोटन का सब कुछ सभाल रही है। वह अधेर स ढूढ ढाढ कर ला रही है और जलाली को देकर फिर अधरे म ढूढने चली जा रही है।

उसी समय विश्वासटोले से राने की आवाज आती सुनाई पडी। उसी समय ओलाओठा देवी के सामने आरती उतारी जा रही थी। शायद हैजा से फिर कोई मरा। अधेरे म खडी जोटन थाली टूटी पतीली या पीतल का बधना ढूढती हुई वह रोना सुन रही है। रात काफी हो चुकी है। खेता मे म होकर कुछ लोग नदी के किनारे की ओर भाग रह है। और पेडो के नीचे जो दो एक लप जल रहे थे हवा से एक एक बुझते जा रहे है। मता म सिफ एक लालटेन जल रही है। लाल टेन हाजी साहब की है। महामारी गगन पर जिस प्रकार हवा म एक विदगी घूमता रहता है उसी प्रकार इस ध्वस के अधकार म जोटन फिरने लगी। अधरे म जोटन दबे पाव चल रही है। इस समय मदान म हाजी साहब बस सुभान अल्लाह सुभान अल्लाह की रट लगाय हैं। वे सो नही पा रहे हैं। मदान म वे अपनी छोटी बीबी को लेकर हैं। कौन कब क्या कर जाय—इस डर से नीद नही आ रही थी। जिनकी केवल टूटी झापडी जली है व सरपत की फटी चटाई बिछाये सो रहे हैं। सवेरे ही हिंदूटोले म रोजी कमाई के लिये जाना पडेगा और हिंदूटोले म ही सारे बास-लकडी हैं। पटसन के सारे खत उन्ही लागो के। उनस माग जाच कर लाओ तो घर बन और घर बनते-बनत ही घनघोर वर्षा आ जायेगी। जोटन

ने इस समय अपने घर के बारे म सोचा, वर्षा के बारे म सोचा, वक्त बेवक्त फेलू हत्या मारना चाहता मजूर जसा न उसम रोब-दाब है और न चाद सरीखा पेश कश—एक दिन ऐसी मार मारूगी—यह सब सोचती हुई जोटन अपने दुख पर पेबद लगाती हुई जले टूटे एक कमरे के भीतर से और एक बघना निकाल कर दौड पडी। जलाली के पास पहुच कर बोली, देख, क्या लायी हू।

जलाली ने घुमा फिरा कर बघने को देखा। कुप्पी की रोशनी म इतना बडा पीतल का साबित बघना देख किसी तरह से भी वह अपनी आखो पर विश्वास नही कर पा रही थी। आबिद अली भी गदन मोडे देख रहा है। मानो उसने हाथ से ही छूकर देखा।

बघनाभर पानी पानी ले आ, गट-गट पी लू। बघना देखते ही आबिद अली को जाने क्या प्यास लग आई।

जलाली ने कहा, मैं जाऊ। अगर कुछ मिल जाय।

जोटन पानी लाने गई है। अगल-बगल कोई नही। आबिद अली झट बठ गया फिर टक थप्पड गाल के पास ले गया। बोला, तेरी यह हिम्मत। तू जायेगी चोरी करने। दात म गमछा से उसनेमुह पोछा। पसीना और गरमी से मुह खुजला रहा है। आम के पेड से टेक लगाकर बठते ही उसने देखा जोटन पानी के लिए जा रही है। पानी की बडी तगी है। अब अधेरे म वह पानी चुराने जा रही है।

जलाली कुछ देर चुप किये रही। फिर कछुए की तरह उसने गला लबा कर लिया। फिर चिल्ला कर बोल पडी अरे निरबसा तेरे ही लिये तो आग लगी।

चिल्लाहट स आबिद अली घबरा गया।—मेरे लिए कहती।

इस बार जलाली खल खल बोल पडी, अगर सबस मैंने नही कह दिया तो कहा ही क्या।

—क्या कहेगी ?

—कहूगी, ये जबरन पकड कर मुझे कमरे मे ले गये।

—कमरे म ले गया हू अच्छा ही किया है। तूने खाना पकाते वक्त पट उघार कर क्यो दिखाया ?

—तुम्हारे लिए क्या कोई वक्त-बेवक्त भी नही ?

सारी घटना ही आग जसी। आबिद अली और भी अधिक सट कर बठ गया। मरा क्या जी नही करता, ठडे पानी स गुसल करू।

फकीर साहब नीम मे दरगा व नीन बठ गय। रगा पर गर भी सौदा नहीं निहाजा फकीर साहब ने इस गाव क घर दग। बशाग्र का महीना गम हा रहा है। इस समय पड-पड पर आम की अच्छी पगन है। उन्होन आन माना और तावीजा म स एक पोन्ली निराली। और गाश्त का वजन देखते समय उनको लगा कि गाव म कुरबानिया की सख्या घट गई हैं। व माना उगलिया पर गिन कर बता सकत हैं वे सख्या म कितन हैं बररीद म इतनी कम कुरबानी नही पहली बार और इसीलिए कौव गोश्त ढूढ़-ढूढकर बावले हो रह हैं।उडत-उडत कौव परेशान हो गय हैं पर उनको कुछ भी मिल नही रहा है। व उड उड कर इधर उधर चले गय। इसलिए उन्होन बेफिक्री का अनुभव किया। पोन्ली मकही पान सुपारी रखी है या चुनौटी स चूना लकर होठ पर लगात समय ही सूखी कन्र तर जसा बहुत दिना पुराना एक वायदा याद आ गया।

सामने सडक। दूर कही आज हिंदुआ का मला है। फकीर साहब याद कर सके शायद इसी दिन नयाटोला पार कर घुडदौड क मदान म इस मौसम की आखिरी घुडदौड है। लेकिन बहुत दिना बाद इधर आन पर वायदा याद आ गया। सडक पर गले म घटी झुलाये घाडा जा रहा है। विश्वासटोले के कालू विश्वास का घोडा है। आखा की पुतली की तरह घाड का रग निपट काला। माथा सफेद है और घोडे के गल म सुनहरी कौडिया की माला। सडक स होकर घोडा दूर चला गया। गमिया के अतिम आधी पानी म इस इलाके क कुछ घर द्वार ढह गय हैं। खतो म छोटे-छोटे पटसन के पौधे हवा म डोल रहे हैं। खता म कही-कही कपाचिया का टोपा लगाये किसान पटसन खत म निराई कर रहे हैं और अल्लाह मेघा दे पानी दे—गीत गा रहे हैं। चत की खुश्क धूप और खुश्की का माहौल कुछ खत्म सा हो चुका है। अब केवल हरियाली से भरा प्रातर और लोगो के चेहरो पर सुख की इच्छा या मानो साल खत्म हुआ है गर्दिश के दिन भी—अब तगी कुछ कम है गरीब लोग कम से-कम साग पत्ते खाकर जिंदा रहगे। खासतौर से गमिया के इन दिनो म पटसन की न ही पत्तियो का साग या शुक्तोनी (तीती सब्जी) थाली भर भात के साथ कुछ बुरा नही और जब कुरबानी का गोश्त मुश्किल-आसान के पात्र के नीचे जतन से रखा हुआ है, जब यह ख्याल आने लगा कि ढलती उम्र की सबल जोटन बीबी को ले जाया जाए तो गोश्त जसा ही सस्ता होगा—तभी सडक से सामने के गाव की ओर चल पडा।

मुश्किल आसान के आधार म तेल नहीं। दरगाह मे छावन के नीचे लहसन क वाए भिगाए रखे हुए हैं। उसका तेल बडी उजली रोशनी दता है। अब इस जवार म वे मुश्किल-आसान का लप जलाकर नही चल सकेंगे। दरगाह लौटकर फिर तेल भरना पडेगा। फकीर साहब की इच्छा थी कि लहसन के कोए के तेल से मुश्किल-आसान वाली वत्ती जलाएगे और बच्चा की आखा मे सुर्मा लगाकर आस्ताना साहब की दरगाह म रसूल से दुआ, जोटन के लिए दुआ माग लेंगे। कुछ भी नही हुआ।

मसजिद के कुए स पानी निकालकर फकीर साहब ने पहले अपने पर धो डाले। फिर फटे मुचे कपडे क जूते, जिसकी छेद से अगूठा कछुवे के गले की तरह बाहर निकल आता और जूत के भीतर पर डालत वक्त एक इष्टकुटुव पक्षी के बोल उठने पर फकीर साहब न सोचा आज का दिन अच्छा ही बीतगा। अत म आबिद अली के घर म दाखिल होन स पहल ही उन्होंने हाक लगाइ मुश्किल आसान सब कुछ आसान कर देत हैं और यही सब कहते हुए आगन म पहुचते ही वे समझ गय कि त्योहार के दिन जोटन घर म नही है। उन्होन मानो इस आगन और झाडी झुरमुटा से ही कहा, उनको बुलवा लिया जाए तो बेहतर। बहुत दूर स आ रहा हू फिर कब आऊगा काई ठीक नही। इसलिए सोचता हू कि उनको लिवा ले जाऊ। इसके बाद किसी पर भरासा न कर खुद ही घास पर लुगी बिछाकर बठ गये। बडी ही सावधानी से माला-ताबीज और पाग्ला-पाटली सभालकर बगल म रख लिया। किसी ओर भी नही देख रहे हैं। मानो सब-कुछ तय ही है वकील साहब मौलवी साहब सभी को इत्तला है बस दो चार दुआ सलाम। फकीर साहब न खखार कर ऊपर आखें उठाइ तो देखा जलाली जगल रौंदती जोटन को इत्तला देने हाजी साहब के घर की ओर दौडती जा रही है।

फटी लुगी पर बठे जामरुल दरख्त की सध से फकीर साहब ने वह अस्पष्ट मुखडा देखा। जोटन आ रही है। पहले जसी शक्ति-सामथ्य मानो अब शरीर म नहीं रही। जाटन अपने कमरे मे घुस गई। फकीर साहब अब जोटन को नही दख पा रहे हैं। विभिन्न प्रकार के शब्द सुनकर वे भापने लगे—जोटन इस वक्त आइने मे अपनी सूरत देख रही है। भीगे सन जस बाल, कितनी मुश्किल से जूडा बधा। बिना मुह उठाय ही वे मानो भाप रहे थे जोटन बाड की सध स फकीर साहब का मुख हाथ पर या सारा शरीर देखते-देखते तन्मय होती जा रही है।

फकीर साहब ने गाँव के लोगों से कहा जल्दी किया जाए।

घर के भीतर जोटन लाई न गई जा रही थी। कमरे के भीतर से गुनगुनाहट आबिद अली को भा दीजिए।

फकीर साहब ! आँगन में कहा वकील बुलाना पड़ेगा।

जोटन का मातो अब गम में घर मिल रहा है। निकम्मे मरे। आबिद अली आकर सब तय कर देगा।

फकीर साहब ने हाजिन मालकिन पर हाथ रखते हुए कहा दिन रात लगाता होता है घर्ना गोबर सड़ जायगा। मुहर्रर फकीर साहब ! मालिक की पाट ही आने वाले में गाम ला भूप कर कहा गोबर में कमर गलाना हाथ में आना हाथ धना है ?

इस बार जोटन कमरे के भीतर खिलखिलाकर हँस पड़ी। बाकी घर से जाओ क पहले क्या एक बार करवट से कब की साथ हो रही है।

—जी तो करता था सहिन दिन जो कम। सग गया है।

जोटन शांत खोज रही थी। मुल्ला कर हाँड़ी के भीतर से पान-सुपारी निकाल मुँह में डाल लिया। फिर जब उसने देखा हाजिया की आँख से जवानी आ रही है जब देखा सरकार के पोतन के सिर में धूप उतरती जा रही है और जब गार मजूर सिर पर पाट का बोझ लाद कर वापस लौट रहे हैं आबिद अली आज त्योहार के दिन भी ठाकुरबाड़ी के पास पर गया है—नौटन का बड़ा है अब शायद लौट रहा हो, जोटन ने झट लाल कर वायुरंगीट की धारीदार साड़ी पहनकर देखा छातिमा का मांस बिलकुल सूख गया है। हाथों पर थूक लगाकर उसने छाती पर मल लिया। पतला दुबला शरीर की खुशबू को पागल बनाना चाहती थी उसे ख्याल आया फकीर साहब की बूढ़ी हड्डियां अगरबत्ती धागा जैसी हैं—यह पताह देखा निबाह करेगा और खुल मन से जब उधर बन्न रंगरेलियां करेगा। मुद्दत की अरमान है—अल्लाह का मद्सूर चुनाव में इस उम्र में भी जिस्म कोई कम दाव-पेंच नहीं दिखाएगा।

बेला रहते ही आबिद अली आ गया। बेला रहते ही सारा करने वाला काम आबिद अली ने कर डाला। गाँव के दो चार लोग आँगन में इकट्ठे हो गये। आबिद अली ने सभी की पान-तमाकू से खातिरदारी की। हाजी साहब की छोटी बीवी ने एक फटा बुर्का दे दिया जोटन को। राखो के ढेर में से पीतल का जो बधना जोटन उठा लाई थी उसको फकीर साहब ने बगल में रख दिया।

जोटन लागलरद क हटिया से दो मिट्टी के घडे ले आई थी—जाते वक्त जलाली को बुलाकर जाटन न वे घडे और घर के मामूली कुछ सामान जसे गमिया मे बटोरे सूखे पत्त, पटसन की सेंटी और दो सकोरे—सब दे दिये। और फटी तहमद मे जोटन न अपना टूटा आईना, ठाकुरबाडी की बहूआ की फेंकी हुई लकडी की कघी एक मिट्टी की थाली और सबल म कुछ भात की सबई से बधी पोटली हाथ म उठात वक्त ही और मरतबे की तरह ही आबिद अली का हाथ थाम कर रा पडी। इस बार वाली निकाह चौथी निकाह है और इस बार चौथी बार जोटन इस आगन का छाड बाप की ढीह छोडकर किसी मिया के साथ खुदा का महसूल चुकान चली गई। फकीर साहब अपनी पोटली-बकुची जतन स बाध रहे हैं। पीतल का बधना हाथ मे लेकर दो बार घुमा फिराकर देखने के बाद टोटी स पानी चूसकर पी लिया फिर शेष पानी फेंककर बाए हाथ से पीतल का बधना कधे म डाले चोली, दाहिने हाथ म मुश्किल-आसान मुख मे अल्लाह का नाम या रसूल का नाम लेत हुए वे कछार से उतरते चले जा रहे हैं। जोटन ने एक हाथ म पाटली ले ली फिर आबिद अली के कमरे मे घुसकर बुर्का पहन लिया। आबिद अली स कहा, जलाली को मारना-पीटना मत भाई। जलाली से कहा, वक्त पर खाना बना दिया करना।

यह सब कहत समय जोटन की आखा से आसू झर रहे थ। कितने लव अरसे के बाद यह निकाह हुआ और इस दिन वह अपनी तेरह सताना को याद कर सकी। मानो उन्ही के लिए आखा म यह आसू। कही पर भी उसे ज्यादा दिन के लिए ठाव नही मिलती। जोटन चौथी बार शौहर का घर करन जा रही है और अल्लाह के महसूल के लिए ही यह सफर है। अगर किसी कारण अल्लाह का दरबार समाप्त हो गया हो तो वह फिर घर लौट आएगी।

बदन पर बुर्का ओढ़े जोटन चली जा रही थी। इस जवार के सभी लोगो न देखा *आबिद अली की दीदी जाटन फिर चली जा रही है। कब बच्चे जनने के बाद* वह लौट आएगी, फिर उसी दक्खिन-द्वारी झोंपडी खोल देते हुए आबिद अली

पलाश के नीचे खडी कर फकीर साहब सामने के हाट से सौदा लेने गये। नयी मेहमान, घर को रोशन किए रहेगी। दूर किसी दरगाह के पास फकीर साहब का छावन वाला छोटे मचान का घर है। सध्यावेला दरगाह की कब्र पर कितन ही मोमबत्तिया की रोशनी। इस रोशनी के आस पास की झाडी झुरमुट थोडी देर के लिए सफेद हो जाती। उस वक्त वे काला चोगा पहने मुश्किल-आसान का लप जला कर अधेरे खेतो को लाघकर गहस्थ के घरो के आगन म जा पहुचत। मोटे गले स व खेत से ही हाक लगान लगते। गहरी रात हो तो लोग डर जायँ—मुश्किल आसान सारा काम आसान कर देता, कहत हुए वे चल आत। अडहूल जसी लाल-लाल आखे। लहसन के कोय के तेल से आखे लाल न करने पर लोग रात को डरते नही—पसा नही दत। तब फकीर साहब को अपन मचान पर लौटन की ख्वाहिश नही रह जाती। अधियारे मे विचित्र सर घासो म या खेतो की मेडा म एक भयकर रहस्य जागता रहता। उनको लगता है इन सब अलौकिक रहस्या म कही न कही अल्लाह अदृश्य बन हुए हैं।

सौदा करलौटन म फकीर साहब ने ज्यादा वक्त नही लगाया। हाट पार करत ही लोकनाथ ब्रह्मचारी का आश्रम। पलाश के नीचे खडे होकर उ होनपूछा, एक बार बाबा लोकनाथ के पास चलेंगी ?

जोटन न बुर्के के भीतर से कहा, तो फिर चार पस का मिसरी खरीद लीजिए।

लेकिन फकीर साहब को मानो सहसा ही कुछ याद पड गया व बोले, लेकिन कुरबानी का गोश्त लेकर बाबा स पास कसे जाऊ। बेहतर है कि जेठ मे बाबा के उत्सव म आपको लेकर आऊगा। इसलिए अब और देर करना अच्छा नही। रोशनी रहत पहुच जायें ता बेहतर। और भी कोसभर रास्ता है। व तेज चाल चलन की कोशिश करने लग।

फकीर साहब बोले कइ रोज से सोच रहा था कि आपके पास चला जाऊ। लेकिन भरोसा नही पड रहा था।

—ऐसी बात क्या करते हैं।

—मेरी झोपडी है छोटी। चारो ओर जगल। कब्रिस्तान। बडे-बडे सिरस के दरख्त। रात को डर लग सकता है।

आप मेरे नैनो की पुतली हैं। ऐसा कहने की इच्छा थी जोटन की लेकिन इतनी

जल्द प्यार मुहब्बत की बातें उससे नहीं कही जा सकी।

इस समय दिन ढल रहा था। सूर्य मघना नदी के अन्य तट पर अस्त हो रहा है। किसी मदान के पोखर स वजू कर के नमाज पढ़ने बठ गय। जोटन भी बगल म बठी हुई अब कोई भी आस पास नहीं—बस सूना मदान, सूर्य अस्त हो रहा है *तो अस्त ही हो रहा है पर मोडकर जोटन फकीर साहब के बगल म बैठ गई तो* उस लगा सामने का गाव ही शायद उसका प्रिय सुलेमानपुर है। अपनी पहली शादी का रिश्ता उस याद आया। गाव के बडे विश्वास की वह छोटी बीवी थी। उस दिन वह मानो बेगम थी। उसी के बच्चे शायद दूर खेतो म इस अकेले घूम रहे हैं। जोटन अपनी पहली शादी के रिश्ते के बारे म सोच-सोच कर अकुलाने लगी।

आस्ताना साहब की दरगाह पहुचने म रात हो गई। चारा ओर कब्र ही कब्र। चारो ओर घना जगल और बीच बीच म पक्के पलस्तर वाले कब्र कोई-कोई मोम बत्ती जला गया है। अघेरी रात म लाठी ठोक ठोक कर अपने डेरे के भीतर घुस कर बोले कोई डर नहीं बीबी। आप बुर्का खोल कर अब हवा खाइए। कब्र की रोशनी से आसान का लप जला कर लाता हू।

फकीर साहब लप जलान गये तो जोटन ने बुर्का खोलकर रख दिया। अधरेमे वह कुछ भी अदाजा नहीं लगा पा रही है। जोटन ने मानो जिंदगी म ऐसा गाढा *अधेरा कभी नहीं देखा। न एक कुत्ता भूक रहा है और न एक मुर्गी बोल रही है।* दूर क किसी गाव की रोशनी भी उसे नहीं दिखाई पडी। मानो वह काले कोसो ला पटकी गइ हो। भय और आतक से उसे रोना आ रहा था। जगल के भीतर सूखे पत्ते पर बस खच्-खच् की आवाज। मुर्दे लोग मानो इसी बीच लडाई का मश्क करने योजन भर दूर से जि न परी बन कर उतर आए हैं।

उस समय दूर म मुश्किल-आसान की रोशनी और सियार की चीखें। झाडिया और दरख्तो की आड से फकीर साहब किसी रसूल की तरह लग रहे हैं। सामने बहुत सारे ऊर्ध्वमुखी अजुन वक्ष। उनके नीचे नए कब्र खोदे जा रहे हैं। जोटन को नए ताबूत की बू मिल रही थी। या कोई मानो आपस म बोल रहे है सुलेमान पुर के बडे विश्वास की छोटी बीवी की पहली सतान का इतकाल हो रहा है।

जो लोग कब्र म ताबूत उतार रहे थे जोटन उनको नहीं देख पा रही है। फकीर साहब दरगाह के चारो ओर लप लिए जाने क्या ढूढते फिर रहे हैं। जो लोग दफनान

आए थे वे सब इस वक्त लौटे जा रहे हैं। जोटन को यही पहली बार इसान की आहट मिली। वे लोग नीचे के रास्ते से मैदान म चले जा रहे हैं। बडे विश्वास का लख्तेजिगर सभी को दगा देकर चला गया। अल्लाह के बडे विश्वस्त थे वे। बडे विश्वास का नाम सुनते ही छावन के नीचे जोटन का मुख सूख गया। वह फकीर साहब के इनजार मे बठी है। उनके आने पर पता लगाएगी क्योकि वे लोग जाते वक्त सुलेमानपुर के बडे विश्वास के बारे म बातें कर रहे थे। सारी बातें अस्पष्ट। सुनाई नही पडी। वे लोग अब दिखाई नही पडते। लालटेन खेता मे हिलते डुलते चली जा रही है। वहा किसका इतकाल हुआ पूछते ही फकीर साहब आसान का लप उठाकर जोटन के मुह के पास ले गये। कुछ देर तक मुख पर कुछ देखते रहे। फिर काफी सट कर खडे हो गये। बोले आपके मुह ये बातें शोभा नही देती बीबी। आप फकीर साहब की आखिरी बीबी हैं। कहकर और भी नजदीक मुह लाकर गदगद हो निहारते रहे फिर आवेश से बोल पडे, आप मुझे वचन दें कि मुझे छोड कर नही जाएगी।

—नही जाऊगी।

—अब गोश्त पका डालिय।

मचान के नीचे तरह-तरह की हडिया और पतीली। टूटे और साबुत—सभी तरह के। मदान म जलाशय। पीछे लोना लगी इट की प्राचीन मसजिद। फकीर साहब ने लप का बास से लटका दिया। सार कपडे माला तसबीह ताबीज उतार कर सिफ एक लगोटी पहन ली। फिर जलाशय से जल ला दिया। राधना खत्म होने के बाद गोश्त भात खाकर झटपट छावन के नीचे घुसकर आमन सामने बठे दोना गप्प लडान लगे।

अधेरा जब शतान की इस सल्तनत को लील रहा था, जब लग रहा था इस जगल के भीतर जिन या परी विचरल फिर रहे ह तभी चाराक सियारा का एक झुड नए कब्र की ओर सावधानी से आग बढा आ रहा था। आते वक्त माम के लाभ से वे आपस म खेक-खक कर रहे थे। जोटन बोली जाने क्या मुझे डर लग रहा है।

फकीरसाहब जानते हैं कि सुलेमानपुर के बडे विश्वास की छोटी बीबी का बडा बेटा हैजा से मर गया है वे जानते हैं कि सियार खाने की लालच म कब्र मे पर डाले गढ खोद रहे हैं। इसलिए वे दिलासा देने का लाड भरे स्वर म बोले सियार

से इतना डरती है। डरिए मत। वे भूख से ऐसा कर रहे हैं। आपको याद होगा—पांच साल पहले मुझे एकबार भूख लगी थी। आपने सूखी मछली के भुरते से पेट भर भात खिलाया था। पेट भर जाने पर वे फेंकरेंगे नही।

जोटन की स्मृति म सारी बातें उजागर हो रही हैं। उस दिन फकीर साहब बडे ढग से फटी चटाई पर खाने बैठ थे। खाने बठ कर तो बार अल्लाह का नाम लेने के बाद उन्होने आसमान की ओर देखा था। आकाश साफ था। लिपपुते साफ सुथरे आंगन म चमचमाते आसमान के नीचे बठकर व गब्ब गब्ब खा नही पा रहे थे। जिस सुघर ढग से इतमीनान स वे बठे थे उसी आराम और सहूलियत स वे धीरे धीरे थाली भर मोटा भात सूखी मछली के भुरते के साथ स्वाद ल लेकर खाये थे। बिलकुल इस मचान की तरह। कोई जबरदस्ती नही। नीचे दो एक भात के दाने गिर गये थे उंगलियों की नोक स उन्हे उठाकर मुह म डाल—गोया यह भात खत्म हो जाने पर फिर न मिल सकेगा—अल्लाह का अनमोल धन है। जोटन को अब लग रहा है बीन बीन कर खाना फकीर साहब की हमेशा की आदत है। अब इस मचान पर बठे शरीर टटोल टटोल कर खाने का शौक। शरीर म अब कूवत नही रही। फिर भी पोपले मुह से मास खाने जैसा ही हाथ से जहा तहा टटोल रहे हैं। इस तरह जोटन बीबी धीरे धीरे लस्त-पस्त हुई जा रही है। अब सियारों का फेंकरना कानो म नही आ रहा है। सुलेमानपुर के बड विश्वास के बारे मे भी कुछ याद नही आ रहा है। तेरह सतानो की जननी जोटन इस अधरे म चुप्पी साध ले तो विश्वास नही पड। उसका बडा बेटा। कफन के भीतर हाथ पर मस्त रिय पडा है लकिन उसका जननी बनने का शौक नही मरता। फकीर साहब की गोद म सिर रखकर वह बोली रात को आपका चाद सा मुखडा एकबार देखूगी फकीर साहब।

धीर स्थिर फकीर साहब इसी क्षण बीन बीन कर खाने म इतने मशगूल हैं कि चाद सा मुखडा आप मरी नूरे चश्म हैं या पानी सा तुमको घर रखू—इस किस्म की कोई बात भी उसके मुह नही निकल रही है। जननी जोटन भी इसका जवाब पाने के लिए जोर नही लगाती। वह भी बीन-बीन कर भात टगने बठ गई।

छोटे चाचा पढने के कमरे म लालटू पलटू को धमका रहे हैं। सोना की पढाई हो चुकी है—इस समय उसकी छुट्टी है। इसलिए अकेल बाहर के कमरे म उसे

अच्छा नही लग रहा था। मन ही मन वह पागल ताऊ को ढूढने लगा। मा इस समय चौके म वे अरवा चावल पका रही हैं। अरवा चावल और ववई मछली और मुगधी घी। सोना अपने को भूखा महसूस करने लगा। उसने अडहूल की एक कली नाच ली। उन लागा की पढाई खत्म होने पर मा एक साथ खाना खाने देंगी। वह अब मकान के चारा ओर ताऊ को ढूंढने लगा। वह चला जा रहा है। बाग म गुलमहदी खिली हुई। बेले की सुगध आ रही है। झुमके-बेल दरख्ता से फूल रहे हैं। कितने ही किस्म के फूल हैं इस बगीचे म। सफेद अडहूल, रक्त अडहूल, चदनी अडहूल। अडहूल ही कितने किस्म के। सुबह बडी ताई के साथ फूल तोडते वक्त उसने सारे फूलो के नाम याद कर डाल हैं। जाते हुए उसन देखा गुलमेंहदी की क्यारी के नीचे जा हरी घास है वहा ताऊ लेटे हैं। चुपके से फूल के रास्ते म घुस वह ताऊ के बगल म बठ गया। सिर के नीचे एक हाथ रख ताऊ दूसरा हाथ आईने की तरह अपनी आखा के सामने पसारे हुए हैं। मानो इस हथेली म ही विश्वदशन की अभिलाषा है उनकी। सोना इस बार चुपके स ताऊ के पेट पर जमकर बठ गया। फिर पत्ता की आड से उसन झाका। उसन देखा कितने ही विचित्र रग की तितलिया फूल की भरी हुई डालिया पर बठी हैं। सोना समझ गया ताऊ जी हथेली नही देख रह हैं पड की सारी तितलिया देख रह हैं। तब पट पर बठकर साना न पुकारा ताऊ जी।

मणीद्रनाथ ने जवाब नही दिया। केवल मुस्काये।

सोना बोला, तमाकू पीएग ? ला दू तमाक ?

मणींद्रनाथ वोले, गतचोरेत्साला।

सोना ने अबकी बार कहा आपको भूख नही लगती ताऊजी ?

मणीद्रनाथ बोले, गैतचोरेत्साला।

सोना अब गुस्सा कर बोल पडा तो फिर मैं भी आपका गत चारेत् साला कहूगा।

मणीद्रनाथ इस बार भी हसे। फिर हाथ उठाकर मत डालिया विचित्र रग की तितलिया को दिखाते हुए खुद दो-तीन दूब नोचकर मुह म डाल लिये। फिर लव अरसे से मुह को खुला रखा—शायद कहना चाहते हो मेरा मुह देखो गह्वर देखो, मेरा गल का कौआ कितना बडा है देखो। उस समय शमसुद्दीन किसी काम से इस टोले मे नाव लेकर चला आ रहा है। ईशम अलस्सवेरे नाव लेकर भदई

धान काटने चला गया है। यह भादो का महीना है।

गुलमहदी के बडे बडे पौधा के भीतर मणीद्रनाथ ने अपने को जाने कसे छिपा रखा है। कोई देख नही पा रहा है। पौधो के उस झुरमुट मे घुस जाने के बाद सोना भी नही दिखाई पडता। वहा देखो तो बस फूल के पौधे और पौधे और अनगिनत गुलमहदी के फूल लाल नीले पीले या लाल रंग के फूल खिल रहे हैं और झर रहे हैं। और घाट पार करते ही कछार पर जल जल पर नाव जा रही है। नाव मे बाबुरहाट की सारिया जा रही हैं बादबान तान कर ये नाव अभी सुनहरे रेत वाली नदी म जा पडेंगी। शामू फातिमा का हाथ थामे छोटे मालिक के पास जा रहा है।

छोटे मालिक को देखते ही शामू ने कहा मालिक आपका डे लाइट लेने आया हू।

छोटे मालिक न कहा डे लाइट से क्या होगा?

—फूलन की शादी कर रहा हू।

—कहा?

—आसमानदी के चर म।

—बठर म जाकर बठ। देखू क्या हाल है उस लाइट का।

फूल का बगीचा पार करते समय शामू ने देखा बड मालिक गुलमेहदी क्यारियो के बीच लेटे हैं। सिर के नीचे हाथ रखे और सोना बडे मालिक स लिपट कर दूब घास पर लेटा हुआ है। वे दोनो बडी ही सावधानी स पौधा के भीतर कुछ ढूढ रहे थे।

शामू के साथ चलते चलत फातिमा ने सोना बाबू को देख लिया। बोली मैं जाऊ बाजी।

—कहा जायेगी?

—बडे ठाकुर के पास।

—जाओ लेकिन बड मालिक को छू मत दना। सोनाबाबू को भी मत छू देना।

ये फूल के पौधे पत्ताबहार क पौधे नीबू की झाडिया पार करने पर गाव का रास्ता। फातिमा न चक्कर लगाया और उस रास्ते पर जा बैठी। पुकारा ऐ साना बाबू।

गाड़ी के भीतर ग सोना आंख मिचमिचाकर देखने लगा। उसने कहा, तू !
—ताजी के साथ आई हू। फिर फिक्क से हस पड़ी फातिमा।
फातिमा के कमर म बाबुरहाट की छोटी साड़ी लिपटी हुई। नाक मे नथ, छोटी छोटी आखें, आखों म सुर्मा लगा हुआ। पैरों म पायल। फातिमा के हिलने पर या चलने पर पैरों मे छुम छुम शब्द होता है। बदन का रंग हरा और गाढ़े पत्ते का रंग चेहरे पर। सोना बाबा भीतर आएगी ?
—कैसे आऊ ?
—क्या गुलमहदी के झाड़ियों के बीच म आ जा।
फातिमा फूलों के बीच घुटनों के बल चली। नीबू की झाड़ी मे घुस सोना के बगल म एक पालतू चिड़िया सा मुह बनाये फलों की भरी डालियों पर उन तितलियों को देखा और फातिमा दग रह गई—उसने गौर ही नही किया था, बिलकुल पास के पास एक गधराज का पेड, पेड फूलों से सफेद हो गया है और उसके नीचे कवार का वही कुत्ता लेटे लेटे दुम हिला रहा है। फातिमा कुछ अन चीन्ही सी लग रही थी। मुह खोलकर भूकने की सोच रहा था कुत्ता—लेकिन सोना बाबू म इतनी दोस्ती थी इसलिए कुत्ते ने फिर कुछ न कहा। मणीद्रनाथ उसी तरह लेटे है। डालियों को पार करते ही अनत आकाश, वहा बादलों के भीतर बहुत दिन पहले सुनहरे रंग वाली नदी म नाव के बादबान की तरह एक मुखडे को आकाश म तैरते देखा। और उसी अभ्यास के अनुसार कविता के परिंदे मुख पर उडने लगे व मानो कह रहे हो, आई हैव एग्जामिड, ऐंड डु फाइंड आफ आन्सर्ट फेवर मी देयस नन आई ग्रीव टू लीव बिहाइंड बट ओनली आनली दी।
रंगीन पहने फातिमा पालतू पछी की तरह झाड़ी के भीतर बैठी थी। वह पागल ठाकुर की बातें सुनकर हस रही थी। कुछ भी उसकी समझ म नही आ रहा है। कुछ समझ म न आने पर फातिमा हसती है। सोना बोला, ताऊजी अंग्रेजी बोल रहे हैं। मैं जब ताऊजी जैसा बड़ा हो जाऊगा अंग्रेजी म बातें करूगा। मैं ए-बी सी डी पढ़ सकता हू।
फातिमा ने जवाब म कहा—बाजी ने कहा है मुझे भी स्कूल म भरती कर देगा। मैं भी पढूगी।
सोना बोला सवेरे केले की पत्ती पर सेठे की कलम से ए बी-सी डी लिखा।

इसके बाद वह कह सकता था निमल चरणे, रत्ने विभूषित कुडल करणे रटा है। क्योंकि पढ़ाई के अंत में प्रतिदिन की तरह सोना ने घाट पर खड़े हो लिखे पन्नों को टुकड़े-टुकड़े कर फाड़ डाला है। फिर वर्षा के जल में बहा देते समय सरस्वती देवी को प्रणाम करते हुए उसने कहा है आई हो सरसुती जाओगी कहा—परा पढ़कर विद्या तो ले लू। लेकिन सोना ने कुछ भी नहीं कहा। क्योंकि, ताऊजी बड़ी-बड़ी आखो से देख रहे हैं। किसी तरफ चले जाने से पूर्व वे ऐसा ही करते हैं। सोना और फातिमा की बातें सुनकर उनको मानो उलझन हो रही है। फातिमा एक बात कहती तो सोना दो बात।

—बाजी ने कहा है ददिरहाट जाकर किताब ला देगा। मसजिद के बरामदे पर बैठकर मैं पढ़ूगी।

पागल ठाकुर ने तब कहा गतचोरेत्साला।

सोना बोला आप गतचोरेत्साला।

अबकी बार पागल ठाकुर ने सोना को बाहो में बाध लिया। फिर उस झाड़ी से निकल बाहर आ सोना को एक तितली पकड़ने में मदद करने लगे—फातिमा पास पास चलती रही। उस तितली को लेकर डिबिया में रखते समय सोना ने कहा, तुझे चाहिए यह तितली ?

—दीजिए।

—लोगी कैसे ?

फातिमा के गले में पत्थर की माला। फातिमा ने कमर से कपड़े की गाठ खोल डाली। अरबी की एक पत्ती तोड़ लाई। पेड़ की छाह में खड़े दोनों ने एकाग्र मन से तितली को अरबी के पत्ते में रखकर उसका मुह बद कर दिया। फिर फातिमा के आचल में उसे बाध ताऊ जी के पीछे दौड़ने लगा। मणीद्रनाथ इन लोगों को लेकर अर्जुन पेड़ तक गये। इस समय वर्षाकाल है—इसलिए नाव नदी और मनुष्य यही दृश्यमान जगत है। इस समय कितने ही ताड़ की नावें अनन्नास की नावें, करेला की नावें नदी से उतरती चली जा रही हैं। इस नदी और नावों का देखते ही लगने लगता पलिन कहीं लेटी हुई है। पलिन की स्मृति पलिन की आखें गोन से खीची जाने वाली नाव की तरह बस खीचे ही चली जा रही हैं।

दक्षिण के कमरे में लालटू पलटू अब भी पढ़ रहे हैं। उनकी छुट्टी नहीं हुई।

उन लोगो ने सोना को पोखर के भिड पर घूमते देखा तो खफा हो गये। पोखर के दूसरे किनारे सोना पागल ताऊ और टोडरबाग की वह टरटराती लडकी। माना एक हिरनौटा हो, नाचती फुदकती, सोना मिल जाय तो क्या कहना—खुशी के दिन होते तो खेता म भागकर जौ गेहू के खेता म वे खो जाते। इन लोगो की अभी छुट्टी नही हुई। माना की हा चुकी है। उन लोगा का गुस्सा बढ रहा था। सोना उस लडकी के आचल म जाने क्या बाधे दे रहा है। पलटू ने कहा, देखा, सोना ने फातिमा को छू दिया।

उस समय अजुन वक्ष की नम छाल पर मणीद्रनाथ ने पीठ रखी। सामने गरग जमीन, जमीन पर पानी भरा हुआ दूर म कही धान-खेत के भीतर कुराकुन बोल रहा था। नदी मे नाव ग्रामोफोन पर गीत—नदी मोको बहाय लै जाव। और वर्षा के माहौल मे मानो केवल यही प्राथना हो—मोको बहाय ल जाव। इसलिए इस समय इन दो बालक-बालिका के साथ मणीद्रनाथ को जल म बह जाने की इच्छा होने लगी।

फातिमा न पुकारा सोना बाबू।

साना ने कहा, क्या ?

मुझे एक लाल काकाबेली देंगे ?

—दूगा। उस वक्त शामू लौट रहा है। उसके हाथ म डे-लाइट। किसी तरह से भी वह नरेनदास के घर की ओर नही गया। वह सीधे पोखर के भिड पर उतर आया। और दूर एक बार आख उठाकर पेड-पौधा की आड से मालती को देखने के प्रयास म लगा कि घर बडा सूना-सूना सा लग रहा है। मालती क्या यहा नहीं है ? क्या वह ससुराल चली गई है। जान क्या बेहया की तरह मालती क आगन म जाकर खडे हो जान की उस बडी इच्छा हुई। लेकिन उससे नही बन रहा है। कोई कोई सशय उस दूर हटाय ले जा रहा है। उस समय अन्यमनस्क बनने के लिए उसन पुकारा फातिमा, कहा गई ?

फातिमा न सोना बाबू स कहा, मैं चली। वह दौडती चली गई। शमसुद्दीन नाव पर चढकर लगी मारने लगा। जाने क्या सोचकर फातिमा बोली बाजी सोना बाबू ने कहा है कि मुझे एक लाल कोकावली देगा। शामू ने जवाब न देकर बेटी का मुख देखा—बेटी उसकी बडी चचल है। आखा म सदा ही शरारत भरी हसी। वह लडकी अब भी अजुन वक्ष के नीचे कुछ तलाश रही है। शामू ने देखा

धनबहू ने कहा सोना, तुम्हारी खरियत नहीं। मैं कह दे रही हूं। पीठ पर कुछ पड जाएगे। इसी में भलाई है कि उठकर बाहर जाओ।

बाहर सासू जी का बडबडाना लगातार बढ़ता जा रहा है। माना कतई नही उठ रहा है। इन सारी जलालत के लिए साना का जिम्मेवार सोच सोना की पीठ पर धनबहू जमानुषिक रूप म आघात करने लगी। सोना का दम घुटता जा रहा है। लेकिन सोना किसी तरह से भी पी‌ा छोडकर नहीं उठ रहा है। सयुक्त परिवार और गिरस्ती की तरह-तरह की परशानिया ने धनबहू को इस वक्त चरमरूप से कुत्सित बना डाला। साना को बाला से घसीटकर बाहर ले आई।
—चुपचाप खडा रह। जरा चूमी अगर की। कहकर धनबहू खन नहा आई और साना के सिर पर घडा भर पानी डाल दिया।

और कास्निा पट के नीचे उस समय वह क्वार का कुत्ता। बगल म मणीद्र-नाथ। मणीद्रनाथ से साना का कनश सहा नही जा रहा था। मार कलश के व अपना हाथ चबाने लगे। हाथ से खून टपक रहा था।

घाट पर नाव रुकने पर फातिमा बोली बाजी सोना बाबू न मुझे तितली पकड दी है।

शमसुद्दीन न अन्यमनस्क भाव म कहा किसी भी जीव को कष्ट नही देना चाहिए। छोड दा।

फातिमा न तितली का छोड दन के लिए आचल खोलकर देखा तितली न हिल रही न उड रही। तितली मर चुकी है।

बाहर इधर-उधर मुर्गिया चरती फिर रही थी। जलाली घर के जासार बठी है। शमसुद्दीन आर उसका मजलिस या भीतर अलीजान का पकाया गोश्त (मेहमाना के भाग क लिए) सभी कुछ अटपटा-सा। अरवी क थुरमुट का लाघ कर सेता म जलाली न दृष्टि फला दी। धान सन म कुछ बनज आवाज कर रह हैं—पक पैक्। उसके पट म ऐंठन हुई। मन्नान की बाड पर पटसन सूख रहा है।

पेड के नीचे कोई नहीं। फातिमा बड़ा उदास सी दीख रही है।

तब सोना भूख से एक झटके में रसोईघर में घुस गया और धनबहू से लिपट गया। बोला, मां भात दो। भूख लगी है।

धनबहू सोना के लिए पातल के ऊपर से महीन अरवा चावल का भात परोस रही थी। वानी पीढ़ा ले के बैठा।

लालटू खा रहा था। वह आंखें मिच मिचाकर देख रहा था। सोना के लिए मां का इतना लाड़-प्यार उसको सुहा नहीं रहा था। मां ने उसको तली हुई बड़ी कवई मछली दी है। किसी तरह से भी वह अपना क्षोभ न संभाल सका। बोल पड़ा, मां सोना ने फातिमा के कपड़े में मुंह साफ किया है।

सोना ने झट घबड़ा कर मां का गला छोड़ दिया और कहा, नहीं अम्मा।

लालटू चिल्ला पड़ा, झूठ मत बोल। उसने पलटू को गवाह रखा।

पलटू ने कहा, तूने फातिमा को चिट्ठी पकड़कर दी है।

शशीबाला बाहर सींगी मछली का सिर काट रही थी। ऐसी बात सुनकर हल्ला मचाती हुई आ पहुंची। धनबहू डरने लगी। क्योंकि अभी सबके सब सासू जी जात-पात लेकर कुहराम मचा देंगी। छूतछात का जिक्र करेंगी। अशुचि होने की बातें अकल्याण जान रहा है—तभी ही कितनी सारी बातें होंगी कौन जाने। इसलिए धनबहू ने भात की थाली अलग रख दी और कहा, सोना बाहर जाओ। तुम पहले नहा लो।

सोना बोला, मैं नहीं नहाऊंगा। मुझे भूख लगी है। मुझे खाने को दो।

धनबहू का दिमाग गरमाता जा रहा है। इसको लेकर शशीबाला दिनभर चिकचिक करती रहेगी। उसने सख्ती के स्वर में कहा, सोना, कमरे के बाहर जाओ कह रही हूं।

सोना बोला, मुझे भूख लगी है। खाऊंगा। मुझे खाने को दो। लालटू बोला, नहीं तुझे खाने को नहीं मिलेगा। न नहाने पर खाना नहीं मिलेगा। धनबहू ने लालटू को घुड़की लगाई। पीतल के ऊपर में जो भात बचा था सब धनबहू ने बाहर कर दिया। तली मछली भात सब घूरे पर फेंक दिया। सोना का क्लेश बढ़ने लगा। जिद भी बढ़ रही है। मां ने उसका खाना घूरे पर फेंक दिया। मां उससे नहाने को कह रही है। सोना पीढ़े पर बैठा रहा। वह उठा नहीं। वह *गुस्सा कर रूठ कर हाथ पर पटकता रोता रहा।*

धनवहू ने कहा, सोना, तुम्हारी खरियत नहीं। मैं कह दे रही हू। पीठ पर कुछ पड जाएगे। इसी म भलाई है कि उठकर बाहर जाओ।

बाहर मासू जी का बडबडाना लगातार बढता जा रहा है। सोना कतई नही उठ रहा है। इन सारी जलालत के लिए सोना को जिम्मेवार सोच सोना की पीठ पर धनवहू अमानुषिक रूप से आघात करने लगी। सोना का दम घुटता जा रहा है। लेकिन सोना किसी तरह स भी पी ा छोडकर नहीं उठ रहा ह। सयुक्त परिवार और गिरस्ती की तरह तरह की परेशानियो ने धनवहू को इस वक्त चरमरूप से कुत्सित बना डाला। सोना को बाला स घसीटकर बाहर ल आइ। —चुपचाप खडा रह। जरा चूभी अगर की। कहकर धनवहू खुद नहा आई और सोना के सिर पर घडा भर पानी डाल दिया।

और कामिनी पेड के नीचे उस समय वह क्वार का कुत्ता। बगल म मणीद्र-नाथ। मणीद्रनाथ म सोना का क्लश सहा नही जा रहा था। मारे क्लेश के वे अपना हाथ चबान लगे। हाथ से खून टपक रहा था।

घाट पर नाव रुकने पर फातिमा बोली वाजी सोना बाबू ने मुझे तितली पकड दी है।

शमसुद्दीन न अन्यमनस्क भाव स कहा, किसी भी जीव को कष्ट नही देना चाहिए। छोड दो।

फातिमा न तितली को छोड देन के लिए आचल खालकर देखा, तितली न हिल रही न उड रही। तितली मर चुकी है।

बाहर इधर उधर मुर्गिया चरती फिर रही थी। जलाली घर क ओसारे बठी है। शमसुद्दीन और उसकी मजलिस या भीतर अलीजान का पकाया गाश्त (मेहमानो के भोग क लिए) सभी कुछ अटपटा-सा। अरबी के झुरमुट का लाघ कर सता म जलाली न दृष्टि फला दी। धान-खेत म कुछ बतख आवाज कर रहे हैं—पक-पक्। उसके पट म ऐंठन हुई। मकूल की बाड पर पटसन सूख रहा है।

शामू मानो कुछ चौंक-सा पड़ा, कुछ कहा तूने ?

—बाजान अम्मा आपको बुला रही हैं।

फातिमा का मुख देख, जल का नीला रंग देख, यह घास और मिट्टी देख शामू क्रमश: इस्लाम प्रीति के लिए एक गहरे अरण्य के भीतर डूब जाने लगा। उस अरण्य में उसने देखा साईं फकीर साहब मजहब का बड़ा हाथ में लिए मुश्किल आसमान की रोशनी में सामने की ओर बने चल जा रहे हैं। प्रकाश के वक्त में वृद्ध का मुख किसी अस्पष्ट अभिलाषा की ताड़ना से वे क्लान्त हैं। बार-बार बुलाकर भी शामू उस फकीर का लौटना नहीं पा रहा है। वे चले जा रहे हैं और शामू का सिर्फ पीछे-पीछे आने को वह रहे हैं।

फातिमा घूमकर सामने आ खड़ी हो गयी। बोली, अम्मा आपको बुला रही हैं।

वह अदरूनी ड्योढ़ी में चला गया। उसकी बीवी का बदन नंगा है नाक में नथ बीवी की आँखें छोटी छोटी सुरमा से रची हुई। हाथ में शीशे की नीली चूड़िया। धारीदार साड़ी पहने हुए। बदन पर समिज नहीं साड़ी के नीचे शाया नहीं। सादे-सीधे ढंग से एक ही लपेट में साड़ी पहनी हुई इसलिए जिस्म के सारे अवयव ही स्पष्ट हैं। अलीजान की देह गाभिन गाय जैसी। लेकिन आखों में सुरमा लगा होने से आखों में अभिलाषा से अधिक आवेश दिखता। वह बोली, दिन चढ़ रहा है या घट रहा ? खाना नहीं खाना है ?

शामू तख्तपोश पर खाने बैठा। उसकी बीवी ने बगल में बैठकर उसको खिलाया। शामू को काफी चिंतित देख उसकी बीवी ने पूछा क्या सोच रहे हो ?

शामू ने कोई जवाब नहीं दिया। खामोश खाता रहा।

—क्या बात है क्या नहीं ?

शामू नाराज हुआ। बोला तुझे इन बातों से क्या लेना-देना दो मुट्ठी भात देना हो तो दे-दे। ज्यादा मत बक।

अलीजान ने कहा बात कौन-सी बनाई मैंने ?

शामू ने सिर उठाकर अलीजान का मुख देखा उसकी आखें देखीं। अलीजान की आखों में जाने क्या है—जिसे देखने पर वह सारा क्रोध द्वेष हिंसा भूल जाता है। उसने कहा, मैंने तय किया है कि वोट में मैं लीग की ओर से खड़ा होऊंगा।

—थाडा-थाडा तैयार है। कह कर दाहिने हाथ म एक भसीड उठाकर उसने शामू को दिखाया। बोली अभी बडे नही हुए बडे हैं। फिर ढलते सूरज की धूप मे मुख रख जलाली ने कहा, तेरे चाचा कादम की गहमी नाव का मल्लाह बनकर कब का चला गया। न खत कितावत न पसा-कौडी। बता भी क्या खाऊ। इसी लिए भसीड निकाल कर चबा रही हू।

जलाली गले तक शरीर को पानी म डुबाये हुए। और जलाली की आखा म आतक। जलाली का मुरझाया हुआ चेहरा देखकर शामू का दिन कलपन लगा। कुइ-कोकाबेनी का क्षेत्र पार करते ही धान खेत। मालती के बत्तख धान खेत के भीतर सहम-सहम कर चल रहे हैं। उसने आकाश म किसी बाज को उडते नही देखा—किसी थाटी झुरमुट म गीदड की आखें नही दिखाई पडी—बस जलाली का मुख लाभ के कारण, पाप के कारण धीरे धीरे बीभत्स होता जा रहा है—मानो यह मुख यथाथ म किसी गीदड का ही हो।

जलाली अपनी जगह स जरा सा भी नही हिली। दोनो हाथो से उसने बत्तख का गला पानी के नीचे दबाया है। इतनी देर जूझन के बाद वह थकी हुई है। शामू का नौकर अब लग्गी मार रहा है। हडिया हवा से बह कर दूर सरकता जा रहा है। शामू कछार के पीपल के उस पार ओझल हो जाने के बाद जलाली ने गाली दी मुझौस। यहा क्या कर रही हैं आप? तेरा सिर चबा रही हू। कहकर एक गिरगिटान की तरह वह पानी म तरने लगी। बत्तख उसके दाहिने हाथ म। अब बत्तख का हर अंश पानी के नीचे छिपा रखने के लिए एक हाथ से तर कर जब हाडी को वह अपने काबू म ले आई उस वक्त शामू काफी दूर चला गया था—उस समय शाम की धूप खिसकती जा रही थी और उस समय आकाश में रग बिरंग बादल जमकर ईशान कोण का काला और गाढा बना रहे थे।

अब घर की ओर जाने के लिए उसने बत्तख को हाडी के अन्दर खास दिया। पुष्ट बत्तख का पेट अब भी नम और गम है। पेट पर हाथ रख गरमाई अनुभव करते समय उसने देखा बहुत म धान खेत पार करने के बाद पूरब काठा का गाव गाछ और गाछ के नीचे मालती। मालती अपने बत्तखो को ढूढ रही है। पानी मे ऊपर शरीर का उभरा करउसन चारा। और दूरस लागोकीआहट मिली जलाली को। उसने पहने हुए अगोछे को खोल कर हाडी का मुह डर के मारे ढक दिया। दूर स मालती की आवाज भी हवा म तरती आ रही है। चारो ओर शाम का

अधेरा उतरता आ रहा है। पटसन-मा म भीतर स दूसरे छोर का कुछ भी दिखाई नही पडता। स्थान सुनसान है। पीपल पार करा म बाद मजूर का घर है। बुढ़िया घना की अम्मा इतिवन पड क नीच बठी अनाप शनाप बक रही है। घर की ओर उठ जाते समय जब उसन देखा कि काई भी आग उगर। आग झार नहा रही है जब अधेरा धीर धीर गाढा होन लगा तब उस उच्च पट पर उसन फिर हाथ रखा। अगाछा उठाकर उसन फिर उस मर बत्तख को देखा। और पुष्प अधेरे के भीतर मृत बत्तख के पट पर हाथ रख फिर लार का बड़ा सा घूट सार मांस खान क लालच म बेसब्र हो उठी।

पानी के ऊपर से मालती का स्वर तिरता आ रहा है—आ ताइ-ताइ।

दूर धान खेत क भीतर वे बत्तख उसी तरह सहमत हुए पक पक कर रह हैं। धान के घने बिरवा के भीतर व अपने को छिपाये हुए हैं। मालती पानी म उतर गई। घुटन म ऊपर धोती उठाकर पुकारा आ ताई ताई। आ। आ।

चारा आर अधरा। हाट जाने वाले घर लौट रह हैं। कुआ के किनारे नगी की आवाज। नाव की आवाज। अधर म किसी भी हाट जान वाले का मुह वह न देख सकी। अमूल्य सूत लान हाट गया है। शाभा आबू हर कमरे म बत्ती जला रह हैं और देहलियो पर पानी छिडक रहे हैं। नरेनदास की बीबी बारिश आयगी सोचकर सारी पटसन की सेंटी घर के भीतर लके रख रही है। और आधी पानी आ जाने स बत्तख घर नही लौट सकेंगे या बत्तख रास्ता भूल भटक जाएगे या और कोई दुघटना हो जाय—मालती जी जान से पुकारन लगी आ तोई तोई।

शोभा और आबू ने गावगाछ के नीचे बुआ की आवाज सुनी। जाने कब स बुआ बत्तखा को बुला रही है। वे कापिला का दरख्त पार कर बुआ के लिए पानी म उतर गये और बुआ के साथ गला मिलाकर पुकारने लगे। और दूर शामू की नाव चली जा रही है। बारिश आयेगी जानकर भी शामू घर नही लौट रहा है। जलाली ने आसमान म बारिश का रग देखा। पानी के पास कटीली झाडियो की पात। झाडिया पार करने के बाद लुकाठ दरख्त के नीचे सनकाटी का बाड वाला उसका घर। भीगी मिट्टी की महक आ रही है। जोटन फकीर साहब के साथ दरगाह चली गई है। घर बिलकुल सूना है। हाजी साहब का खलियान पार करने के बाद दूसरा घर है। अधेरा और निजनता के बावजूद उसने मृत बत्तख को अगोछे से ढक रखा है। बारिश आयेगी। बरसात की वजह से घर के आस

पास और हर कहीं हरेरी का जगल। हरियाली की गध। इसलिए जलाली सब देख सुन अपने नगे शरीर को चुपके से घर की आर ले आयी। छोटे अगोछे से उसने हाडी का मुह ढक रखा था इसलिये वह नगी है। अधेरे के कारण वारिश आयेगी इसलिए गावगाछ के नाचे मालती का गला सुनाई नही पड रहा है— आसपास केवल कीडे मकौडे की आवाज।

मालती ने देखा उसकी तीन मादा बत्तख लौट रही हैं। नर बत्तख नहो है। मालती का दिल लरज उठा। कितनी मेहनत मशक्कत के बत्तख हैं य। इनको पालने मे कितनी सारी तकलीफें उठानी पडती हैं। अपने प्रिय बत्तख को न देख मालती चिल्ला उठी, भाभी री मेरा बत्तखा, कहा। बत्तखी तीना लौटी आ रही हैं—मेरा बत्तखा कहा गया ?

नरनदास की घरवाली दोना हाथा म समेट कर पटसन की सटिया का बोझा उठा रही थी। काटिया से भटभट शब्द हो रहा है—इसलिये मालती का चिल्लाना सुन पाने पर भी साफ समझ नही पा रही कि वह बोल क्या रही है। सटियो की अटिया फेंक वह लपक कर गावगाछ के नीचे पहुच गई और पानी के किनारे खडी हाकर बाली क्या हुआ है तुझे ?

—देखिए जरा क्या हुआ है। बत्तखी तीनो हैं, बत्तखा नहीं है। अजीब रोनी आवाज म मालती बाली।

—देख कहीं छिपा लुका होगा।

—आपने भी भली कही भाभी। क्या उसे कोई डर-खौफ नही।

—है ता डर-खौफ री। अमूल्य को आ जाने दे, नाव लेकर ढूढने निकलेगा। तू अब पानी स निकल आ।

इसलिय मालती पानी से निकल आई। उसका दिल उदासी से भरा है। रुलाई से भरा आवेश क्रमश दिल मे इकट्ठा होता जा रहा है। उसका यह बत्तख बडा ही प्रिय है बडी तकलीफ से इसको पाला पोसा है उसने और विधवा युवती का एकमात्र अवलवन है। आधी पाना के दिन उन छोटे छोटे चार पछिया को जब नरेनदास खाचो म लेकर आया था उस दिन से मालती ने कितने जतन से इनके पालने पोसने का भार अपने ऊपर ले लिया था। वे छाटे छोटे थे इसलिय नम घास नही खा सकते थे व भात भी नही खा सकते थे इसलिए वह तालाब से छोटी छोटी डारकीना मछलिया पकडती थी और उन बत्तखो की छोटी छोटीजीभ

के बाद तेरा पेट जो पिचका तो फिर उभरा ही नहीं तेरे पेट में चर्बी जमी ही नहीं।

जलाली ने इस समय मन ही मन कहा, मुझे तुम हर हफ्ते बत्तख का गोश्त खाने दो तो दिखा दूं कि रोज में पेट में चर्बी जमा दूं। उसका इस समय मालती भी याद आ गई। मालती विधवा युवती है। दिन ब दिन मालती के हुस्न का जलवा निखार पर आ रहा है। अल्लाह मुझे उसका हुस्न क्या नहीं देता? बाहर उस वक्त बारिश जमकर बरसने लगी।

इस बार बत्तख के शरीर से जलाली ने चमड़ा उधेड़ लिया। बांस के चोंगे में सरसों का तेल नहीं। बारिश की वजह से जरा-सा तेल के लिए वह कहीं नहीं जा पा रही है। इसलिए वह बहुत देर तक बत्तख के शरीर को सेंकती रही और इस कारण एक प्रकार की चिरायंध भी निकलने लगी थी। उसने यह भूना हुआ गोश्त जरा नमक मिर्च में तलकर मिट्टी की दो थालियों में रख दिया। एक टुकड़ा मुंह में डाला फिर फूं फूं से हड्डी को मुंह से निकालकर चख चख कर मांस को खाते समय उसने देखा जाने कब हवा से बत्तख के सारे पर कमरे भर में फैल गये हैं। दीवट पर कुप्पी टिमटिमा रही है। रोशनी की ओर देख कमरे भर में फैले परों को देख और चोरी कर मांस भोजन के कारण मन-ही मन जलाली अपने को बड़ी असहाय पाने लगी। आबिद अली को मालूम हो जाय तो पिटाई करेगा। इसीलिए जलाली ने आग हड्डी न चबाकर सारे परों को बीन बीनकर बारिश में बाहर निकल गई। पानी हलाती हुई अंधेरे में वह कछार की ओर चली। फिर पीपल के नीचे जो झाड़ी जंगल है वहीं सारे परों को फेंककर बोली अल्लाह मुझे भूख लगी है। मैं चलती हूं। इस समय वर्षा के जल से जलाली का सारा दुख धुलता जा रहा है। सुख के लिए जलाली घर लौट रही है। उसने बिजली की चमक में देखा पटसन खेत पक गये है। उन पटसन खेतों के उस पार उसने रोशनी के एक गुच्छ को घूमते हुए देखा। और सावधानी से कान पसारने पर उसे सुनाई पड़ा मानो मालती उस वक्त भी अपने बत्तख को बुला रही है—आ जा, तोई-ताई। उसने तनिक भी देर नहीं लगाई। कमरे में घुसकर टटटर बन्द कर लिया। बदन हाथ सब पोंछ लिया। अब की बार जरा समय लेकर उसने गमछा पहन लिया। फिर जलाली एक लकड़ी के पट्टे पर बैठ गई और बत्तख की हड्डी और गोश्त चचोरने लगी। उसे लगा, मालती जिस तरह पुकारती जा

रही है—अभी शायद यह बत्तख थाली पर ही बोल उठे। अब वह गोश्त नोच नोच कर हप्प हप्प खाने लग गई। या निगलने लगी। बत्तख को वह थाली पर किसी तरह से भी बाल पड़ने नहीं देगी।

बारिश थमने पर शमसुद्दीन घर की ओर लौट चला। धन्नू शेख नाव खे रहा था। धान-खेत के भीतर एक रोशनी देख और मालती की आवाज सुनकर वह समझ गया कि मालती को अपना बत्तख अभी तक नहीं मिला। मालती और अमूल्य भरसक पुकारते जा रहे है—आ जा ताई ताई। और यह आवाज गाव खेत पार कर बहुत दूर चली जा रही है—बड़ी ही दुखभरी आवाज है यह बड़ी ही पीर भरी। बहुत दिनो के बाद शामू ने मालती को इन खेतो मे देखा—क्या तलाशती फिर रही है। अमूल्य नाव खे रहा था धान खेत के भीतर पटसन खेत के भीतर या किसी और झाडी झुरमुट जगल म वह बत्तख मारे डर के छिपा हुआ है या नही यह देख रही है मालती। ऐसे समय मालती ने देखा दूसरी एक नाव पटोरी शमसुद्दीन। शमसुद्दीन मानो कुछ कहना चाहता हो। लालटेन की रोशनी म शमसुद्दीन का चेहरा साफ झलकता। एक अद्भुत नफरत से शुरू म मालती शामू से बोल नही सकी। शामू मानो पतवार पर बैठे चप्पू वालो को उत्साहित कर रहा है। मालती को बत्तख के लिए रुलाई आ रही थी। वह सिर झुकाये बैठी रही। शमसुद्दीन को देखकर भी वह कुछ बोली नही। शामू ने आज अप मानित नहा महसूस किया क्योकि मालती का ऐसे बैठे रहना सहाय-सबल शून्य नारी की तरह है। इसलिए उसने कहा तर बत्तख घर नही गय ?

—मादा बत्तखें पहुच गई हैं। नर नहा आया।

मालती सक्षेप म जवाब दे रही थी। मालती सिर झुकाय बैठी थी चारा आर आधा हवा की गध। चारा आर अधेरा और भी गाढ़ा होकर उतर रहा है। शामू और अमूल्य दोनो ही मिलकर अब पुकारने लग आ जा तोई तोई। कहा किसी बत्तख की आवाज नहीं। सिर्फ पीपल पर जुगनू जगमगा रहे हैं। नीचे बत्तख के पर उड़ रहे हैं। पर पानी म नाव की तरह बहते जा रहे हैं।

शामू अमूल्य और मालती ने एक साथ गला मिलाकर पुकारा। लालटेन उठाकर धान के खेतो म ढूढने समय उन लोगो ने देखा आस-पास बत्तख के पर बहते चले जा रहे हैं। कछार के पीपल के नीचे आकर मालती सचमुच टूट पडी।

पर का भूरा रग पीपल के नीचे का घना जगल-सब मिलमिलाकर बत्तख की मौत के बारे मे सचेतन होते ही वह टहक-टहक कर रोने लगी।

चाहे इस रुदन के लिए हो या परा के अवस्थान के लिए शमसुद्दीन ने तिपहर की कुछ घटनाओ का प्रत्यक्ष किया तो जगल के बीच मानो उसने जलाली का मुख देखा। इसलिए बत्तख को उसने नाहक नही ढूढा। वह जानता है इन बत्तखो को मालती न बच्चे की तरह स्नेह मे पाला है। मालती विधवा है—इसलिए विधवा युवती का एकमात्र सबल।—मारे गुस्से और अफसोस के शामू से शुरू मे बोला नहा गया। जलाली का मुख उसकी आखो के सामने बार-बार चालाक सियार-सा झलक जा रहा है और मालती का कलक उसको प्रतिहिसा स भर देने लगा।

शामू बोला घर जा मालती।

अमूल्य ने कहा, चलिये दीदी।

शामू बाला मत रो मालती।

मालती न इस बार आखें उठाईं और शामू को देखकर सोचने लगी यह वही शामू है—जिसकी आखें छोटी-छोटी और गोल गोल थी—वही शामू जो शात था और मालती के दुख मे किशोरवय म दुखी होना था। शामू मानो आज दाढी-मूछा म शून्य एक पुरुष है—शामू मानो एक हिंदू युवक की तरह आज बगल म आकर खडा हो गया है। इसलिए मालती का लबे अरसे का घणाबोध जाता रहा। बहुत देर तक वह अबोध बालिका सी शामू के मुख की आर देखती रही। कुछ भी बाली नही।

दोनो नाव अगल-बगल।

लालटेन की रोशनी म उनके चेहरे स्पष्ट थे। गाव के भीतर कुत्ते के भूकने की आवाज पानी पर तिरती चली आ रही है। विश्वासटोले म हैजाक की रोशनी और आकाश म अस्पष्ट बादलो की छाया। कुछ नक्षत्र मानो मालती के दु खबोध को गहरा बना रहे हैं। यह दु खबोध शामू म भी सक्रमित हुआ। अपने बालक वय म शमसुद्दीन इस गाव-खेत को पार कर कही चला जा रहा है—मानो चारो ओर ढोल-नाक बज रहे हैं—चारो ओर पायक-बरकदाज—उसका बाप दुर्गा प्रतिमा के सामने लाठी का खेल-करतब दिखा रहा है—शामू को लगा, य सारे कीर्तिमान पुरुष आज पशु हैं और एक नई भावधारा नया धर्मबोध मनुष्य को सकीर्ण बना रहा है। वह जलाली पर सचमुच बिगड गया। मन ही मन वह

बोला, साली के पेट को रौंद कर गोश्त निकाल दूंगा।

शामू की नाव क्रमश दूर खिसकती गई। क्रमश ओझल होने लगी। पीछे अमूल्य मालती और लालटेन पड़े रहे। लालटेन की रोशनी कुछ देर तक अंधेरे को ठेल रखे थी ज्यों ज्यों शामू दूर सरकता गया मालती का मुख धुंधला पड़ता गया। मालती मानो एक रहस्यमयी नारी है। वर्षा का जल धान के बिरवों से टप्प्-टप्प् पानी में और नाव की पटोरी पर झर रहा है, बिल्कुल मालती के आंसुओं की नाईं। शामू ने दूर से चिल्लाकर कहा तू घर जा, मालती। अमूल्य से उसने कहा, अमूल्य घाट पर नाव ले जा। रात को इस खेत मैदान में मत घूमो। मालती का ऐसा तन्हा बैठे रहना ही शामू को बेबसी से भर रहा था क्योंकि कलेजे में पीर का कांटा आज बड़ा करक रहा है।

शामू ने धनू शेख से नाव को सावधानी से आबिद अली के घाट पर लगाने के लिए कहा। वहां लग्गी की कोई आवाज न होने पावे।

शामू चुपके चुपके दबे पांव ऊपर उठने लगा। घुटने तक कीचड़ में चलना पड़ा। अब भी झाड़-झंखाड़ से वर्षा का पानी टपक रहा है। अब भी पेड़ों से बारिश की नन्ही-नन्ही बूंदें हवा में भर रही हैं। कमरे में धीमी रोशनी। भीतर से कोई आहट नहीं मिलती। आबिद अली नहीं है जरूर गया है बाबुरहाट और जोटन भी गैरहाजिर। बड़ा भुतहा सा लग रहा था। उसने एक बेंत की पत्ती हटाकर बाड़ की दरीच में आंखें डाल दीं। देखा, छोटी-सी एक कुप्पी जल रही है। जलाली नग्न प्राय सी पीढ़े पर बैठी है। वह दोनों थालियों की हड्डियां निचोड़ रही थी। हड्डी में कोई गोश्त नहीं लगा है। वह दांतों से हड्डियों को मुरमुराकर तोड़ रही थी। जलाली पानी पी रही है। शामू ने देखा पानी के ऊपर जलाली का चालाक सियार जैसा मुख जो उभर आया था—दिन भर के बाद गोश्त भोजन में—वह मुख सहज और सुंदर है। उस मुख से वह अल्लाह की दुआ मांग रही है। पानी पीते-पीते उसने दो बार अल्लाह के नाम का स्मरण किया। शामू इन गरीब इंसानों के लिए फिर अरण्य में चला जाना चाहता है इसलिए मालती के बतख चोरी की बात या जलाली का पेट रौंद कर गोश्त निकालने की बात सारी-की-सारी जाने कैसे मन से गायब सफाचट हो गई। क्योंकि जलाली इस समय फटी चटाई बिछाकर नमाज पढ़ रही है। रसूल-सा मुखड़ा—

सामने दो हाथ पसारे हुए जलाली थे। शमसुद्दीन कुछ भी कह न सका। ससार यात्रा की इस लबी सफर पर वह मानो कालनेमी की तरह ही एक अलीक लका का हिस्सा बाटने मे मस्त है। उसके पैर खिसक नही रहे थे। पर मिट्टी मे गडत जा रहे हैं।

जाडा आते ही कुछ दिनो तक यह शख्स मानो ठीक रहता है। ठड के लिए मणीद्रनाथ ने बदन पर चदरा ओढ लिया है। पहले की तरह नगे बदन नही रहते। इसी तरह से अच्छे होते-होते शायद किसी समय बिलकुल अच्छे हो जाएगे। तब वे दाना किसी तीर्थ या बडे शहर मे चले जाएग। या, जैसा कहा जाता है, एक मदान है, मदान के बगल म बडी सी एक बावडी है बावडी में बडे-बडे कमल खिले रहते हैं बडी बहू यूनानी पुराण के इस नायक को लेकर कभी सचमुच वहा चली जायेगी। यह शख्स चगा होते ही जलदान के लिए किसी प्याऊ के पास खडा रहेगा। उस वक्त शायद किसी दूर गिरजे म घटे बजेंगे, पुरोहित मत्र पढेंगे—पागल मानुस मणीद्रनाथ किसी हेमलक दरख्त के नीचे खडे खडे सोने के हिरन का सपना देखेंगे।

इस व्यक्ति का इतना स्वाभाविक देखकर बडी बहू कटोरा भर गम दूध ले आई। साथ म नया गुड और मत्तमान केले। कुछ गम लड्या भी। बडा सा आसन बिछाकर वह उस शख्स के लिए इतजार करने लगी।

ववार का वह कुत्ता मणीद्रनाथ के परा के पास घूम फिर रहा था। सोना दक्षिण के बरामदे पर पढ रहा है। कुत्ता बीच-बीच मे भूक रहा था। लाल अडहूल के पेड के नीचे दो जाडे के मढक कलप्-कलप् कर रहे हैं। मणीद्रनाथ ने गम दूध मत्तमान केला और नया गुड मीस कर खाया। कुछ अपने प्रिय कुत्ते का दिया। फिर उठ आते समय लगा साना पढाई छोड चुपके से इधर आ रहा है। बडे मालिक बडे खुश—वे, कुत्ता और सोना को लेकर जाडे क सवेरे खेतो म निकल गये।

व सुनहर रेतवाली नदी म आ उतरे। इस समय जल म कोई बहाव नही।

मानो वाहन पर चढ़ कर ही पार किया जा सकता है। इसी किनारे के परिचित लोगों ने सोना और मणीन्द्रनाथ को आगाह किया। आस-पड़ोस में सारे के सारे मुसलमान गांव हैं। उनका दफ्तर ही मानो इस किनारे चला आया। नाव में कुत्ता सबसे पहले उछलकर बैठ गया। सोना की बहुत दिनों की इच्छा है—किसी सवेरे पागल ताऊ के साथ गांव-भर देखने निकलेगा। प्रतिदिन सोना पलंग पर दोपहर या शाम को ताऊजी का साधु की तरह घर के आंगन में आ पहुंचना, पैरों में विचित्र रंगी-नाला के चिह्न लगे रहते, गर्मियों में तरबूज और जाड़े के अंत में गन्ने का बोझ साथ ले आते हैं। सोना को लगता यह व्यक्ति वनवासी राजपुत्र-सा है। इस व्यक्ति से कितनी ही कहानियां सुनने की इच्छा—पागल है तभी अद्भुत कहानियां सुनाते थे। सुनसान एकांत में मन पाते ही सुनाने लगते। पागल हैं, तभी कहानी का न तो आरंभ है और न अंत।

ताऊजी कहते पद्मपोखर जाओगे ?

ताऊजी कहते हिलसा मछली का घर देखोगे ?

सोना कोई जवाब नहीं देता था। जवाब देते ही बोल पड़ेंगे गत्चारेत्साला। फिर भी एक बार काफी हिम्मत बटोर कर उसने कहा था मैं पक्षीराज घोड़ा देखूंगा। दिखाएंगे आप ?

मणीन्द्रनाथ की मानो कहने की इच्छा हो तुम्हें पद्मपोखर देखने का जी नहीं करता। हिलसा मछली का घर देखने का जी नहीं करता। रूपचन्द पक्षी नहीं देखते। बस पक्षीराज घोड़ा चाहिये। अरे पक्षीराज घोड़ा तो मुझे एक चाहिए। मिले कहां। कहकर एक सवालिया मन लिये उन्होंने सोना की ओर देखा था।

और आज सोना को पक्षीराज घोड़े की याद ही नहीं आई। आज वह पढ़ाई छोड़ कर चला आया है। मां छोटे चाचा ढूंढ रहे हैं। सोना गया कहां देखिए बचवा गया कहां—सभी लोग ढूंढेंगे। सारा मामला ही सोना को मजेदार सा लगा। मां ने उसे फातिमा को छू देने के लिए मारा है। दादी जी ने कहा है कि उसकी जाति और धर्म चौपट हुए। उसको सभी लोगों ने कितने दिनों से परेशान किया है। कुछ भी करते लालटू पलटू ने उससे कान पकड़कर उठक बैठक करवाया है—आज वे सभी चिंता करें। वह ताऊ जी के साथ चोरी छिपे घर से निकल पड़ा। वे पागल हैं तभी सिर्फ मुस्कराये थे। पागल है तभी उसे इस यात्रा के लिए उन्होंने उत्साहित किया था। मानो कहा था कहीं न कहीं पक्षीराज घोड़ा आकाश

म उड़ता रहता है, कहीं-न-कहीं शख के भीतर शखकुमार छिपा रहता है औ
कहीं-न-कहीं सीपी के भीतर चपक नगर की राजकन्या साप के विष से मूर्छि
पड़ी है। तुम और मैं वहा चले जायेंगे, सोना। सब लोगा के लिए बड़े खेत
सुनहले धान की बालिया ले आऊगा।

अहा वे कितने ही खेत गाव पार करते चले जा रहे हैं। जितना ही आगे
रहे थे आकाश क्रमश दूर खिसकता जा रहा था। सोना थक गया है। वह भूख
लस्त पस्त हो गया है। किसी तरह से भी वह आकाश को छू नहीं पा रहा है
उसके कितन दिनो की अभिलाषा है, ताऊजी के साथ निकलकर जो आकाश न
के उस पार उतर आया है—उसको छू आएगा। लेकिन जाने किस जादू से
आकाश केवल सरकता चला जा रहा है।

कुछ परिचित लोग इस नाबालिग बच्चे को पागल आदमी के साथ देख
विस्मय स बोल पड़े थे सोनाबाबू, आप। ताऊजी के सग कहा जा रहे हैं। चल
म तकलीफ नहीं होती।

सोना न सयाने व्यक्ति की तरह सिर हिलाकर कहा था नही।

लेकिन मणीद्रनाथ समझ गये कि सोना सचमुच और चल नहीं पा रहा
उन्होंने उसको कधे पर बिठा लिया। इस समय सूय का ताप प्रखर है। घास
सिरा पर अब ओस नही रह। सूरज सिर पर चढ आया ह। इस समय उन लो
न, कहीं घटा बज रहा है ऐसा सुना।

सोना को लगा शायद यह वही पक्षीराज घोड़ा ही हो। उसन ताली ब
हुए कहा ताऊजी पक्षीराज घोड़ा।

ईश्वर का कुत्ता चलते चलते सहसा रुक गया। उसने कान खड़े कर शब्द
सुना। शब्द इधर ही बढ़ता आ रहा है।

मणीद्रनाथ को अब घर लौटने की याद आई है। घटे की ध्वनि सुनकर
शायद घर लौटन की याद आ गई। दाहिने ओर एक लबा-सा जगल। जग
भीतर स चलन पर फिर वही सुनहरे रेतवाली नदी मिल जायेगी नदी के कि
तरबूज के खेत। इस समय शायद ईशम तरबूज की दो एक लत्तियो को बिछा
रहा है। और उस समय जगल म कितने ही किस्म के पेड़-पालो। घटे की
ध्वनि क्रमश निकट आ रही है। वन के भीतर कितने ही प्रकार के फल के
हैं—सभी पहचाने हुए नहीं। फिर भी गध गुलाब जामुन, लटकन फल पह

हुए। सभी फल खारमे पर। सोना ने पेडा पर कौन-कौन से फल लगे हैं झाक कर देखने की कोशिश की। फिर खुले मदान म आते ही उसने एक अजीब जीव देखा। अतिकाय जीव। उसके गले से घटा बज रहा है। सोना चिल्ला उठा, वो देखिए ताऊजी।

कुत्ते ने लपकना चाहा और भूक उठा। ताऊजी कुत्ते को पकडे रहे। सोना को कधे से उतारकर अगल बगल तीनो महाप्राण मानो उसी अजीब जीव की ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। नजदीक आते ही वे भागने लगेंगे दूसरे पथ पर चले जाने से कोई डर नही रहगा।

सोना विस्मय के मारे कुछ बोल नही पा रहा है। दरअस्ल इतना बडा मैदान और एक विशाल जीव—इस हाथी का किस्सा उसने मझले ताऊ से सुना है। जमीदार कोठी का हाथी है। हाथी झूमता हुआ उन लोगो की ओर चला आ रहा है। नजदीक आन पर उसने देखा उसी की उम्र का एक लडका हाथी क सिर पर बठा अकुस चला रहा है। दिल म जो भय था वह काफूर हो गया। वह खुशी से चिल्ला उठा, ताऊजी।

ताऊजी ने मानो कितन दिनो के बाद बात की।—वह हाथी है।

सोना बोला हाथी ?

ताऊजी ने कहा, वह मुडापाडा का हाथी है।

लेकिन यह क्या ? हाथी उन्ही की ओर लपकता आ रहा ह। इतने बड एक जीव को देख और उसे इस तरह आगे बढआते देख सोना भय से मिमट सा गया। बिल्कुल उनके सामने आ गया है। ताऊजी हिल नही रहे हैं। कुत्ता भागदौड रहा है। सोना सोच रहा था भाग जाय या नही कि घर दौड भागे लेकिन पीछे इतना पसरा हुआ मदान, सामने झाडी—किधर को भाग यह वह तय नही कर पाया। डर के मारे वह ताऊजी से लिपट गया। बोला ताऊजी मैं घर जाऊगा।

ताऊजी ने कोई जवाब नही दिया। वे इस वक्त टकटकी लगाये हाथी को देख रहे हैं। जितना ही वह निकट आ रहा है उतना ही व मन ही मन चचल होत जा रहे हैं।

सोना क जी म आया कि ताऊजी का हाथ काट ले। ये उसकी बात सुन नही पा रहे हैं। उसने कहा, मैं मा के पास जाऊगा। कहकर वह रोन लगा।

लेकिन ताज्जुब है हाथी उनके सामने आकर चारा पर मोड कर आज्ञाकारी

सा बैठ गया। महावत ने ताऊजी को सलाम किया। फिर हाथी से कहा, सलाम कर। हाथी ने सूड उठाकर सोना को सलाम किया।

जसीम का बेटा उस्मान सामने बैठा है। जसीम पीछे। उसने कहा, आइए मालिक, हाथी के पीठ पर बैठ जाइए। आप लोगो को घर पहुचा आऊ।

वे इतने दूर आ गये हैं कि जसीम तक समझ रहा था कि दिन रहते यह पागल मनही नाबालिग बच्चे को लेकर घर नही पहुच पायेगा। उसने उन लोगो को हाथी की पीठ पर सवार कर लिया। हाथी की पीठ पर बैठ कर सोना मझले ताऊ को याद कर पा रहा है। वे मुडापाडा से घर आते ही इस हाथी के बारे म अनोखे किस्से सुनाया करते थे—एक बार वे लोग हाथी पर सवार शीतलक्षा नदी पार कर कालागज जाते समय भयकर आधी आ गई थी और उस आधी म जब एक दरख्त उखड आया था तो इसी हाथी ने दरख्त को थाम कर मझले ताऊ को मौत के मुह स बचा लिया था। सोना का दिल इतने बडे एक जीव के लिए पसीजने लगा। अब उसे लग रहा है कि हाथी पर सवार हो वह सामने का आकाश पार कर चला जा सकेगा। हाथी चल रहा है। गले का घटा बज रहा है। पीछे पीछे ईश्वर का कुत्ता। वह पीछे पीछे भागता चला आ रहा है। कितने गाव कितने मदान पार कर झाड झखाड रौंद कर व हाथी के पीठ पर—मानो कोई सौदागर वाणिज्य पर निकला हो—सप्त नौका पर, सात सौ मल्लाह का बेडा—सोना मानो युद्धजय कर घर लौट रहा है।

जसीम ने सोना से पूछा आपलोग कब निकले थे।

सोना न कहा अलससवेरे।

—मुह तो आपका कुम्हला गया है।

—भूख लगी है। कुछ खाया नही।

—खाएगे ? कहकर जसीम न पके हुए दूध सा सफेद गुलाबजामुन फल अपने कपडे म से निकालकर दिया।

मीठे और सुस्वाद गुलाबजामुन। सोना खा रहा था कि उनको निगल रहा था समझना मुश्किल है।

उस वक्त हाथी को देखकर गांव के कुछ खौरही कुत्ते चिल्ला रहे थे। कुछ गाव के लोग हाथी देख रहे थे—मुडापाडा का हाथी। हाथी लेकर जसीमउद्दीन हर साल इसइलाके मे हेमत के अत म या जाडे के आरभ मे चला आता है। घर

घर हाथी ले जाकर जसीम खल दिखाता है।

जसीम ने सोना से कहा मालिक पागल ताऊ के साथ जो निकल पड़—कहीं तुमको छोडकर अगर वह किसी ओर चले गये होते ?

—नही जाते। ताऊजी मुझे बहुत चाहते है।

जसीम बोला पागल मनही के साथ बाहर निकलने मे डर नही लगता ?

सोना बोला नही। नही लगता। ताऊ जी मुझे लेकर कितनी ही जगह जाते हैं। एक बार हसन पीर की दरगाह मे ताऊजी हम छोडकर आए थे न ? सोना ने मानो पागल ताऊजी को गवाह बनाना चाहा।

मणीद्रनाथ ने गदन मोडकर सोना को देखा। मानो इस समय यह लम्बा कितना अपरिचित है। बालक से बातें करना असम्मानजनक है। बल्कि वे सामन का आकाश देखत रहगे। आकाश को पार कर और भी द्रुत जाया जा सकता है या नही या यदि वे आकाश पार कर चल जा सकें तो—सामने एक विशाल दुग मिलेगा दुग के भीतर पलिन—यह सब सोच कर उन्होने हाथी के पीठ पर घुटनो के बल रेंगना चाहा और उसे न ह बालक उसमान को उठाकर अकुस छीन अपनी मर्जी के मुताबिक चला ले जाना चाहा—हाथी मुझे लेकर तुम पलिन के देश म जल्दी चलो—वह कोमल मुखडा मुझ कही नही दिखाई देता।

जसीम चिल्ला उठा मालिक आप कर क्या रहे है। उसमान पागल आदमी की ओर देख डर गया। वह उसका अकुस छीनने आ रहा है। सोना न पीछे से उनका एक पर धर दबाया ताऊजी आप गिर जायेंगे। मणीद्रनाथ आगे हिल नही सके। उन्होने करुण सा मुख बनाते हुए सोना की ओर देखा। क्योकि सोना की आखो म एसा एक जादू है जिसकी वे किसी तरह से भी उपेक्षा नही कर पाते। मदान पार करने पर उन्होन देखा पूरब वाले घर के नरेन दास सिर पर कपड की गाठ लिये बाबुरहाट जा रहा है। हाथी के गले म घटा बज रहा था इसलिए गाव के सारे लडके-लडकी दौडते आ गये हैं। और नरेन दास की विधवा बहिन न देखा उस सेंहुड पेड के पास बड-बडे शामियाने ताने गय हैं। दरी बिछा दिय गये हैं। मिया लोग मौलवी लोग आ-आकर इकट्ठे हो रहे हैं। इस गाव म हर कही दूसरे गावो के पेड-पेड पर सन-मसान म शमसुद्दीन के लोग या उसका दाहिना हाथ कहा जाने वाला फलू शेख इश्तहार टाग गय हैं। उसम कुछ शब्द लिखे हुये थे। लिखा था—पाकिस्तान जिन्दाबाद। लिखा था लडके लेंगे पाकिस्तान और

लिखा था नारा ए तकबीर। मालती को नारा ए-तकबीर शब्द का मतलब मालूम नहीं था। एक दिन उसने सोचा था, चुपके से शमसुद्दीन से इसका मतलब पूछ लेगी।

मालती ने अब अपनी ओर देखा। देह की लुनाई क्रमश बढ़ती चली जा रही है। पति की मृत्यु के बाद फिर ढाका म पिछले महीने दगा हो गया है। उसका श्वसुर आकर बना गया है ढाका मे शखकार और कुट्टी लोग काफी बदला ले रहे हैं। उस दिन से मालती बडी खुश है। अरे शामू तू पेडा पर इश्तहार लटकाकर क्या कर लेगा। शामू का सबोधित कर मालती न मन ही-मन गाली दी।

शामियाना के नीचे मुसलमान गाव के लोग जमा हो रह हैं। फिरनी क लिए बडे-बडे चूल्हे जलाए जा रह हैं। ताब की बडी-बडी डेगचियो म दूध और पानी म पिसा हुआ चावल उबाला जा रहा है। कछार से होकर हाथी की पीठ पर राजा की तरह पागल मानुस घर लौट रह हैं।

मालती न देखा हाथी की पीठ पर पागल ठाकुर घर आ रहा है। घटे की आवाज सुन जा भी जहा पर थे भागत आ गये हैं। यह घटा किसी शुभ-वात्ता की भाति इस अचल के मार लोगा के कानो म बज रहा है। वे सोच रहे यह हाथी, लछमी-सा रूप लिए शुभ सदेश लेकर उनके देश म चला आया है। इस हाथी के लिए जा गृहस्थ घर की बहुए घर स कभी अकेली निकलती नहीं वे भी घर के छोटे बच्चो के पीछे पीछे ठाकुरबाडी के लिए चल पडे।

या यह हाथी जब अगले दिन आगन क ऊपर आकर मा मा कर पुकारेगा तब सारे गृहस्थ घर की बहुआ के दिल म यह हाथी है अपना धन या यह हाथी है लछमी मायी की तरह का भाव होगा। यह हाथी आगन म आने पर जमीन म सोना उपजेगा। हाथी के सिर पर लेपने के लिए वे सेंदूर घालने बैठ गईं। हाथी के माथे पर सेंदूर देना है सब लोगा ने दूब धान सजोकर रखा। और मालती ने देखा हाथी की पीठ पर पागल मानुस ताली बजा रहा है। हाथी की पीठ पर सोना। फातिमा नीचे से कह रही है मुझे पीठ पर उठा लीजिए सोना बाबू। फातिमा हाथी के पीठ पर चढने क लिए दौड रही थी। और उस समय फातिमा का वाजी शमसुद्दीन शामियाने क नीचे बडे-बडे हरूफों म इश्तहार लिख रहा था—इसलाम खतरे म। बडे-बडे हरूफो म लिख रहा था—पाकिस्तान जिंदाबाद।

डेफल पेड के नीचे बैठी यह सब देखती हुई मालती आवेश म आकार रो पडी। चिल्लाकर उसने कहना चाहा, शामू रे तू इस देश क माथे पर दुख मत बुला।

पोखर के भिड से उठ आते समय हाथी आम की डाली, अजुन की डाली या जामुन की डाली जो भी नीचे मिली भड भड तोडता सूड से मुह म डालता रहा। और वह थल-कमल का पेड जिसके नीचे बैठकर वह पागल आदमी स्वच्छ आकाश देखना पसद करते थे—वह दरख्त भी कट कट तोडकर हाथी ने मुह मे डालकर सट्ट सा एक शब्द किया। जिस तरह कटे नारियल का गुदा खाने पर लोगो को मुह से शब्द निकलता है उसी प्रकार थल-कमल की डालिया और तना हाथी के मुह म शब्द कर रहे हैं। बार-बार अकुश चलाकर भी जसीम हाथी को काबू म नही कर सका। हाथी ने पेड को चाट चाटकर खा डाला। गुस्से और अफ्सोस स पागल ताऊ हाथ मसोसने लगे। अपने इस थल कमल के लिए अपने शौक के और नीरव आत्मीय जसे इस थल कमल बक्ष की मृत्यु के लिए बाल पडे गतचोरेतसाला।

मैदान म शामियाने तने हुए। मौला मौलवी आने लग हैं। धान कट चुके हैं इसलिए सारे खत नगे-नगे। अनाज कहने को कुछ उडद और कुछ मसूर के खत। *फेलू शेख अपने जोडीदारो के साथ बडे-बडे गढे खाद रहा है। हाजी साहब का* नौकर दूध उबाल रहा ह। तावे की बडी-बडी डेगचिया म दूध और पानी पानी म पिसा चावल मीठा तेजपत्ती अखरोट इलायची, दालचीनी जाफरान लौग। पुराने तख्तपोश पर फटे चदर बिछे हुए। और हाजीसाहब के तीन बेटे जयउजान पर धान काटने गये थ तो एक खेस ले आए थे। उस खेस को बिछाकर प्रधान मौलवी साहब के लिए आसन बनाया गया है। सारे मुसलमान किसान-खेतिहर धीरे धीरे शामियाने के नीचे जमा हो रहे थ।

शचीद्रनाथ जानता था कि ऐसी एक घटना होकर रहेगी। शमसुद्दीन वोट म इस बार भी हार गया है। लीग का नाम लेकर इस बार भी मुसलमान किसान खेतिहरा के सारे वोट वह नही ले सका है शचीद्रनाथ कांग्रेस के पक्ष से खडे होकर इस बार भी यूनियन का प्रसिडेंट बन गया। इसलिए वह जानता था कि ऐसी एक घटना होकर रहेगी। शमसुद्दीन ढाका गया था। शहबुद्दीन साहब के आने की बात है। इतने बड एक आदमी इस जवार म आएगे उसके भी जी म आया था कि एक बार शामियाने के नीचे जाकर खडा हो जाय। लेकिन सारे

मामले को ही मजहबी बना रखा है। शायद निमन्त्रित होने पर भी वह न जा पाता।

हाथी जब पोखर के भिड से उठ आ रहा था उस समय वह यह सब सोच रहा था। जसीम अब हाथी को आगन म ले आ रहा है। हाथी नजदीक आने पर उसने कहा, नमीम, खैरियत तो है ?

—जी मालिक। जसीम न हाथी स सलाम करन को कहा।

मयले दा खरियत से हैं ?

जसीम ने जरा चुककर कहा, हुजूर खरियत से हैं।

—बहुत दिनो बाद इधर आए ?

—जी आ गय। आप लोगा को देखने का जी हुआ, चला आया।

—बाबू लोग शायद इस वक्त घर पर नहीं हैं ?

—जी नही। बाबू लोग ढाका गये हैं।

साना स अब छोटे चाचा न कहा, क्या र सोना, तुझे भूख नहीं लगती ? इसको उतार द नसीम। इसकी मा तो हाथ पर गाल रखे सोच रही है बेटवा गया कहा ?

हाथी पैर मोडकर बैठ गया। सोना उतर गया। इस हाथी के कारण गाव म इस समय उत्सव सा आनद है। जसीम का बेटा उसमान भी उतर गया। सभी लोग भीड लगाय खडे हैं। जमीम न पागल मनही स कहा मालिक उतर आवें।

ये पागल मनही हैं। इस बात पर वे केवल मुस्कराये। उतरने की उन्होने कतई कोशिश नही की। इस हाथी न उनका प्रिय थल-कमल का पड खा डाला है। माना वह थल-कमल कितने दिनो से कितने युग से पलिन की स्मृति सजोय हुए था। इस पड क नीचे बठते ही व जहाज का वह अलौकिक शब्द सुन पाते थे। कप्तान मस्तूल पर चढ कर झडी फहरा रहा है। जहाज पलिन को लेकर पानी म चला गया। और हाथी वह सारा पेड सफाचट चाटचूट कर अब आखें मूदे बठा है।

शचीद्रनाथ ने भी हाथी क पीठ से उतरने का अनुरोध किया लेकिन व पागल मनही—हाथी की पीठ पर सन्यासी की तरह पद्मासन किये बठे रह। जरा सा भी नही हिले। जोर जबदस्ती करन पर वे सभी के हाथ दात से काट डालेंगे या उनकी हत्या कर डालेंगे एसी ही एक मुद्रा म वे थल-कमल के अवशेष चिह्न का देखत रहे।

जमील ने कहा हाथी की पीठ पर बैठे बड़े मालिक कुछ गुनगुना और बड़बड़ा रहे हैं। वे किसी का भी अनुरोध नहीं मान रहे हैं। जमील बार-बार कह रहा है जो चार मातबर लोग भी हाथी को ठाकुरबाड़ी आते देख पहुँच गए थे वे भी बोल रहे हैं बड़े मालिक उतर आइए। हाथी काफी गुस्सा कर आया है उसे गुस्सा ना दीजिए। बड़े मालिक ने परवाह नहीं की बल्कि हाथी के कान के नीचे पैर रखकर मारा कहना चाहा ऐं ऐं।

इशारा पाते ही हाथी उठकर खड़ा हो गया पागल भागो बड़े मालिक हाथी को लेकर निकल पड़े। जमील ने पुकारा मालिक यह आप क्या कर रहे हैं। मालिक ओ मालिक।

घर के सभी लोग विपत्ति का आभास पा पीछे दौड़ पड़े। उतनी देर में हाथी पोखर के भिंड से नीचे उतरा जा रहा है। पूरब घर की मालती ने देखा पागल ठाकुर मुड़ापाड़ा का हाथी निज मल्लार में उतरता जा रहा है। मल्लार में नरेन्द्र की जमीन पार करते ही वह महुए का पेड़ पेड़ से इश्तहार लटका रहा है पेड़-पेड़ पर इश्तहार लटका कर शमसुद्दीन एक ही वाक्य दुहरा रहा है पाकिस्तान जिंदाबाद। लड़ के लेंगे पाकिस्तान। या नारा-ए तकबीर और ऐसी ही सारी बातें लिखी हैं जो मालती को फूटी आँखों नहीं सुहातीं। मालती को चीख उठने की इच्छा हुई—अरे शामू तुझे हैजा क्यों नहीं हो जाता।

उस समय हाथी नरोदास की जमीन पार कर मैदान के ऊपर से भाग रहा है। पीछे-पीछे छोटे ठाकुर जमील जसीम का बेटा उसमान दौड़ रहे हैं। गाँव के कुछ बच्चे-बूढ़े भी। वे सभी हो हल्ला मचा रहे थे क्योंकि एक पागल आदमी एक बेजुबान हाथी को लेकर मैदान में घुड़दौड़ की बाजी जीतने की होड़ की तरह दौड़ लगा रहा है। कुछ दूर पर ही शमसुद्दीन के शामियाने में बना मंडप। मंडप के बाहर खुले आसमान के नीचे बड़ी बड़ी डेगचियाँ—फेलू फिरनी चढ़ाये है। मौलवी साहब ने अभी आजान दिया था—अब मंच पर उठकर नमाज पढ़ रहे हैं। जो लोग दूर गाँवों से मजलिस में इसलाम खतरे में है। जानकर फिरनी का स्वाद चखने आए हैं या इसलाम एक जुट हो और ये जो काफिर हैं जिनके पैरों के तले रहकर दुनिया का पतवार थामे बैठे हैं—कितने अफसोस की बात है बताओ, इस कौम ने तुमको क्या दिया है जमीन उनकी, जमींदारी उनकी—चाहे वकील हो या डाक्टर सब वे ही हैं—है क्या तुम लोगों के पास नमाज पढ़ने के

बाद इसी किस्म की कुछ बातें—जो लहू मे जोश भर देती हैं—लोगो के कान खडे कर देती हैं—मौलवी साहब, बडे मिया और परापरदी के बडे विश्वास की मजहबी तकरीर सुनते समय पीछे से फेलू शेख की चीख से एक दूसरे पर छिटक कर जा गिरे। ठाकुरबाडी का वह पागल ठाकुर एक मदमाते हाथी को लेकर इधर लपकता आ रहा है। सभी लोग हो हल्ला मचाने लगे। वे पागन मनहो हैं हाथी बेजुबान जानवर है—दिनभर की मेहनत के बाद हाथी शायद बौरा गया हो। हाथी, पगले हाथी की तरह सूड ऊचा किये चिघाडते हुए उस शामियाने म घुसकर सब कुछ बटाटार कर देने लगा।

फेलू शेख तावें की बडी डेगचिया के बगल म छिपा था। उनके भीतर दूध पानी और पिसा चावल खोल रहे हैं। उस पगले हाथी क भीतर घुसते ही सब लोगों म अफरा-तफरी मच गई—मदान म हर तरफ वे भागने लगे। सभी दौड कर अपनी जान बचाने लगे। आतक स शमसुद्दीन तख्तपोश के नीचे छिप गया। फेलू भाग रहा था भागने म बिल्कुल हाथी के सामने आ पडा। हाथी ने यकायक उसे सूड मे लपेट लिया और इस तरह पकडने के कारण उसका एक हाथ टूट गया। सभी लोग दूर से चिल्ला रहे हैं नजदीक आने की किसी को हिम्मत नही पड रही। हाय हाय कर रहे है—कही एक आदमी हाथी के परो के नीचे तो नही आ गया। मणीद्रनाथ हाथी के पीठ पर बठ हथेली पर गाल रखे यू देख रहे थे मानो सोच रहे हो कि यह हाथी कितना कुछ कर सकता है। मानो वे भाव म मग्न हो। हाथी की पीठ पर सवार मानो अच्छा सा तमाशा देखने को मिल रहा है—मानो फेल का ऐसा ही हश्र होना चाहिए था। पागल ठाकुर न इस बार फिर हाथी के कान क नीचे पर स काचा तो बडे आज्ञाकारी की तरह उसन फलू को जमीन पर एक गुडिया की तरह खडा कर दिया। साथ ही साथ उन्होंने हाथी से यह स्थान काल-पात्र त्याग कर चले जाने का कहा। और हाथी भी स्थान काल-पात्र त्याग कर मदान के ऊपर से भागने लगा।

उस समय सूय अस्त जा रहा था। उस समय नदी की चाकी पर ईशम तरबूज की लत्तिया म खर पात की निराई कर रहा था। हेमत का अत है। सूरज के पश्चिम म ढलते ही घास पर ओस गिरने लगते। जसीम चिल्ला रहा था और हाथी के पीछे दौड रहा था। बाबुओ का हाथी है—इस इलाके मे हाथी लेकर सैर करने आ कसी आफत म फस गया—उस विस्तीण मदान क भीतर स इस

पगले मनहो को हाथी की पीठ पर न उग लेना तो बहुतर होगा। इस समय ऐसा ही लग रहा है। हाथी पर जा सवार हो गय तो उतरना ही नहीं चाहा। अब क्या हो गया। हाथी लगातार गा पार कर गांव और गांव सावरर मना म चलता चला जा रहा है। हाथी की पीठ पर बठे मणीन्द्रनाथ तालो बजा रहे हैं। गांव म छोटे-बड सभी जब पीछ भागत भागत थक गय और हाथी उनकी पहुच से बाहर हो गया जब नदी की धारी पार कर हाथी अधरे म आराम हा जान लगा—तब मणीन्द्रनाथ ने चुपचाप बठ समझ लिया—अब कोई डर नहीं। हाथी को कौशल स मानो उन्होंने बता दिया बेजुबान जानवर हाथी अब तुम धीरे धीरे चलो। तुमको और मुझको अब कोई ढूढ पाएगा नहीं।

रात हो गई है। यह कौन सा मदान होगा। शायद दामाल्स्नी का मदान है। थोडा और आते ही मेघना नदी। नदी के तट पर बडा सा मठ। अधियारे म इस समय मठ दिखाई नही पड रहा है। सिर्फ त्रिशूल के गिर पर एक प्रकाश जलता दिखाई पड रहा है।

शचीन्द्रनाथ उस समय घर के भीतर। और सारे लोग बाग आए हैं। जसीम आगन म खडा रो रहा है। इतना बडा हाथी लेकर पागल ठाकुर जाने कहा लापता हो गया। वह महावत है हाथी का—बाबुओ का हाथी लक्ष्मी जसा सुलच्छन हाथी—अब क्या होगा सोच साचकर वह कोई किनारा ढूढ नही पा रहा है। आगन पर गाव के लोग सलाह मशविरा कर रह हैं कि क्या किया जाय। गाव गाव मे इस समय खबर पहुच गई है। हाथ म लालटेन लिए ईशम फिर निकल पडा है और लोगा का एक जत्था हाथो म लालटेन लिये सुनहर रेतवाली नदी की चाकी मे उतरता जा रहा है। वे जोर जोर से पुकार रहे थे। जसीम ने भी ज्यादा देर इतजार नही किया। उसमान को खबर अकले उस जत्थ से जा मिलने के लिए वह कधे पर गमछा डालकर दौडने लगा।

शमसुद्दीन लालटेन हाथ म लिए मदान म खडा है। फेल इस बार बाल-बाल बच गया है। उसको सहारा देकर घर ले जाया गया। तीन-तेरह तितर बितर सा हाल। और पागल ठाकुर ने मानो जानबूझ कर ऐसी धमाचौकडी मचाई है मानो व जानते थे शमसुद्दीन का इश्तहार लटकाकर खुदगज इसान की तरह एक ही गृहस्थी स अलग्योझा कर लेने की वासना—यह वासना कोई अच्छी

नही। पागल मानुस हैं वे। इतना भर सोच सारे उत्सव जैसे एक चित्र को नष्ट-भ्रष्ट कर वे चले गये हैं। शमसुद्दीन को जानतोड कोशिश से इस मदान म इतना बडा एक जलसा करना मुमकिन हुआ। इतने बडे जलसे मे शहर से मौला मौलवी आए थे। वे सब इस समय हाजी साहब के घर मे पहुचकर, तोबा-तोबा कैसा वाहियात वाकया हो गया कह रहे हैं। शमसुद्दीन का मन करने लगा कि अपना हाथ चबा ले। और उस लगा, यह सारा मामला ही एक साजिश है। शायद छोट ठाकुर फिर प्रेसिडेंट बनना चाहता है। फिर काग्रेस की ओर से छोटे ठाकुर खडे होंगे और कबीर साहब को बुला लाकर काग्रेस की ओर से तकरीर करायेंगे। वह सोच रहा था क्या उस दिन ऐसा एक हाथी नही मिलेगा। हाथी की पीठ पर फेलू बठा रहेगा। या फेलू से मडप म आग लगवा देने पर मानो सारे आक्रोश का बदला ले लिया जा सकेगा। लालटेन हाथ मे लेकर जब्बर के जरिए सारे बरतन भाडे, टूटी मेज व तिपाइया फटा शामियाना और बडी दरी एक साथ मदान स घर लाते समय उसने यह सब सोचा।

उस समय घर के वृद्ध व्यक्ति प्रश्न कर रहे थे—वे अतिशय वृद्ध होने के कारण ही दीपक के मद्धिम प्रकाश म थोडा खास रह थे। अब व ज्यादा घर से बाहर नहीं निकलते। ज्यादातर वक्त कमरे क भीतर तख्त पर एक बडे तकिये से टेक लगाकर लेटे रहते हैं। अति गौरवपूर्ण के इस व्यक्ति न आगन म शोरगुल सुनकर बडी बहू से पूछा क्या हुआ है बडी बहू ? आगन म यह शोरगुल क्या ?

बडी बहू ने दीपक का पलीता थोडा बढा दिया। टीन और लकडी का बना घर है। खिडकी स हमत-अत की ठडी हवा आ रही है। इस घर म बडी बहू वृद्ध श्वसुर की सेवा करते समय अक्सर खिडकी मे दूर के मदान देख पाती हैं और उस मदान म इस घर का एक पागल मानुस क्रमश चल चलकर कहीं चला जाना चाहता है। आगन का वह शोरगुल उस आदमी का इस तरह हाथी पर चढकर कहीं लापता हो जाना—यह सब बडी बहू का उन्माद किये हुए है। यह शख्स फिर बिगड गया। सवेरे भी बडी बहू न इस आदमी को खाने को दिया है। भले मानुस सा खाकर राज की तरह जान कहा चला गया था। घर का एक नन्हा बालक सोना खेत मदान गाव गाव उनका साथ देता रहा। फिर किसी एक दूर गाव स खेत मदान पार करते हुए सोना का हाथ थाम यह पागल मानुस घर लौट रहा था कि जमीम हाथी पर सवार चला आ रहा था। जमीम का बेटा रसमान

हाथी के सामने। उन लोगा न देखा उस पने मैदान म ठाकुरबाद। वा पागल ठाकुर छोटे स एक लडक का हाथ पकडे यही चला जा रहा है। इस आदमी क लिए सारे जवार के लोगों के मन म बडा विषाद है—क्योंकि ऐसा इसान विरल ही जन्म लेता कहा जाता है कि वे दरगाह के पीर की तरह एक महान पुरुष हैं। जसीम न पागल ठाकुर को हाथी पर बिठा कर कहा था चलिए मालिक घर पहुचा आऊ। सोना और पागल मानुस को घर पहुचान म यह काड हो गया। वद्ध के परा के पास बठकर बडी बहू ने बडे ही दुख स यह सब कह सुनाया। पुत्र के हाथी पर चढकर लापता हो जाने की घटना सुनकर वृद्ध ने करवट ली। वृद्ध के चेहरे पर एक असामान्य क्लेश उभर आया है। बडी बहू के सामने भेद खुल जायगा सोचते ही मुह फेर कर खिडकी स केवल अधियारे की ओर देखने लगे। अपने अतिम दिनो म उनका एक पागल बेटा सारे खेत मदानो म भटकता फिर रहा है और सारे दुख के मूल म वे ही हैं—और उनकी जिद्—यही सब सोचते हुए उनके क्लेश का अत नही रहा। उन्होंने कहा बहू खिडकी बद कर दो। मुझे बडी सर्दी लग रही है।

—एक कबल ओढ लें बाबा।

—नही। खिडकी बद कर दो।

खिडकी बद करते समय ही बडी बहू न देखा कमरख पेड के उस पार जा बडा सा मदान झाडी झुरमुट के बीच स दिखाई पड रहा है—वहा बहुत सारे लालटेन हैं। बडी बहू समझ गई ये सब लोग अधरे म पागल मानुस और हाथी को ढूढने निकल हैं।

और जसीम अधेरे म हाथी का नाम लेकर बुला रहा था—लक्खी ओ लक्खी। वह सबसे आगे-आग भागता जा रहा था। मानो अपने घर की बीवी जसी ही एक नाजनीन अधेरे मे लापता हो गयी है या वह आला इसान पागल ठाकुर—लहीम शहीम गोरा चिट्टा—बिल्कुल पीर जसे एक इमान के साथ उसका पालतू हाथी उसके मुहब्बत का लक्खी चला गया है। वह जी जान लडाकर पुकार रहा था लक्खी ओ लक्खी। तेर लिए मैंने चिउडा-लइया उठा रख छोडा है लक्खी ओ लक्खी तू एक बार अधेरे मे चिंघाड दे मदान के किस अधेरे म तू बठा है बोलकर बता दे। मैं पागल ठाकुर की तरह तुझ लेकर घर लौटू।

ईशम कह रहा था, अरे मिया, इतने उतावले क्यो हो रहे हो। हाथी बेजुबान

जानवर है, प्यार मुहब्बत वाला जानवर है। वे हाथी जसे पालतू जानवर को लेकर पलिन का ढूंढने निकले हैं।

जसीम बोला, पनिन, किस पलिन का जिक्र कर रहे हैं आप।

—अर, है मिया, है।

जसीम ने कहा, पदल चलन म बडी तकलीफ है। किस्सा सुनाओ ता ज्यादा चल सकता हू।

ईशम बोला, बडे लागा की बातें इस नाचीज के मुह सुहाएगी नही। या शायद ईशम की यह कहने की इच्छा हो—मिया इस जवार म यह बात कौन नही जानता। तुम यह क्या कहते हो। क्या तुम जानत नहीं कि मौका मिलत ही मालिक नाव लेकर या पदल ही लापता को जाते हैं। इसके बाद ईशम न एक बरसात की बात बताई। किसी बरसात म पागल ठाकुर नाव लेकर तीन दिन तक लापता रहे थे—इसका किस्सा सुनाया। सुनहरे रतवारी नदी म उस समय प्रवाह था। वे अकेले धार पर नाव छोड बठे रहे। मानो वह नाव उनका फोट विलियम दुग या गगा की बेटी क पास एक बडे जहाज म पहुचा देगा। पागल मनटी थे तभी भीतर क भीतर मन ही मन वे एक बडा-सा कलकत्ता शहर बनाय हुए थे और दिनभर माह भर मानो व उस झील के जल म पलिन का ढूढत रह थ। झील के जल म एक स्वप्न तिरता है स्वप्न म वही बडा-सा कलकत्ता शहर—गाडी घाडे हाथिया का जलूस और फोट विलियम दुग दुग के बगल म ममोरियल हाल—कजन पाक। गडर माठ म साहब लोग वर्दी पहन कवायद कर रह हैं। पागल ठाकुर हे है कर हसत हुए बात भर थ गत्वारत्माला। क्योंकि पानी म केवल उनकी परछाही दिखाई पड रही थी और कुछ नही दिखाई पडता। जान कस पलभर म वह शहर पानी के नीचे अदृश्य हो गया। पागल मनही की परछाही उस समय केवल हसी उडा रही है, हाय बहुला जल म बहा जाय र जल म बहा जाये।

सभी कुछ माना पानी म बहा जा रहा था। इतनी बडी झील चारा ओर एसा अधेरा जुगनू दमक रहे हैं। उड उड कर जुगनू पागल मानुस मणीद्रनाथ को और हाथी को घेर लिय। मणीद्रनाथ हाथी की पीठ पर सवार झील के किनारे किनार चारा ओर चक्कर लगा रह थ। झील क जल म बस अधेरा ही अधरा। हेमत है तभी ठडी बयार आ रही है। पक धान की गमक खेत खेत म। इस

अंधेरे में हाथी की पीठ पर बैठे वे पके धान की गंध पा रहे थे। और आकाश में कितने हजार सितारे पागल मानुस हर रोज की तरह हाथी की पीठ पर बैठे वही सब सितारे देखते देखते मानो उन्हीं सारे सितारों में कोई एक पलिन का मुख है—वे हाथी पर चढ़ कर या नाव पर सवार हो किसी प्रकार से भी उस प्रिय पलिन के पास या हैमलक वृक्ष के नीचे नहीं पहुंच सके। हाथी को सबोधित कर उन्होंने कहा क्या नकली तुम मुझे लेकर पलिन के पास पहुंचा नहीं सकते। वह सुंदर मुखड़ा—झरने के जल के सोते के पास क्या तुम मुझे पहुंचा नहीं सकते।

यह पागल मानुस—सहसा पूर्व की स्मृति अगर उथल-पुथल मचाने लगे तो वे स्थिर नहीं रह पाते उनको लगने लगता है कि और थोड़ा-सा जाते ही वह अपना प्रिय हैमलक वृक्ष पा जायेंगे और उस हैमलक वृक्ष के नीचे ही सोने का हिरन बंधा है। इस तरह कितने ही दिन कितने प्रकार से अकेले-अकेले एक मैदान से दूसरे मैदान एक गांव से दूसरे गांव और ऐसा कोई भी स्थान इस इलाके में नहीं जहां वह अकेले चले न जाते हों फिर कभी उनको यूं भी लगने लगता कि इस जिंदगी में फिर कभी वहां पहुंच नहीं पायेंगे। इसलिए एक तो बड़ी बहू का वह मुखड़ा और उसकी उदासी का चित्र पागल मानुस मणीद्रनाथ को उतावला कर देता। वे धीरे धीरे घर की ओर चलने लगते। तभी उनको लगता कि हाथी पर या नाव से कभी उस हैमलक वृक्ष तक पहुंचा नहीं जा सकेगा। सोने के हिरन कहीं ज्यादा तेज दौड़ते हैं।

असीम ईशम और नरेन दास का दल लालटेन लेकर रातभर ढूंढ़कर भी उस हाथी और आदमी को निकाल नहीं सका। वे सभी मुंह अंधेरे लौट आए थे। और भी दो दलों को शचीद्रनाथ ने पूरब और पश्चिम भेज दिया था। खबर मिली जिन लोगों ने उत्तर में देखा है उन्हीं लोगों ने दक्खिन में भी देखा। तरह-तरह के लोगों ने तरह-तरह की खबर दी। किसी ने कहा पीपल के नीचे कल रात को पागल मनही और हाथी को उसने देखा है। किसी ने कहा बारदी के मैदान के उत्तर में कभी वह आदमी दिखाई पड़े थे। उत्तर से खबर आई पागल मानुस मणीद्रनाथ हाथी से गन्ने के सारे खेत चराये दे रहे हैं। लेकिन कोई भी हाथी को काबू में नहीं ला पा रहा है। हफ्ते के अंत में फिर कोई खबर नहीं मिली। सभी लोगों ने तब कहा नहीं हम लोगों ने पागल मानुस और हाथी को नहीं देखा।

घर पर सभी के चेहरों पर शोक की छाया। कोई भी जोर से नहीं बोल रहा।

लालटू, पलटू सोना दिनभर घर ही पर रहते। पोखर के भिड पर अजुन पेड के नीचे खडे वे रोजाना देखा करते कि वे हाथी पर सवार लौटते हैं या नहीं। तिपहर को ताऊ मदान से होकर ऊपर उठ आएगे इसी प्रतीक्षा म वे अजुन वक्ष के नीचे बैठने रहते। वे अपने प्रिय व्यक्ति के लिय पड के नीचे बठे सारी तिपहर, जब तक साझ न घिर आती, जब तक कछार पार पर मदान के बडे पीपल पर अघेरा न उतरता तब तक प्रतीक्षा किया करते। और इसी तरह से एक दिन वह कुत्ता भूकने लगा—कुत्ता बस भूकता ही रहा—सूय तब तक अस्त नही हुआ था। तब उन लोगो ने देखा कि कुत्ता गौड-दौड कर मदान मे उतरता चला जा रहा है। फिर सोना के पास लौटा आ रहा है। उन लोगा न देखा पूरब क मदान में आकाश के नीचे एक काले बिंदु की तरह कुछ काप रहा है। क्रमश वह बिंदु बडा होता जा रहा है। हात-होते उन लोगा ने देखा एक बडा सा हाथी जा रहा है। सोना चिल्लाता हुआ घर की ओर दौड गया हाथी पर ताऊजी आ रहे हैं।

गाव के सभी लोगा ने देखा पागल मनही थका हुआ है। विपण्ण है। चेहरे पर अनाहार क चिन्ह। वे हाथी की पीठ पर मानो विला गय हैं।

हाथी घुटन मोड कर आगन म बैठ गया। मानो यह हाथी फिर कही नही जायगा। यही बठा रहेगा। असीम बोला, मालिक उतर आवें। लक्खी को और कितनी तकलीफ देंगे।

गाव के सभी ने उतरने का अनुरोध किया। लेकिन वे नही उतरे।

शचीद्रनाथ बोले, भाई लोग तुम सब घर जाओ मैं देखता हू—कहकर वह हाथी क पास जाकर धीरे धीरे बोला बडे दा बडी भाभी ने कई दिन से कुछ भी खाया नही। भाभीजी का कितनी तकलीफ देंगे आप ?

लेकिन उतरने के कोई लक्षण नही। शचीद्रनाथ बोले, सोना अपनी बडी ताई को जरा बुला ला।

बडी बहू घूघट काढ कर थल-कमल क पड के पास आकर खडी हा गई।

बडी बहू न कुछ कहा नही। सजल उतावली आखें लिये वह हाथी के सामने जा खडी हा गयी। साथ ही साथ मणीद्रनाथ हाथी से उतर कर बडी बहू के पीछे-पीछे चल दिये—वे इस समय मानो एक सरल बालक हा। उनको इस समय बडी बहू की दो बडी आखो के सिवा और कुछ भी सूझ नही रहा है। घर मे घुस कर देखा, उनकी प्रिय खिडकी खुली हुई है। वहा खडे होते ही वह अपना प्रिय

मदान देख पाते हैं। और तब उनको लगन लगता मैदान म एक बडा-सा हैमना का पेड है नीचे पलिन खडी है। नाहक व इतने दिन नही बन, मदान म उस पार पलिन को ढूढत रहे हैं।

बडी बहू पूजा के फूल चुन रही थी। जाडे का मौसम। बगीचे म जाडे के सारे फूल खिल हैं। तडके सवेरे मालती घाट पर नहाने आई थी। घाट पर जाड का कुहासा था उस समय घाट की सीढ़ियो पर धूप नही थी। किरणी आबू किनार बठे व्रतकथा का पाठ कर रहे थे—उठो उठो सूरजिया झिलमिलि दिया—उस समय मालती घाट पर उतर गई थी। घाट पर आकर बडी बहू ने देखा, मालती जाडे के ठडे पानी म डुबकी लगा लगाकर नहा रही है। माना यह जाडा नही है—मालती जल पर बह सी जाने लगी।

किसी समय मालती जल से निकल आई। भीग कपडा म ही ही काप रही है। बडी बहू को भीग कपडो म ही कुछ फूल चुन देन के बहाने वह अतसी पेड क नीचे खडी रही।

बडी बहू ने कहा, तेरा यह अलसुबह नहाना ?

मालती कुछ बोली नही। वह फूल क पौधा या झाडी झुरमुट के भीतर से झाककर कुछ ढूढ रही है। देखा ता लगे कि उसका कुछ गुम हो गया है। इस लिए मालती विषण्ण सी लग रही है। मालती धारीदार साडी पहने हुई है—महीन। साडी देख वह उस सपने क बारे म याद कर पा रही थी—वही सपना सपन म वह मधुमाला सजी हुई थी। धारीदार साडी पहने मालती मधुमाला सजी बठी थी। मदन कुमार आएगा वही मदन कुमार जिसके शौक का कोई और छोर नही था जो हाट बाजार जाते ही मालती के लिए धारीदार साडी खरीदना पसद करता था। सपने म वही आदमी कितन दिना क बाद रात म उसके पास आया था। बगल म बठा था। दगे की बात बतात समय उसका मुख बडा करुण था। फिर सब कुछ भूलभाल कर वह आदमी गप्प लडाते हुए उसको मुह और ठोढी खीच कर फिर मालती को गोद म लेकर मोटे गद्दे वाले बिस्तर

पर घ र मे गिरा दिया था। और क्या ? क्या किया था और उसने सपने म ? सपन म पति के साथ सहवास। उस सहवास के बाद वह सीधे पोखर के घाट पर नहाने चली आई है। शरीर का ताप जल म बहाकर ऊपर आते ही मालती न सुना, दक्खिन के कमरे म कोई आगे-पीछे डोलते हुए पढ रहा है—पत्ते-पत्ते पर घर रह निशा के आम। जाड़े का भोर। पोखर के दूसर सिर पर माघ मडल व्रतकथा समाप्त कर पास की दोनों बेटियाँ उछल-उछल कर चल रही थीं। वे कविता की तरह पढ रही थीं—उठो उठो सूरजिया सिकिमिकि दिया, ना उठिन पारि आमि इथलर लागिया।

साना पढ रहा था, पत्ते-पत्ते पर घर रह निशा के आम।

लालटू पढ रहा था, एट लास्ट द मलफिश जायट केम।

पलटू पढ रहा था, ए प्लस बी होल स्क्वायर

दक्खिन के कमरे म उस वक्त पढ़न की होड लगी हुई थी। व तीनों ही चिल्ला चिल्ला कर पढ रहे हैं। घर म दूर देश म लबे अरसे के बाद शायद वह नौजवान लौट आया है। शायद इस समय उच्च-स्वर स पढ कर य बालक यह जताना चाहते हैं कि य लडक कितना अधिक पढते हैं और उनको कितना कठिन पाठ पढ़ना पडता है। मालती को पिछली शाम खबर मिली है। रजित सकोच के कारण आ नहीं सकी। इस नौजवान को देखन की बडी साध है। प्राय रात भर ही इस आदमी क लिए मानो वह जागती रही है।

लालटू एक ही लाइन को घुमा फिरा कर पढ रहा है—ऐट लास्ट द मलफिश जायट केम। मलफिश जायट। मन ही मन उसने यह बात दुहराई। भय से भाग गया था जान कर की बात है। उस समय झील क पानी म मगर नहीं आया था उन दिनों मालती फ्राक पहनती थी। एक दिन वह किशोर मलफिश जायट आखमिचौनी खेलते समय मालती स लिपट गया था। चुम्मा लिया था। मालती न गुस्सा कर ज स—नहीं गुस्सा कर ज म भी नहीं कहा जा सकता बिना उससे कहे-सुने उसका चुम्मा लेकर रजित न कुछ बुरा सा काम कर डाला है। कुछ कहना तो चाहिए ही बिना कहे कुमारी का सम्मान नहीं रह जाता। उसन बडी बहू से कहा दन की धमकी दी थी रजित को।

अगले दिन सबेर मा-बाप सगा सबिलिम जायट बिना कुछ कहे ही डर क मारे गाव छोड कर भाग गया था।

ठाकुरबाडी की बडी बहू के मा-बाप मरे छोटे भाई की खोज-खबर आगे कोई ने नहीं मगा था। इसके बाद गुनहरे रेतवाली नदी म कितना ही पानी बह गया कितने शीत कितने बसत बीत गये। शीत क पानी म जिस बार मगर पकडा गया—उसी बार मालती की शादी हुई। मालती ने एक बार चुपके चुपके बडी बहू से पूछा था बडी भाभी रजित आपको चिट्ठी नही भेजता ?

—भेजता है ?

—क्या लिखता है ?

—कुछ भी नही लिखता। लिखता है कुशल स हू।

—पता नही देता।

—पता देना नही चाहिए।

—क्यो ?

—देश का काम करता है। पता नही देना चाहिए।

जाडे का सूय उठना ही नही चाहता। धूप देना नही चाहता। पड पाता की छाया मे घर-द्वार ढके रहते। बूढे लोग धूप के लिए तडप रहे थे। भोर की ओर काफी अधेरा नही था उस वक्त—चुपके से घाट की ओर आते वक्त मालती ने देखा था अमूल्य कच्चे घर के बगल मे बठा आग ताप रहा है। जाडे के दिन हैं तभी अमूल्य ने खर-पतवार सूखे पत्ते बटोर कर रख छोडा था। उसम आग सुलगा कर अमूल्य ने सर्दी से बचना चाहा था और शोभा आबू नरेन दास की बीवी उस आग के बगल म गोल होकर बठे थे।

दरवाजा खोलकर निकलते वक्त ही उसने देखा अमूल्य उसकी ओर तक रहा है। मालती सीधे आगन म नही उत्तरी। चौखट का सहारा लेकर खडी हो गई। आग के भीतर से अमूल्य का मुख भयकर सा दीख रहा है। सपने म देखा हुआ मृत व्यक्ति का मुख अब आखो मे नही तिरता। केवल अमूल्य का मुख ही तिर रहा है। साथ ही उसे लगा कि देहभर मे एक अपवित्र सा भाव। जाडे म कहा तो अमूल्य के बगल मे बठकर आग तापेगी कहा तो जाडे म जरा गरमाई ढूढेगी—लेकिन ऐसा न कर मालती भाग कर पोखर की ओर गई। पति का मृत मुख याद कर पानी मे ज्यादा देर तक डूबी रही। अमूल्य का मुख भूलन के लिए पाप—चिंता भूलने के लिए मालती जाडे के जल मे, बर्फीले ठडे जल म शायद डुबकी लगाती रही।

इसलिए थल कमल पेड के बगल मे खडे होकर मालती यह न याद कर सकी कि किस निर्दिष्ट कारण से उसने पानी म आकर छलाग मार ली थी। मालती इस समय पूजा-कक्ष मे प्रणाम कर रही है और बुदबुदा रही है। अपने को गालिया दे रही है। वह पूजा घर की देहली पर सिर पटक रही है। मानो भगवान की इच्छा है—विधवा के लिए जवानी न हो, सुख न हो, प्यार न हो। जवानी हो तो पाप होगा, प्यार हो तो पाप होगा और सुख चाहो तो पाप होगा। मालती ने मानो सिर पटक पटक कर कहना चाहा भगवान, तुम मेरी यह मनहूस जवानी छीन लो। मैं भागजली हू। प्यार भाग्य म होता तो मेरा आदमी घर ही पर रहता। रायट मे कट न गया होता। बार बार सपने की याद आ रही थी मालती को। कितने दिनो के बाद सचमुच वह आदमी उससे पानी मागने आया था। लेकिन जितनी ही बार पानी लेकर उसके हाथ म दिया है उतनी ही बार आदमी का मुख बदल गया है। मुख मानो अमूल्य का हो। करघे घर म अमूल्य जिस प्रकार हस हस कर बात करता है, जसे अनायास ही सिधुआ बना बोला करता है—मानो अमूल्य को कुछ भी मालूम नही, दीदी, ओ मालती दीदी, हमारे कमरे मे पानी भिजवा दीजिए। दीदी आपके लिए बतफल तोडलाया हू दीदी पानी के नीचे कोकावेली होती है, उसका फल होता है—आपके लिए मैंने क्या नही किया। सपने म अपन आदमी को जल देन को होकर मालती न अमूल्य को विस्तर पर बठे देखा।

घर लौट कर मालती न कपडा बदल डाला एव बिना किनारी वाली सफेद धोती पहन ली। करघे का चादर ओड लिया। घर के बगल मे अमरूद के नीचे मालती न आग जलाई। आज जानबूझ कर ही मालती अमूल्य के बगल म जाकर आग तापने नही बठी। मानो उसक बगल म आग तापने बठते ही शरीर की ग्लानि फिर जाग उठेगी। वह आबू को बुला लाई शोभा स कटहल की कुछ सूखी टहनिया लान को कहा—सर्दी के कारण हाथ पर बहुत ज्यादा सफेद दीख रहे हैं। जाडे म लाड से आबू के गाल पर ठडा हाथ रगड दिया। शोभा के गाल पर हाथ रख कर उसने हाथ गम करना चाहा। ये लडकिया इस सर्दी म भी अपने गाल गले गम बनाये हुई हैं।

जाडे की धूप तब पसर कर उतरने लगी। घर के नीचे सारे खेत। सामन के खेत म तबाकू के बडे-बडे पौधे। पीछे प्याज के खेत प्याज, लहसुन, बदगोभी

और क्या चाहते हैं य लोग ? य लोग धरम-करम करना चाहते हैं। हिंदूटोले म तब जात्रा—नाटक होगा, रावण वध का गीत होगा, रामायण का गाना होगा। लोकनाथ पाल राम बनेगा। माझीवाडी के शामियाने के नीचे ढोलक बजेगा—गाव के बूढे बुढिया कोई भी उस समय घर म नही रहेंगे। जाडा आने पर चद के घर मे कविगान होगा। बडे-बडे डे लाइट जलेंगे और उस समय लगेगा सारा गाव एक मला है। परापरदी के हाट स दुकान बढा कर श्रीशचद्र चला आएगा। जाडा आत ही किनन ही तरह के मेले लगेंगे दूर-दूर कितन लोग चले जाएग, घुड दौड होगा। बाजी जीतने क लिए विश्वासटोल म रोजाना घुडदौड का रिहसल हो रहा है।

साथ ही साथ ख्याल आया, अमूल्य भी करघा घर म रिहसल दे रहा है। लकिन यह अमूल्य पहले कितना गावदी था। यह अमूल्य सारा वक्त करघा चला कर कमर से निकलने पर आखें तक नही उठाता था। अमूल्य मालती का बदा सा था। वही अमूल्य किस तरह मे पिछली बरसात म—क अष्टमी के स्नान के लिए एक बडी नाव म, तीन मल्लाही नाव होगी, मुहल्ले की बडी बुआ, धनबहू माझीबाडी के कालापहाड की मा नरेन दास—करीब समूचे गाव के सब लद फदे एक ही नाव म लेटे-बैठे एक दिन का रास्ता नागलबद—नागलबन्द के मल म मालती सब के साथ नहाने गई थी। अष्टमी के नहान म कितने ही लोग, नदी के दाना किनारे किले ही देवी-देवताओ की मूर्तिया। मिट्टी से गढे भरव देव के बडे ब नीले रग क पेट की ओर देखकर अमूल्य ने मजाक किया था। बडी नदी, इस पा से उस पार प्राय दिखाई ही नही पडता। कितनी सारी नावें आई है। कितन ह लोग स्टीमर पर आए हैं और पाप उडेल कर पुण्य बटारने दोनो किनारा पर ति धरने का ठौर नही रह गया था। अन्य सभी के साथ मालती भी स्नान करने न म उतरी थी। अमल्य किनारे था। जेब मे ताबे के पसे। वह मालती की ओर पुरोहित की दक्षिणा, तिल-तुलसी सब कुछ का जुगाड किये दे रहा था। सारे मे मे वही हरवक्त मालती की देखभाल करता रहा। यह मालती को लेकर घूमत रहा—अमूल्य ने लक्ष्मी जी का एक चित्र खरीद दिया था। मालती के लिए पर खच करने म कामयाब होकर अमूल्य गुनगुना कर गाने लग पडा था। पसा ख करने का हकदार होत ही जाने कसे मालती अमूल्य के जिम्मे म चली गई। पि किसी समय अमूल्य ने मालती से कहा था—आइए दीदी तर कर नदी पार क

—नदी पार करने का क्या तुम्हारा जी करता है अमूल्य ।

—बडा जी करता है ।

—नदी जल म घडियाल तरता जाय, यह गीत तुम्हें याद आ रहा है अमूल्य ।

अमूल्य न कहा था जी आ रहा है ।

भीड के भीतर भी अमूल्य की ओर टकटकी लगाय देखती मालती बाल पडी थी उस घडियाल से बडा डर लगता ।

—कोई डर नही मालती दीदी । और डर न होने के कारण अमूल्य दिन भर मालती को लेकर घूम सका था । अष्टमी के नहान म मालती को और किसी ने भी इतने प्यार और दुलार से मेला नही दिखाया । शोभा आदू साथ नही थे । नरेन दास करघे के कपडो की दुकान खोले बठे थे । और तभी अमूल्य गावदी नही रहा । बदा सा व्यक्ति अमूल्य का खाऊ खाऊ प्रवत्ति काफी ज्यादा वढ गई ।

सूरज अब कछार के उस पार उठ आया । अब हाथ परा म ठिठुरन नही रही । मालती न देखा गढे के भीतर बत्तख पक पक कर रहे हैं । उसने गढे के मुह से टीन उठा लिया । बत्तखा ने पहले गला निकाल दिया । नर-बत्तख सबको ठेल ठाल कर पहले निकल आया । अमूल्य न बारदी के हाट से यह नर-बत्तख खरीद कर मालती को दिया है । पिछली बरसात म जाने कहा उसका प्रिय नर-बत्तख खो गया, रात के अधेरे म भील वाले खतो म वह और अमूल्य उस बत्तख को भाडी जगला म ढूढ कर न पा सके । अधेरी रात मे बत्तख की तलाश म नाव पर मालती और अमल्य धान खेता म चक्कर लगा रहे थे । नाव से गाव लौटते समय शामू ने इन लोगा को देखकर कहा था अमूल्य घर जाओ । मालती से कहा था अधेरी रात म खेत मदान मे अकेले नही घूमना चाहिए मालती । घर जाओ । मैं देखता हू कि बत्तख किधर गया । आखिर मे शामू बत्तख की कोई खबर नही दे सका था । बत्तख के लापता होने के बाद मालती बेहद मायूस बनी रही । अमूल्य का लाया नर बत्तख नीले काले और कत्थई रग का है । किस तरह स, कितनी मेहनत से और हाट भर मे कितने ही चक्कर लगाने के बाद ऐसा एक ताजा बत्तख वह जुगाड कर सका है । अवसर बातो-बातो म, इस बत्तख के लिए अमूल्य को कितनी तवालत उठानी पडी अमूल्य ने कितने ही सारे लोगो से मालती दीदी के लिये एक नर-बत्तख देखने के लिए कह रखा था—यह सब वक्त-बेवक्त सुनाने की कोशिश करता था । और यह बत्तख खरीद देन के बाद अमूल्य की

माग और भी बढ गई। अमूल्य, तुम अमूल्य करघे पर बुनकर का काम कर जाते हो तुम्हे विधवा के धम के बारे म क्या मालूम। मानो मालती यह कहना चाहती, विधवा का सम्मान वैधव्य म, विधवा के माग अन्न में है। अमूल्य करघे की खट-खट आवाज स तुम्हारे कान बहरे हो चुके हैं नथुना से कोई गध तुम सूघ नही सकत और तुम्हारी आखा म सपन पूलने रहत हैं—मैं विधवा मालती दिनभर घर गिरस्ती कर, घर-द्वार साफ-सुथरा रख कर तुम्हारे करघे की नली भरकर माग और अन्न से मेरा भोजन। डकार म अगर मछरीहा बू रहे तो मेरा सम्मान नही रहेगा। नर-बत्तख की तरह वन जगल, घाट-बाट या रात के अधि यारे म गदन पर दात गडा कर तुम सुख पाना चाहत हो, इसस मेरा सम्मान नही बच पाता। तुम मुझे केवल प्यार दो, केवल मास की आशा म घूमन पर एक दिन मैं भी तुम्हारे गले म दात गडा दूगी। सिफ मास स मेरा प्यार नही चलता।

जाने क्या सपना देखने के बाद से ही अमूल्य के प्रति निदयी भाव और भी बढ गया। अमूल्य और जब्बर बहुत ज्यादा मडरा रहे हैं। मालती न साचा दादा से एक दिन सब कुछ बता देगी। क्योकि जब्बर भी कोई कम नही। जब्बर याद पडत ही मालती का मुख घणा से सिकुड गया।

मालती इस समय बत्तख लेकर घाट को जा रही है। मन ही मन उसका अमूल्य करघे का ताना बाना चला रहा है—एक बार इधर तो एकबार उधर। नर-बत्तख दूसरी मादा बत्तखा का पानी म उतरने नही दे रहा है। उससे पहले ही चोच काटकर झगडा मोल लेना चाहता है। नर बत्तख की यह हरकत देखकर और दिनो की तरह मालती न मुह पर आचल दबा लिया। उसके भीतर स वह नटखट मुस्कान उभर कर चेहरे पर फैल गई। तनिक ठहर भी नही सकते। मालती बत्तखा को पानी की ओर ले जाते वक्त यह बोली। और यह सब देखत ही उसका मन करघे की ढरकी की तरह केवल इधर-उधर करने लग गया। उसके भीतर एक ऐसी इच्छा सुगबुगाती कि कोई उस समेट कर खा जावे। लेकिन फिर जाने क्यो यह भी ख्याल होने लगता विधवा प्राणी की ऐसी इच्छा कोई भली नही। तब बस नहाने की इच्छा होती रहती है डुबकी लगा-लगा कर शरीर से सारी पाप चिताओ को धो-पोछ डालने की इच्छा। मानो स्नान न करने पर जातिभ्रष्ट हो जायगी। फिर उसके मन म आता, विधवा की भला जाति कैसी,

विधवा के लिए भला छोटा बडा भी क्या—सरल युवती मालती जिसके अग-अग स लुनाई झरती हो—जिसका मुख प्याज के कोमल छिलके जैसा ही नम है और जिसकी इच्छा की कोठरी मे अमूल्य केवल एक बदर सा है—हर वक्त दुम उठाये बैठा है, इस अमूल्य को सपने म देखकर मुह बडा बेस्वाद लग रहा था।

बत्तखो के पानी म उतर जाने के बाद मालती ने एक बार चारो ओर देखा। बत्तख गोता मार मार कर नहा रहे हैं। नजदीक म कोई नही। तमाखू का खेत पार करने पर ऊची जमीन—वहा जब्बर हल चला रहा है। नरन दास जमीन के नीच स रस निकाल प्याज लहसुन या मूगफलियो को पुष्ट करने की चेष्टा म लगा है। और मानो कही पर भी कोई दृश्य भूल नही रहा है। सिर्फ ठाकुरबाडी का तोता पढ रहा है—पत्ते पत्त पर झर रहे निशा के ओस लालटू पढ रहा है—ऐट लास्ट द सेलफिश जायट केम। जब्बर हल चला रहा है। मालती को देखते ही जब्बर हल-बल छोड लपकता हुआ आएगा—मालती दीदी बधने म पानी डाल दो। गला सूख गया है। मालती ने सोचा जब्बर आएगा तो शमसुद्दीन की खबर पूछ लेगी। शामू इस समय यहा नही है। वह ढाका गया हुआ है। पागल ठाकुर न हाथी लेकर उनका जलसा तोड दिया था। फलू शख का हाथ तोड दिया है। इसक बाद स शामू न शायद हिंदुस्तान म आना बद कर दिया है। छोटे ठाकुर शचीन्द्रनाथ एक दिन कछार पर खडे शामू क साथ सारी बातें करते करते कम्म करने लगे थ। तभी शामू नही आता। शामू की बिटिया कभी-कभी कछार पर आकर अपनी गाय चरा ले जाती। इस लडकी न बडी-सी नथ पहन रखी है नाक म। ठाकुरबाडी क अर्जुन वृक्ष क नीचे वह खडी थी। किसी की प्रतीक्षा कर रही थी। मालती चुपके चुपके उसके पास जाकर बोली थी क्या री फातिमा तू।

फातिमा की आखें छोटी हैं। नाक म बडी-सी नथ। बचपन का चेहरा लुनाई स भरा। बाल चोटी म गुथ। फातिमा न कुछ देर मालती की ओर देखकर कहा था बुआ गाना बाबू का दे दीजिएगा। कहकर उसने अपने पल्लू स खटकन फल के दो गुच्छ मालती क हाथ म दिय थ।

बहुत सुन्दर फल। फातिमा मालती हैरत म।

फातिमा न खुद ही कहा आखिर ढला चाचा उजान स ले आए हैं।

मालती को जान क्या इस लडकी का अखबार म भर लेन की इच्छा हुई।

लेकिन मुसलमान की बेटी है, छूते ही जाति चली जायेगी। उसने लटकन के गुच्छे को हल्के हाथों से गोच लिया। उसने फातिमा को छुआ नहीं। सिर्फ हंसते-हंसते बोली, क्या री सोना बाबू के लिए तेरे दिल में बडा दर्द है। सयानी हो जा तो सोना बाबू से तेरी शादी कर दूंगी।

नन्ही सी लडकी। लेकिन यह हल्का-सा मजाक ही फातिमा को शर्म से भर गया। फातिमा फिर ठहरी नहीं। वह कछार से होकर भाग रही थी। शर्म से हो या किसी अन्य कारण से—वह लडकी कछार में दौडने में बल पा रही है। या इतने सारे पेड पालों जिनकी छांह गाव और खेतों में फैली हुई है उनमें कोई निरंतर सुषमा बनी हुई है। वही सुषमा, प्यार की सुषमा इस लडकी के अंग अंग में समोयी हुई है। हेमंत की सांझ थी। वह लडकी धीरे धीरे उस सुषमा में विला गई।

यही सुषमा मालती को लंबे अरसे से अभिभूत किये हुई है। सोना उस वक्त भी पढ रहा है—पत्ते-पत्ते पर झर रहे हैं निशा के ओस। बत्तख पानी में हेल डूब रहे थे। मालती किनारे खडी। पानी में उसकी लंबी छाया—मालती पानी में अपना मुख देख पा रही है। भिड पर खडे कितनी ही सारी बातें याद पड जाती हैं—शामू की बातें भी याद पडती। रंजो और बुन्नी के बारे में याद आता। —और उस आदमी के बारे में भी जिसने अपने किशोर वय में उससे लिपटकर चुम्मा ले लिया था फिर डर के मारे फरार हो गया था। वही आदमी कल रात को आया है। अब वह कोई छोकरा नहीं रहा। बात बात में झगडता नहीं। अब वह आदमी बडा और महान है। वह देश का काम करता फिर रहा है। कुछ दिनों के लिये जेल में था। सभी कुछ अब कथा-कहानी जैसा लगने लगना। मालती अब पानी में बत्तख नहीं देख पा रही थी बस उसी आदमी का शरीर और मुख जल पर तिरते हुए देख रही है। इस आदमी को देखने के लिए सारा सवेरा डुबकी लगा लगा कर ठाकुरबाडी के घाट पर नहाती रही। बडी बहू के लिये पूजा के फूल चुनती रही। यहां तक कि पूजा कक्ष के बगल में वह आदमी दिखाई पड जायेगा सोच कर वह थोडी देर तक चुपचाप खडी रही थी। लेकिन कहां? फिर वही अमूल्य का मुख, अमूल्य और जब्बर दोनों मिलकर मानो उसको लीलने आए हैं। कोई देख न ले इस डर से वह उस आदमी के लिए पूजा कक्ष के दरवाजे पर ज्यादा देर ठहर नहीं सकी। यहां तक कि बडी बहू से भी नहीं पूछ सकी भाभी

क्या वक्त रात को रंजित आया है ? क्योंकि मालती मे नयना म प्यार की सुषमा है। रंजित को देखने क लिए पोखर के किनारे जो जगल म था वहीं अपने को अदृश्य करने की इच्छा से बढ़ने ही कोई पीछे स मानो बोल पड़ा, मालती यहा अकेली तुम ?

मालती का दिल धड़क उठा। पीछे की ओर पलटते ही देखा रंजित खड़ा है। सोना उसका हाथ थामे। सारी लुका छिपी यही ताड न ले। शुरु म मालती जमीन से निगाह उठा ही नहीं सकी पत्ते पत्ते पर झर रहे निशा क आस—अब कोई पढ नहीं रहा है। सभी कुछ ने सहसा चुप्पी साध ली है। यहा तक कि कीड मकौडो की आवाज भी सुनाई नहीं पड़ती। मालती न डरते हुए कहा, पानी म बत्तख छोड़ने चली आई। यह कह मुह उठाकर उसने रंजित को देखा। लगा, अब कहीं कुछ भी चुप नहीं। सभी कुछ मुखर है बत्तख मुरगे गाय बल, चिडिया चुनमुन सभी कलरव कर रहे हैं। ऐन उसी वक्त मालती ने करघे पर से अमूल्य का ठक ठक शब्द सुना।

रंजित को देखकर मालती का लबे अरसे के बाद सब भय दूर हो गया है। जबर और अमूल्य—कोई भी उसे अब लील नहीं सकता।

कहीं पर मानो उस वक्त भी एक ही स्वर म कोई पढता चला जा रहा है— ऐट लास्ट द सेलफिश जायट केम। कान पसार कर सुनती हुई मालती रंजित की ओर देख मुस्काई। रंजित स भी बिना मुस्काये रहा न गया।

मालती के दिन अच्छे ही बीत रहे थे। रंजित के आने के बाद से ही मालती को लगा कि जीवन से उसका कुछ खो सा गया था जाने क्या कुछ नहीं रहा ससार म क्या न रहने पर सब-कुछ सूना सूना सा लगता है—ऐसी ही कोई चीज रंजित के लौट आने के साथ साथ मालती के जीवन म लौट आई है।

जाडे म दिन जल्दी ही ढल जाता है। जाडे के कारण ही पानी म बास सडने की बू वसी तीखी नहीं लगती। और जाडे के कारण ही गाव क सब लोग जरा जल्दी जल्दी ही पानी लेन कुए पर आ जाते हैं।

कुआ लबा-सा है। गले तक खड़े हो जाओ तो दिखाई पड़ता। कुए की जगत पार करने के बाद बसवारी। ईशम सख्त बास ढूढ रहा है। रजित एक वार मे बास को अलग किये दे रहा है और ईशम वह बास खीचकर बाहर निकाल ले रहा और टहनियो को छाटे दे रहा है। जो औरतें पानी लेने आई थी वे ज्यादा देर तक जगत पर ठहरी नही। बड़ी वहू का वह फरार भाई लौट आया है। पतली मूछें लबी आखें और कदाचित परदेस रहने के कारण शरीर पर सावली एक लुनाई। कछाना मारकर धोती पहने हुए, घुघराले बाल बीच स माग काढी हुई —लबा-सा आदमी रजित अब पहचाना ही नही जाता, मा-बाप मरा वह बालक अब इतना सयाना होकर महाशय बन गया है।

जो औरतें पानी लेन आई थी वे सभी कुए में बालटी डाल पानी निकालते समय रजित को देख लिए। इम सुदशन युवक को सभी ने एक ही नजर म पहचान लिया था, कितने दिन पहले की बात है मानो किसी किसी ने बुलाकर उससे बातें की जिनके साथ कोई रिश्ता बना हुआ था वह जिनको दीदी कहकर पुकारा करता था पडोसिन महिलायें जिन्होंने कभी उसे नेह-प्यार दिया था मातृहीन बालक के नाते उस बुलाकर घर का अच्छा पकवान खिलाया करती थी वे पानी निकाल कर नीचे उतर आइ और उसस कुछ बाते कर घर चली गई।

मालती सबसे बाद म आई। हथकरघे की साड़ी पहने कमर पर घडा थामे। यह साड़ी पहनन स लगता नही कि मालती विधवा है। लगता है कुमारी मालती शौकिया पानी लेने आई है। लगता है मालती इस व्यक्ति क सामने मफेद बिना किनारी वाली धाती पहनते शरमाती है। वह आते ही कुए की जगत पर घडा रख वहा जाकर खडी हा गई जहा रजित बास काट रहा था।—इतन बास क्यो। इतने सार बास से क्या होगा।

रजित न कहा, पानी म भिगा रखूगा। लाठी बनेगी—पोख्ता बास की लाठी।

सोना आस पास दौड भाग रहा है। वह इस नये व्यक्ति को कतई छोड नहीं रहा है। इस व्यक्ति न उसे देश विदेश के कितने किस्से सुना डाले हैं। अद्भुत मजिक की बातें भी बताई हैं।

सोना ने कहा बुआ, रजित मामा रात का मजिक दिखाते हैं।

मालती जरा और आगे बढ गई। जहा ईशम बसवारी से बास खीचकर

निहार रहा है वहो जाकर वह खड़ी हो गई और बोली तेरे मामा का जिक्र और मत कर।

रजित न मालती की ओर नहीं देखा। वह दांत की टहनिया को काट-काटकर साफ कर रहा है। बिना देख ही मुसकरा दिया। क्योंकि मालती की बाई की भ" भरी बात सुनते ही वह दृश्य याद आ जाता। उस दिन मालती गुस्सा क्षोभ या शायद उत्तेजना से कांपने लगी थी। चेहरा सुर्ख आखें लाल मानो रजित न मालती का सारा सतीत्व ही छीन लिया हो। मालती बग रा देने वाली ही था। रजित को ये बातें याद पड़ जाती और ख्याल होता—क्या मालती क्या यह दृश्य तुम्हें याद नहीं। मालती तुमने दीदी से कुछ बताया तो नहीं।

रजित ने अब मालती की ओर सहज भाव से देखा। खाना मामा की बात का जिक्र क्या न किया जाय।

रजित न यू देखा मानो उसकी इच्छा हो कि मालती को भी वह दृश्य याद आ जाय। लिहाजा मालती ने देर नहीं लगाई। वह पानी भर कर चली गई। चल जाने पर ही सब कुछ खत्म नहीं हो जाता। जाते समय बडी बहू से बातें की। बडी बहू और धनबहू धनकुट्टी पर ठाकुर जी के भोग के लिए धान कूट रही थी। कूटे हुए धान को धनकुट्टी के सिरे पर उठकर शशीबाला झाड रही थी। पागल ठाकुर—आज कहीं निकल नहीं। वे आगन म अपने मन ही मन टहल रहे हैं। आगन में आकर भी मालती धान पर पडती चोंग की आवाज सुनती रही। इस बास से क्या होगा? बास से लाठी बनेगी। उसी की तयारियां जारी पर हैं। उस व्यक्ति का शरीर हाथ पर कुछ जाने क्या हर वक्त दिल में हिलते डुलते रहते हैं। ऐसे ही आदमी को देखने के लिये कोई बहाने से इस घर में आ जाना। काम भी क्या है मालती के पास, नरेन दास इस समय घर प नहीं है। अमूल्य सिर पर धारीदार साडियां ढोकर नरेन दास के साथ बाबुरहाट गया है। अब घरपर केवल शोभा आबू और मालती। आभारानी भी है लेकिन वह इतनी निरीह है कि लगता ही नहीं कि घर पर कोई है। आभारानी को रजित भाभी कहता है। रात को जब जाड के कारण सब लोग जल्दी जल्दी लेट जाते हैं तब बठक में शचीन्द्रनाथ लालटू-पलटू को पढाने बठ जाते हैं। उस समय रजित अपने कमरे में बठे मामूली लालटेन की रोशनी में जाने कौन कौन सी बडी बडी किताबें पढता रहता है। कितना पढता है यह आदमी। यह आदमी अब बोलता कम है ज्यादा बातें करते

पर मालती की ओर ताक कर जरा मुस्का देता मानो मूरख की बातें सुनकर हस रहा है। तब रूठ कर मालती का चेहरा तमतमा उठता। उस समय वह आदमी अपराधी की तरह आखें कर देखना रहता है। ताक्त ही कुछ दश्य मारे डर के वह आदमी फरार हो गया था।

मालती ने एक दिन कहा था मद मानुस का इत्ता डर कोई अच्छी बात नही।

—मुझे भला किस बात का डर है?

—डर नही। मुह से कह दने म ही क्या सब कुछ कहा जा सकता है।

—मुझे हालाकि लगा था कि तुम दीदी स सचमुच बता दोगी।

—और कुछ नही लगा था क्या?

—और क्या लगना था?

—क्या मालती के नाम पर कितनी ही बातें तो मन म आ सकती हैं।

—लेकिन मेर मन म और कोइ बात ही नही आई मालती। इसके बाद मैं बहुत दूर चला गया था। आसाम चला गया था। वहा स दो साल के बाद लौटा। कलकत्ते मे लाहिडी जी के साथ भेंट हो गई। उन्हान ही मुझे प्राय खीच कर उठाया। कहते-कहते रजित थम जाता। सपना देखना सीख गया। यह सब अब बहुत ही तुच्छ सा लगता है। शायद कुछ ज्यादा बोल डाला। उसके गुप्त जीवन का भेद कहा खुलता नही गया। सहसा रुक कर वह आग कुछ भी बताना नही चाहता। अपनी बात भूलकर कहता बताओ, तुम कसी हो। तुम्हारी सारी खबरें ही मुझे मिलती रहती थी। तुम यहा चली आई हो—यह भी। लकिन इसक बाद?

—इसके बाद भला क्या? माना कहन की इच्छा हो इसके बाद तो जो कुछ है सो तो तुम देख ही रह हो। यही सब लकर हू।

—शामू क्यो नही दिखाई पडता?

—शामू ढाका गया है। लीग-लीग करके दश का बटाधार कर रहा है।

—तो शामू पार्टीबाजी करता है?

—पार्टी नही तो खाक। मालती बडी खूखार सी लग रही थी। मालती बोली लाठी तो ढेर सारी बना रहे हो। लेकिन लाठी से कितने सिर फोड सकोगे?

—लाठी तो मालती सिर फोडने के लिये नही सिर का बचाव करने के लिए

है। मैंने सोचा है यही मुख्य अखाड़ा बनाऊंगा। इसके बाद और भी तीन चार छोटे अखाड़े खोलूंगा। एक बामनदी में एक सम्मानदी में और तीसरा यारदी में। फिर वहां से जो लोग सीख कर निकलेंगे वे फिर तीन-तीन नए अखाड़े खोलेंगे। गांव गांव में अखाड़ा खोल खोल कर हम में से हर एक को लाठी चलाना, छुरी चलाना सब कुछ सीख लेना होगा। अपने सिर की रक्षा खुद कर सकने के लिए ही यह सब कर रहा हूं। दूसरे का सिर तोड़ने के लिये नहीं।

मालती को कुछ लाज सी लगी। फिर बोली तुम मुझे दो चार दांव-पेंच सिखला दो। मुझे लाठी सिखाने पर कहां तुम्हारी इज्जत तो कहीं चली जायगी ?

—इज्जत क्यों जायगी ?

—मैं औरत जो हूं। अबला प्राणी।

—अबला प्राणियों को ही ज्यादा सीखना चाहिए। शुरु होने दो सब कुछ सहेज-सहेज लूं। खेल तो जमने दो।

—लाठी का खेल सिखायगा कौन ?

—मैं।

—तुमने यह सब कब सीख लिया ?

—इसी बीच मौका पाकर सीख लिया था।

—कितना कुछ तुम जानते हो ! कितना कुछ तुम कर सकते हो।

—मैं कुछ भी नहीं कर सका मालती। कितना कुछ करना है हम लोगों को। सब कुछ जानो तो दंग रह जाओगी।

—हमको अपने दल में लो न।

—दल कहां मिल गया तुमको ?

—यह जो तुम लाठी चलाने का दल बना रहे हो।

दल शब्द से ही रंजित कुछ त्रस्त हो उठा। दल कहना उचित नहीं। क्योंकि यहां वह कुछ दिनों के लिए रुपोश रहने आया है। उसने कहा नहीं मैं कोई दल नहीं बना रहा हूं मालती। दल क्या मुझे बनाना है ?

—क्या ? भाभी जी ने तो कहा कि तुम देश का काम करते फिरते हो।

—तो फिर दीदी ने तुमको सब कुछ बता दिया है। कहकर रंजित कुछ देर के लिए चुप्पी साध रहा। सुबह की धूप उनकी पीठ पर पड़ रही थी। वे दीनबंधु के बड़े घर के पीछे खड़े बतिया रहे थे। नान्टू पलटू साना सभी उसे घर हैं। व

मालती बुआ को देख रहे हैं। मामा मालती बुआ के मुह की ओर देखकर बोल रहे हैं मालती बुआ जमीन की ओर नजर किये बोल रही है।

मालती कुछ कहना की थी। उसने देखा इन छोटे छोटे लडको के सामने वह कहना ठीक न होगा। कुछ और बिना कहे मालती चली गई।

रजित बडे ही पोशीदे ढग से काम कर रहा था। घर के भीतर वाले आगन म चादनी म या लालटेन की धीमी रोशनी म वह लाठी का खेल सिखान की कोशिश कर रहा है। ताकि कोई जान न सके। सिफ बडी बहू धनबहू और पागल ठाकुर गवाह होते। सोना लालटू पलटू के सो जाने पर आगन म लाठी का खेल शुरू होता था। लेकिन एक दिन रात का सोना ने टटोला तो देखा बगल म मा नही। मा कहा ? वह नीद से जाग उठा। दरवाजा खुला है। आगन म लाठी की ठक ठक आवाज सुनाई दे रही है। चादनी रात। मद्धिम रोशनी म भी वह समझ सका कि मा एक कोने म खडी है। वह उतर कर दरवाजे म निकल मा के पास चला गया। गाव के आठ-दस नौजवान रजित मामा से लाठी का खेल सीख रहे हैं। दूसरी ओर जाने कौन लोग है—शायद मालती बुआ शायद किरणी दीदा और ननी, शोभा आबू। वे लकडी के छुरे लेकर खेल रहे थे दाव पेंच सीख रहे थे। मा और बडी ताई बगल मे खडी खेल देख रही थी और शायद पहरा दे रही थी। इधर कोई आ रहा या नही इस पर निगरानी रखे हुए थी। लाठी का ठक-ठक् शब्द हो रहा था। सिर वहरा ऐसे ही कुछ शब्द। छोटे मामा बडे मजे म मस्त जमे नाचते चले जा रहे हैं। बीच-बीच म छोटे मामा लाठी घुमाते हुए इतनी तेजी से इधर लपक रहे हैं कि पता ही नहीं चलता कि उनके हाथो म लाठी है। बस सन सन की आवाज। वे घूम घूम कर कभी दाहिना पर उठाकर तो कभी लगा माना इस व्यक्ति का लाठी के भीतर ही जिन्दा रहने का भेद ढूढे मिल गया है इस व्यक्ति ने लाठी को अपना दाहिना हाथ बाया हाथ कर डाला है—जसी मर्जी लाठी चला रहा है। सोना ने देखा बीच बीच म लाठी के भीतर सोना मामा का मुख खो जा रहा है।

सोना भी भीतर-ही भीतर काफी उत्तजित अनुभव कर रहा था। हल्की-सी साफ जुन्हाई। कमरख दरख्त के उस ओर विस्तृत मदान जुन्हाई मे तनहा पडा है। पागल ताऊ ओसारे बठे हाथ मसल रहे हैं और बीच-बीच म बौरा कर वही एक शब्द का उच्चारण कर रहे हैं। ससार म कोई न कोई आफत लगी ही हुई

है। कोई भी किसी पर एतबार नहीं कर पा रहा है। छोटे मामा बीच-बीच में मालती बुआ की ओर नजर रखे थे। मालती बुआ लकड़ी का छूरा चलाने में कहाँ गलती कर रही है उसका सुधार कर रहे हैं। आगरे के आँगन में बड़ा-बड़ा लाठियाँ खड़ी हैं तल लगे होने के कारण ये लाठियाँ इस हल्की चाँदनी में भी चमचमा रही हैं। लाठी चलाते-चलाते कोई थक जाता तो लाठी आगार के सहारे खड़ी कर आँगन में हाथ पर पसार कर बैठ जाता। छोटे मामा वहाँ कटी बनियाइन पहने सभी पर निगाह रखे हैं। अब सोना कादिया पेड़ के पास खड़ा न रह सका। वह भागकर माँ के पास जाकर खड़ा हो गया।

धनजह वाली सोना तुम ?

—मुझे डर लगता है।

कमरे के अँधेरे में अकेले लेटे रहने का सोना को डर लग रहा था। उसने फिर कहा माँ यह क्या हो रहा है ?

—लाठी का खेल ?

—रजित ने देखा सोना नींद से उठकर चला आया है। उसने सोना को निकट खींचकर कहा तू सीखेगा यह खेल ?

—सीखूँगा। सोना ने बड़े आग्रह से कहा।

—लेकिन बड़ी साधना करनी पड़ती है।

सोना साधना शब्द का अर्थ नहीं जानता। उसने माँ से पूछा माँ साधना का क्या मायने है ?

रजित बोला धनदौली क्या बतायेगी। मेरे पास आ। साधना का मायने है जो काम तुम करोगे उसे एकाग्रचित्त होकर करोगे। कोई भी तुम्हारी इस इच्छा के बारे में नहीं जान सकेगा।

—मैं नहीं कहूँगा।

—हाँ कहना नहीं चाहिए। अगर न कहो तो तुमको सिखा सकता हूँ।

—देख लीजिएगा मैं नहीं कहूँगा।

रजित जानता था कि इन बातों का कोई तात्पर्य नहीं होता। इन सब बालकों को भी रजित ने अपने दल में ले लिया। बता भी सकते हैं और नहीं भी, फिर भी उनको एकाग्रचित्त करने के लिए बीच बीच में रजित तरह तरह का भाषण देता था। इसलिए सोना पलटू लालटू इस दल में जुट गये। खेल से अधिक

छोट माटे मामा का हुक्म बजाने म ज्यादा उमग दिखाते थे। रात बीतन पर किसी दिन सोना सा जाता था। उस खेल की बात याद नहो रह जाती थी। सबेरा होने पर वह मामा स कहता मैं तुमसे बोलगा नही।

—क्या, क्या बात हो गई ?

—क न तुम मुझे खेल म नही बुलाये।

—तुम तो सो गये थे।

सोना बीच-बीच म मामा की तरह या बडी ताई की तरह बोलने की कोशिश करता था। मामा कम सुक्तुर व्यक्ति जसा स्पष्ट और शात स्वर म बातें करता है। मालती का भी जी करता था, रजित जसा बोलने को। बडी बहू और रजित की बातें इतनी मिठास भरी है कि मन के भीतर बस रनझुन बजती रहती हैं। उसका बाता म काई भी रूखापन नहीं। मालती को लगता था कि उसकी बातें रूखी हैं इसलिए वह रजित स भरसक कम बोला करती है। रजित भी आजकल काम की बातो के अलावा फालतू बातें करना ही नही चाहता। वह उसे घर पहुचा आते समय बताता था, तुमम एकाग्रता की बडी कमी है मालती। तुम अनमना-सी लगती हो। खेल के समय अनमना रहने पर सिर या मुह पर कभी चाट आ लगगी।

उस समय मालती कोई जवाब नही देती। भला क्या जवाब द। यह खेल मानो नित्यप्रति उसका सग पाने के निमित्त। मानो यह मानुस जब उसका आ गया है ता उसे अब कौन सा डर रहा। इसलिए वह रजित की सारी बातें सुन लिया करता थी। किसी किसी दिन मालती का स्वाभाविक बनान क लिए वह इस इलाक की आचलिक बोली इस्तमाल करता था। उस समय मालती का तन बदन और भी सुलग उठता था। यह आचलिक बोली जसी रूखी है वसी ही फूहड। एसी भाषा म यदि रजित बोलन लग जाए ता उसस कुछ भी मागन जाचन का नही रह जाता। मालती ऊब कर कहती, अब और नखरा मत करो रजित। चाहू तो मैं भी तुम्हारी तरह बोल सकती हू। जा तुम भली भाति बाल नहीं सकते वह मत बाला करो। बडा बेढगा सा लगता है। मैं तुम्हारे साथ बचपन स बडी हुई हू।

उसकी बात सुनकर रजित कुछ हैरान-सा हुआ। मालती, अब तुम देहातिन लगती ही नही हो बिलकुल।

मालती बोली, फिर भी अपनी-अपनी बोली-बानी। तुम्हार मुह हमारी बानी क्या सुहाएगी। तुम भी जो बोनी अच्छी तरह बोल नही पात वह बानने की कोशिश मत करो। बडा बुरा लगता है सुनने म।

सोना बाला मैं सो गया था तो तुमन मुझे बुलाया क्या नही ?

—ठीक है। आज रात को तुमको मैं जगा लूगा। लेकिन एक शत पर।

—शत। शत शब्द हा सोना न कभी सुना नही था। उसने कहा छोटे मामा, शर्त क्या ?

—तुमने सोना सिफ मदान देखा है।

—देखा है मदान।

—फूल देखा है ?

—जी, फूल देखा है। सोना न मामा का शली म बात करने की कोशिश की।

—और सुनहरे रेत वाली नदी की चाकी देखी है ?

—चाकी देखी है। तरबूज खेत भी।

—लेकिन शत नही देखी ?

—शत एक बडा दत्य है। यह दत्य कधे पर सवार हो जाय तो इसान हैवान हो जाता है। और हैवान इसान बन जाता है।

—तुम्हारा देव क्या कहता है छोटे मामा ?

—मेरा देव हैवान को इसान बनने को कहना है ?

—यह देव मुझ मगा दो न।

—बडे होओ। बडे हो जाओ तो ला दूगा। यह कहकर रजित सोना को कधे पर चढाकर घुमाने लगा। बडे आगन म लाठी और छूरे का करतब सिखाया जाता। चारो तरफ टीन और लकडी के घर बने हुए। पाल के घर के आगन से यहा का कुछ भी दिखाई नही पडता। रात होते ही आगन लोगो से भर जाता।

बाड के उस ओर से किसी की आखें रजित को अपलक देख रही हैं। रजित का पुटठेदार गठीला शरीर देखकर वे आखें कुछ ताज्जुब करने लगी हैं। रजित का बदन नगा। रजित सोना को कधे पर लिए टहल रहा है। कभी सोना के

दाना हाथ पकड़कर उसका घुमा रहा है। सोना को बड़ा मजा आ रहा है। उसके सिर म चक्कर आ रहा है। कुछ देर घुमाने के बाद ही उसने साना को जमीन पर उतार दिया। सोना के पर डगमगा रहे हैं दोनो हाथ बढ़ाकर फिर फिर कर रहा है। शचींद्रनाथ न आगन पार करते समय देखा कि रजित साना को लेकर खेल रहा है। शचींद्रनाथ कुछ बोले नही। सबेरा पढने का समय है। लेकिन सोना की परीक्षा हा चुकी है। इम्तहान म सोना अच्छा नतीजा लाया है। सोना की स्मरण शक्ति अच्छी है। सबेरे सबेरे आगन म मामा भानजे को लेकर इस प्रकार मस्त है देखकर मन ही मन वह खुश हुआ। जाडो मे उनके ननिहाल जाने की बात है। धनबह इन लागा का इम्तहान खत्म होते ही नहर जाती है। जाडो मे खेतो पर काफी कोहरा छा जाता है। उडद के बिरवो म ऊडद की छीमिया। खेत खेत म सरसा क फूल मानो हल्दी घुले रग से पुते।

जाडा म ही खाने का मजा है, किस्म किस्म के खाद्य। उन दिना पुआ-खीर घर घर म। बडे बडे गहस्था के घरा म वास्तु पूजा। भेडा का बलिदान। तिल-पट्टी और तिल की खगई। तरह-तरह के सामान खाने के। बाजार जाओ तो बडी-बडी पाबदा मछलिया मिलेंगी—सुनहरे रग की और कितनी बडी-बडी। कालबोस, बडा झीगा और दूध। जाडा आते ही इस इलाके की गायें अपना सारा सचित दूध उडेल देती हैं। उस समय तगी और फटेहाली भी देहाता पर हावी नही रहती। उन दिनो घर घर म आनद उत्सव। गरीब लोगा को भी इन दिनो गहस्था के घरो म काम मिल जाता। सामान वस्तु के दाम भी घट जाते। और तभी लालटू पलटू गाव के दूसरे लडको के साथ खेतो म खेलते हैं। सूना खेत, धान काट डाले गये हैं इसलिए नम मिट्टी पर सूखे पुआल पर पडते ही खड-खड की आवाज। तब जितना भाग-दौड करना चाहो—करो। भाग भागकर जमीन पर गिर भी जाओ—लेकिन बदन पर जरा-सा खरोच भी नही आएगा।

बाड के बगल स जाते समय शचींद्रनाथ ने देखा मालती खडी है। काफिला पेड क नीचे खडी कुछ कर रही है। शचींद्रनाथ न कहा अरी, तू यहा?

—गोद लूगी। कहकर वह काफिला के तने से गाद निकालन का अभिनय करने लगी। दरअस्ल मालती इस पेड के नीचे खडी बाड के उस पार के एक आदमी का निहार रही थी। कोई आते ही पेड से गोद चुन रही है ऐसा ही भाव चेहरे पर बनाये। ऐसा करती हुई वह मन भर के रजित को देख ले रही

थी। सुबह उठकर मालती ने किसी तरह काम से लग आँगन में झाड़ू लगाना पाट पर बरतन धो जाना फिर बगल का कोठा झाड़ देना—इन सब कामों में बाद उसने देखा कि उसके लिए अब कुछ करने को बाकी नहीं रहा। अभागी ने रजाई में लिपटे का धान लिया गया है। पुरके में वह ठाकुरबाड़ी चली आई। बाद में पास मालती चाही इस तरह इंतजार करती रही है। शुरू में उस शोरन का साहस नहीं हुआ। कोई बहाना ना चाहिए। बाद में साथ कालिन्दी का पेड़। पेड़ में जरा-जरा धूप चू रहा था। तब पता नहीं वह गरदी हो गई। कोई देख रहा जा रहा कि मालती पेड़ से धूप चू रहा है। उसकी बाद की आहट सोता। बेपरवाही से वह शोरकर रजित को देखने लगी। इस प्रकार कोई अनमान कर घटना घटित हो सकता है मगर भी पता नहीं सकता है वह सब वह भूल गई। तरोताजा घर पर रहा है अमूल्य बाबुरहाट गाड़ी करा भरा गया है बस्ता अब सब दिन के लिए बंद है। इसलिए ये दिन मालती के छुट्टी के हैं। वह इस दिन सबकी घूमती मुहल्ल-टोल में चक्कर लगाती इमली के अचार का स्वाद लेती मजे में गुजार दे सकती। इसके बाद ही पुरी पूजा का मेला लगेगा। वह इस बार रजित को लेकर पुरी पूजा के मेले में जाएगी। इसके बाद उस मेले के शोर में सरकस के हाथी सिंह बाघ मैदान में घुड़दौड़ और मन्दिर के एक द्वार पर डोम लोगों का सूअरबलि देखकर जलेबी रसगुल्ला मुंह में डालकर सारे मैदान भर में भागते फिरते —क्या खूब खुशियाँ ऐसा एक सुख मन में घर करने लगता है—शायद इसी सुख के लिए वह रजित नाम का व्यक्ति अब उसके जीवन का सब-कुछ है। वह बेसुध सी खड़ी रही।

तिपहर को जब दिन बिलकुल ढलने लगा जब बैठक के आँगन में रोशनी मद्धिम पड़ गई सोना लालटू पलटू जब एक एक कर सारी लाठियाँ उठाकर पूरब वाले घर में सजाकर रख रहे थे—तभी आवाज मिली। पोखर के भिड़ से गुहारते हुए कोई चला आ रहा है।

बैठक के आँगन में आकर उसने गुहारा सुना कि रजित आया है ?

शामू को देखकर शचीन्द्रनाथ जरा हैरान हुए। कुछ दिनों पहले ही खेत जमीन के सिलसिले में शचीन्द्रनाथ ने शामू से गाली गलौच की थी। तक तकरार हुआ हुआ था। वही शामू इस घर में आया है देखकर शायद वह सकुचे बिना नहीं रह सके। स्वाभाविक बनने के लिए उसने दूसरी ही बात छेड़ दी। बोला सुना, तेरी

मा अब विस्तर से उठ ही नही पाती।

—जी नही उठ पाती मालिक।

—नारिणी वद्य के पास एक बार जा तो।

—जाकर क्या होगा मालिक। शायद यह जाडा भी न पार कर सकू।

—फिर भी एक बार जाकर देख तो। अगर वे एक बार आकर तेरी मा को देख जायें। मेरा खत ले जाना।

शामू बाला, लाइए खत। भेजता हू। देखें क्या होता है।

—देखें क्या होता है नही। तुम भेजोग। फूफी को बेइलाज मारोग एसा मैं नही होन दूगा।

शामू के चेहरे पर तनिक प्रसन्नता की मुस्कान खिली। उसकी कतरी हुई मूछे और बहुत ही थोडी-सी नूर—काफी गौर करने से पता चलता कि ठोडी के नीचे उस नूर को जतन से पाला-पोसा है। किसी समय शामू के मुख पर बडी-बडी दाढी देखकर शचीद्रनाथ ने कहा था—तुझे देखने पर शामू फूफा की याद आ जाती है। शचीद्रनाथ न शामू को उसके वालिद की याद दिलाकर मानो उसे महान बनाय दे रहे थे। इसके बाद कितने ही दिन बीत गये हैं जान-बूझकर मालती को बडी दाढी दिखाकर माना उसने बदला चुकाना चाहा था। इसके बाद कभी उसे एमा भी लगा है कि बदला कभी किसी के लिए प्रतीक्षा नही करता वक्त आने पर सभी कुछ पानी सा लगने लगता, हास्यकर-सा लगता। अपने बचकानपन की बात सोचकर शर्म से मुह ढाप लेने का मन करता। लिहाजा अब शामू मानो कुछ शरीफ-सा बन गया है। खासतौर से शामू अब मानो शिक्षित व मार्जित रुचि का है। उसकी तहमद चारखाने वाली। थानी रग है तहमद का। और बदन पर महीन बनियान व पूरी बाह वाली कमीज। वह अब शचीद्रनाथ की ओर बिना देखे ही बोला सुना रजित लौट आया है?

—हा आया है। इतने दिन कलकत्ते म था अब फिर आया है।

शामू ने फिर शचीद्रनाथ के लिए इतजार नही किया। पुकारा कहा ठाकुर गये कहा। एक बार इधर तो निकल आओ। जरा सूरत तो देखें। तुम मुझे पहचान भी पाते हो या नही देखें जरा।

रजित बठक के आगन म आकर कुछ देर तक ताकता रहा।—तू शामू है न?

—तो फिर भूल नही।

—भूल ग गया।

—क्या जाने भाई, तुम कहां चले गये। कोई खत किताबत नहीं। बड़ी भौजाई से मुलाकात हो जाने पर पूछता रहा, रंजित का कोई खत मिला है या नहीं। बिलकुल लापता हो गया। कोई खत न चिट्ठी।

रंजित बोला, भीतर आकर बैठो।

—संझावेला घर में बैठे रहोगे? चलो न गंगा की ओर चला जाय।

यह कोई बुरी बात नहीं। गंगा या और कहने से—वहां सुनहरे रेत वाली नदी की चाकी। वहां नहीं—अनंत काल से बहती नदी। जाता-जाता में रंजित ने शामू से बहुत सारी बातें बताईं, कितने ही दिनों की कितनी ही बातें। किसी मौके मालती की बातें भी।

जुन्हाई निकल आई है—आसमान साफ है। वे मेड़ के ऊपर चल रहे थे। ये जो गेहूं के खेत पार करने के बाद ही नदी की चाकी। साफ-सा विस्तार लिए यह चाकी खेत और नदी के बीच लेटी हुई है। तरबूज की लतियां बहुत छोटी हैं और हवा चलने के कारण धुंध भरी चांदनी में खरगोश के एक झुंड की नाईं लग रही हैं। वे मानो निरंतर रेत भरी चाकी पर दौड़ रहे हैं। नदी का पानी उतर गया है। जल भी क्या—बस वैसा ही है कि गाय पार कर जाय लड़कियां भी। वे घुटने तक कपड़ा उठाकर नदी के जल में उतर गये। झिलौर सा जल नीचे कंकड़ मौरंग सिर के ऊपर आकाश। सफेद जुन्हाई नदी पार करो तो गांव कुछ घना जंगल और धुर पूरब की ओर चल जाओ तो बांस का एक पुल मिल जाएगा। एक दिन मालती को लेकर शामू और रंजित उसी पुल पर चला गया था। नदी का जल हल कर खेतों को तय कर चुकर फल खट्टा मिट्ठा फल लाने के चले गये थे। फिर लौटते वक्त बड़ा मैदान पार करते वक्त रास्ते से भटककर खेतों-गांवों में घूमते फिरते शाम को घर लौटने पर नरेन दास ने घुड़की लगाई थी। उन लोगों के पीछे नरेनदास लाठी लेकर दौड़ पड़ा था। वे दोनों घर में आते तो कोई-न कोई काम देकर मालती को वह करघे घर में भेज देता था।

तब शामू ने कहा था, ठाकुर कोई तरकीब बताओ।

रंजित ने कहा था, नरेनदास मछली बहुत पसंद करता है।

—कौन सी मछली?

—इचा मछली।

भागा या क्वार का महीना था शायद। अभी उनको ठीक-ठीक याद नहीं आ रहा है। बरसात का पानी उतरने लगा था। पानी के नीचे जलज घास मडने लगी थी। पानी मे दुगध। पानी की मछलिया बडी झील नदी या समदर म भागने के लिए केवल कूले म से हाकर उतर जाएगी। ठीक-ठीक ठौर पर पानी के नीचे खाची लगा रखा ता मछलियों स खाची भर जाएगी। चीगा मछली। बडे-बडे गन्ग झीगा। लेकिन काफी कष्ट उठाना पडता। खासतौर से साप जोंक और जलज कीडे-मकोडा का भय। किसी बात की परवाह न कर लहसन कोय वाला तेल बदन पर मलकर मछली शिकार करन की गरज स वे तरने लग। मडे जल म तरकर उडे बरगद के नीचे कूले म खाची लगाये बरगद की डाली पर बठे रात-भर पहरा दे अगल दिन करीब दो टाकरी गलदा चीगा नन्दनदास के आगन म ला गिरात ही अनचक हो नरेनदास बोल पडा था अरे तुम लागा ने यह कर क्या डाला है। फिर दोना न नरेनदास की वे चकित आखें दख ली थी वह नरेनदास घर गिरस्ती वाला नरेनदास, लालची नरेनदास, लाभ से लुपलुपा उठा था और अपनी छोटी सी बटी मालती का फिर कभी राक नहीं रखा। मालती अपन हम उम्र दोस्ता के साथ इस इलाके म हर कहीं फिरती रही।

इस मालती के लिए वे तरह-तरह के दुस्साहसिक काम करते फिरते थे। वही मालती अब कितनी बडी हो गई है। रजित चल रहा था और सोच रहा था। सोचत-सोचते किसी समय बाल ही पडा मालती बडी सुदर हो गई है, कितन दिना के बाद भेंट हुई। मालती अब कितनी लबी हो गयी है।

शामू न मुह उठाकर अब दखा। बोला उसे लेकर मुझे बडा डर लगा रहता है। एक दिन रात को दखा अमूल्य को लेकर अधरे म बत्तख ढूढन खेता मे निकल पडी है।

रजित शायद कुछ भी सुन नहीं रहा था। मालती को पहले दिन देखकर ही वह चौंक पडा था।उसके मुह स मानो फिसलही पडा था—कितनी सुदर हो तुम। लेकिन बाल नहीं सका था। कहीं उसके मन म एक अहकार है—आत्मत्याग का अहकार। फिर भी मन के भीतर अच्छा लगने का आवेश किलाल कर रहा था। शामू के साथ मुलाकात होते ही उसे लगा यही आदमी केवल यही वह आदमी है जिसस अच्छा लगन की बात बतान स काई हज नही हागा। पानी के किनारे चलत समय वह मालती के बार म बता रहा था। मालती निर्मल जल जसी ही

पवित्र बनी हुई है—ऐसा ही कुछ पटा की इच्छा। जल म जुन्हाई झिलमिला रही है। जल के शब्द स नन्ही नन्ही मछलिया भागती हुई परा के पास आ रही हैं। खडे हो जाने पर वे नन्ही मछलिया परा म फुदक्ता मार रही थी। दोना ही अवसर चुप्पी साध ल रहे थ फिर बात छिड जान पर तरह तरह का बातें। बातो बातो म रजित ने कहा सुना कि तू लोग का नेता बन गया है।

शामू ने इस बात का कोई जवाब नही दिया। क्योकि इस बात म शायद रजित की कुछ उपेक्षा छिपी है। वह मानो इस वक्त बिलकुल शचीद्रनाथ की तरह बोल रहा है। शचीद्रनाथ या अन्य हिंदू मातवर लोग उसकी पार्टी के बारे म जसी उपक्षा या अनादर करते हैं बिलकुल उसी तरह रजित ने उसकी पार्टी के बारे मे अनादर दर्शाना चाहा। इसलिए शामू दूसरी बात पर आने के लिए बोल पडा, चल ऊपर उठ चलें। चाकी पर बठ हवा खाए।

रजित चाकी पर चढ आया फिर आमने सामने खडे होकर उसने कहा क्यो रे सवाल का जवाब नही मिला।

—वह बात छोड दो ठाकुर।

—क्या छोड दें। और भी कुछ कहने जा रहा था। सहसा ही शामू बोल पडा वह मेरे धम की बात है। कहकर ही रजित का हाथ पकडकर उस बिठा लिया। छू दिया। तुझ नहाना तो नही पडेगा। ऐसी बात पर रजित हा हा कर हस पडा। लेकिन हसते हसत ही रजित कुछ विपण्ण सा हो गया। फिर परेशान आखो से एक दूसरे का मुह देखते रहे कुछ देर तक। सभी कुछ जाने कस गडबडाता चला जा रहा है। शामू ने अब धीरे धीरे कहा कितने दिन हो ठाकुर ? कहकर दूर म नदी का जल दखने लगा।

—काइ ठीक नही। जितने दिन हो सके रहूगा। माना कहने की इच्छा हो रपोश हू। अगर तू पकडवा न दे तो इस बार शायद बहुत दिन तक रह जाऊ।

शामू ने अब उसकी ओर पलट कर देखा। अब वह बालूचर नही देख रहा है। नदी नही देख रहा है और इतने रहस्यमय गाव खेत फसल किसी पर भी उसकी दृष्टि नही। वह बस रजित का मुख ही देख रहा है। वह रजित के मुख पर वही छाया देख रहा है—शायद इस मनुष्य क मुख पर आत्मत्याग का अहकार है दूसरे लोगा के धम-कम म बिलकुल कोई आस्था नही। वह रजित क मुह क पास मुह ले जाकर बाला अपनी बिटिया को लाकर तुम्हे दिखाऊगा ठाकुर।

बिटिया बिलकुल छुटपन की मालती जैसी हो गई है। बखार भर में दौड़ती फिरती है। बिटिया को देखकर मुझे, तुम्हारी याद आ जाती है। तुम ठाकुर मुझ पर अविश्वास मत करो, मेरी उपेक्षा मत करो, कहकर शामू विषण्ण ढंग में मुस्कुराया।

—मालती ने कहा तू ढाका में रहता है, वहीं पार्टी बाजी करता है।

—मालती बेहद तौहीन करती है मेरी ठाकुर। मालती अब मुझसे दिल खोलकर बातें नहीं करती।

—शायद तुम पर एतबार न रहा।

—मुझे मालूम नहीं ठाकुर। एतबार नाएतबारी की बात मैं नहीं जानता।

बिलकुल उसी वक्त चांदनी के भीतर लग रहा था एक आदमी, पागल आदमी पैदल नदी पार कर रहा है। उस पार गांव के भीतर लालटेन जल रही थी पानी में उसी लालटेन की रोशनी थिरक रही है। पागल मानुस मणीद्रनाथ नदी पार कर रहे थे इसलिए पानी में हिलकोरे उठ रहे हैं। रोशनी की रेखायें छितर बितर हो गई।

ओसारे पर बैठे फेलू भुनभुना रहा था। बायें हाथ में अब कतई ताकत नहीं रही। हाथ की ओर ताकते ही एक भयंकर आक्रोश उसे पकड़कर लग जाता— तुम ठाकुर पागल ठाकुर हो तुम्हारे पागलपन की मैं ऐसी की तैसी कर दूंगा।

बायां हाथ है उसका। कलाई में कोई ताकत नहीं। कलाई के चमड़े पर काला जला मुरझाया-सा रंग। दोनों ओर के गोश्त सूजे हुए। मानो कलाई के दोनों ओर के मांस को घेरकर एक भारी सी गांठ बनती जा रही है। काला धागा बंधा हुआ। काले धागे में मंत्र पढ़ी एक कौड़ी झूल रही है। कौड़ी में छेद कर धागा निकल आया है और उस धागे को हाथ में बांधे फेलू बस भुनभुनाता जा रहा था। आंगन में कुछ जीव उड़ रहे थे, मचान पर मन बैठ रहे थे और बीवी गई है पश्चिम टोले में शीशी भर तेल उधार मांगने। फेलू मछली पर पहरा दे रहा है।

आगन पर जाडे की धूप काफिना पेन की डालिया के बीच से नीचे उतर रही है। इतनी मामूली सी धूप म ही फेनू मचान पर मछलिया फनाये बठा है। सामने गडहे गुच्चे तलया उसके बाद जमीन। जमीन पर कोई फसल नही उगती। छोटा सा जमीन का टुकडा है फेलू का। घर के उत्तर मे है यह जमीन। बसवारी की छाह ने इस जमीन को ऊमर बना रखा है।

उमके गले म काला धागा बधा है। गले म चौकोर चादी की चकती। हर वक्त शक्ल सूरत पहलवान जसी बनाये रखने का शौक है फेल का। अब फेलू की जवानी नही रही पर अब भी उसकी मजबूत गदन गला और हाथ देखने पर दग रह जाना पडता ह। इस शख्स का चहरा परती जमीन जसा है। इसे दावानल से माना सब कुछ जल भुनकर खाक हो गया है। एक आख से ताकता तो दिल लरज उठना है। आख म पुनली है और पुतली के भीतर हर वक्त एक खुखार मा भाव। मुखी कबूतर का आसमान म उडत देखत ही उसे पकडने का शौक दानो डन नाच लन का शौक। और कही टाग ताट द सक तो गाजी गीत क साजिदा की तरह वह भी चाद सा मुखडा तेरा आदि गा मकता है।

फेलू कबड्डी का आला खिलाडा था। उस वक्त उसक दोना हाथो पर विरोधी पक्ष वाला का वश आक्राश था। उन हाथा को जस भी हा सके तो मडोर दा। फेनू जब पजा मारता था सभी उमम शेर जसा डरत थ।

मचान म मन हा रहा ह। गापालदी क बाबुआ का दन सन रहा है—दस रुपया पशगी और भी दस मिलगा अगर फेलू का शेर सा पजा कोई मरोड द। लकिन हाय कौन किसका पजा मरोडगा। फेनू झपट रहा है। एक बार इस सिरे ता अगला बार दूमर सिर। तजी म थपकना उम पसद है। आग पर पहुचन ही वह एक छलाग मारना माना छलाग मार कर वह आसमान छू लना चाहना है। यही उमका कायदा है। मजबून हाथ पर और मामपेशिया पर मूरज का राशनी झिलमिलान लगती। बाना चुस्त पट काला बनियान और चादी की चकत्ती गल म। फेनू जमा तगातर था वमा ही उमका मुख और तरार बदसूरत था। उम वक्त बस यही लगना था कि जय मा या अल्ला-अल्ला या हा मा इश्वरी कहकर वह टूट पडेगा। दाना पराम कचा मार दा—फेनू मरीगा फिर भी पहाड की नरह मुह क बल गाडिया पर गिर पडेगा। तब फेनू की कमर पर जमकर बठन

क वान उल्टे ढग स एमे ऐंठ दा कि शेरपजा बिल्ली का पजा बन जाय। बाबुओ क बयाने पर पानी फिर जाता और फेनू फेलू ही रह जाता। खेल के अत म पता भी नही चलता कि फेलू का शरीर कहाँ घायल भी हुआ है।

वही फेलू बठे-बठे इस समय हाथ देख रहा है। कौवा भगा रहा है और टूटे हाथ की ओर देखकर बडे ठाकुर को गालिया दे रहा है—पागलपन दिखान का कोई ओर ठौर नहीं मिला तुम्हारी पीरी की मैं ऐसी की तसी कर दूगा। इसके बाद उसन एक हुस्स किया। एक कौवा फिर आकर छप्पर पर बठ गया है। यह कौवा तब से परेशान किये जा रहा है। कौवा एक नहीं बहुत सारे हैं। वे ताड चुके हैं कि वह बीमार नाचार आदमी है। वह धीर धीर लुज-लूला बनता जा रहा है गाठ-गाठ म दद। हाथी की मूड उसकी सारी ताकत लकर चली गई है। लेकिन फेलू की धधकती दो आखें खासतौर स कीडा म कुरदी हुइ आख अब बहुत ज्यादा भयकर दीख रही थी। कौवे न शायद वह आख नही देखी। उस आख को दिखाने के लिए वह घूमकर बठ गया। कौवा उडकर आगन म बठ गया। आख उसन देखी नहा। अब वह उसकी ओर लपटा—मुझ तूने पागल ठाकुर पा रखा है। कहकर ही दाहिना हाथ उठाते ही उसने देखा कि हाथ पूरा पूरा अभी तक ठीक नहीं हुआ। बाया हाथ पगु बना जा रहा है। दाहिना हाथ दुरुस्त नहीं हो रहा है। बीबी गई है एक शीशी तल उधार लाने और वह घर की मेहरिया की तरह मछली पर पहरा द रहा है।

बीबी पर उसका गुस्सा बढ़ना ना रुका था। एक मेंटी म लुज हाथ लिये कब तक कौवा मना खदडा जा सकता है। कौवा मना मछली की लालच म बाज भी आ जा सकत हैं। बाज की बात ध्यान म आते ही गौर सरकार की याद आ गई। हाजी साहब की सटी की नाव। वक्त-बवक्त मदद का वह पछी जब कुरेल्न लग जाता तो हाजी साहब मसला बीबी का सटी स काचते हैं—और प्रताप चद की नाभि म तल लगान की आदत याद पडते ही फेनू न सोचा—वे बाज नहीं वे लाल नदी के अबाबील हैं। बडी मछलियो क सिवा वे कुछ खाते नहा।

सारी जर जमीन उन्हीं की है। वक्त बवक्त मजूरी खटाता पसा। फेनू म गौर सरकार बेहद डरता है। वह फेलू की कद-काठी देखकर नहा डरता था—ऐसी कद-काठी वाले कितने ही खेत मजूरों को उसने पाल रखा है घर म। डर था—फनू के बार म सुनते हैं रात बिरात वह नदी निकल जाया करता था।

अन्नू पर इस समय त्रिल कुछ पसीजने लगा। अब उसने लुगी उठाकर पहन ली। अन्न बेगम—बड़ा मनोरम नाम है। लेकिन अन्नू की देह में इतनी ताव—मानो मरकारी के घर का फुर्तीला घोड़ा हो—मदान लंबा मिल जाय तो बस दौड़ना ही चाहे। बड़े मदान में फेलू से अब घोड़े पर सवारी कर दौड़ना होता नहीं। कमर ऐंठने लग जाती है। बराबरी की दौड़ में निरम बेहद सुन मा लगने लगता है। अन्नू बोल कर कहती वाह र मर मद। पीठ स फेंक देती जमीन पर गिर फेलू मुह बाये पड़ा रहता। तभी सदेह का कुररी पछी फेलू को कुरद कुरद कर खाने लगता। वह बड़ी तकलीफ में मानो नदी की चाकी के उस पार से पुकार रहा है, अन्नू अन्नू री, पागल ठाकुर ने मुझे लुज पुज कर दिया है।

छोटा सा गाव। चंद मुसलमान परिवार। हाजी साहब के घर म चार चार द्वारी नय टीन क घर बन हैं। कुछ मवेशी हैं दो मेले वाले बड़े-बड़े बल हैं। फिर शामू का कुछ जमीन—नयाटोला म उसके कुछ खेत हैं। इसकी फसर स शामू का सारा साल निबट जाता है। पटसन के दो बीघे अच्छे खेत हो तो फिर क्या कहना। शामू के नाते रिश्तेदार खुशहाल गृहस्थ हैं। इसलिए तंगी के दिनो म धान नावा लहया सभी चला आता। बाकी जितने हैं सभी अल्लाह के बंदे हैं। मेहनत मशक्कत पर ही गुजारा करते है। आबिद अली के पास जमीन नहीं। मजूर अधिया पर हलवाही करता है। ईशम तो साला—कहकर शामू ने एक फोहश गाली दी। ईशम की बीवी पंगु है। शामू का अदरी बाड़ पार करते ही हाजी साहब का अखार इसके बाद बेंत की झाड़ी और शरीफे का एक बड़ा सा दरख्त दरख्त के नीचे टूटा छप्पर—जाने किस जमाने से उसकी बीवी वहा पड़ी कराह रही है। जाने क्या मज़ है। बीवी से वह कभी भी मुहब्बत नहीं कर सका। उसका अकेला सरल तरबूज का एक खेत है। इसी खेत म वह आदमी बठा रहता। इन दिनों जाड़ा है ये दिन पार हो जायें तो गर्मी का मौसम आएगा। उस समय ईशम सौदागर सा बन जायेगा। ठाकुरवाड़ी का बंदा ईशम तरबूज बचेगा और सारा रुपया छोटे ठाकुर के हाथा म धर देगा। उसका गव यही होगा कि इस जमीन स कितने रुपये छोटे ठाकुर के हाथ म दे सका।

गाव के बाद गाव या पसरे हुए खेत व मदान। मुसलमान गाव मानो हाहाकार समान हैं। किसी किसी गाव म हाजी साहब जसे धनी हैं उनका सुख और ही

किस्म है। वे उनके बेटे उजान म जाते हैं कोई कोई पटसन का कारोबार करते हैं। मसजिद म इदारा बनवाकर वे फिरनी चखते हैं। यह सब देखकर बेवकूफ फेलू की बडी तमन्ना है कि एकबार बडी सी नाव बना ले। यह नाव लकर पटसन का व्योपार करने का अरमान है उसका। पटसन का दलाल या फुटकर अढतिया बनने म बडा मौज है। यही करके हाजी साहब हज तक कर आये।

और हिंदू गावा की आर देखो—पूरब वाला घर नरेन दास का—उसके पास जमीन है करघ के कपड का धधा है। दीनबधु के पास दो करघे और दो बीविया हैं। बड मज म है यह आदमी। और ठाकुरबाडी के लोग सुना जाता है इस जवार के विद्वान बुद्धिमान लोग है। बडे ठाकुर पागल हैं। मझले ठाकुर सझले ठाकुर दस कोस दूर मुडापाडा के जमीदार के सरिश्तेखान के नायब गुमाश्ते हैं। जमीदार के बड विश्वासपात्र। खुशहाल घर है उनका। उसके बाद पाल का घर—खेत हैं मिल म काम करत हैं। इसके बाद माझी लोग—उनके पास बडे बडे बल हैं। चाहे तो हर मले मे बाजी जीत लावें। कभी-कभार एकाधबार नया टोले के मियाजान बाजी जीत लेते—वह भी मानो माझी लोगा की फराकदिली ही है। बार बार कप मेडल ले लो तो लोग क्या कहेगे। वे मेले वाले बल मदान मे नही ले गय तभी मियाजान जीत गये।

अत म हैं कविराज का घर। प्रताप माझी धनी व्यक्ति है विश्वासटोले के मदान म फाउसा क मदान मे और सुलतान सादी के मदान के सार उम्दा खेत इन्ही के कब्जे म है। फिर गौर सरकार को देखो—जो अपनी साली के साथ इश्क करता है घर छान जाओ तो नाश्ता नही करने देता जो सद खाकर और लालसा स बन्ता चला जा रहा है—दूसरे क सुख दुख क बारे म कम सूझ-बूझ—सिफ रुपया और रुपया रुपया पान पर वह अपना कलजा तक बेच दे सकता है। सोचते सोचते फतू ने दात सख्त कर डाल।—तुम सारे महाशया को जिवह करने पर ही मुझ राहत मिलेगी। वह चिल्ला उठा, ठाकुर, तुम पागल हो। तुम्हारा पागलपन—आग वह कुछ कह न सका उसकी अयमनस्कता देखकर कौवे फिर आगन म उतर आये हैं। वह हुस्स हुस्स करने लगा। लकिन यह फटेहाली यह तकलीफ—लकिन यह बीवी अभी तक लौट नही रही क्या कर रही है इतनी देर तक। हाजी साहब का छाटा बेटा क्या अनू क पट म घुटना रख देना चाहता

है। वह चिल्ला उठा सालेकौव मुझसे नही डरत। साली बीवी मुझमे नही डरती। वह अपनी बीवी का खून करेगा सोचकर पागल की तरह हस पडा। अपने दोनो हाथो की ओर ताक्ते हुए उसन कहा, हाय अल्लाह क्या मेरा यह मनहूस हाय ठीक न होगा? अपने दायें हाथ को दाहिने हाथ से उठाकर उसने अपनी आखो के सामने रखा। देखा क्लाई का चमडा सिकुड गया है। क्लाई मुजी हुई, और क्लाइ पर याझी कौडी काले धागे से बधी लटक रही है। लगता है यह फेलू ईशम की बीवी की तरह पगु बनता जा रहा है। वह आगन से ही पागल की तरह चिल्लाने लगा, अन्नू री अन्न।

उस समय आबिद अली की बीवी जलाली घर के नीचे से जा रही है। बसवारी के नीचे दुबली-पतली जलाली को जाते देखकर लगता है कि वह झील म उतरने जा रही है। यह गरीब गुरबा का भसीड तोडने का समय है। क्वार कातिक म सामन के सब खेतो से और अगहन पूस म गरग खेतो से धान की बालिया सीपी की धार से कट से काट ली जा सकती ह और चुपके से आचल म छिपा ली जा सकती हैं। इस समय खेतो म कुछ नही। सूने खेत। जौ गेहू फले नही। अब बस झील म उतर जाओ भसीड कोकाबेली के लिए। जलाली भसीड उचारने झील की ओर जा रही है। उसने जलाली का देखकर पूछा, भाभी, अन्नू को तो नही दखा?

जलाली ने गमछा काख म दबा रखा है। उसके सिर पर एक पतीली। पतीली के लिए उसका मुख दिखाई नही पडता। सिर पर पतीली होने की वजह से ही शायद फलू की बात उसक कान म नही पडी। पडी भी होगी तो अस्पष्ट। इसलिय जलाली न सिर से पतीली उतार कर पूछ लिया क्या कहत हो मिया। क्या मुझसे कुछ कह रहे हो?

—भला क्या बताऊ। कहकर फेलू जसा शरम तक गाय जसी गावदी मुस्कान लिए देखता रहा।

—कुछ कहना चाहत हो?

— अन्नू गइ है शीशी भर तल लाने के लिए। अभी तक लौटी नही।

जलाली ने कहा आ जाएगी। कहकर जलाली ठहरी नही। वह फिर सिर पर पतीली रख खेता म उतर गई। सामने बडा सा मदान। बायी तरफ सुनहरे रत वाली नदी नदी की चाकी। चाकी पार कर सीधे उत्तर की दिशा म चलो तो

रह गया। [illegible] गायकों का साथ। [illegible] में एक बार [illegible] कावियों [illegible]
[illegible] गया था—[illegible] वहीं [illegible] [illegible] भर में
गायब रही है। एक बार [illegible] में [illegible] था एक अजगर [illegible]
भी [illegible] ऊपर आ गया था। फिर इस [illegible] तरह [illegible] के [illegible]
में किस तरह नमाज मस्जिदों के लिए और [illegible] का [illegible] मधुकर का [illegible]
[illegible] की तरह इस अपने [illegible] शामू है। इस गाँव में जमातें नमाज पढ़ने
जा रही हैं। फिर जमाती हो गए उनके देख इन्तजार आए। वे नमाज उधार
लायेंगे। वे मुँह अंधेरे निकल जायेंगे और मस्जिद का मौन आयेगा। दुआ सलाम जा
की गुजर नमाज उधार [illegible] रहे हैं। पन्नू [illegible] आँगन में खड़े-खड़े यह सब
देख रहा था।

आखिर आती हुई दिखा गाँव पर मौन आयेगा। बरसात शरद हमारे में यह
गहरी गाँव का मस्ताह है और जाड़ा गर्मी और बसन्त में यह हिंदू मुसलमान में
मजूरी गढ़ेगा। एसा ता यह गाँव है—गाँव भर में बस शामू ही मातबर आदमी
सा चल फिर रहा है। जितना ही शामू मातबर बनता जा रहा है जितना ही
हिंदू नौजवान शामू से बाइज्जत बातें कर रहे हैं उतना ही पन्नू शामू की ओर
आकृष्ट होता जा रहा है। यह मानो धीरे धीरे शामू का गुलाम बनता जा
रहा है।

मानो समाज में एक आदमी घुलमिल गया है अकेला एक आदमी जो इन
शरीफ हिंदू परिवार के लोगों से किसी भी बात में उन्नीस नहीं। शाम के वक्त
से लौटते ही पन्नू का उसके पीछे घूमना बढ़ जाता है। अपने टूटे हाथ के बारे में
शिकायत करते वक्त वह क्षोभ और अफसोस से टूट सा जाता। भीतर ही भीतर
इन हिंदू सुखी परिवारों के विरुद्ध उसका आक्रोश जब उसको सालने लगता है
तब उसे लगता शामू शायद मौला मौलवियों की तरह राहत की कुछ बातें सुना
सकता है। शामू की लीग पार्टी जिंदाबाद—अपने लिए हम एक मुल्क चाहिए।
इस देश में अच्छी तरह गुजर बसर करने के लिए हमें एक जगह चाहिए। फिर
जिस बात के सुनने पर पन्नू की आखों में नींद उतर आती है—कभी यह मुल्क
गरीब और मजलूमों का हो जायगा। फेनू ने गरीब और मजलूम समझने में अपनी
समूची जाति को भी समझ रखा था। इसके लिए जाने कितने किस्म का जहाद—
धर्म युद्ध की जरूरत है। इसके लिए कैसे कैसे इन्तजाम की जरूरत है—बहुत

कहते शामू जोश में आ जाता था। हमारे लिए यह मुल्क, यह मुल्क, यह जमीन फसल सब कुछ हम लोगों का हो जायेगा। हम लोगों की खुशहाली के लिए होगा। इस मुल्क में जब हम ही बहुमत में रह रहे हैं तो यह मुल्क हमारा है।

शामू जब कितावी जुबान में विलंबित लय में भाषण दे रहा होता तब फेलू को लगता कि सब कुछ छोड़ छाड़ इसी एक आदमी के पीछे रहकर अपनी कौम की खिदमत की जा सके तो वह काम मौला मौलवियों के काम से कम दीनदारी का काम न होगा। लेकिन यह हाथ टूटकर क्या से क्या हो गया। मछलियों की लालच में कौवे सिर के ऊपर मंडरा रहे हैं। उसने हुस्स किया। बोल पड़ा कौवा सरवा मोर नाम है फेलू शेख। अपने सिर के ऊपर वह सोंटी घुमाने लगा।

और तभी बछिया रंभा उठी। अंजर-पंजर उभर आये बछिया के मुह से ठंड के मारे लार टपक रहा है। बछिया को ठंड लगी है जाडे से बछिया भभर कर फूल आया है। घाम में ले जाओ तो यह सूजन घट जायगी। इसके अलावा अब एक काम का बहाना भी मिल गया। इतनी देर गये भी अब अन्नू वापस नहीं लौटी बछिया भूख से रंभा रही है—उसको मैदान में ले जाना पड़ेगा। वहा खूंटे से बाध देंगे तो कुछ घासपात खा सकेगी। घासपात खाने से बछिया मजबूत पड़ जायेगी।

अन्नू आ नहीं रही है। किया क्या जाय? उसने दाहिने हाथ से झटपट मछलियां उठा डालीं। घर के भीतर मछलियां रखकर टटटर बंद कर दिया। वह बछिया लेकर कछार में उतर गया। खूंटा गाड़ने के बाद देखा कतारा में लाग नील के भभीड उखाड़ रहे हैं। सारी की सारी मुसलमान बीबिया और बच्चे हैं। वे इस इलाके के मुसलमान गावों में जा रहे हैं। और यह रही सामने पसरी हुई गरम जमीन। हाईजादी के सरकार लोग पोखर के किनारे वास्तु-पूजा कर रहे हैं। भेड़ों की बलि चढ़ाई जा रही है। ढोलक बज रहे हैं ढाक बज रहे हैं।

वास्तु पूजा के लिए ठाकुरबाड़ी के छोटे ठाकुर निकल पड़े हैं। वह हिंदू गावों में जाकर सारे हिंदू गृहस्थ घरों की वास्तु-पूजा में तिल-तुलसी चढ़ाएगा। वास्तु पूजा का ढाक बज रहा है—पूजा-पर्व में घूमता फिरेगा मंत्र पढ़ेगा। इसमें आज नहीं जायेगा। वह कल जायगा। जाकर चावल केले और दूसरे सामान बाध बूध कर ले आयगा।

सरकार की वास्तु पूजा में कितनी ही लड़कियां और औरतें नयी नयी साडियां

पहनकर आई हैं। माथे म सिंदूर की बिन्दी हाथ म मान के गहने रेशमी साडिया और उनके बस मिठासभरे चेहरे है—किनने खूबसूरत मुखडे। मानो बिल्कुल हेमत म सुनहरे रतवाली नन्ही की चाबी हो। पूजा हो रही है—त्योहार है। कुटुब की तरह ठाकुरबाडी की बडा यह धनबड़ पाथर के किनार बना आया। जमीन पर छोटा सा बसे का दरख्त गाडा हुआ नीचे छोटा सा घट घट के ऊपर नारियल और चारो ओर नवद्य सजा हुआ—मानो भाज्य वस्तु की कोई कमी नही। तिलवा पट्टी—जाड के मारे खाद्य इनके कब्जे म हैं।

और यह कमी जलन है जलन मिटती ही नही जल म जल मे उतरने के लिए जलाली खेता के उस ओर ओझल होती जा रही है। और यह भी अजीब मुसीबत है—कितनी देर स खडा यह बछिया घास से मुह नहीं लगा रहा है। जाडे की घास—ओस से भीगी हुई घास। जितनी देर तक धूप अच्छी तरह नहा निकलेगी, जब तक ओस घास स अच्छी तरह सूख नही जायगी तब तक यह बछिया निपट खडा ही रहगा घास म मह नही डालेगा। बछिया घास नही खा रहा है देखकर गुस्स और अफसोस स उसन बछिया क पट पर दन स एक लात जमा दी। बछिया दोना घुटन मोड मुह के बल गिरते गिरत बच गया। क्योकि लगातार उसका या नग रहा था कि अगर इसन झटपट घास न चर नी तो इस दरम्यान हाजी साहब का खुदाई साड या गौर सरकार का बल आकर यह ताजा घास सफाचट कर जाएगा। इस मदान म उतरत ही मानो उसन इस घास का आविष्कार कर डाला है। अगर यह बछिया झटपट घास चर जाय तो कोई आकर हिस्सा नही बटा पायेगा। लकिन बलिहारी जाऊ इस पतुरिया माली अन्नू की—अपने हिस्स म यह बछिया ल आई है। ऐसा एक मरियल बछिया जिसको न सुख नसीब है न बल्न म कोइ ताकत बस घर भर म मुहल्ल भर म चिरकत फिर रहा है—अन्नू की याद आत ही वह गाव की ओर चल जान को सोचन लगा। शीशी भर तल उधार लान म इतनी दर।

दूर म ढोलक बज रहा है ढाक बज रहा है। उसके काना म यह आवाज बेहद बेढब लग रही है। जलाली दिखाई पड रही है। भूख म जलाली कातर है। इस समय फावसा की झील म जान क लिए प्रतापचद्र का घाट पार कर रही है। सामने जो खेत हैं सहुड का जगल है सब पार कर वह अब बनिया के तालाब के भिड पर चल रही। यह उस फ्ना सा मदान है इसकी सारी जमीन प्रतापचद्र की

है। यह सारी जमीन पार करो तो फावसा की झील। नहर के किनारे किनार जितनी जमीन मिलेगी—पटसन की गन्न की यहा तक कि करला की—सब गौर सरकार की है। उसके बाद जितनी जमीन है वह सारी की सारी हाजी साहब की है। हाजी साहब की तीन बीविया हैं—छोटी बीवी की उम्र भी भला क्या होगी—यही एक कौडी चार-पाच। ईद क दिन तीना बीवियो को मसजिद ले जात समय वे चारों ओर निगाह रखत हैं। चौकस निगरानी। कोई कुछ आखो से ही लाले ता नहो ले रहा है यही व दखत है। अनराल स कुछ दिखाई भी पडता हो या नहा—ऐ यह क्या हा रहा है। नजरो म यह लालसा क्या कहकर शायद मजली वावी को अपनी सटी स कोचत। काचकर कहत, बीबीजान, जानमन जरा रास्ता देखकर चला करो। यही सब साचते सोचते फेलू के दिमाग म खून चढ जाता फेलू से चुप नहीं रहा जाता—जाने क्या-क्या दिमाग म दौडन लगता। फेलू जा फेलू काई मातबर व्यक्ति नही, जा फेलू जल जगल म पलकर बडा हुआ है, जिस फेलू को हाजी साहब उजान से पकडकर ले आए थे—उजानी नाव म धान काटना खत्म होन पर फेलू हाजी साहब के पट पीठ परा म लहसुन वाला तल गर्मा कर मालिस करता था, वही फलू को यह शौक जान क्यो चर्राया कि हाजी साहब की मझली बीवी को बुरके की आड म एक बार झाक कर देख ले।

कछार पर खडा था वह। उस बडे पीपल के नीच बहुत सारे विचित्र भटकीला दरख्त की झाडिया और पत्तावहार का जगल। जाडे के कारण जगल का भीतरी हिस्सा सूखा और साफ। भीतर घुस कर अगर गोह की तरह चुपचाप पडे रहा जाय ता शायद मझली बीवी दिखाई पड जाय—क्योकि, उस ओर हाजी साहब का भीतरी ड्योढी का तालाब है। झाडिया के भीतर स झाकत समय उसन चौकन्ना होकर चारो ओर देख लिया। बायी ओर आबिद अली का घर—उसम काई भी इस वक्त नहीं है। आम क नीच का टूटा घर इस वक्त खाली है। दक्षिण द्वारी घर म जान कब जोटन रहा करती थी अब जाटन नही है ता आधी पानी म वह घर गिरकर मिट्टी म मिल गया है। कुछ झाडिया जगल वन की झाडिया आबिद अली क घर का हमशा अधेर म ढाप रहती। किसी तरह स भी जाडे की धूप आबिद अली क आगन म उतरना ही नही चाहती।

और यह सब झाड झखाड जगल पार करते ही हाजी साहब के पिछवाडे के बाड क उस ओर तीना बीवियो की काच की चूडिया जलतरग बजाये जा रही

है। हसी भी खसी। लगता है हसत हसने सारी दुनिया को ही लील जाएगी। माग भी इतना लबी माना धान गत की सुफद मड हो। और धारादार माडी घुटना स ज्यादा नाच उतरना ही नही चाहती। जान पर मनन्तर फेनू न इस बार थाडा म स नाका। हाथ लूना बनता जा रहा है दाहिना हाथ अब भी किमा तरह स काम म आ रहा है जान कब यह हाथ भी लूला बन जाय—वह एक मर हुए साप की तरह थाडा क भातर पडा रहा। थाडी क जगल स ही घाट जान का रास्ता है। हाजी साहब क अदरनी डवढ़ी क तालाब का पानी कितना काला है। पानी देखत ही इन बीवी बेगमा क पट म खराश होन लगती है। पडू म एक तरह की सनसनाहट हाने लगती। काल पानी की कशिश स मझली बीवी वक्त-बवक्त घाट पर उतर आती है। आत ही खप्प स हाथ पकड लेगा फिर थाडी म खीच कर—फेनू से अब इतजार नही होता। उसने कछुवे का तरह इस बार गले को ऊपर उठाया। वह अपन शिकार की आशा म ज्यादा देर तक मरे साप की तरह थाडी क भातर पडे नही रह पा रहा है।

जब दिल म खुशी का ज्वार नही आता तब वह पुकारता—अन्नू। और जब *ज्वार पर आई नदी जसा ही दिल मतवाला हो उठता तो वह पुकारता—अन्नू* बेगम। भरपेट खान को मिल जाय तो पुकारता—बेगम साहबा। फनू बेगम साहबा के लिए दीवाना है और मझली बीवी की सुरमा रची आखा क लिए दीवाना है। घाट स भगा दने के बाद पीपल क नीचे की यह थाडी उसके जसे बसहारा व्यक्ति का मामूली आश्रय है। वह थाडी के भीतर एक मरे गोह की नाइ जान कब स पडा है—मझली बाबी अब भी इस रास्ते स घाट पर नही जा रही है।

अब जाड के दिन ह। खता स सारी फसल कट चुकी है तभी मदान सूना सूना है। सिफ नरेन दास या माझी घरान क थीशचद प्रतापचन्द मजूरा स नीची जमीन पर तमाकू की खेता करा रह है। और भी उपजाऊ जमीन हो तो वहा प्याज लहसुन और मगफली के पौधे दिखाई पड रहे हैं। इस रास्त स इस वक्त खास

कोई आता-जाता नही। आ भी जाय तो याडी के अदर काई आदमी शिकारी बिल्ली जस घात लगाये बठा है इसका उस पता नही लगगा। जलानी का शरीर अब मदान के छोर पर ओझल हो चुका है। पूरब घर की मालती कछार पर गाय लकर आइ है। वह कछार म खूटा गाडकर चली जा रही है।

सरकार के घाट पर नाव और ढालक वैसे ही बजत जा रहे हैं। सन-सन म वास्तु पूजा की पतंगिया उड रही हैं। ठाकुरबाडी पानगाडी और विश्वासटाला जिधर भी आखें घुमाओ सभी तरफ ढाक-ढोलक का बाजा और भेड या भसा का आत्तनाद। भसा बलि दैन का समय होन पर सरकार के पचास ढाक बजान वाल एक साथ समा बाधेंग। अबकी बार जरा झुककर उसन कछुवे की तरह गला बढा दिया। उस लगा मझली बीवी का मुख और शरीर झाडी की दूसरी ओर है—घाट की तरफ आत-आते भी नहा आई। मरीचिका की तरह वह पिल मिला रही ह। अहा, फन् का अतर कैसा-कैसा कर रहा है।

उस समय हादजादी के सरकार लोग गले मे गमछा डाले हाथ जोडे खडे हैं। भस का चमडा और गाश्त लेन जा लाग शीतलक्षा के अन्य तट स आय थे व घाट से दूसरी आर खडे हैं। खेत खेत म त्योहार आर थाटी क भीतर फेलू। वह मझली बीवी की मरीचिका देखन के लिए थाटी के भीतर कछुवा जैस सिर उठाय रहा।

मालती कछार पर गाय का खूटा गाड कर चटपट शोभा आबू को लेकर ठाकुरबाडा के घाट पर नहाने चली गई। वास्तु-पूजा के लिए शोभा रानी तड़के ही नहा चुकी है। खेत म अमूल्य केले का दरख्त गाड आया है और दूबघास निरा कर चारा तरफ साफ-सुथरा कर आम की मुखी शाख बनपली नाकर कठौत म रख दिया है। तीनर खेत पार करने पर ठाकुरबाडी की डीह। तड़के नहा धोकर बडी बहू धनराज वहा चली आइ है। सोना पूजा घर म घडियाल बजा रहा था। पोखर के जल म जलकुभी नारी। जाडे के दिन हान के कारण दरख्ता पर काई फल नहीं। फूल कहन का कुछ सफेद अडहुल स्वतजवा। वास्तु पूजा म लाल जवा नहीं रहना चाहिए। स्वत जवा मुह-अधेरे ही कोई चुरा ले गया है। बडी बहू ने फूल डलिया म थाडा सा फूल जुगाड कर लिया है। फूल लाल कर कुछ स्वत जवा कुछ अतसी और कुछ सुमकानता क फूल मिले हैं। कुछ बले भी हैं। जाडे के कारण फूल अच्छी तरह खिलत नहीं। फूल सिकुडे हुए हैं—बवक्त के फूल बडे नहीं होपाते।

उस समय जलानी मार गगेल-गुरौं के साथ उस बडी चील म, विशाल चील

मे—इस किनारे खडे हो जाओ तो उसका दूसरा किनारा दिखाई नही पडता जिस झील के बारे म कितनी ही किवदतिया प्रचलित हैं झील क चारो ओर सरपत नरकट के जगल, बीच बीच ऊची जमीन फिर दा न्स एवड तक फना गहरा पानी काना पानी बडा गहरा है जहा नाव लकर जान म आदमी को डर लगता है वसी ही झील म जलाली उतरती जा रही है। जल क भीतर कोई दत्य रहता है किवदती का दत्य उसक पट पीठ चादनी रात म मोरपखी नाव का नाइ है। नाव मानो पानी पर ह पानी पर नाव बहती जा रही है मोरपखी चलती चली जा रही है फिर आदमी की आहट पाते ही टप्प् स पानी के नीचे डूब जाती है—हाय, मनुष्य की अगम्य बुद्धि। अज्ञ लोगो का विश्वास है अलौकिक घटना की तरह कोई घटना नही होती। आधी रात को चराचर म जब कोई आदमी जागता नहा जब सारी झील दस पाच कोस तक पसरे पानी म डूबी रहती है जब फसल स भरे खेत चादनी से भरे होत उस वक्त जल पर एक मोर पखी नाव चलती—उसक भीतर एकराज कन्या शायद चाद बनिया की पतोहू हो नेहुना लक्ष्मीदर की पाचाली मनुष्य के प्राणा म विह्वलता ल आती है।

झील के जल म नाव जब उथक आती तो चारा दिशाय उजाल से भर जाती। मानो बीच झील म आग लग गई हा। ऐसी हा झील म उतरने स पहले जलाली ने उसका जल लकर सिर से लगाया फिर मुह म दिया, इसके बाद गोह की तरह पानी म तर गइ। सर्दी ठिठुरनी हुई—लेकिन पट की आग बडी जबदस्त आग है यह आग जल स बुझती नही। आबिद अली कब स गया है महीना बीत जान वाला है अब भी वापस नही आया। आने पर भी दो चार हफ्ते पेट भरकर खाओ। उसके बाद फिर फाका। जलाली जल पर तरती रही। मुह से मुह मे जल लकर हवा म फेंक दने लगी।

सारे लोग तर कर जहा कोकाबेली क पत्त पानी पर छाय हुए ह उधर ही लगातार बत्त रहे। बडे भसीड की लालच सभी की है। इस जल म क्या है और क्या नही है किसी को भली भाति नही मालूम। बल्कि क्या नही है क्या नही हो सकता इसी पर विस्मय। किसी साल पुरी पूजा के मेले स लौटत हुए हजार हजार लोगा न देखा था—झील के बीचोबीच एक काले रग का मठ उभर आया है। उभर आत आत कुछ ऊपर उठकर ही वह थम गया। इसके बाद फिर नीचे उतरकर अदृश्य हा गया। प्राय स्वप्न सा ही। जिन लोगा ने देखा है वे मत्र जसा

ही उसपर विश्वास करत हैं जिन लोगो ने नही देखा वे इस ऊटपटाग कहानी माने हुए हैं। और जो लोग अलाकिक घटनाओं पर विश्वास करत हैं व इस बात का लेकर नयी किंवदंतियो की रचना कर रहे हैं। लगन लगता शायद इशा खान सोनाई बीबी को लकर इसी झील म छिप हुए है। जहाज जसी मोरपखी नाव के डाड-पतवार काले रग के मठ के समान पानी स ऊपर बीच बीच म उनक जाल। तनिक झाकी देकर ही डुबकी लगा लेती वह नौका। मानो (इशा खान) कहता हो देखा देखा अब भी बूढी उम्र म मैं सोनाइ का लेकर बडे सुख म झील के भीतर रह रहा हू। तुम लोग अगर मेरे साथ बुरा सलूक करोगे तो मैं भी तुम लोगा को नुक्सान पहुचाऊगा। इसी डर से भरपूर भादो म कोई भी झील के बीचोबीच नाव नही ले जाता। यह झील बडी भयकर है। झील की काइ थाह नही। जल के नीचे मिट्टी नही। मानो अधकार सिर्फ प्राचीन जलज लता-गुल्मो का लेकर चुपचाप जल के नीचे पडा है। डर के मारे इस झील म चलते वक्त कोई नाव म बादवान नही तानता। बडी खामोशी स जाना पडता, कहीं इशा खान की कान निद्रा उचट न जाए।

इस अचल के लाग इस झील से दानव जसा खौफ खात है। ईशम जसा आदमी भी इस झील के किनारे आकर भटक गया था। किसी जिन परी ने उसके पीछे पडकर उस रात का बेहोश कर दिया था। उसी झील म गरीब दुखी लाग पट की तडप मिटाने के लिए पानी म उतर गय।

पट की आग भी बडी आग होती है यह आग जल स बुझती नहीं। जल के भीतर जनाला उतरा रही थी माना जल के नीचे जाते ही पट की जलन शात हो जाएगी। लेकिन हाय जल के नीचे कीच के भीतर कही भी कमल-गटट का नामोनिशान नहा। राज रोज उखारने म क्या रह जाता है। कोकाबेली के कुछ मरे पत्ते सामने के पानी म उल्टे पड़े हैं। जाडा म कोकाबेली खिलती नही। कोकाबेली के फूल म कानि-काले फल हुए हैं। तरते-तरते उसने दो फल बटोर लिए। और पानी म तरत हुए ही जलाली उनका खाती रही। भीतर एक किस्म के काले काले बीज है—साधा-साधी महक है उनकी। स्वाद उसका कुछ भी कहन लायक नहीं, बस खाना है सो खात रहा। पट म भूख हो तो क्या कुछ खाने का मन नही करता। कमल गटट का शकरकद की तरह उबालकर खाना पडता है। जरा सा नमक डालकर। कभी-कभी इमली के जरा स घोल स मिलाकर खाओ

तो अमृत का स्वाद देगा। जनाली लोभ म पडकर तरती रही। पानी क नीचे उतर गई। बहुत नीचे लताआ के सहारे महार हल्के हाथो स पकड-पकड जोर स खीचने पर लता टूट जाएगी लता टूटने पर ही मब चौपट, जादू के कक्ष म पहुचने की सीढी को खीच लेन के समान होगा। लिहाजा बडी सावधानी स जल म डूब जान के लिए अधकार मिट्टी पर टटोलत फिरने के लिए गोता खोर की भाति बुल्ले निकालकर वह गुम हो गई। पानी के नीचे बडा भय। भय क मारे जनाली आख नही खोलती। आखें खोलते ही लगता कि किसी जादूगर क मुल्क म पहुच गई है। पानी के नीचे जलज घास नाच-नाच कर उसको डराती रहती है। नीला सा हरा बनते बनते एक काला सा भद्दा अधियारा उस चारो ओर से घेर लेता। एक सास म पानी के नीचे डूबे रहने के बाद पलभर म जल काटकर वह ऊपर उछल आती। इसके बाद, मानो मुद्दत के बाद वह आसमान जमीन और सूरज देख सकी है ऐसी निश्चितता स सास लेते समय उसका मुख खुशी से उज्ज्वल हो उठा है—सोने से भी अनमोल एक कमल गटटा उसके हाथ म है।

पतीली लहरो की चपेट म तनिक दूर सरक गई ह। पतीली को खीच लाई फिर कोकावेली की जडो को दात स काटकर देखा कि जितना बडा कद समझा था उतना बडा यह नही है। यह कद शायद लाल कोकावेली का हो। पीली कोकाबेली का कद काफी मीठा होता है। सफेद कोकावली के कद म कसलापन। लाल कोकावेली म जरा सा तातापन होता है। फिर भी उस कद को साफ सुथरा कर बडे ही जतन स उस पतीली म रख दिया। फिर किनारे की ओर देखा। अब किनारे पर कोई भी खडा नही। सभी अपने अपने ढग से भसाड की टोह म जल म दूर बढते चले जा रहे हैं। आबिद अली आता नही जाने कितन दिना स नही आया। जाने कब गहाना नाव का माझी बनकर चला गया—फिर नहीं आया। खबर भी नहीं आया। वह वायुरहाट तात का काम लेकर चला गया है। आबिद अली को खिलाने क लिये जोटन एक मुर्गा लेकर आई थी लकिन वह मुर्गा उड कर जो हाजी साहब के घर चला गया तो लौटा ही नही। हाजी साहब की छोटी बीवी न उसका जिबह कर डाला।

झील के जल म दुखियार इसान भसीड की टोह म तरत फिर रह थ। चारा ओर के गावा स दुखियारे लोग चलकर आए और पानी मे उतर गये। बेला चढने पर सब पानी छोड निकल आएगे। जाडे के अत म जब कद-कोकावेली नही

रहगी, जब पानी पर कोकावली के पत्त तरेंग नही या जब झील का जन शात और एकान बना रहेगा तब, झाड झखाडा और पानी पर बरुआ हुस उतर आएग। तरह-तरह के पछी, लाल-नीले पर वाले पछी, जल-पपपा और तरह-तरह के बगुले। छाटे-बडे चक्वा चकवी झील पर छा जायेंगे। उस समय मुडापाडा के जमीदार के बटे हाथी पर सवार होक आएग नील क किनार उनके तबू तान जायेंगे और सुबह या चादनी मे चिडियो का शिकार कर तबू म चिडिया के गोश्त स वनमहोत्सव का चालू रखेंगे।

गर्मी का मौसम ही जलाली क लिय बडा दुखभरा है। अक्सर धरती स पट अडाय पडा रहना पडता है। बरसात आ जाने पर धान खेतो, पटसन-खेता म आबिद अली के लिय बेइनहा काम आ जाता है। बरसात खत्म होने पर पानी जब घटन लगता, कोकावली के फूल खिलने लगत और मिट्टी के नीचे अन सा प्यारा यह कद दुखियारे लोगा निरन्न लोगो का सबल यह कद वर्षा आते ही जमीन के नीचे जन्म लेता। इस जलभरी गरम जमीन मे और मिट्टी के भीतर यह कद अपना बडा ही प्रिय धन है—मानो इसे फेंकना नही चाहिय, लुढलाना नही चाहिये। बठे रहना गुनाह है—तरते रहना शवाब है। जलाली पतीली के माथ तरती रही। डुबकी लगान स पतीला से काई अगर कद निकाल ले।

सामने केवल जल है—अनत जलराशि। भसाड की लालच म वह बहुत दूर चली आई है। शायद इसके बाद कुछ है भी नही। दाहिन और कमल वन है। बाइ तरफ विस्तीर्ण पानी। सामने के जल मे जाने क्या कुछ बहत जा रहे हैं। आखिर होगा भी क्या—शायद बडा गजार मच्छ हो। बडे-बडे मच्छ।—खबे सा लबा बडा गजार मच्छ। काले कन्पिट सिर और मुख पर सेंदूर का रग पुता और बदन पर अजगर जस चल। उसको डर लग रहा था। फिर भी उस लगता चाहे डर स हो चाहे विस्मय से इतनी दूर कोई नही आया। कोई आया नही इसलिए शायद इधर उधर कुछ कोकावेली बच गई है। धाप से नजात पान की गरज से आगे मद कर उसन डूबकी लगाई। लेकिन पानी क नीचे आखें खालत ही लगा—एक बडा-सा गजार मच्छ उसको आर घूर रहा है। पूछ हिला रहा है। अचल। गजार मच्छ जलाली को दख रहा है। पानी के नीचे अजब एक जीव शायद मानव-जाति का कोई है—मेढक जसा ही नीचे उतरता आ रहा है। प्राचीन जलज घास और झाडिया और लतायें—उसीम स वह मच्छ मुह निकाल

है। आखें खोलते ही जलाली उस मच्छ का मुख देख पा रही है। काला सा भयंकर मुख कभी मुह बाये दे रहा है तो कभी पानी लीलकर बंद कर रहा है। जलाली से यह मच्छ कतई नहीं डर रहा है। बल्कि जलाली को ही डराये दे रहा है।

हाय पेट की ज्वाला बडी विकट ज्वाला है यह ज्वाला सही नहीं जाती। भय और विस्मय से जलाली पानी के नीचे इत्ती सी हो गई है। फिर भी जलाली अपनी लालच को जब्त न कर सकी। जरा और नीचे जाते ही जमीन से हाथ छू जायगी और कोकाबेली की जड उसके कब्जे मे आ जाएगी। दम घुटने लगा। वह छटपट सास लेने के लिए पानी के ऊपर उछल आई। दम लिया थोडी देर पानी से ऊपर तिरती सुस्ताती रही। फिर डुबकी लगाकर पानी के नीचे जाते समय उसने देखा हरियाली से भरा एक देश उसमे नीले जल का गलीचा बिछा हुआ। अधियारा, धीरे धीरे अधियारा और भी गाढा होता जा रहा है। फिर जहा कोकाबेली की लता आकर जमीन पर रुक गई है—वही हाथ रुक गया। अधियारे म भी जलाली को पता चल रहा था कि वह मच्छ मुह बाय आगे बढता आ रहा है। अतिकाय मच्छ। फिर भी एक मच्छ ही है चाहे कितना भी अतिकाय क्या न हो है तो मछली ही। एक मछली मामूली मछली तुम कितने ही बडे क्यो न हो ग—क्या इसान के घर पैदा होकर मैं तुमसे डर जाऊ? शायद ऐसा ही कुछ सोचते-सोचते उसने कोकाबेली की जड धर दबाई। इसके बाद भी उसने देखा कि वह मच्छ हर रग की घास के भीतर से मुह हिला रहा है। बडी ही सतर्कता से हिला रहा है और जलाली को देख रहा है। कन्द के मुट्ठी म आते ही जलाली की हिम्मत बढ गई। उसने परवाह नहीं की। वह और जरा आगे बढ गई। मच्छ अब पीछे खिसकता जा रहा है। उसने और देर नहीं लगाई। मच्छ जब डर ही रहा है तो डब रहने से क्या होगा। वह फाकर पानी काटती सूस की तरह पानी से ऊपर पीठ ले आई।

जान कर एक बार जलाली ने पानी के नीचे बत्तख चुराकर उसका गला घोट दिया था, जान कर मानती के नर-बत्तख का आधी पानी के रात म भुलसाकर नमक मिर्च और टाग चबाकर अल्लाह की दुनिया सुख भरी सोचकर उसने एक बडी-सी डकार ली थी—इस समय बस वही याद आ रहा है। उसी मृत बत्तख जैसा ही मच्छ की आखें लगातार पानी के नीचे निश्चल बनी रही। मानो एक बडा-सा अजगर साप उसके पालन आ रहा हो ऐसा लगा। लेकिन अगर

साप होता तो सारी जगह म अब तक उथल पुथल मच गई होती। इतना निश्चल बना न रहता। उसन इसे होलदिल मान लिया। पानी के नीचे आखें खोलत ही लगता कि अजीवो गरीब सारे पेड पौधे मानो सजीव हो उसकी ओर बढ़ते आ रहे हैं। इसलिए या आमतौर पर वह आखें खोलना ही नही चाहती।

हरे रग के कदब फूल जसे घास के अधियारे म जलाली समझ नही सकी कि उसकी ओर क्या बढ़ता चला आ रहा है। वह बडे मजे म डुबकी पर डुबकी लगती गहरे पानी म बैठन लग गई। गाताखोर जस ही वह पानी मे गोता लगा रही है और ऊपर उझक आ रही है। अगर झील के किनार खडे हो जाओ तो एस अनगिनत लोग दिखाई पडेंगे जो जल म डूब रहे हैं और ऊपर उझक आ रहे हैं। कभी उनको कई कद मिल रहे हैं—कभी नही मिल रह हैं। और सही तौर पर कोई नही बता सकता कि कब मिल जाएगा। हर काकाबेली के पत्तो के नीचे कद नहीं रहता। इस कारण सारा दल झील के जल म फल गया था। सूरज ऊपर उठ गया है। दूर म आखें पसारा तो बस गहरा पानी—शात और काला। वहा मानो एक शीतल शीत-गृह है। दूसरा किनारा दिखाई नही पडता। कितन प्राचीन काल म यह अनत जलराशि कितनी ही किवदतिया सजोये झील मे बह रही हैं। सदिया म यह जल और भी काला पड जाता। जाडो म सरकडो की झाडिया से पछी और कहीं उड जाते हैं और झाडिया के भीतर जहा पानी म से जमीन जागन लगी है वहा जहरील साप बाबिया मे मुर्दे की नाइ पडे रहते हैं। गर्मी और बरसात के लिए वे इतजार करते हैं। बरसात का पानी गिरते ही या बसत में जब सूरज सिर पर चढकर किरन बिखेरता है तब सारे जहरीले साप मकान छोड पानी म उतर जाते हैं। पानी पर तरते फिरते हैं। दूर के गजारी बन से कुछ मयाल साप तक पानी म उतर आते हैं। जलाली जल के भीतर देख रही थी दो लाल लाल आखें उसकी ओर टकटकी लगाये ताक रही हैं। कुछ भी साफ नहीं। जल की गहराई म अधियारा बडा प्रकट है। नील और हरे रग की झाडियो म अगर दो एक कद और मिल जाए—इस प्रलोभन से जलाली एक बत्तख बनकर पानी म गोता लगा लगाकर दो लाल लाल आखा को मौत का खेल दिखाने लगी।

उस वक्त भी फेल झाडी के भीतर लटा हुआ। उतर रही होगी नही उतर

रही है। जान ही खप से पकडकर थाडी के भीतर खीच लेगा। कमरख दरख्त की छाया म बीबी का शरीर दिखाई पडता और नही भी। इधर धूप सिर के ऊपर आ गया। फिर भी न तो बीबी का मुख ही दिखाई पडा और न उसके अग। मदान म वास्तु-पूजा के ढाक-ढोल का बाजा जाने कब के थम चुका है। पोखर के भिट पर बडी बहू। सोना मदान म खडा बिना किसी मतलब के झाप बजा रहा है—टन-टन-टन टन। पूजा परेवा समाप्त है। अब तिल-तुलसी, कठौता, नवेद्य और तिलवा रेवडी व अन्य खान की चीजें अपन अपने घर ले जाना। बडे सफेद पत्थर की थाली पर खीर—धनबहू सफद पत्थर की थाली पर खीर लिए जा रही है। फल फूल *नया अगोछा घट और नारियल* रजित लिए जा रहा है। *मदान म* ही प्रसाद बाटा जा रहा है। गाव के जवान बूढे बुढिया प्रसाद लेकर चल जा रहे हैं। फिर रात को हैजक की बत्ती जलेगी। सरकार खानदान वाले पोखर क भिड पर चार-पाच हैजक जलाएगे। रास्ते पर डे लाइट जलेगा। तब हर माठ मदान म कितन ही हैजक की रोशनिया म यह मदान और गाव एक ही रात क लिए डूबे रहगे। और भेड के गोश्त और अरवा चावल की सुगध स सारा मदान महमहा उठेगा। फेलू की जीभ पनिया गई। रजित अब मालती को दूसरी जमीन पर दख रहा है। मालती बडी व्यस्त है। वह कुछ लोगो को बिठाकर खिचडी और खीर खिला रही है। जाडे की धूप म खुनकी। उत्तर स आती ठडी हवा म सर्दी का आभास। लोग भरपेट खाकर धूप म घास पर मानो लोट पोट रह हो।

और सोना उस वक्त झाझ फेंककर कछार पर दौडन लगा है। फातिमा न कचार पर बकरा छोडने आकर सोना को पुकारा। माना फातिमा न जाड की टड म एक कछुव का आविष्कार कर डाला हो। कछुव का पकडन क लिए वह सोना का बुला रही हो। इस समय जाडे का मौसम है। सर्दी की वजह स कछुए ज्यादा दर पानी म नही रह पात हैं। किनारे उठकर धूप सेंकत हैं। या जमीन क भीतर छिप रहन। हल की फन पर जमीन क भीतर स कछुव निकल आ सकत हैं। लेकिन फातिमा न सोना को यह सब कुछ भी नही दिखाया। सोना को वह पीपल क नाच खींच ल गई। झाडी क अन्दर क्या है जरा दखिय। कहकर फातिमा चुप्पी साध गई। शायद कोई आदमी हो। पागल ठाकुर हो। फातिमा न कम स कम यही सोचा था। सोना बाबू क पागल ताऊ जो रात बिरात या किसी दिन

भिनसारे हा उठकर मैदान पार कर, सुनहरे रेत वाली नदी पार कर लापता हो जाते हैं वही शायद आज ज्यादा दूर न जाकर इस पीपल के नीचे भटकटया की याडी के भीतर लेटे-लेटे परिंदो से गप्प लडा रहे हो। छोटी लडकी फातिमा शामू की इकलौती बेटी फातिमा नही जानती—कि यह आदमी पागल ठाकुर नही दूसरा ही आदमी है—फेलू शेख। फेलू शेख अब भी चुपचाप उस जान से ज्यादा प्यारी मौत म भी जिसकी याददाश्त बनी रह जाती है—ऐसी एक अनोखी युवती को खप्प से याडी के भीतर खीच लेने के लिए छिपा पडा है।

साना न याडी के भीतर ताकते हुए पुकारा ताऊजी। क्योंकि सारे कारण जब बस ही दीख रहे हैं तो ताऊजी के सिवा भला और कौन होगा। इस जवार म वही ता अकेले एसे व्यक्ति है जिनके तई यह मैदान पेड पौधे और तीज-त्योहार की तकरीब सब समान हो।

फेलू ऐसा दत्तचित है कि उसे ध्यान ही नही कि कब से बठा हुआ है। किसी की आवाज है कोई याडी म ताकता पीछे से पुकार रहा है। फेलू के हाथ मुह पीठ दिखाई नही पडते। घनी याडी के बाहर सिफ दो पर दिखाई पड रहे हैं इन परा को देखकर धनकत्ता के छोटे बेटे को पता लगा है कि याडी के भीतर कोई आदमी है। वे अब घुटना के बल अदर घुम रहे हैं। आग सोना पीछे फातिमा। वह हडबडाकर यटपट उठ खडा हुआ। सोचा झाडी से लपककर बाहर निकल जाय, लेकिन इतनी फुर्ती करन पर उसका भेद खुल जाएगा इसलिए जमीन पर वह कुछ टटोलन लगा। मानो उसका कुछ खो गया है।

सोना और फातिमा समझ ही नही पाये थे कि ऐसा एक रूखा आदमी याडी के भीतर छिप सकता है। सोना न कहा आप।

फेलू का मानो कुछ खा गया है ऐसा ही भाव चेहरे पर। उसने कहा याडी के भीतर जडी-बूटी ढूढ रहा हू।

—क्या होगा ?

—हाथ जुड जाएगा।

सोना ने कहा मिली भा ?

—नही मालिक, मिली नही। जाने कहा यह सब छिपा रहता है कहकर फेलू ने फातिमा की ओर घूरकर देखा। याडी के भीतर फातिमा और सोना। फेलू ने सोना बाबू से कुछ नही कहा सिफ फातिमा की ओर घूरते हुए मन-ही मन

भुनभुनाते लगा, शामू अपनी बेगी को यहां ला रहा है। बेगी को अंग्रेजी सिखाता है। फेलू का लगता इतना सा मजहबी होता कोई चीज नहीं। और साथ ही साथ पागल ठाकुर का चेहरा सामने उभर आता और लगता उभर आता हो उसमें यह अधर्म जाग उठता। हाथ की ओर देखते ही दु:ख का कोई ओर छोर नहीं रह जाता। फेलू की धार घटती जा रही है। यह जो बीवी अन्नू है वह भी तेल लाने के बहाने हाजीसाहब की छोटी बीवी के पास चली गई। लाना बाता के पास गई या छोटे साहब के पास कौन जाने? अब भी वह लौट नहीं रही है। फेलू ने इसलिए ताका जरा फुर्ती की जाए। बीवी याद आते ही वह तेज कदम घस पड़ा। अगर जल्दी करना है तो बड़े बाग के भीतर से सीधे उठ जाना है। कोई रास्ता नहीं, बस बसवारियाँ है। कुछ बेंत के झुरमुट और चारों ओर अंधेरा। दिन के वक्त भी वहां से जाने में बदन में झुरझुरी होने लगती। बगल में ही गांव का कब्रिस्तान है। फेलू दनदनाता चला जा रहा था। बाएं हाथ में कनई कोई ताकत नहीं। कलाई पर मढ़ा पट्टी कौड़ी। अगर बीवी अब भी छिनरपापन करती फिर रही हो तो उसके पेट पर वह एक लात जमा देगा। उसका शरीर और दांत सख्त पड़ते जा रहे हैं। और तभी उसने देखा उसकी बीवी बाग के अंधेरे से निकलती आ रही है। लेकिन हाय हाय यह हाथ—पंगु हाथ लेकर वह कुछ भी नहीं कर सका। बाग के अंधेरे से निकल आते ही उसके मुख पर भयंकर रूप से चीख उठा—अन्नू तू।

अन्नू ठहरी नहीं। ऐसे आदमी से अब और वह डरती नहीं। बगल से कतरा कर जाते समय वह बोली, कैसे मनहूस हो तुम। तुमसे यहां कौवा को भगाने के लिए और तुम हो कि यहां बाग में घूम रहे हो।

—तू यहां झाड़ियों और जंगलों में क्या कर रही है?

—तुमसे जोड़ा खाने की गरज से तुम्हें ढूंढ रही हूं।

—अह। यह बीवी भी कमीनी बात करना सीख गई है। लात किसको जमाये फेलू। गुस्से और अफसोस से फेलू ने अपने ही पेट पर लात मारना चाहा। यह बीवी तक भी जान गई है कि फेलू पंगु हो गया है। लिहाजा अब कौन किसके पेट पर लात जमाता। अन्नू परम कुलीन युवती कन्या की नाईं बाग के भीतर डूब डूब कर पानी पी रही है अल्ला मियां को भी पता नहीं चल सकता। फेलू ने अजीब दु:ख भरे स्वर में कहा, तू सोचती होगी कि मैं कुछ भी समझता नहीं। ससुरी कौवा।

—और तू सोचता है कि मैं कुछ समझती नहीं। फेनू के मुह पर उसने घास जमाया।

—तू जवान औरत है, तेरे न समझने का इसमे क्या है, बता कहकर फेनू ने आगे बात नही बढाई। थोडी ही दूर कटहल की डाली पर सोना और फातिमा नीचे। फातिमा के बकरे के लिए शायद कटहल की पत्ती या डाली तोड दे रहा है। शोर-गुल मचाने पर या चिल्ल-पा होन पर वे दौडकर यहा आ जा सकते हैं। व आते ही सारी बातें खुल जाएगी। वह पीपल के नीचे झाडी म छिपा बैठा था, पड पर उस वक्त कौवा नही उड रहा था, मेले के गाय-बैल जा रहे थे उनके गले से घटिया बज रही थी, और घास के भीतर पडे-पडे मझली बीवी के साथ जोडा खाना—सभी कुछ यह युवती औरत अन्नू भाप लेगी। वह चुपचाप अन्नू के जिस्म की मछरीहा बू इस बार के लिए हजम कर गया। वह पागलाना ढग स चीखने लगा, गुसलकर घर म दाखिल होना। वर्ना तू ही रहे या मैं। और इस हजम कर जान का सारा का सारा गुस्सा पागल ठाकुर पर आ पडा जो उसके दानो हाथ तोडकर अब माठ-मदान म चिडिया उडा रहे है और हवा म फूक मारते फिर रहे हैं। अगर यह आदमी कब्जे म आ जाय तो उसे पीर बनाये बिना वह नहीं छोडेगा। गुस्सा और विद्वेष उसका कुतर-कुतर कर खाये जा रहे हैं। बीवी अन्नू इस भाप जगल के भीतर अब तक तल लाने का बहाना बना उसे मछली के पहरे पर बिठा कर क्या कुछ कर रही थी यह माना सब उसका मालूम है।

लेकिन बेबस फेनू ने दोना हाथ ऊपर उठाने को होकर पाया कि वह बडा ही लाचार और बीमार है। एसी जबरदस्त बीवी के साथ अब वह शायद इस जिंदगी म नहीं लड सकेगा। अगर वह लड सकता होता तो शायद इस अधेरे बाग के भीतर इस समय प्रलयकारी खडयुद्ध छिड गया होता। चुनाचे भले मानुस की तरह अन्नू के पीछे-पीछे मानो वह और अन्नू कुटमती मे बाग के भीतर स होकर लौट रहे हैं—दोना एसे चल रहे है मानो आपस मे कोई धोखाबाजी नही—मदान मे उस वक्त भी ढाल और ढाक बज रहे हैं। मालती वहा प्रसाद बाट रही है। कागज की लाल-नीली झडिया उड रही हैं हवा से। मदान के अदर सफेद झकझक रेशमी साडी पहने मालती, निष्ठावती मालती धर्म ही जिसका एकमात्र सबल हो जो सभी की तरह बत्तख पालकर बडा कर रही है जिसकी ममता नन्ह-बत्तख के लिए है और बरसात म जो रात भर ब्रामाश भोगती रहती है यही युवती मालती

विधवा मालती इस समय सब लोगा को वास्तु पूजा का खीर खिला रही है।

पेड की डाली पर सोना बाबू। फातिमा एक नटखट तितली की तरह कटहल के छोटे दरख्त के चारो ओर चक्कर लगा रही है और उछल रही है। बकरे के लिए वह टहनी पत्ती जुगाड कर रही है। सोना बकरे के लिए पेड की टहनिया तोड दे रहा था। कटहल की पत्तिया खाने के लिए बकरा छोटा-सा बकरे का छौना दो परो के बल पर उछल रहा था। बकरे के पत्ते खाने की खुशी के लिए साना पेड की सारी नम टहनिया और पत्तिया कोपला का तोड बकरे की आर फेंक रहा था। बकरे के बगल म इस समय पत्तियो का ढेर। सोना पेड स नीचे कूद पडा। नीचे आते ही फातिमा ने कान के पास मुह लाकर फुसफुसाते हुए कहा, चलियेगा सोना बाबू ?

—कहा ?

—मौलसिरी का फल लाने ?

—कितनी दूर ?

—ज्यादा दूर नही। कहकर उसने उगली उठाकर दिखाया वा जो हुसन पीर की दरगाह देख रहे हे न उस दरगाह के दाहिने टेबा का पोखर है हम लोग पोखर के भिड तक जायेंगे।

—छोटे चाचा डाटेंगे।

—जाएगे और आएगे। एक दौड लगाकर जाएगे और एक दौड लगाकर लौट आएगे।

साना ने चारो ओर देखा। तीज-त्योहार के दिन किसी का किसी ओर ध्यान नही। लालटू पलटू छोटे चाचा के साथ चरु पकाने के लिए गये हुए हैं। छोटे मामा सरकार काठी की वास्तु पूजा म गय हैं। शोभा, आबू किरनी वास्तु पूजा का प्रसाद खाती फिर रही हैं। तीज त्योहार के दिन कौन किधर जाता है—कौन किसकी खबर रखता है। पागल ताऊ सबेरे किस ओर निकल गये किसी को नही मालूम। सोना ने मन ही मन सोचा, ज्यादा देर हो जाने पर सभी फिक्र करेंगे सोचेंगे सोना ताऊ के साथ निकल गया है। लिहाजा सोना ने मुह से वों-वो शब्द किया। फिर वे मदान के भीतर से दौडने लगे। बडा सा मदान उत्तर को जाओ तो हुसन पीर की दरगाह। दरगाह के बगल से सायकिल पर गोपाल डाक्टर उतरता आ रहा है। गोपाल डाक्टर उन लागो का देख लेंगे इस डर से वे दरान

वाडी के खाई म उतर गय। दोना चुपचाप सिर भुकाये उवड बैठे रह। इतने वड मदान म सोना और फातिमा को अकेले घूमते देखने पर शका होगी ही। तुम सोना, अभी उस रोज की सोना अकेले इत्ते वडे मदान म चले आए हो—गजब की हिम्मत है तुम लोगा की। चलो चलो घर चलो। या कुछ डाट फटकार। या घर पर अगर यह इत्तला पहुच जाय तो ईशम दौड पडेगा, अपना प्यारा तरबूज का खेत छोडकर दौड पडेगा। और मदान के बीच खडे होकर या झील वाली गरम जमीन पर उतरकर पुकारने लगेगा अरे सोना बाबू कहा गये। ओ सोना बाबू।

जाने कब एक बार सोना बाबू तरबूज-खेत मे उतर गया था—जाने कब, कितने ही दिना पहले, सोना पहली बार गाव स बाहर दक्खिनी बहार म निकल गया था—सुनहरे रेतवाली नदी की चाकी पर तरबूज के खत के भीतर खो गया था कोई ठीक याद नही लेकिन तरबूज का वह खेत मालिनी मछली और बडे मिया की दो बीविया—दुगा प्रतिमा जस मुखडे नाक म नथ हिल रहे थे जीवन म जाने क्या एक रोमाच साना अब उसी रोमाच के लोभ म दौड रहा है। फातिमा न अपनी धाती अगोछे की तरह लपेट कर पहन ली है। बदन पर फातिमा क कोई कुरती नहीं। कोई फ्राक नहीं। नगा बदन। फातिमा के नाक स नथ डाल रही है। काना म पीतल की बालिया। नथना पर सोने की कील। कील का मुह चप्टे चाद जसा। न बोल न चाल, साना न फातिमा की नाक पकड दबाकर देख लिया कि वह चप्टा चाद नथन पर कैसे चिपका हुआ है। फातिमा की नाक दुख रही थी। लेकिन साना बाबू नन्हा सा सोना बाबू जिसके जिस्म स चदन का बास चिपका रहता और सिर पर भी कितनी मधुर महक। सोना बाबू उसके नथने पलट कर अब चप्टे चाद का मुख झाककर देख रहा है।

फातिमा का शरीर खुशी स सिहर कर लरज रहा था। उसने कहा साना बाबू चलिए। गोपाल डाक्टर चला गया। दूर मदान की मेड पर गोपाल डाक्टर के साइकिल की घटी टिनटिना रही है। और प्रानर म जब कोई फसल नहीं, मदान जब खाली हो बस बीच-बीच म एकाध छोटी छोटी झाडिया खडी हो तो दौडकर जाना ही बेहतर है। दौडकर जाते समय ही उन लोगों न देखा टबा के पाखर के नीचे जो मदान है वहा पागल ठाकुर है। व दनदनाते झील की ओर चले जा रहे हैं। सोना न क्षण भर की देर नहीं लगाई। उसन मानो ठाकुर जी को

मैदान म आविष्कार कर डाता है ऐसे ही स्वर म पुकारा लेकिन वह शरम चा
रहा है तो चलता ही चला जा रहा है। ढाक ढोल बज रहे हैं तो बजते ही जा रह
हैं। वास्तु पूजा के भस बलि क खडग पर खून लगा है तो लगा ही हुआ है। और
सोना और फातिमा मदान म दौडते चल जा रहे हैं तो दौडते ही जा रहे हैं।
दौड रहे थे और गुहार रहे थ। टीले पर चन्दर उन लोगो ने पुकारा, ताऊजी
लेकिन कौन किसकी सुन। ताऊजी पोखर के किनारे जो जगल है उसम दाखिल
हो गये।

ससार म कितना ही कुछ घटित होता रहता है और नही भी होता। हर समय
खेतो म फसल नही फलती। इस समय कही तो रूखे खेत तो कही तबाकू के पर
दिख रहे हैं। प्याज लहसन आलू बदगोभी ऊची जमीन पर—पोखर से पान
लेकर प्याज लहसन आलू बदगोभी की खेती कर रहा है खुशहाल गहस्थ प्रताप
चद। मेड पर दो बालक बालिका दौड रहे है। टील स उतर कर माझी का बड
खेत पार कर दौड रहे है। बेवक्त का फल मौलसिरी का फल वन के भीतर है
वे मौलसिरी के फल की टोह म दौडते चल जा रहे हैं। फातिमा फल बटोरेगी
साथ म सोना बाबू है भरी दुपहरी की धूप है और जाडे का सूरज सिर के ऊपर
होने स उनको तनिक भी सर्दी नही लग रही है। नगे बदन नगे पाव दौड रहे हैं
मानो दो खरगोश हडकाये जान से जगल की ओर भाग जा रहे हो।

सहसा ही सोना को लगा कि व बहुत दूर चले आए हैं। सामने इतना बड
जगल है। भय से सोना सिमट-सा गया। शायद वे फिर घर लौट नही सकेंगे।

स्थान बडा ही निजन है और पोखर प्राचीन है। कीचभरे तालाब की तरह सवार
और जलकुभी स ढका हुआ। भिड पर तरह-तरह के पेड पौधो से गहरा वन
बन गया है। छोटी-बडी लतरो की झुरमुट।—पगडडी बहुत ही कम। पथ पर
सूखा घास पत्तिया। जमीन पर मृत शाखें चिडियो के पर। शायद सिर के ऊपर
अजुन वक्ष की डालियो पर परिदो का रात का बसेरा हो। उसके नीचे कितने
ही युग स मछली और मनुष्य की हड्डिया गाय-बछियो की हडिडया। वगत ही

एक बहुत बड़ा पाकड़ का दरख्त। इस वृक्ष में कितने ही विचित्र खोडरें, डालियां समेत मानो आसमान छू कर खड़ा है। एक तरफ की सारी डालियां भरी हुई और उन डालियों पर हजारों गिद्ध कतारों में बैठे हैं। उस पेड़ के नीचे जाने की हिम्मत नहीं पड़ी उनको। लेकिन इतना सा रास्ता तय न करने पर वे बेवक्त का फल मौलसिरी का फल नहीं पा सकेंगे। मौलसिरी का पेड़ बड़ा नहीं, छोटा है। इस झाड़-जंगल में उस पेड़ को ढूंढ निकालना मुश्किल है। इस पेड़ का पता जोटन फातिमा को दे गई है। आबिद अली की दीदी जोटन आबिद अली के लिए एक मुर्गा ले आई थी, मुर्गा उड़ान भर कर हाजी साहब के अंदरूनी बाड़ पर चला गया। अंदरूनी बाड़ के पास छोटी बीवी से मुलाकात हो गई। छोटी बीवी ने जोटन से कहा कि मुर्गा मदान की ओर चला गया है। खेतों में उतरते ही जोटन को लगा कि दूर में कुछ भागता जा रहा है। शायद कुत्ता हो। बिल्ली भी हो सकता है। खेतों में उतरते ही जोटन की हाजी साहब के छोटे बेटे से मुलाकात हो गई। वो गया वो गया—। दिखाई पड़ रहा है। मानो साठ-गांठ पहले ही हो चुकी थी। छोटे बेटे ने बिला वजह खेतों की ओर हाथ उठाकर जोटन को मुर्गे की टोह में जाने को उता दिया।

जोटन मुर्गा चुरा लाई थी आबिद अली को खिलाने के लिए। जोटन को यों लगा कि मुर्गा मौका पाकर अपने गांव की ओर भाग रहा है। पालतू मुर्गा, मौलवी साहब का बड़ा प्यारा मुर्गा। प्यारा मुर्गा खेतों में से भाग रहा है। जाने क्या सोचकर मुर्गा पकड़ने के लिए वह दौड़ने लगी। अगर यह मुर्गा पहुंच गया और मौलवी साहब को यह पता लग जाय कि जाते वक्त जोटन मुर्गा चुरा ले गई है तो खैरियत नहीं। वह मुर्गा जब दूर से अस्पष्ट लग रहा है कि कुछ टेवा के पोखर के किनारे जंगल के भीतर चला जा रहा है तब जोटन से बिना दौड़े रहा नहीं गया। इतना अरमान लिए इतनी कोशिश से वह मुर्गा पकड़ कर ले आई थी आबिद अली को खिलाने के लिए और अब हाथ उस मुर्गे में चैतन्य का उदय हो गया। क्या होगा। इसलिए दौड़ना ही बेहतर होगा। मुर्गा पकड़ने के लिए जोटन घुटनों तक कपड़ा उठाये दौड़ने लगी। दौड़ते-दौड़ते टेवा के पोखर के किनारे फिर जंगल के भीतर। और अंत में उसे रास्ता ढूंढे नहीं मिल रहा था। मुर्गा अगर पेड़ की डाली पर खामोश बैठा हो इसलिए ताक कर देखने लगी।

उस समय मुर्गे का गला छोटी बीवी ने धर दबाया था। हाजी साहब की छोटी

बीवी ने मुर्गे का गला काटकर हाथ म मजबूती से पकड रखा है। छोड देते ही कुक कूड़ कर उठेगा। उस समय जगल जगल म जोटन भटकती फिर रही थी, हाय मुर्गा तू कहा गया। झाप जगल म मुर्गा ढढने आकर जोटन माथा ठोकन लगी। उस समय उसे ख्याल आया कि मुर्गे की कलगी लाल रग की है और झाडी के भीतर कोई चीज लाल रग की दिखाई पड रही है। लालच म आकर वह घुटनो के बल झाडी म घुस गई। लेकिन घुसकर देखा पेड की डालिया पर मौलसिरी के लाल लाल फल। इस पड पर असमय ही मौलसिरी फला है। दो चार पके फल जमीन पर पड हैं। एक बिल्ली या कुत्ता इस बाग के भीतर घुस गया। जाडे की धुधली धूप म दूर से कुत्ता बिल्ली या और कोई जीव है इसका पता नही चल रहा था। जोटन ने सोचा था उसका मुर्गा भाग रहा है। नाक के बदल नह नी मिलने जसा ही जोटन ने मुर्गे के बदले मौलसिरी के फल उठा लिए। वही फल उसने लाकर फातिमा के हाथा म दिया था और कहा था—ऐसा अनोखा मौलसिरी का पेड उस जगल म छिपा खडा है।

पेड ढूढने आकर सोना को भय सताने लगा। उसने कहा मुझ डर लग रहा है फातिमा।

—डर किस बात का। आप आवें कहकर फातिमा सोना का हाथ थाम पाकड वक्ष की ओर देखन लगी। बड-बड गिद्ध वे आतमनीत स बठे है। उस दरख्त की आर दखते ही सोना का डर बढ्ता जा रहा है। सबस ऊची डाली पर गिद्धा का सरदार गिद्धराज बठा है—यह उन लोगा ने दखा। वह राजा जसा ही उम ऊचाई पर बठा सगरे ससार म कहा कौन सा जीव मरा पडा है हवा सूघ कर ताडने की कोशिश म लगा है। दूसर गिद्ध डेना म चोच डाल शायद सो रहे हैं। किसी किसी न गदन नीची कर उनको देख लिया—कठपुतलिया जस नहे नह दो मनुष्य-कुल क जीव नीचे खडे हैं। सिफ गिद्धा का राजा हर वक्त जागा हुआ है। वह भूख क लिय शिकार का पता बतायगा। वही अकेला मुह ऊचा किय आकाश के दूसर सिर पर क्या उडता जा रहा है कौन उडत जा रह हैं—और अगर मुर्दे जीव की गध उड आती वही पहल पहल हवा म दो डन फला दगा, फिर आकाश म उडन लगगा—और तब एसा लगन लगगा कि निर्वाण प्राप्त करने के लिए य बड-बडे पक्षी किसी अदृश्य जगत की खोज म उडत जा रह हैं।

लकिन गिद्धराज उडा की बजाय महज झुक-झुककर उनको और झाक रहा

है। फातिमा जसी लडकी जो अकेली कछार पर बकरा ले आती है, सिर पर ब्याल लेकर खेतो म जाती है, जिसे भय डर छू नही गया है पटसन के खेत बडे होन पर या सुनसान खेता मे जब पटसन के बिरवे फातिमा के सिर से काफी ऊचाई पर चले गय हैं जब सामने मेड वाला रास्ता सिर पर माग की नाई, दोनो ओर पटसन क बिरवे घने वन का रूप ले लेते और बसे रास्ता पर फातिमा बकरे की रस्सी थामे अकेली चलती रही है—वही फातिमा तब डर गई। गिद्धो के राजा ने ज्यो ही धावा दया त्यो ही सोना बाबू का हाथ थामे उसन दौडना चाहा।

माना यह दरख्त कहानी का वह सदर डयोढी ह—यह दरख्त राक्षस जैसा सदर डयोढी के पत्थर पर है। सदर डयोढी तय कर जाने ही फूल फल राजकन्या मिल जाएगे। फातिमा उन फल फूला के लिए हिम्मत बटोर कर और उस अनोखे जगत के लिए सोना बाबू को ठेल ठालकर पछिया के पर मछलिया के काटे, आदमी की हड्डिया, चिडियो की बीट आदि पार कर जगल के भीतर चली गई। भीतर रग बिरगी छोटी छोटी चिडिया उड रही थी। परिंदे बोल रहे थे। तित-लिया उड रही थी। एक गिरगिट कलप्-कलप शब्द कर टहनिया स पत्तिया पर चढ गया और उनकी ओर देखने लगा। जगह बिल्कुल सुनसान है और सोना अपने को बिल्कुल निस्सग बोध करने लगा। कही भी किसी मनुष्य की आहट नही मिल रही है। कोई दूर लकडी काटता ही चला जा रहा है—उसी की आवाज सुनाई दे रही है। कान पसारो तो ढाक ढाल की आवाज भी सुनाई पडती। ऐसी जगह पहुचकर वे पहली बार एक दूसरे की ओर बरबस आखें उठाकर देखने लगे।

फातिमा न कहा, सोना बाबू मैंने आपको छू दिया है। घर जाने पर नहाना पडगा।

सोना ने मा क डर स कहा तूने मुझ छू क्या दिया?

—मैंन छुआ कि आपने? नथने पर कील क्या आपने नही देखी?

—मा सुनगी तो मुझे पीटेगी। सोना की आखा पर वह दृश्य अब तर गया। उस बरसात म। फातिमा के आचल मे उसने तितली बाध दी थी तो मा ने उसकी खूब पिटाई की थी। फातिमा की बातो से सोना को वाकई डर सताने लगा। कहा तू बताना मत। मैंने तुझे छू दिया है यह अम्मा से मत बताना।

—मैं काहे को कहू।

—कहने पर अम्मा जरूर मरी ठुकाई करेगी।

—अभी नहीं कहूंगी।

—तीन सच।

—तीन सच।

सोना मानो अब जरा निश्चित हो गया। फातिमा न बताए तो यह बात किसी को मालूम नहीं हो सकेगी।

चारों ओर बड़े-बड़े पेड़। अजीबोगरीब पेड़। झाड़ी झुरमुट लता लतर से कहीं-कहीं घना जंगल बन गया है। वे उस अरण्य के भीतर मौलसिरी का पेड़ ढूंढ़ते फिर रहे हैं। वे मानो कहना चाहते हों, वृक्ष, तुम इतने दिन तक किसके थे?

वृक्ष ने उत्तर दिया राक्षस के।

—अब किसके हो?

—अब तुम लोगों के।

—तो फिर तुम हमें फल दो। मौलसिरी का फल।

पग पग वे बढ़ते चले जा रहे हैं। जल्दी बढ़ नहीं पा रहे हैं। चारों ओर मानो जंगल का कोई अंत नहीं। इस जंगल के भीतर से मानो कितनी ही दूर बढ़ते चले जाना। पर वे नीचे सूखी घास पत्तियां। कितने लंबे अरसे से लोगों द्वारा वर्जित यह स्थान। वे कभी घुटनों के बल तो कभी कंटीले पौधों को पार करके छोटी छोटी कुलांचे भर रहे थे। और मन ही मन किस्से-कहानी की तरह कहना वृक्ष तुम किसके थे

—राजा के थे।

—अब किसके हो?

—अब तुम्हारे।

—तो फिर फल दो। मौलसिरी फल।

वृक्ष कभी तो राक्षस का है तो कभी राजा का। वृक्ष—ओह वृक्ष। वे वृक्ष वृक्ष कर चिल्लाने लगे। वे वन के भीतर हांक लगाते फिरते रहे। वे सिर्फ उस पेड़ की टोह में हैं। सबसे ऊंची शाख पर बैठे गिद्ध चीख रहे थे वन में विचित्र सारे शब्द उभर रहे हैं—घस्स घस्स—डालियों पर चिड़ियों की चहचह थी और थे दो बालक बालिका। वे मन में डर समोये मौलसिरी पेड़ के लिये चले जा रहे हैं।

और ऐन उसी वक्त उन्हें लगा वन के भीतर कोई या कौन सब हुम हुम् शब्द

बरत लगातार उनकी ओर बढ़ते चले आ रहे हैं। दादी के मुँह सुनी कहानी के भूत प्रेत या डायन डाकन की तरह। फातिमा ने फुसफुसाकर कहा, सोना बाबू वो सुनिए।

सोना एक मरे पेड़ के तने पर बैठा था। उससे अब चला नहीं जा रहा था। पैर दुख रहे थे। पैरों में काटे गड़े हैं। उसको लगा यह सब छोड़ छाड़ कर खुले मैदान में चला जा सकता होता तो अच्छा होता। लेकिन बेवक्त के मौनसिरी फल के लिये मन ही मन बड़ा शौक है। ले जा सकें तो बड़े दा मझले दा की आखें भरी हो जायेंगी। मुझको एक दे दे, सोना बड़ा नेक लड़का है दे दे, एक तो दे दे कहकर बड़े दा मझले दा उसके चारो ओर मंडराते रहेंगे। फातिमा भी बड़े अरमान लेकर इस वन में भाग आई है फल लेने के लिये लेकिन वन के भीतर वह हुम् हुम् शब्द क्रमश आगे बढ़ता आ रहा है।

जंगल के भीतर वे चुपचाप बैठे थे। उनके भीतर एक आतंक—अब की बार कुछ न के रहेगा। भागने में वे घने पेड़ पौधों के बीच लगातार खाते चले जा रहे थे। यह जंगल भीतर ही भीतर इतना बड़ा है यह उनको मालूम नहीं था। जंगल के भीतर दाखिल होते ही वह पेड़ सदर ड्योढ़ी के सिपाही की तरह उनके सामने खड़ा रहेगा और मौनसिरी फल से उनकी अंजुरी भर देगा ऐसी ही एक धारणा थी उन लोगों की। लेकिन हाय अब वे इतना भीतर घुस आए हैं कि किधर जाने में मैदान और परिचित पथ मिलेंगे यह समझ नहीं पा रहे हैं। फातिमा का चेहरा खुश्क सा लग रहा है। जंगल भर में वही आवाज घूमती फिर रही है। लग रहा है कि इस जंगल में कोई या कुछ प्राणी रह रह कर अचानक ही ठहाका लगा उठते हैं। दादी के किस्से की तरह मानो कोई कह रहा हो हाऊ माऊ खाऊ मानुस की बू पाऊ। वे डर के मारे, मौत के भय से आखें बंद किये सामने की घास फूस टहनी जंगल जो कुछ भी मिल रहा है सब-कुछ हटा कर दौड़ रहे हैं। लेकिन बाहर का खुला मैदान अब भी नहीं दिख रहा है। सूखी टहनियाँ चिड़ियों के पर मछलियों के कांटे और मनुष्य की हड्डियां पार कर बस भागते ही रहे। लेकिन सामने अब कोई रास्ता नहीं फिर पीछे की ओर भागो। लेकिन वह ठहाका पीछा कर रहा है तो करता ही जा रहा है। शाखा प्रशाखायें सांप जगत लाघ कर उनको पकड़ने के लिये चला आ रहा है। सूरज के अमित तेज जैसा ही वन के भीतर वह एक ठहाका पेड़-पालो तोड़-ताड़

कर दुम दाम शब्द करता उपत्त-पुयल मचाय फिर रहा है।

उस समय मदान म हुम् हुम् शब्द। राज राजेश्वर की जय। जय मनेश्वर की जय। जाने कौन लोग मदान से ऐसा महत हुय चल जा रहे हैं। सोना डर के मार पेड़-पौधा के भीतर छिप गया। और फातिमा भी जगल म मुह छिपा कर लेट गई। और मुह उठाते ही देखा कि झाडी की सध से खुला मदान दिखाई पड रहा है। करीब चालीस पचास लोगा का एक जत्था खुल मदान म चल जा रहा है। सोलह आदमिया ने बास म कटा भसा लटका दिया है। चार पर बध कटा हुआ भसा मरे हुए गाय-बछिए की तरह ही झूल रहा है। पट के बिलकुल बीचो बीच सिर रखा है। सिर म आखें खुली रख छोडी हैं और कान लटकत हुए। और फसल शून्य खेत देखते हुए वे चले जा रहे हैं। वे लोग जय मनश्वर की जय, जय राजेश्वर की जय कहते हुये चल जा रहे हैं। व दोना झाडी के भीतर मानो दम साधे पडे हैं। भयकर दृश्य अब केवल आखा के सामन तिर रहा है। उनके गले ऐसे खुश्क हैं कि वे आवाज तक नही दे सके। वे बोल नही सके कि हम झाडिया म फस गये हैं। किसी तरफ रास्ता ढूढे नही मिल रहा है कुछ देर और रहे इस तरह तो हम लोग मर जाएगे।

लोग कटा भैसा लेकर चले जा रहे है। पीछे जो लोग आ रहे हैं उनके सिर पर दाल चावल। एक समूचे भस का मास खान लायक दाल चावल सेर। व शीतलक्षा नदी के तट स आए है। पूजा का प्रसाद भसे का मास फेंका नही चाहिये। इसलिये शीतलक्षा के तट स य सब लाग आए हैं यह कटा भसा ल जाने के लिये। भसा लेकर वे पालकीवाला की तरह हू हुमना—दुल्हा के साथ दुलहिन जाय हू हुम ना मानो भसा के पेट पर कटा सिर जाय हू-हुम्ना करते जा रहे हैं। बडा ही भद्दा है यह दृश्य। मुडशून्य भसा पेट पर मुड लिये हिलते डोलते जा रहा है। उस समय जगल के भीतर डाली टहनिया तोडते-फोडते कौन रौदता फिर रहा है? ठहाके पर ठहाका। ऊची डाली पर गिद्धो की कराह झीगुर का तान और डालिया टूटने की आवाज—उन दोनो ने मारे डर के अब आखें मूद ली। क्योकि जगल के भीतर से वह ठहाका अब आकर उन पर टूट पडा है। उन दोना को सख्त दो बाहा स समेट लिया है। जमीन से ऊपर उठाये ले रहे है। मानो दो गुडियें हो। सोना चादी की गुडिया। वह देव दोनो कधो पर सोने चादी की दो पुत्तलिकाओ को बिठा वन से बाहर निकल आया। तब दोना

डियो की जान मे मान जानो आई और वे खुशी से झलमला उठे। दत्य भी नो इतनी सारी खुशी दोनो हाथा मे समा नही पा रहा था। चिल्ला उठा चोरेतुसाला।

उस समय भी ढाक वज रह हैं ढोलक बज रहे हैं। वास्तु पूजा खत्म होते ही ी पूजा का मेला है। मले की दूकान कटार से होकर जा रही हैं। कधे पर म लिये लोग जा रहे हैं। सिर पर तिरपाल ढो कर लोग जा रहे हैं। सुनहरे त वाली नदी म जान कितने सौदागरों न इस समय नाव खोल दी। बादबान न कर खाडी के रास्ते वे ब्रह्मपुत्र म जा पहुचेंगी। इसक बाद फिर मोड लेते ही ह विशाल थील—पाच कोस पर थील है। कूने का पानी थील म गिरता। ल पार करत ही मेला का थान है। बडे काठ का पुल पार करने ही थनेश्वर ा मदिर। मदिर के बगल म सकम का तबू ताना गया है।

पागल ठाकुर को अब वह थील याद आ रही थी। सोना और फातिमा का ाकर उन्होने मदान में छोड दिया। सोना का सारा भय डर हवा हो चुका है। ातिमा भी ही ही हस रही है। घर लौटन क लिये वे दौडन लग। बेला ढलने गी है—जाडे की बला। शम्सुद्दीन ढाका गया है। आज ढाका से लौटने की ात है। फातिमा तेज दौडने लगी। ढाका स अब्बाजान काच की चूडिया खरीद ायेंगे। लौटकर अगर उन्होंने फातिमा को घर पर न दखा तो बेहद खफा होंगे। ान की बालिया लाएगे। अम्मी के लिये धारीदार साडी। अब्बाजान वक्त वक्त ढाका चले जाते हैं। दो चार दिन के बाद लौट आते हैं। सयानी हो जान र फातिमा उस ढाका शहर म जाएगी। चलत चलत फातिमा न यह सब कह मुनाया।

सोना न कहा, मैं भी जाऊगा। बाबू ने कहा है कि बडे हो जाने पर मुझे भी ल जायेगा वह।

—अब्बाजान न कहा है कि मुये सदर घाट का तोप दिखायेंगे।

—बाबू न कहा है मुझे वह सदर घाट का तोप दिखाएगा। रमना का मैदान दिखाएगा। बूढी गगा के पानी म नहलाएगा।

—अब्बाजान ने कहा है कि पढ लिख लू तो व मोटर की सवारी कराएगे।

—बाबू ने कहा है कि कक्षा म अव्वल आने पर वह मुझे रेलगाडी पर बिठा कर ढाका ले जायगा।

—रेलगाडी छोटी होती है। गोना बाबू छोटी गाडी मे जायेगा।

—मोटर गाडी रेलगाडी से छोटी होती है।

—हा तुमसे बताया है जसे ? सोना के सामन जाकर फातिमा न मुह बनया।

—तू कुछ भी नही जानती छोकरी दू एक थप्पड।

—दे तो भला। थप्पड देंगे। आपकी मा स बताकर आपको पिटवा नही दूगी। वह दूगी कि सोना बाबू ने मुझ छू दिया है।

—मैंने तुझे छू दिया है यह कहेगी तू ?

—तो फिर मोटरगाडी को छोटी क्या कहत हैं ?

—फिर न कहूगा।

फातिमा ने दर नही लगाई। इस बाबू पर विजयिनी बनकर वह उल्लास स दौड रही है। सिर के बाल उड रहे हैं। कमर से धारीदार साडी खुली जा रही है। भागते भागते ही किसी तरह कमर से लपट ल रही है किसी कदर साडी सभाले परो म पाजेब बजाती दौड रही थी। परो मे पाजेब चादी के पाजेब क भीतर लोहे के छोटे छोटे दाने। फातिमा दौड रही थी और पर के पाजेब झम झम बज रहे थे। दौडती हुई दो बार पीछे पलट कर देखा। जरा भी हिल नही रहा है एक ही जगह खडे क्षोभ और दु ख स सोना बाबू बिदक रहा है। फातिमा विजयिनी की तरह पलट कर उछली चली, दा पग बढ कर फिर छलाग मारी उसने। फिर घूम फिर कर मदान म आतिशबाजी की चरखी जसी ही मदान म फिरकिया लगाने लगी। मानो एक चचल खरगोश ताजा घास का एक कौर खा रहा है और टो कौर जाया कर रहा हो। फातिमा मदान पर चचल खरगोश की तरह ही दौड रही थी। लेकिन मन ही मन साना जिस सोना बाबू के जिस्म से हरवक्त चदन का बास चिपका रहता जिस सोना बाबू का चेहरा घास जमा ही नम है कले के नन्हे पत्ते जसा ही जो शर्मीला हो वस को मदान म अकेला छोडकर जाने म फातिमा का दिल दुख रहा था। फातिमा जब खडी हो गइ। पीछे पलट कर उसन पुकारा आइए मैं ठहरती हू।

साना ने गुस्सा और खीझ से कहा नही मैं न जाऊ।

फातिमा न भी खुली आवाज मे कहा आप न आन पर मैं भा नहा जाऊगी।

दा जने दो सत के सिरे पर खडे रहे। सोना किसी कदर हिल ही नही रहा है। फातिमा भाग कर सोना के पास चली आई।—चलिय।

—नही, मैं न जाऊ।

—चलिए। मान लिया आपकी रेलगाडी ही बडी है। इसके बाद भी फातिमा ने और कुछ कहना चाहा था। पर कह न सकी। या मन के भीतर ऐसी बात भी झाकने लगी—मेले मे जाने पर हम लोग रेलगाडी मे जाएगे। बडी गाडी अगर न हो तो हम दोनो जाएगे बस। लेकिन फातिमा को यह प्रकट करने की भाषा ढूढे नही मिली। वह कुछ देर चुपचाप खडी रही। फिर सोना का हाथ थाम कर उसने कहा मुझे कार्तिक पूजा का एक छिराघट देंगे।

—दूगा।

—आइए अब खेतो मे दौडा जाय। एक दूसरे का हाथ थामे कुछ देर दौडने के बाद उन दोना ने देखा पोखर के भिंड पर मालती। उन लोगा ने झट हाथ छोड दिया। हाथ छोड दोनों दो ओर दौडने लगे।

वह जो ढाक-नगाडे बज रहे थे ढोलक बज रहे थे व रुक नही। पचास ढाक बजाने वाले लगातार गदन टेढी कर बजा रहे हैं तो बजाये जा रहे हैं। सरकार घरान की वास्तु-पूजा इस जवार मे मशहूर है। लोग-बाग की इतहा नही। नाते रिश्तेदार, गाव के लोग कुछ गरीब रियाए और सारे मातबर लोग हाथा म लाठी लिए घूम फिर रहे हैं। पोखर किनारे हजार-एक लोग होग—दूर दूर के गावो मे व लोग आए हैं। धोबी, नाऊ नमशूद्र। व पत्तल बिछाकर खिचडी खा रहे हैं। और मदान म भसा जा रहा है—माना पालकी लाद कहार जाते हो। मुसलमान गावा क निकट स जात समय वे शिव शकर की जय, राज राजेश्वर, यनेश्वर की जय ऐसा नारा लगाते चले जा रहे थे। पट पर अपना मुड लिये भसा चल रहा है। सता मे, मदान के घास पर बूद-बूद खून टपक रहा है—हम लागा का धम सनातन है इतना रहा भसा इस जवार म बलि नही चढाया जाता। इतना बडा खडग इस इलाके म किसके पास है। और इस धम जसा पूत-पवित्र और है भा। क्या—जय राज राजेश्वर यनेश्वर की जय। झील के बगल से जाते हुए ये लोग कटा भैसा बास से लटकाये जय ध्वनि कर रहे थे। झील म वे गरीब दुखियारे लोग, जो लोग कमलकद भसीड निकालने आकर जल के भीतर सफेद पडते जा रहे हैं—हाथ-पर ठडे—और जाडे स लस्त-पस्त हुए जा रहे है और जो लोग बीच-बीच म किनारे बठकर धूप ताप रहे थ, उन लोगा ने कगार पर देखा बूद-बूद पछिया के एक दल की तरह लोग कधो पर भसा लिए चले जा रहे हैं। लेकिन

ही मच्छ ने आकर उसके सीने पर धक्का मारा।

अब जलाली का दम घुटने लगा। पानी के भीतर वह अनिकाय मच्छ तडफडा रहा है। इस कारण पानी म भवर उठ रहे थे। और जल के भीतर जलज घास और लतर सरपत आदि उलट पुलट कर दुबली-पतली जलाली स लिपट गय। अतिम बार उसने ये घास लतर आदि के बधन स मुक्त होने के लिए दो बार कोशिश की और इस दौरान उसने एक डकार ले ली। बडी सी सास लने को होकर बहुत सारा पानी लील गई। फिर उठने को होकर जब नाकाम रही तो पानी के भीतर ही सास लेने की कोशिश म उस लगा सारी दुनिया का पानी पेट म भरता जा रहा है। जितना ही वह अधेरे म कुइ के लतरो और कमल के तना से अपने को मुक्त करना चाह रही थी और यातना से छटपटा रही थी उतना ही वे लाल लाल आखें बडी होते होते आग बन गइ। फिर फस्स् स बुझ जाने के समान, जल के साथ जल मिल जाने से जसा होता है बिलकुल वसा ही आग के वे दोना गोले जल के साथ मिलकर एक कुसुम सा रग लेकर थोडी देर तक उजागर रहे। फिर जलाली की प्राणवायु जब बुल्ला बनकर पानी के सतह पर आ गई तब वह कुसुम का रग भी नही रहा। गदला जल क्रमश थिरा जाने लगा। जलज जगल घोप वाडिया लतर घास आदि पानी के नीचे खामोश हो गये। अब वे हिल नही रहे हैं। उन लतर व घासो मे एक मनुष्य फस गया है। जलाली अब एक अजीब प्राणी सी लग रही है। उसके गदन व गले से लताय लिपटी हुई हैं। परो के नीचे और सीने के चारा ओर असख्य कदब पुष्प जसे जलज सिवार चिपके हुए हैं। जलाली पट पडी है। दोना पर ऊपर की ओर सिर नीचे की ओर रख किय। एक छोटी सी मछली रुपहली चिलक के साथ जलाली के नाक मुख और स्तन पर गुदगुदी दे रही है।

गजार मच्छ हिल नही रहा था। वह दूर पूछ ऊचा किये सारी घटना देख रहा है। जब उसने देखा कि वह अजीब जीव लतर सिवार म फसकर फिर हिल नही पा रहा है तब उसने विजयी की तरह अपने अडडे के चारा ओर चक्कर लगाया। फिर फुर्ती से डने हिलाकर तीर की नाइ दक्खिन की ओर भागन लगा। सभी को मानो यह सदेशा देना है—आकर देखो, अपने आवास पर मैंने एक अनोखे जीव को गिरफ्तार कर लिया है।

वह मच्छ इतना बडा है और माथ पर सेंदूर पुता हुआ लगता है—जाने

कितने दिना का प्राचीन मत्स्य हो। मच्छ के शरीर पर कितने ही मनुष्या के ताजिदगी काच या भाले के शिकार चिह्न हैं। मच्छ के दाहिने हाठ पर दो वुआर के कटिये लोलक जस झूल रहे हैं। मच्छ की देह पर कोच के छोटे छोट झाव। छून पर एक-दो नही कई टुकडे मानो उसक मास के भीतर स निकाले जा सकत हैं। वही मच्छ अब उल्लास और जोश म झील म जल भेद कर आसमान की ओर उछल पडा। इसके बाद किनारे खडे लाग जो पतीली अकेली वहती जा रही है देखकर हाय-हाय कर रहे थे उन लागो न देखा झील के जल मे एसा एक मच्छ नहीं, हजारो-लाखो मछलिया उस प्राचीन झील के जल का भेद कर आसमान की ओर जा रही हैं। और उतर आ रही हैं। भय और विस्मय से लागा न दखा अनत जलराशि के भीतर बडे-बडे राक्षसीय गजार मच्छ घडियाल जसे पानी की सतह पर उचक आए हैं। वे मानो सभी को चुपके से चेतावनी दे रहे हों—अरे भाइयो देखो, देखो हम लोगो का तमाशा दखो। हम जल के जीव हैं हमारा सारा सुख जल म है।

सूय अस्त जा रहा था। झील के जल म सूय का रग लाल है। आकाश म लाल रग। लोगा के चेहरा पर आग जैसा ही दमकता एक रग है। गरीब दुखियारे लोग लाचार-सा मुह बनाये खडे हैं। जाडा प्रचड ठड। उत्तरी हवा म सारा ठड इस झील पर चीटियां कर आ पडी है। पानी म गाता लगा-लगाकर उनके हाथ-पैर पत्थर पड गये हैं। वे एक साथ उन हजार-हजार गजार मच्छा का पानी फाडकर आसमान की ओर उछलना और फिर गोता लगाना दख रहे हैं। ऐसा होता है। वही प्राचीन बूढ़ा जिसके जिस्म पर प्राय कोई लिबास ही नहीं जो आग जलाने के लिए घास-फूस इकट्ठी कर रही है आग न जला सकने पर और अगाछा-सी तार तार साडी सूखा न ले सकने स जा इस प्रचड ठड म झील के किनारे ही मरी पडी रह जाएगी वह घास फूस म आग सुलगाकर फुसफुसी आवाज म कह रही है—क्या कुछ कह रही है कुछ पल्ले नहीं पडता सिर्फ मुख की ओर दखा तो कुछ भापा जा सकता—मानो उस यही कहने की इच्छा हो, अरे इसान के बेटो, इसान की औलाद तुम लाग इन मछलिया का खेल दखो। खुशी के दिन वे किस तरह एक साथ घूम फिर रहे हैं जरा देखो। ऐ लागो तुम्हे पता नहीं नूह नाम के एक पगबर न पानी म नाव डाला था। उस महाप्लावन के दिन की याद करो। शायद एसी ही सारी बातें घुमा फिरा कर बुन्या बताना

चाह रही थी। लेकिन यह गव न्हा का मतलब क्या है ? जमाली, जिसका ग्राविद है आविद अनी ओर जा गहोता राव का मानी है उसी की यादी इस वक्त पानी क नीच दा परिश्ता की रागनी को मुतजिर है उसक लिए उस महा प्लावन की खबर क्या मायन रखती है। निराशा किसी न भी पूजा की आर फिर न देखा। सभी ठन्ड म उस आग क लिए गसताप। सभी लाग सहसा जमाली के डूब मरने की घटना को भी भूल गय। व सब अना लिए ही व्यग्र हो उठ। झील क किनार स घास फूस लाकर सूखी हुई पास-पत्ती-टहनी झाड़ ना कर क्वार कर वे आग म झारन लग गय। झील म क्रमश सूय डूबता जा रहा है। इस किनारे आग अब लपलपाती गिर क ऊपर उठकर आसमान छू देना चाहती है। कसी लपलपाती जीभ है। उस आग की प्रचड गरमाई पाकर लगा कि य हजार मछलिया झील की ओर चली जा रही हैं।

उस समय तट पर विशालकाय पागल ठाकुर खड़े हैं। आग देखकर सर्दी दूर करने क उस ओर नही लपक। केवल हाथ मसलकर उन्होंने कहा गत्चोरेत्साला। क्योंकि झील म आदमी डूब गया। दो कमर कलियां नीच आदमी डूब गया। डूब डूबकर कमलक्द उखारने म फिर वह आदमी ऊपर नहा उठा।

सर्दी की वजह स किनार क लोग आग को घेरकर गाल बनाय खड़ हैं। झील की वह पतीली अब हिल नही रही है। हवा ठण्ड हो गई है। दूर कमल क पत्तो क बीच पतीली बहते-बहते ठहर गई। झील के जल म सूरज डूब रहा था इस कारण क्रमश जल रक्ताभ, फीका रक्ताभ फिर और फीका पडते पडते बिल्कुल नीलाभ हो गया। नीला स हरा और बाद म काला जल। अब यह अनत जलराशि स्थिर सी लग रही है। पानी म कोई बुल्ले नही। सर्दी स सहमकर मछलिया भी हिलन डुलने की हिम्मत नही कर रही हैं। पागल ठाकुर ने किनारे खडे होकर फिर उच्चारण किया गतचोरेत्साला।

भसे का कटा मुड उसी प्रकार झील म पडा रहा। जो लोग कटा भसा लेकर शीतलक्षा की ओर जाएगे उनके लिए शायद यह कटा मुड कतई लुभावना नही। यह मुड इधर उधर कही गिरा ही देना चाहिए। भसा का सभी मास कोई खाने लायक होता नही। फिर भी लेना ही पडता है। प्रसाद छोडना नही चाहिए। मुड लेने पर दाल चावल की तादाद बढ जाती है। इसलिए इस झील के भीतर भसा के कटे मुड ने आग की गरमाई से दोनो कान खडे कर लिए। अहा, जाने

कब जाड़े के सवेर इस अवाले नन्हे पडव को नहलाया गया था, तेल सेंदूर माथे पर चुपडकर ताजा घास खाने को दिया गया था। गले म कनर की माला। पैरा म लाल अडहूल की माला बिलकुल घुघरु जसी। मानो धमक्षेत्र म यह भसे का बच्चा अब मृत्यु नत्य नाचेगा।

भसा का यह बेजुबान बच्चा जाडे की सुबह नहाकर यूप के पास लेटा था। ठड के मारे हिल नहीं पा रहा था। राजा की तरह ही उसकी खातिरदारी। छोटे छोटे नन्हे मुन्ने नय कपडे लत्ते पहिनकर या खूबसूरत कमसिन लडकिया नए फ्राक पहनकर उसके सामन घास रख गय हैं। सारी सुबह उस कितना लाड दुलार मिला था। बूढ़े पुरोहितजी सिर पर बडी मो चुटिया चुटिया म रक्त जवा बाध सर भर घी लेकर जा बठा तो उठा ही नहीं। भसा के गल-गदन म घी मलत हुए वह चवर चवर पान चबा रहा था। गले गदन म घी मलकर मास का भीतरी हिस्सा नम किय दे रहा था। कहीं खडग अटक न जाय। सफल बलिदान के लिए कितनी जानतोड कोशिश। लेकिन इसस क्या होता, भसे की प्राणवायु गल म अटकी हुई। कोई भी खाना बस्वाद। ढाक-ढोल के बाजे गाजे स धूप गुग्गुल के सौरभ स, चदन क वास स, फूल बलपत्ती की गध स और बीहड ठड स वह भसा दिन भर बठा निष्प्राण था। अब जरा सी आग की गरमाई पाते ही कट मुड ने कान खडे कर लिए। यह सब देखकर पागल ठाकुर स बिना हसे और बिना कहे रहा नहीं गया—गतजारेतमाना।

उस समय गाव गाव म खबर फल गई—इस साल भी झील के पानी म आदमी डूबकर मरा है। ऐसा कोई साल नहीं गुजरता जब कोई न कोई आदमी इस झील क जल म डूबकर न मरा हो। किवदन्ती की धारा का माना चालू रखे हैं। लिहाजा चारा ओर खबर चली गई—इस फाओसा की झील म जो बील विशाल है जिस बील की थाह नहीं ढूढे मिलती जिस झील म चलने पर लोग रास्ता भटक जाते हैं उसी झील म इस साल आबिद अली की बीवी जलाली डूबकर मर गई। टोडर बाग का आबिद अली बरसात म चला गया था गहोना नाव खेने अभी तक लौटकर नहीं आया। जब्बर बाबुरहाट गया है। इसलिए किसी को भेजा जाय वर्ना झील म लाश उठाई नहीं जा सकेगी। कहा किस पानी म वह डूबी पडी है या किंवदती का वह राक्षस जलाली को लेकर कहा गायब हो चुका है कौन जाने।

गीत वाले लोग आग बुझ जाने के बाद अपने अपने गाव की ओर रवाना हो गय। अब झील पर जुहाइ उतर आएगी। सारी झील रात भर जुहाई म डूबी रहेगी। पतीली तरते तरते कभी ओझल हो जाएगी। बयार चलने पर वही पहाड जसी काली चीज थील के नीचे से ऊपर उझक आ सकती है। कौन सी चीज है कौन सा जीव, वहा उसका निवास है—दैत्य दानव ह या और कुछ यह समझना मुश्किल है। किसी किसी ने उस जीव को देखा है ऐसी एक प्रचलित धारणा है इस इलाके के लागो म। झील के किनार किनारे चलन पर ही यह बात याद आ जाती है। इतनी बडी झील और काला जल देखकर मानो कुछ भी अविश्वास नही किया जा सकता। प्राचीन झील—कहावत है कि नवाब इशा खान इसी थील म सोनाई बीवी का लकर मारपखी नाव म कितनी ही रातें कलागाछिया के किल की ओर मुह किय बठ रहते थे। बाद राय केदार राय ने कलागाछिया के किल को नष्ट भ्रष्ट कर दिया है। सोनाई का उद्धार करन हर जल म सप्त डोगी चल पडी—सोनाई के उद्धार के लिए सात सौ मकरमुखी जहाज जल पर बादवान तान दिये हैं। वृद्ध इशा खान के मुख पर फकीर दरवश की तरह लबी दाढी। उसके सिर पर सोन का झालर कमर म तलवार और पीछे काले रग के बुरके म प्रतिमा सी सोनाई सोनाइ बीवी—दोना आखाकी दृष्टि टक टकी लगाये सामने। वे झील मे छिपे हुए थे। इस रूपोश रहने की तस्वीर किंवदन्ती के गीत जसा ही विश्वास म बदल चुकी है। इसलिए तमाकू पीते हुए फेलू ने सोचा जलाली अब किंवदती क देश म जियाफ्त खाने चली गई है। नवाब इशा खान सोनाई बीवी वह पहाड जैसा देव और थील के हजार हजार राक्षस सरीखे मजार मच्छ फरीश्त सभी नूर म पानी के नीचे राह दिखाते जलाली का नवाब के महल के जनानखाने म ले जा रहे हैं।

इस समय केवल पागल ठाकुर ही किनारे अकेले खडे हैं। शुरू म पतीली जिस जगह थी और जिस जगह जलाली न डुबकी लगायी थी उस ओर वह टकटकी लगाय देख रहे हैं। दाहिने ओरकी बसवारी पार करने म उतरकर पानी म जाना पडता है। कमल की दो बडी कलिया पानी स ऊपर निकल आई हैं और ऐन उसी के पास आखिरी बार डुबकी लगाकर जलाली फिर उठ नही सकी है। पतीली बहती हुई दूर निकल गई सो दिखाई नही पडी। जुहाई म सब कुछ ओझल है। बिलकुल परो के नीचे ही वह कटा मुड है। कटा मुड मुह बाय पागल ठाकुर की

ओर देख रहा है। मानो कुछ कहना चाहता हो। रक्तबीज का वश है। जहा कही भी खून का एक कतरा गिरा वहीं वह रक्तबीज दैत्य हजार-हजार लाखो लाख पदा हो गये। रक्तबीज असुर मा ही यह कटा मुड मानो प्राण पाये जा रहा है। पागल ठाकुर हैरत स देख रह थे देखते देखते उनको लगा भैंस का मुड उनसे प्रश्न कर रहा है क्या देख रहे हो ठाकुर?

पागल ठाकुर बोले मैं झील पर जुहाई देख रहा हू।

—ठाकुर जुहाई के अलावा और क्या देख रह हो तुम?

—तुमको देख पा रहा हू।

—मैं कौन हू?

—तुम एक बेजुबान जीव भसा हो।

—क्या भसा म प्राण नही होता ठाकुर?

—होता है।

—तो फिर तुम लोगो ने नाहक मेरी हत्या क्या की।

—तुम्हारी हत्या नही की गई है दवता क नाम तुमको उत्सग कर दिया गया है।

—कौन है वह देवता?

—देवता विश्व का नियत्रण कर रहे हैं। प्रकाश दे रहे हैं फूल खिला रहे हैं। ससार के तमाम पापो को पोछकर सबके घरो म पुण्य दे रहे हैं।

—क्या और भी कुछ नही कर रहे हैं?

—और भी बहुत कुछ कर रहे हैं। जीवो का पालन पोषण सृष्टि स्थिति लय सब उन्ही क हाथो म ह।

—तो मैं केवल एक निमित्त मात्र हू। भोग का निमित्त।

—निमित्त मात्र। भोग का निमित्त।

भैंसा इस बार हस पडा।

पागल ठाकुर ने कहा तुम हस क्या रहे हो?

तुम्हारी बातें सुनकर ठाकुर।

पागल ठाकुर अब बडे दुखी दिखाई पडे। व भसे की ओर देख नही पा रहे हैं। ताकते ही फिर हस पडेगा। वे दूसरी ओर ताकत रह। दो कमल कलिया के नीचे जलीली डूबी हुई है देखत रह। सामने केवल जलराशि है। हवा चलने

के कारण अब उसम लहरें हैं। जल का शब्द बिना निरता आ रहा था दूर ग ढाक ढोलर की आवाज उसी तरह तिरती आ रही है। कुछ गुम गुम शब्द जगा ही। माना आधी आ रही हो। या लगता है हजार वर्षों स वह राग झपटता आ रहा है। राजपुत्र के हाथा म है पक्षी। राजपुत्र न पक्षी क डन तोड डाल हैं। गिरते पडत वह हजार-लक्ष राक्षसा का दल राजपुरी की ओर झपटता आ रहा है। कान पसारो तो लगेगा कि वे राक्षस अनतराल म गस्त म पक्षी का सहू पीन की लालच म लपकत आ रहे हैं। पक्षी राजपुत्र के हाथा म है। म र्जी मुताबिक डन पर और मुड उखार दने ग ही सब कुछ समाप्त हा जायगा। लकिन हाथ राजपुत्र पत्थर का है पक्षी भी पत्थर का है। सुनो राजपुत्र रात क वक्त हाथ म पक्षी लिए सपना देखत-देखत पत्थर बन गय हैं।

भस ने कहा क्या ठाकुर इधर ताकते क्या नही ?

पागल ठाकुर न जवाब नही दिया।

—ठाकुर तुम मामूली कटे मुह की हसी नही बरदाश्त कर पाते हो भला बताओ मैंने खाडे का वार कस पेन लिया।

पागल ठाकुर ने कहा देखो जी मैं तुमस कुछ भी कह नही रहा हू। मरे पीछे मत पडो तुम।

—ठीक है। तो फिर मैं उडान भरता हू। कहकर उस मुड न अपन दोनो आर क्षणभर म दो डन उगा लिये फिर झील क ऊपर उडने लगा।

—अरे यह क्या करते हो क्या करते हो। पागल ठाकुर मुड पकडन दौड।

—क्या मैं क्या तुम्हारे भगवान से इस वक्त कुछ बुरा दीख रहा हू। चमगादड सा दीख रहा होऊगा। बडा चमगादड सा। वह कर भस का मुड पागल ठाकुर के सामन पडुलम की तरह डोलते हुये बोला कसा लगता है देखन म। चमगादड जसा न ? लाख-लाख वष पूव धरती पर एसे ही चमगादड थे। अब वे नही रह। अन्य अतिकाय रेंगनवाले जानवर आकर उनको खा गये। लेकिन वे कुछ भी किये हो तुम लोगो की तरह धम का नाम लेकर ढोग नही किया। सारे बुरे कामा को ईश्वर के नाम पर चालू नही किया।

कटे मुड का क्रिया कलाप देखकर पागल ठाकुर बेहद चिढ गये। बेहद परेशान कर रहा है यह मुड भलेमानुस पाकर। वे किनारे किनारे चलने लग—लेकिन अजीब बात है भसे का वह कटा मुड अपने दो बड डने लिये उनकी आखो के

सम्मुख पडुलम सा लगातार डोल रहा है तो डोल ही रहा है। कोई मानो एक अदृश्य धागे से भसे का मुड बाध आसमान से छोड दिया है। पागल ठाकुर सामने चल रहे हैं तो भसे का मुड क्रमश पिछडता जा रहा है। पागल ठाकुर पीछे सरकते जा रहे हैं तो भसे का मुड फिर आगे बढता आ रहा है। अजीब परेशानी हो गइ। वे इस भयकर दृश्य से छुटकारा पाने के लिय दौडने लगे। एक बार सामने तो एकबार पीछे। मानो अकेले ही वह मदान मे धर पकड का खेल खेल रहे हो। कभी उत्तर तो कभी दखिखन, कभी पूरब तो कभी पच्छिम जिधर भी वे जा रहे हैं भैंसे का मुड उनकी आखो मे सामने अतिकाय चमगादड बना झूल रहा है। कभी तो वह मुड हस रहा है तो कभी रो रहा है। कभी कह रहा है साली मनुष्य जाति जसी कमीना जाति कभी नही देखी जो। अपनी खुशी मुताबिक ईश्वर का नाम ले मुझे काट इस झील के किनारे फेंक दिया।

पागल ठाकुर जसे व्यक्ति को भी डर लगने लगा। वे सब भूलभाल कर मदान भर म दौडते रहे। और अतिकाय चमगादड के प्रति वही एक चीख—गत्‌चोरेतसाला।

ढाका से लौट कर ही शमसुद्दीन ने सुना जलाली पानी म डूब गई है। गाव का कोई भी खोज तलाश करने भी नही गया। फटपट अपने दल के साथ वह मदान मे निकल पडा। दो आदमियो को उसने दो जगह भेज दिया। एक आबिद अली को तो दूसरा जब्बर को इत्तला करने चला गया। अपने जत्थे के साथ झील तक पहुचने म उसने काफी रात कर दी। किनारे पहुच कर ही उन लोगो ने देखा मदान भर म कोई दौडता फिर रहा है। देखने से यह मामला कुछ भुतहा सा लगता। लगता कोई जिन या भूत ईश्वर के भय स बौराया भाग-दौड मचाये है। शमसुद्दीन जसा शख्स भी सकपका गया। दल के लोगो ने कहा, भाई शामू चलें भाई। किसके नसीब म क्या है कुछ कहा नही जा सकता।

शामू ने अब चिल्ला कर कहा मदान म कौन जागता है बताओ।

जबाव म वही परिचित शब्द गतचोरेतसाला। मदान मे मनुष्य जाग रहा है। लोगो की जान म जान आई। भूत प्रत जिन-परी देव दानव का डर उनको नही रहा। शामू ने चिल्लाकर प्रतिध्वनि की बडे मालिक मैं शामू हू। आबिद अली की बीबी जलाली पानी म डूब गई है। उसको हम लोग निकालने आए हैं।

इसलिये किंवदंती वाला भय उनका क्षण भर में जाता रहा। वे अब अलग और मथर कदमो से जल के पास उतर गये। जो लोग झील में कमल-कंद निकालने आए थे उनमें से दो एक जने साथ हैं। उनमें से एक को लेकर शमसुद्दीन झील के किनारे किनारे चारो ओर घूमने लगा। उन लोगो ने जलाली को आखिरीबार कहा देखा है और उस समय क्या बजा था इसका एक अदाजा लगाना चाहा शामू ने। हाशिम की बडी नाव पानी के नीचे से निकाल लाने के लिए कुछ लोग चल गये। नाव आते ही पानी में तलाश करने में लग जायेंगे। जलाली के कपडे पानी में तर रहते हैं फूल कर कुप्पा बन जाने के बाद जलाली पानी के ऊपर आ जा सकती है।

लेकिन नाव लेकर मजूर लौट आया जब जयनाल गलही पर खडा लग्गी मार रहा है और नाव पर लगभग पच्चीस तीस लोग झील के पानी में लहरें उठ रही हैं—कमल के पत्तो पर किसी गंग-पतिंग की तान रात भीगती जा रही है लेकिन जलाली का कोई अता-पता नही लग रहा है तभी लगा दूर में कुछ तैरता चला जा रहा है। झील के भीतर दाखिल हो उन लोगो ने वह पतीली देखी पतीला में कुछ कमल कद कमल कदो पर छिटकी हुई चादनी जादूभरी। दिन भर डुबकी लगा लगा कर जलाली ने आठ दस कमल-कद इकट्ठे किये थे। कमल कदो के बीच एक बडी सी सीपी—सीपी देखते ही बडी सीपी देखते ही पानी के नीचे सपने उभर आते हैं—अगर सीपी में मोती हो। शायद जलाली ने पानी के नीचे सपना देखा था, बेगम बनने का सपना। झुककर पतीली को पटोरी पर उठाते समय शमसुद्दीन ददभरी आवाज में बोल पडा चाची तेरी दुनिया में अब कौन कौन जाग रहे हैं।

जल से कोई जवाब नही आया। उसने इस बार चारो ओर देखा। झील के किनारे छोटे छोटे गाव बसे हुये। गरीब दुखियारो के निवास। गावो में जो मुल्ला मौलवी हैं मडियो में उनका सूत या पटसन का कारोबार है। और हैं हिंदू महाजन। और हक साहब का ऋण पंचायत बोर्ड। लोगो ने आत्मरक्षा का गुर धीरे धीरे जान लिया है। उसने बाकी सारे लोगो की ओर मुखातिब होकर कहा तो फिर वह मिल नही रही है।

किसी ने भी कोई आहट नही दी। देते ही शामू उन लोगो को पानी के नीचे गोता लगाने के लिये कहेगा। इस जाडे में पानी में उतरने पर सर्दी से जकड

जायगा। उनका कुछ निश्चय ना देख शामू ने कहा, खैर, आप लोग नाव पर रहे, पानी म गोता लगाकर मैं ही देखता हू। कहकर, उस कमल कद उखाडने वाले दल के आदमी न जलाली को जहा आखिरी बार देखा था, शामू ने अगोछा पहन कर वही गोता लगाया।

झील मे इतने सारे लोगो का देखकर ही शायद भैसे का मुड आखा के ऊपर से अन्तर्ध्यान हो गया। पागल ठाकुर को सोचने के लिय थाडी सी फुरसत मिल गई। उन्होंने सोचा, ऐसा क्या हुआ? एक मामूली बेजुबान प्राणी का इतना रोष। वे उस रोष स बचन के लिए चटपट शामू वगरह की नाव की ओर चलने लगे। नाव पानी पर एक ही ठौर पर ठहरी हुइ है। और एक आदमी अकेला पानी म तर रहा है। पानी म डुबकी लगा रहा है। भय खौफ की परवाह नही कर रहा है। इतन सारे लाग नाव पर खडे तमाशा देख रहे हैं। और एक आदमी जाडे की रात म सेवार म फस जायगा। कौन है ऐसा मूरख आदमी? पागल ठाकुर बिलकुल पानी के पास जाकर खडे हो गय। जलाली जहा डूब गई है उसस कही दूर वे तलाश कर रहे हैं। शामू के इस नाहक परिश्रम से पागल ठाकुर को गुस्सा आ रहा था। इसके अलावा अकेले अकेले मदान म घूमा पर फिर भैसे के चगुल म फस जायेंगे सोचकर किनारे खडे हाकर उन्होंने ताली बजाई। तुम लोग मुझे नाव पर उठा लो—ऐसा ही कहना चाहा।

मजूर ने पटौरी पर खडे हाक लगाई कौन मनही ताली बजा रहा है?

कोई जवाब नही। बस कोई झील के किनारे खडा ताली बजाता जा रहा है। उसको अब समझने म दिक्कत नही हुई कि ठाकुर कोठी का पागल ठाकुर ताली बजा रहा है। नाव पर सवार होने के लिये ताली बजा रहा है। मजूर ने अब चिल्ला कर कहा ठहरिये मालिक आ रहा हू।

नाव किनारे के पास आन पर कहा तो पागल ठाकर नाव पर उठ आयेंगे लेकिन ऐसा न कर वे पानी म कूद पडे और उन दो कमल कलियो की ओर फुर्ती स बढन लग। पागल मानुस के लिये सर्दी गर्मी सब बराबर है। शायद यह आदमी बिलकुल बौरा गया है। वे सभी को पीछे छोड उन दो कमल कलियो की ओर एक बडे सफेद राजहस की रफ्तार से चलने लगे। लहीम शहीम आदमी, एसा आदमी इस इलाके म ढूढ निकालना मुश्किल है। जसा गराडील वसा ही असीम शक्तिधर है यह आदमी। किंवदती के सारे दानवो का ठेंगा दिखा कर वे दो कमल कलिया

वे बीच गोता लगा गये। सेवार लतर कमल नाल सब कुछ नाच नाच कर जलाली की दुबली सी लाश को वह निकाल ले आए। फिर बाल पकड कर वह पानी पर तरते रहे। तीर की गति से वे तर रहे हैं। लोग बाग भय विस्मय स कोई शब्द भी नहीं कर पा रहे हैं। मानो एक पीर ही यह पागल मनही माना किसी दर गाह का पीर हो। सभी को विस्मित कर जलाली की देह को कधे पर डाले पानी हलत हुये वे ऊपर उठ गये। किसी ओर नही देखा। कधे पर मतदेह सामने फसलो स शून्य खेत आकाश मे कुछ तार दमक रहे थे और दूर उसी प्रकार नगाडा बज रहा है। पागल ठाकुर को सहसा लगा कि वे जलाली को लेकर नहीं चल रहे हैं। मानो वह फोट विलियम दुग हो दुर्ग के शीष पर कबूतर उड रहे हैं और रपट म बड बज रहा है। इस समय ढाक नगाड का वादन सुनकर व यह सब याद कर पा रह हैं। उनक कध पर जलाली नहीं युवती पलिन है। पलिन को लेकर वे चल रह हैं। यह फसलो स शून्य खत नहीं—यह मानो वही रपट हो। बगल म दुग। अग्रेज सनिको क एक दल के कवायद की आवाज वे पीछे स पलिन को छीनने के लिय दौडते आ रहे हैं। यह सोचकर पागल ठाकुर दौडने लगे।

उन लोगो ने देखा व खतो म स भागत जा रहे है। व पागल मनही हैं जलाली को लेकर जान कहा चल जायें। इसके अलावा वे विधर्मी है। एस आदमी क कधे पर मत जलाली। वे दौडन लग। मत जलाली को लेकर वे किसी दूसरे मदान म या नदी के उस पार चल जान पर इसलाम का गुनाहगार बनन स बचाव नही। इस समय जलाली की शकीअत के मुताबिक आबिद अली भी नहीं देख सकेगा। और इधर यह पागल मनही विधर्मी आदमी सब लोगो को पीछे छोड खतो म भागत चल जा रहे हैं। वे फुर्ती से लपक कर खेत के बीच पागल ठाकुर को घेर लिये। धीरे धीरे वे पागल ठाकुर के नजदीक होने लगे। वे उनको समझने नहीं दे रहे हैं कि वे जलाली को कधे से उतार लने के लिये धीरे धीरे आग बढ रहे हैं। उन लोगो का यह इरादा अगर वे ताड गये तो व भागने लगग। जिस तरह किसी हेमत की तिजहरी म मुडापाडा का हाथी लकर खुले मदान म निकल पडे थे।

वे उसे घेर कर चारो ओर चौकस निगरानी रखे रहे। शामू ने नजदीक जाकर कहा चाचो को दे दीजिय।

अजीब माजरा। बिलकुल सूझ बूझ के हैं वे। बहुत धीरे धीरे मानो बीमार

काहिल आदमी को कधे से उतार रहे हो। धीरे धीरे उन्होंने जलाली को लिटा दिया। लिटा देते समय जलाली ने भल भल ढेर सा पानी उगल दिया। बदन एक सफेद। पुतलिया निश्चल। टकटकी लगाये सबको देख रही है। शरीरपर साडी ढीली हो गई है। शामू ने धाती खोलकर पानी निचोर डाला। फिर साडी से लाश ढाप दी। इसके बाद जलाली से किसका क्या रिश्ता है कौन इस लाश को ढोने का हकदार है। यह सब सोच विचार कर उसने चार-पाच लोगो म लाश को बाध डालने के लिये कहा। एक बास के साथ बाध कर, जिस प्रकार बाम मे साथ कटा भैसा बाधकर वे लोग ले जा रहे थे और जय यनेश्वर की जय कहकर जयकार कर रहे थे, उसी प्रकार वे लोग अल्लाह रहमाने रहीम कहकर खेता म से चले जा रहे थे।

कमन कद उखारन आकर आबिद अली की बीवी पानी म डूब कर मर गई। किवदती के देश म जलाली शहीद हो गई। इसीको लेकर साल भर उत्तेजना बनी रहगी—जिस तरह रसो और बुडी जान किस साल पानी म डूबकर मरी थी किसी को भी पता नही लगा था लेकिन हेमत की एक साल को उनके ककाला का आविष्कार कर इस इलाके के लोग विस्मित रह गये थे। इसी के बाद इन की गप्पबाजी। अनपढ या अधपढे लोग, जब रात उतर आती है, जब कोई जगा हुआ नही रहता, तब इस जवार की झील बावडिया, मरघट या कब्रिस्तान की अलौकिक घटनाओ का लेकर डूबे रहते और एसा ही विश्वास लिये जिदा रहना उनको सुहाता है।

वे जितना आग बढ रहे थे उतना ही ढोल-नगाडे की आवाज स्पष्ट होती जा रही थी। रात भर य ढाल-नगाडे बजते रहेंगे। हैजक की रोशनी इस समय मार मदान भर म और बीच बीच म आतिशबाजी भी जलाई जा रही है। आसमान म हवाईबाजी। मालती की आखो म नीद नही आ रही थी। त्योहार के चावल केले रेवडी बताशे फूल फल से पेट भरा हुआ। फिर खिचडी और खीर। बडी बहू ने एकबार अलग बुलाकर मालती को खीर खाने को दी थी।

मालती रजाई कथरी के नीचे लेटी खिडकी स खेता पर फली चादनी देख रही थी। वास्तु पूजा की रात चादनी बडी रहस्यमय होती है। मानो कोजागरीलक्ष्मी पूर्णिमा हो। आतिशबाजी और लइया और नारियल के लड्डू। खाने-खात अघा जाओ। इसी चादनी म झील के पानी म जलाली डूबी हुई है। सोचते ही मालती

को घुटन महसूस होती। वह उठ कर बैठ गई। वे अब भी आए नही। अगर आते तो क्छार पर उनकी बातचीत सुनते ही पता लग जाता कि जलानी दूके मिल गई है कि नही।

काफी कोशिश करने के बाद भी मालती सो नही सकी। रजाई आगे अजीब खामोश उदास भाव लिए वह खिडकी के पास बठी रही। दिन भर बडी तवालत गुजरी। नवद्य सजाने के लिए पीतल की हडिया धो माज कर साफ-सुथरी करनी पडी। नरेनदास की तरह-तरह की सनक है। यह वास्तु पूजा जमीन के लिए फसल के लिए है। प्राणा से भी अनमोल है यह फसल। इसलिए कही कोई खामी रह गई तो खरियत नही। *व्यावहारिक आदमी नरेनदास न एस दिन अमूल्य तक* को छुट्टी दे दी है। भोर सवेरे उठकर मालती ने दूध के बरतन पीतल की हडिया धो माजकर साफ की है। फिर सारा दिन खेत और घर। वास्तु पूजा खेत म होती है। सब कुछ खेत म ले जाना पडा है। फिर खेत स सब कुछ लादकर घर लाना पडा है। सारा काम अकेले इन हाथा स—हा शोभा और बाबू ने थाडी सी मदद की है। अमूल्य दोपहर तक था उसके बाद वह अपने घर चला गया है। इसलिए मालती को शाम तक दम लेने की फुरसत नही मिली। इसलिए हाथ पर धोकर वह झटपट लेट गई है सोने के लिए। लेकिन हाय रे तकदीर आखा म नीद ही नही। जान कौन सी आशा दिल पर दस्तक देती रहती। जी चाहता है ऐसी चादनी छिटकी रात म चुपचाप अकेले मदान म खड रहो। बगल म केवल एक दिलवर रहे। अपना दिलवर वह खुदगज दत्य उस याद आ गया।

उसका वह दत्य दिनभर खत खेत म प्रसाद खाता फिरता रहा—एक बार भी मालती की पूजा देखने नही आया। वह सरकार घर की वास्तु पूजा देखन उसी के खेत के बगल से चला गया लकिन ऐसी नम निष्ठा वाली पूजा देखन नही आया। भीतर ही भीतर वह क्षोभ स मरी जा रही थी। मानो इस मनहीपर खफा होकर ही वह दिनभर लगातार काम करती रही है। क्षोभ की यह जलन बडी भयकर होती है। मन ही मन वह क्लेश से तडप रही थी। उस शख्स क मन म बहुत ज्यादा घमड है। देश का काम करता फिरता है तो अहकार के मारे जमीन पर पर ही नही पडते।

खेतो पर इस बक्त चादनी की बाढ आई हुई है। सारे पेड पालो सफद हो गय हैं। कही पर तनिक सा भी अधियारा नही। एसी चादनी मानो मुद्दत से नही

छिटकी। ऐसी चादनी म आखो म नीद नही आती।

मालती को शुरू शुरू मे लगा था कि ज्यादा खा लेने स दम घुट रहा है और आखो म नीद नही आ रही है। या तो क्षोभ और अभिमान से नीद नही आ रही है या उस मनही को अति निकट पाने की इच्छा हो रही है। इसीलिए यह तडप, दिल म एक अजीब तिलमिलाहट। कभी-कभी दिल धडक उठता। शायद वह आ गया। चुपके चुपके उसकी खिडकी के पास आकर खडा हो गया। लेकिन नही, कोई नही आया। कोई आयेगा भी नही। सिफ अकेले जागत बठे रहना। मालती फिर लेट गई। दिगत तक खेत जुहाई से प्लावित हैं। उसके मुख पर जुहाई की लुनाई आ पडी है। उसने अपनी गदन गला छू छूकर देखा। कितनी कोमल त्वचा है। कितना मनोरम है यह शरीर। भीतर ही भीतर वह कसमसा रही है। रजित को भूलने के लिए उसन पति की याद करन की कोशिश की। पति के साथ सभोग का दृश्य सोचन की कोशिश की—ताकि मन के भीतर की कुलबुलाहट शात हो जाय। लेकिन वही पुराना दृश्य, एकरस दृश्य लेकर जिदा नही रहा जा सकता। सभोग के पुराने दृश्य अब कोई उत्तेजना पदा नही करत। मन ही मन उसन सोचा, नही इस समय कही भी कोई चादनी नही। उसने समूची रजाइ को अपन सिर के ऊपर से चारों ओर फला दिया और भीतर अधेरा कर दिया। अब मालती के चारो ओर अधियारा है। शहर के दग न उसका सारा सपना खत्म कर दिया है। नए तौर स सपना देखना उसके लिए पाप है। इस पाप के भय स मालती न रजाई के नीचे मुह छिपा लिया, अधेरे म अगर खुद व खुद पाप करत फिरो तो किसको पता चलेगा। पति का मुख जब किसी कदर याद नहा आ रहा है पुरान सभोग का चित्र जब आखो पर कैलेंडर के पन्न की तरह रोजमर्रे का बन चुका है तब अधेरे म नुकीली सुदर उगलिया का स्पश शरीर म रोमाच ला रहा है। उगलिया शरीर के भीतर तरह-तरह का पाप करती फिर रही हैं और शरीर में आवेश ला रही हैं। सती-सावित्री जसी पुण्यवती न होकर मन ही मन अधेरे के भीतर रजित नामक एक युवक के स्मृतिभार से अपन शरीर के भीतर पाप का ढूढ़त फिरना—गुप्तरूप से यह पापकाय बडा अच्छा लगता। प्राणा से भी-अधिक अच्छा लगता। घायल साप जिस प्रकार मर जान स पूव अपन शरीर को समेट लाता फिर पूरा का पूरा पसार देता और किसी समय सीधा लबा-सा पडा रह जाता, उसी तरह मालती अपन शरीर का क्रमश सिकोड ला रही थी

जायगा। किसी को भी पता नही लगेगा। इसलिये उसने मन ही मन प्रतिज्ञा कर ली नही फिर कभी नही। फिर कभी वह वन जगल म फिरता नही रहेगा। वह अकेला या पागल ताऊ के साथ कही भी चला नही जायेगा। जान पर वह जो किस्सा है या किंवदती की कथा—पानी मे डूब जाय तो फिर वह कभी न ऊपर आय—तो न तो वह पानी म उतरेगा और न वन जगल म ही। मा दिन भर फिक्र करती रहती है। मा की आखा म भय के चिह्न देखकर अब वह अत्यत कर्त्तव्यपरायण या सदा सच बोला करो या ईश्वरचद्र विद्यासागर की कहानी सी—आधी-पानी की रात म मा के लिये वह अनायाम दामोदर नदी पार किये चले जा रहे हैं—ऐसी सारी बातें सोच सोना ने तय किया कि वह कभी मा से गुस्ताखी नही करेगा। मन ही मन उसने ईश्वरचद्र जसा आदशवादी और सत्यवादी बनना चाहा। ईश्वरचद्र की तरह वह भी मा के लिये सब कुछ करेगा। मा को नागवार गुजरे ऐसा कोई भी काम नही करेगा जो उसे पसद हो वही काम वह करेगा। ईशम उसी तरह गाना गाता जा रहा है—पानी मे डूब जाय तो फिर वह कभी न ऊपर आय।

इस समय बडे कमरे म दादा खास रहे हैं। आगन के इस छोर पर बठकर इन लोगो ने सब कुछ सुन लिया।

इसी समय गाना रोक कर ईशम ने कहा समय न मालिक, साम आते ही राजकन्या झील के पानी म सूरज हाथ म लिये डुबकी लगा लेती है।

—फिर पानी पर उझकती नही।

—उगकती है। रात भर पानी के नीचे दोनो हाथा म सूरज को लिये वह पैरती रहती है। परती परती वह नदी के रास्त समदर को चली जाती है। सागरा से होकर महासागर म। फिर सुबह होते ही पूरब आसमान म उझक आती। राजकन्या सूरज को आसमान म टाग देती। फिर पल भर म वह ओझल हो जाती है।

—कहा ओझल हो जाती है ?

—नील के पानी म।

—आपन देखा है।

—अर मालिक मैं कस देख सकता हू। अपनी मा स पूछिए। पागल मालिक स भी पूछ सकते हैं।

सोना न सोचा, हो भी सकता है। जब झील इतनी बडी हो और राजकन्या के बच्चे म सोने की नाव और पवन का चप्पू हो तो उसके लिय नदी क रास्ते समदर पहुचने म कितनी देर लगती। समदर के रास्त राजकन्या कहा तक चली जाती होगी। इस समय राजकन्या किस सागर म होगी—उत्तर के या दक्खिन के ? सवाल करने की इच्छा हुई उसे। इस समय राजकन्या किस सागर के नीचे पर रही है ? सूरज हाथ म लिये राजकन्या नीले जल के भीतर, सोनल मछली की तरह मुख मे पहले सूरज को लेकर, किस जल के नीचे पर रही है। यह सब भी जानन की इच्छा। ईशम तब बता रहा था, सुबह होन पर राजकन्या पूरब सागर म तिर आती है। सूरज को आसमान म टाग देती है। फिर राजकन्या टप्प से पानी के नीच डुबकी लगा लेती है। सोना ने मानो कितने दिना क बाद इस बार सूरज महाराज की यह चालाकी पकड ली हो।

उसका प्रश्न बार-बार यही था—सूरज तुम कहा जात हो ? बाबू ने कहा है बडा होने पर ही उसे इस रहस्य का पता लग जायगा। लेकिन अब उसके पास सारा भेद खुल गया। सूरज मामा के घर जाता है। झील के नीचे अपन ननिहाल जाता है वह।

सोना चुपचाप बैठा था। किसी काम से ईशम गुहाल म चला गया। ईशम चले जान के बाद आगन मे अकेले-अकेले उसे डर लगन लगा। वह तुरत दौडकर बडे कमरे म चला गया। कमरे मे दादी है, दादा तखत पर चारो ओर तकाई रजाई रखे बैठे हैं। बडे-बडे तकिये से दादा को घेर रखा गया है। ये तकिये उनके सहारे का काम द रहे थे। सिरहाने दीवार पर दीया जल रहा है। रेंडी के तेल का दीया। इस दीये की रोशनी नीली सी होती। चेहरा पर यह रोशनी बिजली जसी ही लबाई अख्तियार कर रही है। दादी अब सध्या जाप के लिये देव कक्ष म चली जाएगी। जब तक दादी कमरे म थी सोना उनके परो से चिपका फिरता रहा। फिरते रहत समय ही उसे फिर ईश्वरचद्र की बातें याद आ गइ। दामोदर नदी वाली कथा भी याद आ गई। उसने फिर सोचा, मा के लिय वह सब करता रहेगा। और घूमफिर कर वही एक बात याद आई—झील म राजकन्या, खेत म फातिमा। फातिमा न उसे छू दिया है। उसन नहाया नही। यह सब सुनन पर मा नाराज होगी। मा का कठोर मुख याद करत ही उस रोना आने लगा। मा ने आज सफेद रेशम की धोती पहन रखी है—तीज त्योहार म मा दिनभर

रेशमी साडी पहने रहती है। मा उस समय भले मानुस की बेटी सी लगती है। मा जल जसी निमल और सफेद कोकाबेली सी पवित्र लगती है। इस लिये उस पवित्र और निमल जल के पास अशुचि शरीर लेकर रहना पाप है। सोना अब क्या करे कुछ सोच नही पा रहा था। बाले मा मुझे फातिमा ने छू दिया है। नही कुछ भी नही बताएगा—चुप रह जायेगा। वह कुछ भी तय नही कर पा रहा है। उसके भीतर से मारे भय के सर्दी उभरी आ रही थी—वह फिर ठहरा नही। एक दौड मे पश्चिम कमरे मे घुस गया। कित्ता जाडा, कितनी सर्दी। इस सर्दी म नहाना बडा दुखदायी है। सोना ने अपना चदरा और भी अच्छी तरह से लपेट लिया। फिर जाकर मा के बगल म बठ गया। नहाने की बात उसे याद न रही। इस समय केवल झील की राजकन्या वाली बातें याद आ रही है। राजकन्या के मुख मे रुपहला सूरज। मुख मे सूरज लिये राजकन्या एक मछली की तरह पानी के नीचे पर रही है।

त्योहार के दिन की दौड धूप ने सोना को बेहद थका दिया था। रात को उसने कुछ खाया भी नही। सभी के अनदेख वह तखत पर उठकर लेट गया। आज पढाई स छुट्टी। त्योहार के लिए। आज आगन म लाठी छुरे का खेल भी बद। छोटे चाचा के साथ लालटू पलटू चरु पकाने जो निकले थे अभी तक लौटे नही। सारी तिपहरी वह अकेला ही था। बडी ताई इस वक्त भी रसोई म। आज रात को राधने पकाने का कोई काम नही। दादा थोडा सा उबला हुआ फल खायगे। दादी गरम दूध पीएगी। उन लोगा का यह काम कर डालते ही मा ताई की छुट्टी। मा इस समय कमरे से निकल गई। इस वक्त वह इस कमर मे अकेला है। लालटेन बुझने ही वाली है। टीन का छाजन। छाजन पर कोहरा जमा हुआ। बूद बूद पानी जम कर नीचे टपक रहा है। टप्प् टप्प् आवाज हो रही थी। सोना कान पसारे है। मानो कोई या कुछ लोग ऊपर के लकडी के पटवतन पर चलत फिर रहे हैं। सोना मा का पुकार सकता था। अपन भय के बार म कह सकता था। उसको और रोज ता कोई डर नही लगता आज डर लग रहा कहन स मा नाराज हागी। मा को बुलान की हिम्मत नही पडी।

एक आदमी पानी म डूब कर मर गया है और कटा मुड पेट पर लिये मसान म जा रहा है। यह दृश्य याद आते ही उसन रजाई स सिर मुह ढक लिया। उस लगा उसका शरीर अपवित्र है। फातिमा के छू लेन के बाद उसन नहाया

नहीं। शरीर अशुचि रहने पर भूत प्रेत सवार होने में देर नहीं लगती। काया हीन आत्माओं से अपने को बचाने के लिये उसने रजाई से शरीर मुंह ढांप लिया। नन्हे मानुस के मन में कितने ही तरह के भय, उसको बार बार यही ख्याल हो रहा था कि सुध पाते ही झील का वह भूत प्रेत उसकी रजाई में घुस आएगा। उसे गुदगुदाएगा। उसे हंसा हंसा कर मार डालेगा या उसके नाक मुख पर एक कल्पित घ्राण पोत देगा। पोत देते ही वह दासानुदास बन जायेगा और वह भूत प्रेत उसे झील के पानी में चलने को कहेगा। उसको भीतर ही भीतर बड़ा कष्ट हो रहा था। मां बाबू के लिये कष्ट हो रहा है। वह क्रमश: रजाई के नीचे सिमटता जा रहा है। वे मानो इस समय कमरे के चारों ओर फुसफुसा रहे हैं। सोना मन ही मन देवताओं के नाम स्मरण कर रहा है। तब कमरे की रोशनी कई बार दिपदिपाने के बाद बुझ गई। कमरा अंधेरा है। सोना ने अब रजाई से मुंह निकालते ही देखा खिड़की पर सफेद जुन्हाई और वहां किसी का मुख है मानो। शायद जलाली झांक कर सोना को देख रही है। सोना इस बार भय से चीख उठा। कटे भैंस का मुंड लेकर जलाली उसकी ओर ताक रही है।

चीख सुनकर धनबहू रसोई से भागती हुई आई। सोना बैठ थर थर कांप रहा था। खिड़की की ओर उंगली उठाकर कुछ दिखाना चाहता है। धनबहू ने देखा खिड़की पर सफेद चांदनी खेल रही है।

धनबहू ने कहा चीखा क्या तू।

उसने कहा कोई आदमी।

—आदमी कहां से आएगा। लेट जा।

सोना अब डर के मारे रो पड़ा—मां, मुझे फातिमा ने छू दिया है।

—फिर उस लड़की के साथ तुम निकले।

सोना अपना कसूर छिपाते हुए बोला, मां, मैंने उसे नहीं छुवा।

धनबहू ने सोना से आगे कुछ न कहा। वह देव कक्ष की ओर चलने लगी। बदन पर रेशमी साड़ी, फूल बेलपत्ती और बदन की सुगंध शरीर में। सोना को लग रहा है कि मां पवित्र फूलकुमारी है। वह मां के पीछे अलग थलग चल रहा है। अंधेरा नहीं था। चारों ओर माठ मैदान पर चांदनी छिटकी हुई। शायद ईशम अब तक तरबूज के खेत में पहुंच गया हो। रंजित भी बैठक में बैठे ध्यान से कुछ लिख रहा था—वह लगातार लिखता जा रहा है। और धनबहू आंगन पार

कर रही है। सोना ने पहले सोचा था, मा का जैसा गजब का गुस्सा है, बेशक वह उस तालाब की ओर ले चलेगी। वहा बर्फ जसा पानी है, उस पानी म डुबकी लगाने को कहेगी। वह डर के मारे काप रहा था।

हर्रसिंगार के नीचे पहुचकर मा न कहा सोना तुम यही खडे रहो।

सोना खडा हो गया।

मा तालाब की ओर नही गई। देव कक्ष का दरवाजा खोल तावे के पात्र से तुलसी की पत्ती ली और थोडा-सा चरणामृत। इस जल को सोना के शरीर पर और अपने शरीर पर छिडक कर उन्होने सोना से मुह खालने के लिए कहा। मुह खा लने त सोना के मुह म उन्हान तुलसी की पत्ती छोड दी और कहा, खा जाओ। और साथ ही साथ सोना को लगा कि उसके शरीर से सारा भय मत्र सा उडन छू हो गया है। वह मा स लिपट गया। बोला, मा, अब मैं अकेले कभी मदान मे नही जाऊगा।

धनबहू ने साना की बाता का कोई जवाब नही दिया। तावे के पात्र से चुल्लू म पानी लेकर वह फुर्ती स कमरे म गई। कमरे के भीतर तखत बिस्तर पर पानी छिडकत समय ही कछार का हो हल्ला सुनाई पडा। जनवर रो रहा है।

बडी बहू चटपट कमरे से निकल आई। रजित भी सब कुछ छोड छाड कर आगन म निकल आया। धनबहू ने दरवाजे पर साकल चढा दिया। एक ही साथ वे पोखर के भिड की ओर चल पडे। पीछे पीछे सोना। वह भी चुपचाप उनके साथ पोखर की ओर चल पडा।

दीनबधु और उसकी दो बीबिया—सुखी दुखी—मौलसिरी के नीचे आकर खड हो गये। प्रतापचद अपनी अटारी के बगल म। उसकी तीन बीबिया है और बाल बच्चे बहुत सारे। व छत पर खडे जलाली को देखने की प्रतीक्षा करन लग। श्रीशचद्र नापितबाडी के कविराज और गौर सरकार के लडके लडकिया यसवारी क नीचे खडे थ। वह दल आ रहा है। सब कुछ भूतहा-सा लगता। पानी म डूबी औरत आ रही है। जुहाई भी कुछ मरी मरी सी—सफेद बेरग-सी। यहा तक कि इस वक्त अगर बत्त का पत्ता भी हिला तो पता चल जाय। खामाश। आसमान म जरा सा भी बादल नहा। सफेद बादल हाते, हवा चलती हाती और झाड-झाडिया म अगर कीट-पतग आवाज करत हात ता शायद यह मामला इतना भुतहा न लगता। यहा तक कि ढाक-ढोल का बाजा भी थम गया है। भयकर सफेद चान्दनी

म उन लागो ने देखा कि वे लोग कछार से उठन चल आ रहे हैं। सोना इस बार अपनी मा स लिपट गया क्योंकि वह भुत्र, कटे भैंस का मुड पट पर लिए मानो फिर झान्न लगेगा।

धनवहू ने फौग्न सोना को गाद म ले लिया।

लाश बास से बधी हुई। भूलती डोलती लाश ऊपर उठनी चली आ रही है। रजित न सोचा कि एकबार बुलाकर शमसुद्दीन से बात करे। नकिन खेतो की ओर देखने ही लगा अब भी त्योहार का चित्र बना हुआ है। थोडी ही देर बाद यानी रात की अनिम घडिया म मरकार के पोखर के किनारे आतिशबाजी जलाई जायेगी। पुकारन का हा रजित भिझका।

और सोना को लगा कि दोपहर का देखा चित्र जा रहा है। कटा भसा पेट पर सिर लिए जा रहा है। कुछ साफ नहा दीखता फिर भी लगता जलाली का सिर नीचे की ओर लटका हुआ है। मन जस बाल खडे हैं। अब की बार सोना डर के मारे मा स कसकर चिपट गया। लकिन मा की कोई भी आहट उस नही मिल रही। वे इस दृश्य को देख जान कैसी कडी मी पड गई हैं।

साधारण तौर पर मनुष्य के साथ ऐसा ही होता है। ददनाक कोई दृश्य देखन पर उसके भीतर दुख नामक एक बाध का सक्रमण हान लगता है। तब लगता है किसी न किसी दिन सभी को सभी कुछ छोडकर जाना होगा। भुवनभर म सफेद जुहाई छिटकी हुई। बडी वहू अजुन वक्ष के नीचे। जलाली का शव लेकर व सामने का मदान पार कर चले गय। इसके बाद ही सब लोगो ने देखा, वह मानुस, किंवदती का वह मानुस कछार क रास्ते राजा सा चला आ रहा है।

सफेद जुहाई म पागल ठाकुर स यासी जस लग रहे हैं।

सोना न देखा ताऊजी इस समय किसी ओर भी नही देख रहे हैं। सीधे कछार के रास्ते चले आ रहे हैं। सामने आ पडते हा बडी ताई दौडकर कछार पर चली गइ। रजित भी उतर गया। ताऊजा को देखकर सोना का सारा डर फुर हो गया। लपककर कछार पर पहुचकर उसने पुकारा ताऊजी।

पथ रोक बडी वहू ने उनका बहुत दूर जान नही दिया। उसन पागल मानुस के हाथ म हाथ रखा। हाथ रखते ही यह मानुस बिलकुल सरल बालक सा बन जाता है। नगपर हाथ पर ठडे, सर्दी स यह आदमी और भी सफेद हो गया है। धोती भीगी हुई। ऐसे शख्स को सर्दी-जुकाम भी नही होता। अब बडी वहू से

सपरता नही। न दिन न दुपहरिया जाने कब यह आदमी कहा चला जाता है। इतने बडे त्योहार के दिन इनको वह खिला नही सकी है। सभी कुछ अलग रख दिया है—अगर रात को आ जाय, मुह अधेरे लौट आए—इसी आशा से बडी बहू ने श्वेत पत्थर की कटोरियो म सभी कुछ अलग अलग सजाकर रख दिया है।

पागल ठाकुर ज्यादा देर तक बदन कडा न रख सके। बडी बहू के नयना म वही एक विषाद। सफद जुहाई म वह विषाद और भी तीव्र लगता। व अब बडी बहू का हाथ थामे चुपचाप घर की ओर चलन लगे। चारा ओर उन्हाने आखें खालकर देखा क्यो निकले थे कुछ याद नही कर पा रहे हैं। किस उद्देश्य स यह निकल पडना। किसकी स्मृति स इस प्रकार उतावला हो जाना। किन लोगो न उनके जीवन का स्वणहिरण बाध रखा है। कहा ऐसा हेमलक पड है—जिसके नीचे एक सोने का हिरन बधा हो—वह कल्पित सोने का हिरन किस मदान म है—पागल ठाकुर साचते सोचते विचलित हो उठे। कौन है वह ? युवती पलिन क्या चाद वाली बुढिया की तरह है ? क्या उसकी आखें अपलक है ? क्या वह किसी झरने के बगल म खरगोश के खोह म रह रही है ? या प्रतिदिन झरने के जल म नहाना ? हाय युवती पलिन फोट विलियम दुग म है—दुग के शीष पर सिराजी कबूतर और सामने कितने ही जहाज। वह युवती जहाज पर सवार हो इस देश म अपने बाप के पास आई थी। वह जहाजघाट पर उसके बाप के साथ उस रिसीव करने गया था। कोई कोई स्मृति लौट आती। साफ नही धुधली धुधली। युवती क मुख पर कसी अनोखी लुनाई। नीली आखें और अपने प्यार के पुरुष को लेकर दुग के रैंपट पर बठती थी। यह सब याद आते ही उतावलापन छा जाना और सिर म तीखा दद। फिर स्मृतिभ्रश हो जाना। युवती के नाक नक्श और शरीर की लुनाई उसे बावरा बनाकर माठ मदान मे भटकाते फिर रहे है। किसी तरह से भी वे उन नीली आखो और लुनाई से भरा मुखडा याद नही कर सके। प्रियजन का मुख या स्मृति याद न कर पाने से ऐसा होता है कि क्रोध दुख वेदना और हताशा स वे क्रमश चचल हो उठते हैं। और आक्रोश से चीख उठते हैं—गतचोरेतसाला।

रजित न देखा कि मदान म वह अकेला है। दूर दूर खेता म अब भी इधर उधर हैजक की बत्तिया जल रही हैं। खेत, विशाल खत, विशाल गरम जमीन

खेतो म रोशनी—विश्वासटोले म हैजक की रोशनी, सरकार के पोखर किनारे हैजक की गैस वत्ती और दो एक आदमी अन भी प्रसाद पाने के लालच मे खेत पार कर चले जा रहे हैं। कुछ देर तक रजित ठड म टहलता रहा। वह बडा अनमना सा लग रहा था। शायद अखाडे के काम-काज की समस्याओ से मन ही मन वह पीडित है। सभी क अनदेखे, प्राय पोशीदा ढग से ही वह यह काम चला रहा है—समिति की यही हिदायत है। लेकिन जान क्या उसका मन कह रहा है कि लाठी और छुरा खेलने के अखाडे के बारे म शमसुद्दीन और उसके दल को भलीभाति मालूम हो चुका है। वे याने य सारे हिंदू अपने को साहसी और शक्तिशाली बनाने ल रहे हैं। आत्मरक्षा के निमित्त यह सब हो रहा है। एक दूसरे के प्रति अविश्वास। हिंदू जनसख्या म कम हैं। वे कमोबेश सभी मध्यमवर्गी हैं। और जो लोग नीची कौम वाले हैं जैसे नम शूद्र लोग उनम भी लाठी खेलना और छुरा खलने वाला ढर्रा चल पडा है। इन सब कारणो से परस्पर निर्भरता घटती जा रही थी। दो कौम भिन्न हैं इसलिए क्रमश वे दो ओर भाग रहे हैं। शायद समिति को एक लबी चिटठी म इसी बात की व्याख्या करना रजित ने चाहा था। और यह मौत जलाली का पानी म डूब मरना इसको जीवन सग्राम म मृत्यु कहा जा सकता है। कमलकद उखारने जाकर कमलनालो मे फसकर जलाली मर गइ। शायद इसान इसान म यह प्रगट आर्थिक विषमता भी रजित का कचोट रही थी। उसने सोचा वह समिति को यह सब भी लिखकर सूचित कर द।

ठीक उसी वक्त उसे ख्याल हुआ कि नरेनदास की जमीन पर सफेद कपडो म लिपटी एक मूर्ति खडी दूर से उसे देख रही है। रजित ने समझ लिया कि मालती खेतो म उतर आई है। वह सब लोगो के साथ लौट नही गई है। वह चौकन्नी सी क्रमश इधर बढती आ रही है। इस निस्सग मालती क लिए उसके दिल मे उथल-पुथल मच गई। उसने अपने को अर्जुन वृक्ष के बगल म अदृश्य कर रखा। लेकिन हाय कौन किसस छिपता है कौन किसकी आखो से अपने को ओझल रखता है। मालती की आखें बडी प्रखर हैं और दिल के भीतर जो सुखपाखी चहक रहा था, दूर जुहाई म रजित को देखकर वह सुखपाखी फिर कलरव मचाने लगा। दिल धीमे धीमे सुलग रहा है। ऐसे दिन किसका जी नही चाहता कि सामने के दिगत तक पसर खेतो म लापता हो जाय। जिस समय जुहाइ म सारा

जगत-ससार डूबा हुआ है किसका मन अथाह जल म डूबकर मरन का नही करता ।

और किसका दिल नही करता ऐसे सुदशन पुरुष से प्यार करन का । बडी बहू ने कमरे म घुसकर किवाड बद कर दिया । मेज पर लालटेन जल रही है । पागल मानुस इस समय नग्न प्राय है । बडी बहू ने शरीर स भीग कपड उतार लिए । सगमरमर सा कठिन अवयव । सीन के पुटठे ऐसे मजबूत कि लगता एक बडे हाथी को अनायस सीने पर उठाकर उसे नचा सकते हैं । पेट म कोई चर्बी नही । पतल मास पर सफद चमडी—बिलकुल नदी रेखा सी एक रखा लोमश सीने स उतरकर नाभि के सीधान म नीचे उतरकर एक आदिम अरण्य की सृष्टि कर रही है । बडी बहू ने सफेद तौलिये स शरीर स बूद बूद जलकण बड जतन स सोख लिया । पागल मानुस मणीद्रनाथ मानो काठ के बन एक बडे से खिलौन हैं । कल लगी कठपुतली । जरा भी हिल नही रहा है—अयमनस्क नही हो रहा है—सिफ बडी बहू की उन बडी बडी आखो का प्यार भरी आखो को अपलक देख रहे है । हाथ उठान का कहने पर हाथ उठा रहे हैं । बठने को कहने पर बैठ रहे है ।

त्योहार का दिन । बडी बहू ने खाने का सारा सामान अलग अलग थालियो पर सजा रखा है । वे कुछ खायगे कुछ नही खायग । फिर शायद सारा का सारा ही खा जायें । इसक बाद और भी खाने के लिए शायद बडी बहू के हाथ म दात गढा दें । गढा न सकने पर दोनो हाथो म उसके सारे शरीर को उठा लेंगे और *माठ मदान स भागने लगेंगे । या इस पलग पर बडी बहू को गिराकर वह मानुस* निरतर उस पडे रहने को विवश करते कभी तो उलग कर देते और कभी सुदर युवती के मुख का घ्राण लेन जसा मुह से मुह सटाये पडे रहते—कब वे क्या कर बठेंगे कुछ भी कहा नही जा सकना । उनका सभी काम अत्याचार के समान है और इस अत्याचार की आशा म बडी बहू दिनभर प्रतीक्षा करती रहती है । दिन के अत म उनक न लौटने पर बडी बहू खिडकी स दूर क मदान की ओर देखती रहती है । वह मदान देखते दखते कितनी ही रातें बीत जाती हैं और पागल ठाकुर नही लौटते । शायद व किसी दरख्त क नीचे लेट-लेट आकाश के तारे गिन रहे हैं । उस समय उनके मुख म कितनी ही कविताओ का उच्चारण । प्रेम की कविताए । व लेटे लटे तारे दखते हुए सस्वर पाठ करत रहते । कविता की व पक्तिया बडी बहू का कोई नीली आखें और सुनहरे बाल की बार बार याद दिला

देती। साथ ही साथ श्वसुर जी के उद्देश्य म मानो आवेश स यह कहने की इच्छा हो उठती हो—आपने इस आदमी का पागल क्यो बना दिया बाबू। अपने धम अधम को आपन इस आदमी स बडा क्या मान लिया। बडी बहू की आखा मे आसू आ गय। धोती पहनाते समय आसुओ स सभी कुछ आवरित-सा हो गया। मणीद्रनाथ इस वक्त बडे धुधल से दीख रह हैं। तह खाल धोती पहनाते समय बडी बहू कुछ देर उनके सीने म मुह छिपाये रही। काठ का खिलौना जरा भी हिलडुल नही रहा है। यदि उनका मामूली अत्याचार आरभ हा जाय अगर वे दोना हाथा स ग्गार जबरन बडी बहू को उलग कर दें—लेकिन नहीं, आज पागल ठाकुर तनिक भी उत्तेजित नही हुए। वे मानो सयासी की भाति फनदान की प्रतीक्षा कर रह हो। हाथ म दडी दे दा ता एसा ही लगता हाना।

त्योहार का दिन ह इसलिए टसर का कुरता पहनाया गया। घुघराल वाला म कधी की गइ। मानो बिलकुल दूल्हा के वश म इस समय पागल मानुस खडे हैं। ऐसा दश्य देख बडी बहू आवश से पिघल गई—ऐसा सुदशन पुरुष कही हाता नहीं—कहत-कहत वह रुआसी सी हो गई। हाथो से पकड कर बडी बहू न पागल मानुस को आसन पर बिठा दिया। फिर एक एक कर त्योहार का फन बताशे तिलवा पट्टी खीर और खिचडी—कितन ही तरह-तरह की खान की चीजें थाली पर। बडी बहू बीच बीच म एकाध चीज आग बढाती जा रही थी। लेकिन आज पागल मानुस मणीद्रनाथ म खाने की स्पहा नही दिखाई पडी। सभी कुछ थोडा सा टूग टाग कर वे उठ खडे हुए। फिर कोमल शय्या पर जिस प्रकार सुदर राज पुत्र लेटा रहता है, जिस प्रकार सिरहाने सोन और चादी की काठिया रखकर साता ह मणीद्रनाथ बस हा लेटे रहे। कपडो की सलवट ज्या की त्या बनी हुइ। एडिया तक खीची हुइ धोती कछाना सीधे परो क पास उतर आया है। दोना हाथ एडाबडा कर सीन पर रखे। सीन पर हाथ रखे व धनिया गिन रहे हैं। निश्चल अपलक दृष्टि। बगल मे बडी बहू। बठी है तो बठी ही है। आखो म नीद नही आ रही है। बार बार दोना गाला का चूम रही थी। कुरते के नीच सीने पर नम हाथ की उगलिया कुलबुला रही थी—कहीं सोना चादी की काठिया के स्पश स यह आदमी क्षणभर क लिए जाग उठे। नही यह आदमी आज किसी तरह से भी जाग नही रहा है। ऐसा त्योहार का दिन व्यथ गया। उसन अब उस आदमी के लोमश सीने स हाथ हटा लिया। उसम काई उत्तेजना नहीं देख रजाई

और काठ का खिलौना सोने के लिए वह रात भर लेटी रही। लेकिन काठ का खिलौना सोता नही। लेकिन क्या गहरी नीद है बडी बहू की—जाने कब आखें नीद से मुद जाती, मणीद्रनाथ धीरे धीरे राजपुत का यह केंचुल त्याग कर छोटी घुटना धोती मे बाहर निकल जाते और बडी बहू को पता ही नही चलता। मोह निद्रा ने बडी बहू का सब कुछ हरण कर लिया है।

तब तक जलाली को तावूत म रख दिया गया था। मालती उस अजुन वक्ष की ओर टीबे पर वट रही है और उस समय फेनू कगार पर खडा दख रहा है कि कब्र ठीक ठीक खादी जा रही है या नही।

उस समय फील म वह गजार मच्छ अपने अडडे पर लौट आया है और चौकन्ना हो कमल नाला क बीच उस अदभुत जीव को न देख विस्मय स पूछ हिला रहा ह। कौन चुराकर ले गया—कहा किस जल म वह अजीब प्राणी तिरती फिर रही है। ढूढने के लिए गजार मच्छ जल पर पखौरा निकाले तरने लगा।

तावूत के अदर जलाली का मुख सफेद कपड से ढका है। नए कपडे का कफन दिया है हाजी साहब ने। हाजी साहब की तीन बीवियो न गुनगुन पानी म उसे नहलाया है। सभी काम काज उ ही लोगो ने देखभाल कर किया है। बालो की चोटी बाध दी है, अतर की खुशबू दी है चदन की सुगध भी—इस समय कौन कहेगा कि जलाली ताजिन्दगी रोटी रोटी की मुहताज रही है कौन कहगा कि गहोना नाव के मामूली मल्लाह आबिद अली की बीवी है जलाली।

तावूत जलाली, मसजिद इमाम। अल्लाह से जलाली के लिए सभी दुआ माग रहे हैं। तीन कतारा म गाव के मार पुरुष मसजिद क भीतर खडे अपने अपने कान स्पश करते हैं—या अल्लाह, सारा आलम तरे जल्ले जलालहू है हम अदना इसान हैं अब हमारे फरायज क्या हैं इस खल्क खुदा म सब कुछ तरी ही करामात है ऐ अल्लाह। घास सत फसलें परिंदा के नगमे भरे चहचहे जो हम सुनते हैं तेरी रहमत के बारे म कौन नही जानता तू सभी का पनाह देता है, तू हमारी इस बबस नादान जलाली का पनाह दे। शायद व दुआ मागते वक्त यही कुछ कहना चाहते थ।

चादनी रात ढाक ढालक बज रहे हैं खेता म जहा तहा हैजक की रोशनी और

तावूत के भीतर जलाली मुंह फेरे लेटी हुई है। शमसुद्दीन इमाम का काम कर रहा था। मसजिद के बगल में शरीफे का दरख्त, पेड़ पर दुनिया भर के परिंदों का बसेरा है बेवक्त इतने सारे लोग-बाग देखकर वे सभी जाग गये और चहचहाने लगे और कुछ शरीफे के पत्ते फूल जैसे ही तावूत पर झरने लगे।

फिर सभी लोग मिलकर ला इलाही इल्लला मुहम्मद रसूल्ला—तावूत कंधे पर लिए ये लोग मैदान में से जाते वक्त अल्लाह एक है मुहम्मद उसका रसूल है यही सब कह रहे हैं। उस वक्त भी सरकार के पोखर किनारे ढाक-ढोलक बज रहे हैं। उस समय भी मैदान भर में चांदनी। वे कोई तो लालटेन लिए तो कोई हाथ में कुप्पी लिए बुरका पहने बीवियां—जिन लोगों का कब्र पर जाने की बात नहीं वे भी दुखियारी जलाली के लिए खेतों में उतर आये हैं। वे कब्र के चारों ओर खड़े हो गये। हाजी साहब की तबीयत नासाज है, वे आ नहीं सके। बाकी सभी कब्र के चारों ओर खड़े हैं। तावूत से जलाली को निकाला गया। एक तरफ शामू तो दूसरी ओर जब्बर। वे नीचे उतर गये। दोपहर को जिसके लिए फेलू कछुए की तरह गला लंबा किये बैठा था वही बीवी बुरके के भीतर से फेलू को देख रही है। फेलू का चित्त बकुला रंग था, धड़क रहा था। शामू के कब्र से निकल आते ही वह अपने दाहिने हाथ से कटे बांसों का तख्तीज से सजा देगा। उत्तर की ओर सिर और दक्खिन की ओर पैर कर जलाली को लिटा दिया गया। मुख को पश्चिम की ओर घुमा दिया गया—जलाली मक्का मदीना देखे—यह सब करने के बाद जब वे ऊपर उठ आये तो फेलू ने एक हाथ से कटे बांसों को कब्र पर बिछा दिया, कुछ इश्तहार भी बिछा दिया। क्या लिखा है उन पर ? लिखा है—मुसलिम लीग जिंदाबाद। मानो कब्र में गवाही के बतौर उन लोगों ने शपथ पत्र रख दिया। यह शपथ पत्र कब्र में कहीं मिट्टी भुरभुरा कर न गिरे इसलिए और गरीब मुसलमानों के जीने के हक की विरासत को कोई नकार न सके या शायद शामू कहना चाहता हो—चाची ये खेत और फसल अपने वारिसों को दे जाऊं ऐसे ही एक जद्दोजहद में हम लगे हुए हैं। हमारा दीन सबसे ऊपर है—मुहम्मद हमारे रसूल हैं और अल्लाह एक है—उनका कोई शरीक नहीं।

सभी लोगों ने थोड़ी-थोड़ी मिट्टी कब्र में डाल दी। फिर सारी मिट्टी कब्र पर डाल दी गई। मिट्टी दबाई गई। फिर मिट्टी पर गुसल का बचा पानी जब्बर ने

उडेल दिया। तीन सदाबहार पेट रोपकर उन लोगो ने पीछे की ओर नही देखा—गाव की ओर वापस जाने लगे। व ढाई कदम ही गये होगे कि एक खुदाई नर कब्र म दाखिल हो गया। फातिमा बाप के बगल बगल चल रही थी। बाप उसे फरिश्ते की कहानी बता रहा है। मानो वह किवदती की कहानी हो—बहिश्त की एक सीढी उतर आई, नूर की सीढी। कब्र के भीतर जलाली अलौकिक आलोक की प्रभा स जाग गई।

दो फरिश्तो न पूछा तुम कौन हो ?

जलाली न कहा मैं जामिला खातून हु।

—तुम्हारा मजहब क्या है ?

—मेरा दीन इसलाम हैं।

—अल्लाह कौन ह ?

—अल्लाह एक है उसका कोई शरीक नही।

—रसूल का नाम ?

—हजरत मुहम्मद।

—इनको पहचानती हो ? कहकर ही दोनो फरिश्तो ने चेहरे पर रोशनी डाली।—कौन हैं वे।

—हजरत मुहम्मद। जलाली मानो फिर नींद म ढुलक गई।

जलाली को दोनो फरिश्तो ने गोद म उठा लिया। कबी तर म जलाली का जिस्म लीन हो गया। माना किसी किश्ती का सूय हो—वो गया वो गया नील के जल म डूब रहा है। पोत म नदी म नदी से सागर मे फिर महासागर म—अत किसी समय राजकन्या टप्प स जल के ऊपर उछल आती और दो डग पता देती है गगन म पूरब के आसमान म सूरज का लटका कर फिर समन्दर के जल म डूब कर अदृश्य हो जाती है।

उस समय मा के बगल म लेटे लेटे सोना न एक घोडे का सपना देखा। एक घाडे के दो मुह। घोडा अधा है। सरस के तबू स एक कलाउन उस घोडे का निशान लाया है। इसके बाद खुले मैदान म उसने उस घाडे को छाड दिया। अधा घाडा कभी तो पूरब और कभी पच्छिम दौड रहा है। घाड की पीठ पर एक अभागा आदमी—बस एक बार पूरब तो एक बार पच्छिम म कलाबाजी खा रहा है। प्राय सरकस क मसन की तरह। दगा केवल ना ही। माना और फातिमा। माना और फातिमा एसा मजदार

तमाशा देखकर तालिया बजाने लगे। पीछे पागल ताऊ खडे हैं। व इन लोगो का मानो मदान म सकस का खेल दिखाने ले आये हैं।

जुहाई फीकी पडती जा रही है भिनसार मे देर नही। गाव के सभी जलाली का कफन दफन करने के बाद चले जा रहे हैं। फेनू बाग के रास्ते म ठहर गया। मैदान भर म कोहरा होने की वजह से निगाह आगे नही जा पाती। क्रमश कोहरा इतना गाढा होता जा रहा था कि फेलू अपने को ही प्राय नही देख पा रहा था। भिनसार की ठड—हाथ पर जकड कर बफ बनत जा रहे हैं। अनू सबसे पहले लौट गयी है—बीवी को नीद बडी लगती है। मजूर चला गया हाजी साहब की बडी बीवी भी। जब्बर को थामे शामू ले जा रहा है। शामू की बीवी पीछे-पीछे चली आ रही है। बुरके से सब पता लग रहा था—किसकी बीवी है बीवी का चालढाल क्या ? सिफ उस बुरके की आखो म सफेद धागे का काम है। चादनी म औचक देख लो तो भूत का भ्रम हो जाय। उस बुरके के भीतर होगी युवती मझली बीवी। तेरे साथ ही इश्क मेरा ऐ सखी ललित—फेलू मन हो मन उतावला हो उठा। फिर सीने के भीतर वह उज उज शब्द हो रहा है। यह काम तुरत फुरत कर डालना होगा। कही दूसर को पता न चल सके। कोहरा इतना घना है कि एक हाथ सामने का आदमी भी साफ नही दिखाई पडता। धुधले कोहरे म उस बुरके को अगर ठीक ठीक पहचान न सके तो भयकर काड हो जायगा। वह सर्दी से ही ही ठिठुर रहा था। केवल एक हाथ ही उसका सबल है। जबरदस्त बीवी को काबू मे करने मे कितना वक्त लगेगा। सोचत समय ही लगा मझली बीवी कोहरे के परदे पर गिर आयी है। फौरन उसन एक हाथ मे उसे समेट लिया। उसम माना इस समय लाख हाथियो की शक्ति है। वह मुह पर दाहिना हाथ दबा कर उसे झाडी के भीतर ठेलत जमीन पर गिरा शेर की तरह गरज उठा—खबरदार जो चू की तून बीवी। मैं तेरा दिलवर फेलू हू।

सबमे अत म ईशम भी गाव लौट जा रहा है। लौटते वक्त रास्ते म उसे लगा झाडियो क भीतर काई प्रलयकर काड हो रहा है। या तो साप साप म झडप हो रही

कर प्रणाम किया। महाविश्व म हम तुच्छ मनुष्य हैं। तुम मनुष्य जराजीर्ण जीवन को प्रकाश स भर दो। राग शोक सब दुःख हरण कर लो।

सोना को मालूम नहीं था कि सूर्योदय म इतना रहस्य है। उसन भी दादाजी क देखादेखी सूय को प्रणाम किया और दादाजी क साथ स्वर मिलाकर सूयस्तव का पाठ किया।

शचींद्रनाथ को दूसरा कोई काम था। खेता म ईशम के साथ जाना है। गौर सरकार जमीन की सीमा तोड़े दे रहा है। यह सब देखन के लिए और शायद मुकम्मेवाज गौर सरकार को इस सिलसिल म चेतावनी देने के लिए जल्द ही खेता मे जाने का उसन निश्चय किया था। मारे जोश के रात को शचींद्रनाथ को नीद नहीं आयी क्योंकि धरती सरीखी प्यार की सामग्री और है भी क्या।

सूय आकाश म उठ गया है। लगा अब वद्ध को सहारे की कोई जरूरत नहीं। सूय के उत्ताप से शरीर म प्राणा का आवश—जवानी क दिना जसा या बचपन के दिनो जसा। अब वे अकेले अकेले किसी के बिना कुछ कहे ही किधर जाने पर कठार मिलेगा, किस ओर जान पर पोखर किनार प्रिय अजुन वक्ष मिलेगा और नदी कितनी दूरी पर है, कितना मदान तय करने पर सुनहरे रेत वाली नदी की चाकी मिलेगी, इस समय तरबूज की लतिया कितनी बड़ी हो गयी हैं लतिया-पत्तिया कितनी हरी हैं—सब कुछ व आख मूद कर बता सकते हैं। उन्होंने मानो कहना चाहा शची तुम खेतो म जाना चाहते हो—जाओ मेरे लिए फिक्र करने की जरूरत नहीं। मैं अकेला आदमी हू। ससार म यही तो होता है—स्त्री है पुत्र हैं इतन पर भी अपने को अकेला ही लगता। उन्होंने शचींद्रनाथ स इतना भर कहा था खेता म जान स पहले उसकी चादी स मढी लाठी दे जाये। कितने ही दिन पहले। उन दिना प्रौढ महेंद्रनाथ की धाक भी क्या खूब थी। व इस चादी से मढी लाठी घुमात घुमात खेत गाव पार कर जात थ। वही आदमी कितने दिना घर स बाहर नहीं निकले। इस समय वे प्राय जरा ग्रस्त हैं। लेकिन यह निश्चित हो चुका है कि इसी साल देहरक्षा करेंगे। जन्म पत्री और राशिफल का भी ऐसा ही कहना है। जाड म वद्ध लोगा का मृत्युभय असीम होता है। कातिक की कशिश बढ़िया के पानी की तरह होती है। गाव खेत साफ कर बूढ़ा को ले जाती है। ठीक उसी समय एक दिन उनके पुत्र भूपेंद्रनाथ ने कहा था, बाबू इस बार चद्रायण कर ही डाला जाय।

थ अपने पुत्र की इच्छा और पूरे थे। उत्साह हो गयी है। कातिर बनिता से काफी तरमीन हो रही थी। ब्राह्मण भोजन और नारायण सेवा सामने पर पार का गदर होगा। पाप-गदर हा। हा इस संसार से मुक्ति। उस समय वायु में पंचभूत बनकर आत्मा विना जायगी। वे भूपेन्द्रनाथ की बात पर स्पष्ट हो गये थे—मेरा जान का पता तो अभी हुआ नहीं। हाँ पर भी पता पर जायगा। तुम लोगों को पटा बजाने की जरूरत नहीं।

और जाने थे पोतोपोते लगा कि महेन्द्रनाथ फिर ताज यात्रे जा रहे हैं। और ताता से भी बढ़कर गुण पा रहे हैं। शरीर की जगह उत्साह होता जा रहा है। अब वे बिस्तर पर उठ-बैठ रहे हैं। पर फिर भी मन है। और ऐसा लगता कि वे शायद जिन्दा रहेंगे, निज तैयार हो रहे हैं।

ये अब अपने तीन पोतों के उद्देश्य में—वह ही बनमित हैं थे, उनकी सारी सन्तानें अंत के ओर की अवस्था की हैं प्रारम्भ में यही गुना गया था कि सन्तान होगी ही नहीं तीन पोतों के उद्देश्य में कुछ कहना था हारकर ऐसे ही सारे चित्र उनको याद पड़ गये। उन्होंने कहा गता मे उतर जाने का जी कर रहा है मेरा। तुम लोग मुझ खेतों में ले चलोगे ?

इस बात पर तीनों पोते बड़े खुश हुए। पितामह का ऐसा एक अभिप्राय जान कर वे आनंद से उत्फुल्ल हैं। अब भी सूर्य ऊपर नहीं उठ आया है।

पलटू का हाथ थाम दादा कछार में उतरते जा रहे हैं। लालटू आगे-आगे चल रहा है। सोना पीछे पीछे। दादा के हाथ में चांदी मढ़ी हुई लाठी। लाठी का मुँह मढ़ने के सिर जैसा। आगे बढ़ कर थाम गड़ कर कभी-कभी ऐसा लगता कि साही के मुख की तरह लाठी का सिर मुंह बाये है। महेन्द्रनाथ ने अच्छी तरह से दाहिने हाथ में लाठी थाम ली। वे मानो इस समय सब कुछ देख पा रहे हैं—बिलकुल प्रौढ़ वय में जैसा देखते थे। वही एक श्वेत जवा कुसुम खिला हुआ। वे बोले देखना तो पलटू लगता है पेड़ पर एक जवा फूल खिला हुआ है।

लालटू जी हाँ।

लालटू पलटू सोना दंग रह गये। हाँ दरख्त पर सिर्फ एक ही श्वेत जवा कुसुम खिला है।

सोना बोला दादा थलकमल के पेड़ पर फूल खिले हैं।

—बेवक्त में फूल। कहकर वे पोखर के भिंड से उतर जाते वक्त

बोले, तुम सब मुझे इमली के नीचे ले आये।

वे उनको पकड थाम कर ले जा रहे हैं। अंधे व्यक्ति को जिस प्रकार सभी लोग पकड थाम कर रास्ता पार करा देते है उसी प्रकार ये तीन नाबालिग महेन्द्रनाथ को खेत मदान की ओर ले जा रहे हैं। पोखर के भिड पर चलते समय वे करीब करीब सभी दरख्तो के नाम बताते जा रहे थे। कब व कैथ के नीचे से और कब जामरूल के नीचे से हो कर जा रहे हैं बताते चले जा रहे हैं। चलते चलते वे थमक गये। बोले, पानी मे एक बुआर मछली उझक आई है।

उन लोगो ने देखा, हा, पोखर क जल मे एक बडी सी बुआर मछली पानी से ऊपर तरती सॅवार खा रही है। सोना बोला दखें तो आपकी आखें। बाबू आने पर बता दूगा कि आप मूठ बालते हैं। आप आखा स ठीक-ठीक देख लेते हैं। महेंद्रनाथ सोना की बात सुनकर हस। व पोखर किनारे खडे मछली की गध पा रहे थे अब लाठी ठोक-ठोक कर जगह को पहचानन के लिये बोले तुम लोग मुझे बडे जामुन के नीचे ले आये हो।

इस बार व तीनो एक साथ हस पडे। बोने नहीं बता सके दादा।

महेंद्रनाथ ने फिर थोडी देर सोचा। कितने दिनो के बाद वे सूर्योदय देखने घर स निकले हैं। और अपनी यह आवास भूमि जो उन्होने तिल तिल कर अर्जित की है जिसका प्यार उनको अभी भी ईश्वर के ससार म डूबने नहीं दता वही जगत इतना अपरिचित हो गया। वे ऐसा गलत बता बठे। प्राय शतवष का तजुरबा है इस मिट्टी और मानुस के बारे म—वे किसी तरह मे भी इन तीन नाबालिगो से हार नहीं मानेंगे। वे स्मृति म डूबकर मणि माणिक्य ढूढने जसा ही कहा किस दरख्त के बाद कौन सा दरख्त था, कब कौन-सा पड उन्होने काट डाला है—सब कुछ मन ही मन तलाशते रह। इमली के पेड के बाद जामरूल की पत्तिया की बू मिली थी, फिर चेहर पर धूप आ गिरी—तो फिर बडा जामुन ही होगा। लेकिन पलटू वगरह न जिस प्रकार हसकर उडा दिया उससे उनका दिन बठा लगा। नाक से बडी-बडी सास ली—अगर सास म कोई दूसरी परिचित गध मिल जाय। यदि मिट्टी-पानी के लिये उनका प्यार उनको फिर अतरयामी बना डाले।

अब की बार महेंद्रनाथ बोले खजूर के पड के नीचे आया हू।

तीना नाबालिग पात और भी जोर स हस पड। पितामह को लेकर व अब सल

म जुट गये। आंख मिचौनी का खेल जैसा ही। दादा अंध हैं। अंधे हैं तभी उन लोगों ने मान लिया कि उनकी आंखें बंधी हुई हैं। व दादा क चारों ओर चोर चोर खेल रहे थे या चोर चोर कहकर चिल्ला रहे थे—दादा उनको छू नहीं पा रहे थे। वे दादा को सक्कर बक कि खेल म जुटे हैं। अब व दादा को सामने क मचान म स जाकर पूछेंगे आप कहां हैं? दादा कहेंगे—मैं बगारी क पास आया हू। इसके बाद वे जितनी भी दूर चलेंगे उत्तर-दक्खिन जिस ओर भी आंखें दौड़ें—फिर एक ही सवाल, हम कहां हैं? व मानो कह रहे—हम सोग टीहू पर हैं। चन्दा मन की तरह ही। ऐसा खेल शायद होता न हो। व प्रश्न कर रहे थ और विश्व जस दादा की ओर देखते उत्तर की प्रत्याशा कर रहे थ। केवल सोना ही हिरनौटा सा दादा के चारों ओर फुदकता फिर रहा है। दादा क सही-सही बताते ही फिर उनको रथ की नाइ खींच ले चलता—ये मानो एक पुरान रथ को प्यार के माग से खींचा ले जा रहे हैं।

जराजीण यह रथ पथ पर अतिकाय एक वट वक्ष-सा खड़ा था। हाथ म लाठी बदन पर दुशाला सिर पर लाल टोपी और हाथ म जाड़े का दस्ताना। उन्होंने गरम मोजा पहन रखा है पैरों म सफेद कैडस के जूते—चलत चलते ये सोच रहे थे उनके ये प्यारे नाबालिग उनको कहां लिये जा रहे हैं। उन्होंने एक बार सोचा कि पुकार कर कहें देखो यह तुम लोगों के पेट मुन्न कहां लिये जा रहे हैं। लेकिन वह नहीं सके। पोखर के किनारे पहुचकर उनको भी कुछ मजा सा आने लगा है। वे चुपचाप अपनी लाठी झाड़ खखाड़ म ठोकते-ठोकते आगे बढ़ते रहे। कभी उनको लगा कि लाठी किसी सख्त चीज से टकराई है। इतनी देर म उनको याद आया कि उन्होंने बड़े जामुन को कटवाकर यहां अजुन वृक्ष लगवाया है। उनका सारा मुखड़ा खुशी से उज्ज्वल हो उठा—तुम लोग मुझे अजुन वक्ष के नीचे ले आए हो।

दादा ने अब सही-सही बता दिया है। सोना मन ही मन चाह रहा था कि दादा सही सही बता डालें। क्योंकि वे जिस तरह बेसहारे आदमी की तरह पोखर किनारे खड़े है और बड़े दा मझले दा जिस तरह दादा को परेशान कर रहे हैं—उससे उसकी तकलीफ बस बढ़ती ही जा रही थी। ज्यों ही उन्होंने सही सही बता दिया, ज्यों ही व समझ गये कि दूसरे रास्ते से उनको पोखर के दक्खिनी किनारे ले आया गया है और उनके चेहरे पर नाबालिग जसा ही गव का ओर छोर नहीं, त्यों ही मारे खुशी के सोना से छलांग मारे बिना नहीं रहा गया। मानो जवाब

महेन्नाथ न नही दिया है सोना ने ही दिया हो।

महद्रनाथ को उन लोगो न और आगे ले जाना चाहा तो उन्होने कहा, नही मैं और नही जाऊगा। मुझे तुम लोग झाग-जगल म ले जाना चाहते हो। बदर नाच नचाना चाहते हो। मैं अब नही नाचूगा। कहकर व अजुन वक्ष के तले बैठ गये। दूब घास थी, धूप भी काफी निकल आयी थी। घास पर ओस नही रही। बैठकर व चारो ओर कुछ ढूढने लग।

सोना ने पूछा, क्या ढढ रहे हैं।

—अपने को।

बात सोना की समझ म नहा आयी।

—अपन को तलाशता हू। तुम लोग मुझे यही रख देना। फिर जाने क्या साच कर चुप्पी साध ली उन्होन। शायद उनके इन तीनो पोता को उनके इस प्रिय स्थान का पता न हो। उन्होंने मिट्टी पर फिर अपन प्यार का हाथ रखा। सभी बटा से उन्होने कह रखा है कि उनकी इस प्यारी धरती पर ही उनका स्मारक हो। उन्होंने खुद ही स्थान का चुनाव कर रखत समय स्मारक के बतौर इस अज न वक्ष को रोपा था।

सूय का प्रकाश पड क सिर पर पडन स चारो ओर काफी गुनगुना-सा लगने लगा था। मदान म मेले के गाय-बल चले जा रह हैं। पोखर के किनारे किनारे जहा-तहा पडो की छाया। बूढे व्यक्ति महेंद्रनाथ अपने पोतो को लिये पर पसारे अजु न वक्ष की छाया म बठे हैं। देखन से लगेगा कि कुछ सोच रहे हैं। शायद स्मृति म केवल अपन बटे के लिए टीस है। पलटू के सिर पर हाथ रख उन्होने कहा लिखाई पढाई करना। बाबू का दिल मत दुखाना।

मैदान म आबिद अली की बीवी की कब्र दिखाई पड रही है। कब्र के बगल म तीन सन्बहार पड रोप हुए। एक मुर्गा कब्र पर एक पर पर खडा सूय को निहार रहा है। और इस जलाली को लेकर पागल ठाकुर पिछली रात लौट आय हैं। मणीद्रनाथ उनका बडा बेटा पागल बेटा जान वह इस समय कहा है।

पलटू ने कोई जवाब नही दिया। पिता के सबध म एक अजीब-सा खौफ है पलटू का। वह बाप के साथ कही नहीं जाता। बल्कि सोना के साथ उनका अधिक रसूख है। पलटू ने दूसरी बात छेड दी। उसने कहा, चलिये दादा हम लाग कछार पर उतर जायें।

महेंद्रनाथ ने पलटू की बात सुनकर भी नहीं सुनी। वे कोई दूसरी बात सोच रहे थे। जलाली पानी में डूब कर मरी है। चक्र पर एक मुर्गा उत्तर दक्षिण घूम रहा है। और सूरज की गरमाई समान रूप से सब बही चली जा रही थी। कल त्योहार का दिन था। पूजा के अंत में बलिदान का वाद्य मानो रुकेगा ही नहीं। और इस जवार का वयोवृद्ध व्यक्ति अपनी प्यारी जमीन पर बैठे हैं। यहीं वे हमेशा के लिए चिरनिद्रा में मग्न हो जायेंगे। यही उनकी देह सब लोग सहारा देकर उठा लायेंगे उन्होंने आधा के सम्मुख इस दृश्य को झूलते हुए देखा। बैठे चारों ओर से घेरे रहेंगे कितने ही गावों से लोग आ जुटेंगे—इलाके के लोग हरिसंकीर्तन करेंगे चंदन की लकड़िया जलेंगी दूध-दही घी उड़ेले जायेंगे और उसके भीतर यज्ञ की हवि की तरह वे जलते रहेंगे। और उनका पागल बेटा उस समय अर्जुन के तन से टेक लगाये बैठे ज्वलंत मनुष्य को देखते देखते दोनों हाथ ऊपर उठाकर चीख उठेगा। सहसा उस पागल बेटे के मुख ने उनको कुछ विषण्ण सा कर दिया। पागल पुत्र चिता की आग की ओर घूम रहा है। मानो शिकायत हो—बाबा आपने मेरा सर्वनाश किया है। आपने मेरा सारा प्यार छीन लिया है। आपके धर्म बोध ने मेरा जीवन ध्वंस कर दिया है। मैं एक पागल हूं मुझमें चिंतन शक्ति नही, मेरी बावरी चिंता का कोई हिस्सेदार नही बनना चाहता—बस ऐसा लगता है कि दिमाग में एक सपना बेसहारा व्यक्ति सा लगातार चक्कर लगाता फिर रहा है कोई उस सपने में मुझे निरंतर चले जाने को कहता। आप ही वह आदमी हैं जिन्होंने मेरी आत्मा के निकट जो युवती थी जिस युवती का नाम पलिन था, लंबी डील की नीली नीली आंखों वाली उसको आपने दूर सरका दिया है। समुद्र मैंने नही देखा है बाबा लेकिन वसंत का आकाश देखा है आकाश के नीचे सुनहरे रेत वाली नदी का जल है उस जल मे उसका मुखडा तिरता है। अंधकार में आकाश का कोई बडा नक्षत्र जब पानी मे परछाईं डालता तब लगता वह लडकी कितनी ही दूर से बुला रही है मनी जाओगे नही। विलो झाडी के पास बैठ हम दोनो सातावलाज की कहानी बतियाएंगे। चलोगे नही तुम। और जाडे मे मैदान में घास पर कितनी ही ओस की बूंदें मैंने देखी हैं। ओस की बूंद जैसे ही उस पवित्र मुखडे को आपने छीन लिया है बाबा। शिकायत करते हुए चिता की आग की ओर देखते विद्वान बुद्धिमान पागल बेटा दहाड मार कर रो रहा है।

महेंद्रनाथ ने अबकी बार कसकर लाठी को पकडा। मन के भीतर कितने दिनों

का पछतावा। जितना ही वे मृत्यु के लिये तैयार हो रहे हैं उतना ही इस पागल बेटे के लिए पछतावा बढ़ रहा है। उतना ही वे अपने को असहाय पा रहे हैं। जान क्या उनके मन म आया, अब देर करने स कोई फायदा नही। झटपट चन्द्रायण कर ही डाला जाय। द्वादश ब्राह्मण भोजन की व्यवस्था कर डाली जाय। ब्राह्मणों को खिलाकर प्रायश्चित्त कर डालते ही—ससार स हमशा के लिये निवास का दस्तावेज मिल जायगा। ईश्वर म समर्पित इस प्राण को सासारिक क्लेश का बाध न हो तो बेहतर। उन्होंने पलटू स कहा मुझे घर ले चल। कहकर उन्होंने घर लौटने के लिए पलटू के कधे पर हाथ रखा।

वस्तुत उन्होंने अपने ससार म लौटना चाहा। व ही माना उनको उनके निर्धारित कक्ष तक पहुचा देंगे। जिस कमरे स कभी सूर्योदय देखने के लिए निकल पड़े थे बिलकुल उसी कक्ष म। अधेरा कमरा वायुशून्य और बीच-बीच म झींगुर की तान सुनायी पड़ती है—बड़ा ही निशान्त और निर्जन, अगल-बगल कोई नही। सब कुछ सूना सूना-सा। हताशून्य कमरे म फिर लौट जाना। आखें बद करते ही उनको ऐसा ही एक प्रकाशशून्य वायुशून्य कक्ष का दृश्य दिखाई पड़ता।

लेकिन नटखट बच्चा के इरादे भापना मुश्किल काम है। व अपने पितामह को लेकर हसी-तमाशा करने लग गए। व अपन प्यारे दादा को पकड़कर ल जाने लगे। कछार पार कर व पीपल के नीचे आकर खड़े हो गय। महेंद्रनाथ को पड के नीचे छोड़कर व बोले अब बताइय आप कहा आय हैं?

वद्ध उनकी काफी चिरौरी विनती करते रहे—क्योंकि वे समझ गये थे कि जब उनके चगुल फस हैं तो उनको परेशान किये बिना बाज नही आएग। व उनको लेकर खेल म मस्त हो गय हैं। व उनको झाड़-जगल म खड़े कर डरा रहे हैं। उन्होंने मानो हाथ ही जोड लिया और उनस कहा सोना भाई धन भाई, बड़े भाई तुम लोग सभी नेक लड़के हो। तुम लोग मुझे घर ले चलो।

सोना ने कहा, कोई डर नही दादा। हम लोग टोडर बाग के बरगद क नीचे आ पहुचे हैं।

लालटू न कहा, हम लोग आपके साथ मदान म लुका छिपी खेलेंगे। कहकर ही उन लोगो ने महेंद्रनाथ को पेड के नीचे धीरे धीरे बिठा दिया। मानो महेंद्रनाथ उनका हम उम्र दोस्त हो। फिर वे भाग-दौड करते रहे—चिल्ला चिल्ला कर मानो सबसे कहना चाहा—*राजा (पाल्हा) उस पड के नीचे बठा है। राजा को*

छूट ही आ गए। एकाएक व सम्मुख था महेंद्रनाथ पर की बात भूल गए।
पेड़ की डाली पर पाखी पंखी चहचहा रहे हैं। कहीं दूर लाल बनिया देखा रहे हैं
बहुत दूर कोई गाड़ी जा रहा है। और बहुत दूर से कोई माझी गीत गाता
आ रहा है। शायद यही गाना बचपन का। और उसका मन बार। और की प्रकृति
की गोद में वही एक बचपन घूम फिर कर आता है। पानी जान में फिर बढ़ है।
प्राय सुधबुधि जगी ही आगे पूछे बैठे हैं। दूर सुपारी के पेड़ की डाली पर बैठे जा
पर जाल फैलाकर बार बार ... रहे थे। कहीं ... मात्र उस बचपन का
स्वप्न पा रहे हैं बचपन घूम फिर कर लौट आता है यहीं एक बार तो नाव पर चला
जाती, बचपन में यही एक नाव—सा ... उड़ उड़ कर चलता। उसके पास और
इस समय वह उसका बचपन फिर रहा है। व प्राचीन बचपन के प्रतीक हैं। अब वे गा
बचपन में गाना गा रहे हैं—आज विनोदी का गाना। शायद और भी कुछ इस
गल में जुड़ गए हैं। सुमन किरनी बालासाहब यहाँ तक कि ठाकुर बाबा भी थे।
पातिमा तक चली आई है।

महेंद्रनाथ की आंखों के सम्मुख इस समय पागल पुत्र का चित्र तैर रहा है। क्योंकि संसार में सुख हमेशा नहीं बना रहता। संसार में दुख भी हमेशा नहीं बना रहता। फिर एक दूर का बचपन बार बार इस प्रकृति की गोद में घूम फिर कर आ जाता है। वे मन ही मन उस खोए हुए बचपन को फिर से वापस पाने के लिए गुनगुनाते हुए आज विनोदी का गाना गाने लगे। बचपन में शायद सिर के ऊपर वाला यह बरगद इतना बड़ा नहीं था। फिर भी उन्होंने बचपन के साथी सभी साथियों को पेड़ के नीचे देख पाये। सतत फिर रहे हैं। और जो गाना वह गा रहे थे उसी गाने को समस्वर व गाये जा रहे हैं। लेकिन समय बड़ा कम है। *कितना समय हो गया होगा—सहसा उनको ध्यान आया, व कोई भी जिन्दा नहीं व इस बरगद के नीचे किस तरह फिर से लौट आ सकते हैं।* मन बड़ा दुखी हो गया। भीतर से कोई मानो लगातार कहता जा रहा है वे कोई भी जिन्दा नहीं तुम अकेले ही इस पुरी पर पहरा दे रहे हो। मानो इतने दिनों में वे महसूस कर सके कि इस पेड़ पौधे परिंदों के बीच वे अब कोई भी नहीं हैं। वे परित्यक्त व्यक्ति हैं। हरे भरे जंगल में मरे ठूंठ जैसे वे केवल जगह घेरे हैं। या जीर्ण मठ जैसे—मठ से संन्यासी तीर्थ करने निकल गया है। उनसे अब बैठा नहीं रहा गया। अकले-अकेले सबके अनदेखे वे नदी की ओर पागल की तरह उतर जाने लगे।

पहले मोना ही चिल्ला उठा, दादा पेड तले नहीं हैं।

वे सभी खेल म इतन मशगूल थे, झाप जगल म वे इतना धमाचौकडी मचाये हुए थे कि किसी का पता भी नही चला कि व बूढे व्यक्ति नदी की ओर उतर गये हैं। व सभी अब गाव की ओर शोर मचाते बहुत चल जा रह हैं—दादा खो गये हैं। न पेड तले हैं, न और कहीं।

ईशम चाकी के बीचोबीच खडा था। चारा ओर तरबूज की लतिया। पीले रग के फूल। बनी-बनी लतिया के बीच शुतुरमुग के अडे जस तरबूज। मानो एक अतिकाय शुतुरमुग इस रतीली चाकी पर अडे दकर चली गई है। निपट काला रग। अबकी जाडा खत्म होत न होते तरबूजो स खेत भर गया। मले म इस बार काफी तरबूज जायेंगे। छोटे ठाकुर न व्यापारी क साथ बातें की हैं। मेड के सिल सिल म मुकदमा करन का विचार लकर वह घर से निकल आया था। रास्त म व्यापारी स भेंट हो गइ। वह अपन खत म चला आया। आकर हैरान रह गया। ईशम न उसम एक बार भी नहीं कहा है कि फल इस बार इतना अच्छा हुआ है। कई दिना म ही जमीन की सूरत बदल गई है। तरबूज मले म जायेंगे। कल परसो इसी रास्त या चाकी क बगल स बडे-बडे घोडे जायेंगे। मेल म घुडदौड होगा। सुनहरे रेत वाली नदी म बादवान ताने नाव चलने लगी है। महीना भर ही नाव चलती रहगी। फिर पानी घट जाने पर पार करन म घुटना डूबान रह जाता है। ईशम खत से एक एक दो दो तरबूज इकट्ठे कर रहा है।

ईशम लपक रहा है। पत्तियो की सघ म झाक कर देख रहा है। फिर टकोर कर देख रहा है। गदर तरबूज स्वादिष्ट होता है। टुना मारकर वह समय जाता कि कौन सा तरबूज जमीन स उठान का वक्त हो गया है। एक एक तरबूज बीस तीस सेर वजन का। वह एक साथ दो तरबूज उठाकर नही ला पा रहा है। यहा तक कि किसी किसी तरबूज को दोना हाथो स थामे सीने के पास उठाये ले आ रहा है। छाजन के बगल म एक एक दो दो तरबूज इकट्ठे करते समय ही उसन देखा, इस ओर एक आदमी लडखडाता उतरता चला आ रहा है। शुरू म उसन कोई गौर नही किया। ध्यान स वह इस समय तरबूज इकट्ठे कर रहा है। उसके पास मानो कतई फुरसत नही। वक्त बीता जा रहा है। उसने दूर से देखा हवा स तरबूज के पत्तो म सघ आ गई और उसमे से एक बडे तरबूज की पीठ दिखाई पड रही है।

फौरन वह उस ओर लपका। अब हवा नहीं चल रही है। नजदीक जाकर देखा बड़े बड़े पत्तो ने तरबूज को ढक दिया है। वह चारो ओर आखें दौडाकर ढूंढता रहा। पत्तो के भीतर पडे रहने से पता नही चलता। तरबूज फट कर खराब हो जाता है। उसने फिर हवा के एक और झोके के लिए इन्तजार किया। झोका आते ही पत्ता की आड मे तरबूज को वह देख लगा—यह सोच आखें उठाते ही देखा वह आदमी दो बार ठोकर खाकर गिरा है दो बार उठकर खडा हो गया है। लड खडा रहा है। कौन है यह आदमी ? आड की घूप म पागल की तरह नदी की ओर उतरता जा रहा है। उसने इस बार अच्छी तरह से गौर किया तो पाया अरे यह तो वही आदमी है वह उस ओर दौड पडा। नदी की ओर बढता चला जा रहा है। इतनी हिम्मत कसे पडी आखो से देख नही पात ताज्जुब है। वह आदमी लाठी घुमा रहा है माना अपनी जवानी म हो मानो वह शख्स हवा के साथ लड रहा है लाठी घुमाता कह रहा हो देखो मैं महेंद्रनाथ अब भी कितनी दूर चल सकता हू देखो मैं महेंद्रनाथ कितने दिना से इस धरती पर रह रहा हू और अब मेरे लडके मुझसे कहते है—चद्रायण कर डालो बाबा। साहस की बलिहारी। यह शख्स लाठी घुमाते चलने म बार बार मुह के बल जमीन पर गिर रहा है। और जरा सा आगे बढा तो नदी के जल मे जा गिरेगा। झपट कर ईशम ने उनको पकड लिया। फिर दोना हाथा से उनके शरीर का ऊपर उठाते ही देखा उनके हाथ पैरो म खरोच लगे हैं। खून रिस रहा है। व ऐसा क्यो कर रहे है। इस समय मानो उनका मुख एक खिलौना जसा है—वह जबरदस्त चेहरा मुहरा अब नही रहा। बिलकुल नन्हा सा आदमी बन गया है। छोटे बच्चे की तरह रो रहा है।

—आपको क्या हुआ है मालिक। किधर जाने को सोचा था।

—मुझको तू कहा ले जा रहा है ?

—घर जाइयेगा।

—घर। वृद्ध न अब आखें बद कर ली। यह क्या करने जा रह थे व। वे अपने बड बेटे की तरह अज्ञात दिशा की ओर क्या चलने लग थे। मन के भीतर यह कसा आवेश है। अपने बचकानेपन के लिए व कुछ सकपका से गये।—मुझे नीचे उतार दे अपनी बाहा स।

—जिस्म भर मे क्या हुआ है देखा भी ?

—क्या हुआ ह ?

ईशम ने आग और कुछ न कहा। समझ ही मे आ रहा है कि शरीर मे खून नही रहा। कोई कोई जगह कट गई है फिर भी खून नहीं निकल रहा है। पोखर के भिड पर पहुचन ही सभी लोग भागते हुए आय। वह वद्ध व्यक्ति चोगा पहने हुए व्यक्ति इस जवार क सबसे अतिम व्यक्ति राह से भटक गय थे। व सभी से कम स कम यही बताये।

इसी तरह स आखिरकार मन का दिन आ गया। एक एक दो-दो कर घोडे आने लग। कछार से ही बडे-बडे घोडे चले जा रहे हैं। मला महीने भर से ज्यादा लगा रहना। शनिवार को घुड़दौड होगी। गले की घटिया के बजन ही लोग खेतो मे निकलकर दखत हैं—किसका घोडा जा रहा है। नयाटाल का घोडा है या विश्वासगोले का। खेतो मे घोडा के चेहरे दिखते ही लोग घोडा जा रहा कहकर शोर मचाने लगते हैं।

सभी लोग मेले म जायेंगे। रजित जायेगा मालती जायगी। आबू शोभा जाएगे। छोटे ठाकुर जाएग। नाव स तरबूज भेजे जायेंगे। इस समय नाव म तरबूज लादे जा रहे हैं। सिर्फ सोना ही नहीं जायेगा। लालटू पलटू भी पैंट शर्ट पहनकर तयार बठे हैं सूरज निकलते ही व पदल चलने लग जायेंगे। सोना नहीं जायगा, क्योंकि सोना को इतना पैदल चलने म तकलीफ होगी।

बहुत देर तक सोना बरामदे म बठा रहा। वह सभी कुछ देख रहा है और रठता जा रहा है। किसी स भी बोल नहीं रहा है। छोटे चाचा के न कहने पर वह मेले म नहीं जा सकेगा। घर म कोई भी हिम्मत कर चाचा स बता नही पा रहा हैं। सोना मा स सवेरे से कहता जा रहा है मैं जाऊगा, तुम छोटे चाचा स बता दो, मैं जाऊगा। मा तक को भी कहने की हिम्मत नहीं पडी। धनबहू ने कल एक बार कहा था, सोना अगर मेले म जाय? छोटे चाचा ने धनबहू स मेले की भीड के बारे म कहा था, इतनी दूर वह पदल नही जा सकेगा, यही सब बताया था। धनबहू को आगे कुछ कहने की हिम्मत नही पडी।

सोना खबिया से टेक लगाए चुपचाप खडा है। सभी कुछ देखता जा रहा है।

और अब उसने लालटू-पलटू को नये पैंट शर्ट पहन कर दौड़ धूप करते देखा तो भभक के रो पड़ा। सोना के निरस जाने का समय जितना नजदीक आता जा रहा था उतना ही टूटता जा रहा था। क्योंकि आखिर तक उसे आशा थी कि छोटे चाचा उसे रोते देखकर मेला जाने का कह देंगे।

सिर पर तरबूज लादे ईशम आ रहा था। इतने बड़े तरबूज का आविष्कार कर वह दंग रह गया था। करीब एक मन से अधिक वजन का। उसने यह तरबूज व्यापारी की नाव पर देखी थी। घर से आया है। सभी को काट-काटकर खाने को कहेगा। और काटते ही भीतर लाल रंग काले-काले बीज वसन्त के मौसम में इस तरबूज का रस मिसरी की शरबत की तरह होगा। आंगन में आते ही उसने पुकारा सोना बाबू कहां हैं जी। जरा दाओ तो लेते आइए।

रंजित आंगन में खड़ा था। शोभा आबू आंगन में आ गये हैं। मासी आई है। जो लोग मेले में जायेंगे वे सभी आंगन में भीड़ लगा रहे हैं। गांव से नीचे रास्ता है उसी रास्ते से कतार में लोग मेला जाने लगे हैं। सभी मेले में जायेंगे सिर्फ सोना ही नहीं जाएगा। उसने ईशम की पुकार सुनी है। लेकिन आंगन में नहीं उतरा। खंभे से टेक लगाये अब भी फफक फफक कर रो रहा है।

ईशम ने रंजित से कहा दीजिए काट कर सबको दीजिए।

ईशम केले के दो बड़े-बड़े पत्ते काट कर ले आया। प्रथम फल के रूप में कुछ हिस्सा काट कर गृह देवता के लिए अलग रख दिया गया। बाकी रंजित ने काट काट कर सबको दिया। देते वक्त ईशम ने कहा सोना बाबू कहां ? उनको देख नहीं पा रहा हूं।

लालटू बोला सोना रो रहा है।

—रो क्यों रहा ?

—मेला जाने के लिए।

—आप लोग जाएंगे सोना बाबू नहीं जाएगा ?

—छोटे चाचा ने मना किया है।

—मना करने से क्या। कहकर अंदर घुस उसने पुकारा, सोना बाबू कहां हैं। कौन कहता है कि आप मेले नहीं जाएंगे। मैं आपको मेला ले चलूंगा। जरा देखूं तो किसकी मजाल जो मना करे।

छोटे चाचा ने कहा सोना तुम इतनी दूर नहीं जा सकोगे। कौन है जो

तुम्हें गोद म लादे चलेगा।

मैं चलूगा। चलिए मालिक।

सहसा ही आकाश से सारे बादल छट गय। सोना का कुछ मानो खो गया था सहसा मिल गया। उसन मा से कहा मा मुझे छोट चाचा ने जाने को कहा है। ईशम दादा मुझे ले चलेंगे। सोना दौड दौड कर सबको बतान लगा। दादा से कहा दादी से कहा मैं मेला जाऊगा। ईशम दादा मुझे ले जायेंगे। मेला जाने की बात पर वह मानो सुधबुध खो बठा। यह माना कोई दूसरा ही जीवन है मेला मेलन, नदी नाले सभी कुछ मिल मिलाकर मनुष्य के प्राणो म एक बाढ सा ले आता है। इतने दिनो मे सोना इसका भेद जान सकेगा। मेला का रहस्य क्या है कौन लोग मेला में जागत हैं घुडदौड की बाजी जीतने के लिए सभी उतावले क्या हो उठते हैं— यही सब सोना के दिमाग म आ रहा था। इशम का हाथ थामे सोना सब लोगो से पहल मदान मे उतर गया। कुछ दूर पदल चला तो कुछ दूर कधे पर। जभी सोना से चला नहीं जाता तभी ईशम उस कधे पर लिए ले रहा है। ज्यादा दूर जाते न जाते बालियापाडा पार करते न करते नदी के किनारे सोना न प्याऊ देखा। फिर पड के नीचे कतारो म खडे हिज्जल पडो के नीचे सोना न बिनीधान की खील और नाना बताशे देखे। दो पस की बिनी खील और एक पसे का बताशा ईशम ने खरीद दिया। छोट चाचा होत तो वह खा ही नहीं सकता था वह खाने ही न देना। कोई-कोई पहले चला गया है। सोना न दाना जेबा म बिनी की खील भर रखी है और दोनो मे बताशा। वह चलता जा रहा था और खील खा रहा था। खात-खात ही देखा दूर के बडे मदान म तबू गडे हैं। तबुओ के सिर पर झडे फहरा रहे हैं। शनेश्वर का मदिर दिखाई दे रहा है। पीपल का पेड फोडकर मदिर का त्रिशूल आकाश की ओर चला गया है। और घोडा की कतार दरगाह की जमीन की ओर ले जाई जा रही है। कोई ताड के पत्ते का भापू बजा रहा है। नदी म कितनी सारी नावें लगी हैं। इनकी भी एक नाव आयेगी। तरबूज की नाव नदी-नालो का चक्कर लगा कर आने म वक्त लेगी।

रजित का एक जत्था नारानगज स आयगा। इस मेले मे वह जत्था लाठी छूरे का खेल दिखायगा। भुजग गोपाल आदि दो दिन पहले ही चले गये हैं। तबू गाडना है। छोटी छोटी परी तरह चौदह साल की लडकिया आयेंगी सफेद फ्राक काला पैंट पहन और परो मे केडस के जूते। तय था कि वे बाबुओ के शरिफनेखान

वाली कोठी म टिकेंगे। समिति के निर्देश से यह सब हो रहा है। रजित या चल फिर रहा है मानो उस दल के साथ उसका कोई रिश्ता नही। बल्कि भुजग ही सब कुछ कर रहा था।

धनेश्वर क मदिर म प्रवेश करते समय ही मालती न देखा जब्बर मल म इश्तहार बाट रहा है। मालती-दीदी को देख वह हसा।—आप आइ हैं दीदी। मालती ने देखा, उसके बगल म दो चार अजनबी मुसलमान मद मारे भय के मालती हस न सकी। एक बार उस यह जानने का मन हुआ कि मेले मे शम्भू आता है या नही। लेकिन जब्बर क दोना बगल के लोग ऐसे ताक रहे थे कि वह किसी तरह म भी खडी नही रह सकती थी। नदी से स्नान कर आना है। कुछ फूल बेल पत्र, तिल और तुलसी लगेंगे—मालती सीधे मन्दिर म चली गई।

और तभी एक नन्हा सा लडका, उम्र भी भला उसकी क्या होगी, मल म खो गया है। उसके हाथो म एक छोटा बकरी का छौना। नदी घाट पर दीदी नहान गई है। उसे पेड के नीचे ठहरने को कहा है। दीदी आयेगी आते ही मदिर म जायेंगी।

ससार म उस समय ज्वाला-यातना की बातें उभर आई हैं। मनुष्य के भीतर एक मन है वह बावरा सा मन नदी देखते ही उथल-पुथल होने लगता है। मेले म इतनी हसीन हसीन हिंदू औरतो की भीड है। नहाकर उठ आने के बाद भीगे कपडा म ही उठ आने पर क्या गजब की दिखती है युवती लडकी के सारे अगो म मानो काली नागिन लहराती। देखते ही फन मारने का जी करने लगता। स्थिर नही रहा जाता।

गोपालदी के बाबुओ के बेटो न सारे मेले म वालटियर दिया है।—अजी मानव-जाति की सतान मिलजुल कर रहो बुरा काम करते ही बाध कर ले जाऊगा। प्याऊ बिठाया गया है। कोई खो जाने पर उसका पता बता रहे है। बज पहने बाबुओ के बेटे घोडे पर सवार चारो ओर गश्त लगाते समय ही सुन कि किसी ने किसीका स्तन दबा दिया है। वह युवक पकड लिया गया है। लुगी पहने गले म अगोछा बाधे बगल म छोटी सटी दबाये मातबर बना मेला देखने आया था। लोभ मे आकर जब भीड थी स्नान के घाट पर भीड थी तब परिचित लडकी क स्तन पर हाथ लगाने से वह सब पोशीदा रखेगी—लेकिन हिंदू नारी वह अपने मान सम्मान के खातिर बेवकूफ की तरह हो हो कर रो पडी। बाबुओ के एक बेटे

ने देख लिया है। चारा ओर कडी निगरानी है। मुटठी मे पकड कर उसकी चूतड पर धाय से एक लात जमा दी। साथ ही साथ मले भर मे आग की तरह यह खबर फल गई। कोई भी कुछ कहने की हिम्मत नही कर रहा है। दरगाह वाले घोडे घास खा रह हैं। दिन ढलते ही मदान म उतर आयेंगे। कितना प्रशस्त मदान है। दूर दूर लाल-नीली झडिया उड रही हैं। दो एक घोडे शायद मुडापाडा के सुरेश बाबू का घोडा तीर की रफ्तार से भागता आ रहा है।

और तीर की रफ्तार से जब्बर दौड रहा था। उसने देखा उसकी जाति बिरा दरी के आदमी को बाध कर शरिश्तेखान वाली कोठी मे ल जाया जा रहा है। कोइ भी एक बार मुह खोलकर कुछ कह नही रहा है। उसके स्वजाति के लोग सिर झुकाये चले जा रह हैं। वह मानो छलाग मार कोस भर आग निकल सकता एसी छलाग मार वह पहुचा और भीड म भीतर समा कर हुकार उठा, कहा ले जा रहे हैं उसे।

किसी ने कहा शरिश्तेखाने।

—इसने किया क्या है।

—चूची दबा दी है।

—दी है तो हुआ क्या। कहकर भीड ठेलते वह और आगे बढ गया। उसकी टोली भी बढती जा रही है। लेकिन व उस युवक को नही पा सके। वज पहने हुए कुछ लागा का एक दल अनवर को शरिश्तखाने म ले गया। चूतड पर लात, घूसा मुक्का थापड—हाय अनवर तुम्हारे दिल के कसे अरमान ऐसे सुदर स्तन म खिले कवल जसे स्तन म तुमने क्या पानी की अथाह म सपने देख रह थे—मानो एक रुपहली मछली चली जा रहा है। तुम उस सपने से पकडे गये थ।

क्रमश सूय उतरता जा रहा था। बडे तबू म जहा फरश बिछा है वहा बाबुआ के घर की औरतें बठेंगी। उनके अगो पर सुन्दर सुदर गहने जेवरात। देवी जैसे मुखडे। दमकती आखा से घुडदौड देखेंगी। या नदी म जा हजार नाव खडे हैं—उन नावा म दास-दासिया के उतर आने पर आनद मले भर म फल जायगा दर गाह म तब एक एक दो-दो घोडे बिलकुल इस तबू क नीचे पहले आएगे बाबुआ को पहला सलाम देकर दुलकी चाल स मदान मे उतर जाएगे—मानो कहते हो हम लाग दूर देश म आए हैं बाजी जीत कर हम चले जाएगे आप लाग मेहरबान हैं आप के मदान म घोडा दौडाएगे। बाजी जीतेंगे। कह कर घोडे का खेल शुरू

कर दिया था। एक एक दो दो घोडे अपने पर उठा कर बाबुओ की छोटी छोटी लडकियो को नाच दिखा रहे थे।

उस समय मेले म दो दल। शरिश्तेखाने की कोठी मे हिंदू नौजवान उठ गये हैं। नीचे मुसलमान नौजवान। पुलिस आ गई है। वे बाबुओ का पक्ष लकर बात कर रहे हैं। कानून है। इसाफ है। थाने चालान किया जाएगा।

लेकिन कौन किसकी बात सुने। शरिश्ताखाना तोड कर अनवर को वे छुडाने को हुए तो बाबुओ की बदूकें दहाड उठी। साथ ही साथ जो घोडा दूर म नाच रहा था बिदक कर दौडने लग गया। जिधर सीग समाई उधर ही भागन लगा। ईशम तरबूज बेच रहा था। सोना लालटू पलटू सकस वाले तबू म बाघसिंह का खेल देख रहे हैं। बग पाइप बज रहा है बाघ अपना पजा चाट रहा है। ऊचे रिंग पर एक खूबसूरत लडकी खेल दिखा रही है। उस समय उम बदूक के गजन स मेले भर म एक अजीब-सा अधेरा छा गया।

दो लाश गिरे हैं। धीरे धीरे अधेरे म मशाल की रोशनी दिखाई पडने लगी। शरिश्तेखान की कोठी म बाबुओ की औरतें चली गयी हैं। दरगाह से सारे घाने एक एक कर चले आ रहे है। साइसो के हाथो म मशालें। मेले भर म मशाल जल रहे हैं। बीच-बीच म अल्लाहु अकबर का नारा लग रहा था। शरिश्तेखाने मे हिंदू लोग मानो प्राण रक्षा के खातिर चिल्ला रहे है वदे मातरम।

कौन किधर छिटक गया है समझ म नही आता। ईशम सोना लालटू पलटू को तबू के भीतर बिठाकर चला आया था। मेले म दगा छिडते ही ईशम सकस के तबू की ओर दौडने लगा। अधेरा हो गया है। लोगबाग जिधर सीग समाती भाग रहे हैं। उम छोटे बच्चे और बकरी के छौने को कुछ लोग रौंद कर चले गये हैं। दीदी की आशा म वह पडा था दीदी के आते ही मदिर म उठ जायगा। जब घटना घटी थी तब दोपहर थी द पहर स ही गुजन शुरू हो गयी थी। फिर जब्बर के आने के बाद यह भनभनाहट बढी—सभी न सोचा था मन ठन म एसा हमेशा ही हुआ करता है। बुजुग और मातबर ल ग आकर सब रफादफा कर देते हैं। लकिन हैरत की बात है कि इस बार जब्बर न कहा था—क्या आप लोगो की कोई इज्जत नही? आप लाग डार कर बाबर और कितन दिन रहग? इयटू शामू के मन के स्वर म यह ललकार रहा था। इतन मार लागबाग दगकर उस भी अदर ही अन्दर एक जान सा आ गया था। उसन अपन बारे म सोचा कि यह कितना बडा

है और चाहने पर क्या नहीं कर सकता, महुकर अनवर का छीनने के लिए शारिशे यानें म उठने वक्त ही देखा बदूकें गरज उठी हैं। उसे इतनी बडी शका नहीं थी। एक एक कर दो लाशें उसके सामने मुह के बल गिरी। आग जलने म कितनी देर लगती। अब शायद सभी मशाल लिए लपटेंगे और सब कुछ तहस-नहस करने लगे हाथ, जो कुछ भी कीमती हाथ लग जाय लेकर मदान म दौडते फिरेंगे।

ईशम भी सकस के तबू की ओर दौड रहा है। हाय हाय सब कुछ चौपट हुआ। वह चिल्लाकर पुकार रहा है। सोना बाबू। तबू के सामने आकर देखा, तबू नहीं रहा। सब तहस-नहस कर डाला गया है। तबू क एक ओर आग जल रही है। बाघ सिंह सिकुडे सिमटे जा रहे थे। पास-नजीक कोई आदमी नहीं। माना लमह भर म सब कुछ दरहम बरहम कर चला गया है।

ईशम तब नहीं कर पा रहा है कि क्या करे। बडा मुह कर वह सोना बाबू को ले आया है। हाय क्या होगा। वह अकुलाने लगा। और बावर की तरह साचने लगा कि शरिश्तस्थान म उठ जायगा। लेकिन नजदीक जाते ही उस ख्याल आया— व जिस तरह बिगडे खडे हैं और उसने पहन रखी है लुगी उसका उस ओर जाने की हिम्मत ही नहीं पडी। फिर उस ख्याल आया तीन नाबालिग इधर दौड कर नहीं आ सकते। क्योंकि रास्ता भटकने पर व उधर ही दौडेंगे जिधर बठकर वह तरबूज बच रहा था। फिर वह ठहरा नहीं। समूचा मेला ही बौरा गया है। चारों तरफ आग। यह आग माना कितने दिनों स जमीन क भीतर पोशीदा थी। य सब नाग कितने दिनों का अपमान बरदाश्त करने क बाद इस वक्त बदला ले रहे हैं। उस सूझा नहीं कि वह क्या करे। आग के भीतर खडे हो वह चिल्लाने लगा, सोनाबाबू कहा गय जी। लालटू बाबू। मैं गाव कस लौटू। मुह क्स दिखाऊगा। वह पागल की नाई आग क भीतर गुहार पुकार मचाता रहा। गुहारते पुकारते वह दौड रहा था। चारो ओर टूट काच काच की चूडिया टूट कर सारा रास्ता लाल नीला हर दाग स छिटा रास्त म चलते उसके हाथ पर कटे जा रहे हैं। उसका कोई सुध नहीं। व शायद उसके लिये पेड क नीचे खडे हो। लेकिन वहा आकर देखा वहा कोई नहीं। सिफ पडे-पडे तरबूजा को चारो ओर बिखेर कर कौन लोग मदान के अधर म छिपा गये हैं। तरबूजा पर खून के दाग पडे घाव। उसका शरीर सिहर उठा। पागल की तरह उसने हाक लगाई किसने मरे लोगा को छीन लिया है बताओ। कह कर वह भी उन्मादी-सा माना किन्हीं लोगा की हत्या करने के

मिठाई की कितनी ही सारी दुकाने । बैंगनी पकौडे आदि की दुकानें पार करते ही खुला मदान। मदान म उस समय तबू के भीतर गोपालदी के बाबू लोग बठे थे। यह मैदान पार करने पर सकस के तबू। दो छाटे-बडे सकस। रजित ने टिकट खरीद लिये हैं। ईशम उनको बिठाकर यह बता आया था कि सकस खत्म होने पर वे वहा पहुच जायेंगे जहा ईशम तरबूज बेच रहा है। रजित देर न लगा सका। यहा वह छद्मभेष म है। उसका असली परिचय जानने के लिए लोग दौड धूप करने लग गये हैं। जितनी फुर्ती स हो सका सकस के तबू क भीतर जाने के लिए रजित चलता रहा। जलेबी की दुकान से उस वक्त भी एक गध आ रही थी। मेला ऐसी भद्दी सी सूरत अपनायगा यह जलेबी तलने की मनोरम गध से भापा नही जा सकता था। केवल रजित और अय कुछ लोगा ने शायद सोचा था—जमाना बेहद बुरा है। मेले स अब अपने-अपने घर के लिए चल देना चाहिए।

मेले म शचीद्रनाथ के आने की बात थी। वह आता तो जब्बर को अपने कब्जे म कर सकता था। शचीद्रनाथ स जब्बर डरता है। क्याकि आबिद अली के सुख दुख म शचीद्रनाथ रिश्तेदार के समान हैं। चलते चलत रजित ने यह सोचा। सकस के तबू म पहुचते ही उसने देखा सकस टूट चुका है। गोलमाल का आभास उनको भी मिल चुका है। सारे खेल न दिखाकर उन लोगा ने बाघ के पिंजडे म बाघ और सिंह के पिंजडे म सिंह को बद कर दिया। रजित ने गर्द पर उन तीना का देखकर कहा तुम लागा को उधर जाने की जरूरत नही। पहले तुम लोगा को शरिश्ताखाने पहुचा आऊ। रजित ने सोचा था कि उनको कोठी म पहुचाने के बाद वह ईशम को इतला करेगा और ईशम से सारे तरबूज नाव पर लादने को कहेगा। शरिश्तेखाने तक रजित पहुच न सका। उस समय सूय अस्ताचल को जा रहा था—बदूक का गजन और शोर। लोग भाग मर रहे हैं।

रजित जरा फुर्ती से पीछे की ओर चला। उसे याद आया कि उसने मालती स बताया है कि वह सकस के तबू के गेट पर रहेगा। जल्दी म तबू के गेट पर आ पहुचते ही उसने देखा तबू के पिछले हिस्से म किसी ने आग लगा दी है। इन बालकों को लेकर अब वह क्या करे। मालती अब भी आ नहीं रही है या मालती उनको न देखकर फिर मदिर लौट गई हो। अब तो यहा मे प्राण समाये हैं—जान कब प्राण चले जाय, और मालती सी सुदरी युवती—वह अब व्याकुल सा उनको

लेकर मंदिर की ओर भागा। सोना को कोई बात ठीक ठीक समझ म नही आ रही है। यकायक ऐसा क्या हो गया। मानो टिड्डियों की तरह सारे लोग नदी की ओर भागते जा रहे हैं। उसने देखा कुछ नाव तीर की रफ्तार से जा रही हैं। उसने देखा आबू एक पेड के नीचे खडा रो रहा है। सोना बोला, मामा वो देखिए आबू।

रंजित ने कहा तेरी बुआ कहा ?

आबू सिर्फ रोता ही रहा। समझ गया कि आबू इस मेले म खो गया है। अब मालती को तलाशना कोई मानी नही रखता। उसका दिल लरज उठा। इन लोगो को किसी सुरक्षित स्थान पर बिना पहुचाये उसे सकून नही मिल सकता। लेकिन किस ओर से शरिस्तेखान म जाया जाए। पीछे की ओर ताकते ही उसने देखा आग धधक रही है। सिर्फ नदी की ओर ही जाया जा सकता है। नाव है। तरबूज की नाव। वह उनको लेकर दौडने लगा। अंधेरा हो गया है। अब लोग चीन्ह नही जाते। बीच बीच मे दूर की आग लपलपा उठती तो कुछ मुख दिखाई पड जाते। बिना भेदभाव के हिंदू मुसलमान इधर इकट्ठे हैं। सभी जान बचाने सुरक्षित स्थान की ओर भाग रहे हैं।

रंजित ने देखा नाव की लहासी किसी ने खोल दी है। जरा दूर पर खडी है। वह पानी म कूद पडा। और बीच दरिया स नाव खीच लाते वक्त तैरते हुए उसने देखा पानी पर न जाने क्या सब तर रहा है। वह समझ गया कि डरे सहमे लोग पानी म तर रहे हैं। आग से और हत्या स प्राणो को बचाने के लिये डुबकी लगा लगा कर वे नदी पार कर रहे हैं। उसने फिर देर नही लगाई। नाव पर उठ गया। और उसे लगा छाया मूर्ति सी नाव पर कुछ लोग हैं।

रंजित चिल्ला उठा कौन हो तुम लोग ?

कोई आहट नही मिली।

—कौन हो तुम लोग ?

अब शायद आवाज पहचान कर मालती रो पडी मैं मालती हू।

तुम। बगल म कौन ?

—शोभा। आबू नही मिल रहा है।

इस समय बातें करने का वक्त नहीं। नाव को किनारे की ओर खीचकर ले जाते समय उसने कहा आबू मिल गया है। आबू सोना, लालटू पलटू सभी किनारे

खड़े हैं। फिर जरा ठहर कर बोला, न डाड न लग्गी, कहा है यह सब ?

मालती ने कोई जवाब नहीं दिया। अब उसे कोई डर नहीं। रजित की मदद के लिए वह भरसक हाथों से पानी में थपड़े मार रही थी। नाव किनारे आने पर रजित ने अंधेरे में देखा मशाल की रोशनियां इधर ही आ रही हैं। सर्वनाश। उनको पता चल गया है कि नदी के जल में तैर कर लोग उस पार निकले जा रहे हैं। इस क्षण वह क्या कर उसे सूझा नहीं। लग रहा है निश्चित हत्या—धुआंधार हत्या। उसने सोना की आंखें देखो। सोना की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है। ऐसी हंसी खुशी से भरपूर मेला मेले में कितने परिंदे, कितने रंग बिरंग घोड़े ताडपत्ते के भापू खील बताशे कितने सुंदर लाल नीले निशान उड़ रहे थे—अब वे सब कुछ भी नहीं रहे—जाने कैसे सब तीन-तेरह हो गया—सिर्फ चारों ओर आग जल रही है। मैदान में वे घुड़सवार अब सरपट भाग रहे हैं। हाथ में मशाल लिए। मशाल की रोशनी में मौत के निकट पहुंचने वाले लोगों के मुख देखने की ख्वाहिश। सबके उठते के बाद रजित ने नाव को ओर में नदी में धकेल दिया। भरसक हाथों से पानी फेंकने लगे पीछे।—तरबूज की नाव। रजित ने एक एक दो-दो कर मार तरबूजों को पानी में फेंक किनारे की ओर बहा देने लगा। अंधेरे में ये सारे तरबूज पानी में तैर रहे थे। पानी में तैर कर आदमियों के सिर की तरह मानो सैकड़ों लोग पानी में आंखें डुबाकर इस पैशाचिक उल्लास से आत्मरक्षा कर रहे हैं।

और बीच दरिया में आते ही लगा कि हाथ में मशाल लिये वह दल मैदान पार कर नदी के निकट पहुंचा जा रहा है। वे अगर देख पाये तो बरछी फेंक सकते हैं। या पानी में तैर कर आ सकते हैं। उसने सभी को इस बार नाव से पानी में उतार दिया। फिर नाव को पानी में तिरछा किये रहा। दूर से देखने से लगेगा—एक खाली नाव बहती चली जा रही है। बल्कि नजदीक जा सारे तरबूज अंधेरे में बहते चले जा रहे हैं उन तरबूजों को नागों के सिर समझकर अपने अपने बल्लम या सुपारी की डाली की बनी बरछी फेंककर मारेंगे और ये हाथ खाली हो जाने से वे नदी के किनारे खड़े नहीं रहेंगे मैदान की ओर लौट जायेंगे। वे नाव के दूसरी ओर शरीर छिपाये मछली बने रहेंगे। और सावधानी से नाव को उस पार ले जाते ही सारा भय डर दूर हो जायगा। फिर वे नाव को गुनवाह की तरह गोन खींचकर ले जायेंगे।

एक सिर पर मालती। बीच म सोना, लालटू, पलटू आबू और शाभा—दूसरे सिरे पर रजित। सभी क केवल दो-दो हाथ नाव की अहार थामे। और समूचा शरीर और मुह नाव की आट म। माना इस नाव पर कुछ लोग-बाग थे अब व नदी म जल म डूब गय हैं। खाली नाव कटे सिर लकर जा रही है। दा चार तरबूज नाव की गलही पर इधर उधर बिखर पड। अधर म रजित न ऐसा ही एक दृश्य प्रस्तुत कर रखा।

मनुष्य क भीतर जाने कब क्या हो जाता है। जो लोग घोड़े पर सवार इस हत्याकाड म जुट हैं रजित जानता है—घर पर व बीवी, बाल-बच्चा का छोड आए हैं। बाजी जीतकर लौटने पर तीज-त्योहार सा उत्सव आरभ हो जायेगा। गाव गाव म बाजी जीतने का तमगा गले म लटकाये लोगा से ये दुआ मागत फिरेंगे। इस समय देखा तो कौन कहेगा ये लोग वे ही हैं। अधर म रहकर उसन देखा उनके हाथा म सुपारी के छड मानो किसी खेल म मस्त हो गये हैं। वे सुपारी क छड बल्लम और बरछी उन तरबूजो के सीन म भाले की तरह भाकन लगे और उल्लास स फट पडने लगे। वे काफिरो की हत्या कर रहे थे।

और उस समय एक आदमी नदी के किनारे किनारे चला जा रहा है। अधेरे म वह आदमी पुकार रहा है सोना बाबू कहा गय जी।

अधेरे म कोई आहट नही मिल रही है।

उस समय रजित नाव दूर बहा ले गया है। अब वे किनारे उठकर भागने लगेंगे।

वह आदमी पुकारता जा रहा था मैं किस लेकर घर लौटू। वह आदमी इस किनारे स गुहार रहा है। उस किनारे के मदान मे दौडते हुए सोना ठोकर खाकर गिर पडा। दूर स, बहुत दूर से कोई उसे पुकार रहा है। सोना बोला मामा मुझ कोई पुकार रहा है।

रजित ने अधेरे मदान मे उसे उठा लिया। कहा बोलो मत। भागो वह फुसफुसाते हुए कान के पास मुह लकर बोला सामने हिंदू गाव पडेगा। रात वही बितानी है। अधेरे मे मालती को ले जाते हुए उसको हिम्मत नही पड रही है। रात भर पदल न चलकर सामने के गाव मे उसने आश्रय लेने को सोचा।

उस आदमी की पुकार क्रमश धीमी होत-होते किसी समय हवा म बिला गई। सोना बाबू हो। मैं ईशम हू। मैं किसे लेकर घर जाऊ बताइए।

सोना को बार-बार लग रहा था नदी के उस पार से कोई उसे पुकार रहा है।

हैं। वाह रे, वहकर उसके भीतर ग हन वा तर यग उद्वलित हो उठा।

शचीद्रनाथ ा अब उस पुडकी लगाई।—त उठो। जाओ, तहार खाना खा लो। फिर डटार खाना। आज तुमे तरबूज क गा म नही जाना है। तुम लोग जाओ। उनको तरा आराम कर लने दो। वहार खाना लालटू पलटू स उहान वठा म चल जा क लिए वहा। व चल न जान पर ग्शाम दिन भर उनक सामन वठा रहगा और पागल की तरह आरा म हहार मुह की रलाई रोता रहेगा।

मले स लौटकर मालती भी जाा वगा सहम सहम कर दिन बिताने लगा। रात होन पर वह घर स वाहर नही निकली। चुप्पी जलाये बठी रहती। रात हो जान पर शाभा और जाब वो सीन म तरड बम दु स्वप्न दया करती। कभी कभी कहने का जी कर उठता ह भगवान अब मुझस सहा नही जाता। रात का आधा म नीद नही लगता ह कुछ लोग रात को घर क आगन म फुसफुसा कर बातें कर रहे हैं। ठाकुर तुमका मैं समझा नहीं सकती मरे दिल म कसी जलन है। बिलकुल मानो जलाली की नाइ—प्राणा की यह ज्वाला अब सही नही जाती। यह जला जल स नही मिटती। ठड हाथ। किसी उष्ण स्पश के लिय मालती दुखी दिख रही है। या शायद उस कहन की इच्छा हो ठाकुर मुझे लेकर जिधर दोनो आखें जाय त चलो। लेकिन सुबह होते ही जब टोडरबाग क मदान म मुर्गे बासते ह सूरज गाबगाछ क पीछ स झाकन लगता तब यह सब कुछ भी याद नही रह जाता। तब मन कुछ उतावला सा हो जाता काई तदबीर ढढ निकालना जिसस वह आदमी दिखाई पड जाय।

एक दिन उसने रजित स कहा मुझ एक चाकू दोगे ठाकुर?

—चाकू स क्या करागी?

—मुझे दो भी। लकडी क चाकू स सलत अब जी नही करता।

—अभी तुम्हारा हाथ सधा नही मालती। सध जाय तो ला दूगा।

मालती का जी करता कि कहे किसने कहा है कि मरे हाथ सध नही। तुम एक बार ला तो दो—दखना फिर कसा खल दिखाती हू। शायद मौत क खल का शौक हो। अमूल्य कुछ अधिकाई करने लगा है। रजित के आने के बाद से अमूल्य जस कुछ तुल सा गया है। वह मौक की तलाश म है मालती को पाते ही उसकी गदन पर, खेत मदान झाप जगल म या कविगान या जात्रा नौटकी के अवसर पर जब घरपर कोई नही होगा तभी दात गडा दगा। घर पर पहरा देने के

लिए मालती लटी रहती लेटे लटे वह दरवाजे पर आहट पाती कौन हो तुम ? जरे बोलत क्या नही दरवाजा खोलकर चले आओ तनिक चाद सा मुखडा तो देखें, कहकर ही भीतर ही भीतर मौत का खल खेल जाने के लिए मालती तयार हो जाती। तभी उस लगता माना ज बर पड तले खडा हो—इश्तहार बाट रहा है। रह रहा है मालती दौडी आ गयी। उसने आस पास के लाग दात निकाले मालती को देख रहे है। ऐसा एक चित्र मन म जागते ही वह रजित स मचलने लगती ठाकुर मुझ एक बडा चाकू दे गे न, दागे ? सूरज डूबने क बाद मेरा दिल बठने लगता है।

लोगे वे बाद स लाठी और छुरे का मन रात के अधियारे म। या और कही डे लाइट (गम बत्ती) जलाकर। और बडी कोठी क बाद जो मैदान है उसे पार करन क ब द जो सुनसान जगह है— वही गाव के लोग इकट्ठे होत थे। अब इस सबकी देखभाल रजित नही करता फिरता। वह दूर-दूर चला जाना, कहा जाता कभ जाता कोई नही जानता। कविराज और गोपाल देखभाल कर रहे हैं। फागुन चत निकल गय। वसाख म बहुत गर्मी। गर्मिया म चादनी हो तो डेलाइट नही जलाई जाती थी। अस्पष्ट चादनी म ही खेल चलता था। चेहरे अच्छी तरह पहचान नही जाते। मालती शोभा आबू को लेकर ठाकुरानी चली आती थी। धनबाबू की बहू रहती थी। पाल कोठी स सुभाष की मा आती थी। हारानपाल की बीवी आती थी। चदर की दो बडी बडी बेटिया मनि और गगनी आती थी। धीरे धीरे जब खेल जम उठता तो सोना वगरह क नय मास्टर जी शशीभूषण सभी के हाथो म भीगा चना और गुड रहत थ। इस देश म जान कब गहयुद्ध छिड जाय। व इतिहास क छात्र हैं। जब भी स्वतन्त्रता आती है इसी प्रकार गहयुद्ध छिड जाता है। छिड जाय तो यह सब लाठी आठी का खेल प्राणो की रक्षा के हेतु काम म आ जाता।

कही युद्ध हो रहा है अकाल पडा है। इस इलाके म रहन म पता नही चलता। सुजला सुफला देश है। अभाव तगी स लाग चल आ रहे थे—शशीभूषण भी शायद उसी दल के हैं। वह नौकरी लेकर चला आया था। वह स्कूल का प्रधान शिक्षक था। सोना शशीभूषण के पैरो के पास बठा इतिहास की कहानी सुना करता था। ट्राय का युद्ध। ट्राय का वह लकडी का बना घोडा। शहर के फाटक पर कुछ लोग उस घोडे को रख गये। इतना बडा घोडा। नगरी के बच्चे उस घोडे के चारो ओर

घूम घूम कर गाता जा रहे थे। कार्तिक का पोखर मन्दिर के बाजू पर पड़ा है। तिगना बड़ा और ऊंचा। और भीतर हजार हजार मील। उस दूर-नगरी और मन्दिर के तीन तरफ की बात मान आज ही सोना को लगता राजा का भी एक देश है। बाबू लोग उस महा लीगुनी है। मुड़ापाड़ा के बाबुओं की कोठी नदी के किनारे है। महल जैसी ही इमारत। और नदी का पानी पर घाट के पूल और बड़ी चाकी पार करते ही पीलखाने का मकान। मकान में वह हाथी हर वक्त बंधा रहता है। बाबुओं की बेटियां हैं अमला कमला। कमला उसकी हम उम्र लड़की है। वे कलकत्ता में रहती हैं। पूजा के दिनों में आती हैं। जाने क्या स्टीमर द्वारा नदी के घाट के घाट का जिस आते ही उस नदी की पारी पर हाथी की घंटा आ जाती है। अमला कमला के बार में भी ध्यान भेजता है। और वह महल जैसी इमारत के बारे में भी। पूजा आते ही मनलग्ना बढ़ना जाता है। वह नहीं जा पाता। मन से इस बार लौट आने के बाद जाना क्या उस वह बात हो। मना कि लालभाई की तरह वह भी इस बार मुड़ापाड़ा जा सकेगा। बाबुओं का हाथी शीतलक्षा नदी, पीलखाना का मकान और नदी के किनारे खड़े होकर उस स्टीमर को वह देख सकेगा। कितनी रोशनी गजब की रोशनी। नदी भर में उसके पुष्प मकान के बाद वह रोशनी गांव में लाता आर मकान के पास में नदी की पारी पर फोस के जंगल पर कुछ देर के लिए स्थिर उज्ज्वल बनी रहती। मेले से लौट कर आने के बाद सोना को जाने क्या लगा कि वह बड़ा हो गया है। वह इस बार मुड़ापाड़ा दुर्गापूजा देखने जा सकेगा।

यही शशीभूषण सवेरा होने पर तख्तपोश पर बैठा रहता था। बन्न को डुलाते हुए जाने कौन सब किताबें पढ़ा करता था। सोना कुर्सी पर बैठा पर हिलाता रहता और ध्यान लगाकर पढ़ते वक्त उसे सीखने में ज्यादा दर नहीं लगती थी। फिर इस देश में बरसात आने पर नाव पर स्कूल जाना पड़ता था। मास्टर जी लकड़ी की पटोरी पर बीच में बैठते थे। ईशम लग्गी ठेलता था। वे तीनों भाई गाव के और चार पाच लडकों और मास्टर जी को लेकर स्कूल जाते थे।

बरसात आते ही कितनी सारी कौवाबेलिया चारों ओर खिल आती हैं। उन दिनों इस इलाके में हाथी घोड़े नहीं आ सकते। बस पानी और पानी। धान के खेत, पटसन के खेत। पानी में ही सारा देश डूबा रहता। मछलियां छोटी बड़ी रुपहली मछलियां पानी के नीचे। बिल्लौर जल। धान खेत पटसन खेत में दुनिया

भर के कीडे मकोडे। छोटे बडे नीले हरे कचपचिया जैसे, तो कुछ पीले-पीले कीडे। सूरज निकलने पर ये कीडे मकोडे पत्तो के नीचे छिपे रहते हैं। नाव पर चढने पर मोना सोन कीडवा पकड लाता। एक बार उस एक अनोखा कीडा मिल गया था—सुनहरे रंग का कचपचिया। बिंदी लगाने लायक। कीडा कीडा-सा लगता ही नही। बीच म मोती सा दमकता। और उसके चारो ओर सुनहला रंग। एक काला सा बाडर शायद पर कहने को कुछ है ही नही। मानो जिंदा कचपचिया हो एक। उसने फातिमा के लिए एक कचपचिया कीडा पकडकर डिबिया मे रख लिया था। जाने कब फातिमा आयेगी। आजकल भेंट नही होती। बरसात आ जाने के बाद चाहने पर भी फातिमा यहा नही आ सकती। उसने स्कूल से घर लौटकर चुपके से वह कचपचिया अपने सूटकेस म उठाकर रख लिया। बरसात के बाद वह फातिमा के माथे पर बिन्दी सा चिपका देगा।

इन्ही सारी बातो के भीतर बडे होते होते सोना ने एक दिन देखा कि मझले ताऊ ने नाव भेज दी है। मुडापाडा से नाव आयी है। छोटे चाचा ने कहा, सोना तुम दुर्गा प्रतिमा देखने जाओगे। लेकिन रोना धोना मत मचाना। अबकी बार सोना दूरदेश जायगा। गगन पवन म पूजा का वाद्य वादन होने लगा। मुडापाडा से नाव आई है। अलीमद्दी एक बडी सी मछली उठा लाया। सोना, लालटू पलटू मछली को खीचकर रसोई घर पहुचा रहे हैं। कितनी बडी मछली। वे तीनो मिलकर भी उसे हिला नही पा रहे हैं। बडी बहू धनबहू मछली देखकर ताज्जुब करने लगी। डाइन मछली। पागल मानुस मणीद्रनाथ इतनी बडी मछली देखकर आगन मे नाचने लगे।

सोना बोला मैं मुडापाडा जाऊगा दादा।

—किसने कहा है कि तुम जाओगे?

—चाचा ने कहा है।

लालटू ने सोचा था मा ने कहा हो शायद। मा के कहने पर कुछ भी नहीं होता। मा को कुछ भी कहने का हक नही। छोटे चाचा ने जब कहा है तो सोना जाकर ही रहेगा। कोई रोक नही सकता। लालटू कुछ नाखुश सा होकर बोला, वही भक्क स रो न देना—मैं घर जाऊगा कहकर—इतना कहकर लालटू ने सोना को मुह चिढाया। लालटू पलटू की यही आदत है। सोना को व बरदाश्त नही कर पाते। इस घर मे सोना सबसे छोटा है तो उसके प्रति लाड-प्यार भी

ज्यादा है। इतने दिन वह मुडापाडा नहीं जा सका था—यही एक तसल्ली थी उनकी। वही सोना अब उन लोगों के साथ जा रहा है।

और दिन होता तो सोना भी उल्ट मुह चिढा देता। लेकिन वह दुर्गा प्रतिमा देखने जायगा। उसके प्राणों में कितना आनंद है। वह दूरदेश जायगा। कितनी दूर? जाने में पूरा एक दिन लग जायगा। कितनी नदियां, जंगल, खेत मैदान पडेंगे रास्ते में। उसके दिल में जब खुशी होती तो लालटू का वह दाना कहकर पुकारता। इस समय वह स्कूल का अच्छा छात्र है। अब वह दूर के मैदान में अकेला चला जा सकता है। जौ के खेतों में लुकाछिपी खेलने में अब उसे कोई डर नहीं लगता।

धनवहू सोना का मुख निहारती रही। आखों में बडा काजल लगाया गया है। सुंदर मुखडा। आखों में ही सारी लुनायी। उम्र के लिहाज से कुछ लबोतर। बदन पर जरा मास लगे तो यह लुनायी हरे टापू जसी है। सोना की आखें बडी बडी। काजल लगाने पर व और भी बडी दिखती हैं। माथे के एक सिरे पर छिगुनी से धनवहू ने काजल लगा दिया। बाये पर से तनिक धूल लेकर सोने के सिर पर लगा दी और थूक शरीर भर में छिडक दिया। फिर सोना को सीने में कस लिया माथे पर चुम्मा लिया। सोना को गुदगुदी सी लग रही थी। सोना खिलखिलाकर हस रहा था।

सोना का मुखडा पागल मानुस के मुखडे पर गया है। शरीर की बनावट देखने से आभास मिलता यह लुनायीभरा शरीर भी उम्र में आने पर लंबा और ऊंचा होगा। सोना को गोद में लेकर धनवहू ने दुलारना चाहा। लेकिन सोना सकुच रहा था। उसे शर्म लग रही थी। बोला आह मुझे लाज आती है। मैं गोद में न उठूंगा।

बेटा दूरदेश जायेगा। सात आठ दिन धनवहू इस बेटे को गोद में लेकर सो नहीं सकेगी। उसका दिल टिस रहा था। बोली चलो तुम्हें नाव पर पहुंचा आऊं। यह कहकर जबरन उसे गोद में उठा लेना चाहा।

लेकिन सोना किसी तरह से भी गोद में नहीं उठा।

धनवहू बोली पर मेरा भी तो जी करता है तुमको जरा गोद में ले लूं। कहकर फिर दोनों हाथ बढाकर बेटे को गोद में लेने को हुई।

—धत तुम भी कैसा कैसा करती हो मां। मुझे तुम गोद में क्या लोगी।

क्या मैं बडा नही हुआ।

—हाय—अम्मा। हमारा सोना बडा हो गया है। जो बडी दी सुनती ता जादय साना क्या कहता है? कहता है कि साना बडा हो गया है। गोद म चढन म शम आती है।

नाव घाट पर बधी है। वे तीना मुडापाडा जायेंगे। दुर्गा मूर्ति देखन जायेंगे। गाव की पूजा प्रतापचद की है। कितने ही साल पुराना कोई मुआमला है। काई भी उनके घर पूजा देखने नहीं जा सकता। छोटे बच्चा का मन क्या माने। पूजा का वक्त आत ही भूपेंद्रनाथ नाव भेज देत हैं।

लिहाजा सोना, लालटू, पलटू मुडापाडा जा रहे हैं। ईशम ले जा रहा है। ये कई रोज घर का काम अलीमद्दी करता रहेगा। ईशम को भी माना कई रोज की छुट्टी मिली हो। वह इस मडली के साथ कई रोज चुहल-मौज म बिता कर लौट आयेगा। वह सबसे पहले नाव पर जाकर बठा हुआ है। अच्छी लग्गी ले ली है। डाड भी। दूसरे की लग्गी या डाड उसे पसद नही। बास्वान की सूत रस्सी ठीक ठाक है या नहीं देख ले रहा है। बारीक और छाटी मोटी बातें। दूरदेश चलना है। एक दिन लग जायगा। उसने सब कुछ—यहा तक कि हुक्का चिलम भी रख लिय। दस कोम का रास्ता। इस अलस्सवेरे रवाना हा जाने पर पहुचने म रात हो जायगी। जरा चक्कर लगाकर जाना पडेगा। नदी और झील म हवा मिलने पर और बहाव के मुह पर पाल तानने म हाली-हाली पहुचा जा सकता है।

सोना ने दादा को प्रणाम किया दादू हम लाग मुडापाडा पूजा देखने जा रहे हैं।

वद्ध न टटोल कर ठाटी पकडी और कहा सच?

लालटू ने कहा दशहर पर आपके लिये क्या मान लाऊ दादू?

वृद्ध बाद जवाब दे इससे पहले ही पलटू ने ठिठोली करत हुए कहा झुनझुना या भापू मोल लाऊगा।

—देखा, देखा बडी बहू—तुम्हारा बटा मुझस क्या कहता है कि मर लिये झुनझुना और भापू खरीद लायेगा।

—ठीक ही कहा है। आप बच्चे जसा रात हैं। आप कहा करत हैं कि आपका काई खाने का नहीं देता।

—क्या मैं ऐसा कहता हू।

—नही तो क्या।

—मुझे कुछ भी याद नही रहता बहू।

नाव पर चढकर पलटू ने देखा, पागल मानुस गनही पर चुपचाप बठ हैं। वह कभी बाबा कहकर नही बुलाता। यह शख्स उसके लिय बडा अजनबी है। इस आदमी का पागलपन बडा ही झुझलाहट पदा करता है। जितना ही वह बडा होता जा रहा है यह सोचकर कि उसका जनक एक पागल है उस क्लेश होने लगता है। उनसे दूर ही दूर रहने की आदत बन चुकी है पलटू की। कुछ मानो तरस्ने की मुद्रा मे। इस व्यक्ति का कोई भी असम्मान उसको पीडा पहुचाता है। उस असम्मान से इस व्यक्ति को बचाये ले चलने की वासना सी हो उसम। लेकिन वह है भी क्या—जो इस पागल आदमी का रोक थाम कर रखे।

नाव की गलही पर वे चुपचाप बठ हैं। पटौरी पर पद्मासन किये बठे हैं। पलटू नाव पर चढते ही बोल पडा आप उतर जाइए। आप कहा जायेंगे ?

पागल ठाकुर न पलटू की बातो का कोई जवाब नही दिया। अजीब तरह से फिक फिक हस रहे हैं। पलटू अब गुस्सा कर बोला आप उतरिये। मैं कहता हू कि आप उतरिये।

मणीद्रनाथ थोडा सा भी हिले नही। कुछ बोल भी नही। बल्कि धोती को जर ढग स बाध लिया। पोशाक म कही कुछ बेतरतीब है सोच कर उन्होने ढग से पहन लिया। बाह कटी कमीज पहने। कमीज को उन्होंने खीच खाच कर सरिया दिया। सिर के बाल वे हाथ ही से सरियाने लगे। देखो मेरे बाल ऐसे हैं वेशभूषा ऐसी है—अब तो मैं तुम लोगो के साथ जा सकता हू। कह कर ध्यानमग्न पुरुष सा फिर पालथी मार कर बठते ही पलटू हाथ पकड कर खीचने लगा आप उतर आइये। मा आ। वह चिल्लाने लगा। मानो बडी बहू के आते ही सब फसला हो जायगा। लेकिन बडी बहू की भी कोई आहट नही मिल रही है।

ईशम कुछ कह नही रहा था। उसे बडा मजा आ रहा था वह चुपचाप छाजन के उस ओर बठा है। या बठ मानो कुछ देख नही पा रहा हो और बत की झाडी म बर्रे का छत्ता ढूढ रहा हो।

पलटू बोला उतरिय अब। नाव छटगी अब।

कौन किसकी बात सुन। शरतकाल का एसा प्रभात धान खेतो से ठडी हवा चली आ रही है और कुम्हर का उटकना भी सुनाई पड रहा है। नदी पर नावो म पाल

दिखाई पड रहे हैं। पाल ताने नदी मे कोई ग्रामोफोन बजात चल रहा है। सुनहरे रेत वाली नदी से बडी-बडी मछलिया धान खेता म सेवार खाने चली आ रही हैं। दोना ओर कितने ही अनाजा के खेत या बिल्लौर जल—क्योंकि पटसन कट जाने के बाद गाव—खेत टापू जसे। चारा ओर मानो बावडी का जल डबडवा रहा है। विशाल जलराशि लेकर ये सब घर जमीन और नदी प्लवमान हैं। कितने ही दिना स मणीद्रनाथ की कही जान की अभिलाषा है। बरसात आते ही वे वदी राजपुत्र की तरह अर्जुन वक्ष के नीचे बठत रहते हैं। मुडपाडा से नाव आई है सुनते ही उनकी दूरदेश जाने की इच्छा हो आयी। जो कुछ पहने हुए थे वही पहने सबसे पहले आकर वे नाव पर बठ गये हैं। बालो को कितने सुदर ढग से सरियाया है। भद्र सज्जनता सा चुपचाप। बिलकुल एक सरल बालक जमा ही। जितना ही पलटू यह सब देख रहा उतना ही उस गुस्सा आ रहा था। उसने अब डराने ल लिये कहा, बुलाऊ छोटे चाचा को।

मणीद्रनाथ ने बडे ही चिरौरी भरे नयना स पलटू की ओर देखा। मानो कहने की इच्छा हा—देख, उसे मत बुलाओ, मैं तुम लागा के बगल मे चुपचाप बठा रहूगा। वेजुबान जानवर की आखा जसी ही मणीद्रनाथ की आखें। आखा म एक वेबस लाचार दुख—मैं एक पागल आदमी हू। कितने युग से चलता आ रहा हू। फिर भी उस दुग जसे महल म दाखिल नही हो पा रहा हू। अपने जातक क ऐसा ही कुछ शायद वे कहना चाहत हैं।

लालटू पलटू उठ जाये। छोटे चाचा घाट पर आते ही बोल अदर कौन बठा है रे ?

साथ ही साथ मणीद्रनाथ ने छाजन के नीच से गला बढा दिया। मानो कितना आज्ञाकारी बच्चा हो घुटने के बल छाजन के भीतर स निकलकर वह पिटौरी पर खडे हा गये। धनबहू बडी बहू घाट पर आयी है। वे नाव खोल देंग ता चली जायेंगा। उस समय मणीद्रनाथ किनारे उतर कर आ रहे थे। चेहरे पर गभीर उदासीनता। नाव की गलही पर पानी देकर ईशम न घाट म लहासी खोल ली तो पागल मानुस ने दौडकर जाना चाहा। इस समय बडी बहू घाट पर है। इसलिए काई डर नही। जिस तरह हाथ फनाकर वह हर बार रोक रखती है उसी तरह राक रही। बोली आओ घर चलो। बडी बहू का वसा ही विषाद भरा चेहरा। क्या होगी बडी बहू की उम्र। तीस भी हो सक्ती है ततीस भी। बडी बहू की उम्र मुख

देखकर छूती नही जा सकती । बडी बहू की ओर देख पागल मानुष फिर न हिला। सोना ने छाजन के भीतर से मुह निकाल कर देखा बडी ताई ताऊ को पकड कर ले जा रही हैं। सोना का दिल दुखने लगा । उसने जोर से हाक लगाई ताऊ जी।

मणीद्रनाथ ने दोनो हाथ सीधे ऊपर उठा दिये। आशीर्वाद करने की मुद्रा म दोनो हाथ ऊपर उठाये खडे रहे। सोना ने अब चिल्ला कर कहा, दशहरे के मेले से आपके लिए क्या लाऊ ?

अगर हो सके तो मेरे लिये कपिला गाय का दूध लेते आना—मानो ऐसा ही कुछ कहने की इच्छा हो। और मुमकिन हो तो शीतलक्षा की चारियों पर इन दिनो जो कास खिले रहते हैं हवा म उनको मेरा नाम लेकर उडा देना। वही एक नारी जिसका नाम है पलिन अगर हो सके तो उसके नाम पर कुछ कास पानी म बहा देना।

सोना ने देखा ताऊ जी कुछ भी कह नही रहे हैं। ताई भी खामोश है। नाव धीरे धीरे दूर बह जाने लगी। धान खेत पार करने के बाद सुनहरे रेत वाली नदी। नाव जब नदी म उतर गई तो फिर कुछ दिखाई न पडा। सोना भी अब छाजन के नीचे चुपचाप बैठे रहने पर ईशम ने कहा क्या देख रहे हो सोनाबाबू ?

झील के पानी म ईशम नाव चला रहा था। सोना को इस तरह चुप्पी साधे देख बिना बोले उससे रहा नही गया।

सोना केवल अपलक देख रहा था। ऐसी असीम जलराशि—जाने कितनी दूर तक चली गयी है—शायद यह नाव और मांझी झील पार नही कर सकेगा—जल और जल। सोना विस्मय से हतवाक हो चुका था। सोना कुछ भी न बोला। इसी झील म आबिद अली की बीवी डूब कर मरी है। इसी झील के जल म एक मार पक्षी नौका है—सोन की नौका पवन की चप्पू। सोना का कहने की इच्छा हुई ईशम से—यह जो जल है जल के नीचे जो नाव है सोन की नाव पवन की चप्पू—क्या आप वह नाव उठा नही ला सकते। आप म और पागल ताऊ उस नाव को लेकर झील पार कर चल जायेंगे। सोना ऐसी नाव मिल जाते ही वे उस देश म चल जा सकते। काली आखें और सुन्दर बाल हैं उस लड़की के—अभी झील के जल म डुबकी लगाने का मन जो कर रहा था। डुबकी लगाकर मारपक्षी नाव को ऊपर उठा लाने का जी कर रहा था सोना का।

अन्य दिनों की तरह सवेरे उठकर मालती बत्तख कबूतर आदि दरबे से निकालती है और बाकी सब काम करती है वे सब काम काज निबटा कर थोड़ी देर चुपचाप आंगन में खड़ी रहती है आज भी खड़ी रही। बत्तख तर-तर कर दूर चले जा रहे हैं। रात को मालती को अच्छी नींद नहीं आई। रात भर अंधेरे में जाने कौन लोग सरगोशियां करते रहे हैं। दंगे के बाद से ही मालती के मन में बेवजह डर समाया हुआ है। नरेनदास की बीवी ने कहा है, तेरी बातें। कौन तुझे उठा ले जाने आएगा।

इसलिए सवेर वह किसी से रात को उस फुसफुसाहट के बारे में नहीं बता सकी। मारे डर के रात को वह सचमुच दरवाजा खोल बाहर नहीं निकल सकी। रात को दो एक बार उठने की आदत है। सब कुछ दबाकर रात भर बिना सोये उसने गुजार दिया है।—कौन-कौन। यहां तक कि रात को दो-तीन बार कौन-कौन कर वह चिल्ला पड़ी थी।—कौन लोग पेड़ तले बातें करते हैं। उसने एक बार टट्टर उठा कर देखने की कोशिश भी की। कभी तो उसे लगा है—वही दंगा, दंगे की आग अब भी आंखों पर धधक रही है। यह सब देखते ही आतंकित हो उठती—फिर उसे लगता, नहीं यह स्वप्न है। जब्बर को मालती ने दो दिन उत्तर के घाट पर खड़े रहते देखा है। नरेनदास उसकी ओर झपटा है तुम यहां कैसे मियां? फिर कहता रहा, तेरा बाप आने पर न कहा तो—। जब्बर हंसता। हंसते हंसते दाढ़ी पर हाथ फेरता रहता। बड़ी-बड़ी दाढ़ी मूंछ पहचाना ही नहीं जाता।—जब्बर मानो अब एक मातबर आदमी हो गया है। अपनी मां के गुजरने के बाद एक अरसे तक इस जवार में वह नहीं था। कहां किसी गांव में करघा खरीद कर अब व्यापार करने की कोशिश कर रहा है। आबिद अली से अब उसका कोई रिश्ता नहीं। आबिद अली ने फिर निकाह कर टूटे छप्पर पर फूस डाल ली। बीवी के लिए अदरूनी बाड़ भी बना डाली है। आबिद अली की निकाह की हुई बीवी अब पजनियां बजाती घर के भीतर लेटे-बैठे रहती। जब्बर अब आबिद अली की परवाह नहीं करता। यहां तक कि उस दिन बाप-बेटे में चख चख हो गई। लटठमलटठ। आबिद अली ने कहा था वाह रे बेटा तू अपनी मां के बदन पर हाथ चलाता है। वही जब्बर अब इधर आने पर बाप के पास नहीं टिकता। वह फेलू शेख के घर पर आ टिकता। और जितने रोज वह वहां रहता फेलू की बीवी को वह अलर खरीद देता। हाट से फुलेल तेल खरीद लाता और बड़ी हिलसा मछली—चार

पाच दिन के लिये मारा। जब्बर एक नवाब हो—पगो पर मारा। यह उडता फिरता हो। फेनू की बीवी जब्बर के आते ही खुशी से डगमगाने लगती। फेनू सब कुछ समझता है। एक ही उक्ति उसकी जुबान पर—साला कौवा। कोई डर खौफ नही। फिर अपनी कलाई की ओर घूरता रहता। दाहिने हाथ में आराम के कुछ चिह्न दिखायी पडने लगे हैं। बायें हाथ की कलाई वसी ही सूजी हुई। काला रग घडियाल के चमडे की तरह ही खुरदरा। जिस पर चमडी उठ रही है। काले धागे से सफेद कौडी बधी है और तारकोल जसा चिपचिपा तेल लगाते-लगाते यह हाथ अब हाथ ही नही रहा। जब्बर के आने पर उसकी बीवी नाचती-गाती हल्की हवा में उडती फिरती और जाने क्या सब सलाह मशविरा—फेनू उस समय फटी चटाई पर जामुन तले लेटा रहता। अततोगत्वा जब और नहीं देखा जाता तो अपने सोकने बछडे को लेकर मदान में निकल जाता। फिर चिलचिलाती धूप में खड होकर चिल्लाता—साला कौवा मुझसे खौफ नही खाता। एसी बीवी भी कुछ दिन हुये जब्बर से बोलती चालती नही। उसको यह जानने की बडी ख्वाहिश है कि कौन-सी ऐसी घटना है जो उन दोनो को मदान सा गूगा बनाये हुए है। वह अब आता नही उसके न आने पर फलू के लिए खाना जुटाना मुश्किल हो जाता।

किसी किसी दिन जब्बर सीधे आगन में हेल आता था। फिर मालती को बुला कर कहता, दीदी है।

मालती के बाहर आने पर जब्बर कहता था, दीदी, आपको ससुराल जाने का जी नही करता। क्या आप फिर कभी ससुराल नहीं जायेंगी?

—नहीं रे, कहा जाऊ। मेरा है भी कौन। है भी क्या मेरे पास।

—क्या कहती है दीदी, आपके पास कौन सी चीज नही है?

मालती की आखो मे उस वक्त जलन होने लगती। यह जब्बर मालती से छोटा है। थोडा ही छोटा होगा। कितना छोटा होगा—सुबह की हवा चेहरे पर लगते समय उसने ऐसा ही सोचा। और उसने एक भद्दी सी सूरत देखी, जब्बर की सूरत पर एक अजीब सी लालसा। मडराते रहना उसे आजकल भा रहा है। वक्त-बेवक्त आगन से अपने साथ आदमी लेकर चला जा रहा है। यह सब देखने से ही मालती का डर बढ जाता है। उस समय मानो उसे कहने की इच्छा हो, तेरी टाग तोड दू। या उस आदमी के पास चले जाने का जी करता—ठाकुर, मुझे एक बडा सा चाकू ला दो न।

जब्बर की बात याद पड़ते ही मालती का शरीर सख्त पड़ गया। वह फिर ठहरी नहीं। चलकर दीनबंधु के डेफल दरख्त के नीचे जाकर खडी हो गयी। जरा ओट आड वाली जगह पर ही वह खडी है। वह उस आदमी को तलाश रही है। नहीं, वह आदमी है नहीं। उसने नींबू की दो पत्तिया तोडीं, मानो वह यहा पत्तिया ही तोड़ने आयी है। उस आदमी की बजाय उसने शशीभूषण को बैठक में बठा देखा। वे अपना सामान-वस्त्र बाध रहे हैं—स्कूल बद हो गया है वे अपने घर लौट जायेंगे। लेकिन वह कहां गया ? इस वक्त वह आदमी खिडकी पर बठा रहता है। मेज पर किताबो का ढेर। यह आदमी बस किताबो मे ही डूबा रहता। गया कहा वह ? मालती ने इतजार नहीं किया। साथ पानी का घडा हा तो इतना डर नही रहता। एक बहाना जो रहता है फिर भी जब सोचते-साचते ठाकुर बाडी के आगन म आ पहुची है तो लौटा नहीं जा सकता। वह जब भीतरी ड्योढ़ी के गयी तो उसने देखा, घाट स बडी बहू धनबहू चली आ रही हैं। मालती ने इस घर के सभी को देखा। सिफ रजित ही नहीं है। रजित से कुछ कहना जरूरी है। वही अकेला आदमी है इस ससार म जिससे सब कुछ कहा जा सकता है। उसने सोना को ढूढा। वह रहता तो उससे कहा जा सकता था, सोना, तुम्हारा मामा कहा गया ? लेकिन साना, लालटू पलटू कोई भी है नही।

मालती को देखते ही बडी बहू ने उसके भीतर के भय को भाप लिया। बोली, तेरा चेहरा ऐसा लटका क्यो है री ? कुछ हुआ है ? किसी ने कुछ कहा है ?

—होना क्या है।

—आखें देखने से लगता है रात भर सोई नहीं।

मालती को अब शर्म आ गयी। वह कह सकती थी, बहुत कुछ—बिना सोये वह क्यो रहे, वह तो विधवा प्राणी है, वह किसके लिए रात जाग कर बठी रहेगी। इसलिए उसने जो पूछने को सोच रखा था—रजित कहा है भाभी जी, दिखायी नहीं पड रहा है वह, ऐसा भी वह न कह सकी।

मालती आगन पार कर आई। ठाकुरद्वार के बगल मे जो हर सिंगार का पेड है उसके नीचे आकर वह खडी हो गयी। फूलो से पेड चारों ओर से सफेद बना हुआ है। तडके सबेरे जिनको फूल लेना था ले गय हैं। इसके बाद भी फूल खिले हैं, झरे हैं। जान क्या सोच मालती अपने आचल में फूल बटोरने लग गयी। शायद कोई काम नहीं था इसलिए या किसी बहाने इस आगन मे देर लगायी जा सके—अगर

रजित कहीं गया हुआ हो तो अभी चला आयगा। फूल बटोरते समय ही शायद वह लौट आये। रजित के लिए ही वह पेड तले फल चुनने का अभिनय कर रही है। मालती का जूडा खुल गया था—नगा बदन है मालती का—सफेद बिना किनारी वाली धोती म मालती इस सवेरे सयासिनी सी लग रही है। उसकी बाहें कितनी पुष्ट हैं। ऐसी पुष्ट बाह और देह लेकर वह क्या करे। रजित स शायद ऐसा ही कोई सवाल करने वह आयी है—मैं क्या करू ? भला मैं क्या करू ? तभी आगन म पदट सुनायी पडी। शायद रजित है। उसने आखें उठाकर देखा छोटे मालिक हैं। पीछे पीछे अलीमद्दी। अलीमद्दी को लेकर शायद किसी यजमान के घर जा रहे हो। पूजा-त्योहार का समय है यह। दुर्गा पूजा का समय—सप्तमी, अष्टमी नवमी दशमी—फिर दशमी के बाद वह सूना-सूना भाव पूर्णिमा मे आकर परिपूर्ण सा हो जाता है। कोजागरी लक्ष्मी पूजा—रात्रि को कोजागरी चादनी। कितनी श्वेत धवल। मालती की तब कितनी ही अभिलाषाए। नदी की चाकी पर सफेद जुहाई म तरबूज के खेत म चुपचाप रजित को बगल मे लेकर बठे रहना। अजुरी ऊपर उठाकर कहे—मैं बडी दुखियारी हू। तुम मुझ नदी के उस पार ले चलो—या शायद कहने की अभिलाषा हो—पानी म नाव बहाओ रे। मालती को बस रजित को लेकर सफेद जुहाई म सुनहरे रेतवाली नदी के जल म एकात मे तरने की अभिलाषा होती। पानी मे नाव बहाने की इच्छा होती।

वह रजित की प्रतीक्षा म बठी रही। वह नही आया। दो बार बडी भाभी इधर आयी थी दोना बार ही उसने कहने को सोचा था, भाभी जी रजित नही दिखायी पडता। लेकिन कह न सकी। मारे सकोच के वह कह न सकी। उसका मन कहने को अकुलाने लगा, भाभी जी, भाभी जी मैं फूल लेने नही आयी हू भाभी जी, मैं ।

बडी बहू बोली, कुछ कहेगी मुझस ?

—भाभीजी रजित नही दिखाई पड रहा है।

—ढाका गया है वह।

—ढाका गया। कुछ विस्मय स ही उसने कहा।

—हा गया। शाम को देखा एक आदमी आ धमका। बाउल वरागी इस घर मे एम लोग कितन ही आत रहते हैं। वरागी-बाउल का आना तो लगा ही हुआ है। खायेंगे सोयेंगे रात गुजारेंगे। सवेर उठकर जिधर आख गयी उधर चल देंगे।

सोचा ऐसा ही कोई है हाय अम्मा रात को देखा, फुसफुसाहट म क्या सारी बातें। मुझसे बोला, दीदी ढाका जा रहा हू, कब लौटूगा कोई तय नही, लौटूगा भी यह भी नही बता सकता। बडी बहू एक मास म वह गयी।

मालती से बडी बहू क सामन खडा नही रहा गया। शायद वह सारी बात ताड लेगी। वह झपट कर बाहर निकल गयी। तुम एसे इसान हो रजित। उसस अब सपरता नही। कही जाकर कूद पडन की इच्छा हो मानो। इमली का पड वह पार कर गयी और पोखर के किनारे जहा बडे जामुन न काफी छाया डाल रखी है वही जाकर खडी हो गयी। यहा पर वह दिल खोलकर रो सकेगी। किसी को पता नहीं चलगा। उसने सारे फूल पानी म डाल दिये। और खडी रही। फूल पानी मे बहते कितनी दूर चले जात। रात के अधेरे म जान कौन लोग फुसफुसा कर बातें करते। मैं वहा जाऊ ठाकुर। मालती सहसा चीख उठने को हुइ। लेकिन चीख न सकी। रुठकर उसकी आखो स आसू निकल आ रहे हैं।

ईशम ने सहसा ही हाक लगाई मालिक लोग ठीक होकर बठिये। नाव को कूले स शीतलक्षा के जल म डालत समय उसन ऐसी हाक लगाई।—अब बहाव पर आ गय आप लाग। कोई पानी म गिरा तो उठाया नहीं जा सकेगा। सामन बडी नदी है—उसका नाम है शीतलक्षा।

इतनी बडी नदी का नाम सुनकर सोना छाजन के भीतर घुमकर बठ गया। लालटू पलटू अब तक छाजन के ऊपर बठे थे। बडी नदी म नाव उतर रही है सुनकर व भी कूदकर पटवतन पर उतर। देखा— बडी नदी अपने दोना तट के लिए जीवत है। बहाव पर नाव पडत ही रफ्तार से भागने लगी। सारा रास्ता बडे कम वक्त म उन लोगा ने तय किया। बादबान म हवा थी। नाव उज्ज्वल नही बनी पडी। और आश्चय की बात है नदी मे पडते ही ढाक-ढोल का बाजा। पूजा का बाजा बज रहा है। दोना तटो पर पड-पौधे परिंदो के बीच बडी-बडी इमारतो का आविष्कार कर सोना कुछ मायूस-सा हो गया। कतारो म इमारतें। इतनी बडी-बडी कि उस सारी झील भर या सुनहरे रतवाली नदी की चाकी

भर—या गाव खेत भर—इमारता की मानो कोई इतहा ही नही। राजमहल जसा मकान। उससे छाजन के नीचे बठा नही गया। घुटनो के बल बाहर निकलते ही उसने देखा पानी म उन आलीशान महला की छाया तर रही है। मानो पानी के नीचे और एक नगरी। अपना गाव छोड अगर वह बहुत दूर भी गया है तो मला तक गया है। कही भी उसने ऐसे महल नही देखे—इस बार वह उठकर खडा हो गया। नाव का मुख इस बार तट की ओर घूम चुका है। सामने स्टीमर घाट, शायद उस घाट के बगल म नाव लगे।

किनारे पर पाम वृक्ष। सडक पर पाम वक्षो की यह कतार बहुत दूर तक चली गयी है। सडक के दाहिने नदी का कछार और कासफूल। उत्तर की ओर फील खाने का मदान मैदान पार करो तो बाजार और आनदमयी कालीबाडी। घाट पर रामसुदर उनको लिवा लाने आया था—वह किनारे उठ जाते समय यही सब बताने लगा।

ये इमारतें नदी से जितनी नजदीक लगी थी, मानो नदी के किनारे ही बनी हो—नदी किनार उतरने के बाद सोना को लगा कि वे इतनी नजदीक नही है। ऐन लबे सडक घुटना भर ऊची दीवार। दीवार के सिर पर लोहे की रेलिंग। छोटे बड गुबद। कही उस गुबद पर लाल नीले रग की पत्थर की परिया उड रही हैं। दोना बगल मे कतारा म झाऊ के पेड। पेडो के बीच से बावडी दिखाई पड रही है। दोना ओर विचित्र वण क पत्तावहार के पौधे फूल क पौधे जिनम कितने ही किस्म के फूल खिले हुय मानो बिलकुल कुजवन सा। बावडी म श्वत कमल—दो किनारे पक्क बने हुये और झरने स पानी गिर रहा है ऐसा कोई शब्द सुनकर सोना न आखें उठाकर देखा। देखा बगल म जमीन का एक छोटा सा टुकडा। बडी बडी ताजा और हरी घास उस पर लाहे क जाल से घिरा हुआ। भीतर कुछ हिरन खलत फिर रह हैं।

लालटू पलटू न इस हिरन और चीता क बारे म बातें की हैं। उसन पहले ही स अपना एक विस्मय भरा जगत निर्माण कर रखा था। लकिन नजदीक स, इतने नगीच स ऐसे हिरनौटे देखकर साना दग रह गया। रामसुदर बगल म खडा है। लालटू-पलटू पीछे आ रह हैं। वह इतना रास्ता भागता हुआ ही आया था। इसक बाद जान ही शायद वही चीता और मोर। लौटत वक्त मोर-पख ले जान का उसन सोचा। तभी उस लगा घाड क खुर की टाप सुनाई पड रही है। बक्स

की तरह उड उड कर भीतर चला जाना चाहता है।

उस समय यहीं कोई नर्तकी नाच रही थी। घुघरुओ की आवाज काना म आ रही है। उस समय यही ढाक बज रहा था। छत पर कनारो म पत्थर की परियां उड रही हैं। वे हवा म अपने वस्त्र के सारे कपडे ढीले करउडा रही हैं। या हाथ पर उठा उठा कर नाच रही हैं चारो और चमकती घास के चौक बने। कोमल घासो म पाले हुए बुलबुल। छोटी छोटी क्यारिया म पौधे। पौधा म फूल खिल हैं। दक्खिन से इस वक्त कुछ परिंदे उड कर आ चुके थे। वे परिंदे चहचहा रहे हैं। फाटक पर मुख रखते ही उसने देखा—लाल या पीले रग के कपडे पहन छोटी छोटी लडकियां आखमिचौली खेल रही हैं। तभी रामसु दर ने हाक लगाई, फाटक खोला जाय। भुइया मालिक के सगे-सबधी आए हैं। साथ ही साथ कॅच कॅच शब्द करता हुआ लोह का फाटक खुल गया। सोना को उन पहलवान लोगो ने सलाम किया। लालटू पलटू कितने गभीर बन गये। उनम कतई कोई चचलता नही।

अत म उन लोगो ने एक पानी का फव्वारा देखा। सोना जितना ही देखता उसकी आखें उतनी ही फटी रह जाती। उन दोनो लोगो ने वदूक फेंक सोना स लिपट कर प्यार करना चाहा तो सोना रामसु दर के पीछे चला गया। किसी तरह से भी व लोग सोना का कधे पर नही उठा सके। भुइया मालिक का सगा है यह *सोना नन्हा सा सोना जादूगर के पाले पुत्र जैसा ही नाक नक्शा। सोना को कध* पर बिठाकर उन लोगो ने भूपेंद्रनाथ के पास ले जाना चाहा। मानो ले जाते ही उन लोगो को इनाम मिल जायगा—लेकिन सोना हाथ छुडा लेना चाहता। अजब सहमा सहमा सा। ज्यादा जबरदस्ती करते ही शायद रो पडेगा।

चलकर सोना मानो इस मकान को तय नही कर पा रहा है। इस समय वह क्या है यही उसकी समझ म नही आ रहा है। सिर के ऊपर बडी बडी छतें। छतो स झाड फानूस लटक रहे हैं। लबे बरामदे मेहराबो पर फिरोजा कबूतर जाफरी दार रेलिंग का पर्दा—कितने ही दास-दासियो की आवाजें—यह सब खत्म होने को नही आ रही है। रामसुदर हाथ थामे डयोढी पार किये चला जा रहा है। आह इस समय पागल ताऊ साथ होते तो सोना को कतई कोई डर न लगता। दीवारो पर पुरखो के बडे बडे तैल चित्र। इसके बाद ही नाट मदर। यही पहुच *कर फिर उसने आकाश देखा। इतनी देर म उसकी जान म जान आ गई।*

भूपेंद्रनाथ कचहरी बाडी मे बैठा था। पूजा के सारे सामान की खरीद का हिसाब ले रहा था। उस समय उनको सुनने को मिला—वे आ गये है। वह बिछे हुये मोटे गद्दे पर बैठा था। बगावग सफेद चदरा बिछा हुआ था। मोटे तकिये। लोग बाग और कुछ रिआए नीचे बैठे हैं। वह सब कुछ छोड छाड कर उस ओर लपका। क्योंकि इस बार सोना पूजा देखने आयेगा ऐसी बात है। आखिरकार शची ने उसे भेजा या नही कौन जाने। सवेरे से ही मन कुछ उचटा हुआ सा है। रामसुदर को उसने दोपहर से घाट पर बिठा रखा है। जाने कब आवें, जाने कब आवें ऐसी ही एक बेकरारी है। सब कुछ छोड छाड जब वह लपक कर पहुचा तो देखा नाट मदिर मे सोना देवी जी को प्रणाम कर रहा है। नीले रंग का पट पहने। पैरो मे सफेद रबड वाले जूते बदन पर रेशमी हाफ शर्ट। चेहरा खुश्क। जाने कब का खा के निकला है। भूपेंद्रनाथ ने झट पहुचकर सोना को अपने सीने पर उठा लिया। देवी के सामने खडे होकर इस बालक के लिए जाने क्या-क्या माग लेने की इच्छा। लेकिन आश्चर्य है, कुछ भी वह कह नही सका। बडी बडी आखें किये देवी उनकी ओर ताक रही हैं। उनके हाथ मे वराभय। भूपेंद्रनाथ मा मा कर चिल्ला उठे। सहसा इस चिल्लाहट से सोना काप उठा। भूपेंद्रनाथ की आखो मे आसू।

देवी के प्रति उनकी भक्ति अचला है। माना पूजा नही, प्राणो मे विश्वास का एक पछी निरतर खेलता फिरता है। सोना को सीने पर उठाये भूपेंद्रनाथ देवी के सामने खडे हैं यह देवी की अपार महिमा है। अगर महिमा न हो तो तुच्छ मनुष्य जिन्दा कैसे रहे खाये कहा से खुशहाली कहा से आयेगी। यह जो सोना आया है यह भी देवी जी की महिमा ही है। बिना किसी विघ्न के आ पहुचा है और इस देश मे मा (दुर्गा) आई हैं। शरतकाल। कास खिले हैं। झाडफानूस मे बत्तियां जलेंगी। चादी पर हाथी चढेगा। हाथी के गले मे घटिया बजेंगी। हाथी का श्वेतचदन और रक्तचदन से सिंगार होगा। सभी कुछ देवी के आने के बाद होता है। देवी के सामने भूपेंद्रनाथ ने खडे होकर इन सब नाबालिगो के लिये मगल कामना की। देवी की बडी बडी आखें। नाक मे लबा बेसर। हाथो मे शख, पद्म, गदा आदि मिलकर मानो वरामयसा। आनदमयी के मकान के बगल की जमीन पर मुसलमान किसान काश्तकार लोग नमाज पढेंगे। वह मसजिद नही है। किसी प्राचीन किले का खडहर दुर्गाखान का हो सकता, चाद राय केदार राय का भी हो सकता है, अब उसी टूटे ढहे दुर्ग मे नमाज पढने के लिए लोगो को उकसाया जा

रहा है। आज सवेरे कचहरी बाडी म गेसी ही खबर दे आय थ कई मुसलमान खासतौर स बाजार के मौलवी साहब जिनक दो भन्डड सूत क कारोबार हैं जिस शहर के पास पानी पर थान क सबे मत हैं गाम म हजार बीघे हैं और वही बाबुओ के पीछे पडा है। ऐसा अनुभव होता है कि देवी की महिमा स सब कुछ उडनछू हो जायगा। किसी की मजाल है कि देवी क खिलाफ खडा हो जाय। मानो हाथ का वह धारदार खड्ग अभी उस महिषासुर का वध करने को तना हुआ है। भूपेंद्रनाथ के मन म शायद ऐसा ही एक चित्र तिर आया था। साथ ही साथ वह चिल्ला पडे मा मा तेरी इतनी महिमा। तेरी इतनी महिमा इतना वाक्य उनके मुख से उच्चारित नही हुआ। सिफ सोना न ताऊजी की आखो म आसू देखकर सोचा कि वे उनको पास पाकर रो रहे ह। मा मा कहकर रो रहे हैं।

कोठी के भीतर इतना सारा रास्ता सोना चलकर आया है लकिन वह छोटी लडकी कमल उसे कही भी दिखाई नही पडी। उसने सोचा था अदर दाखिल होते ही वह कमल को देख सकेगा। लकिन नही वह कही भी नही है। खान को बठकर भी वह चारो ओर सावधानी स निहारता रहा। कितन ही बालक बालिकायें दौड धप कर रहे थे। केवल वही लडकी जो घुडसवारी सीखती है उस वह नही देख पा रहा है। छोटी लडकी घोडे पर सवार दौड जाय तो बडा आश्चय सा लगता है। जितनी देर तक सोना कोठी के भीतर रहा कमल को देखने की उत्सुकता से वह चारो ओर जाने क्या ढूढता रहा।

शचीद्रनाथ सवेरे से ही बेहद व्यस्त था। सभी लडके पूजा देखन चले गये हैं। दोपहर को मजूर आया था बिचौवा बनाने। मजूर और हाजी साहब म विरोध क्रमश गाढा होता जा रहा था। हाजी साहब क बडे बेटे न मजूर की मामूली सी जमीन म फावडे चलवा कर पिछली गरमी म मोड काट दी है। बरसात म पटसन कटते वक्त जोर जबरन कुछ पटसन काट ले गया है। मजूर अकेला है। हाजी साहब के तीन-तीन बेटे। हाजी साहब की बडी गिरस्ती। पटसन और ग न की बडी खेती है। फिर भी मामूली सी जमीन की लालच म एक खून खराबा हो जा सकता है। लिहाजा सारी तिपहर शचीद्रनाथ हाजी साहब के घर म बठकर समझौते का इतजार कर रह थे। समझौता होते ही चला जायेगा। आगन म खटोले पर बठा था। पान-तमाकू आते जा रहे थे। शचीद्रनाथ कुछ भी खा नही

रहा है। इस समय इस्मत अली आ सकता है प्रतापचद्र भी। बडे मिया आ सक्ते हैं। फिर भी शचीद्रनाथ पर ही सब दारोमदार है। उसन एक बार हाजी साहब के मझले बेटे की खाज की।—अमीर कहा गया ?

अमार नाव लेकर बडे मिया को लान गया है।

बडे मिया घाट से उठकर आये तो शचीद्रनाथ का आदाब किया। वाला मालिक खरियत स तो हैं ?

—हू ता एक तरह। तुमको इतनी देर क्यो लगी।

—कुछ कहिये मत। नदी की चाकी म एक बडी-सी नाव किसी ने बाध रखी है।

—नाव किसकी है कुछ मालूम हुआ ?

—किसकी है यह समझना मुश्किल है। दा मल्लाह हैं। एक बडा सा डाड भी है। बादबान भी। नाव को देखने चला गया।

—मल्लाह क्या कहत हैं ?

—कुछ भी नही कहत। कहा जायेगा कहा स आया है कुछ भी नहा बताते।

—कुछ भी नही बताते ?

—नही। रात को उससे गाना सुनाई पडता।

—कसा गाना।

—लगता है गुनाइ बीबी का गीत चाकी पर रात भर झम झम् की आवाज होता रहता है।

—रात को भी गय कभी ?

—मालिक, डर लगता है। रात को गाना सुनन गया था। जितना ही जाऊ उतना ही देखू नाव पानी म बहती चली जाती। दिन को देखा दा मल्लाह बठे हैं। गूगे। इशारे म बातें करत हैं।

—किसकी नाव, किस लिए आई है कुछ भी पता नहा लगा सके।

—नहा मालिक।

—अजीब बात है।

—हा मालिक। अजीब बात।

मजूर के आत ही शचीद्रनाथ न दूसरी बात छेड दी। हाजी साहब चटाई पर बठे ह—नमाज की मुद्रा म हाथ म लाठी लाठी की मूठ पर चाद वाली बुढिया

—चूंकि हाथी मारने में विश्वास मार लिया। तब हुआ जो जगन्नाथ कहे लिए रहे हैं गाव में भाग मोना लेंगे। और पानी उतर जाने के बाद सभी लोग मिलकर मेड़ की मेड़ दुरुस्त कर लेंगे।

शचीन्द्रनाथ ने अब मंझूर से कहा। कहते हैं मंझूर सुना है किसनी की चाकी पर एक बड़ी नाव आई है।

—सुना है आई है।

—चाकी की किस जगह ?

—वह बहुत दूर मालिक। दूर कहने से कोई कम दूर। नाला-नाला वाला मुल्क। बरसात में ये सारे गांव अधर में टापू जैसे जागते रहते हैं। उधर बस बस पानी और पानी। तब नाला-नाला नावा तट में घिरा जाता। धान और अनन्नास के बड़े बड़े बाग। और यहां वहीं जगन पानी में नारे डाल जाग रहा है। जंगल में सिर्फ गजारी का जंगल। जंगल में बाघ रहते हैं। चाहने पर वह नाव क्षण भर में उस जंगल में गायब हो जा सकती है। चाहे तो वह नाव पाना-पानी में ही लमहे भर में लापता हो जाय। सुरागुन भी नहीं लग पायगा। बिलकुल आंख मिचौनी जैसा खेल। फूल और झील में—बीच के दोनों तरफ गजारी का बड़ा जंगल—बीस-तीस कोस तक पसरा हुआ जंगल। उन सब जंगलों में अब इस समय तरह तरह की दुघटनायें घटित होना बहुत ही स्वाभाविक है।

घाट से उठने से पूर्व शचीन्द्रनाथ ने कहा, अलीमद्दी चल एक बार चक्कर लगा ही आवें।

—कहा ?

—नदी की चाकी पर। बड़ी नाव आई है। बकवन बड़ी नाव।

अलमद्दी लग्गी चलाकर खेत में आ गया। इन सब खेतों में पानी कम है। पानी कम होने की वजह से अलीमद्दी बहुत दूर तक नाव खेता रहा। नदी के जल मे पडते ही उसने डाड उठा लिया और पाल तान दिया। फिर चारो ओर नजर दौडाकर बोला कहा मालिक नाव तो नही दिखाई पडती।

—चाकी पर नाव नही ?

—कहा ? होती तो क्या दिखाई न पडती।

शचीद्रनाथ उठकर खडे हो गये। पटवतन पर खडे होकर देखा वाकई चाकी पर कोई नाव नही। बडी नाव तो दर किनार हाट गज म जाने वाली कोषा नाव

भी उसे नहीं दिखाई पड़ी। उसने विस्मय से कहा, ताज्जुब है।

घर घर में इस समय लालटेन जल रही है। क्वार का महीना इसलिये रात भीगने पर जाड़ा पड़ना चाहिये। लेकिन गरमी ही जा नहीं रही। बिलकुल भादों की गरमी की तरह ही शचीन्द्रनाथ पसीने मे तर हो रहा था। अलीमद्दी लौटकर गुहाल मे धुवां कर रहा है। गाय के छप्पर मे एक बड़ी लबी सी मच्छरदानी टंगी है। धुवां उठ जाते ही अलीमद्दी ने मच्छरदानी गिरा दी। उस समय शचीन्द्रनाथ बड़े कमरे मे घुस कर बोला, बाबा, सुना है नदी की चाकी पर एक बड़ी नाव आई है—

—किसकी नाव ?

—बता नहीं सकता।

—अरे देख देख किसकी नाव है। लक्ष्मी की भी नाव हो सकती है अलक्ष्मी की भी। एक बार खोज-पता जरूर लगा ले।

—सोच रहा हूं कि सवेरे बड़े मियां की नाव हाजी की नाव और चंद की नाव लेकर निकलूंगा—यह नाव कहां अदृश्य खड़ी रहती है देखना होगा।

क्योंकि बरसात मे ही डकैती का उपद्रव बढ़ता है। इसलिए यह जो बड़ी नाव कहीं से आ टपकी है दिन के वक्त कहां गायब रहती है कोई नहीं जानता रात के सन्नाटे मे सभी सहमे से रहते हैं। क्योंकि रात आते ही जल-जंगल से घिरे ये गांव बिलकुल सन्नाटे से भर जाते हैं। क्योंकि गांव के घर सब दूर-दूर हैं। सिर्फ नरेन दास का घर, ठाकुर का घर और दीनबंधु का घर अगल-बगल हैं। इसके बाद पाल का घर है। हारान पाल के दो बेटे—एक ही आंगन मे दो भिन्नमुखी घर बना लिये हैं। रात होते ही चारो ओर सन्नाटा छा जाता है। और तब मालती को नींद नहीं आती। इतने दिन रंजित था तो भय का यह अहसास कम था। रंजित के चले जाने के बाद उसके पास रहा भी क्या। जो होना है सो होगा। उसने निश्चय किया कि ज्यादा रात न होते ही वह सो जायेगी।

क्वार की इस रात मे उतनी उमस है कि दरवाजा भेड़ दो तो दम घुटने लगता है। अब भी नरेनदास जाग रहा है। करघा घर में जाने क्या कर रहा है नरेन दास। आभारानी बरतन धोने घाट पर गयी हैं। आबू लालटेन ले गया है। वह किनारे खड़ा रहेगा। दरवाजा खुला रखकर तनिक हवा खाने के लिये मालती शीतलपाटी बिछाकर लेट गयी। मारे गरमी और उमस के मानो उसका जिस्म

सड गया है। ऐसी गरमी रात का अधेरा सब कुछ मिलकर मालती को निराशा के बोध से पीडित कर रहा है। अब तो कुछ भी नही रहा। हाय उसके जीवन से सभी कुछ धीरे धीरे चला जा रहा है। गरमी के मारे बदन से शाया शेमीज ढीला करती हुई उसने ऐसा सोचा। वह शख्स है कहा इस समय ? कौन सा ऐसा काम करता है जिससे उसे जगह जगह भेष बदल कर भटकते फिरना पडता है ? यह नाम उसका कोई नही जानता। उसका एक फोटो उसने देखा है, फोटो मे रजित पहचाना ही नही जाता। लबी दाढी सिर पर पगडी, गले मे रुद्राक्ष की माला—मानो अधेड उम्र का एक सन्यासी हो। मालती को इस छद्मवेश पर यकीन नही पडा था। एक दिन उस समय लाठी छुरे का खेल समाप्त हो चुका था। सभी अपने अपने घरो को चले गये थे। चादनी म किसी ने आकर मालती का आचल पकड लिया—देखा वही सन्यासी। रुद्र मूर्ति। मालती को मुर्छा-सी आने लगी। रजित ने तब कहा, मैं हू मालती। पहचान नही पा रही हो। कपडे को सीने के पास समेट कर रखते समय उस दृश्य का स्मरण कर मालती कुछ उत्फुल्ल सी हो उठी। केवल उसी एक दिन रजित ने उसे दोनो बाहो म बाधकर उसका भय दूर कर दिया था मैं रजित हू, पहचान नही पा रही हो मुझे। मालती अब सोच रही है कि वह बडी बेवकूफ है। अगर वह पूरी तरह से मूर्छित हो जाती तो यह शख्स बेशक उसके शरीर को अपनी बाहो मे उठा लेता। घर पहुचा आता। उस वक्त खिलखिलाकर उस दोनो हाथो से जकडकर उसको सहसा विस्मय से भर दे सकती थी। और उस समय बेशक यह आदमी अपने को सयमित रखने मे असमथ हो गया होता। इतना सोचते ही उसका भीतर उत्तेजना से थर थर काप उठा। इस बार उसने शाया शेमीज पूरा पूरा ढीला करके घाट की ओर देखा। अधरे के कारण घाट पर कुछ भी दिखाई नही पडता। गावगाछ के नीचे पानी आ गया है। वह पानी म मछली हरकत करने से जसी आवाज आती शुरू म वसी ही आवाज सुनाई पडी। अमूल्य होता तो बसी म मछली फसी है सोचकर लपकता। लेकिन मालती जानती है—नरेनदास ने पानी मे कोई बसी या कटिया नही डाल रखा है। अकेला आदमी होने के कारण दिन भर बडी महनत मशक्कत करनी पडी है। अब भी रात जागकर करघा घर म माड म सूत भिगो रहा है। अमूल्य कल लौटेगा। तब काम का बोझ कुछ हल्का होगा।

शोभा जल्दी सो गई है। उसको तबीयत ठीक नही। कुछ बुखार-सा हो गया

है। मालती ने सोचा कि आबू आकर घर में दाखिल होते ही वह दरवाजा बंद कर देगा। घाट पर लालटेन वैसे ही जल रही है। आबू दिखाई नहीं पड रहा है। अचानक लगा कि बत्ती बुझ गयी और बरतन गिरने की आवाज सुनाई पडी। मालती ने सोचा, शायद घाट पर फिसलन हो, भाभी उठ आने वक्त ठीक तरह से पैर नहीं रख सकी, गिर पडी हो। और साथ ही साथ करघा घर में घुसकर जाने कौन लोग गुत्थमगुत्था करने लग गये हैं। मालती अब उठकर बैठ गयी। इन दिनों चोर चाईं का उपद्रव बन्ता है। उसने पुकारा दादा तेरे कमरे में यह आपाधापी की कैसी आवाज आ रही है। लेकिन आश्चर्य की बात—न कोई आवाज और न कोई चीख पुकार। फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया। झटपट शाया शेमीज ठीक ठाक कर वह उठ बैठी। बत्ती जलाने को सोच लालटेन लाने जैसे ही वह उठ खडी हुई उसके दो बगल में दो छाया मूर्तियां। उसने सोचा कि चीख उठे—लेकिन दोनों छाया मूर्तियों अंधेरे में उसे जकड कर उसके मुंह में कपडा ठूंस दिया। इस समय इस कमरे में गुत्थमगुत्था। शोभा जाग गयी। अंधियारे में सिर्फ फा फों की आवाज। लात घूंसा मारपीट जैसी कोई घटना। वह डर के मारे बुलाने लगी बुआ बुआ। इसके बाद फिर कोई आवाज नहीं। जाने कौन लोग भूत की तरह आकर इस गृह से युवती औरत को उठाकर बरसात के पानी में निकल गए।

खाना खा लेने के बाद सोना नाटमंदिर की सीढी पर उतर आया। लालटू पलटू अब बाबुओं के बेटों के साथ घुलमिल गये हैं। सोना इस घर में किसी को भी पहचानता नहीं। सिर के ऊपर फिर वही आकाश। वह मानो बहुत देर तक ईट काठ की कोठी में से चलकर आया हो और आकाश देख डाला। सभी कुछ नया। अनचीन्हे चेहरे। ताऊजी सामने चले जा रहे हैं। प्रायः हर वक्त वह ताऊ जी के साथ साथ चल रहा है। उसने एक सफेद शर्ट पहन रखी है। नीले रंग का पैंट। बाल छोटे कतरे हुए। आंखें बडी बडी होने की वजह से अजनबी लोग उसे घेर लेते। उसका नाम क्या है पूछ रहे है ताऊजी तब जरा मुस्करा देते। उससे नाम बताने को कहते। और वह चंद्रनाथ भौमिक का छोटा बेटा है। यह सांझ उतरने से पहले ही कानोंकान सबको मालूम हो गया। नाटमंदिर के पुरोहित जी ने सोना को दो संदेश खाने को दिया। उसने संदेश खाया नहीं। ताऊजी को दे दिया रखने के लिये। वह ताऊजी को छोड दूर जाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है। लालटू

पलटू न उसका ले जाना चाहा था। बावडी के किनारे बैडमिंटन खेल होगा, सोना गया नही। दरअसल सोना को जाने का हौसला नही पडा। ईशम आ जाता तो शायद वह जा सकता था। ईशम इस समय नदी पर है। ये कई रोज वह नदी मे ही रहगा। छाजन के नीच लेटे बठे, या मछली पकडकर बरुआ या पाठी मछलियो का शिकार कर वह गुजार देगा। खुद ही नाव म खाना पकायेगा और खायगा।

बीच बीच म सोना को एक लडकी बरबस याद आ रही थी। जो लडकी बाप के साथ घोडे पर सवार अदर चली गयी थी। सोना को कभी कभी उस दुनिया म चले जाने का जी कर रहा था। छोटी छोटी लडकिया और लडके आख मिचौली खेल रहे थे, कोई तो जरी की टोपी पहन कर और कोई सिल्क का फ्राक पहने। सोना का मन हुआ उस वडे आगन मे चल जाने का। वहा उसने फूल खिले रहने की तरह लडकियो को खिलते देख आया ह। वह जानता था कि वे इतनी बडी है कि वे उसको अपने खेल म शामिल नही करेंगी। वह एक अलग सिफ खडा रहेगा। वह खेलेगा नही। खेल देखेगा। उसके चेहरे पर तब दुखियारे राजकुमार का अक्स आ जायेगा। तब शायद कोई छोटी लडकी उसका हाथ थाम कर कह आओ हमारे साथ खेलो। हम लोग लुकाछिपी का खेल खेलेंगे। सोना को उस जगत म जाने का प्रलोभन वडा सता रहा था। जाने परी है या हुरी, छोटी सी एक लडकी घोडे पर सवार उसकी आखा के सामने से चली गई—अब सोना को कोई दूसरी बात याद नही आ रही है। कचहरी बाडी म बठ-बठ केवल उस छोटी लडकी का मुखडा उसके मन पर तिर रहा है। तभी ताऊजी न पुकारा, सोना, आ जा।

कहा जायेगा। सोना अभी ठीक ठीक समम नही पा रहा है। ताऊजी ने एक कमीज पहन ली। ढग मे धोती पहन ली। फिर वे जिधर खाने गय थ उधर न आकर जरा बायी ओर बरामदे स नीचे जो क्यारियो म बनी फुलवारी है उसी म घुस गया। मानो इस डयोढी म दाखिल होना हो तो तुम पहले कुछ फूल फल देख लो—प्रवेश पथ पर एसा ही एक दश्य। तरह-तरह क दरख्त और फूल फल। सोना को यह अदाजा ही नही था कि यह रास्ता हवेली के भीतर ही है। अरे दादा रे दादा यह कमी हवेली है जिसका कोई ओर छोर ही नही, एक रास्ते स आकर सोना अब दूसरे रास्त स चला जा रहा है। उसका घर बज्र-देहात म है। वहा सिफ प्रतापचद का मकान ही पक्का है बाकी सब टीन और लकडी के बन।

सोना के घर की दीवालें और फर्श सिमट की बनी हुई। दक्खिन का घर, पूरब का घर—हर घर का अपना एक नाम है। यहां कोई नाम नहीं। यहां सभी कमरे हाल रूम के समान बड़े हैं। ताऊजी चलते चलते सब कमरों के नाम बताते जा रहे हैं। दीवारों पर बड़े-बड़े तलचित्र। वे सब तलचित्र किनके हैं, किसका किस वर्ष स्वर्गवास हुआ है किसका जन्म किस महीने में है बाबुओं का हाथी कब खरीदा गया—चलते चलते ताऊजी हाथी खरीदने का किस्सा सुनाने लगे। इसके बाद एक जीना मिला। दुमंजिले पर गया है। कारपेट बिछा हुआ। इन सब चीजों के नाम सोना को मालूम नहीं। ताऊजी सोना से सब कुछ बताते जा रहे हैं। कितना खूबसूरत और नम कारपेट है। सोना नंगे पैर था। कहीं जल्दी चलने से कारपेट से पैर न लग जाय इस गरज से सोना आहिस्ते-आहिस्ते सीढ़ी तय कर ऊपर गया। दोनों ओर रेलिंग। यह जगह केवल औरतों से सजी हुई। भूपेंद्रनाथ ऐसा व्यक्ति है जिसके लिये अन्दर सदर सब बराबर। एक परदे के बगल में खड़े होकर उसने कहा भौजाई जी मैं आया हूं। सोना बगल में चुपचाप भगोड़े बच्चे की तरह खड़े इस जनानी ड्योढ़ी का धन-दौलत वैभव-सपदा देखकर मन सा बना रह गया। उसको लगा यहां आदमी नहीं रहते—देव-देवियां रहते हैं। उससे जितना बन पड़ा उसने अपने को ताऊजी के कपड़ों की ओट में छिपाने की कोशिश की।

सोना कान पसारे रहा। कौन आहट दे रहा है, किधर का दरवाजा खुल रहा है वह लड़की कहां है? ऐसी चिंताओं के समय ही उसे लगा परदा हिल रहा है। परदे के दूसरी तरफ परी की आहट सुन पड़ी। भूपेंद्रनाथ से सब्र नहीं हो रहा था। परदे के इस ओर से वह फिर बोल पड़ा भौजाई जी सोना आया है।

भौजाई जी के बगल में लाल रंग की रेशमी साड़ी पहने छोटी सी एक लड़की—जाने कब से वहीं मंडरा रही है। मना या गौरया का छाना चाहिये उसे। वह अपनी गुड़िया का घर सजायेगी। पूजा का दिन है इसलिए लाल रेशमी साड़ी पहन रखी है। पैरों में आलता। माथे की बिंदी लाल रंग की। बाल बाब कटर। आंखों में काजल। हाथों में हाथी-दांत के काम किये हुए सफेद कंगन। कमल ने पूजा के दिन जाने कितने गहने पहन रखे हैं। वह भी अपनी दादी के साथ-साथ निकल आयी।

भूपेंद्र ने फिर कहा सोना आया है भौजाई जी।

भौजाई जी ने चारो ओर देखा। कहां है वह लडका। सोना ताऊजी के पीछे ऐसा सटा है कि सहसा दिखायी नहीं पडता कमल वाली दादू, सोना कहां है ?

भूपेंद्रनाथ जबरन सोना को अपने पीछे से खींचकर सामने लाए यह रहा सोना।

कमल बोली देखें सोना, तुम्हारा मुख देखें। कैसी ढीठ बातें हैं कमल की। वही लडकी। सोना लाज से और भी सिमट सा गया।

भौजाई जी ने सोना को अपलक देखा। भूपेन ने झूठ नहीं कहा है। देखते ही पता चलता कि यह सोना भूपेंद्रनाथ का बडा दुलारा है। चद्रनाथ का छोटा बेटा सोना। चद्रनाथ हर शाम यहां की कचहरी बाडी में आता है। कभी-कभी सबेरे भेंट कर जाता है। पूजा का समय है इसलिए शायद वक्त निकाल कर सबेरे भेंट नहीं कर सका है। इस बार शचीद्रनाथ ने सोना को आने दिया है। भूपेंद्रनाथ बेहद खुश हैं। पूजा के ये चंद दिन वह बहुत ही व्यस्त रहेगा लेकिन फिर भी अपने ही खून के इन तीन बालकों की उपस्थिति ने उसे महिमामय बना रखा है। घर से लौट आते ही वह भौजाई जी से कहता, जानती हैं भौजाई जी सोना क्या खूब हसता है कितनी बडी बडी आखें इतना सुदर हुआ है यह बेटा कि आपको क्या बताऊ। कुछ बडा हो जाय तो बुलवा कर आपको दिखाऊगा। उसी सोना के यहां आते ही आते उसे खीचकर यहा ले आया है देखिये ल आया हू। देखिये एक बार इसका मुखडा तो देखिये भौजाई जी।

भौजाई जी सोना का मुखडा देखती हुइ यह सोची हा भूपेन की बातो में कोई अतिशयोक्ति नहीं थी।—बच्चे का मुखडा तो राजा सा है। जन्मपत्री बनवा डाली कि नहीं ?

—जन्मपत्री सूयकात को बनाने को दी है। कहकर उसने सोना से कहा प्रणाम करो। ताई जी है तुम्हारी।

सोना ने झुककर प्रणाम किया तो दोनों हाथो से उसे उन्होंने उठा लिया और ठोढी पकडकर दुलारते वक्त उसके हाथ म एक चमचमाता चादी का रुपया रख दिया। उसके हाथ म चादी का रुपया। वह सोच रहा था कि ले या न ले। उसने ताऊजी की ओर देखा। उन्होंने मानो आखों के इशारे से सम्मति दी। सोना को बडी भौजाई जी ने यही पहली बार देखा। यह सोना, इतने बडे वैभव के बीच पहली बार देखा। यह सोना इतने बडे वैभव के बीच पहली बार प्रवेश कर रहा है।

सोना का शायद चादी का रुपया देकर उन्होंने वरण कर लिया। हाथ म रुपया, ऐसे कितने ही रुपये-पसे आचल म बधे रहते, यह एक अजीब सयोग ही था कि रुपया लेकर मैना या गौरैया का छौना मगाने के लिए वह दन वाली थी कि सोना देहलीज पर खडा मिला—उन्होंने रुपया देकर सोना को आशीर्वाद दिया।

कमल मानो मन ही मन फुफकार रही थी। भूपेंद्रनाथ रिश्ते म उसका दादू (पितामह) लगते हैं। वह मुइया दादू कह कर बुलाती है। दादू कुछ भी बता नही रहे हैं। कमल इस घर के मझल बाबू की बेटी है, वे दोनो बहन शरद ऋतु आते ही दादी के पास चली आता, मझले बाबू आते हैं यह सब कुछ नहीं बता रहे हैं। मझले बाबू सरकारी दफ्तर म बडी नौकरी करते हैं विदेश मे उनका प्रवास जीवन दीघस्थायी रहा है। और मा बीच-बीच म अपने देश की कहानिया सुनाती है। उस देश में एक नदी है उसका नाम है टेम्स नदी उस देश म एक गाव है जिसका नाम है लुजान। एक गिरिजा है जिसे सब लोग सेंट पाल का गिरजा कहते हैं दो बगल म पेड हैं उनका नाम है विलो, दोनो ओर जमीन है सुना जाता है कि शाम आने पर लाइलक फूल खिलते हैं। अमला-कमला ये कहानिया सुनते समय तन्मय हो जाती हैं। और सामन यह जो सोना नाम का बालक है उसमे उन सब देशो की कहानी न सुना सकने से, इतनी बडी नदी पार करके आना इतनी बडी हवेली म रहना व्यथ है और उसके साथ भागदौड न कर सकने से, वह कमल है उसकी मा विदेशिनी है यह सब समझाया नही जा सकता है। दादू मा और बाबा से प्यार नही करते। बाबा के लिए दादू न कलकत्ते म अलग मकान बनवा दिया है। यानी मा को लेकर ऐसे अभिजात परिवार म प्रवेश करना मना है। नही यह सब सोना से नही बताया जा सकेगा। दीदी अभी से उसे जाने क्या क्या सिखाती रहती हैं। सोना मैं तुमसे सब कुछ नही बता सकगी। मुझे दादी मना का छौना ला देगी। मैं गुडिया खेलूगी। तुम्हारा मुख देखते ही मुझे गुडिया खेलने की इच्छा होने लगती है।

सोना ने हाथ का रुपया जेब म रखा। तब कमल स आगे बरदाश्त न हुआ। सोना और मुइया दादू चले जायेंगे। सोना न दादी स अपना अच्छा नाम बताया है। उसका अच्छा नाम है अतीश दीपकर भौमिक। दादा रे दादा। कितना बडा नाम है। जसे मा क देश का जान मथ्यूएल। मामाओ के नाम भी कैसे कैसे। उसे याद ही नही रहते। सोना का नाम भी ऐसा ही है। वह फिर रह नही

सकी। पूछ ही लिया दादी, सोना मुझ क्या वह कर पुकारेगा।

शायद भूपेंद्रनाथ ने कमल की बातों पर गौर नहीं किया। भौजाई जी और भूपेंद्रनाथ कुछ पारिवारिक बातें कर रहे थे। उनके दूर रिश्ते के कोई आत्मीय बहुत दिनों के बाद पूजा देखने आये हैं। उनकी देखभाल के लिए अलग से कोई आदमी दिया जाय ऐसी ही बातें कर रहे थे। उस समय सोना जाने क्या कमल की ओर ताकता हुआ होंठ दबाकर मुस्करा रहा है। तुमको भला मैं क्या कह कर पुकारूंगा। कमल कहूंगा। नन्ही सी लड़की। शायद ऐसा ही कुछ कहना था जी हो सोना का।

—दादू, मुझे सोना कमल बुआ कहकर पुकारा करेगा न? कहकर सोना की ओर वह गर्विता सी देखती रही।

इतनी देर में सोना को लगा कि कमल की आखें काली नहीं। बिलकुल नीली भी नहीं। घना नीला रंग या काले रंग के साथ पीला मिलाने पर एक रंग-सा उभर आता है—जो भाषा से समझना मुश्किल हो जाता है। फिर लगा बथुन फल (बेंत फल) जैसा रंग। बथुन फल पक जाने के बाद छिलका उतारो तो ऐसा रंग हो जाता है। सोना ने देखा कमल उसकी ओर पूरी उमंग से देख रही है। उसने गाल फुला लिया है। सोना ने चिढ़ाने के लिए कविता करनी चाही गलफुले गोविंद की मां चालता तले मत जाना। लेकिन इतनी बड़ी हवेली इतनी बड़ी हवेली की शान शौकत ने उसे डरपोक बना रखा है। उससे कुछ भी कहा नहीं गया।

ऐसे ही समय भूपेंद्रनाथ बोले तुमको सोना कमल बुआ कहकर पुकारेगा। आप क्या कहती हैं भौजाई जी। कमल सोना से तो बड़ी होगी।

—हां सो तो होगी। आठ दस महीने बड़ी होगी।

सोना कुछ मायूस सा हो गया। भौजाई जी ने कहा मां को छोड़ रह भी सकेगा?

—सकेगा।

—न सके तो भीतर ड्योढ़ी में भिजवा देना।

—दूंगा।

दरअसल इस संसार में भूपेंद्रनाथ यथारूप से आत्मीय सरीखे हैं। लालटू पलटू के हम उम्र हैं भौजाई जी के दो बड़े पोते, उनके बड़े बेटे अजितचंद्र के बेटे और छोटे

बेटे का साला नवीन। लालटू-पलटू के आने पर कचहरी ग्राही के लान में या बावडी के किनारे खेल, बैडमिंटन का खेल बाबुओं के अन्य कर्मचारी-कारिंदों के लडके हमउम्र के न होने पर भी—एक साथ पूजा में कई रोज चहल पहल मचाये रहते मानो प्राणों की यह सम्पदा सभाल नही सभलती। दिन भर पूजा का वाद्य वादन। ढाक, ढोलक बजते झाझ घडियाल भी। और अष्टमी के दिन बकरे का बलिदान। शीतलक्षा के तट पर उस समय कितनी तडक भडक। नवमी में भैसा बलि। उस समय यूप काष्ठ पर बकरे भेड, भैसे का समारोह। तडके सवेरे से कमल व दावनी के साथ फूलों के लिए फुलवारी में बिलकुल भौमाखी की तरह फूलों पर मडराती रहती है। कलकत्ते की कमन गाव आकर पूजा के ये चद दिन हल्की फुल्की चिडिया बन जाती है।

वह कमल सोना का हाथ थाम सारी हवेली भर में चक्कर लगाती फिरती है। हा हा कर वह हस पडा। हसते वक्त बड़े हाल घर में उसकी हसी किस प्रकार गजती है सुनने के लिए कान पसारे खडा रहा। हाथ पकड कर वह दौडा। लबा बरामदा और बडे-बडे महराब। भागते वक्त वह अपनी जेब को थाम हुए था। जब में रुपया है। भागते भागते व अदर की ओर चले आये। कमा सन्नाटा-सा है। मकान के पीछे बडे बडे दरख्त। पास में लगे सुपारियो का बाग। अब कमल सोना का हाथ थामे लौटते समय बोली सोना, वह देख मेरी दीदी खडी है। चलोगे ?

सोना ने गर्दन हिलाई। वह अब भी कमल या कमल बुआ कुछ भी नही बोल रहा है। केवल कमल का हाथ पकड कर वह चल रहा है।

बरामदे की रेलिंग पर वह लडकी। सोना उसका नाम बता सकता है। लडकी का नाम अमला है। रेलिंग से झुककर इस वक्त वह लडकी उसको देख रही है। लबा फ्राक घुटनो से नीचे तक। गर्दन तक बाल। बाल बिलकुल सुनहरे रग के। और नजदीक आते ही देखा आखें बिलकुल नीली हैं।

कमल बोली, सोना है।

उसकी दीदी मानो नीद से जागी हो इस तरह देखने लगी। कमल बोली, कितना खूबसूरत नाम है।

अमला को मानो कुछ सुनाई नही पडा।—क्या नाम है तुम्हारा ?

यह लडकी बोल रही है कितनी सुहावनी लगती है। उसने इन बालिकाओ की शैली में ही बात करना चाहा मेरा नाम श्री अतीश दीपकर भौमिक है।

—मुझे तुम क्या कहकर पुकारोगे ? अमला बोली।

कमल बोली, सोना यह तुम्हारी बुआ लगती है। अमला बुआ।

और यह लडकी कमला मानो डाल गुडिया हो। उसको सब कमल कहकर बुलाते हैं। सोना बहुत ही धीरे धीरे उन्ही लोगो के लहजे म बोलने की कोशिश करने लगा, तुम मेरी कमल बुआ हो। तुम मेरी अमला बुआ हो।

कमला मानो बहुत खुश हो। अमला फिर रेलिंग पर झुक कर जाने क्या देख रही है।

सोना बोला, कमल तुम घोडे पर सवारी कर सकती हो ?

कमला ने कहा क्या रे तू मेरा नाम लेकर बुला रहा है। मैं दादू स कह दूगी।

सोना कुछ दुखी सा दिखा। उसने कहा हम ताऊ के पास जाव। वह नाराज हो गया तो कमल ने प्रसग बदल दिया। बोली मैं घोड पर चढ सकती हू। सोना को नजदीक खीचती हुई बोली जाव क्या है रे, जाऊगा कहा कर ना।

फिर भी मानो वह खुश नही हुआ। या शायद इस समय उसकी यह कहने की इच्छा हो कि मेरे एक पागल ताऊ हैं। लेकिन यह न कहकर वह बोल पडा, छत पर बडी बडी गुडिया हैं। वे बस उडती ही रहती हैं।

परियो का जिक्र सुनते ही अमला मानो फिर नीद से जागकर सोना को देखने लगी। मानो उस वह पहली बार देख रही हो। उसने सोना के बालो म हाथ रखा। सब कुछ भूल गई हो ऐसे ढग स बोली, किनका बेटा है री।

—हाय अम्मा तुम नही जानती अभी जो तुमसे बताया। हम लोगो का सोना है। चद्रनाथ दादू का बेटा।

—ओ हो ऐसा। तो फिर अपना सगा ही है—ऐसा मुख बनाकर उसने सोना को अपने सीने से सटा लेना चाहा। सोना जरा सरक कर खडा हो गया। इस लडकी के शरीर की जाने कसी खुशबु है—मीठी सी, बाग म बेला खिलने पर ऐसी महक मिलती है। इस लडकी की आखें इतनी नीली हैं कि आसमान भी हार मान जाय। सोना का जी कर रहा था कि एकबार आखो को छू कर देख ले। विपण्ण गुलाब की पखुडिया झर जाने के बाद जसी दिखती हैं ये आखें भी वसी ही व्याकुलता से भरी हुइ। अमला बारबार जमुहाई ले रही थी। आओ सोना, तुम आओ कहकर सहसा सोना को बाहो मे बाधकर उसने दुलारना चाहा।

सोना बोला, मैं ताऊजी के पास जाऊगा।

—क्यों रे, तु दीदी से क्यों डरता है।

अमला ने कहा, ऐ सुनो। कहकर ही उसके चेहरा खुशी से जगमगा उठा। सोना को ऐसा चेहरा हंसता हुआ खुशी से भरा चेहरा चमचमाते आकाश जैसा चेहरा देखना बड़ा सुहाया। —आओ, मेरे साथ आओ। आओ न डरने का क्या है। कमल जैसी ही मैं तुम्हारी बुआ हूं। मुझे तुम अमला बुआ कहकर पुकारना। आओ भी।

कमल बोली, आ भी। डरने का क्या?

वे सीढ़ी से उतर रहे थे कि छोटी बहूरानी ने पूछा, किसका बेटा है रे।

—सोना, चन्द्रनाथ दादू का बेटा।

बहूबेटियों ने कहा अरे यह कौन है रे?

कमल ने गर्व से जवाब दिया नहीं जानते। चन्द्रनाथ दादू का बेटा है।

—यह लड़का बोलता नहीं। हाय अम्मा कैसा लड़का है यह। अमला हंसती रही।

सोना बोला ताऊ के पास जाऊं।

अमला मानो सोना से कितनी बड़ी हो इस तरह मुस्तैदी से बोल पड़ी, नहीं सोना तुम आओ। क्या दीदी तु सोना को डराता क्या है री।

अमला वाली डराया कहां मैंने। सोना आओ।

लोगबाग की भीड़ ठेलते वे दादी के कमरे में घुस गये। यह कमरा भी उस बड़े हाल कमरे की तरह है। बड़े-बड़े तख्त पड़े है। बरामदे पर मैना। जाते वक्त अमला ने पिंजड़े को घुमा दिया। कमल ने जाने क्या बात की उस पक्षी के साथ। बोली इसका नाम है सोना। पक्षी अपनी डाडी से उतरकर बोल पड़ा, कमल-कमल नाम बोला। सोना सोना नाम बोला। पक्षी के गले से अपना नाम सुनकर सोना दंग रह गया है। सोना को देखकर पक्षी पिंजड़े से बाहर निकल आना चाहता है।

इस बड़े कमरे में घुसते ही अमला उछल कर पलंग पर चढ़ गई उसने अलमारी के सिर से एक बड़ा सा चमड़े का सुटकेस खींच कर उतारा। वे सोना को कुछ देंगी। कमल ने अपना बक्स खोल डाला। वे कौन पहले सोना को क्या दिखायेगी इसलिए सुटकेस से सब निकाल कर रख दिया। अमला की उम्र भी क्या होगी, यही ग्यारह-बारह के लगभग कमल की उम्र भी क्या होगी यही नौ दस के लगभग। कौन जाने किसकी क्या सही उम्र है—फिर भी दोनों में सोना को खुश करने के

लिये प्रतियोगिता। यह देखो सोना कहकर मनके की माला सीपियाँ और छोटे छोटे रगीन पत्थर बक्स खोलकर दिखाये। कमल बोली, सोना तुम क्या लोगे ?

सोना बोला म कुछ भी न लू।

अमला बोली, यह देखो कितनी खूबसूरत तसवीर है तसवीर लोगे ?

—नही म कुछ भी न लू।

—अमला बोली यह देखो कितना सुदर मोरपख है पख स बनी कलम स तुम लिख सकोगे।

—म ताऊ जी क पास जाऊ कमल।

—हाय अम्मा। दीदी सुन सोना मुझ कमल कहकर बुला रहा है। बुआ नहीं कह रहा है।

अमला हसी। नन्ही को सयानी बनने की साध। उसन अब कहा बायस्कोप का डिब्बा लोगे सोना। इस समय मानो अमला कमला अपन तरकस से आखिरी अस्त्र निकाल रही हो। अमला बोली यहा आख रखो देखो कितने बढ़िया बढ़िया चित्र दिखाई पड़ते हैं। देखो कितनी सुदर एक लडकी, अनार के पेड के नीचे जूडे म फूल लगाये। फिर अमला ने दूसरा एक चित्र लगाते हुए कहा, दो सिपाही, सिर पर फौजी टोपी। बगल म दो बदर। दोनो म बडी दोस्ती। सोना को देखकर पैर उठाकर नाच रहे हैं।

सोना ने अब फिक्क से हस दिया। दोनो ओर बदर नाच रहे हैं। इस बार मानो उसका कुछ हौसला बढ़न लगा।

अमला बोली यह देखो। अमला के चित्र बदलते ही सोना ने देखा एक झरना है। एक तितली है। और झाडी के भीतर एक बडा-सा शेर। सोना फटी फटी आखो से बोला अमला एक शेर है।

—यह लो। तुमने मेरा भी नाम लेकर पुकारा है। कहकर ही खुशी स सोना के गाल स उसने अपना गाल सटा दिया।

किसी समय सोना को लेकर अमला-कमला छत पर उठ आइ। शाम का अधेरा धीरे धीरे शीतलक्षा पर उतरता आ रहा है। डायनमो का शब्द सुनाई पड रहा है। चारो ओर रोशनी ही रोशनी। लगता है यहा आकर सारी दुनिया खुशी स झलमलान लगी है। कितनी दूर तक रोशनी है रोशनी से रोशन है यह धरती और पेड फूल परिंदे। कितनी ऊची छत है। वह छत पर दौडता रहा। छज्जे के पास

कोई आहट नहीं। उन्होंने फिर पुकारा अलीमद्दी ऐ अलीमद्दी।

कोई भी जवाब नहीं दे रहा है। पूरब वाले घर म हाय-हाय रव। तुम लोग सब उठो। कौन वहा है। दीनबधु की बीवी चिल्लाती हुई चली आ रही है। दीनवधु आगन म उतर कर चिल्ला उठा आप लोग सब जाग उठें। सत्यानाश हो गया है। जागते ही शचीद्रनाथ ने सिर के पास से एक भाला हाथ म उठा लिया। अलीमद्दी बोला, मैं एक सुपारी की बरछी ले रहा हू मालिक।

भुजग आया कविराज आया कालापहाड, चदन के दो बेटे और गौर सरकार अपने साथी सघाती के साथ क्षण भर म पहुच गये।—क्या बात है ?

बात क्या होगी। तुम्हारी हमारी इज्जत गई।

सभी अधेरे म निकल पडे। बादल ढका आसमान। ग्रह नक्षत्र कुछ भी दिखाई नहीं पड रहा है। नयाटोला मे इत्तला भेज दी गयी। टोडर बाग स मजूर, आबिद अली और हाजी साहब के तीना बेटे दौडत हुए आये। बोले किधर चला जाय।

शचीद्रनाथ ने कहा चारो की ओर चलो। रात को अगर वह नाव पानी म दूर निकल जाय।

जय जय मा मगलचडी की जय। मा री, हम हैं तेरे लडके बच्चे—तू जिसकी रखवारी हो उसे कौन मार सकता। मा री तू अबला जीव का प्राण हो तेरे जिम्मे दुखियारी मालती रही।

शचीद्रनाथ ने नाव पर चढत ही कहा ज ब्बर कहा है रे ? वह गाव आया था वह क्या नहीं है ?

अबकी बार आबिद अली हहाकर रो पडा मालिक हो मेरी अब जान व इज्जत नहीं रही। बेटे के गुनाह को मैं कस भर पाऊगा। सभी लोग सन्न रह गये। एक जत्था थाने गया। सबिरुद्दीन साहब को इसकी इत्तला लिखानी है। शचीद्रनाथ न तब कहा, ज ब्बर की कारस्तानी है नाव बहाओ तुम लोग।

पानी म नाव बहाओ रे—किंवदती की नाव बहाओ। सोने की नाव—पवन की डाड। लो रे—जल म नया उतराओ। य लोग अधर म जय-जयमाला, गधेश्वरी, हे मइया तू पटेश्वरी है तरे देश मे जल थल म दुख भरा है अत म मल मिलाप हो या न हो कौन जाने। शचीद्रनाथ चिल्ला उठे, तीन तरफ चले जाओ।

एक दल फाओमा की मीन चले जाओ। दूसरा दल सुनहर रतवानी नदी की चाकी की ओर। जो लोग पश्चिम की ओर जाओगे वे बान्वान वाली नाव ले जाओ। पछाई बयार म पाल तान देंगे।

फौरन नाव न खोलने पर उनको पकड पाना मुश्किल होगा। शचींद्रनाथ बोले, और मैं चलता हू और मेरे साथ नरेनदास—वहा जहा चाकी पर बस्ती जननी है। व अब नाव पर उठ सिर के ऊपर चप्पू उठाकर चिल्ला उठे मईया, तेरी ऐसी सुजला-सुफला धरती है, तू क्या फिर इस तरह सुलग उठी। संसार म मेल मिलाप नहीं होता—यह कैसा माजरा है मा सिद्धेश्वरी। मा तू इस बार हम लोगो की लाज रख ले।

—और कौन कौन चलोगे पानी मे ? गजारी के जगल म घुप्प अंधेरा, न दीया-बत्ती न जुगनुओ की जान। उनींदी रात को साप बाघ म पटरी नहीं बैठनी। उसी जगल की ओर बनी नाव लेकर शचींद्रनाथ चल पड़े। इतनी देर गाव के भीतर घोर चीख-पुकार मची हुई थी। घर घर से गाव-गाव से नावें लपकती चली आयी हैं। टेवा के दोनो भाई भागत आ पहुंचे हैं औरतो के बीच भनभनाहट। चेहरा पर खौफ खाने की छाप—क्या हो गया इस मुल्क म। ऐसा मुल्क चौपट हो जाना है—हाय सवनाश होने म अब रह क्या गया। सभी खामोशी मे अब जागे बैठे हैं। कोई भी उस रात को सो नहीं सका।

शचींद्रनाथ, बड़े मिया मजूर और नरनदास नीचे की ओर पश्चतन पर। ऊपर की ओर पटवनन पर अलीमद्दी गौर मरकार और प्रतापचद के दोनो बेटे। सभी के हाथो में चप्पू। और ऊपर आसमान है। आकाश के बादल कुछ हल्के पड़ते जा रहे हैं। रह रहकर बयार चल रही है। सारे चप्पू एक साथ उठ गिर रहे हैं। तेज रफ्तार से जब व घट म लगभग दस बीस कोस की दूरी तय कर सकते हैं। पतवार पर मजूर सख्त बना बैठा रहा। यह असम्मान इस समय केवल नरेनदास का नहीं—एक कौम का है मजूर का चेहरा तमतमा उठा और वह भभक पड़ा—हारे जल्वरा, तूने हमारे चेहरे पर कालिख पोत दी।

उस बड़ी नाव की तलाश म व लोग उस चाकी के सिरे पर आकर रुके। लेकिन वह नाव कहा ? उस नाव का कहीं नामोनिशान नहीं। चारो ओर बस जल और जल। व चुपचाप उस जल पर चप्पू उठाकर बैठे रहे। नहीं, कहीं भी नहीं। आदि-गत पानी म इधर-उधर मछलियों के शब्द मिल रहे थे। धान खेतो म एकाध

वहए-हस की ध्वनि। शचीद्रनाथ ने तब कहा, अब नाव को दक्खिन की ओर ले चलो।

सामने गजारी दरख्तो का जगल। सिर के ऊपर गजारी का अधेरा। नीचे जल कही छाती भर तो कही घुटनाडुबान और कही झाड झखाडो ने पानी के नीचे अरण्य का सजन कर रखा है। पडो के बीच स होकर नाव भीतर घुसी तो शुरू म उनको कुछ भी दिखायी नही पडा। पानी म जुगनू दमक रहे हैं। कितने हजार-लाख मानो प्रकाश-अधकार मय जगत हो। एस प्रकाश-अधकार म उनको कुछ भी दिखायी नही पडा। नरेनदास बोल पडा इस अधियारे म अब और किसकी तलाश करेंगे ?

कुछ पछी चहके। सभी खामोश, मानो ध्यानमग्न म लगे हैं। इधर कोई गाव नही, काफी दूर तक नाव खे ले जाओ तो सुदरपुर गाव मिलगा। जितना ही व वन जगल मे धमत जा रह हैं उतना ही सार शान्त स नाटे मे बदलत जा रहे हैं। पत्तो की सर सराहट भी नही। नीच जल है इसलिए पत्ता गिरन पर भी आवाज नही होती। इतने बडे गहरे बन म कोई मोथा लमरा नही बेंत की झाडिया—चुरमुट चारो ओर सिर के ऊपर कितने ही किस्म की लतरें लटक रही हैं। इस भयावह अधियारे म अगर कोई बत्ती जलती दिखायी पड जाय काश किसी नाव की आवाज सुनायी पड जाय। क्योकि जल्दी भाग निकलने का रास्ता इधर नही है। बल्कि गजारी दरख्तो का यह जगल रात बिताने वाला है। अधेरे-अधेरे मे यह जगल पार कर जाओ तो मघना नदी मिलगी। नदी पर बादबान तान दो नाव पर तो लगेगा कोई परिवार जा रहा है। या नदी म किसकी नाव चली जाती कौन उसकी खाज खबर रखता। इस गजारी के जगल म कोना कोना उन्होने मालती को ढूढने की कोशिश की। व फुसफुसाकर बोल रह थे। गजारी के एकाध पत्ते चू पडे। पानी पर वे पत्ते बहते हुए अधेरे नदी मे चले जा रह है। वे उन पत्तो या परिंदो की बोलिया की ओट म अपन को रुपोश रखे रहे। इस प्रकार वे जगल के भीतर बडी नाव की टोह म लगे रहे।

न तो वह नाव और न गुनाई बीबी का गाना। कैसे डकत हैं वे जिन्होने मालती जसी जबरदस्त युवती को गायब कर डाला।

शचीद्रनाथ ने कुछ मायूस आवाज म कहा नाव नदी म ले चलो। बडी नाव काफी दूर निकल गयी होगी।

जब्बर, नाजनी कहती क्या है ?

—कुछ भी नहीं कहती मिया।

—कुछ भी न कहने पर छुटकारा कसे मिलेगा ?

—जरा सब्र करें मियां।

—सुबह होने म अब कोई देर नहीं जब्बर।

जब्बर अब पटवतन पर खडा हो गया है। मेघना नदी ठाठें मार रही है। क्रमश नदी की सारी जोहड़ें खत्म होती चली जा रही हैं। नाव चलाने का बधा बधाया रास्ता नहीं। केवल जल-जगल म छिपे रहना और पकड लाई हुई युवती को वश म करना। हिंदू रमणी-सुंदरी युवती मालती को वश म लाकर शहर ले चलना। दिल सब्र नहीं मानता।—ऐसा काम कौन करे। बकरार हो जाने पर मिया साहब जोर-जबरदस्ती करेंगे। लेकिन किसकी मजाल कि छाजन के नीचे दाखिल हो। मालती इस समय साप-बाघ-सी है। भीतर जाते ही काट खाने को झपटती। कभी हिचकियां उठ रही थीं। कभी पगली-सी चीख रही थी और डर क मारे होठों के छोर पर थूक जम गया है। गला खुश्क। मालती के हाथ पैर बधे हुए। फिर भी यह युवती छाजन के नीचे लोटपोट रही है। कभी चुपचाप पडी है। चार मल्लाह मिया साहब, उनके दो शागिद और जब्बर। बीच बीच म जब्बर छाजन के भीतर चला जा रहा है। वश म लाने की बातचीत चला रहा है। अत में यह महाजन मालती को अपने घर की बीवी बना डालेगा। दो चार दिन नाव पर सर करते फिरना बदन म हवा लगाते फिरना फिर घर लौट जाना। ऐसी बरसात जब देश म आ जाती तो दिल काबू से बाहर हो जाता। दिल म उथल पुथल मच जाती नदी की चाकी पर पहुचने के लिए। और ऐसा जिस्म लेकर कौन है जो जल भुन कर खाक बन जाय। जब्बर अब पम के लालच म भखमूर सा रगीन बासुरी बजाय जा रहा है काना के पास—मालती दीदी उठिये, बात कीजिये जल पानी लें। आसमान देखें देखिये कित्ती बडी नदी मे हम आ गये हैं। दीदी आप अपने जिस्म म आग जलाये बठी हैं, अब उस आग मे पानी डालें। कहते कहते वह रस्सी वस्सी खोल दे रहा है। खोल देते ही ऐसी जवान नाजनी भले घर की बेटी बन जायगी। आशा स जब्बर की आखें इस समय क्पार पर।

गलही की ओर तीन जने। धारीदार लुगी और काली बनियाइन पहने। पस के लालच म पडकर जब्बर ने मालती को करीम शेख की नाव म ला फेंका क्योंकि

बिना दो करघो के उसका काम नही बन रहा है। करीम शेख न मालती को मेले मे देखा है। मेला मे मालती का रूप देखकर दातो तले उगली दबा ली है उसने। अभी ही तो मौका है—मेले म दगा फसाद छिड गया है। दग के समय मेले मे करीम शेख अपने पूरे जत्थे के साथ मेले भर म मालती की टोह मे दौडते फिरे हैं। कही भी उसे मालती ढूढ नही मिली और तभी स उस पर एक नशा सा सवार हो गया नारायणगज की गद्दी से सूत लाने जाते ही वह जब्बर से पूछने लगता क्यो रे जब्बर तेरी दीदी क्या कहती है ?

—बस आप ही की बात करती है। जब्बर पैसा निकालने के घात मे लगा था।

—मेरी बात क्यो करती र। क्या मुझे पहचानती है ?

—भला आपको न पहचाने ? कहती है मालती दीदी कहती है क्यो र जब्बरा, मेले मे तेरे साथ एक खूबसूरत सा आदमी देखा कौन है रे वह आदमी—

—तूने क्या कहा।

—मैंने कहा बडे मेहरबान शख्स हैं। बडे ही शान शौकत वाले। नाम है करीम। नारायणगज शहर म ऐसा कोई भी नही जो उनको पहचानता न हो।

—तूने मुझे इतना बडा बना दिया।

—क्यो न दू। बताइये आप कितने बडे आदमी हैं या नही।

—और क्या कहा ?

—कहा कि सोना सरीखा शख्स है।

—सुन कर क्या कहा ?

—कहा कि क्या सोना सरीखा आदमी का कोई शौक चस्का नही होता।

— तूने क्या कहा ?

—मैंने कहा होगा क्यो नही। यह कभी बात करती हैं आप। शौक चस्का सभी कुछ है।

इसके बाद ही एक रात गद्दी पर बठ करीम न कहा रात को आखो म नीद नही रह जाती र जब्बर। मानो ख्वाब की एक हूरी उड उड कर आती।

—हूरी। जब्बर की आखें बडी बडी हो गइ। फकत हूर कहने पर माना मालती की तौहीन होती। हूरी परी वश म आ जाती है। हमारी यह मालती दीदी आसमान का तारा है। आसमान का तारा ताकने म भाल लगता है। यह कह कर

जब्बर ने एक बड़ी रकम का आभास देना चाहा।

—कितनी रकम लगती है।

जब्बर ने पहले सोच लिया कि चार करघे खरीदने में कितने रुपये लग सकते हैं। फिर बोला, हजार रुपये।

—हजार रुपये में हूरी-परी आसमान के सितारे सब एक ही साथ खरीद लिए जा सकते हैं मियां।

—एक खरीदने में फिर तो कम ही लगता होगा। शायद मामला हाथ से निकल जाय, उसने लार घूटते हुए कहा, तो फिर कम लगता होगा।

—नहीं लगता ?

—लगने दीजिये। फिर आपके हिसाब से जो ठीक हो सो दीजिये।

आखिरकार दर भाव कर जब्बर ने पांच सौ रुपये लिये। बाकी खर्च करीम ही करेगा ऐसा तय हुआ। नाव मल्लाह और रात का ऐशो इशरत सब करीम शेख के खर्चे से। पहले सोचा था करीम ने कि वह नाव में खुद नहीं रहेगा, लेकिन जाने क्या उसे नाएतबारी आ गयी इक्त जब्बर, जाने किधर नाव ले ले जाय—फिर तो उसका आसमान का सितारा भी जाता रहेगा और नकद रकम भी। आखिर कार वह भी नाव पर चढ़ आया।

रुपये के लालच से, दो करघे चलाकर जुलाहा बनने के लालच में जब्बर गाहे बेगाहे गांव चला आता था। खुले हाथ खर्च करता था बेलू के साथ मलाह मशविरा करता था और जिनको वह यह इलाका दिखाने लाया था—कितना बड़ा ज्वार है देखिए मियां साहब लोग इसी ज्वार में हमारी मालती दीदी दिन व दिन पनपती जा रही हैं उनको समंदर के जल में ले जाइये। मालती को दूर से दिखाते समय जिन लोगों से वह ऐसा कहता था, वे सभी करीम शेख के लोग थे। मौका महल देखकर वाले अवसर समझ-बूझकर जब रजित गांव में न हो रात अंधियारी हो और जब किसी के बिना बताये जानना मुश्किल है कि किसकी नाव और कौन लोग नदी की चाकी पर आए—तभी काम हासिल करने में दिक्कत नहीं होगी। शम्सुद्दीन यहां है नहीं। वह ढाका गया है। लिहाजा इसी वक्त ही यह काम हासिल कर डालना चाहिये ऐसा मशविरा फेलू ने दिया। इसके ऐवज में फेलू को दो कौड़ी दस रुपये मिले। बीवी अन्नू को धारीदार साड़ी मिली। तय था कि फेलू की बीवी साथ चलेगी—लेकिन आखिर तक फेलू राजी नहीं हुआ। उसकी हिम्मत

नही पडी। पकडे जाने के डर से फेलू सिमट सा गया था।

इस समय सूय उठ रहा है। पाल पर हल्की हल्की बयार खेल रही है। प्रभात का सूय नदीवक्ष स मानो उतरा आता है। पद्मा नदी की भवर म कही नाव न पड जाय इसलिए मल्लाह बडी सावधानी स डाड चला रह हैं। पतवार थाम हैं। छाजन के दोनो ओर लकडी के बने दरवाजे। भीतर बिलकुल कमर की तरह। मानो पनसुही हो। भीतर बातचीत हो रही हो तो गलही पर बठे पता चल जाता है। छाजन के भीतर मालती सुबक सिसक रही है। जब्बर घुटनों के बल बगल म बठा है—और बिलकुल पहल ही की तरह रगीन बासुरी की तान छेड़े हुए है। फेलू की बीवी नाव पर होती तो इस वक्त आसानी होती। दस कौडी दस रुपय देने को भी वह तयार था लेकिन फेलू न बीवी को आन नही दिया। अगर काबू में न आवे जगल का शेर पिजड म घुस कर भी अगर दहाडता ही रहे तो फिर जाने क्या होकर रहेगा। जब्बर का चेहरा मारे भय के लटकता जा रहा है। इसलिए ज बर आजिज आकर पर के पास बठा और बोला दीदी उठिये। दूध गर्मा दें दूध पी लें। बदन म ताकत आ जायेगी।

लेकिन कौन किसकी बात पर कान देता। इस वक्त पटवतन पर मालती आधी की चपेट म पडे कौवे की नाइ। सारे चेहरे पर कलक की छाप। एक ही रात म आखो के नीचे कितने भयकर भद्दे दाग। हाथ-परो म अब रस्सी रस्सा नही। दर वाजे की दरीच स सुबह की रोशनी उसके परो के पास आ पडी है।

ज बर ने पुकारा मालती दीदी उठिये। मुह धोकर नाश्ता कर लीजिए।

मालती गदन झुकाये बठी ही रही मानो फिर परेशान करने पर गले म दात गडा देगी। डरते-सहमते ज बर छाजन के भीतर स निकल आया। अभी तक तेजी घटी नही। मालती का चेहरा पगलाया सा लगता है।

—कहती क्या है ? करीम शेख पटवतन पर बठा हुक्का पी रहा था।

—कहती है बूढी जान है, झेल भी लेगा।

—क्या कहत हो जी। उम्र भला कितनी होगी मेरी। बस दो कौडी के लगभग।

—ऐसी बात है तो सब कुछ ठीक ठाक हो जायगा।

हुक्का गुडकते हुए करीम ने कहा तुम जो कहा करते थे कि तुम्हारी दीदी मेरे बारे मे पूछा करती है और अब देखता हू कि तुम्हारी दीदी पगली सी बनी बठी है।

दिन लगे थे। कोई याद रखने वाली बात नहीं—जाने क्या-क्या सोचा करता हू। करीम के दिमाग मे बिखरी बिखरी बातें उभर आई हैं। इस समय मानो वह कितने उदार मनोभाव का व्यक्ति है। उसके मुख पर सरल आचरण के चिह्न। देखने पर लगेगा ही नही कि करीम के भीतर की शख्सियत बडी कुटिल व जटिल है। इस समय करीम के मन और मुख का एक-सा चित्र है। जो मर्जी हो सो करो गज के घाट से हिलसा खरीद लो। पद्मा का हिलसा, मेघना का हिलसा। फिर जल पर बहते चले जाओ। पटवतन पर बठे हिलसा मछली का शोल और गम गम भात खाओ और नदी के जल म मोरपखी नाव उतरा दो। मानो करीम शेख की यह कहने की ख्वाहिश हो—बेहद लालच है—हिंदू की लडकी, जिसकी जवानी बेकार चली जा रही हो ऐसी युवती का लेकर घर करने की तमन्ना।—ये नाजनी तेरे कलेजे म कसी पीर है कि म तू अपनी जवानी को बदिश म रख तड पती रहती है तुझ मैं समन्दर के जल म ले जाऊ—ऐसा सोचत सोचते करीम शेख ने फुर फुर दो बार आसमान म धुआ छोड दिया। फिर हुक्का जब्बर क हाथा म देता हुआ बोला लो मिया, जी भर कर सुडको। कहकर घुटना क बल चौखट पार करना चाहा तो जब्बर ने खप्प से उसकी दोनो टाग पकड ली, अरे मिया साहब आप कर क्या रहे है।

—क्यो क्या कर रहा हू ?

—साप लेकर खेलना चाहते हैं ?

—साप का जहरीला दात तोड देना चाहता हू।

—बडा सीधा काम लगता है क्या ?

—हा लगता तो है।

—सूत धागा बेचने जसा ही ?

—वसा ही।

—मिया इतना सीधा काम नही।

—सीधा है या नही देख तो लू। कहकर घुटनो क बल चल वह दहलीज पार कर छाजन के नीचे चला गया। और दुम दबाकर गीदड जिस तरह अपनी खोह म तनहा बठना चाहता है उसी तरह जरा फासले पर एकात मे बठ गया। मालती अब साफ दिखाई पड रही है। गदन झुकाये मालती बठी है। नाव पर उठा लाने मे काफी जार जबरदस्ती करनी पडी थी इसलिए शरीर के कई स्थानो पर घाव

और खून के दाग। या कोई मानो इस जिस्म को नोच-खसोट चुरा है। वह मानो प्यार देने जा रहा है इस तरह हाथ रखने को होकर देखा गलही का मल्लाह इधर ताक रहा है। उसने किवाड को भेड दिया। लालसा से इस वक्त इस शख्स की जवान पनिया रही है। कमल के फूल जैसा ताजा, गुलाब जैसा कोमल स्निग्ध और लुनाई से भरे जिस्म म जवानी मानो निरतर नदी की उज्जल पर चली जा रही है। करीम शख ने गम लोहे पर हाथ रख फौरन हटा लेने की तरह दो एक बार उसको छूने की कोशिश की, दो एक बार माथे पर हाथ रख लाड दुलार जताने की कोशिश की। मालती इस समय कसी भले घर की बेटी बन गई है। करीम से कुछ कह नही रही। अब हौसला बधा तो करीम ने सुल्तान-बादशाह जसी ही हाक लगाई अरे मिया लाग, चाकी पर नाव बाधो। हिलसा मछली का झाल और भात खा लो। उसके बाद ही पटवतन पर युवती मालती को लेकर करीम शेख एक खेल मे मस्त हो जायेगा ऐसे ही एक अदाज म बाहर निकल कर नदी की चाकी की ओर देखते ही कासवन म उसने मानो एक घडियाल को तैरते हुए देखा। घडियाल ने चुपके चुपके मुह इतना खोल रखा है सोचते ही करीम के मुख पर लहू दौड आया।

चाकी पर नाव बाध कर हिलसा मछली का झोल और भात। गाव बहुत दूर है। नदी के दक्खिन किनारे कासवन पार करने के बाद आस्ताना साहब का कब्रिस्तान है। अब यह सब जमीन और खेत कितनी दूर तक चले गये हैं। सामने सरकडा का जगल। पानी धीरे धीरे घटता रेती की ओर चला गया है। सूय क्रमश सिर के ऊपर चढ़ता आ रहा है। वे पटवतन पर बठकर खाना खायें। मालती ने कुछ भी खाया नही। मालती चुपचाप नदी का जल देख रही है। उस समय वे सभी *अयमनस्क हो गये। करीम नमाज पढ रहा है।*

अब मालती लौट नही सकती। कहा लौटेगी। उसको डकत लोग चुरा कर ले जा रहे हैं। इस समय वह रजिन या किसी और का चेहरा याद नही कर पा रही है। सिर मे असह दद व चिलकन। रह रह कर वेदम कराह। हाय, वह अब क्या करे? कहा वह जा रही है क्या उसकी इच्छा है, वह कौन है क्या इस तरह चुपचाप बैठी है? क्या उसका कुछ करणीय नही। इतनी बडी नदी नदी का जल —इस अथाह जल मे क्या जननी मुझे ठाव नही मिलेगा यह कहकर जब सभी मछली भात खाने म व्यस्त थ और करीम तल्लीन हो नमाज पढ रहा था मालती

पानी मे फाद पडी। जय मा जाह्नवी तू मा जननी तेरी ही गोद म मैं बह जाती हू। जाने कसे बहाव के मुह मे पडते ही मालती क्षण भर मे काफी दूर जाकर उझक आई। सारे मल्लाह नाश्ता छोडकर हय हय कर उठे। जब्बर ने मुसीबत देख पानी मे छलाग मार ली। डाड खोलने को होकर मल्लाहो ने देखा गाठ उलझ गयी। व झटपट खोल नही पा रहे हैं। बहाव पर मालती बहुत दूर चली गई है। मालती कभी डूब रही है तो कभी उतरा रही है। करीम ने पटवतन पर खडे होकर एक हाक लगाई इस इलाके की अपनी ही हाक कौन डूबा जाय। करीम ने जब बहाव पर नाव डाल दी उस समय मालती रेती के पास सरकडो के जगल मे छिप गयी।

कडखा धार पर नाव कछुए की नाई बहती जा रही थी। सामने कुछ भी दिखाई नही पड रहा है। सिफ भवर पर भवर। दाहिन हाथ चाकी चाकी पर धान खेत। सभी ने सोचा मालती शायद पानी मे डूब गई हो। लेकिन बरसात मे मालती सुनहरे रेत वाली नदी पार कर जाती थी चक्रवातों म डुबकी लगाकर वह नदी के नीचे का मिट्टी रेत उठा लाती थी। वही मालती पानी म डूब जायेगी इस पर जब्बर को यकीन नही पडा। नाव पर उठकर उसने चारो ओर देखा। बगल म सरपत का जगल। जिस तरह मछली नदी के जल मे तरती है उसी तरह सरपत के सिरो को दो ओर झुका कर कोई सरपत क जगल मे तरता जा रहा है।

जब्बर चिल्ला उठा वो देखिय जा रही है।

मल्लाहो ने कहा मिया वह कोई इसान नही है।

करीम बोल पडा हा मछली है बडी मछली। इस वक्त मछली के पीछे भागना कोई ठीक बात नही। बल्कि करीम की चौकस निगाह इस वक्त बीच दरिया म। क्योंकि करीम को यह भय है कि एक बार यह नदी पार कर जाय तो करीम को जेल हवालात की हवा खानी पडेगी। घर ही अगर न ले जा सके तो नदी के जल म सरकडा क वन म कही भी हो मालती क सिर पर लगी स वार करो फिर तो मालती पानी म ही डूब जायगी। झील कूना नदी क जल म कौन कब बहा जा रहा है कौन जानता है। बरसात का जल इस जल म युवती नारी डूब मर तो खुदकुशी ही मान लिया जायगा करीम ने कहा क्या मिया वह नाजनी कहा है ?

लेकिन जब्बर सरपत क जगल की ओर ही देख रहा है। जगल क्रमश किनारे बढता गया है। वहा इतनी बडी नाव चलाने पर नाव जमीन पकड लगी। और

वहा अब सिर्फ कीचड और पानी है—अब जब्बर करे भी तो क्या। इस बेवक्त कौन ऐसा अल्लाह का बदा है जो इस जवान औरत को पकड लाये—गम और गुस्से से जब्बर अब अपने बाल नोचने लगा। और जिधर सरपत का वन काप रहा है या हिल रहा है उधर ही नजर गडाये खडा रहा। और सहसा उसने देखा कि सरपत वन पार कर मालती अधी सी कब्रिस्तान की ओर चली जा रही है। करीम पागल का तरह हहाकर हसने लगा। यह जवान—जवान लडकी रास्ता भूल गई है चलो इसकी तलाश म चलो। अबकी बार वह कूद पडा। देखा देखी जब्बर भी फादकर पानी म बह चला। करीम के शागिद भी सारे लालच और हवस के पानी म तैरने लग। जितनी दूर निगाह दौडती सिर्फ पानी और पानी। बियावान इस जगल म एक खरगोश के पीछे मानो भेडिया का एक झुड झपट रहा है। सामने ही वह रेता है। आस्ताना साहब की दरगाह है और चारो ओर गहरा पानी। दूर जाने कितनी ही दूर, लाख लाख कोस दूर लोगो की बस्ती हो। इस ठौर पर पस जान पर मालती बेशक पगला जायेगी। या झाप झाडी जगल म छिपती हुई अगर किसी कदर पाच सात मील नदी की उज्जल पर तरती किसी लोकालय म पहुच जाय तो जब्बर तुम्हारे लिये जेल हवालात रखा है। तुम्हारे करघे की बुनकरी खत्म होम हवास का खात्मा। मालती जितनी तेज भाग रही है उतन ही तेज जब्बर करीम और उसके शागिद दौड रहे हैं। सरपत के जगल के बीच स दौड रहे हैं। बदन कट कर खून चू रहा था। व अब वहशी से लग रहे थे। भूत प्रेत जसे मानो व मरघट मे नाचते फिर रहे हो।

इस इलाके म कोई लाग-बाग दिखायी नही पडेंगे। दो दस कोस क भीतर यह बियावान बीहड जगल और जिस पव म इस दरगाह म मोमबत्तिया जलायी जाती हैं उस पव के सिवा कोई आदमी इस रास्ते नही आता। इस अरण्य के भीतर मानो एक मृत जगत-समार चुपचाप प्रकृति की क्रीडा देखता जा रहा है। इतकाल के बाद ही आदमी आकर इस कब्रिस्तान मे जगल म पनाह लेता है। और दरगाह की कब्र पर इनकाल के वक्त सुनाइ पडता है—अल्लाह एक है और मुहम्मद उनके एकमात्र रसूल हैं।

अब सूरज पश्चिम आसमान मे ढलने लगा है। वे तीनो सरकण्डे के जगल म घुसते ही कुछ दिग्भ्रात से हो गये। क्योंकि कोई आहट नही मिल रही है। कीच पानी मे चलने पर एक तरह सप-सप-सा शब्द होता है—वह शब्द अब खामोशी

पानी म पांव नही। जब भी जाह्नवी गू भी बनती तेरी हो गोल म मैं बह जाती हूं। जो मैंने बड़ा के मुह म पड़ते ही मानती गान भर मैं पानी दूर ऊपर उतर आई। गाने म माह मानता छोड़कर हुप हुप कर उठ। जब्बर ने मुसीबत देख पानी म छलांग मार दी। डांड मालन की होकर मन्जारा। नया गोड उतर गयी। व शायद गोर नहीं मा रहे हैं। बहाव पर मानती बहुत दूर चली गई है। मानती कभी डूब रही है तो कभी उतरा रही है। करीम न पतवार पर मछ हारकर हांक लगाई इस दमार की अपनी ही हाथ और डूबा जाय। करीम न जब बहाव पर नाव डाल दी उस समय मानती रेती के पास सरकडा के जगल म छिप गयी।

मझधार पर नाव कम्पन की गई बहती जा रही थी। सामने कुछ भी दिखाई नहीं पड रहा है। सिर भवर पर भवर। लाहिन हाथ पारा पानी पर धारा-प्रेत। सभी न सोचा मालती शायद पानी म डूब गई है। लेकिन बरसात म मालती सुनहरे रंग वाली नदी पार कर जाती थी बरसातों म डुबकी लगाकर वह नदी के नीचे का मिट्टी तक उठा लाती थी। वही मालती पानी म डूब जायगी इस पर जब्बर को यकीन नहीं पडा। नाव पर उठकर उसने पारा ओर देखा। सामने म सरपत का जगल। जिस तरह मछली नदी के जल म तरती है उसी तरह सरपत के सिरा को दो ओर हटा कर कोई सरपत के जगल म तरता जा रहा है।

जब्बर चिल्ला उठा वो दखिए जा रही है।

मल्लाहों न कहा मियां वह कोई दमार नहा है।

करीम बोल पडा हां मछली है बड़ी मछली। इस वक्त मछली के पीछे भागना कोई ठीक बात नहीं। बल्कि करीम की कोशिश सिर्फ इस वक्त बीच दरिया म। क्योंकि करीम का यह भय है कि एक बार यह नदी पार कर जाय तो करीम को जल हवालात की हवा खानी पडेगी। पर ही अगर नाव जा सके तो नदी के जल म सरकडा के वन म वही भी हो मालती के सिर पर लग्गी म वार करो फिर तो मालती पानी म ही डूब जायगी। ढोल पूजा नदी के जल म कौन कब बहा जा रहा है कौन जानता है। बरसात का जल ऐसे जल म युवती नारी डूब मरे तो खुदकुशी ही मान लिया जायगा करीम न कहा क्या मियां वह नाजनी कहा है ?

लेकिन जब्बर सरपत के जगल की ओर ही देख रहा है। जगल क्रमश किनारे बढ़ता गया है। वहा इतनी बडी नाव चलाने पर नाव जमीन पकड लेगी। और

वहा अब सिर्फ कीचड और पानी है—अब जब्बर करे भी तो क्या। इस बेवक्त कौन ऐसा अल्लाह का बदा है जो इस जवान औरत को पकड लाये—गम और गुस्से से जब्बर अब अपने बाल नोचने लगा। और जिधर सरपत का वन काप रहा है या हिल रहा है उधर ही नजर गडाये खडा रहा। और सहसा उसने देखा कि सरपत वन पार कर मालती अधी सी कब्रिस्तान की ओर चली जा रही है। करीम पागल की तरह हहाकर हसने लगा। यह जवान—जवान लडकी रास्ता भूल गई है चलो इसकी तलाश म चला। अबकी बार वह कूद पडा। देखा देखी जब्बर भी फादकर पानी म बह चला। करीम के शागिद भी सारे लालच और हवस के पानी म तरने लगे। जितनी दूर निगाह दौडती सिर्फ पानी और पानी। बियावान इस जगल म एक खरगोश के पीछे मानो भेडिया का एक झुड झपट रहा है। सामने ही वह रती है। आस्ताना साहब की दरगाह है और चारो ओर गहरा पानी। दूर, जाने कितनी ही दूर लाख-लाख कोस दूर लोगो की बस्ती हो। इस ठौर पर कम जान पर मालती बेशक पगला जायेगी। या झाप-झाडी जगल म छिपती हुई अगर किसी कदर पाच सात मील नदी की उज्जल पर तरती किसी लोकालय म पहुच जाय तो जब्बर तुम्हारे लिये जेल हवालात रखा है। तुम्हारे करघे की बुनकरी खत्म होगी हवास का खात्मा। मालती जितनी तेज भाग रही है उतनी ही तेज जब्बर, करीम और उसके शागिद दौड रहे हैं। सरपत के जगल के बीच से दौड रहे हैं। बदन कट कर खून चू रहा था। वे अब वहशी से लग रहे थे। भूत प्रेत जसे मानो वे मरघट म नाचते फिर रहे हो।

इस इलाके म कोई लाग-बाग दिखायी नही पडेंगे। दो दस कोस के भीतर यह बियाबान बीहड जगल और जिस पर्व म इस दरगाह म मोमबत्तिया जलायी जाती हैं उस पर्व के सिवा कोई आदमी इस रास्ते नही आता। इस अरण्य के भीतर मानो एक मृत जगत-ससार चुपचाप प्रकृति की क्रीडा देखता जा रहा है। इतकाल के बाद ही आदमी आकर इस कब्रिस्तान मे जगल म पनाह लेता है। और दरगाह की कब्र पर इतकाल के वक्त सुनाई पडता है—अल्लाह एक है और मुहम्मद उनके एकमात्र रसूल हैं।

अब सूरज पश्चिम आसमान म ढलने लगा है। वे तीनो सरकडा के जगल म घुसते ही कुछ दिग्भ्रात से हो गये। क्योकि कोई आहट नही मिल रही है। कीच पानी म चलने पर एक तरह सप्-सप्-सा शब्द होता है—वह शब्द अब खामोशी

पानी म पाद पडी। जय मा जाह्नवी तू मा जननी तेरी ही गोद म मैं बह जाती हू। जाने कसे बहाव के मुह म पडते ही मालती क्षण भर म काफी दूर जाकर उझक आई। सारे मल्लाह नाश्ता छोडकर हय हय कर उठ। जब्बर न मुसीबत देख पानी म छलाग मार ली। डाड खोलने को होकर मल्लाहो ने देखा, गाठ उलझ गयी। वे झटपट खोल नही पा रहे हैं। बहाव पर मालती बहुत दूर चली गई है। मालती कभी डूब रही है तो कभी उतरा रही है। करीम ने पटवतन पर खड होकर एक हाक लगाई, इस इलाके की अपनी ही हाक कौन डूबा जाय। करीम ने जब बहाव पर नाव डाल दी उस समय मालती रेती के पास सरकडो के जगल म छिप गयी।

कडखा धार पर नाव कछुए की नाई बहती जा रही थी। सामन कुछ भी दिखाई नही पड रहा है। सिफ भवर पर भवर। दाहिने हाथ चाकी चाकी पर धान खेत। सभी ने सोचा मालती शायद पानी म डूब गई हो। लेकिन बरसात मे मालती सुनहरे रेत वाली नदी पार कर जाती थी चक्रवातों म डुबकी लगाकर वह नदी के नीचे का मिट्टी रेत उठा लाती थी। वही मालती पानी म डूब जायेगी इस पर जब्बर को यकीन नही पडा। नाव पर उठकर उसने चारो ओर देखा। बगल म सरपत का जगल। जिस तरह मछली नदी के जल म तरती है उसी तरह सरपत के सिरो को दो आर झुका कर कोई सरपत के जगल मे तरता जा रहा है।

जब्बर चिल्ला उठा वो देखिय जा रही है।

मल्लाहो ने कहा मिया वह कोई इसान नही है।

करीम बोल पडा हा मछली है बडी मछली। इस वक्त मछली के पीछे भागना कोई ठीक बात नही। बल्कि करीम की चौकस निगाह इस वक्त बीच दरिया म। क्योकि करीम को यह भय है कि एक बार यह नदी पार कर जाय तो करीम को जेल हवालात की हवा खानी पडगी। धर ही अगर न ले जा सके तो नदी के जल म सरकडा के वन म कही भी हो मालती के सिर पर लगी से वार करो फिर तो मालती पानी म ही डब जायगी। झील कूला नदी के जल म कौन कब बहा जा रहा है कौन जानता है। बरसात का जल ऐस जल म युवती नारी डूब मरे तो खुदकुशी ही मान लिया जायगा करीम न कहा क्या मिया वह नाजनी कहा है ?

लेकिन जब्बर सरपत क जगल की ओर ही देख रहा है। जगल क्रमश किनारे बढ़ता गया है। वहा इतनी बडी नाव चलाने पर नाव जमीन पकड लेगी। और

वहां अब सिर्फ कीचड़ और पानी है—अब जब्बर करे भी तो क्या। इस बेवक्त कौन ऐसा अल्लाह का बंदा है जो इस जवान औरत को पकड़ लाये—गम और गुस्से से जब्बर अब अपने बाल नोचने लगा। और जिधर सरपत का वन कांप रहा है या हिल रहा है उधर ही नजर गड़ाये खड़ा रहा। और सहसा उसने देखा कि सरपत वन पार कर मालती अंधी सी कब्रिस्तान की ओर चली जा रही है। करीम पागल की तरह हंसकर हंसने लगा। यह जवान—जवान लड़की रास्ता भूल गई है चलो इसकी तलाश में चलो। अबकी बार वह कूद पड़ा। देखा देखी जब्बर भी फांदकर पानी में बह चला। करीम के शागिर्द भी सारे लालच और हवस के पानी में तैरने लगे। जितनी दूर निगाह दौड़ती सिर्फ पानी और पानी। वियावान इस जंगल में एक खरगोश के पीछे मानो भेड़िया का एक झुंड झपट रहा है। सामने ही वह रेती है। आस्ताना साहब की दरगाह है और चारों ओर गहरा पानी। दूर जाने कितनी ही दूर, लाख-लाख कोस दूर लोगों की बस्ती हो। इस ठौर पर कम जान पर मालती बेशक पगला जायेगी। या झोंप झाड़ी जंगल में छिपती हुई अगर किसी कदर पांच सात मील नदी की उज्जल पर तरती किसी लोकालय में पहुंच जाय तो जब्बर तुम्हारे लिये जेल हवालात रखा है। तुम्हारे करघे की बुनकरी खत्म होगी हवास का खात्मा। मालती जितनी तेज भाग रही है उतने ही तेज जब्बर करीम और उसके शागिर्द दौड़ रहे हैं। सरपत के जंगल के बीच से दौड़ रहे हैं। बदन कट कर खून चू रहा था। वे अब वहशी से लग रहे थे। भूत प्रेत जैसे मानो वे मरघट में नाचते फिर रहे हों।

इस इलाके में कोई लोग-बाग दिखायी नहीं पड़ेंगे। दो दस कोस के भीतर यह वियावान बीहड़ जंगल और जिस पर्व में इस दरगाह में मोमबत्तियां जलायी जाती हैं उस पर्व के सिवा कोई आदमी इस रास्ते नहीं आता। इस अरण्य के भीतर मानो एक मृत जगत संसार चुपचाप प्रकृति की क्रीड़ा देखता जा रहा है। इंतकाल के बाद ही आदमी आकर इस कब्रिस्तान में जंगल में पनाह लेता है। और दरगाह की कब्र पर इंतकाल के वक्त सुनाई पड़ता है—अल्लाह एक है और मुहम्मद उनके एकमात्र रसूल हैं।

अब सूरज पश्चिम आसमान में ढलने लगा है। वे तीनों सरकंडों के जंगल में घुसते ही कुछ दिग्भ्रांत से हो गये। क्योंकि कोई आहट नहीं मिल रही है। कीच-पानी में चलने पर एक तरह सप् सप्-सा शब्द होता है—वह शब्द अब खामोशी

अख्तियार कर चुका है। उस शब्द को सुनकर ही वे अब तक चौंक रहे थे। हवा में सरसराहट-सा या डोल रहा है। सारे जंगल में सिर्फ कीड़े-मकोड़े। बरसात के कारण सांप का भी डर है। इस इलाके में सांप जहरीले होते हैं। जो नाले में या पानी की रेती पर रेंग। निरन्तर अस्तित्व की तरह से ऊपरी जमीन पर फैल जायेंगे। या कभी गुत्थमगुत्था जंगल में घास फूस में छिप छिपे रहेंगे। और गलत पांव रखना और उस विस्मय के दंश का भय। उस मौत में ही सुरक्षा है। घर पर गुदड़ी और उसके ताजा छोटे-छोटे पानी में भर गया छिपे रहो है। जिससे ही वे भटक रहे हैं सनातन हो रहे हैं उनका जो अब योगदान जा रहा है और करीम चालाक सा भीग रहा है और पुकार चारों ओर दे रहा है। रास्ता तो मालूम हो बहुत था। अब पता किया जाए। हाथ लगी सम्पत्ति को भूल जाएंगे मामला अब क्या है। अब पानी का आगामी जल ही मुंह बाये खड़ा मिलेगा। यह अच्छी तरह से छू भी नहीं सका उस आगाह में नहीं लगा। पालोंग में उतर अरबों का पता। उस राम वाला में हाथ डालकर हाथ, यह कुछ भी नहीं कर सका। सारा का सारा बखार गया सोचते ही करीम ने अपनी असली सूरत अख्तियार कर ली। निरंकुश जानवर जैसा चेहरा। बोला साले तुम गुनहगार डगर ममता रख हो। कहकर ही उसने जब्बार के चूतड़ पर एक लात जमा दी। साथ ही साथ जब्बार डर के मारे बोल पड़ा आइए मियां साब। लगता है उत्तर की झाड़ियों में कीच-पानी में कोई चला जा रहा है। आइए।

नहीं अब और नहीं। जब्बार ने मन ही मन फैसला कर ली। पास ही उससे लिपट जायेगा। इज्जत की ऐसी की तैसी कर देगा। करीम ने सोचा नहीं अब बस। अब और लाड प्यार नहीं जतायेगा। पाते ही जानवर की तरह उसकी गर्दन पर टूट पड़ेगा। घसीट कर, घसीटते घसीटते झाड़ियों के भीतर गिराकर सोचते ही करीम का चेहरा नशेबाज-सा खिलने लगा। जो कुछ होगा देख लिया जायगा, जमीन में एक बार चारा बो देने पर जमीन उसी की होगी जिसकी जुरत जो फिर वहे जमीन तुम्हारी नहीं है मियां जमीन हमारी है। वह जब्बार और शागिद नादिर बेतहाशा दौड़ रहे थे और दौड़ते-दौड़ते उनको लगा साझ की मालती किनारे उठ गयी है। वे किनारे उठकर कब्रिस्तान के झाप-जंगल में घात में बैठ गये। मालती अकेली इस सफेद जुहाई में अकेली जंगल में रास्ता ढूंढने निकलते ही वे झट्ट से उसे दबोच लेंगे।

मालती ने कुछ खाया नहीं। लगातार सरपत के वन म भागती भागती वह थक कर चूर है। इस जगल के भीतर घुसकर उसने देखा टप्-टप् खून चू रहा है। सारा शरीर कट गया है। बदन पर कपडा नहीं। समिज फट-चुथ गया है। जाने वहा किस जगल क भीतर बेंत की झाडिया, टहनी-लतरा पर उसके कपडे अब झाडियो की तरह उड रहे हैं कौन जाने। उसे कोई सुध-बुध नहीं। समिज का एक हिस्सा तार तार हो गया है। लडखडाती हुई बियावान जगल म घुमकर जिस तरह घायल हिरन अपना शरीर झाडी के भीतर खीच लेता है सावधानी से चुपचाप दुबका पडा रहता है उसी तरह मालती ने अपने को झाडियो क पीछे अदश्य कर दिया। ऊपर सफेद जुहाई है। थोडी ही देर तक यह जुहाई आकाश म रहेगी। इसके बाद क्रमश एक धीमी आवाज उठती आती सुनायी पडी। नदी के जल म शब्द। अराड ढहने की आवाज। सहसा झाड झाडी म कोई अनचक्का आवाज सुनते ही वह चौंक पडती। क्रमश वह निढाल पडती जा रही थी। उसे लग रहा था कि वह मरती जा रही है। दूर-दूर उसने हिरनिया के तेज भागने की आवाज सुनी। दूर-दूर आकाश म मेला जैसा रजित का मुख, मुख का चित्र रजित की दोनो आखें बहती चली जा रही हैं। मालती समझ पा रही थी कि क्रमश वह होश गवाती जा रही है। और ऐन तभी उसने देखा उसके पैरो के पास तीन यमदूत जैसे लोग खडे हैं। व उसे ले जाने के लिए आए हैं। अब सचमुच वह डर क मारे बेहोश हो गयी? कुछ खच खच सा शब्द, हिरन हिरनिया के तेज भागने की आवाजें और पानी म लहर घूमने की ध्वनि—रात भर बमुध मालती के कोमल शरीर पर वहशियाना का साक्ष्य छोड मालती को मृत समझ कर कब्रिस्तान म उसे छोड व अधेरे म सरक गये। सुबह होते न होते गीदड कुत्ते उस युवती को नोच-नोच कर खा जायेंगे। किसी को भी पता नहीं चलेगा कि जगल क भीतर एक युवती मरी पडी है।

सोना ने रात भर नींद म सपना देखा—बडा-सा एक समुद्र रेतीली बला भूमि पर कुछ लोग लकडी का बना घोडा—खींच-खीच कर ले आये। कितना ऊचा

और लबा घोडा। लोगो के चले जाते ही उसने देखा घोडा लकडी का बना नही है जिंदा जियाला घोडा—उसकी ओर गदन मोडकर देख रहा है। वह अकेला नही है—कमला अमला भी मानो साथ हैं। घोडा उसके पास आकर परो के पास लेट गया—जस मुडापाडा के हाथी को सलाम दने को कहने पर या हट हट कहने पर घुटने मोडकर बठ जाता उसी तरह यह भी घुटन मोडकर बठ गया। वह जमना और कमला उसकी पीठ पर सवार होत ही वह घोडा भागने लगा। रतील बेलानट के अत म समुद्र म घुटना डुबान पानी मे उतरत ही घोडा फिर लकडी का हो गया—न हिले न डुले। वह अमला और कमला उतर नहीं पा रहे हैं। क्रमश यह घोडा ऊचा होते होते गगन छून लग गया। बादल फोडकर इतनी ऊचाई म उठ गया कि नीचे का कुछ भी वे देख नही पा रह हैं। वह नोच-नोच कर मुट्ठिया भर भर कर बादल खाने लगा। कितने मीठे और स्वादिष्ट। मला म जिस तरह चीनी के बने रुई के गोले जसे गोल नोच नोच कर खाया करता था घोडे की पीठ पर सवार वह भी उस बादल को नोच नाच कर लडडू की तरह हाथ म लेकर गोला बना-बनाकर अमला कमला को देने लगा। और तभी नीचे की ओर देखते ही लगा जाने कौन लोग हजारो लाखो की तादाद म चिउटियो की नाइ घोडे के परो पर रेंगते चले आ रहे हैं। उनको मानो स्वग मे उठने की सीढी भी मिल गई है। उसकी समझ म नही आया कि वह क्या करे। हाथो से नजीक आकाश। और जरा पहुचता आकाश को चीर कर सिर डाल द सकेगा और देव देवियो के राज्य मे कार्तिक गणेश या शिवजी कसे चल फिर रहे हैं देख सकेगा। लेकिन आश्चय की बात ज्योही उसने ऐसा सोचा कि घोडा फिर छोटा होते होते एक छोटा सा खिलौना बन गया। वह अमला कमला अब उस खिलौने वाला घोडा अपने गोद म लेकर समुद्र की रेती पर उठते आ रहे हैं और उठ आते वक्त ही लगा बडे ताऊजी क्वार का कुत्ता साथ लिये नदी की कछार पर चले जा रहे हैं। सहसा ताऊजी झल्लाहट स बोल पडे गतचोरेतसाला। साथ ही साथ सोना का ऐसा सुदर सिजल सपना टूट गया। उसके सिरहाने खिडकी पर सूरज सोनल जल के रग का और उसके पताने धूप। वह हडबडाकर उठ बठा। शुरू म वह समझ ही न सका कि वह कहा है। उसे ख्याल हो रहा था कि वह घर पर है और बिस्तर पर लेटे सपना देख रहा है। अब वह समझा कि यह कचहरी बाडी है। यह मझले ताऊ का बिस्तर है। वह मझले ताऊ के बगल म लेटकर सोया है। उसने इस बार

अच्छी तरह से आखें रगड ली। अमला-कमला याद आयी। व इस समय कहा हैं? फिर धूप निकलने पर वह दरवाज स बाहर निकल आया। ताऊजी कहा हैं? इतन बडे कचहरी बाडी म कोई नही। सभी मानो नदी किनारे चले गय हो। दर वाजा पार करते ही बरामदा। बरामदे क बाद हरा मदान। और बावडी के दक्खिन किनार बडा सा मठ है। सोना कल मठ नही देख सका। दरअसल रात उतर आने क बाद साना इधर आया था। अमला-कमला उसे ताऊजी के पास पहुचा गय थे। हवेली के उत्तर म रहो तो पता ही नही चलेगा कि बावडी क किनार इतना बडा एक मठ है। सिफ छत पर जिस वक्त वह खडा था, अमला कमला न कहा था मठ की सीढी पर एक सगमरमर का साड है। साड क गल म मयीफून की माला है। और उस छत का अधियारा उसके लिये इस वक्त एक रहस्यमय जगत है। नीद स जागते ही पूजा का बाजा सुनाई पडा था। अजुन नायब नदी से स्नान कर लौट रहा है। कधे पर लाठी रखे रामसुदर कही निकलने वाला है। लालटू पलटू इस समय कहा होग? इस घर म आकर वह मझलदा बडेदा दादा को देख ही नही पा रहा है। व आज कही शिकार करने जायेंगे। तडके सवेर शायद नदी की चाकी पर शिकार करने व निकल गय हैं। तभी उस लगा मदान पार करने के बाद बावडी बावडी क उस पार एक आदमी खडा है। वह मानो उस आदमी को पहचान रहा है लेकिन यकीन नही होता। धुधला सा। लबा और निश्चल मानो समुद्र के बला-तट पर ट्राय नगरी का वह लकडी का बना घोडा —शहर की ओर मुह किये खडा है। सोना ठहरा नही। बिलकुल सपने की तरह —मानो सपना हुबहू मल खाता चला जा रहा है। वह पागल की तरह दौडने लगा। अजुन नायब ने कहा साना कहा जा रहे हो। तुम्हार ताऊजी नदी म स्नान करन गय हैं। इस समय कौन किसकी बात सुन। मदान पार कर, जहा हिरन रहते हैं उनका निवास पार कर मोरा का घर दाहिने रख फूल फल के पौधो को पार कर वह एक छाहस्निग्ध झाऊ के नीचे आकर खडा हो गया। उसने फिर गदन उठाकर देखा। बिलकुल मेल खा रहा है कि नही। क्याकि वह यकीन ही नही कर पा रहा है। इस तरफ देशी विदेशी फूलो के पौधे हैं, झाप जगल-सी जगह है, उसन दरख्त की टहनियो पत्तिया को हटाकर देखा हा सब कुछ ठीक ही है। बावडी स उसे जो साफ नही दिखायी पडा था यहा आते ही साफ दिखाई पडने लगा। वह आवश से दौडते हुए पुकारने लगा, ताऊजी। बडे ताऊजी। मैं सोना हू। ताऊजी,

ताऊजी। कितना व्याकुल आवेश। वह बेतहाशा भाग रहा है। उसका वह अपना जन मिल गया है। उसने देखा वह कुत्ता भी सोना को देखकर खुशी स दुम हिला रहा है। ताऊजी इतना भी आखें उठाकर देख नही रहे हैं। हाथ परो म धान के पत्तो से कटे हुये दाग। पानी म भीग भीग कर हाथ पर फक पड गये हैं। कभी चक्कर लगाते तो कभी पानी म कुत्ता लेकर व अकेले ही शायद निकल पडे हैं।

सोना के नजदीक पहुचते ही कुत्ता भूक उठा, भा। यह वही कुत्ता है, कब स मकान म आ गया है घर के चारो ओर चक्कर लगाता रहता है, बडी ही उपेक्षा से यह कुत्ता इस ससार म बडा होता जा रहा है। जो जठन बचती है वही यह कुत्ता खाता है। कोई भी उसे दुलारता नही लेकिन अब यह बेकार का कुत्ता सोना क लिय कितना अनमोल है। उसके कितने अपने जन आ गये हैं। अब उसे किसस डरना है। जिस तरह गाय गरी क बालक लकडी का घोडा खीचते खीचते ले गये थ उसी तरह वह इस आदमी को खीचते खीचते ले जा रहा है। इतनी दूर आते ही पागल मनही को मानो कसी लाज लगने लगी। वह भीतर नही जाना चाहता। क्योकि इतनी बडी हवेली देखकर शायद उस वह दुख याद आ गया हो। एक दिन उसने एक काली टाई पहन रखी थी। पलिन की उक्ति, तुम नीले रग की टाई पहनना मणि तुम सफेद या नारगी रग की टाई पहना करो काला रग देखने पर तुम जसा व्यक्ति जाने कसा निदय सा लगने लगता है। या मानो यह जो कपडे-लत्त हैं यह इस महल जसे मकान म फबत नही। वह चारो ओर देखने लगा। पानी का लाल सा सेंवर, वे कोई मानुस नही, वे कोई जल के देवता हैं तरह-तरह के सेंवर और जलज पौधे उनके शरीर पर उग आय हैं। खीच कर ले जाते समय सोना ने ताऊजी को बावडी की सीढी पर बिठाया। अजुरी म पानी भर भर कर वह ताऊजी के शरीर स सेंवर काई ततर पत्त सब साफ करने लगा। पागल मानुस इस सीढी पर मानो एक पत्थर की मूर्ति हो बठ बठे आकाश देख रहे हैं। आखें न देखो तो समझ ही नही सकते कि इस मनुष्य म कोई प्राण है।

बावडी के दूसरे किनारे कमला व दावनी के साथ पूजा के फूल चुन रही है। फूल चुनते हुए उसने देखा सीढी पर सोना कुछ कर रहा है। एक बार उछल उछल कर पानी म उतर रहा फिर ऊपर उठ रहा है। सीढ़ी के सोपान पर एक आदमी, सोना उस आदमी के बदन पर पानी छिड़क रहा है। बगल म एक कुत्ता। वह सोना के साथ घाट पर बार-बार नीच उतर रहा है और सोना के साथ ही ऊपर

उठ रहा है। इतना तल्लीन होकर सोना क्या कर रहा है? कमला दौड़ने लगी, वह उन हिरन और मार के आवामा को पार कर हरी-हरी घास के गलीचे पर दौड़न लगी। फिर मीन्‍ो पर पहुच कर देखा कि सोना घुटना माडे बठे उस व्यक्ति क शरीर म क्या कुछ बीन-बीन कर निकाल रहा है। उसन दखा, सोना सॅवर माफ किये दे रहा है। कूद-कोकाबेली के पत्ते साफ कर रहा है। यह आदमी कौन है? कमना बगल म आकर खडी है चाव कर देख रही है अचरज भरी आखो से कुत्ते और दम पत्थर क बुत जमे आदमी को देख रही है—यह सब देखकर भी सोना कुछ बोन नहीं रहा है। मजबूरन कमला बानी, कौन है र साना?

—मर ताऊजी।

—नरे ताऊजी।

—मेरे बड़े ताऊजी।

—बात नहीं करत।

—नहो।

—गूग।

—नही।

—ता फिर बात क्या नहीं करत।

—बात करते हैं—मिफ गतचोरेतमाल। कहते हैं।

—और कुछ नहीं बोलते?

—नहीं।

—हाय अम्मा यह कसी बात है रे। सिफ गैतचोरेतुमाला कहना है।

सोना न फिर जवाब नहीं दिया। सोना न तल्लीन हो ध्यान से सारे जलज घास कूद-कोकाबली की पत्तिया सॅवर और काई आदि अवशेष साफ करन क बाद पुकारा उठिये ताऊजी।

कमला न कहा, पानी में क्या भीग गये हैं?

सोना कह सकता था, ताऊजी तर कर आये हैं। वे उनको नहीं ले आये थे। वे कुत्ते को लेकर चले आये हैं।

—तेरे ताऊजी पागल हैं।

सोना गुस्सा गया। बाला, हा, तुम्हें कहा है। किसने कहा।

—तो फिर बोलते क्या नहीं।

जाने क्या सोना को बेहद गुस्सा आ रहा था। ताऊजी को पागल कहने पर वह शात नही रह पाता। उसने मानो झटपट कमला के पास से ताऊजी को दूर हटा ले जाना चाहा। तब कमला बोली आइये दादू, मैं सोना की बुआ लगती हू। क्यो सोना हू न मैं तेरी बुआ ?

अब सोना मानो बहुत खुश हो गया। बोला, मेरी कमला बुआ है ताऊजी।

मणीद्रनाथ ने कमला को देखा। इस लडकी की आखें क्यो नीली हैं। वह घटना मोडकर बैठ गया। मानो कोई देव जब घुटने मोड बैठते हुए गुड़िया सी छोटी एक लडकी को दोना हाथो उठाकर आखो के पास ले गया। उसने कहना चाहा तुम कौन हो लडकी। *लगता है मैं तुमको पहचानता हू।*

ऐसी धाकड सी लडकी की आखें भी डर से इत्ती सी हो गई। सोना का भीतर ही भीतर मजा आ रहा था। उसने शुरू मे कुछ नही कहा लेकिन जब देखा कि कमला रो पडेगी तो उसने कहा कमला कोई डर नही। कहकर उसने ताऊजी की ओर देखा। और तभी वह आदमी मानो सोना की आखें मत्र की तरह काम कर गई आखो मे गुस्सा इत्ते से बच्चे की ऐसी आखें देखकर मणीद्रनाथ ने कमला को *नीचे उतार दिया। शायद कमला भाग गयी होती लेकिन सोना इस समय कितना* निडर है इस समय कमला सोना से अपने को छोटी महसूस करने लगी। सोना जरा सा डर नही रहा है—खीच खीच कर उनको लिये जा रहा है। इतना बडा व्यक्ति सोना का इतना आज्ञाकारी है सोना को कोई भय डर नही कमला का भी कोई भय डर नही रहा। उसने बाया हाथ थामा सोना ने दाहिना हाथ पकडा है। *कुत्ता आगे आगे चल रहा है।*

ट्राय का घोडा लिये नाट मदिर के सामने पहुचते ही शोर गुल मच गया। वही आदमी फिर इस इलाके मे आया है। पागल मनई मणीद्रनाथ बोदा-सा चेहरा लिये नाट मदिर के सामने खडे होकर दुर्गा प्रतिमा देखने लगा। और घर के कम चारी—कारिंदे छोटे छोटे बालक-बालिकायें यहा तक कि मझले बाबू भी आ गये। उन्होने भूपेंद्रनाथ को बुलवा भेजा है। जाकर मुझ्या चाचा से कहना कि उनके बडे दा आये हैं। शात शिष्ट बालक की तरह वह व्यक्ति खडे खडे दुर्गा प्रतिमा देख रहे हैं। ऊपर झाड फानुस लटक रहा है। वे घूम फिर कर सब कुछ देखने लगे।

सोना बोला, दुर्गा मायी को प्रणाम कीजिये।

मणीद्रनाथ एकदम दडवत लेट गये। कोई मानो अब उनको उठा नही सकेगा।

दोनो हाथ सामने सीधे। बच्चे आपस म हस रहे हैं। सोना को यह सब अच्छा नहीं लग रहा है। उससे बन पडे तो वह उनको यहा से भी खिसका ले चले। मझले बाबू यानी अमला कमला क पिता ने धमकी दी। सामने कोई व्यक्ति खडा था शायद कमचारी कारिन्दा ही होगा—मझले बाबू सबका पहचानते भी नही—इन दिनो, पूजा के दिना म दूर दूर के शरिस्तेखानो से नायब-गुमाश्ते चले आते हैं और आते समय अपने इलाके की श्रेष्ठ चीजें गन्ना, केला दूध, मछली लाकर पूजा के लिये पेश करते हैं। उनमे से एक से कहा जरा देखना, मुइया काका अभी तक क्या नहीं आ रहे हैं।

पागल मनही सीधा दडवत। प्रणाम म उसका शरीर ऐंठा हुआ। सोना ने देखा ताऊजी सीधा लेटे हुए हैं। सोना समझ गया बिना बताये वे उठेंगे नही। उसने अब झुककर उनके कान के पास मुह लाकर कहा ताऊजी उठें। अब प्रणाम करने की जरू त नही। कहकर हाथ पकडते ही वे उठ खडे हुए। भीगे कपडो मे कीच धूल लगी है।

भूपेंद्रनाथ आकर दग रह गये। भूपेंद्रनाथ को देखते ही मणीद्रनाथ ने सोना की ओर देखा। देखते हो वह आदमी मेरी ओर किस तरह घूर रहा है। सोना की ओर देखते ही मणीद्रनाथ विषाद मग्न हो गये। मानो उनको याद ही नही कि यहा भूपेंद्रनाथ रहते हैं। यहा आकर उनको भूपेंद्रनाथ के चगुल म फसना पडेगा। उन्हाने अब चलना चाहा। भूपेंद्रनाथ न झट उनका हाथ पकड लिया। जाने फिर कहा किस ओर चला जायगा—भूपेंद्रनाथ ने मजबूती से उनको पकड रखा। उसने अब सबको चले जाने को कहा। भीड करने का मना कर दिया। उसने सवाल नही किया कि यह आदमी इतनी दूर कस चला आया है। शायद पानी म तर आया है। क्या नही कर सकता यह आदमी साचते सोचते वह अपने ही भीतर रज म डूब गया। दुर्गा प्रतिमा की ओर उसने मुह उठाकर देखा कहने की इच्छा हो माना मा, मया री। दुर्गा देवी बडी बडी आखा स दाना भाइया का देखकर मानो हस रही थी। उसन जल्दी स वहा से खिसकना चाहा क्योकि वह जानता है नाट मदिर क दुमजिले म जपफरी लग जनानखाना मे इस समय सौ सौ आखें परदे की आट स उसको देखने आई हैं—एसे सुदशन यक्ति को देखकर अवश्य ही व हाय हाय कर रही है। उनका चहरा माहरा भी क्या खूब। गौर वण। लबा और बच्चा जसा सरल। जिस प्रकार समदर म रास्ता भूलकर मल्लाह विपण्णता से

पीड़ित होता है, इस समय इस मनुष्य की आंखों में वैसी ही एक विवशता है। यह सब सोचकर जाने क्यों सुरेन्द्रनाथ की आंखों में आंसू आ गये।

सुबह से ही जोटन मुंह लटकाये बैठी है। आसमान में बादल और नीला आसमान देखते ही जोटन को पता चल जाता है कि शरद आ गया है। यह दुर्गापूजा का समय है। इस दरगाह में बैठे बैठे भी उसको पता चल जाता है। दरगाह भी क्या मानो एक विशाल घर हो जिसमें जोटन बनवासी बनी हुई है। दो साल से या कुछ ज्यादा अरसा ही होगा कि वह घाट के ठौर पर आ रही थी है। फकीर साहब से नहीं जा रहे हैं। शरद ऋतु आते ही आसमान में बादल यहां इधर तिरता है। रात भर इस घर के भीतर जुगनू टिमटिमाती रहती है। आसमान की ओर देखते ही दिल जाने कैसा-कैसा करने लगता है। मामा बाबू की बाड़ी की दुर्गा मूरत, मूरत के नाच-गाना और नाव में नाच सभी कुछ यह याद कर पाती है। यह सब याद आते ही दिल उदास हो जाता है। कितनी ही बार उसने फकीर साहब से कहा है गांव देस से चलियेगा? यह सुनकर तब कुछ भी नहीं कहता। शायद फकीर साहब की सेहत बिगड़ती जा रही है। शायद फिर कभी यह अपने गांव के डीह नहीं जा सकेगी। इस मस्जिद के साईं दरगाह के एक कोने में छोटे मकबरा-सा निवास या मानो कोई मुकाबला ही नहीं। छप्पर के नीचे बैठ फकीर साहब बस हुक्का पीते रहते हैं और जाने क्या क्या बकते रहते हैं जो जोटन के पल्ले ही नहीं पड़ती। उसका बंगला तर्जुमा कर देने पर जोटन हंसती रहती है।

—चक चक कर हंसती क्यों हैं आप?

—हंसी कब मैं?

—हंसे नहीं आप?

—ठीक है। हंसी आवे भी तो फिर नहीं हंसूगी। गमगीन-सी मुंह बनाये बैठी रही।

फकीर साहब बोले, यह रंजीदगी कैसी।

जोटन जवाब नहीं देती।

—क्यों बोलती क्यों नहीं आप।

—बताइये, क्या बोलूं?

—जो मन में आवे।

—मन में आता गाव-देस जाऊ।

—गाव जाकर आप रहेंगी वहा ? आपके भाईजान ने तो फिर शादी कर ली है। नया आदमी आपको पहचानेगा भी ?

—भला, पहचान क्या नही पायेगा ? जाने पर ठीक पहचान लेगा।

—बडी दूर है। इतनी दूर नाव खे भी सकूगा ?

नाव पानी-पानी खेता म पडने पर मैं लग्गी ठेल लूगी।

—लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे ? कहकर ही फकीर साहब फिर अन्यमनस्क हो गये। उनके पेट म मरोड होने लगा है।

शरत्काल होने के कारण वन-जगल मे कीडे-मकोडे बढ रहे हैं। शरतकाल होने के कारण इस समय पानी से सडाध आने लगेगी। क्योकि नदी नालो, खाप-जगल स पानी उतर जाते ही घास सेंवर सब सडने लगेंगे। दरगाह के चारो ओर इस वक्त सरकडो का जगल है। जगल के भीतर से कोई रास्ता नही है इस वक्त।

दरगाह आना पडे तो नाव ठेल ठेल कर आना पडता है। दरगाह के पूरब मे बडी नदी मेघना है। मघना के तट पर यह वन गहरी रात को वियावान जगल सा ही सन्नाटे से भरा हुआ। यहा तक कि कीट-पतग की आवाज भी हौलनाक सी लगती। चारो ओर बडे बडे लहसुन गाटा के दरख्त, पीपल के दरख्त और उनके नीचे हजार साल पुराना कब्रिस्तान। कही टूटा मसजिद है तो कही टूटा हुआ कुआ और चबूतरा। जीर्ण अधकूप जस छोटे छोटे इटो के निर्माण काय के खडहर कुछ-कुछ तो ढहकर बिलकुल मिट्टी म मिल गये। और पड-पौधे लतर पतर इतन घने कि दो पग बढो तो बेल-लत्तियो म फस जाओ। गर्मियो के दिनो म एक मकरी-सी पगडडी दिखाई पडती है। बरसात म कोई भी जगल म घुसना नही चाहता। पानी के किनारे ही दफ्ना कर चल जाते हैं। किसी का इतकाल हुआ हो तो दो चार लाग दिख जायेंगे, दो कोस रास्ता चलने पर चार घरो की आबादी है। बस चले तो इधर कोई फटकता नही। वहा एक फकीर साहब रहते हैं गर्दिश के दिनो म लोग उनस दुआ मागने चले आते हैं। जमीन पर खडे हाक लगान पर फकीर साहब घाड पखाड तय कर नीचे उतर आते हैं और जब जमी जरूरत पडती तसबीह-ताबीज द आते हैं। लोग उस जगल के भीतर कोई अलौकिक भय के कारण जाना नही चाहते। बगल म एक लबी-सी नहर है। मुर्दे अजगर साप की तरह वह नहर रातादिन सोना रहती है। बरसात आने पर यह

नहर जाग उठती, कुछ उज्जल पर जाने वाली नावें रास्ता सक्षिप्त करने के लिये कभी कभी इस नहर म चली आतीं। नहर से वे लोग जाते और ईश्वर और अल्लाह का नाम लेते हुए डरते-सहमते किसी कदर इस कब्रिस्तान को पार कर जाते।

कोई आदमी मरे तो फकीर साहब के लिय तकरीब सा हो जाता है। फकीर साहब को उस वक्त दो गडे पसे मिल जाते हैं। पान खाते हैं। गले म माला तसबीह डाले अल्लाह रहमाने रहीम कहते कहते उस मुर्दे आदमी के चारों ओर चक्कर लगाने लगते। कभी कभी जगल के भीतर छिपकर तरह-तरह का खेल करतब दिखाने क शौकीन हैं। यानी कब्रिस्तान म मुर्दा आते ही फकीर साहब की कारसाजी बन जाती है। काले चोगे म पर तक ढाप कर, गले मे लाल नीले और पीले रग के लहसन जसे बडे बडे पत्थर लटकाये, आखो मे काला सुरमा रचकर और सिर पर फेंटा बाधकर जब वह आते तो लगता कोई पीर आ गये हैं। उसके बाल सफेद और घुघराले। ऊपर उठाई हुई बाहें। घनी दाढी लहसन वाले तेल से चिपचिपी। जो लोग कफन दफन के काम से आये हुए है वे देखते कि मुश्किल आसान व लप लिये कोई जगल में घूम फिर रहा है। जब वे लोग भय के मारे काठ हो जाते तो अचानक ही बन के भीतर मुश्किल आसान का आविर्भाव हो जाता। उस वक्त लगेगा कि वे मिट्टी फाडकर निकल आये हैं। इसके बाद जिसकी जसी मर्जी हो—दो गडे पसे और दफनाये जाते व्यक्ति के कुछ सामान वस्त्र मिल जाते हो इस आदमी के गुजर-बसर का हीला बन जाता है। उस समय जोटन अपने छप्पर के नीचे बठी इस शख्स के कार करतब देखकर खिक खिक हँसा करती। दिन के वक्त भी उस काले चोगे म हजारो पबन्द लगाती हुई जोटन इस शख्स का नाचना कूदना देखा करती है। उस समय देखने पर कौन कहेगा कि यह शख्स बडा ही बेलाग मासूम जीव है कौन कहेगा कि यह सरल अकपट व्यक्ति असलियत म बडा ही काबू और डरपोक है। लेकिन अपनी रोटी रोजी के लिये कब्रिस्तान मे लोगो के आते ही यह शख्स कोई दूसरा ही आदमी बन जाता है। पीर औलिया बनने के चक्कर म यह आदमी सभी की आखो म भिन्न भिन्न अलौकिक क्रिया प्रक्रिया की प्रतिक्रिया देखने का आदी हो गया है। और इतकाल के समय लोगो की आखो म अपना खेल प्रदर्शित करता है। रात के वक्त दरख्त के सिर पर आग जलाकर बैठा रहता है।

इसलिए कहा कि दुर्गोत्सव के लिये जोटन का दिल कचोटता है उसको महसूस

करने का कोई जरिया नहीं रह जाता फकीर साहब को। सारा साल वे इस छप्पर के नीचे पडे रहते हैं। वक्त-बेवक्त वे लहसन के कोये इकट्ठे कर लाते हैं। मचान के नीचे लहसन के कोयो का ढेर। बडे-बडे मटका म भिगोय रहते हैं। कुचले हुए लहसन पानी म सडने-पचन पर एक तरह का गाढा तल निकलता, उस तेल से छप्पर के भीतर की वत्ती जलती, मुश्किल-आसान का लप जलता और कुछ तेल हड्डियों मे पड के सिरा पर बाघ आत हैं। गाहे-बे-गाहे इतकाल के वक्त जो लोग आते हैं उनको अलौकिक कुछ दिखान की गरज से दरख्तो के सिर पर आग जलाये वे बठ रहते हैं। और भी जान क्या-क्या करिश्मा दिखाते हैं। शुरू-शुरू म जोटन हसत-हसत बेहाल हो जाती थी। एक हडडी रख छोडी है। कुछ जडी-बूटिया भी। उस मदान म खडा कोई आदमी जब हाक लगाता है—हो, कौन है, मैं एक लाचार बीमार आदमी हू तभी फकीर साहब फौरन कोई और ही आदमी बन जाते थे। पीर बनने की गरज मे व अपनी रटी रटाई बत पढते हुए जडी बूटी लेकर मदान म उतर जात थे। सवा पाच आन पसे चाहिए। दरगाह की थान पर सिरनी चढाने के लिए य पस। वह फकीर साहब क्स समझ सकेंगे कि जोटन जिसका घर हिंदू पुरवा क पास था, तीज-त्योहारो म जो चिउडा कूट देती थी धान कूट देती थी नाखुश सा चेहरा बनाय सूखी टहनिया बटोरने जगल में चली जा रही है।

सूरज उठन को है। पेड पालो इतन घने कि सूरज के निकल आने के बाद बहुत दर तक वह दिखाई नहीं पडता। सूरज की रोशनी पेडो की डाली-टहनिया पर। पड-पाला बडे घने सटे हुए। जोटन दोना हाथा से झाड-झकार लतर पतर हटाती हुई अदर जा रही है। बहुत-सी कब्रो को पार कर वह नहर के किनार उतर आई। इसके बाद ही सरकडो का जगल। इस समय क्वार कार्तिक के दिन है इसलिए पानी के कछव जमीन पर उठ आएगे। अडे देंगी। इस इलाके म कोई गाव-खेत नही घनखर नही हिंदू पुरवे नही—जहा खेता म उतर कर वह घोघे के खोल के जरिये कट स धान की बाली काट लेगी अडे लेकर ठाकुरबाडी पहुचाएगी। अडो के एवज म पान-सुपारी माग लेगी। यहा इस बियाबान मे महज गाछ और बिरछ जोटन का मन कर रहा था कि फकीर साहब को सुना-सुना कर जोर-जोर से रोवे। फकीर साहब अब नाव नही खे सकते। फकीर साहब धीरे धीरे ,पटकने चल जा रहे हैं। फकीर साहब न कुरर पछी पकडने के लिये एक खाची लगा रखी थी। कुरर पछी का कलजा खाने पर बदन म कूवत लौट आ सकता है।

लौटते ही जोटन अपने पीहर घूमने जा सकेगी। सोचते ही मन प्रसन्न हो उठा। और मन प्रसन्न होते ही उसने मानो दो गोरे गोरे पर देखे। सरकडे के जगल म दो गोरे गोरे पर कितने सुडोल मानो दुर्गा देवी के पर हो। उसका दिल काप उठा। परो पर धूप झिलमिला रही है। एक पतिगा वही स उडकर बार-बार उन परो पर बठ रहा है। ऊपर की टहनी-पत्तिया के हिलन स परो पर छाया भी आ पडती। पतिगा तब डरकर उड जाता। इस धूप और पत्तियो की छाह म उसे या लग रहा था परो मे पेंजनियो की झनकार ज्यो जल्दी-जल्दी वन म बिला जाती है उसी प्रकार की एक ध्वनि जोटन के सीन के भीतर गजती हुई जाने किस अथाह मे डूबती जा रही है। जोटन ने देखा दोना पर इस समय वाकई दुर्गादेवी के बन गए हैं। मानो वह गौरी हो शिव के लिये वनवास आकर सरकडा के वन मे छिप गई है। या चत के महीने म नील के उपवास म गौरी नाचती है, नाच की मुद्रा मानो उन परो मे मचल रही है। आखें फाड फाड कर जोटन यह सब देख रही है और तय नही कर पा रही है कि अब क्या करे। उस सामने बढने की हिम्मत नही पड रही। किसी युवती कन्या के पर दिखाई पड रहे हैं। केवल दो पर बाकी शरीर सरकडो के जगल मे। शायद कोई कत्ल खून हो। लेकिन इस दरगाह मे पीर के थान पर किसकी ऐसी हिम्मत जो कत्ल कर डाल। कापती हुई जोटन ने दोनो हाथो से सरकडो के वन को दो तरफ किया करत ही देखा नदी जल म प्रतिमा विर्साजित करने पर दस हाथ वाली दुर्गा का बुत जसा चित पडा रहता है वसे ही मालती हाथ पर पसारे चित पडी है। मानो असुरनाशिनी हो। मा जननी तू ऐ मालती तू ऐसी अटाचित पडी है। बाल खडे कर आखें बिलट कर पडी है। तुझे कौन ले आया। मा-सी ही वह सिरहाने बठ कर उसका सिर अपनी गोद म रख लेती। छाती मुख और शरीर के जहा भी जो कुछ पुष्ट है सब कुछ टटोल कर देखा नही प्राण है। सिफ होश नही रहा। तुन्नी के नीचे जाने कौन लोग रात भर नोच-खसोट कर चचोडत-खाते रह हैं। मुर्दा सोच जाने कौन लोग मालती को छोड कर चल गये हैं। शरीर के कही कही दात के दाग। खून के दाग। वह फिर ठहरी नही। मानो कोई घोडा बाटूट दौड रहा है इस तरह जोटन जगल के भीतर दौडने लगी। और गुहारने लगी, फकीर साहब, ओ फकीर साहब आकर देखिये भी पीर के थान पर क्या हो—हवा गया है। झटपट कीजिए फकीर साहब। सरकडो के जगल म जाने कौन लोग दुर्गा का पुतला

विसर्जित कर गये है। जैसे दो छलाग मे वह लपक कर आई थी फकीर साहब को इत्तला करने, उसी प्रकार दो छलाग मे अपने छप्पर के नीचे से एक धारीदार साडी निकाल बोली, आइए, आप मेरे पीछे-पीछे आइए।

जोटन ने जरा दूर खडे होकर कहा, क्या दिखाई पडता ?

दो पैर दिखाई पडते हैं।

किस के परो की तरह ?

—दुर्गा के पुतले के परो की तरह।

—तो फिर आप ठहरिये। कहकर जोटन खुद पहले सरकडो के जगल मे घुसी और उसने उस धारीदार साडी से मालती को ढक दिया। फिर सरकडा को दो तरफ करके इशारे से बुलाई आइए, आप सिर की ओर पकडें। मैं पर पकड लेती हू।

ऐसी जबरदस्त लहास को ढोकर ले जाने म दोना को काफी तकलीफ हो रही थी। थोडा-सा आगे बढ कर ही वे घास पर लिटा दिये। फिर उठा कर ले चले। फकीर साहब ने कहा बीबी तो फिर आपकी दुर्गा प्रतिमा दरगाह मे ही आ गई। अब गाव देश जाने की जरूरत क्या रह गई।

जाटन हाफ रही थी। वह कोई जवाब नही दे सकी। उसके हाथ इस समय खून या किसी लसदार वस्तु से लसलसा रहे हैं। पत्तियो और घास से उसको पोछ-पोछ कर फिर उसको ढो ले जान के लिये उठा रही है। बीच-बीच मे मालती का कपडा लतर-पतर काटो से उलझकर खिसक जाता। ऐसा पुष्ट शरीर कि थोडी सी हवा लगत ही कपडा उड कर सरक जाता। जोटन न फकीर साहब की ओर देखा। बाल पडी नहीं-नहीं, यह कोई अच्छी बात नही। अपनी नजर पेड-पालो पर रखिए इधर नहीं।

फकीर साहब बोले, मैं तो फकीर आदमी हू, मेरी नजर मे कोई ऐब नही।

जोटन बोली, आप मद हैं। आपकी आखें अब पेड-पौधे परिंदे देखा करें।

—आपकी जब ऐसी ही मर्जी है कह कर फकीर साहब ने आखें मूद ली तो जोटन ने कहा, आपसे मैंने कहा क्या और आप क्या कर रहे है।

—क्या कहा आपने ?

—पड-पौधे-परिंदे देखने को कहा।

—वही देख रहा हू।

—आंखें बंद कर क्या देखा जा सकता है।

—खुली रखने से जितना देख पाता हूं बंद रखने से उससे ज्यादा देख पाता हूं।

—तो फिर खुली ही रखिए।

अब जोटन ने पुकारा, मालती, ओ मालती, देख भी तू कहां आ गई है। अल्लाह के बंदे के पास आ गई है। आंखें खोलकर देख जरा। मालती, मालती। कोई होश नहीं। इसलिये जोटन पानी ले आई और मालती के मुंह और आंख पर छींटे मारने लगी। होश लौट ही नहीं रहा है। यह धूप नहीं। पेड़-पौधे इतने घने कि घास पर ओस नहीं गिर पाती। तनिक और ले जाती पर उनका छप्पर है। मचान पर लिटा कर पीठ पर और कमर में गरम पानी का सेंक दे सकते ही बदन का दुख-दर्द दूर हो जायेगा। फिर उस विशल्यकरणी जैसे फूल का रस—जहां जो कुछ भी घाव-जख्म हैं और जहां कुछ कटा चिटा खून ऊन हो धो पोंछ कर लहसन के तेल में फूल का रस मिलाकर लगाते ही मालती फिर आंखें खोलकर देखने लगेगी

लेकिन फकीर साहब को कतई कोई जल्दबाजी नहीं। हो रहा है हो जायगा ऐसा ही बेलौस भाव। जरा सोचा भला कि इस सुनसान कब्रिस्तान में दुर्गा देवी कैसे आ गई। किसी के सान में न पांच में फकीर साहब को कोई हड़बड़ी तलावेली नहीं। वे मालती को मचान पर लिटा कर अपना हुक्का ढूंढने लगे।

—यह कोई हुक्का पीने का वक्त है आपका?

—पानी तो गरमाइए। इस बीच जरा हुक्का पी लूं। हुक्का पानी से दिमाग दुरुस्त रहता है।

हुक्का पीने पर दिमाग दुरुस्त रहता है यह फकीर साहब का तकिया कलाम है। दिमाग की बात नहीं। शायद यह सच है ऐसा ही। हजारों मुसीबतें आन पड़ें फिर भी इस शख्स का दिमाग गरम नहीं होता। बड़े आराम से बलाग बेलौस बैठे हुक्का गुड़गुड़ाते हुए उसने हांक लगाई क्या जी, आपका पानी गरम हुआ?

बरतन भांड सामान-असबाब कहने को जोटन के पास चार पतीलियां एक पीतल का बधना और एक टूटा आईना। चार बड़े-बड़े मटके हैं मद्दगन भिगोने के लिए। बरसों फकीर साहब मटका भर पानी ला देते थे। जोटन बधने में पानी ला रही है। बरसात में पानी कोई ज्यादा दूर नहीं। दफ्तर से जरा नीचे उतार कर हो पाता। चूल्हे पर पानी गरमाने पर जोटन ने कहा इधर अब मन आइएगा।

—क्या। फकीर साहब ने हुक्का पीते हुए कहा।

—क्या क्या ? क्या खालवर भी बनाना पड़ेगा।

—दुर्गा देवी को खोलकर तो क्या आप अकेली ही देखेंगी।

जोटन ने इस बात पर कान नहीं दिया। इस शख्स की आदत ही ऐसी है। सब कुछ जानेगा बूझेगा और इतना ईमानदार आदमी है फिर भी जाने क्या यह आदमी, क्या होगा देखने पर मैं तो फकीर आदमी हूं मेरे लिये सब बराबर है—ऐसा ही कुछ कहेगा।

जोटन ने सारा शरीर गरम पानी से अच्छी तरह धो दिया। सब धो-पोछ कर जोटन ने मालती को फिर से विधवा मालती बना देना चाहा। ससार में चाहने पर ही सब कुछ नहीं हो जाता। सब कुछ चाहना भी नहीं चाहिये। जाने क्यों जोटन को मालती के लिये एक सुंदर नौजवान का चेहरा याद आ रहा था। जाने कब से मालती इस जिस्म का महसूल अदा नहीं कर रही है—इस जिस्म को बड़ी तकलीफ है। गुनगुने पानी से बदन धोते वक्त जोटन मन ही मन बहुत सारी बातें कह रही थी। कितना गदराया हुआ जिस्म है। जोटन हाथ से मालती की कमर पर थपकी दे रही है। उसे पट लिटा कर मालती की कमर पर पानी उडेल दे रही है। दाहिनी ओर बैठ कर धीरे धीरे पानी ऊपर से उडेलती थपकी मार-मार कर मालिश करती हुई रात भर वहशियों के नोच-खसोट से बिसाये हुए बदन को थपकियां मार मार कर जोटन झाड़ दे रही है।

मालती को ऐसा लगा कोई उसे एक बड़े जलाशय में तराय रखा है। बदन पर कोई कुछ लेपता जा रहा है। लग रहा था नाजुक हाथ हैं, प्यार भरे हाथ हैं—लेकिन आखें खोलने की उसे हिम्मत नहीं पड़ रही थी। मानो ताकते ही उन नर पिशाचों की सूरतें दिखाई पड़ जायेंगी। फिर भी भाग खड़े होने के लिये वह हड़-बड़ाकर उठ बैठी तो जोटन चिल्ला उठी, फकीर साहब आइए। आकर देखिये मालती के होश लौट आये हैं।

मालती ने आंखें खोलकर देखा जुटी उसे पकड़े बैठी है। कुछ कहने को होकर मालती का चेहरा क्लेश से बेकल-सा हो गया। वह बोल न सकी। मचान पर वह मानो कितने दिन रेगिस्तान में बिताने के बाद एक नखलिस्तान में आ पहुंची है। मालती को फिर गश आ गया।

जोटन ने अब फकीर साहब से कहा, पेट बिलकुल पिचक गया है।

—क्या देंगी खाने को ?

—तनिक दूध लेते आइए। गरमा दू। अगर पी ले।

फकीर साहब ने देर नही लगाई। दूकरा पी लेने के बाद कितने ही सारे सवाल आ धमके हैं। पहली बात, कौन से लोग इस युवती को यहां फेंक गये ? कब और कितने थे ? तरह-तरह के सदेह सिर उठाने लगे। मालती अपने घर लौट जायगी या नही, थाना पुलिस आदि कितने ही बवाल इसके पीछे हैं। व फकीर आदमी हैं। यहा कितने ही दिनो से हैं। ऐसी घटना यहा कभी नहीं हुई। लेकिन एक साधू आया था, उसके साथ एक भरवी थी। इस दरगाह मे कई रात उस्ताद की दावत उडाकर जब काफी सरगर्मी पदा हुई तो भरवी तिलकचद के साथ भिड गई। थी भैरवी, बन गई पदमदीघी के छोटे बाबू की बहूरानी। इसके बाद साधू बाबा एक ऊचे दरख्त की ऊची डाली पर फासी लगाकर मर गय। छोटे बाबू सिर पर थे तो उस दफे फकीर साहब थाना पुलिस के चगुल से बच गये थे लकिन अब इस बार ? फकीर साहब काफी घबराये। फिर भी मुह खोलकर उन्होने कुछ भी नही कहा। पानी हल कर बाग के उस ओर अपनी दो बकरियो का दूध दुहलाने के लिये चले गये। पानी हल कर दूसरी ओर जा पहुचेंगे।

जोटन मालती का सिर अपनी गोद मे लिये बैठी रही। वन म टिटहरी बोल रही है। नीचे वही जल और सरकडो का जगल। जितनी दूर आखे पहुचती हवा से सरकडो का जगल झूम रहा है। शरद की धूप पछी परेवा की तरह उडलर इस दरगाह मे इस समय नाच रही है खेल रही है। पानी मामूली हवा। कितने ही प्रकार के लाल-नीले फतिगे उड रहे हैं। कितने ही प्रकार के विचित्र कीट पतगो के शब्द सुनाई पड रहे हैं और कितने दिन पहले उसकी सतान का इतकाल हो गया था इसी कब्रिस्तान मे अब वह सतान पत्थर बन चुकी है। मानो मिट्टी खोदते ही वह सतान निकल आयेगी। सब कुछ भूल कर जोटन मा की तरह मालती के चेहरे पर हाथ सहलाने लगी। सतान स्नेह से जोटन की आखें भर आइ।

मणीद्रनाथ इतने बडे राजमहल जसी हवेली में दाखिल होते ही मोटे तौर पर स्वाभाविक व्यक्ति हो गये। इस समय व सोना को लेकर कचहरी-बाडी के आगन म टहल रहे हैं। भूपेंद्रनाथ न अपने सदूक स धोती निकाल कर दी है और कुरता खोलकर खुद ही पहना दिया है। लबी डील और गठे शरीर के कारण सभी कपडे छोटे लग रहे हैं। रामप्रसाद न देखभाल का जिम्मा ले लिया है—कहा किस ओर अकेले निकल जायें इस पर रामप्रसाद निगरानी रखे हुए ह। मणीद्रनाथ बस बोल भर नही रह हैं। वर्ना देखकर लगता वे प्रवास-जीवन से लौट आये हैं। इस मनारम जगत म सोना का हाथ थामे टहलते रहने की बस उन्ह इच्छा है।

उत्सव गह। नाते रिश्तेदार लोग-बाग आते ही जा रहे हैं। नदी के घाट पर कितनी ही नावें बधी है इस वक्त। ढाक-ढोलक की आवाज नदी के जल म तिरती चली जा रही है। ताऊजी का हाथ पकडे खीचते हुए सोना नाटमदिर पार कर आया। वह मन ही मन कमला को ढूढ रहा है। कहा है कमला? इतने बडे मकान म कमला को ढूढ निकालना मुश्किल है। वह ताऊजी को मोर दिखान ले जा रहा है। बाबुओ का एक छोटा-सा चिडियाखाना है। दो छोटे छोटे बाघ हैं हिरन हैं, मोर हैं और कछुवे हैं। ताऊजी को वह बाघ दिखान ले जा रहा है। कमला साथ होती तो बेहतर था। कमला न उसके साथ दोस्ती कर डाली है। हरदम वह कमला को अपने निकट पाना चाहता है।

कमला के लिए वह चारो ओर देखने लगा। बरामदा पार कर गया। बडे-बडे हाल रूम पार कर गया। चीन्हें अनचीन्हें लोगो के बीच से वह चला जा रहा है। ताऊजी केवल उसका पीछा कर रहे हैं। सिर के ऊपर वही झाड फानूस। एक गौरैया धतूरे फूल की शक्ल के काच के पात्र म फर फर उड रही है। और अब दस बजन मे देर नही। बडेदा मझलेदा जान कहा रहते हैं। वे बडे बाबू के मझले बेटे के साथ बदूक लेकर कहीं झील म बत्तख मारने गए हैं। कमला उस कही भी मानो ढूढे नहीं मिली। वह ताऊजी को खीचते-खींचते बावडी के भिड पर ले आया। ताऊजी स उसने कहना चाहा—हम लोग एक नई जगह चले आय हैं। यहा बडी नदी है शीतलक्षा जिसके कछार पर कास का जगल बावडी के किनारे चीता हिरन मोर दूर फीलखान का मैदान झाऊगाछ नदी किनारे पामवक्षो की कतार और दूर चले जाओ तो बाबुओ के कितन ही साझेदार और उनकी दुर्गा-पूजा—ताऊजी अभी जिसे देख रहे हैं वह एक मोर है। देखिए-देखिए। वह ताऊजी

को लेकर मोर के पिंजडे के पास बठने की सोच रहा था कि चद्रनाथ बावडी क भिड पर सनसनाते लौट आ रहे हैं। अपने बाप को देखकर सोना ताऊजी क पीछ छिप गया। चद्रनाथ जमींदारी मे उगाही वसूली के लिय निकल गया था इसलिए य दो दिन इधर आ नही सका था। आज ही नाव स जमीदारी क्षेत्र स लौट आया है। सोना ताऊजी को बाहर ले आया है सब कुछ दिखान के लिय। सोना मानो कितना अनुभवी और प्रवीण है और ताऊजी उसी का हाथ थामे चल रहे हैं एसा ही एक अदाज है उसका। दूर पीलखाने को पार करत ही आनदमयी की काली बाडी है, बाजार हाट है। और रात को वह अजीब सी आवाज डायनोमो चलने की। उसकी इच्छा थी कि वह सब कुछ दिखान क बाद जिस कमरे म डायनोमो है उधर ताऊजी को ले जायगा। लेकिन बाबा को दखते ही वह डर गया।

जमीदारी स लौटते ही चद्रनाथ ने सुना कि सोना इस बार पूजा देखन आया है। चद्रनाथ नदी की कछार पर चल रह थे। वह सोना का मुख देखने के लिए व्याकुल हो उठे। बावडी के किनारे पहुच कर देखा—बडेदा मणीद्रनाथ अकेले मोर के पिंजडे के सामने खडे है। मणीद्रनाथ को दखकर चद्रनाथ को शुरू म बडा आश्चय सा हुआ। यह पागल व्यक्ति अकेला यहा खडा है। और वे आये भी तो किसक साथ। मझलेदा ने कहला भेजा था कि सिफ सोना आया है। इसलिए उन्होने मणीद्रनाथ को देखने की आशा ही नही की थी। चद्रनाथ अपने दादा की ओर चल पडा। नजदीक जाते ही देखा सोना बडे दा के बदन के साथ सटकर खडा है।

—सोना तुम यहा ?

—ताऊजी को मोर दिखाने ले आया हू।

—लालटू पलटू कहा हैं ?

—व चिडिया मारने गये हैं।

पूजा की छुट्टियो म बाबुओ के बेटे शहर से आ जाते हैं। व बदूक लेकर पछी शिकार की शगल मे लग जात हैं। सोना को देखत ही चद्रनाथ अकुलाने लगा। यह बच्चा अपनी मा पर गया है। इस वक्त मानो वही मा यानी दूर के एक गाव म बडी-बडी आखो वाली धनबहू राता दिन गिरस्ती के लिय मेहनत मशक्कत करती जा रही है। दूर क गाव म कोमल और सुन्दर जननी का एक मुखडा चद्रनाथ की आखो में तिर आन पर उसने सोना को बाहो मे भरकर दुलारना चाहा। बोला आ जा तुझे गोद म लें लू।

सोना ताऊजी से और भी चिपट गया। उसने गोद में उठना नहीं चाहा। क्योंकि सोना के लिए यह पागल आदमी चंद्रनाथ से अधिक निकट है। अपने पिता से उसकी कभी-कभार ही मुलाकात होती है। ज्यादातर रात को ही पहुंचते हैं। ज्यादा रात में। सोना को पता नहीं चलता। सबेरे वह देखता मां बिस्तर पर नहीं हैं। बाबा उसे गोद में समेट लेते हैं। सोना शुरू में छोटी छोटी आंखों से मुलुर मुलुर देखता, फिर आंखें पूरी-पूरी खुल जाने के बाद वह समझ जाता कि उसके बाबा प्रवास से लौट आए हैं गन्ना या अनन्नास जिस मौसम का जो हो ले आए हैं। सोना उस वक्त चुपचाप नए बच्चे की तरह लेटे रहने पर बाबा उससे कितने ही तरह की बातें किया करते हैं अब उठो, उठकर मुंह-हाथ धोओ पढ़ने बैठ जाओ। पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब—ऐसी ही सारी अच्छी-अच्छी बातें श्लोक सस्कृत में, धर्म-अधर्म की बातें सूर्य-स्तव आदि। फिर यह जो अगल पेड़-पौधे फूल, मिट्टी और कछार पर पीपल का पेड़ सुनहरे रेत वाली नदी नदी की धारा सब कुछ मिल मिलाकर ही कदाचित् उसकी जन्म भूमि है। पिताजी उसे इस जन्मभूमि के बारे में जननी के बारे में, बड़े बूढ़ों के बारे में आचार-व्यवहार सिखाने सिखाने उसे पेड़-पौधे चरिन्दे-परिन्दों के बीच में ले जाते—सोना को तब लगता कि बाबा के हाथ में अलादीन का दीया है वह जो कुछ भी चाहेगा बाबा उसे ला दे सकते हैं। इस कारण चंद्रनाथ उसके लिए हमेशा जादू के देश का आदमी है।

चन्द्रनाथ सिर्फ सोना से बात कर रहा है, मणीन्द्रनाथ से नहीं कर रहा है, इस कारण शायद मणीन्द्रनाथ मन ही मन गुस्सा रहे हैं। भांपकर चंद्रनाथ ने कहा, आपकी तबीयत कैसी है? बड़ी भाभी की? यह सब कहना बेकार ही है। फिर भी कुशल क्षेम न पूछने पर, इतने बड़े एक व्यक्ति अभी तक मौजूद हैं इस संसार में हैं मानो न रहने पर बड़ा-सूनासूना-सा लगेगा इस व्यक्ति का कुछ सम्मान प्रदर्शित करना—मानो यह व्यक्ति मौजूद है तो सभी कुछ है। चंद्रनाथ ने अब सोना से कहा ताऊजी को पकड़कर तुम भीतर ले जाओ। जाने किधर को फिर भाग जायेंगे तब तुम उनको पकड़कर रख नहीं सकोगे।

सोना ताऊजी का हाथ थामे कचहरी-बाड़ी की ओर जा रहा था। चंद्रनाथ ने जाते जाते कहा, तुम पूजा देखने को चले आए तुम्हारी मां का दिल नहीं दुखेगा?

सोना बोला, मां ने ही तो मुझसे आने को कहा।

चंद्रनाथ ने बेटे के सिर पर हाथ रखा, रात को रोना मत।

सोना खामोश रहा। ताऊजी उसके पास शरीर कड़ा किये खड़े हैं। वे इस समय मकान के भीतर जाना नहीं चाहते। लेकिन चद्रनाथ चाहता है कि इन पेड़ पौधों के बीच और धूप में न रहकर सोना अन्दर कचहरी बाड़ी चला जाय। धूप निकल आई है। इस धूप में घूमने पर सोना की तबीयत खराब हो सकती है। और यह सोना जिसका मुख देखते ही बस धनबहू याद आ जाती है प्रवास में वह कितने ही दिनों से अकेला है पूजा के इन दिनों में चल जा सकने से दिन मनभावन हो जायेगा, सोना का मुख देख चद्रनाथ घर जाने के लिये मन ही मन व्याकुल हो उठा है। अब बरसात का मौसम रहा इसलिए जब तब घर जाना सभव भी नहीं। जाने पर नाव से जाना पड़ता। सूखे दिनों में जमींदारी में निकल रहा है ऐसा कहकर तीन दिन का काम एक दिन में निबटा कर वह घर चला जाता है दो रात घर में बिताने के बाद वह कचहरी-बाड़ी लौट आता है। जमींदारी में उगाही वसूली के बहाने चोरी छिपे चले जाना। कोई छुट्टी उट्टी नहीं मिलती। बाबुओं की मर्जी, जाओ दो दिन की छुट्टी। फिर शायद छह महीने फुरसत ही नहीं निकाल पाता चद्रनाथ। भूपेंद्रनाथ छोटे भाई की सूरत देखकर सब कुछ ताड़ लेता और बाबुओं से कह सुनकर छुट्टी दिला देता। इसके अलावा जमींदारी में दौरे के बहाने जब चद्रनाथ घर आ जाता तब काफी रात हो जाती है गहरी रात। दिन को अपना काम खत्म कर दिन ढले वह घर की ओर पैदल चलने लगता। दस कोस रास्ता दनदन चलकर चद्रनाथ चला आता। गहरी रात को कुंडा खड़काने पर धनबहू को पता चल जाता कि इस आदमी से अब रहा नहीं जा रहा है चला आया है। धन-बहू खुद भी कितनी ही रातें बिना सोए गुजार चुकी है, क्योंकि धनबहू नहीं बता सकती कि चद्रनाथ कब आयेगा। दरवाजे का कुंडा खड़कते ही दिल खुशी से बल्लियों उछल पड़ता। बहुत चुपके चुपके कहीं सोना को पता न चले पता चलते ही उठ जायगा, सोएगा नहीं रात भर बाबा उसके लिये क्या लेता आया है और लालटू अपने तख्त से उठकर बाबा के पास सोना चाहेगा। इसलिये धनबहू अक्सर चुपके से दरवाजा खोल देती है। हाय चद्रनाथ बावड़ी के किनारे चलते समय सोचने लगा धनबहू बेशक रात को घाट पर बरतन माजते समय अन्यमनस्क होती जा रही होगी। दूर अंधेरे में लग्गी की आवाज सुनते ही कान पसारती। शायद वह आदमी नाव से नदी की कछार पर उतर आ रहा हो। धनबहू अब खुद ही मानो प्रतीक्षा नहीं कर पा रही है। रात को खिड़की पर मुख रखकर जागती

बैठी है। शायद अभी दरवाजे का कुडा खडक उठे चुपके से किवाड खोलते ही देख सकेगी, उसका पति चद्रनाथ मजबूत काठी का मद घनी मूछें और भाटे जसी आखें लिये बरामदे मे खडा है। उसका पति भागकर सहवास करने चला आया है। हाथ पैर धोने का पानी और अगोछा देकर धनवहू केवल पूछती चद्रनाथ क्या खायगा ? चद्रनाथ पत्नी की ओर दखते हुए कुछ कहता नही। सिफ लालटेन की रोशनी मुख के पास ले जाता। धनवहू का मुख देखत देखत गोया जान क्या कहना चाहता है। कह नहीं पाता। तब धनवहू सब कुछ समझकर मधुर-मधुर मुस्काती।

जाने क्या-कुछ सोचने लगा वह। चद्रनाथ ने अब मणींद्रनाथ से कहा, वक्त पर नहा लीजियेगा। वक्त पर खाइयेगा। भाग-दौड करने पर बाबू लोग नाराज होंगे।

मणीद्रनाथ फिर ठहरे नही। सोना का हाथ छोडकर चलने लगे। सोना ने कहा बाबा जाऊ ? कहकर उसने बाबा की सम्मति के लिये प्रतीक्षा नही की। उसने लपककर ताऊजी को जा पकडा।

सोना ने जाते-जाते कहा, ताऊजी आज मैं आपके साथ नहाऊगा आपके साथ खाऊगा। सोना ने और फिर कहना चाहा, यह जो बावडी देख रहे हैं, इस बावडी को पार करने पर बाघ है, बाघ का बच्चा है। सोना का इस वक्त जी कर रहा है उस चिडियाखाना जाने के लिये। उसने उनको खीचते-खीचते ले जाकर बाघ पिंजडे के सामने खडा कर दिया। चीता के दानो बच्चे चू चू दूध पी रहे हैं। दोनों बाघो ने कान खडे कर लिये और मानो मणीद्रनाथ और सोना को वे देखने लगे। दाहिनी ओर चले जाने से छोटा-सा एक जलाशय, जिसके चारो किनारे लोहे की रेलिंग और जलाशय मे मगरमच्छ। शीतलक्षा के जल मे मगरमच्छ का बच्चा भटक आया था। गोला बनाकर मछलियो के लिए डालियो टहनियो और घास के भीतर सडे सेंवर की एक जमीन बनायी गई तो मछली खाने यह मगर मच्छ अदर घुसा और उस गीले मे फस गया। तभी से इस छोटे से मगरमच्छ के लिये यह जलाशय बना। लालटू पलटू ने बाघ हिरन, मोर के किस्से सुनाये हैं लेकिन मगरमच्छ के बारे मे कुछ भी बताया नहीं था। कल आकर ही वे मगरमच्छ देख आए हैं। सोनो उस समय अमला-कमला के साथ छत पर चढ़कर तारे देख रहा था—रात को कचहरी बाडी मे यही सारी बातें। चिडियाखाने मे इस बार

एक मगरमच्छ आया है। वह ताऊजी को, मानो ताऊजी कोई नाबालिग हो, सोना सयाना हो वह चलता जाता है और कितनी ही बातें कर रहा है बाघ क्या खाता है मोर कब पख फला देता है हिरन क्या-क्या खाना पसन्द करते हैं बानुओ के य हिरन कहा से पकड लाये गये हैं—इतने दिनो से वह जो कुछ सुनता रहा वही नानी की तरह एक एक कर बताता जा रहा था।

सहसा मणीद्रनाथ बाघ के पिंजडे के पास खडे हो गये। और सीखचे पकडकर हिलाने लगे। सोना ने तुरत ताऊजी को डराया ताऊजी बाघ आदमी खा जाता है। शरारत करने पर बाघ टूट पडेगा। सोना की बात सुनकर मणीद्रनाथ हा-हा कर हसने लगे। फिर छत की ओर देखकर सहसा खामोश हो गये। इतनी दूर से भी सोना न पहचान लिया, छत पर अमला खडी बाल सुखा रही है।

मणीद्रनाथ ने अब सोना को कधे पर उठा लेना चाहा। सोना ताऊजी के कधे पर नही चढा। बोला आइये देखा जाय कौन पहले पहुचता है। कहकर सोना भागने लगा और देखा कि पागल आदमी दौड नही रहे हैं। छत की ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं। अमला के बाल सुनहले रग के। आखें नीली। अमला को देखकर ताऊजी निश्चल से हो गये। और आश्चय है कि यह आदमी तभी से यथार्थ में चगा हो गये। सोना के बदन पर तेल लगाया और नहला दिया उन्होने। एक साथ खाने बठे। सोना की मछली से काटा निकाल दिया। और तिपहर को हाथ पकडकर नदी के किनारे घुमाने ले गये।

और तभी सोना ने देखा एक लैंडो गाडी आ रही है। दो सफेद घोडे। अमला कमला हवा खाने निकली हैं। उन लोगो ने सोना को देखकर कहा चलोगे सोना?

—ताऊजी को लो तो जाब।

उन लोगों ने गाडी रोकने को कहा। ताऊजी सवार हुए तो सोना ने अमला के साथ उनका परिचय कराया। फिर ताऊजी की ओर देखकर कहा मेरे बडे ताऊजा। कलकत्ते म नौकरी करते थे।

वे सफद सिल्क के फ्राक पहने हुए हैं परों म सफेद मोजे केडस। मणीद्रनाथ का कुरता सिल्क का और धोती धुली हुई सफेद जूते। सोना की कमीज सुनहरे सिल्क की और सफेद पट। परा म रबड के जूते। दो सफेद घोडे उनको इस वक्त नदी के किनारे किनारे हवाखोरी के लिये ले जा रहे हैं। सोना ने घाट पर देखा, नाव पर बठा ईशम मछली पकड रहा है। उसने चिल्ला कर कहा, ईशम दादा।

चलिएगा ? हवा खाने चलिएगा ?

सोना के पास छोटे-बडे का कोई भेद भाव नही रहा। मानो इस गाडी पर सवार हो सभी लोग हवा खाने जा सक्ते हैं। उसने कहा, ताऊजी, चलिएगा फील-खाने के मदान म, आपको हाथी दिखाऊगा ? कमला तुम चलागी ?

अमला बोली, मैं भी जाऊगी। कमला, तू मैं और सोना। उसने अब पागल आदमी को देखा, देखते-देखत बोली, आप चलियेगा ? लेकिन उन्होने कोइ बात नही की तो अमला ने जोर-जोर से कहा, चलियगा आप हाथी देखने ? कल हम लैंडो म चढकर हाथी देखने जायेंग। काली बाडी जाऊगी। नदी की कछार पर उतर जाऊगी। चलियेगा।

अमला की इतनी कोशिश के बाद भी मणीद्रनाथ नही बोले। यहा तक कि वे आज गत्‌चोरेत्‌साला तक नही बाल। सिफ नदी मैदान और कासफूल दखत देखते बार-बार अमला को निरखत रहे। अमला अपनी मा की सूरत पर गई है। अमला की ओर देखकर मणीद्रनाथ मानो बच्चे की तरह रूठे बठे हैं।

क्वार का सूय नदी के उस पार ढल रहा है गाडी आग बढ रही है। घाड के परो की टाप। ठक्‌ ठक्‌। बड ही ताल-लय स दाना घाडे दोड रहे हैं। सोना ने जाने कब कहा ऐसे ही दो सफेद घोडा को गाडी खीच कर ल जात हुए देखा है। जोरा की बफ गिरा है पेडो पर पडो के पत्ते झर चुके हैं चारो ओर बफ के पहाड बीच म वाला में माग जसो एक पगडडी। किसी ने उस इस तरह स कही के राजा रानी की एक कहानी सुनाई थी। सोना और मणीद्रनाथ एक तरफ अमला कमला दूसरी तरफ। तरह-तरह के पछी नदी पार कर उडे जा रहे हैं। दूसरे तट के लोग प्राय दिखाई ही नही पडत। नदी म पानी धीरे धीरे उतरता चला जा रहा है। उस पार के लाल इट वाल मकान सोना का तसवीर जस लग रह थे। वह कितने ही तरह की बातें करना चाहता है। उसे याद आया कि वह रोशनी जलाने वाला आदमी लबी सी पोशाक पहनकर बत्तिया जलाएगा। यह आदमी सोना को बडा भला लगता ह। मझल ताऊ से यह शख्स यमराज-सा डरता ह। भेंट होत ही आदाब करता। सिर झुकाय खडा हो जाता। उसकी पीठ पर फटी कमीज क भीतर से उसका शरीर कितना मरियल है जाना जा सकता ह। शाम होत ही वह उस कल का चालू कर देता ह। भट भट शब्द होने लगने ही सारे मकान म जादू की तरह लाल-नीली बत्तिया जलने लगती।

उस आदमी ने सोना से कहा है कि रोशनी जलाते समय जादू का वह कल वह उसे दिखाएगा। उसका नाम है इब्राहीम। सोना के सबेरे उठते ही उसने एक आदाब दिया है। सोना ने देखा है कि इस हवेली के कायदे-कानून ही अलग हैं। सुबह होते ही जितने सारे नौकर थे सोना को देखकर आदाब बजाये थे। तोशाखाना के सारे नौकरों ने आदाब बजाया। यह बड़ी अनोखी दुनिया है। ताऊजी को देखकर लोग दूर से आदाब करते हुए चले जा रहे हैं। इब्राहीम का शरीर कितना झुक-सा गया है। आदाब करते वक्त उसे और झुकाना नहीं पड़ता। जात्रा गान में सोना ने एकबार औरंगजेब का अभिनय देखा था। सोना के तईं यह व्यक्ति उस बादशाह के समान है। सफेद दाढ़ी नाभि तक उतर गई है। इस आदमी के कब्जे में इतनी बड़ी हवेली है—फिर अंधेरा भी। सोना को यह आदमी महाभारत की भूमि का लगने लगता। इस व्यक्ति में अमित तेज है। उसके हाथों में जादू की छड़ी है यंत्र से छुवाते ही छूमंतर सा बोलने लग जाता है। वह बीच बीच में चिल्ला उठता कमला की तुकबंदी भी फूंक दिया मंतर-बात करेगा जंतर। गाड़ी में बैठकर उसने देखा कि दिन ढलता जा रहा है। लौटने में देर हो जाने पर इब्राहीम उसके लिए इंतजार न कर उस करिश्मे वाले कमरे में जाकर बैठा रहेगा। सोना ने कमला से गाड़ी जल्दी भगाने के लिए कहा।

कमला बोली गाड़ी तो चल रही है।

—हम लोग लौट जाएंगे कमला। सोना भरसक कमला की तरह बोलने की कोशिश कर रहा है। बोलना बहुत ज्यादा मुश्किल नहीं। बस किताबी भाषा बोलना पड़ जाता है। फिर भी लहजा दुरुस्त नहीं रहता कमला अमला दोनों चुपके-से मुस्कुराती। उसने सोचा अबकी से बड़ी ताई की बातों को याद रखने की कोशिश किया करेगा।

सोना कह सकता था न लौट जाने पर बत्तियां नहीं जलेंगी। क्योंकि इब्राहीम ने कहा है मेरे पहुंचने पर ही वह बत्ती जलाएगा।

कमला बोली तुम हम लोग छत पर न चलोगे। वहां से अच्छा देख सकेगा।

अमला बोली हम लोग आज छत पर लुका छिपी खेलेंगे। तू आएगा सोना।

अमला सोना को देख रही थी। सोना का चेहरा सुन्दर, कितनी हसीन आंखें और कितनी मिठास भरी बोली मां द्वारा वर्णित बायबिल का वह बालक, सफेद पोशाक में सोना कभी-कभी वैसा ही दीखता है। सोना को थोड़ी-सी खुशी होते

ही उमग क मारे उसकी समझ म नही आता कि वह क्या करे। वह घोडो का भागना देख रहा है घोडो का घास चरना देख रहा है। गाडी रोक कर वे नदी के किनारे कुछ देर बठे रहे। इस तरफ गज जसा ही इलाका है। कितन ही सारे लाग चल जा रहे हैं। अमला कमला का देखकर वे लोग सम्मान मे सिर झुकाते हुए चले जा रहे है।

इसके बाद धीरे धीरे यह गाडी एक मदान म जा पहुची। मणीद्रनाथ चुपचाप बठे अब तक नदी के दोनो तट देख रहे थे। अब मदान देख रहे हैं। और मुड मुड कर अमला को देख रहे हैं। मानो उनकी पलिन हो—बचपन की पलिन—क्या ही सुदर नाक-नक्श। धीर स्थिर मणीद्रनाथ ने अमला को दुलारने के लिए उसके सिर पर हाथ रखा तो वह डरन लगी। सोना बोला, कोई डर नही अमला। मेरे ताऊजी कभी किसी से कुछ कहते नही। कुछ नुकसान नही पहुचाते। और ताज्जुब है कि यह कहते ही वह आदमी सलीके स बठ गया। व सब तीथयात्रा म निकल हैं—मणीद्रनाथ के मुख का भाव एसा ही है। अमला किस्सा सुनान लगी कि बच पन म उनके लडो पर चक्कर इस मदान म पहुचते ही कुहरा उतर आया था। उन दिनों इब्राहीम लडा चलाता था दोनो घोडो को उसने घास चरने को छोड दिया था। गाडी स उतर कर अमला-कमला मदान मे भागदौड रही थी। लेकिन सहसा कुहासा घिर आन से इब्राहीम को दोना घाडे ढूढे नही मिले। जाडे के दिन थ। दोना लडकियो को दो कधा पर बिठाकर लौटते समय इब्राहीम न देखा था कि एक वद्ध रास्ता रोके खडा है। वृद्ध के हाथ म लाठी थी। मझले बाबू का फ्लूट सुनने की गरज स वह अपन गाव देश से निकल पडा था। अमला के बाबा क्लारिओनेट बहुत बढिया बजाते हैं। वे अब यहा आए हैं रात को फ्लूट बजायेंगे। लेकिन कुहास मे व भटक गय थे सो इब्राहीम उनका हाथा से पकड कर ले आया था। और आश्चय की बात है कि वह व्यक्ति एक माहिर क्वारिओनेट वादक था। मझले बाबू को अपने से बडा उस्ताद जानकर वह वहा आया था। लेकिन बाद को पता चला कि मझले बाबू न उस आदमी को नीचे वाली मजिल मे रोक रखा था। और उस उस्ताद मानकर सारे सुर-तान-लय—जो कुछ भी फ्लूट का रहस्य था जान लिया था। वह उस्ताद इतना बेहतरीन फ्लूट बजाता था कि वह बजाने लगता तो बेवक्त ही कास के वन म फूल खिलन लग जाते और सिर पर परिंदे उडने लग जाते। उस व्यक्ति ने अपना सब कुछ उडल दिया मझले

बाबू को। अपना कहने को कुछ भी नहीं रहा उनका। कुछ देने के लिए ही वह आया था लेकिन देखा कि मंझले बाबू के हाथ अभी गए नहीं। इतने बड़े घराने का इज्जतदार आदमी उसके हाथ हार जाएगा। यह सोचते ही उसे बड़ी तकलीफ हुई थी। उन दिनों रात दिन मझले बाबू उस आदमी के साथ रहते थे। नहाने खाने की भी फुरसत नहीं थी। और यह विस्मय की बात है कि वह आदमी सब दे दिला कर नदी के जल में उतर गया था उस आदमी के पास अब कुछ रहा भी नहीं था। वह दुखियारा आदमी था हाट बाजार में फ्लूट बजाया करता था सो भी बड़े बाबू के मझले बेटे ने ले लिया। अब उसके पास अहंकार करने लायक कुछ भी नहीं था। मानो वह अपना स्वर खो चुका था, सुर गवां चुका था। उसने अकेले नदी के किनारे किनारे चले जाना चाहा तो मझले बाबू ने कहा आखिर तुम इस बूढ़ी उम्र में कहां जाओगे भला ? रह जाओ। कौन सुनेगा तुम्हारा फ्लूट। तुमने तो कहा है कि तुमने मुझे जो कुछ दिया है वह अब हाट-बाजार में नहीं बजाओगे। तो फिर तुम्हें पैसे कहां से मिलेंगे। खाओगे क्या ?

खालिक मियां शुरू में सही जवाब न दे सका। बाद में उसने कहा, जो हुक्म है हुजूर। हुजूर के लड़ो में आकर जो बैठ गया तो फिर हिला ही नहीं। आंखों से न सूझने पर भी गाड़ी पर चढ़ बैठने से खालिक मियां अकेले ही सौ के समान हैं। इस समय खालिक का लड़ो हवा से बातें कर रहा है।

नदी के उस पार सूर्य अस्त हो रहा है। अब धीरे धीरे बांस के पत्तों पर जुगनू आ पड़ेंगी। नदी में जो नाव है उनकी लालटेन एक एक कर जल उठेंगी। नदी किनारे पहुंच कर ही लड़ो मुड़ गई। सूर्यास्त के कारण नदी के किनारे कछार और मैदान पर ललौंछ-सी। लड़ो में बैठे लोगों के चेहरे पर भी वही लालिमा। सूर्यास्त होते ही अंधेरा फिर सिर पर नीला आकाश। शरत् के आकाश में चांदनी छिटकने पर शायद झाऊ के नीचे लड़ो जा ठहरेगा। पागल आदमी मणींद्रनाथ तब लड़ो से उतर जाएंगे।

उन लोगों के झाऊ गाछ के नीचे पहुंचते-पहुंचते अंधेरा छा गया। घोड़े अब दुलकी चाल चलने लगे हैं। अब और सरपट नहीं भाग रहे हैं। क्योंकि वे हवेली के पास नीले रंग के मैदान में आ गए हैं।

मणींद्रनाथ के उतर जाने के बाद अमला बोली तुझे याद तो रहेगा सोना ?

सोना ने गर्दन हिलाकर जताया कि उसे याद रहेगी। छत पर चांदनी छिटकेगी

तब वह अमला-कमला के साथ लुकाछिपी खेलेगा। ढाक का बाजा बजेगा, ढोलक का बाजा बजेगा और व छत पर या रसोई घर पार कर जनान खान मे जा दासी-बादियो क कमरे हैं उसके इद गिद लुकाछिपी खेलेंगे। लकिन नीले रग का मदान आ जाते ही सोना को कुछ याद आ गया। वह बोला मैं उतरूगा अमला।

—यहा क्यो उताराग ? अमला अधीर-सी लगी।

सोना कह सकता था वह जो जादुई मशीन है जिसे घुमाते ही तार-तार म बिजली दौड जाती है रोशनिया जल उठती हैं कमरा म लाल-नीली बत्तिया जलाई जाती हैं और पूजा के दिन होने की वजह से छोटे छोटे पेडा पर पत्तियो की आड म टुनी फूल जसी बत्तिया की माला खेलने लगती हैं—उमे इस वक्त उस जादुई मशीन क पास जाकर खडा होना है। इब्राहीम न कहा है कि वह उम जादुई मशीन के पास खडा रहना है अपने हाथ की जादुइ छडी छुआते ही तरह-तरह की आवाजें होन लगती—कितनी विचित्र ध्वनिया मानो नदी क जल म डाड गिर रहे हैं या लडकी पर काई चोट कर रहा हो खट-खट नही शब्द ऐसा नही है यह शब्द भट भट जमा है और इब्राहीम न अपनी आखें बडी-बडी करते हुए कहा है वह अपने लबे चोगे के भीतर स कितन ही किस्म किस्म की जादुई छडिया को निकालकर दिखायेगा। इमी आशा मे सोना लडो से कूद कर उतर पडा।

इस समय कहा है इब्राहीम। वह चारो ओर ढूढने लगा। जादुई मशीन जिस कमरे मे रहती है वह वहा जा पहुचा। लडा अब सदर म प्रवश कर रहा है। कही स उसने घोडे का हिनहिनाना सुना। कुछ बालक-बालिकायें भी देखने आए हैं—क्योंकि पूजा के ये कई दिन यह हवेली गाव क बच्चे-बूढो क लिये एक आश्चय-जनक मायापुरी बन जाती है। पूजा के ये कई दिन महल की इमारत नीले रग का मदान, झील-सी बडी बावली और अनोखे रग के फूल के पौधे सब कुछ मिला कर मिलमिला कर एक माया-कानन-सा है। दूर-दूर से लोग पैदल चले आते हैं। चलते चलत सोना न इन सब लोगों को देखा कि वे नदी किनार बठे हैं। और दाहिने ओर का वह गोल घर लोहे क जाल स घिरा हुआ है। ताज्जुब है इब्राहीम दिखाई नही पड रहा। इब्राहीम ने उससे कहा है कि वह बत्ती जलाना दिखायेगा, यह रोशनी जलाना सोना के तइ एक अलौकिक घटना-सा है वह देर न लगा सका, वह दौड कर गया और जाल पर मुह रख कर उसने देखा इब्राहीम मशीन पर झुक कर कुछ कर रहा है।

उसने पुकारा, इब्राहीम।

इब्राहीम ने कोई जवाब नहीं दिया। सूय अस्त हो गया है और सांझ उतर रही है इसीलिए कमरे के भीतर हल्का-सा अंधेरा है। इब्राहीम का मुख धुंधला-सा। उसके चहरे पर पसीना चुह चुहा आया है। वह मानो सब को अपने वश म नहीं कर पा रहा है। वह जादुई मशीन अद्भियलपन दिखा रही है। जितना ही वह अड रही है उतना ही वह खींच-खांच कर जाने क्या सब गांठ डाल रहा है चारो ओर चक्कर लगाते हुए खींच-खांच कर जाने क्या जांच-परख रहा है। अपना चहरा उसन पागल सा बना रखा है या चेहरे पर उद्वेग-सा छा गया है। इतने सारे बच्चे चारो ओर सभी उसका कौशल देखने आये हैं इब्राहीम मिस्त्री इतना नामी गरामी कि मेरे हाथी साथ रुपये जमा हो उसका मूल्य और इस समय वही शख्स बिना नोटिस ऐसा घबरा गया है कि सोना भी उस बुला न सका, इब्राहीम तुमने मुझ आने को कहा था। किस तरह स एक जगत को पल भर म जादू का देश बना देते हो, तुमने दिखाने को कहा था और अब तुम कुछ भी नहीं कर रहे हो। बुलाने पर भी आहट नहीं देते।

सोना को अब डर सा लगने लगा। वह अकेला फस जायगा। इब्राहीम ने कहा था कि रोशनी जल जाने के बाद वह उसे कचहरी बाड़ी पहुंचा देगा। और अब वह इब्राहीम बिलकुल भोला मौलवी बन गया। या फकीर दरवश। कोई बात ही नहीं करता। वह मानो बुदबुदा कर कुरआन शरीफ पढ रहा है। सोना किसी तरह से भी नहीं कह सका ओ इब्राहीम तो फिर तुमने मुझ बुलाया हो क्या था। अब मैं कैसे जाऊ।

अगर वह हेमत का हाथी भी लौट आता इस वक्त। व लडो पर सर करने गये थे और बडदा मझलेदा बाबुओ के बेटो के साथ गये हैं। हाथी पर सवार होकर वे हवा खाने गये हैं। हाथी के गले की घंटी बजते ही उसे पता चल जाता कि हाथी लौट रहा है। नहीं कही कोई लौट नहीं रहा है। केवल अपरिचित बालक बालिकायें और लोग बाग जो प्रतिमा के ढांचे पर मिट्टी का लेप पढते ही आने लगते हैं वे ही इस रोशनी जलने का करिश्मा देखने आये हैं। बाबू लोग शहर म रहते हैं। पूजा आने पर इस घर मे एक मशीन चालू हो जाती है। तब यह हवेली की रोशनी और पास के मकानात और तरह-तरह क पत्थर की मूर्तियो को लेकर यह गाव शीतलक्षा के जल पर एक शहर सा बन जाता है। सोना भी इस शहर

मे आया है। वह जो कुछ भी देख रहा है उसी से आश्चय करने लगा है।

अधेरा क्रमश भारी होता जा रहा है। पेड-पौधा के घन होने के कारण आकाश म जो तनिक सी चादनी छिटक आई है वह इस कमरे मे या घास या जमीन पर पेडों की डाली-टहनिया-पत्तियो को भेद कर नीचे उतर नहीं पा रही है। सभी कह रहे हैं क्या हो गया इब्राहीम तुम्हारी पगली बोलती क्यो नहीं।

—बोलेगी, बोलेगी। बिना बोले जायगी कहा ?

सोना बोला इब्राहीम, तुमने मुझसे आने को कहा था।

इब्राहीम को मानो अब पता चला कि सोना बाबू खडे हैं। उसने कहा मालिक जाने क्या हो गया इस पगली को।

—क्या हुआ ?

—बात नही करती।

और तभी साना ने देखा मझले ताऊ इधर ही लपकते चले आ रहे हैं। उनके साथ जनानी ड्योढी का नौकर नकुल। ताऊजी के चेहरे पर भी उद्वेग। यहा सोना अकेला एक अनजान जगह पर खडा है यह भी वे गौर नही कर रहे हैं। इस बार अदर घुसकर टाच जलाकर उन्होने कुछ देखा। इब्राहीम का हट जाने को कहा। फिर कुछ देखकर कहा, यह यहा क्यो ?

—सोना के जी म आया, बुलायें, ताऊजी मैं यहा हू।

लेकिन सोना ने जसे ही सोचा कि ताऊजी बहुत बडे आदमी हैं कि बुलाने का हौसला जाता रहा। जसे आये थे वसे ही चले गये। सोना कुछ बेवकूफ-सा खडा ही रह गया। अब अधेरा नही रहा। इतने बडे आकाश चाद की एक फाक और हजारा सितारो का मुह चिढा रहा है यह मायाकानन, यह हवेली भी। चारों ओर प्रकाश-माला। चारो ओर बडे बडे मग्नोलिया फूल क पौध, उनके अद्भुत रग के पत्ते और छोटे छोटे कीट-पतगो के शब्दा न सोना को जाने कसा उदास बना दिया। वह अकेला पदल चला जा रहा है। उसमे अब कोई भय डर नही रहा। चारो ओर इतनी रोशनी, इतने पेड पोधो के बीच बेशुमार बत्तिया, दूर मे कुछ लोग इस समय भागदौड मचाये हैं और निरतर पूजा का बाजा बज रहा है—सोना का सारा भय फुर हो गया। उसके दिमाग म सपनो का एक दश, देश का नाम केवल एक लडकी के मुख से तुलना कर मेल खाता—वह लडकी है अमला। उसकी अमला बुआ। अमला ने उसे आज छत पर चलने को कहा है। सोना तू छत पर

चले आना, आना जरूर। मैं तेरे लिये इंतजार करूंगी। साता सडा म सुदर मुग्धे को मादकर सका। और कलकत्ता की लडकी अमला। कलकत्ता बहुत बडा शहर है ट्राम गाडी, हवडे का पुल और जाने कौन कौन सी आश्चयजनक सामग्रियाँ लेकर कलकत्ता मौजूद है। अमला वहा रहती है अमला वही बडी हुई है। अनोखी नीली आखें है उसकी। और आभामय मुख स नियत बातें फूटती रहती हैं। इस प्रकाश के राज्य म चलत हुए सोना एक सरल मोह स खिचता दौडन लगा।

सोना बावडी के किनारे किनारे दौड रहा है। दौडत-दौडत सोना कचहरी बाडी म घुस गया। कितने ही लोग बाग। कितने ही गुमाश्त कारिंदे चारों ओर। सब कुछ छोड छाड कर वह दौड रहा है। इतना तज दौडन पर ताऊजी डाटेंगे। उसन एक बार चारो ओर देख लिया। नही मझले-ताऊ आसपास कहीं नही हैं। पूजा मडप म कितने ही प्रकार के दीपक जलाये गये हैं। देवी मूर्ति पर गजन तेल का वार्निश चढाया गया है। अब झिलमिलात रगो पर गजन न मूर्ति पर चमक दमक ला दी है। सोना की कलई इस प्रतिमा के सम्मुख खुल जायगी माना—तुम एक अनूठे आकषण से खिचते चले जा रहे हो सोना—मुझ सब पता लग रहा है। इसलिए सोना ने मडप म दवी जी क मुख की ओर देखा तक नहीं। लेकिन जीने स दाहिनी ओर के बरामदे में उठते ही सोना ने देखा एक आरामकुर्सी पर ताऊजी लेटे हैं। खामोश पडे है। एक सिल्क का कुर्ता परा म कीमती जूते, पूजा के समय मझले ताऊ की यह पोशाक—जो कुछ भी अच्छे कपडे हैं पागल ताऊजी को पहनने को दे दिय हैं या अपने हाथो पहना कर यहा बिठा गये हैं। परो के पास जरा दूर बठे रामसुदर तबाकू काट रहा है। ढेर के ढर तबाकू काटे जा रह है। ढेर सा राब डालकर सुगधित तबाकू बनाएगा और बगल मे पागल ताऊजी। सोना आज क्षण भर क लिये भी यहा नही ठहरा। उसके पास फुरसत नही। देर हो गई है। जाने कब स अमला उसके लिये छत पर प्रतीक्षा कर रही होगी। अमला अमला बुआ। कलकत्ते की अमला। कितना बडा शहर है कलकत्ता। ममोरियल हाल रूपहले रग की रेलिंग और दोनो ओर सुरम्य अट्टालिकायें। सुदूर उस कलकत्त की तरह अमला के शरीर म एक दूर का रहस्य डवा हुआ है। सोना की उम्र भी भला कितनी है। फिर भी यह कोशिश सोना को कसा बावरा बनाय दौडाती फिर रही है। वह पागल ताऊ से भागन क लिये दाहिन बरामदे पर चढा ही नही। बड-बड पेडो की आड मे उसन अपने को अब

छिपा लिया। फिर दौड़कर ऊपर जाने की सीढ़ी पर चढ़ने लगा।

सीढ़ियों पर चढ़ते समय ही उसने घंटी की आवाज सुनी। बावड़ी के उस पा मठ है। मठ म कोई इस समय बड़े घंटे की जंजीर खीचकर घंटा बजा रहा है सवेरे सोना ने सोचा था शाम को चादनी निकल आने पर वह और पागल ताऊ उस मठ म चल जाएगे। वह पागल ताऊजी को सीढ़ी पर बिठा देगा। जहा पत्थर का बना वध है उसके दाहिनी ओर वह खड़ा हो जाएगा। संगमरमर की फर्श है उस फर्श पर खड़े होने पर जंजीर उसकी पहुच मे आ जाती है। वह एक-दो कह कर घंटा बजाएगा और ताऊजी उस घंटा ध्वनि को एक-दो कहकर गिनत रहेंगे नीचे आकर वह पूछेगा, कितनी बार ? ताऊजी कहेंगे—दस बार। अकेला वह इस तरह म क्रमश इस व्यक्ति को विभिन्न कार्यों म लगात हुए या ताऊजी जो कुछ भी पसद करते हैं उसी के भीतर से ले जाते हुए कभी उनको भला चगा बन देगा। लेकिन यह घंटा ध्वनि सुन कर सोना कुछ ठिठक-सा गया। मानो पागल ताऊ कह रहे हों सोना, चलोगे नहीं, मठ की सी ी पर घंटा नहीं बजाओगे मैं एक-दो कर गिनता रहूगा। गिनते गिनते तरतीब से सौ तक गिन लूगा सब कुछ ठीक ठीक तरतीब से कह सकने पर देखना सोना एक दिन मैं चगा हो जाऊगा।

जीने पर ही वह ठिठका खड़ा रह गया। वह ऊपर जाए या नीचे उतर क पागल ताऊ को लेकर मठ की सीढ़ियों पर जा बठे। ऐसी ही एक दुविधा में मन उसका डोल रहा है। बल्कि उसकी अब मठ मे जाने की ही इच्छा अधिक हो रह है। उसने इतना ऊचा मठ कहीं नहीं देखा है। हजारों सुग्गे होंगे नीले रग के इन पंछियों ने मठ के भीतर बसेरा बना लिया है। चादनी रातो मे ये पछी मठ के चारो ओर चक्कर लगात उड़ते हैं। मठ की याद आते ही ऐसे ही सारे पछी या आ जाते हैं। पंछियों की याद आते ही उसे अपनी गुलेल याद आ जाती है। मेल से रंजित मामा ने उसे एक गुलेल खरीद दी थी। वह उस गुलेल से कौवा मना तोता और गिलहरी जो भी सामने आ गया मारने की कोशिश करता था लेकिन वह इनसे निबट नहीं पाता था। जामरूल पेड़ के नीचे छोटा सा कोटर। कोटर मे वही गिलहरी। सवेरा होते ही पेड़ स नीचे छलाग मार नीचे उत आती। पढ़ाई छोड़ सोना उस जीव के पीछे दौड़ पड़ता था। छोटी सी प्राणी इस पेड़ स उस पेड़ पर उछल जाती थी। सुनहरी धूप में वह कट-कट बोली बोलती

थी। लेकिन सोना अगर न भागता तो मन शुरू हो जाता था। सोना को लगता था कि यह एक जीव है—नन्हा-सा जीव। इस जीव का चमड दमो। बिल्कुल डरता ही नहीं। पहो की पत्तियां म मानो उडता फिरता हो। सिर्फ यही जीव क्या, जो कुछ भी सुन्दर और सजीव है। मसलन, धूप मिट्टी सरल की बारिश—सभी को पीछा करते रहना उसे भाता है। अगस्त उसके पास बहुत दूर का एक रहस्य ले आई है। इसलिए वह हिल नहीं पा रहा है। किसके पास जाय वह? पागल ताऊजी, बड़ा मठ और चान्दनी रात का मदान या कमला-कमला। अधेरे म कोई फैसला न कर सकने से वह सीढ़ी के मुह पर जसा चुपचाप खडा था वसा ही खड़ा रह गया।

एक पायक या बरकदाज जसा आदमी उसकी बगल स होकर निकल गया। उसे देख नहीं पाया। देखते ही बोल पडता, कौन? अधेरे में कौन है? उसका पीछा करता। और अधेरे से रोशनी मे आते ही बोल पडता अरे यह तो सोनाबाबू हैं। आप यहा क्या कर रहे हैं? आश्चय स सोना इन लोगों को देखता—कितने लबे चौडे और ऊंचे। हर वक्त हाथ जोडे रहते हैं। उसको देखने पर भी हाथ जोड कर बातें करते हैं। उसके जी म आया कि सिपाही को जरा डरा दे। और मुह बढाते ही उसने देखा सामने अमला, कमला और सब छोटे-बडे लडके और लड-किया दासी-बादिया की कोठरियां पार कर जाने कहा जाने के लिए हो हल्ला मचाते चले जा रहे हैं।

इस बार भी वह नहीं हिला।

कमला को लगा कोई खंबे की आड मे छिपा है। बोली, कौन है रे?

सोना रोशनी मे आकर बोला, मैं।

तुझे ढूढने जा रही थी। जाने कब से हम लोग तेरे लिए बठे हैं।

लगा कि वे फिर ऊपर उठ जाएगे। लेकिन दुमजिल की सीढियो पर उठते ही वे छत पर नहीं गए। एक खुली-सी जगह मे चले आए। यहा से रसोई गृह का कोलाहल सुनाई पडता। मछली तलने की बू आ रही है। व एक झूलते बरामदे पर आ गये। अब वे अपने अपने गुटो म तकसीम हो जायेंगे। फिर रसोई गह के चारो ओर फल जायेंगे।

इसलिए वे अधेरे मे फैल गये। या कहा जा सकता है कि छिप गये। अमला ने सोना को अपन गुट मे रखा है। उसने पहले सोचा था कि सोना को लेकर वह कहीं

छिप जायगी। लेकिन सोना जाने कहा गायब हो गया। वह अटारी पर चढ गया। यहा उसको कोई भी ढूढ कर निकाल नहीं सकेगा।

और सोना को मानो इस घर का सब कुछ परिचित हो गया है। किधर तोशा-खाना है, किधर बालाखाना है, कहा ठाकुरद्वारा है, कहा बहू रानी की पौरी और डयोढी-दर-डयोढी पार करने मे कितना समय लग जाता है—सभी कुछ वह जानता है। उन लोगा न रसाई गह के चौगिद को चुन लिया है। कोई ज्यादा दूर नहीं जायगा जाने पर उस छोड दिया जायगा।

लेकिन कुछ दूर आते ही साना कुछ डर सा गया। इस ओर बिलकुल सुनसान-सा। नीचे टूटी चहारदीवारी। चहारदीवारी के उस पार वह बेडा-सा जगल। सोना ज्यादादूर नही जायगा। दो बडे-बडे रोशनी के खड जल रहे हैं और नौकरानियो म किसी बात पर बहस छिडी हुई है इसलिए डर कुछ गहरा नहीं रहा है। फिर भी वह एक ऐसी जगह की टोह म है जहा छिपने पर उसे कोई भी ढूढ कर निकाल नहीं सकेगा। एसी कोई जगह न पाकर वह एक तरह की नाउम्मेदी मे डूबा जा रहा था और तभी देखा अमला उसके पीछे आकर बठ गई है। मानो अमला अब तक उसी को ढूढती रही है।

अमला बोली मेरे साथ चला आ सोना।

अमला सोना को मदद कर सकेगी। वह अमला के पीछे-पीछे झुक झुक कर चलन लगा। सिर उठाते ही उस ओर की रेलिंग से व दिख जायेंगे।

सोना और अमला इस तरह उत्तर वाले मकान मे आ गये। अब बडे-बडे दर-वाजे लाघ कर सब छिपते जा रहे हैं। अमला फुसफुसाकर इधर आ इधर आ कह रही है। एक अधेरे से लबे बरामदे पर वे आ गये। यहा से अतिथिशाला की ओर एक जीना उतर गया है। जीना घूम घूम कर नीचे उतर गया है। लकडी का जीना। सोना और अमला इस घुमावदार सीढी से उतर रह हैं। उतरते उतरते वे मानो एक विषाद भरे स्थान म आ गय। नीले रग की रोशनी। चहारदीवारी की सौंधी-सी गध। सामने एक उजडा कमरा। एक किवाड पूरा खुला हुआ। कुछ चूहा की आवाज। ऊपर एक पड। कौन सा पेड है यह इस रोशनी मे मालूम नही पडता। दो एक चमगादड जसी चिडिया उनकी आहट पाकर उड गइ। दरवाजा लाघ कर उन्होंने चहारदीवारी के पास कुछ खडहर सा देखा। कभी शायद यहा एक कुआ था। कुआ पाट दिया गया है। यही आकर अमला न कहा, चुप्पी साधे

जसे नरम बाल। सोना कुछ भीत और त्रस्त सा हो उठा है। कलकत्ते की लडकी अमला कितना कुछ जानती है। इस उम्र म सोना और क्या कह सकता है। अमला उसको लक्ष्य करना क्या चाहती है। तू कितना सुदर है सोना। तेरी आखें कितनी बडी बडी हैं। तुझे मैं कलकत्ते ले चलूगी। देखना कितना बडा शहर है। कितना बडा चिडियाखाना है अजायबघर है।

सोना बोला, किताब म पढा है कि वहा एक तिमिगल का ककाल है।

—तू जाने पर देखेगा कितना बडा क काल है।

सोना बोला, मुझे डर लगता है।

अमला बोली, जरा नीचे। कसा है रे तू। डरता क्यों है रे इतना।

सोना बोला ईशम ने एक बडी सी मछली पकडी थी।

अमला से अब मानो रहा नही जा रहा है। सोना से कुछ माग रही है। सोना के हाथ को जाने किस अथाह म लिये जा रही है। सोना को मानो कुछ सूझ-बूझ ही नहीं। वह कुछ भी नहीं जानता। अमला बडे अजीब ढग से बुदबुदा रही है, कितनी मछली थी रे सोना ?

—बहुत बडी।

—ला तो फिर हाथ दे अपना।

सोना ने कहा नही।

—तो फिर तेरा चुम्मा लू।

—नही।

—क्यों, हो क्या जायगा ?

—गाल पर थूक लग जायगा।

—पोछ डालना। कैसा बोदा है र तू।

फिर साना के मुह वही बात। उसका भय जाने क्यो यह भय यह क्या है, जाने किस औषधि से बना हुआ एक बार खाने पर फिर खाना नही चाहिये, पकडे जाने का भय, इसके अलावा यह एक पाप का काम है। सोना अपन तइ स्वय ही जाने कसा ओछा बनता जा रहा है फिर भी एक इच्छा, इच्छा सा भाव दूर का एक रहस्य जिसको वह ठीक ठीक समझ नही पा रहा है सिफ नदी क जल मे कोका बेली जसा खिल रहना ही उसका स्वभाव है वह मानो पानी पर तिर रहा है उसको लाज भय सकोच उसे क्रमश पानी के ऊपर उतराये हुए है उसका

हाथ लेकर अथाह में डाल देने ही वह जल के भीतर डूब जायगा। पानी के भीतर खो जायगा।

उसने कहा, नही अमला नही नही।

अमला बोली अच्छा सोना। ला तेरा हाथ दे। तू यह देहाती वाली क्यों बोलता है?

सोना सिमटता सा जा रहा है। मानो वह धरती पर इतने दिनों तक एक विशुद्ध भाव लेकर जिंदा था अमला उसे वहां से और कही लिये जा रही है। *उसको अब भाग जाने की इच्छा हो रही है। लेकिन अमला की प्यार भरी आंखें,* सुनहरे बाल आखो का नीला रंग और शरीर पर निरंतर मानो उज्ज्वल सुनहली बत्ती जल रही हो—ऐसे एक शरीर को छोड़कर उसका जाने का जी भी नहीं कर रहा है। हर-हमेशा अमला के पास-पास चलना उसे भाता है लेकिन इस वक्त अमला जो उसे करने को कह रही है—वह, जाने क्या उसके लिये एक पापकार्य-सा लग रहा है।

अमला ने फिर सोना को मौका नही दिया। सोना का मुख खींचकर उसने एक चुम्मा ले लिया। फिर बोली क्यो अच्छा लगा कि नही।

सोना की समझ मे आया या नही पता नही चला। टूटा किवाड़ हवा से सरक गया है। नीलाभ रोशनी मे सोना का मुख अस्पष्ट है। अमला ने वह मुख देखकर कहा क्यो रे चुप क्यो है? अच्छा नही लगता?

अच्छा नही लग रहा है कहने पर अमला नाराज हो जायगी। अमला फिर उससे प्यार नही करेगी। संदेश नही देगी। फलफल नही देगी। सिर हिलाकर उसने भोले बालक की तरह सम्मति व्यक्त कर दी।

फिर तो अमला का क्या कहना। मानो इस बार उसको पासपोर्ट मिल चुका है। उसको लेकर जो मर्जी वही करने लग गई। सोना को भी कुछ अच्छा-सा लगने लगा। वही हाथ लेकर खेलना नया खेल, जीवन का एक अद्भुत रहस्यमय खेल आरंभ हो गया।

अमला जांघिये का नाडा बांधते वक्त बोली, क्यो रे तुझ अच्छा नही लगा।

सोना ने फिक्क से हंस दिया।

—हंसे क्यो?

सोना कुछ न कहकर बाहर आकर खड़ा हो गया। बिना कुछ समझे ही सोना

बेवकूफ-सा हसा। और बाहर आते ही फिर वही हसी।

—क्यों रे, तुझे हो क्या गया सोना। इतना हस क्यो रहा है?

सोना-जोर जोर से हसने लगा। यह क्या कुछ हो गया। अमला बुआ ने उसे यह क्या सिखा दिया। एक उम्दा-सा खेल, नया खेल उसके जीवन म आ गया। अब बस अमला को लेकर छत पर या किसी नील रग के मदान मे उसे दौडते रहने की इच्छा हो रही है। अब उस यहा खडे रहने की इच्छा नही हो रही है। अमला कितनी सुदर लग रही है, अमला नित नये अजीब-अजीब तजर्बे म उसे खीचे ले जा रही है। लेकिन मा का मुख याद आते ही वह गमगीन सा हो गया। उसे लगा उसने एक पाप कर डाला है। उस अब कुछ भी सुहा नही रहा है। अकेला, सुनसान इस टूटी चहारदीवारी के पास वह बिलकुल अकेला है। बगल की इस अमला को वह मानो पहचान नहीं पा रहा है। वह इसके बाद वाकई दौडने लगा।

अमला बोली, सोना दौड मत। सीढी से गिर पडेगा। अमला भी छलाग मारती सीढिया पर चढने लगी। सोना इस वक्त जिस रफ्तार से भाग रहा है गिरने पर मर जायगा। सोना से भी तेज सीढिया पर चढती ऊपर उठकर वह सोना स लिपट गई।—सोना, ए सोना, तुझे हो क्या गया। ऐसा भाग क्यो रहा है? अधेरे म गिर पडेगा तो मर जायगा।

सोना ने अमला को दोनो हाथो से धक्के कर गिरा दिया। और कोई वक्त होता तो अमला रो पडती, लेकिन सोना की आखें देखकर वह कुछ बोल नही पा रही है। उसने नजदीक आकर कहा, तुझे एक अच्छी सी कहानी की किताब दगी। मेरे साथ आ जा।

सोना चुपचाप चलता जा रहा है। अमला ने उसे बार-बार पुकारा—उसने जवाब नही दिया। इस समय मडप मे ढाक का वादन हो रहा है। वह एक बडा-सा हाल रूम पार कर रहा है। कितने ही तरह के चित्र हैं इस कमरे म। कितने ही शेर और हिरन के चमडे। ढाल तलवार। इस कमरे म आते ही सोना मन ही मन राजपुत्र बन जाता है। सिर पर सोने का मुकुट पैरो में नूपुर काले रग का घोडा और कमर म रूपहले रग की पेटी और लबी तलवार। इस कमरे म आते ही सोना की अभिलाषा जाग उठती किसी राक्षस के देश से बदिनी राजकन्या का उद्धार करे। आज यह अभिलाषा जाग नही रही। हाल रूम तक अमला पीछे पाछ आई थी। इसके बाद आने का उस साहस नही हुआ। दहलाज

पर खडी वह सोना का चले जाना देख रही है।

दरवाजा पार करते ही उसने एक बार पीछे पलट कर देखा। अमला अब भी उसी की ओर देख रही है। बिलकुल बंदिनी राजकन्या की तरह मुह बनाये हुई। सोना राजपुत्र है। लेकिन अब वह क्या करे? कहा जाये? उसको लग रहा था कि उसके पापकाय के बारे म सभी को मालूम हो चुका है। पागल ताऊजी के पास बठते ही मानो वे सोना के शरीर की गध सूघकर कह देंगे, तुमने सोना बड़े तरबूज का खेत देख लिया है। तुम्हारा रहस्य अतहीन है। सोना तुम मेरे पास नही बठोगे। सोना को इस समय बस रुलाई आ रही है।

खबे की आड मे आकर ठहरते ही सोना ने देखा पागल ताऊजी आरामकुर्सी पर लेटे नही हैं। मडप के सामने परिचित अपरिचित कितने सारे लोग गजे हुए। उसे वहा जाने की इच्छा नही हुई। उसको बार-बार जाने क्यो मा याद आ रही है। बिलकुल पागल ताऊजी की तरह मा भी उसके बालो की गध सूघते ही सब जान जायगी। उसने एक पाप काम कर डाला है यह ताड लेगी। अब जाने क्या करने से उसका यह पाप धुल जायगा—वह कहा जाकर खडा हो जाय। मा ने कहा है नदी किनारे खडे होकर सब कुछ कह देने से पाप का खडन हो जाता है। वह जल मे अपना सारा पाप बता देगा और क्षमा माग लेगा।

वह नदी किनारे खडे होकर जल देवता को सबोधित कर कहेगा हे जल के देवता—और तभी उसने देखा कि कचहरी बाडी म जा पहुचा है। रामसुदर एक गोल मेज पर बठा है। चारो ओर लकडी की कुर्सिया। बाबू लोगो के बंटे गोल बनाकर बठे हैं। रामसुदर बहुत बढिया बढिया कहानिया बता सकता है। जरा सी दूर पर पागल ताऊजी बठे हैं। सिर के ऊपर आकाश और हल्की चादनी। इस चादनी के प्रकाश में उसने सोचा कल सवेरे ही पागल ताऊजी को लेकर वह नदी किनारे चला जायगा। जिस तरह रात को दु स्वप्न दखने पर मा सुनहरे रेत वाली नदी म चली जाती है, जल से दु स्वप्न के बारे म हूबहू बता देती है बता देते ही सारा दोष खडित हो जाता है उसी तरह वह भी बोल देगा। बोल दते ही उसका भी सारा दोष खडित हो जायगा।

ऐसा एक महापाप करने के बाद सोना को कुछ भी सुहा नही रहा था। यहा तक की इस वक्त रामसुदर जो कहानी सुना रहा है उसको सुनने का भी आग्रह उसम नही है। वह कचहरी-बाडी के भीतर घुमकर पागल ताऊजी के बिस्तर पर

लेट गया और दिन भर की थकान स उस नींद आ गई।

उसन नींद म एक काठी का सपना देखा। सामन विस्तीण एक मैदान। उस मदान म कोई फसल नही फलती। कंकड बिछा रास्ता, बगल म खाई। खाई से पानी उतरता आ रहा है। सफेद नीले और पीले रग क पत्थर। जल निमल होन क कारण पत्थरों क रग जल क ऊपर विभिन्न वण लेकर उभर आए हैं। और काठी शात और शीतल बनी हुई है। सोना सवर की धूप म निकल पडा है। किसी का हाथ पकडे वह निरतर भागता जा रहा है। वह उसका मुख नही देख पा रहा है। पीछे की दो चोटियो का ही केवल झूलते हुए देखा। लाल फीत स बधी चोटिया लिय रूपहले रग क फ्राक पहन वह लडकी उस लेकर उस खाइ की ओर दौड रही है।

खाई क किनारे आकर सोना कुछ डर-सा गया। उसे लगा ऐसा गहरा पानी और बहाव पार कर वह उस पार उठ कर जा नहीं सकेगा। वह लडकी कह रही है क्या र डर क्या है। आजा। आ भी। देख मैं कैसे तुझे पार किय देती हू।

ढील हाथ स सोना को मानो उस लडकी ने खाइ क उस पार ल जान क लिय हाथ बढाया। खाई का पानी पार करते समय छोटी छोटी मछलिया चारो ओर खेल रही थीं। ठडा जल। एस जल न मानो इस प्रात काल की महिमा स पूण कर रखा है। सोना मानो किसी तरह स भी उस पार उठकर जाना नही चाहता।

—क्या र बहुत अच्छा लगने लग गया है। अब निकलने का जी नही कर रहा है। सोना उस लडकी का मुख नहीं देख पा रहा है। उसकी ओर बराबर पीठ किय हुए है। सोना स बार-बार पलट कर बातें कर रही है। सोना बाला बडा अच्छा लग रहा है।

इतना अच्छा लग रहा है सोना को कि बस पानी म मछली बन जान की इच्छा हो रही है। और ताज्जुब है ज्यो ही उसकी इच्छा हुई पानी म मछली बन जान की, त्यो ही पानी म वह मछली बन गया। उस लडकी न उसकी ओर देखकर कहा क्या रे तू तो मछली बन गया पानी म। कहती हुई उस लडकी न भी पानी म डब्ब म डुबकी लगा ली। और अचरज की बात वह और वह लडकी दोनो पीली और नीली चान्दी मछली बनकर खा* के घुटना डूबान पानी म तरन लग। फिर दोना ही एक मयकर कडखा धार क सम्मुख आकर रुक गय। उज्जल म उड़ जाने क लिय नील रग की मछली न एक उछाल भरा और भरत ही किनारे आ

पडी। अब सास लेने मे तक्लीफ हो रही है। सोना सास नही ले पा रहा है। वह किनारे पडा छटपटा रहा है। सास का कष्ट मत्यु कष्ट के समान है। सोना नीद मे ही तडफडान लगा और ऐसे ही समय उसकी नीद उचट गई। वह पसीने से तर बतर हो गया है। और उसने देखा कोई ऐसे गोद मे लिये रसोई गह की ओर ले जा रहा है। उसने आखें उठाकर देखा पागल ताऊजी उसे ले जा रहे हैं। इतनी देर म सोना को याद आया कि वह बिना खाना खाये ही सो गया है।

उसने कहा ताऊजी सपने म मछली देखने से क्या होता है ?

पागल आदमी ने कहा गैंतचोरेत्साला।

लेकिन सोना ताऊजी का मुख देखकर समझ सका है मानो वे कहना चाहते हैं—राजा होता है। सपने म मछली देखने पर राजा बनता है।

अगल दिन सबेरे सूरज निकलते न निकलते सोना ताऊजी को खीचते-खीचते शीतलक्षा नदी के किनारे ले गया। सामन छोटी-सी चाकी। कछार पर कास का जगल। बायी ओर मठ के नीचे स्टीमर घाट। दस बजे स्टीमर आने की बात है। नारायणगज से आता है।

सुबह का वक्त है और क्वार का महीना है इसलिए घास पर ओस गिरी ह। ताऊजी सोना और क्वार का प्यारा कुत्ता नदी के किनारे किनारे चल रहे हैं। इन तीनो ने कछार पर उतरते ही देखा वह हाथी हेमत का हाथी। अब क्वार के अत की ओर कछार से होकर कही चला जा रहा है। उसके जी म आया कि जोर से चिल्लाकर पुकारे जसीम। मुझको और ताऊजी को ले चलो। मैं मा के पास जाऊगा। मुझे यहा अच्छा नही लगता। लेकिन वह न सका। अगर फिर ताऊजी हाथी पर सवार हो लापता हो जायें।

लेकिन पिछली रात की घटना याद आते ही मा के पास लौट जाने की हिम्मत भी उस नही हो रही है। अब उस बस ऐसा लग रहा ह कि खालिक मिया की तरह वह भी रास्ता खो चुका ह। यह कुहासा पार करते ही एक जगत है वहा ले जाने के लिये अमला अपनी सुदर आखें लिये अपलक प्रतीक्षा कर रही ह। ताऊजी का हाथ पकडे सोना नदी के घाट पर खडा हो गया। लेकिन पाप के बारे मे कुछ भी कह नही पा रहा है। कहे भी क्या ? सामने जल म कासफूल बहता जा रहा ह। यह फूल देखते-देखते वह अपन महापाप के बारे भूल गया। उसे केवल लगने लगा इतने दिनों में दूर का यह रहस्य उसके निकट खुलने लगा ह। इस समय उसके

चारा ओर के फूल फल चरिंद-परिंदे, नदी के दोनो तरफ के कछार, नदी की जल राशि और यह जो हाथी चला आ रहा है कछार पर उसके पीछे पडे ताऊजी सूर्योदय दख रह हैं, कुत्ता सबरे की धूप मे घूम फिर रहा ह और स्टीमर घाट पर यात्री बठे हैं कुछ घास के नाव और कुछ फूस के नाव बीच दरिया म—सभी लोग मानो उस समय गाना गाते हैं, किधर नाव बहाओगे बघु जब दाना तट का ही पता नही—मानो सोना न यह नाव खोल दी है अमला-कमला या फातिमा को लेकर सोना बाबू बीच दरिया का माझी बन गया है।

साना इस नदी का साक्षी रखकर कोई पाप की बात नहीं बता सका। वह फिर ताऊजी का हाथ पकडे ऊपर उठ आया। सुबह की धूप सोना के चेहरे पर। मानो चेहरा सरज की रोशनी म दमक रहा है।

पागल आदमी सोना का मुख देखकर जाने क्या भाप चुके हैं। उन्होंने आशीर्वाद की मुद्रा म सोना के सिर पर हाथ रखा। तुम्हारे भीतर बीज का उन्मष हो रहा है सोना। इसी तरह स कुछ समय पार करने के बाद तुम किशोर हो जाओगे। तब दखोग जिस रहस्य को तुम इस वक्त छू नहीं पा रहे हो वह तुम्हारी पकड मे आ जायगा। और भी बडे होने पर दोना तट का ही जब पता नही चलेगा तब तुम जल क भीतर डूब जाओगे। न डूब सकोग तो तट-तट पर उसी की तलाश म घूमोगे। फिर जब ढूढे नही मिलेगा तो मेरी तरह पागल हो जाओगे।

दिन भर सोना की अदरूनी डयोढी की ओर जाने की इच्छा नहीं हो रही थी। पेड की पत्ता की तरह एकान-सी एक लाज और सकोच न उसे घेर रखा है। इस लिए दिनभर वह कचहरी-बाडी के बरामदे पर बठा रहा। और चारा ओर जो मदान है वहीं घूमता फिरता रहा है। कल किसी तरह से भी उसने अमला-कमला से भेंट नही की।

आज नवमी है। इसलिए भैंसे का बलिदान हागा। सवेरे से ही यह उत्सव-गृह दूसरा ही रूप अपनाने लगा है। लालटू पलटू कोई भी निकट नही। वे बाबुओ की कोठिया म दुर्गाप्रतिमायें देखते फिर रहे हैं। नदी के किनारे सडक है। नदी के

म उस तल्लीन हो रही है। एक बार सोचा था कि भैंस के पास जाकर बैठा रहेगा और उसका घास खाना देखेगा। लेकिन बलिदान होगा जानकर मन ही मन भैंस के लिये उसका दिल दुख रहा था। उसके नजदीक जाना उसे बुरा लगता। भैंस की पीठ पर एक मैना बैठा हुआ है। पीठ पर मैना देखते ही जाने क्यों सोना की इच्छा हुई कि भैंस को कुछ घास नोच दे। भैंस को मालूम नहीं कि थोड़ी देर बाद ही वह मर जायगा।

सोना का हालचाल लेने अमला ने दो-एक बार वृन्दावनी को भेजा है। दोनों बार ही सोना कचहरी-बाड़ी के किसी कोने अंतर में छिप गया है। उसने आहट नहीं दी। फिर वृन्दावनी हताश लौट गई है। सोना ने सुना है कि इस वृन्दावनी ने ही उनको बड़ा किया है। पाला पोसा है। अमला-कमला की माँ बड़ी सुंदर हैं। और वह कलकत्ते के मकान में चुपचाप अकेली बैठी रहती हैं। एक बड़ी-सी खिड़की है। खिड़की से दुर्ग का रैंपट दिखाई पड़ता। लड़कियों के जन्म के बाद वे घर से नहीं निकलतीं। बस इतवार को गिरजे जातीं। कमला के बाबा का चेहरा देखने पर भी जाने क्यों सोना का मन टीसने लगता। कैसा विषादभरा और उदास। इसलिए अमला और कमला से दोस्ती नहीं करूंगा बातें नहीं करूंगा इस फैसले का जितना आसान समझता है उतना ही भीतर ही भीतर वह अपने को बड़ा कमजोर पाने लगता है। फिर भी वह घटना याद आते ही उसे डर-सा लगने लगता है। अमला खुद भी एक बार कमला के साथ कचहरी-बाड़ी चली आई। ए तुम लोगों ने सोना को देखा है। सोना कहाँ है? सोना दिखाई नहीं पड़ रहा है। रामसुंदर से उस वक्त पूछने पर उसने बताया था सोना बाबू तो पड़वे के पास बैठा था।

वे मैदान में उतर गईं। जहाँ पड़वा घास खा रहा है वहाँ बच्चों का एक जमावड़ा। अमला को सोना वहाँ दिखाई नहीं पड़ा।

सोना को वे देख नहीं सकेंगी। क्योंकि सोना दरवाजे की आड़ में खड़ा है। चुपके-चुपके अमला को देख रहा है। वह अमला को बुला नहीं पा रहा है। उस घटना के बाद से ही सोना नदी किनारे का सोना बन गया है। जितना उससे बन सकता वह अमला कमला से दूर रहना चाह रहा है। या लुक छिपकर ये चंद रोज काट लेते ही फिर नाव से गाँव लौट जाना है। उसको अब कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। *माँ के लिये उसका मन बड़ा उदास है, उसे नहीं मालूम कब और किस*

तरह से वह माँ के पास जायगा और उसे सब लोग उस छोटे सी नदी के पास पहुँचा देंगे।

मझले ताऊ को वह कभी नजीर ही नहीं पाता। कब व कहां चले जाते हैं सोना को पता ही नहीं लग पाता। कभी-कभी नहाने या खाना खाने से पहले वे कमीज निकाल देते हैं। ताकीद कर देते हैं कि सोना जल्दी जल्दी लालटू पलटू के साथ नहा ले और खाना खा ले। क्योंकि इसमय यह है कौन किसकी देखभाल कर सकता। पत्तल बिछाओ और खाने बैठ जाओ।

दूसरे दिन सवेरे अन्दर की ड्योढ़ी में बाबुओं के छोटे छोटे बच्चों के साथ सोना ने भी दानेदार महीन चावल का भात घी और दाल में सानकर उबले हुए अरबी कद्दू से खा लिया था। कल सवेरे वह पुरानी कोठी चला गया था वर्ना सामने जाने ही अमला से भेंट हो जायगी। आज वहाँ जा नहीं सका इसलिए छिपा छिपा फिर रहा है। उसको कोई न कोई खाने के लिये बुलाने आयगा ही। कमलावती आई थी, अमला कमला भी आकर ढूंढ गई हैं। सोना इस घर में आकर छोटी बहूरानी का भी दुलारा हो गया है। वही सोना कहीं मिल नहीं रहा है। दो दिन से वह छोटे छोटे बच्चों के साथ बाल भोग खाने अंदर नहीं आ रहा है। बहूरानी ने सोना की तलाश में बार-बार लोगों को कचहरी वाड़ी भेजा है।

पूजा मंडप से आते समय भूपेंद्रनाथ एक दोने में संदेश ले आये थे। वही खाकर सोना नवमी पूजा देखने के लिये लड़के पागल ताऊजी के साथ चलकर नदी से नहा आया है। पूजा की नई कमीज निकर पहन ली है। भैंसे का बलिदान होगा। छोटी सींग होने के कारण ही सोना को लगा कि भैंस की उम्र कम है। कम उम्र वाला यह भैंसा अब भी घास चर रहा है। घास खाते वक्त खस-खस शब्द होता। यह शब्द सुनते हुए सोना ने चारों ओर देखा। कैसा समारोह—कितना कमसिन पड़वा है। पड़वे को घास फूल खाने का दे रहे हैं। लाल अड़हुल की माला पहन पड़वा अब घास के बीच मानो राजा सा खड़ा है। जितने भी नन्हे-नन्हे बच्चे सवेरे से उसके चारों ओर इकट्ठे हो रहे थे वे इस समय भैंसे की नीले रंग की आँखें देख रहे हैं। बलि के समय यही आँखें लाल रंग की हो जाएंगी। चलते चलते सोना भैंसे को पीछे रख कचहरी वाड़ी सीढ़ियों पर आकर खड़ा हो गया। लंबे कमर को पार कर नाटमंदिर के चौक में दाखिल होते ही देखा कितने लंबे और चमचमाते दा खड्ग लेकर रामसुंदर बैठा है। कुछ छागशिशु या बकरों की बलि होगी। भैंसे की

बलि होगी। राममुदर बठा है तो वठा ही है। दुमजिने के बरामदे पर कोई आकर सारे चिक गिराये दे रहा है। भसा बलि के समय या छागबलि के समय बहूरानिया और परिवार की अन्य नारिया चिक पर मुह रखकर यह निष्ठुर दृश्य देखते देखते—ओ मा देवी कल्याणी, तुम कल्याणवती हो सुदरी हो महाकाल की आदिशक्ति हो कहकर हाथ जोडकर प्रणाम करेंगे। भूमि पर लौटने लगेंग।

बकरा का यह मास नवमी पूजा का प्रसाद है। महाप्रसाद। पूजा समाप्त होते ही ये सारे समूचे बकरे गडे गडे रसोई गह मे चले जायेंगे। बडे बडे परात धोय पोंछे जा रहे हैं। खलियान क लिए न कुल तीन आदमियो को लेकर रसोई गह म रस्सी लटकाय तयार है। बलिदान क बाद कुछ पडा न रह जाय। फौरन बडी-बडी कडाइया म बकरे का यह मास पकेगा। भसे का मास स झुलाकर शीत लक्षा के उस पार के लोग ले जायेंगे। जो लोग कटा भैंसा लने आय हैं उनके साथ रक्षित ताऊ लेन-देन की बातें कर रहे हैं।

सोना रामसुदर की बगल मे चुपचाप बठा है। रामसुदर रामदाओ पर सान चढा रहा है। दो रामदाओ। उलट-पलट कर बडे ध्यान से रामसुदर रामदाओ पर सान चढा रहा है। सुनहर रत वाली नदी की चारो म तरबूज क खेत म सोना पहली बार जा खो गया था—ईशम मडया म बठा तमाखू पी रहा है, नदी के जल से एक मानिनी मछली पकडकर उसने तरबूज के पत्ते पर रखा था, और मछली मर न जाय यह सोच कर बालू म एक गढा खोद दौडकर उसम पानी भर मछली छोडकर सोचा था कि अब कोई डर नहा मछली जी जायगी और गढे के किनारे त मय हो वह प्रतीक्षा करता रहा कि मछली जिंदा है या नही—बिलकुल वैसी ही तन्मय प्रतीक्षा है रामसुदर की—रामदाओ पर सान चढा कि नहीं। दो बार घिसने के बाद ही उगलिया पर थूक लगाकर वह धार को परखने लगा। एक प्राणी का गला एक ही वार म काट डालना मानो झील क गहरे जल म डुबकी लगाने की तरह है। कोई नहीं बता सकता कि वह फिर ऊपर उतरायगा भी या नहा।

ठीक दस बजे बलिदान है। चारो ओर गुहार-पुकार हो हल्ला। कोई भी मानो खामोश बठा नही है। दो बार उस पार कर मझले ताऊ लबा बरामदा तय कर गय सान चढाते हुए रामसुदर ने दो नो बार आखें उठाकर गौर किया कि एक छोटा-सा आदमी यह सब देख-दाख कर दाता तले उगली दबा रहा है। बडेदा मझले बाबुओ क बच्चे सभी दौड-दौड कर कहीं जा रहे है। जाते वक्त कितनी ही

बार उन लोगों ने उसे देखा है लेकिन कोई भी उससे बोला नहीं। मानो नवमी की पूजा के बाद ही फिर सभी एक-दूसरे को पहचान सकेंगे बात करेंगे। इसलिए सोना भी चुप है। उसे बड़ी भूख लगी है। किसी से कह नहीं पा रहा है। सबेरे उसने भात नहीं खाया है। सबेरे गरम गरम माड़ मिला भात खाने का वह आदी है। यह तकलीफ कुछ कुछ उसी दिन की तरह है जिस दिन से फातिमा के छू देने से मां ने उसे खाना नहीं दिया था। सोना चुप्पी साधे दोना रामदाओं देख रहा है। कितने चमचमा रहे हैं। सोना का मन करने लगा कि रामदाओं को एक बार छूकर देखे। लेकिन रामसुंदर ने दोना रामदाओं को अगल बगल तरतीब से रखा है। एक बकरा काटने के लिए है तो दूसरा भैंसा काटने के लिये। वह टकटकी लगाये दोनों दाओं को देख रहा है। रामसुंदर के मुख पर ऐसा हावभाव उसने कभी नहीं देखा। उसे कुछ डर सा लगने लगा।

दस बजे बलिदान होगा। घड़ी देखकर ऐन दस बजे। सभी मानो इस वक्त घड़ी की सूई की ओर देख रहे हैं। मंडप में बड़े जोर जोर से मंत्र पाठ हो रहा है। सूत्रधार द्रुत मंत्र पढ़ते जा रहे है। दस ढाक बजने पर दस कनफाइल बजेंगे। ढोलक भी दस है। सभी कुछ दस-दस। बकरे भी दस हैं—सिर्फ भैंसा ही एक है। पड़वे की बलि होगी—क्या वर्णन है उसका। सोना मन ही मन डर के मारे फक पड़ता जा रहा है। भैंसा बलि की बात याद आते ही दिल गरज उठता। बिलकुल उसी तरह जैसा उस लुका छिपी खेलने वाली रात को किसी प्राचीनशीतलवृक्ष में कोई के भीतर—एक कौवा काँव काँव कर उठा था रात को कौवे का बोलना अच्छा नहीं होता अमंगल होता है सारा वक्त अमला उसको लेकर क्या कुछ कर रही थी—। इस समय रामसुंदर दाओं पर सान चढ़ गया है इसलिए निश्चित हो मूछों पर ताव दे रहा है।

यह रामसुंदर आज पड़वे को बलि चढ़ायेगा। सबेरे से ही वह कुछ और आदमी बन गया है। तड़के सबेरे वह नदी से नहा आया है। चोटी में जबा कुसुम बांध रखा है। कमरे में बैठकर उसने गांजे का दम लगा लिया है। वह अब एक आसन पर पद्मासन किये बैठा है। दोना रामदाओं उसके सामने रखे हैं। बुलावा आते ही दो दाओं दो कंधों पर लेकर वह लपकेगा। दाओं पर वह आंख अंकित कर देगा सेंदुर से। फिर किसकी मजाल है जो उसके सामने आ जाये।

उसने सोना को बगल में चुपचाप बैठे देखा तो कुछ नाखुशी से बोल पड़ा सोना

मालिक, अब जाइए। मैं न्देवी की आराधना कर रहा हू। इसके बाद कुछ भी न बोला। गुम्मी साधकर बठ गया।

ऐसा तो बठेगा ही। इतने वडे जानवर को एक ही बार मे काटकर दो टुकडे कर देगा। भैंमे की गदन कितनी बडी और मोटी है। काला कलूटा चिकना सबल भसा। जिस भसे को काबू म करना दस बीस लोगा का काम है उसको वह एक ही वार मे काटना चाहता है। जो लोग भैंस को पकड रखेंगे वे भी एक एक कर आ गये। व गोल बनाकर बैठ गये और गाजा पीने लग। दोना हाथ ऊपर उठाकर व उत्कट चिल्लाहट म फट पडे। साना वस ही उकड बैठा है। वह हिल नही रहा है। एसे लोगो का जमावडा देखकर उसने दीवारकी ओर मुह फेर लिया। न्दीवार म वही बरछी वल्लम, तरह तरह क लबे फल वाल भाल और तलवारें सुसज्जित और इसी कमर मे शायद रामसुदर दिन भर पडा रहता है। उसके हाथ म तरह-तरह के शिकार के चिल। उसन शरीर भर म बाघ भालुआ के चित्र बनवा रख हैं। जितनी ही बार वह भावाल के गजारि वन म बाबुआ क साथ शेर शिकार करने गया है उतनी ही बार वह हाथ, सीन पीठ या क्लाई पर नारानगज मे गुदना गुदा के आया है। उसने कितने शेरो का शिकार किया है कितने हिरन और धनश पछी का यह उसका बदन देखते ही मालूम हा जाता है। जब रामसुदर अकेला होता तो सोना बीच बीच म एक दो-तीन कर गिना करता था। फिर कहता, आपन तीन शेर मारे हैं। रामसुदर हसता था। वह अपना हाथ उठाकर दिखाता—देखिए यहा भी एक शेर है। शेर को काख के नीचे छिपा रखा है।

सोना पूछता, क्यो छिपा रखे हैं?

—शेर के साथ मेरा वडा प्यार मुहब्बत था।

—प्यार मुहब्बत क्या है?

—आपका ब्याह हो जाने पर मालूम हो जायगा।

सोना कहता धत। वह रामसुदर को एक ढहोका लगाता। फिर कहता, मुझे एक हिरन का बच्चा ला देंगे आप।

सोना का ख्याल है जगल जाते ही हिरनौटा पकडा जा सकता है। यह जो बाबुआ का चिडियाखाना है और चिडियाखान क बाघ, मगरमच्छ और हिरन के जाडे का पिजडा है सभी इसी शख्म के कारण हैं। मानो यही शख्स मारे जगली जानवरो को लाकर पालतू बना रहा है।

म बोलती हैं उसी तरह से वह बोल पडा, हे मा दुर्गा, मेरे ताऊजी को चगा कर दो।

गजन तेल से देवी का मुख चमक रहा है। धूप के घुए से मुख और नाक का बेमर मानो काप रहा है। हाथ का त्रिशूल मानो और मजबूती से कसकर पकड लिया है। मझले ताऊजी गरद की धोती पहने सारा वक्त चडी पाठ करते जा रहे हैं। पुरोहित चारो ओर फूल बेलपत्तिया बिखेर रहे हैं। ढेरा भोग के नैवद्य और फलफूल की गध। यह बलि का समय है। दस दम ढाक बज रह हैं। भैंसे को कुछ लोग मदान से लान गय हैं। देवी की आखें क्रमश मानो लाल होनी जा रही हैं। सभी लाग अपने अपने ढग स बलि देखन के लिए जगह बनाये ले रह हैं। साना दीवार से सटकर जा ऍठा खडा है तो हिल नहीं पा रहा है।

तब उस आदमी न कितनी आसानी स दो बार म दो छाटे छाटे बकर काट डाले। उसने आखें बद कर ली हैं। आखें खोलते ही उनके धड और पर छटपटाने लगत हैं। उसने कहा मा, मैं फिर कभी ऐमा न करूगा।

वह एक खबे की आड में है। दुमजिले की चिकें गिरी हुई। बाबुआ के परिवार की औरतें, नौकरानिया सब उस चिक की आड म। वे बलि देखने के लिये चले आय हैं। लेकिन सोना करे भी क्या डर के मारे वह हिल नहीं पा रहा है देवी निरतर लाल लाल आखा से एकटक उसे देख रही है।—तुमने क्या किया है सोना यह क्या किया है ऐमा कह रही है।

वह बोला, मैंने कुछ भी नहीं किया है मा। हवा वैसे ही चल रही है। झाड फानूस व नक्काशीदार काच के फलक फिर पहले ही की तरह हवा म हिल रहे हैं। रिन रिन बज रहे हैं। मिराजी कबूतर चुपचाप एक धतूरे फूल के आकार के काच के गिलास पर बठा बकरो की बलि देख रहा है। कही गुजाइश नहीं। इस पछी ने बठने की अच्छी मी जगह चुन ली है। सारे मडप मे और नीचे चारो ओर के बरामदे पर हर कहीं लोग खचाखच भरे हैं। और दुमजिले की चिकें गिरी हुई। मानो अमला-कमला इस भीड म बलिदान नही देख रही है व सोना को ढूढ रही हैं। जान कहा चला गया।

इस समय कोई उस देख नहीं पायेगा। उसको सामने के लोगो ने ढाप लिया है। दुर्गा प्रतिमा भी उसे नहीं देख पा रही है। वह चुपक स सिर झुका कर कुछ लोगो को ठेल कर सीढी के पास आया ही था कि किसी न पीछे से उसका हाथ पकड लिया।

आ्र न हा सा आ्मी तो है ही वह। उसको कधे पर उठाकर वह खडा रहा।

और भसे को उस समय कुछ लोग खीच-खीच कर ले आ रहे हैं। धूप राल की गध से अजीब सी खुमारी आ चढी है। दुर्गाप्रतिमा का मुख दिखाई नही पडता। धुए से सब कुछ धुधला पड गया है। लेकिन भसे ने सब कुछ देख लिया है। दुर्गा देवी की नाक से बडा सा बेसर झूल रहा है। और दोना नयना मे कितनी अपार महिमा। भसे ने इस बार ऐसे ढग से देखा मानो आराधना कर रहा है। और तभी बीस बाईस लोगो ने ठल ठाल कर उस भसे को यूप पर ला पटका। परा मे रस्सी बाधी। गले को खीचकर जीभ निकाल चार आदमिया ने पर की रस्सी को दबके के साथ खीचते ही वह बलवान जानवर हडबडा कर गाय बल की तरह गिर गया। जीभ से लार टपक रही है। गुगुआ रहा है। अब गदन को दबा देते ही आवाज बद हो गई। किसी को भी भस का आतनाद सुनाई नही पडा। ढाक इतने जोर से बज रहे हैं और चारो ओर पक्के मकान आदि होने के कारण ऐसी गूज निकल रही है कि यह घर हवेली कोठी, प्रबल प्रतापी भसा और सोना डोलने लगे हैं। नक्काशी दार उन काच फलका से रिन रिन की ध्वनि हवा म जलतरग सी। उस दुर्गा प्रतिमा का मुख झलमला रहा है और सामने लगातार रक्तपात हो रहा है। पशु बलि चढ रह है और मझले ताऊजी पशुओ के मुड लेकर मडप मे सजा कर रख रहे हैं। उन मुडा पर घी के छोटे छोटे दीये जलाये दे रहे है। सब से अत मे भसा बलि। जो लाग बाजा बजा रहे हैं वे नाच नाच कर बाजा बजा रहे हैं। हाथ उठाकर सभी लोग जय ध्वनि कर रहे हैं—दुर्गादेवी की जय, श्री श्री चडीमाता की जय मा अन्नपूर्णा की जय। आधाशक्ति महामाया की जय। असुर विनाशिनी मधुकटव सहारिणी की जय मा अन्नपूर्णा की जय। रामसुदर वही खाडा लिये धीरे धीरे आगे बढा आ रहा है। प्रतिमा का मुख काप रहा है। मानो वह इस समय महिष मर्दिनी है और इस महिष का रक्तपान कर खडग हाथ मे लेकर स्वय ही नाचती फिरेगी।

भसे को जिन लोगो ने ठेल ठाल कर यूप पर गिरा दिया था वे सभी भसे की पीठ पर बठ गये हैं। तबू के खूटे गाडने की तरह चार आदमी चारो ओर से रस्सी खीचे हुए हैं। लोगा के दबाने पर भस की गदन लबी होती जा रही है। काला चमडा नीला पडता जा रहा है या फटना जा रहा है। गदन पर लगातार घी चुपडा जा रहा है। सोना झाक रहा है। उसको कौन कधे पर उठाये हुए हैं यह देखने को

फुरसत नही उसे। चिक उसकी आखो स ओट मे है। इस ओर खडे होने पर चिक के परदे दिखाई नही पडते। वह इस समय एकटक एकबार देवी का मुख देख रहा है तो एकबार रामसुदर को जो धीरे धीरे खडग हाथ म लिये बढा आ रहा है और आते ही देवी के चरणा पर साष्टाग गिरकर —मा, मा री, तू अ नपूणा है मा, कितनी करुणा है तुझमे कहकर हहाकर रो रहा है। यह सब देखकर वह काठ बना जा रहा है। यह जो फूस कपाचियो से बनी मिट्टी की प्रतिमा है चिकोटी काटने से रग और मिटटी निकल आयगी इस समय उसकी महिमा है—दस नहा को जोड कर बाबूलोग खडे हैं। और पुरोहित के घटा बजाते ही और फूल-बेलपत्ती देते ही रामसुदर भसे के साम ने आकर खडा हो गया। अब भी भसा दुम समेटे ले रहा है। एक आदमी बालो की वेणी सी दुम को मरोड कर पकडे हुए है। इसलिए वह दुम काप रही है।

तब रामसुदर मा मा कर चिल्ला उठा, मा तेरी इतनी लीला, मा मा कहते उसने खड्ग बहुत ऊचे नहीं उठाया। हाथ भर की ऊचाई से उसने वार किया। खडग सोना की आखो के समुख डोल कर ही कही अदश्य हो गया जाने क्या—कुछ होता जा रहा है मुड छटक कर अलग जा गिरा है धड इधर लुढक रहा है। धडे मे पानी निकलन की तरह भैसे की गदन इस समय खून उगल रही है। मझले ताऊजी ने उस मुड को सिर के ऊपर उठा लिया। वे कितने मजबूत आदमी हैं, देवी के समुख वे कस महापाश से बधे हैं, इस समय मानो सोना को यह पता चल रहा है। व सिर पर मुड लेकर चलने लगे। दरअस्ल रामसुदर के खडग ऊपर उठाते ही सोना ने आखें बद कर ली थी। आखें खोलने पर उसने देखा मझले ताऊजी भसे का मु ड लेकर मडप म जा रहे हैं। वह आदमी इस समय साना को कधे से उतार कर रक्त लेने के लिये सकोरा लिये यूप की ओर टूट पडा है। रक्त लेकर सभी के माथे पर तिलक लगाया जा रहा है। मा ईश्वरी करुणामयी है। चिकोटी काटने पर मा तेरे अग से रग मिटटी और फूस निकल आयगी—कमाल का खेल दिखाया तूने। वह पागल मन ही इस समय इन लोगो का उ माद देखकर हसते हसते लोट पोट हो रहा है। सोना भीड में ताउजी को देख नही पा रहा है। जो लोग सकोरा लाना भूल जाने के कारण घुइया या केले के पत्ता पर छीन-झपट कर खून ले रहे हैं सोना उन लागा से दूर सरक कर खडा हो गया। वे पागलो की तरह अजीब ढग स हाथ परा म खून लगाकर भाग दौड रहे हैं। सीढी के मुख

पर जहा रास्ता अदर की ओर चला गया है उसके एक बगल म खमा है—डर के मारे सोना उस खभे की आड म खडे होकर देखने लगा। यह सब देखते-देखते वह भूल गया कि उसे तगडी भूख लगी है। अपने को वडा अकेला और बेसहारा पा रहा है वह। मा याद आ गई। कितने दिना से वह मा के पास नही लेट रहा है। मा के पास न लेटने पर उसे नीद नही आती। मा के शरीर पर एक पर न उठा देने पर, मा को गाव-तकिये की तरह न इस्तेमाल करने पर सोना को नीद नही आती भीतर ही भीतर वह मा के लिये घुलता जा रहा है।

पता नही मा के लिये या भूख के लिये सोना खभ की आड मे खडा इस समय फफक फफक कर रो रहा है। सबेरे से उसने खास कुछ खाया ही नही उसका मुख सूख गया है। चारो ओर वह इतने सारे लोगो को देख रहा है। लेकिन किसी से कुछ कह नही पा रहा है। वह आज मझले ताऊ से कुछ कहने मे डर रहा है। बडेदा मझलदा उस तरह नही दे रहे हैं। भस बलि हो जाने के बाद ही वे बाबुओ के बेटा के साथ फिर कही गायव हो गये है। इस समय रसोई गह म दस बकरो का मास पक रहा है। महा प्रसाद बन जाते ही बड आगन म पत्तल पड जायेंगी। सभी लोग खाने बठेंगे, तभी सोना भी दो गस्सा खा लेगा—खभे की आड म खडा वह इतजार कर रहा है कि रसोई गह से खाने का बुलावा कब आता है। और उस समय मा याद आते ही जाने क्या सोना की आखें फोड कर आसू निकले आ रहे हैं।

उस लगा कोई सीढी स जल्दी उतरा आ रहा है। उसने पीछे पलट कर देखा, अमला-कमला। व बोली—सोना तूने टीका नहीं लगाया?

सोना बोला नही।

—आ जा टीका लगा दू। कहकर अमला यही से एक सकोरा ले आई। जमा हुआ खून। उस खून म सोना के माथे पर टीका लगा दिया गया। वह बोली, आज के दिन टीका न लगाने पर तू बडा कसे होगा? पुण्य कसे होगा?

लेकिन सोना कुछ भी जवाब नहीं दे रहा है। वह एक अधेरी जगह पर खडा है। वह बस उनको देखता जा रहा है। वही जरी के काम वाले फ्राक पहने। कलाई पर छोटी कीमती घडी और कगन पतली उगली म हीरे की अगूठी। बाबकट बालो पर सरू रिबन बाँधे। बदन से कमल का सौरभ आता सा।

उस धुधली सी जगह म भी अमला की निगाह स यह बचा नहीं कि सोना रो रहा था। वह बोली, क्या रे तुम हम लोग सबेरे स ढूढ रहे हैं। तू था कहा?

सोना खामोश खडा है।

कमला बोली चल छोटी चाची तुझे बुला रही हैं।

माना वाला, मैंन भसा-बलि कभी देखी नहीं थी।

अमला बोली, साना, तू खडे खडे रो रहा था।

—धत मैं क्या रोऊ।

—जरूर रोया है तू। मैंने देखा है।

पकडा गया है सावते ही साना ने कहा टीका लगाने पर मरा कोई पाप नही रह जायगा।

—नही। कहकर ही अमला न सोना के कधे पर हाथ रख कर कहा इधर आ। वह सोना को भीतर की ओर ल आई। बोली, क्यो रे किसी से कहा तो नही।

—नही।

—तू मुझ बुआ नही कह सकता। मैं तुझस कितनी बडी हू।

—बुआ कहने म मुझे लाज लगती अमला।

—फिर भी तू मुझ बुआ कहा करगा। लिहाज करेगा क्यो?

सोना न कोई जवाब नही दिया।

—आज शाम क बाद छत पर आओगे?

—धत। कहकर हा वह दौड कर भाग गया।

और उस नाट मदिर म इस समय कटा भसा पडा है। मडप मे दस बकरो के मुड बीच म भसे का मुड। सिर पर दीये। जलते-जलते एकाध दीपक बुझ गये हैं। सभी मडा की आखें इस समय देवी की ओर देख रही हैं। इस समय भीड नही रही। यूप पर जरा भी खून नही लगा है। धो पोछ कर ले गये हैं। सोना सीधे बावडी के किनारे आ गया है। कडाके की धूप निकल आई है। सबेरे शरत की बारिश हो चुकी है। सभी कुछ ताजे घास फूल पत्ती सब कुछ। फिर भी जाने क्यो साना को कुछ भी अच्छा नही लग रहा है। उसने तब दखा पागल ताऊजी मोर वाले कमरे म बठे हैं। उत्तर क आकाश म एक काला बादल। वहीं बादल देखकर मोर ने पख फला दिये हैं। पागल ताऊजी मोर के वह पख देखते हुए तल्लीन हो गये हैं।

सोना ने बुलाया, ताऊजी

मणीद्रनाथ मानो पकड लिये गये हैं इस ढग से ताकने लगे। अपराधी सा मुख। सोना ने यह सब गौर नही किया। सिर्फ चुपके चुपके बोला, चलिये, घर चला जाये। उसने यह नहीं कहा कि उसे अच्छा नही लग रहा है।

लेकिन मणीद्रनाथ ने माना भाप लिया हो कि सोना ने अभी तक कुछ भी खाया नही। भूख के मारे उसकी आखें गढो म धस गई हैं। वे झट पट उठ खडे हुए। और सोना को लेकर किसी ओर बिना देखे सीधे रसोई गह म चले गये। केल के दो पत्ते खुद ही ले आये। मिटटी के कुल्हड म पानी भर लिया। फिर बरामदा पार कर रसोइये को हाथ उठाकर इशारा किया।

नकुल समय गया कि यह पागल आदमी अपने नाबालिग भतीजे को खाना देने को कह रहे हैं। महाप्रसाद अभी उतरा नही। बडे आगन म लबे पत्तल बिछ रहे हैं। वहा वह चले जाने को कह सकता था। लेकिन वे जब आए हैं तो किसकी मजाल है जो खाना न दे। नकुल ने खुद उनको भात परोसा। पागल मानस खुद ही भात सान कर सोना को बड बडे गस्से खिलाने लगे। पानी दे रहे हैं। नमक मिला दे रहे है। जसा करने पर सोना को अच्छा लगेगा वसा कर रहे हैं।

लेकिन सोना खा नही सका। क्योंकि आते वक्त मडप के सामने उसने कटे भसे को पडा हुआ देख लिया है। ऐसा भद्दा दश्य और यह बकरे का मास—भीतर स उसे उबकाई आने लगी।

ताऊजी खा आने पर वह उनके साथ सो नही सका। उसने देखा पागल ताऊ बरामदे पर एक आराम कुर्सी पर लटे हैं। भवार के कुत्ते के लिये वे अन्य एक दोन मे खाना ले आये हैं पेट भर खाकर कुत्ता उनके पैरो के पास सो रहा है। वे सोये नही। मझले ताऊ दिन भर की दौड धूप के बाद खाना खाकर लेटते ही सो गये हैं और उनकी नाक बोलन लगी है। उसन समझ लिया, निकल पडने का वक्त यही हैं। वह ताऊजी को लकर इस समय फीलखाने चला जायगा यही वक्त है। हाथी के पास जरा बठा जा सकता है। वहा जाने पर यह जो भय है—कटा भसा पडा है, कटे भैसे से डर कर वह हाथी के पास चला चला जा रहा है। या इस समय लगेगा कि वह अपने पागल ताऊजी को हाथी दिखलाने ले जा रहा है। हाथी दिखा कर, घास फूल परिंदे दिखा कर वह अपने पागल ताऊ को चगा कर डालगा।

बाग के भीतर स वे चलने लगे। सामने शीतलक्षा नदी। नदी के किनारे किनारे व चलेंगे। सिर के ऊपर निमल आकाश। दोनो ओर पाम वृक्ष। और नदी के

किनारे कितने ही लोग। वे मानो छिपकर हाथी देखने चले जा रहे हैं। कोई देख न पावे इस तरह चुपके चुपके सोना ताऊजी का हाथ थामे चला जा रहा है। सिर्फ कचहरी बाडी पार करते ही नौटंकी मडली के मुखिया ने उनको देख लिया। वे रामायण पाठ कर रहे थे, चश्मे के घिसे कांच म से कौन जा रहे हैं देखते ही जान गया कि वही पागल व्यक्ति अपने नाबालिग भतीजे का हाथ थामे कही जा रहे हैं। इनको देखने ही मुखिया जी को जाने क्यो राजा हरिश्चद्र याद आ जाते हैं। पेड-पाला के बीच स वे जा रहे हैं। अस्पष्ट सा मुख हाथ-पैर और कुर्ते की छाया दिखाई पड रही है। वह मानो सारी जिंदगी अपने गीता मे ऐसे ही एक उदास व्यक्ति के भावो को उभारने की कोशिश करता रहा है—जो केवल सामने की ओर चलता रहता है पीछे की ओर पलट कर नही देखता। उससे बना नही। इस व्यक्ति को देखते ही उसने एक उसास ली।

लेकिन ताऊजी के साथ निकलते ही सोना अपनी सारी तकलीफो रजा गम को भूल गया। वह पहले ही की तरह उछल-उछल कर चल रहा है। वह बार बार चलते ताऊजी को चेतावनी देत चला जा रहा है कि वे हाथी के साथ कोई भी शरारत न करें। अगर उन्होंने किया तो वह बाबा या मझले-ताऊजी को बता देगा ऐसा डर दिखाने लगा।

चलते हुए वे कालीबाडी के रास्त म पडे। बाजार के भीतर से कालीबाड़ी जाने का एक रास्ता है। लेकिन फीलखाना जाना हो तो इतना दूर नही जाना पडेगा। दाहिनी ओर उमेश बाबू का मठ है, मठ के उत्तर म सुपारी का बाग है। बाग पार करत ही आम का बाग। बाग के भीतर हाथी बधा रहता है। लेकिन वह अभी तक उस जगह का आविष्कार नही कर पा रहा है। रास्ते पर खडे-खडे ही उसन घट की ध्वनि सुनी। और उसे लगा बाग के भीतर घुसते ही वह हाथी का आविष्कार कर डालेगा। लेकिन जाने किधर वह हाथी है। इसके बाद ही उसे याद आया कि सबेर वह फीलखाने म रहता है दोपहर को जसीम हाथी को नहलाने नदी ले जाता है इसके बाद कुछ देर वन के भीतर उसको बाध कर रखता है। खाना दिया जाता है। कल के दरख्त और मदार की डालिया। दशमी के दिन हाथी यहा नही रहेगा। सबेरा होते ही जसीम हाथी को बाबुओ की कोठिया म ले जायगा। हाथी के लिये चावल चिउडा लड्डू मिठाई माग लेगा। अलसवेरे वह हाथी के माथे पर चन्दन का तिलक लगायेगा। सोने का बना रग

बिरगा लाल नीला या जरी का साज उसके सिर पर बाध दगा। कमला न कहा है वे कल हाथी की पीठ पर चढ़कर दशहरा देखन जायेंगे। अमला न कहा है सोना तुम हमारे साथ चलोगे। सोना न कुछ भी कहा नही है। वह अब समझ नहीं पा रहा है कि हाथी किस ओर हैं—किस वन के भीतर या किस मठ क बगल स वह जाये या सीध दौड लगाये यह उसकी समझ म नही आ रहा है। सिर्फ कुत्ता सीध वन के भीतर घुसता चला जा रहा है और भूक रहा है। वह समझ गया कि कुत्ते ने हाथी को देख लिया है।

व लोग फुर्ती स कुत्त क पीछे पीछे भीतर घुस गए वन क भीतर घुस कर सोना ने देखा कि हाथी घूम रहा है सामन पीछे डोल रहा है। यह वन, पड-पानव और परिंदो को लेकर हाथी बड मजे मे है। हाथी के पैरो म जजीर है। वह ज्यादा दूर आगे पीछे जा नही पा रहा है। सोना ताऊजी के बगल म। मानो व दो मुग्ध बालक हाथीको तन्मय होकर देख रह हैं। तभी हाथी घुटने मोडकर बठ गया। और सोना व ताऊजी को पहचान कर उसने सलाम किया।

और ववार का कुत्ता भी इनके बगल म बैठे हिज मास्टस वायस की तरह भूक उठा। मानो उसने कहना चाहा मुझे नही पहचानते मैं ववार का कुत्ता हू। सोना के घर म रहता हू। तुम्हारे साथ मैंने एकबार नदी पार की थी, याद होगा।

सोना ने अबकी बार हाथी की ओर न देखकर ताऊजी की ओर देखा। हाथी की ओर वे बच्चे की नाई देखते हस रहे हैं। यह हसी देखकर जाने क्यो लगा कि ताऊजी चगे होत जा रहे हैं। उनके मुख पर सरल निमल हास्य। वह मा को अमला कमला को या फातिमा को भूलकर ताऊजी की पीठ पर दोनो हाथो से गला लपटे झूलने लगा। सोना बोला, ताऊजी कहिय तो जरा एक। पागल व्यक्ति ने कहा एक। कहिये दो। उन्होन कहा दो। हाथी उस समय सड हिला रहा है। उसके गले की घटिया बज रही थी। ताऊजी एक दो तीन कहकर तरकीब से ठीक ठीक गिनती गिन रहे है। सोना इस पागल व्यक्ति क साथ एक दो-तीन या एक से चद्रमा दो से पाख तीन से नत्र—मानो दो नाबालिग वन क भीतर जीवन का पहाडा नये तौर से पढ़ने लगे हैं—सोना स्वर से पढता जा रहा है और ताऊजी बिना गलती के उसका दुहरात पहाडा पढते जा रहे है।

अचानक ही सोना इस निजन वन क भीतर दोनो हाथ ऊपर उठाय चिल्ला उठा बाबा मा मझलदा बडेदा छोटे चाचा, ताई जी मेरे ताऊजी अच्छ हो गये

हैं। यह कहकर वह वन के भीतर दौड दौड कर चक्कर लगाने लगा। कुत्ता भी दौडने लगा। हाथी के गले स घटी बज रही है। पागल आदमी चुपचाप बठ गिनते जा रहे हैं—एक, दो तीन, चार, पाच छह, सात, आठ, नौ।

मालती लेटी तो फिर उठी ही नही। तीन दिन के बाद मालती होश म आई है। आखें खोलकर दखा है। जाने क्या कहने को होकर उसके होठ काप उठे हैं। बता नही पा रही है। मालती न आचल स अपना मुह ढाप रखा है। जितना ही आचल हटाकर जोटन न मालती से बातें करन की कोशिश की है उतना ही मालती मुह पर आचल ढाप सटन बनी पडी है।

होश म आने पर मालती ने जोटन को दखा—जिस जाटन क शरीर म अब जवानी नही रही, जो पीर की दरगाह म आ गई है पान सुपारी या मामूली चावल-कनकी के लिए घर घर धानकूटती चिउडा कूटती फिरती थी उसी जोटन को देखकर मालती को मानो हाथो म आसमान मिल गया। इसके बाद क्या सोचत ही मालती ने अपना सारा भवित य कूत लिया और सख्त बन गई। और इस समय उसे लग रहा है कि जोटन उसकी बहुत बडी शत्रु है। वन-जगल म कहा वह पडी थी उस याद नही आ रहा है। किस तरह यहा आ पहुची वह भी याद नही कर पा रही है सिफ इतना ही उसे याद है कि वह सरकडो के जगल म छिपी हुई थी। फिर तीन जानवर व इसान के नस्ल के कोई नही थ उनको दख कर उसका होश जाता रहा। उसके बाद वह यहा है। और यह जोटन की करतूत है। वह इस समय आस्ताना साहब की दरगाह म है। उस वे बन जगल म फेंक कर चल गए हैं। इस जोटन ने उसके साथ इतनी बडी दुश्मनी क्या की। बन जगल म पडी पडी वह किसी समय मर गई होती ता यह काला मुह किसी को न दिखाना पडता। इसलिए वह जोटन की किसी बात का जवाब नही द रही है।

फकीर साहब दूध लाकर पड तले बठ है। यह दूध इस वक्त गरमाकर पीना है। मालती को नहाना है। मालती हिंदू विधवा युवती है। भीग कपडा म दूध गरमाकर पीना होगा। यह मचान और मडया सब कुछ म एक अपवित्रता है,

जागते ही मालती को पता चल जाएगा। जोटन ने बुलाया, उठो मालती, इसके बाद उसने कहना चाहा, उठकर नहा आओ मालती। लकडी, नया सकोरा, दूध सब कुछ ठीक रखे है, मालती बस उस गरमा कर पी भर ले। दूध गरमाने की भी हिम्मत नही पड रही थी जोटन को। क्योंकि हिंदू विधवा को बड नेम धरम स रहना पडता है। जोटन ने सब ठीक ठाक कर रखा है। लकडी, चूल्हा, नई हाडी। मानो यह कहने की इच्छा हो कि ऐ लडकी तुम इतने दिना से जवानी बाधे रखी हो सपने देखी हो शौहर की सूरत देखकर बडी चुहलबाजिया की हैं—और अब मानो कुछ जानती ही नही हो। यानी मानो कहने की इच्छा हो—इसम क्या, जो होने का सो हो गया है। यह कोई हडिया पतीली तो है नही। यह है सोने का बना तन। छू देने स जाति नही जाती। किसकी जाति ? तुम्हारी या इसान की ? जोटन तरह-तरह से मालती को तसल्ली दिलासा दे रही थी।—उठ मालती। उठ कर कुछ खा पी ले। दूध गरमा कर पी ले।

मालती नही उठी। बदन को कडा किय पडी रही।

जोटन ने फकीर साहब से पूछा किया क्या जाय ?

—क्या करन को कहत हैं ?

—नरेनदास को इत्तला करें।

—तो करें।

—मैं कसे करू ? क्या मैं अकेली जा सकती हू। जोटन न अफसोस भरी आवाज म कहा।

—आपन तो कहा था कि पानी म नाव चले तो आप लगी ठलेंगी। आपने दुरगा का पुतला देखने जाने को कहा था।

—मखौल छाडिय। क्या कीजिएगा बताइए।

—मैं क्या बताऊ।

—जो आप क मन म आव करें। कहकर जाटन मडया के नीचे पहुचकर बोली उठ मालती। अच्छी नेक लडकी। दूध गरमा कर पी ले। फिर चल तुझे पहुचा आऊ।

मालती न अचरज भरी आखो से दखा।

—तुझे पहुचा आऊगी।

मालती हडबडाकर उठ बठी।

—मैं और फकीर साहब तेरे साथ चले चलेंगे।

मालती दोना हाथो स मुह ढापकर बठी रही। इस वाल मुह को लेकर वह कसे जाये। भीतर ही भीतर वह हाहाकार मे डूबी जा रही थी। नही, नही, मैं कहा जाऊगी। किसके पास जाऊगी। दो आखें मुझे जिधर ले जाय मैं चली जाऊगी जोटन। मैं पानी म डूबकर मर जाऊगी।

—क्या हुआ है तुझे ? कुछ भी तो नही हुआ।

पहली बार मालती बोली।—मैं कहा जाऊगी ?

फकीर साहब अब पेड के नीचे से आए।—जाएगी नही तो खाएगी क्या ? मैं फकीर आदमी हू। पेड-पत्ते खाकर जिदा रहता हू, आपको कहा से दूध घी लाकर खिलाऊगा ?

इस आदमी की शक्ल देखकर मालती के चेहरे की रगत फिर उड गई। सफेद दाढी स इस वक्त टप टप पानी टपक रहा है। भीगा अगोछा पहने बैठे हैं। हाथ और गले मे बडी-बडी मालाए और तसबीह। लहसन के तेल से पारा हुआ काजल आखो म सार रखा है। जोटन मडया म बठी हस रही थी। फकीर साहब मानो मचान पर धावा बाल दिय। बोले, कह रहा हू उठिए। नहाइये दूध गरमा कर पीजिए। बूढा आदमी हू मैं, पानी हलकर तर कर दूध लाया हू। और अब आप उस पीएगी नही।

मालती नहा हिली।

फकीर साहब ने अब आखें लाल-लाल करत हुए मालती को डराया।—पीएगी नही आप ? आपकी चौदह पुश्त पीएगी। कहकर फकीर साहब समूची एक लकडी लाकर बोले, उठिये। मैं, भई पागल आदमी हू। अभी नहाकर दूध गरमा कर न पीने से मैं आग लगा दूगा।

जोटन ने फकीर साहब की बात की हामी भरी। अरी ओ उठ भी। यह पागल बौराया तो कोई बचाव नही। क्या तू न खाने पीने से सब कुछ वापस पा जायगी। अगर पा जाती तो मैं तुझमे खाने-पीने को न कहती। उठ।

फकीर साहब न कहा किसका तन है। तन आपका है सोने के तन म स्याही लग जाय तो धो डालिय। साने के तन म कालिख कब तक लगी रहती। मालकिन गगा के पानी में कितना कुछ बह जाता है, लेकिन मालकिन, मा जननी का उससे क्या कुछ बिगडता है। मानो फकीर साहब की कहने की इच्छा हो, मा जननी,

ादी जूठी नहीं होती बफ जूठी नही होती। मा जननी आप लोग अपने ही जल से खुद अपने को धो डालती है।

फिर भी मालती नही उठी। मडया के नीचे नही उतरी। सिर झुकाये एक कोने म बठी रही।

जोटन ने फकीर साहब स कहा, क्या कीजिएगा। आखें धस गई हैं। जाने कितने रोज स बिना खाय पडी है। कुछ भी तो कहती नही।

फकीर साहब बोले, चलू जाऊ। पानी हलका जाऊ। बड मिया की कोषा नाव मिलती है या नही देखू। फिर चलिये अल्लाह के नाम पर किश्ती छोड दें।

कोस भर रास्ता तरने और चलने पर दो चार घरो की बस्ती मिलती है। रास्ते म चलते हुए फकीर साहब ने दो दफ उलटी की। बरसात आने के बाद फकीर साहब पर बडी तगी आ जाती है। दो बकरिया, उनके दूध और कुई कोकाबेली। अब वह पानी म तरकर अपना मुश्किल आसान वाला दीया लेकर वही जा नही सकता जो कुछ भी मिलता है सो किसी के कफन दफन के वक्त। कुई कोकाबेली खाकर पेट कुछ भारी हो गया है।

कोषा नाव लेकर आत आते दिन चढ गया। फकीर साहब ने कुछ खाया नही। जोटन ने बधना भर पानी गट गट पी डाला। साथ मे वह दूध ल लिया। सकोरा लकडी वगरह पटवतन पर उठा लिया। एक मिटटी का बना चूल्हा भी। सब ठीक ठाक कर फकीर साहब बोले आइये मा जननी उठ आइये। दोनो बकरियो को छप्पर क नीचे बाध कर दरवाजा बद कर दिया।

इस बार मालती को उठात वक्त जोटन ने देखा कि मालती उठ नही पा रही है। कमर म दर्द है। लहसन वाला तेल शीशी भर साथ ले लिया। मालती म कह दिया कि घर पर यह तेल मालिश करे।

जोटन ने मालती को मजबूती से पकडा। चक्कर कर गिर सकती है। क्या सूरत बन गई है। चेहरा काला पड गया है। सोने के तन म कौन आग लगाकर चला गया है। जोटन मार भय क इस वक्त मालती की ओर देख नहीं पा रही है। मानो यह लडकी गुस्से का पुतला बनकर बठी हुई हो। मौका महल देखते ही गुस्सा ।। क निय छलाग मार लगी।

फकीर साहब का अच्छी तरह याद है फकीर आदमी की कभी इमारी-बीमारी यहा आकर जोटन न फकीर साहब का एक दिन के लिये भी बीमार नही देखा।

सवेरे सवेरे पेट मे यह गडबडी—किससे बनाया जा सकता है। भीतर ही भीतर दद व मरोड हो रहा है और पेट के भीतर एक जलन सी। और वक्त जिस तरह वे जडी बटी और बेल या पत्तियों का रस पीते हैं उसी तरह इस बार भी जगल मे घुम कर दो हाथो से मसल कर कोई रस मुह म डाल लिया। यह रस पीते ही शरीर के सारे दुख-दद दूर कर हो जायेंगे। धीर धीरे वे नीरोग हो जायेंगे।

फकीर साहब ने जाटन से कहा, आप कुछ भी दो मुटठी मुह म डाल लेती तो बेहतर होता। मुझे भूख नही।

जाटन बोली, बताइये खाऊ भी तो कम। मालती न कुछ भी खाया पिया नही मैं कस खा पी लू।

फकीर साहब ने अध खुले म मालती को अच्छी तरह स देखा। वाकई उसके चेहरे की रगत कोई माफिक नही। फुसफुसाकर कानो मे उन्होने कह दिया कि जोटन उस पकड कर बठी रह। लच्छन कोई अच्छे नही। जाने क्या होगा। किया क्या जाय ? इस समय इस युवती का दिमाग कोई ठिकाने नही। पगलाया सा चेहरा। युवती नारी सती हो तो जसा हो जाता है। फकीर साहब ने अपने बचपन म नदी किनारे किसी नारी के सती हो जाने का किस्सा सुना था। उस किस्से में सती के चेहरे म जो हाव भाव थे ही वही मालती के चेहरे पर। सारा समय वह बठे-बठे आत्महनन की बात सोच रही है।

जोटन ने मालती को कोषा-नाव के बीचोबीच बिठाया। फकीर साहब ने मुश्किल आसान का लप ले लिया साथ म। जब निकल ही पड हैं तो दो चार दिन या दो चार हफ्ते भी लग जायें। गाव गाव लप लकर चक्कर लगाया जा सकेगा। कोषा नाव लाने जाकर फकीर साहब ने कहा है जसा कि अमूमन वे कहते हैं बीबी को लेकर जाउगा कई रात नदी-नाला पर ही रहूगा वसे ही इस बार भी कहा लप लेकर चल रहा हू। बीबी का पेट खुदबुदाने लगा है। और जाने क्या कहती हैं, कहती हैं कि पीहर जायेंगी दुर्गा का बुत देखने। तो दिखा ही लाऊ एकबार। फकीर साहब ने जानबूझकर ही मालती का खबर किसी स नही बताई। ऐसी खबर पाते ही लोगबाग दरगाह की ओर दौड पडते। तब तो दरगाह म ही थाना-पुलिस की कार्यवाही शुरू हो जाती। या न भी हो। क्योंकि खानदान इज्जत आदि की बातें आ पडती। मालती के चहरे पर वही जान मान खानदान का कलक लिपटा हुआ है या वह मानो एक कलकिनी हो—हाय जाने क्या उसका पानी

म यहा जाय। रजित छोटे ठाकुर, तरेदाग और गांव के सभी लोग मानो उसके चारो ओर गोल बनाये खड़े है। यह सारी बातवाग बन जायगी। इस लड़की का न धरम रहा और न मान। कलकिनी है। तभी ही सारी बातें मालती के दिमाग म आ रही थी।

सहसा फकीर साहब ने देखा पत्थतन पर मालती जारोजार रो रही है। यह अच्छा है। व्याकुल हो रोने धोने से मन की ग्लानि मर जाती है। फिर धरती सुजला सुफला लगने लगेगी।

मालती फफक फफक कर रो रही है। मानो मन ही मन रजित से उद्देश्य म कह रही हो, मेरा तो ठाकुर सब कुछ लूट चुका। तुम्ह क्या दूगी ठाकुर।

रात भर गिद्धा की तरह कुछ लोग उसे नोचते-खकोटते रहे। शायद सारी आकाक्षायें जल की तरह झरती जा रही थी। कवल ससलता लहूलुहान शरीर पर जाने कौन लोग प्रेत की तरह रात भर नाचते रहे हैं। तीन वहशी नरक म गोता लगाने की लालच म जानवर जसे टूट पड़े थे—और व काल नाग रात भर उसके जिस्म पर रेंगते रहे हैं। जिसका कोई अत नही और न होने वाला है। नोचते खसोटते बकोटते चकोटते वे वहा से घसीट कर उसे यहा ले गये। मालती अब किसी तरह से भी याद नही कर पा रही है। बस उसे इतना याद है कि जिस प्रकार कब्रिस्तान के अधियारे म मास के लोभ से कोई गीदड मुर्दे की गध सकब्र म घुस पडता है—वे भी बस चलता तो उसके शरीर के भीतर सारे के सारे घुस पडना चाहते थे। मालती को अब तकलीफ हो रही है। हाथ नही रख पा रही है। मालती बैठ नहीं पा रही है। सब सूजा गया है। उसके बेहोश जिस्म के ऊपर वह दृश्य सोचते ही उसके गले स ओक निकल आई।

फकीर साहब ने देखा मालती ओकने लगी है।

जोटन ने कहा न खाने से कै नही आयगी तो क्या, बताइये।

मालती बस ओक रही है। अब वह जारोजार रो नहीं रही। धान खेत के भीतर फकीर साहब लम्बी ठेल रहे हैं। लम्बी मारते मारते वे मदान म निकल आये। सूरज धीर धीरे सिर पर चढ़ता आ रहा है। बदन का चागा उन्होंने खोल डाला है। बस एक लगोटा पहन है फकीर साहब। गले और हाथ की कलाई और बाहुनिया म सारे माला तावीज की आवाजें। और लगता व एक प्राचीन पुरुष हैं तपोवन मे महर्षि कण्व, शकुतला को राजा के पास लिये जा रहे हैं। किसी तरह

से उसे गाव पहुंचाना है। भीतर ही भीतर उनका दम उखड रहा है लेकिन किसी को भी कुछ समझने नहीं दे रहे हैं। बस होश-हवास खाकर लग्गी मारते चले जा रहे हैं।

जोटन बोली, मालती जरा दूध पी ले। मालती तू कुछ खायेगी-पीयेगी नही तो मर जायगी।

मालती कुछ भी नही बोली। आंख देत-दते पटवतन पर लट गई।

इतनी दूर का रास्ता इतनी उम्र म लग्गी ठेलकर पार नही किया जा सकता, मदान म उतरकर यह उनको पता चल गया है। सीधे रास्त से भी अगर चला जाय तो रात काफी हा जायगी। पानी उतार पर है। भाटा क अत म ही पानी उतरने लग जाता है। सीधे रास्त से जाया नहा जा सकता। बीच-बीच म जमीन निकल आई हागी। मघना म उतरकर बादशान तान दन स काफी चक्कर लगाना पडेगा। बल्कि व सानकान्दा के बगल से नाव ले ले जायेंगे। नहीपरदी क मठ के पास नदी म उतर जाओ तो खास कोई तकलीफ नही। पानी म उज्जल का बहाव मिल जा सकता है। फिर भी भीतर ही भीतर बडी पीडा है। जलन। पत्त क रस स पेट की जलन नहा गई। गला और सीना खुश्क हाता जा रहा है।

जोटन समझ पा रही थी कि उनका तकलीफ हो रही है। उसन तवाकू भरी। यह शख्स तम्बाकू पी ले तो बदन म कूवत आ जायगी। फकीर साहब का तवाकू पीने देकर खुद लग्गी ठेलन लगी।

जोटन बोली, मालती ने तो दूध पिया नही। आप पी लीजिय। पाने स ताकत आ जायगी। वर्ना इतनी दूर का रास्ता आप चलिएगा किस तरह।

—नहा बीवी, ऐसा नही हो सकता। कहकर बरसाती पानी लेकर गट गट पी डाला।

यह फकीर साहब और जोटन मालती के लिय जान लडाये दे रहे है। दरगाह मे कोई वहशी आकर मालती को छोड गया मालती कुछ भी नही बताती, पूछन पर सिसकने लगती। शरीर पर अत्याचार के चिह्न उभर आने से मालती अपना दिमाग दुरुस्त नही रख पा रही है। दरगाह म एक बाकया, फकीर साहब न मन ही मन अपन को अपराधी सा पाया। रात का तो वह कब्रिस्तान म जोरा पट्न आदमी के हाथ म मुश्किल आसान देखकर डर स भाग जाते हैं और कहा का कौन हरामी का पिल्ला आकर दरगाह को नापाक कर गया है। सारी गरज अब फकीर

साहब और जोटन की है। आदमी के न मरने पर, उसका इलाज न होने पर फकीर साहब की कीमत नहीं बढ़ती। दिन दिन उसका अभाव बढ़ता जा रहा है। वह दूध जोटन ने पटवतन पर रख दिया है। इतनी चिरौरी विनती के बाद भी मालती वह दूध नहीं पी रही है। यह दूध कितनी कीमती और अनमोल चीज है। जरा सा छलक पड़ते ही गुस्से से फकीर साहब के हाथ-पैर कांपने लगते।

शुरू में फकीर साहब ने घाट पहचानने में भूल की। मुद्दत से वे इस जवार में आये नहीं थे। नवमी का चांद डूब चुका है। चारों ओर सन्नाटा। अधेरे धानखेत में बस कुत्तर का डहरना। दूर से प्रताप चन्द के दुर्गा मन्दिर की डेलाइट गैस-बत्तियाँ नजर आ रही थीं। इस वक्त नाव गुजर रही वाली नदी के कछार के पास। कछार से फकीर साहब रोशनी देख कर आगे बढ़ रहे हैं। चेहरे पर हवाइयां। हाथ पर ढील पड़ते जा रहे हैं। अधेरे में भड़भड़ा कर उल्टी उठ आ रही है। सब के अनदेखे उन्होंने कै कर मुंह धो लिया। माना कुल्ली कर रहे हैं ऐसा ही शब्द अधेरे में। दरख्तों के फुनिंग धान के बिरवा के फुनिंगे अधेरे में उछल कर गिर रहे हैं। प्रताप चंद का घाट पार कर नरेनदास के घाट पर नाव लगाकर फकीर साहब ने कहा आप लोग उतरिये।

मालती पटवतन पर लेट गई थी सो उठी ही नहीं। यह नाव कहां जा रही है फकीर साहब किस मकसद से नाव ले रहे हैं जोटन पतवार थामे हैं उसकी समझ में नहीं आ रहा है। घाट पर आकर नाव लगते ही वह अपने आपे में आ गई। अरे यही तो वह घाट है। यहां बत्तखों को पानी में छोड़कर सवेरे वह यहीं बैठी रहा करती थी। सिर के ऊपर एक कदंब का पेड़। बरसात में इस दरख्त पर बेशुमार फूल खिल रहते हैं। फिर भी इन दो तीन दिनों में ही ये सभी उसके तई अपरिचित हो गये हैं वह एक गैर देश में आ गई है।

ऐसे अधियार में इत्तला करने में भी एक विडबना है। कौन जाने मालती आज कितने दिनों से लापता है। सहसा उतर कर नरेनदास को बुलाने पर वह हहाकार हो हल्ला मचा सकता है। मालती को देख मुहल्लेवालों को बुलाकर फकीर साहब ही को बांध रखे। कहां मिली तुमको यह ? अरे मियां तुम्हारे दिल में यही नीयत थी। भलाई करने आकर फोकट में फंस जाना। लिहाजा काम को बेखटके करने के लिए उन्होंने बदन पोछ डाला। मुश्किल आसान के लप से और वक्तों पर जैसा वे किया करते थे यानी चेहरे पर तेल कालिख लगा कर उसको डरावना बना

डालना—इस समय उन्होंने इसी साज म सज्जित होना चाहा। मानो वे इस गाव म मालती को लेकर नही आय हैं मुश्किल आसान का लप लेकर आए हैं। घर घर म जाने के लिये चोगा पहन कर मुह भर म कालिख पोत लेते ही आखें बडी-बडी और लाल लाल दिखने लगी। वे अब दरअस्ल इस दुनिया के आदमी नहीं रह। माला तावीज के भीतर, काले फटे पैवद वाल लबादे म अब एक जबर दस्त आदमी हैं वे। हाथ के मशाल से अगर वे चाह तो य पडपाड़े चरिंदे परिंदे सब कुछ जलाकर खाक कर सकते हैं। या वे माना वह व्यक्ति हैं जो दूर से दूर चले जाते हैं हाथ म मशाल लिय जाने किस इरादे से वे लगातार चलत जा रहे है। आसमान को रोशनी दे रहे हैं चाहे तो छलाग म समदर पहुच जायें। इस समय एक अलौकिक व्यक्ति जसे ही वे डगमगात हाथ म लप लिये दाम के घर की ओर उठने लगे। इस समय वे एक ऐसे किंवदनी वाले पुरुष लगत जसे चाद बनिये की पतोहू या ईशा खान की सोनाई बीवी के किस्सा म वर्णित है। सन्नाटे वाली रात म ऐसा कौन सा गहस्थ होगा जिसका दिल इस आदमी की हाक डकार पर काप न उठे। वाकई व उस वक्त इसान नही रह जात। रसूल जसा ही माना आसमान जीवन और मदान का अधेरा भदकर निकल आत हैं। लेकिन फकीर साहब भीतर ही भीतर ताकत की कमी महसूस कर रह ह। आखो पर अधेरा घिर आ रहा है। फिर भी रात के अधियारे मे सबको डराने के लिय ही (जब कि हाथ परो म कूवत नही, पेट म सख्त मरोड और ऐंठन है) किसी बात की परवाह किए बिना ही माना धरती फाड कर निकलने की तरह ही चिघाड उठे मुश किला सा न आसान क रे। लगा कि जितनी जोर स वे हाक लगाना चाहते थे उतनी जोर से वे दहाड नही सके। और भी जोर से इस जवार के सब लोगो के दिल को थर्राते हुए हाक देना चाहिए मैं एक आदमी हू जिसका निवास आस्ताना साहब की दरगाह मे है जिसका सारा काम काज इतकाल के बाद कफन-दफन के वक्त मुमबत्तिया जलाना और दरख्त की सबसे ऊची डाली पर रोशनी जलाकर एक अलौकिक जीवन के भीतर घमते फिरना है। हे मा जननिया जन्ममृत्यु जसा यह जिदा रहना भी एक अलौकिक घटना ही है और ईश्वर जसा ही दुख-सुख के जीवन म मुश्किल आसान करे मा जननी कहकर वे अपनी जवानी के दिनो जैसा ही सीना ताने चलने की कोशिश करने लगे। लेकिन नाकाम रहे। कुछ दूर जाते ही जाने कसे घुटने मोडकर वे बठ गये। लप को वे लाठी के सिरे से बिलकुल नहीं

उतार रहे हैं। घुटने कमजोर होने पर वे लाठी और लप म अपनी ताकत ढूढ़ते हैं। वे घुटरुआ चल सकते थे, देते तो बेहतर होता—शायद उनको इस तरह भडभडा कर क आ गई होती। लेकिन भडभडाकर य करते ही बीवी दम्र लेगी, फकीर आदमी की बीमारी भी क्या—वे झटपट रोशनी को सिर से ऊपर उठा कर नीचे के अधेरे म उलटी से निबट कर फिर आग बढने लगे। पानी और कुई पट स निकल रहे हैं। ववार के आवपण स नदी म सडा जल उतर रहा है इस क के साथ उस जल की दुगध भी फल गई।

दरवाजा खोल नरेनदास ने देखा फकीर साहब आगन म खडे हैं। हाथ म वही मुश्किल आमान। ऊचा लम्बा आदमी। सिर पर पगडी। सफेद बाल सफेद दाढी, मुह काला, आखें लाल लाल। वह रोशनी मुह क पास दप दप् जल रही है। आखा की पुतलिया कुछ उलटी हुई। निश्चल। मत्र उच्चारण की तरह बुदबुदाकर गृहस्थ के कल्याण कामना के लिय कुछ बत। लाल नील पील रग के पत्थरो की मालायें गले म। वे पत्थर चमचमा रह हैं। शोभा आपू किवाड के बाहर निकलने म डर रहे हैं। बुआ क लापता हो जाने के बाद रात को कोई आहट सुनते ही व जाग जाते हैं। नरेनदास की आखा म कोई नीद नही। जाने कौन लोग घर के चारा ओर फुसफुसा कर बातें कर रहे हैं।

नरेनदास नजदीक पहुचा तो एक सीक म थोडा सा काजल लेकर उसके माथे पर टीका लगाया। दास ने लप के अदर एक पसा डाल दिया। मिटटी का बना लप। छोटे छोटे मुह हैं लप के। एक मुह पर रोशनी दूसरे मुह पर काजल और दूसर एक मुह मे पसा फेंकने का सराख। नरेनदास ने टीका लगवा लेने के लिये आभारानी को पुकारा शोभा आपू को भी बुलाया। वे टीका लेकर कमरे म घुस गए तो झप्प से अधेरे मे फकीर साहब ने उसका हाथ पकड लिया।—दास, आपकी बहन का कोई पता है।

—मेरी बहन का पता।

—है। मा लछमी को मैंने दरगाह की जमीन पर पाया है।

—क्या कह रहे है आप। अविश्वास की मुद्रा म दास ने चीख पडना चाहा।

हा पाया है। मइया मेरी वनदेवी सी चिल्लाती दौड रही थी। चीख रही थी—बचाओ बचाओ। कौन है मुझे बचा लो।

—आपने बचा लिया।

—हा। ववा लिया। कहकर ही मानो हाक से आकाश को फोड देना चाहा।—मैं पीर हू, दरवेश हू यह देखिये छू मनर से मां जननी मेरे सामने हाजिर हो जाती है। जननी को कोई भी असती वना नही सका- फकीर साहव ने मालती के लिए झूट कह डाला। साथ ही साथ उनको ओज आ गया। लप को ऊपर उठा दिया। नीचे छाया छाया-सा अधेरा। नरेनदास जरा दूर खडे मानो तमाशा देख रहा है। सामने मालती नहीं। कोई भी नही। मानो पागल के सम्मुख खरान की आशा लिए खडा हो एमा ही भाव चेहर पर लिए। पीर साहव अपना मुख लवादे के अदर डालकर आक करते क्या सब निकाल रहे है। खट्टी-गट्टी वदवू के मारे सामन खडा नही हुआ जाता।

यह सब दख भाल कर नरेनदास कुछ बुद्धू-सा बन गया। फकीर साहब के हिम्मत-हौसले के बहुत से किस्स उसने सुन रखे हैं। इस बार वह इनका यह हौसला देखकर शायद दग रह जायगा। जिस बात पर यकीन नहीं होता वही बात वे कह रहे हैं कि मालती मिल गई है। वह विह्वल सा हो आवू की मा को बुला रहा है, सुनती हो आवू की मा, मालती मिल गई है। फकीर माहब सामन हैं। तुम और मैं देख नही पा रहे हैं।

नरेनदास का हाव भाव देखकर फकीर साहव समझ गये कि उनके हाक-दहाड का असर पड चुका है। व रहस्य से भरे फकीर साहब को दख रह हैं। मानो यह शख्स अभी आकाश से उतर आया है। आगन पर खडे होकर उनको पुकार रहे हैं— यह लो मालती को। दे गये। लप इतनी जोर से जल रहा है कि इसी क्षण घर द्वार मे आग लग जा सकती है सारी दिशा प्रकाश से प्रकाशमय। बस पूरब की ओर बेर के दरख्त के नीचे अधेरा छाया हुआ। फकीर साहब उधर पीठ किये खडे हैं। वेर के दरख्त के नीचे मालती को यामे जोटन खडी है।

मिल गई है इस बात पर एतबार जमाने के लिए फकीर साहब ने ला इलाही यूल्लिल्लाह या विसमिल्लाह रहमाने रहीम जसा ही कुछ कहते रहे दास, मा मेरी वन देवी सी भागती जा रही थी, कितनी रफ्तार से भागी जा रही थी। उस वक्त नदी के जल मे बहाव नही रहा, उस वक्त जगल मे पछी चहके नही, मना मती के हाट म दुकानदार वत्ती नही जलाता—दास मा मेरी भाग रही थी तो सारा गाव, मदान, पेड पालो, कब्र सब हाय हाय कर रहे थे। दास, मैं उनको उठा लाया।

कहा। और कुछ उनसे कहा नहीं जा रहा है। हैजे से अब जान चली जा रही है। बहाव पर नाव डाल कर बठे रहन स माटा मिल जायगा। भिनमारे अलीपुरा गाव मिलगा। शेष कोम पर रास्ता बेशक जोटन रात खत्म होत हाते तय कर दरगाह ले जा सकेगी। बहाव पर नाव आ पडते ही फकीर साहब न जोटन से कुछ बातें कहीं—बीवी मेरी जान चली जा रही है। आप मुझे रात रहते रहते दरगाह तक पहुचा दीजिए। सुबह होने पर दहाड मार रोइयेगा नही। अलीपुरा इत्तला भेज दीजिएगा फकीर साहब का रात इतकाल हो गया है। अगर पूछे रात क बजे ?

जोटन समझ नही सकी कि वे ऐसे कसे बोल रहे हैं। इस समय व पटवतन पर लब लट गय हैं। हाथ लगाते ही जान गई कि लबादा चोगा सब तरबतर। जोटन का दिल हाय हाय कर उठा। उसने छाती पीट कर कहा, रात क बजे बताऊ ?

—रात दो पहर बीतत न बीतते।

—उस वक्त ता आप दास के घर पर थे।

—इतनी बाता स आपका क्या काम बीवी। कहकर ही शायद इस शख्स की बोली बिलकुल बद हो गई।

जोटन न हहाकर रोना चाहा तो हाथ के इशारे से नजदीक बुलाया। गोद पर उनका सिर रखे जोटन बठी रही। पानी के खिंचाव से बहती चली जा रही है। पतवार को किसी कदर जोटन एक हाथ से थाम हैं। दूसरे हाथ से धीरे धीरे चोगे लबादे को खोल दे रही है। धोये साफ किय दे रही है। नगे बदन यह आदमी पट वतन पर लबा पडा दोना हाथ सीने पर रखे एकटक अधेरे म जाने क्या देख रहा है। नजदीक आन पर बोले, रोइये मत। अच्छा न लगे तो दरगाह म मत रहिये। बोलते बोलत फकीर साहब का गला भर्रा गया।

अधेरे म नदी का जल धूसर। गाव खेत मदान म जुगनू दिपदिपा रहे हैं। जाने क्यो इस शख्स को बाहा म बाध लने की इच्छा हुई जोटन की। आकाश म कितने तारे दमक रहे हैं। अधेरे म इतने सारे तारे आखें खोले फकीर साहब का इतकाल देख रह हैं। कितन ही दिनो स यही आदमी—एक इसान ही तो है—न रात न दिन वन जगल बेहार मे या फाकाकशी मे दिन गुजारे है सुना जाता है किसी कत्ल की वजह स इस आदमी का अपना घर छोडना पडा था। बेटे-बेटियो को छोडकर, जमीन घर खेत खलिहान, पोखर, किनारे अर्जुन का दरख्त, घान के बखार म चिडिया—चुनमुन उडते थ, सब छोडकर वही आदमी एक दिन खून की जवाब देही

से बचने के लिए बरिशल के भोला इलाके से पैदल निकड पडा था। फिर लबे अरसे तक इधर उधर रूपोश रहन के बाद—*आस्ताना साहब* की दरगाह म एक रात के लिये रुका। दूर से लोग दफनाने आये थे। कब्र स कुछ मुमर्ततिया निकाल कर लाया और इस जगल के भीतर घूमते हुये जाने कब राजा-बान्शाह की तरह उसकी तमन्ना पूरी हो गई। दिन और रात गुजरते जाते और वन के चरिंदे परिंदे पेड पौधे इस बशर के साथी सगी बन गये। वे एक छप्पर बना डाले। बरिशाल म कहा उनका घर था उनको याद न रहा। उन्होंने मिट्टी के एक लप का वही से जुगाड किया। कुछ हदीस के तो कुछ दीन इमान की बातें जाने कैसे सड फड बोलन लग गये। यह आदमी फिर कातिल नही रह गया। फकीर बन गया।

इस शख्स की इस वक्त कजा ए इलाही हो रही है। जोटन बोली, आप फिक्र मत करें फकीरसाहब। आप इसान नही पीर थ। इतना कहत ही उसम हौसला आ गया। इस आदमी को रातोरात दरगाह पहुचाना है। जहा नीम का बडा दरख्त है ऊचा सा टीला उसके तले वही इनको लिटाना है। जो लोग नाव लेकर इधर *कुआरी धान काटने आयेंगे व देखेंगे कि जोटन* पेड तले *एक मुर्दे आदमी को* लेकर जाग रही है। कौन है यह आदमी ?—यह आन्मी है फकीर साहब। फकीर साहब रात को कजा कर गये। रात को इस शख्स न अपने ही भीतर खुद डुबकी लगा ली। इस उम्र तक इस न्ख्स म कोई हारी बीमारी नही थी। बुढापे म जइफी की तरह नही देना चाहिये। मानो कुछ भी न हुआ हो इस तरह धो-पोछकर उनको *एकदम नया इसान* बना डाला उसने। *शरीर* पर मल मूत्र की कोई गध नही रह गइ। हैज से जान गई उसका पता न लगने दिया। मानो इस वक्त जोटन की कसम आप पीर बन गये फकीर साहब।

खिडकी पर इस वक्त तिपहर की धूप। व दाबनी सारे दरवाजे खोले दे रही है इस कमरे म आईन के सामन अमला-कमला इस वक्त सजेंगी। अमला कमला बरामदे पर खडी है। दूर शीतलक्षा का किनारा है। कछार स जो लोग कटा भसा *ले जा रहे थे उनको अमला-कमला देख रही थी।*

व दावनी ने पुकारा, बडी मुनी रानी आइए।

उा लोगो न देखा वृ दावनी बडी अलमारी खोन रही है। उनके फ्राक निकाल रही है। अब वह इतके बाल सवार देगी। वेला ढल रही है। अदर लडो खडा है। व तिपहर को दूसरे बाबुओ के घर प्रतिमायें देखन जायेंगी। साथ रामसुदर जायगा। और व दावनी के पुकारते ही मासो उनम एक खेल शुरू हो जाता है। मगममर की फश—तेजी से भागा नही जा सकता। लेकिन य दो लडकिया कितनी खूबसूरती से चिकने फश पर दौडती हैं। व दावनी के पुकारते ही वे भाग खडी होगी क्योकि वह इतना कसकर बाल बाधती है कि बाल दुखने लगत हैं।

इसलिए व दावनी न फिर बुलाया नही। बुलात ही व भाग जायेंगी। दुबके पर उनक पास पहुच कर उनका पकड लेगी—ऐसा उसने साचा। लेकिन उससे पूव ही इन नटखट लडकिया को पता चल गया। व उस खेल म मस्त हो गये—वे हूबहू दा परियां बन जाती—फश पर खूबसूरत पैरो के बल चलती हाथो से सतुलन बनाय वे भागती रहती—मानो बलेरिना हो। हाथ उठाये नदी के किनारे या अनोखी तरकीब से वे मानो चिकनी वफ पर पैर उठा-उठा कर नाचता। तब व दावनी को गुस्सा आ जाता। वह कम उनको दौडकर पा सकेगी। वह रूठ कर खडी हो जाती। बोलती नही। उसका चेहरा देखन ही वे जान लेती कि वह नाराज है। तब व देर नही लगाती पकड म आ जाती। क्याकि इसी व दावनी के पास वे बचपन से बडी हो उठी हैं।

अमला बोली, मैं आज बाल नहा बाधूगी बुआ।

काम करते करते व दावनी ने एकबार आखें उठाकर देखा। कुछ बोली नही।

अमला की इच्छा है कि उसके बाल फूले हुए रह। गदन तक बाब किय हुए बाल। बाल नीचे पीठ पर उतरते ही काट डालना ठीक नही। अब तुम लोगो की उम्र बढ रहा है लडकिया। इस उम्र म बाल को जरा पढने दो। मैं कस कर चोटी गूथ दू। तब तो बाल की जडें मजबूत हागी। सयानी हो जाने पर सिर म झुर मुर बाल पडने नही लगेंगे।

लेकिन उनके मुख बाब किये बालो म बडे सुदर दीखत हैं। ताजे डफाडिल्स की तरह। कितनी ही बार कहा जाता कि उनके सिर के बाल मुडा दिय जायें। मुडन क बारे म सुनते ही वे पर पसार कर रोने लग जातीं। तब वृ दावनी का भी दिल दुखने लगता। मझलेबाबू स फिर मुडन क बार मे वह जिद नही करती।

जिस तरह मझलेबाबू को जिस जगह और समय से वृंदावनी ने छोटे से बड़ा किया है उसी जतन से ये दो लड़कियाँ भी वृन्दावनी के हाथों क्रमशः बड़ी हो रही हैं। उन्होंने फिर भागना चाहा तो वृन्दावनी ने घुड़की लगाई। गुस्साना चाहा। आलमारी के पल्ला को धम् धम् बन्द कर देना चाहा। लड़कियाँ आ नहीं रही हैं। अपनी मर्जी मुताबिक कमरे पर म फिर भाग-दौड़ रही हैं।

कलकत्ता का मकान होता तो वृंदावनी जोर की घुड़की लगा सकती थी। लेकिन यहाँ वह कुछ भी नहीं कर सकती। कलकत्ता के मकान में वही सब कुछ है। यह न होती तो ये दो लड़कियाँ अपनी माँ जैसी ही आचरण में कुछ और ही तरह की बन गई होतीं। कितनी सुंदर बंगला बोलती हैं वे। पूजा आकार में अथाह भक्ति पूजा आते ही कब से देश गाँव के घर जायेंगी यह कह कर मझले बाबू को परेशान कर देती। यद्यपि पूजा के समय घर की सारी औरतों की तरह वे भी हाथ जोड़े चिक की आड़ में खड़ी रहतीं। भला बलि होने पर खून का तिलक लगाना तिलक लगाते ही शरीर के सारे पाप दूर हो जाते हैं और शरीर में एक पवित्र भाव विराजने लगता है। उनके मुख देखते ही वृन्दावनी को इन बातों का पता चल जाता है।

मझले बाबू की स्त्री यह सब पसंद नहीं करती, करती या नहीं करती यह भी अच्छी तरह से नहीं मालूम लेकिन हरबार पूजा देखने आने के सिलसिले में एक मनमुटाव और वही क्रमशः प्रकट होते होते जाने कब वे दोनों ही एक दूसरे के लिये दूर के हो जाते हैं। वृन्दावनी को पता चल जाता—उन लोगों के स्टीमर घाट पर उतरते ही मझले बाबू बिलकुल सरल बालक सा बन जाते हैं मानो कितने ही दिनों के बाद लौट आये हों। नदी के किनारे उतरते ही वे भूमिष्ठ हो जन्मभूमि को प्रणाम करते हैं बेटियों से कहते हैं यह रहा तुम्हारा देश, बांगला देश तुम लोगों की पितृभूमि फिर चुपचाप चलने लगते हैं। गाड़ी पर चढ़ कर वे घर नहीं जाते। चारों ओर नदी का जल मैदान की घास और पात में लगे पामवृक्षों की छाया में अपने बचपन को याद कर वे अभिभूत सा हो जाते हैं। इस पथ पर किशोर वय में घोड़े पर सवार वे नदी के किनारे किनारे ही दूर चल जाते थे।

वृन्दावनी ने देखा है इस सिलसिले में कोई बकझक नहीं होती। मझलेबाबू कलकत्ते से रवाना होने के कुछ दिन पूर्व से ही लगातार कई रोज सबेरे महाभारत का पाठ करते हैं। शाम को क्लब नहीं जाते। मझली बहू रानी उस समय गिरजे

आतीं। या फादर घर में आते। दक्षिण की ओर दुमंजिले पर जो सफेद मोजेइक का हालरूम है वहीं फादर के पैरों के नीचे बैठी रहती हैं।

और अमला ने देखा है, बाबा पूजा से पूर्व कई दिन मां के कमरे की ओर नहीं गये। मां का मुखड़ा अत्यंत विषाद से भरा और थका हुआ है। रात को बाबा नीचे के कमरे में लेटे रहते हैं। आधीरात को अचानक ही बाबा फ्लूट बजाने लगते दोनों के बीच ऐसा क्यों हो रहा है—वे कुछ भी अनुमान नहीं कर पातीं। सवेरा होते ही दोनों बहनें चुपचाप स्कूल चली जाती हैं। स्कूल से लौट आने के बाद घर भर में भाग-दौड़ करने की उन्हें हिम्मत नहीं पड़ती। मां का मुख विषण्ण प्रतिमा की तरह हो गया है। मां क्रमशः पत्थर बनती जा रही है। इस देश में मां बाबा के साथ किसी चीज की तलाश में समुद्र पार चली आई थी। आखें देखने से लगता उनको वह मिली नहीं। या कभी-कभी लगता है मानो कहीं कुछ वह छोड़कर चली आई हों इस देश में आने के बाद वह बात उनको याद आ गई है। वह सारा समय मैदान की ओर खुलने वाली बड़ी खिड़की पर खड़ी रहती है। मैदान पार करने के बाद वह दुर्ग है दुर्ग के सिर पर हजारों सिराजी कबूतर उड़ रहे हैं। मां यह सब देखते-देखते अनमना सी हो जाती है। हर वक्त जाने क्या ढूंढती रहती हैं।

घर का रोजमर्रा हाल जब ऐसा है तब बदानी दोनों लड़कियों को बंगाल की धरती के बारे में सुनाया करती है। शरद में हरसिंगार खिलते हैं थल कमल के पेड़ ओस से भीगे जाते हैं आकाश निर्मल रहता धूप में सुनहरा रंग निखर आता—यह एक देश है जिसका नाम है बांगला देश इसी देश की लड़कियां हो तुम लोग। ऐसे देश में जब सवेरे सोनल धूप निकल आवे आकाश में जब गगनभरी पंछी उड़ने लगें, खेत खेत में धान की फसल हो नदी से पानी उतर जाने लगे दोनों तट पर रेती निकल आये बबूल या पटकीला दरख्त की डालियों में फटी पतंग फरफरा रही हो और नदी में ताड़ या अनन्नास की नावें हों तभी समझ लेना है कि इस देश में शरदऋतु आ गई है। अमला कमला तुम लोगों ने ऐसे एक देश में नीली आंखें लेकर जन्म लिया, सुनहरे रंग के बाल हैं तुम्हारे अगर तुम कभी हेमंत के खेतों में दौड़ने लगो तो लक्ष्मी प्रतिमा सी बन जाओगी। ऐसी लड़कियां शरारत नहीं किया करतीं। आओ तुम्हारे बाल संवार दूं।

बदानी ने उनको निपुण हाथों से सजा दिया। जब तक वे जीने से नीचे नहीं उतर गई तब तक वह उनको निहारती रही। वे चक्कर लगा कर दादी जी के

कमरे में गई। चाचियों के कमरों में उनसे मिलकर गई। मझले बाबू म्लेच्छ नारी से शादी करने के कारण ऐसे घर में तरह-तरह की उपेक्षा और अवहेला पा रहे हैं—ये दो लडकियां विरासत में एक बडी सी जायदाद दखल किये बैठी है और शायद आखिरकार उनको कुछ भी नहीं मिलेगा—ऐसी भावनायें घुमडती रहने से इन दो लडकियों के प्रति सभी की कमोबेश प्रेम और करुणा है। वे इतनी जियाला और ताजा हैं इतना अधिक अकारण हसती हैं और ऐसी विनयी है—लगता है दम से चलने वाली दो जापानी गुडिया हैं सिर्फ हाथ पर उठाये घूम रही है तो घूम ही रही हैं। इसलिए वे नीचे उतर जाते हैं अदरुनी ड्योढी कुछ सूनी सूनी लगने लगती।

वे धीरे धीरे उतर रही हैं। और चारोओर देख रही हैं। सोना कहीं भी दिखाई नहीं पड रहा है। दोपहर को सीढी के मुह पर सोना मिल गया था लेकिन माथे पर भैंसे के खून का टीका लगाते ही भाग गया है। जाने कहा गया?

नीचे उतरकर देखा गाडी पर खालिक मिया नहीं हैं। हाथी का महावत जसीम गाडी लेकर आया है। रामसुदर पीछे वरदी पहने खडा है।

खालिक को न देखकर अमला आश्चर्य करने लगी। बोली, जसीम तुम।

—हा जी मालकिन जी। मैं ही हू।

—खालिक कहा?

—वह बीमार है मालकिन जी।

—क्या हुआ है?

—बुखार खासी।

सवेरे के रामसुदर और इस वक्त के रामसुदर में बडा फर्क है। इस दिन वह किसी का बदा नहीं। केवल देवीजी का बदा। लेकिन ज्यो ही उसने सुना बडी मुन्नी रानी और छोटी मुन्नी रानी जी पूजा देखने जायेंगी दूसरे बाबुओं के नाट मन्दिर जायेंगी, कुलीन टोल की प्रतिमा देखने जायेंगी—त्यों ही वर्दी पहनकर वह चला आया है। अब देखने पर लगेगा रामसुदर जो कि देवी का बन्दा है इस वक्त इन दो लडकियों का बन्दा है।

रामसुदर ने नागरा जूते पहन रखे हैं सफेद वर्दी और पीतल लगी पटी। पेटी के पीतल फलक पर इस परिवार का प्रतीक चिह्न। उसके सिर पर नीले रंग की पगडी जरी के काम वाली पगडी एक बुलबुल के घोंसले की तरह है। भीतर का

हिस्सा ऊचा होकर टोपी जैसा उभर आया है। सोना इस वक्त देखता तो पूछता, रामसुन्दर तुम किस देश के राजा हो ?

अमला-कमला ने यह सब कुछ भी नही देखा। गभीर सा मुह बनाये गाडी पर सवार हो गई। घर की दासी-बादी या नौकर चाकर के सामने या रवाना होते वक्त कोई चुहल न प्रकट हो इस भय से दोनो अगल-बगल चुपचाप बठ गये और चारो ओर आखें घुमाकर किसी को ढूढते रह। जाने सोना कहा है? या इस वेवक्त वह सो रहा होगा। अमला को यह कहने की हिम्मत नहीं पडी कि गाडी को कचहरी-बाडी का चक्कर लगवाकर ले चलो। यहा आते ही कुछ कायदे कानून सीखने पडते हैं। किसी जगह अकेली जाने पर दादी नाराज होती हैं। बाबा जो कि उनसे इतना अधिक प्यार करते हैं वे भी अदर से बाहर निकलते देखने पर कहते हैं यहा क्यो तुम लोग। भीतर जाओ। हालाकि कलकत्ते के मकान म ऐसे किसी कायदे-कानून म उनका पालन-पोषण नहीं हो रहा है। माली का बेटा उनका कितना सारा काम कर देता है। गुडियो के लिए घर बना देता है। और वे घर भर म, वह भी एक बडा सा मकान है बडे प्रासाद जैसा मकान है, दौड कर किनारा नही मिलता ऐसे एक मकान म उनका पालन पोषण होने के कारण यहा के ये सारे कायदे-कानून उनको दुखी राजकुमारिया बनाये रखते हैं। अमला का बडा मन कर रहा था कि सोना को लेकर पूजा देखने जाय। दो बहनो के बीच सोना बठा रहेगा—भला कितना ही भला न लगेगा सोना के शरीर मे चदन का वास चिपका हुआ सा, ऐसा वास उसे अब कहा मिले। या जाने क्यो उसके दिमाग म आया कल रात को दातावण का नाटक हुआ है, वषकेतु का वह रौनक भरा चेहरा लबी लंबी आखें छोटा-सा मानव और कितनी असीम पितृभक्ति, सोना मानो सतत उसके लिए वषकेतु बना हुआ है। पिछली रात को अमला न चिक की आड से देखा है—सोना अपने पागल ताऊ के साथ महफिल मे बठा था। नाटक देखते-देखते अपने पागल ताऊ के घुटनो पर सिर रख कर वह सो गया था।

वह पागल ताऊ कितने अदभुत व्यक्ति हैं। सारा समय वे रीढ को सीधी रख तन कर बठे थे। हाथ पर हिलाने से ही सोना की नींद टूट जायेगी। और अमला देख रही थी उसकी बुआ चाचिया—सभी बीच-बीच मे चुपके चुपके उस पागल आदमी को देखते देखते अनमना बनी जा रही हैं। झाड फानूस पर उस समय तरह तरह की नीली और लाल बत्तिया जल रही थी।

गाडी क्रमश पेडो की छाह मे कंकड बिछे पथ पर चली जा रही है। घोडे की टाप क्लप-क्लप शब्द कर रही है। बावडी के शांत जल म कमल खिले हैं। और शरद की तिजहरी कुम्हलाती जा रही है। नीला आकाश। पेडो के बीच स बेशुमार लोग नदी किनारे दिखाई पड रहे हैं। सभी मूर्ति देखने निकल पडे हैं।

अमला ने कुछ नाखुश स्वर मे कहा, सोना भी कसा है ?

—क्यो क्या बात है।

—वह कही भी दिखाई नही पड रहा।

अमला बावडी के इस किनारे उस किनारे के कचहरीबाडी पर निगाह रखे है। अगर मठ की सीढियो पर वह अकेला बठा हो, या मोर या हिरनो के घरो को पार कर मगरमच्छ वाली खाई मे झाक रहा हो। नही कहीं भी पेडो की आड से या पत्तियो की जाली मे से सोना का आविष्कार वह नही कर सकी। तब अमला बोली सोना अब हम लोगो के पास नही आएगा।

ऐसी बात पर अमला का दिल लरज उठा।—क्या नही आएगा ?

—वह नाराज हो गया है।

—हम लोगो ने तो उसस कुछ कहा नही।

—नाराज न होता तो क्या ऐसा करता। हमे देखते ही भाग जाता है।

अमला का मानो पसीना निकलकर बुखार उतर गया। कहीं सोना ने अमला से कुछ कह तो नही दिया।

इस समय गाडी नदी किनारे आ गई है। दो सफेद घोडे गाडी खीचकर ले जा रहे हैं। घोडे की टापो का वसा ही क्लप-क्लप शब्द। शीतलक्षा के तट पर वस ही लोग बाग गाडी देखते ही दोनो ओर खडे होकर प्रतिमा सी इन दो लडकियो को प्रणाम कर रहे हैं। रास्ता बिलकुल खाली है। दोनो घोडे दुलकी चाल चले जा रहे हैं।

अमला बोली सोना को कही देखते ही अब की बार उसे बाहो म जकड लूगी समझी। जबरन पकड लाऊगी। देखें वह कहा जाता है।

कमला बोली तू उसके दोना हाथ पकड लेना और मैं दोनो पर। फिर उसको झुलाते हुए हम लोग छत पर ले जायेंगे। सीढी का दरवाजा बद कर देने पर देखूगी कि सोना करता क्या है।

अमला ने सोचा सोना से बिगाड पदा करना ठीक नही होगा, उसे खुशामद से

राजी रखना होगा। सोना को लेकर उसने क्या कुछ कर डाला। कमला के साथ उसने कितनी ही बार ऐसा किया है। लेकिन सोना को लेकर इसका रोमाच ही अलग किस्म का है। अलग ही स्वाद है इसका। उसे डर है कि कमला कही सोना को लुभा कर हथिया न ले। उसने कहा, सोना को झुलाते हुए छत पर नही ले जाऊगी। सोना बडा नेक लडका है। उससे मैं प्यार करूगी।

कमला ने दीदी की ओर देखते हुए कहा तो फिर मैं भी प्यार करूगी।

ऐसी बात स अमला को भीतर ही भीतर एक दद का अहसास हुआ।—यह तेरी आदत है कमला। मुझे जो भी अच्छा लग जाय वह तुझे भी चाहिये।

—मेरी आदत है कि तेरी।

अमला आगे कुछ बोली नही। पीछे रामसुदर खडा है। वह एक काठ का पुतला सा बना खडा है। सामने शीतलक्षा का कछार। कछार पर लगा रहो पागल आदमी अकेले चले जा रहे हैं।

कमला बोली वो देख दीदी, सोना के पागल ताऊजी।

अमला ने पीछे पलट कर देखा वही बालक और साथ म वही क्वार का कुत्ता। नदी का कछार पार करते वे कही जा रहे हैं।

कमला बोली पीछे सोना है न?

अमला बोली, रामसुदर पीछे कौन है सोना है न?

रामसुदर बोला जी, ऐसा ही तो लगता है।

—जसीम, गाडी भगाओ। जोर से। कहकर अमला फ्राक को खीच-खाच दुरुस्त कर बठ गई।

नदी किनारे पुराना मठ है। मठ के त्रिशूल पर एक पछी बठा है। सोना और उसके पागल ताऊजी मठ तक उठ आने से पहले ही वे मठ के सामने पहुच जायेंगे। स्टीमर घाट पार कर जायेंगे। और सोना व उसके ताऊजी को जा पकडेंगे। सोना को साथ ले लगी उसके पागल ताऊ भी साथ रहेगे। वे चार जने, चार जने भी क्यो रामसुदर जसीम और क्वार के कुत्ते का लेकर सातजने घर घर जाकर दुर्गा प्रतिमा देखते फिरेंगे। सबसे अत म पुराना काठी जायेंगे और उस कोठी की मूर्ति देखने के बाद व लडा पर एक बडे मदान म चले जायेंगे। क्वार का अत है इसलिए साझ उतरते ही पाला पडने लगेगा। सफद जुहाई भी होगी। व हाली-हाली न लौटकर ज्यादा रात गये लौटेंगे। साथ म रामसुदर तो है ही— डर क्या है वह

वर्दी पहने वीरवेश म काठ के पुतल की तरह सारा समय सैंडो के पीछे खडा रहेगा।

और तभी सोना न देख लिया, नदी किनार दो घोड दुलकी चाल चल रह हैं। गाडी के पीछे नाटक मडली के लोगा जसा ही कोई खडा है। दूर स सोना सोच ही नही सकता था कि रामसुदर ऐसे एक राजा के वेश म खडा रह सकता है। अमला कमला हाथ उठाये इशारे से उस बुला रही हैं।

सोना ने झट ताऊजी का हाथ खीचा। सोना को देखते ही उन लोगा ने पुराने मठ के पास लडो रोक लिया है। मानो सोना को उठा ले जाने के लिए व खडे हैं। वह उस ओर चला ही नही। फिर वह फीलखाने के मदान की ओर चला जायेगा। वह ताऊजी का हाथ थामे उल्टे पर चलने लगा।

अमला बोली राम, तुम जाओगे। सोना को ले आओगे?

कमला बोली देखा हमे देखते ही सोना कसा भाग खडा हुआ।

रामसुदर गाडी से छलाग मार कर उतरा। वह पामवक्षो की कतारा की आड से होकर सीधे कछार पर उतर गया। यहा बाबुओ ने नदी का किनारा पक्का बनवा दिया है। वह सीढियो से उतर कर कासवन की ओर दौडन लगा।

सोना ने देखा वह राजा का वेश पहना हुआ आदमी। कछार पर उनकी ओर दौडता आ रहा है। कास का जगल बीच म आ जाने से वह दिखाई नही पड रहा है। उसन सोचा कि ताऊजी को लेकर वह झटपट उस कास के जगल म कही छिप जायेगा। अमला कमला ने उसको पकड ले जाने के लिए इस आदमी को भेजा है। लेकिन भागने को होकर ही उसने देखा कि कुत्ता दुम हिला रहा है और भूक रहा है। कुत्ता रामसुदर की ओर झपट रहा है।

सोना भाग न सका। वह कछार पर ही दौडने लगा। कचहरीवाडी जाकर वह मझले-ताऊ के पास गद्दी पर चुपचाप बठा रहेगा। किसी भी तरह से वह अमला कमला के साथ कही नही जायेगा और न लुका छिपी खेलेगा।

कवार के कुत्ते को एक तमाशा मिल गया। पागल ताऊ अकेले नदी किनारे खडे हैं। ताड अननास की नावें जा रही हैं। मिट्टी के भाडे बरतन की नाव बादवान ताने चली जा रही है। नाव उज्जल पर जा रही है। कोई कोई गोन खीच कर ले जा रह हैं। पागल आदमी को देखने पर लगेगा कि सोना के पीछे यह जो कछार पर दौड धूप शुरू हो गई है अमला कमला भी उतर आई हैं—तीन ओर से तीन जने सडसी की तरह धावा कर सोना को दबोच लेंगे फिर लडो पर बिठाकर ले

भागेंगे इन सब पर उनका कतई कोई ध्यान नहीं है। वे मानो इस समय नदी म जो नावें जा रही हैं वह एक-दो कर गिन रहे हैं।

कचार के कुत्ते को एक मजा मिल गया है। सूर्यास्त के समय यह एक अनोखी चुहल है। वह कछार पर खडा भूक रहा है। सोना इधर-उधर भाग रहा है, दौड भागने की कोशिश कर रहा है। सोना के साथ वह भी भाग-दौड रहा है।

रामसुदर बाला, आप लोग क्या उतर आइ।

अमला बोली, ऐ सोना सुन भी। रामसुदर ने क्या कहा उसको उसने सुना ही नही।

साना बाला मैं नही जाऊगा।

—हम लोग दुर्गा प्रतिमा देखन जा रहे हैं।

—जाओ। मैं नही जाऊगा। वह तीन ओर से तीन जन के घेरे म फस गया है। भागने का कोई रास्ता ही नही।

रामसुदर न कहा, आपके न जान पर इनको बडा कष्ट होगा।

—मैं न जाऊ। अडियल जिद्दी बच्चे जसा ही वह एक ही बात बार बार दुहराने लग गया।

तब अमला ने दौड कर सोना को अपनी बाहा म बाध लिया।—कहा जाओगे।

और ताज्जुब है कि सोना जरा सा भी हिल नही सका। कितना कोमल सौरभ है इसके शरीर म, कितने अनूठे नाक-नक्श हैं। यह सब लेकर अमला सोना को अपनी बाहा म बाधे हुए है। इस तरह बाहा म बाध लेन पर शायद कोई भी कही भाग नही सकता।

—चल हम लोगा क साथ प्रतिमा देखन चल। लौटत रास्ते हम लोग बडे मदान मे उतरेंगे। सफेद चादनी होगी। उस समय तुझे एक तरह का पछी दिखा ऊगी। वे पछी उड उड कर चहकते रहत हैं। उन पछिया का रग कितना बगाबग सफेद है। तू देख ले तो हिल नही सकेगा।

सोना बोला लेकिन तुम मुझे   । कहकर ही अमला का मुख देखकर सन्नाटा खीच लिया। कसी चिरौरी विनती है उस लडकी की आखा मे, चेहरा कसा करुण बनाए हुई है अमला। सोना सचमुच फिर कुछ नही कह सका। उसने ताऊजी को पुकारा, आइय, फिर हम लोग मूर्ति देख आवें। लौंडो पर जाएग-आएगे।

पागल ताऊ ने अब पीछे पलट कर देखा। सोना मझले बाबू की बेटिया के साथ

चला जा रहा है। उन्होंने झट गोया नाव की गिनती करना बन्द कर दिया। सोना के पास जाने के लिए चल पड़े।

अमला बोला, अपने ताऊ को साथ लेगा।

सोना ने पीछे पलट कर देखा ताऊजी नन्हे लड़के की तरह चुपचाप खड़े हैं। उसने कहा चलियेगा?

बिना कोई जवाब दिये वे गाड़ी पर कूद कर बैठ गये।

कमला बोली, तू मेरे पास बैठेगा।

अमला बोली धत् यह कैसे हो सकता है। उसकी बात खत्म करने न देकर सोना बोल पड़ा मैं ताऊजी के पास बैठूँ।

कमला बोली, बैठब क्या है रे? बोल बैठूंगा।

—बैठूंगा? सोना की बात खत्म होते ही जसीम ने घोड़ा दौड़ा दिया।

सोना बोला क्यों जसीम मुझे या ताऊजी को तुम चीन्हते नहीं।

—आपकी मां कैसी हैं?

सोना को तो मालूम नहीं कि उसकी मां कैसी हैं। ये चन्द दिनों में ही उसे लगने लगा है कि मुद्दत से वह मां को छोड़कर आया हुआ है। और बीच बीच में जाने क्या उसके दिमाग में यह कौंध जाता है कि लौटकर वह अपनी मां को नहीं देख पायेगा। वह जाते ही देखेगा ताईजी घाट पर अकेली चुपचाप खड़ी हैं और कोई भी नहीं। वह कोई जवाब नहीं दे सका। वह जोर देकर कह नहीं सका कि खरियत से है।—हम लोग कब जायेंगे ऐसी बात भी वह मझले ताऊजी से कह नहीं पा रहा है। बार बार मझलेदा बड़ेदा ने उसे धमकाया है कि आते ही भक्क से रो मत पड़ना। घर जाना कह नहीं सकोगे। जब घाट से नाव खुलगी तभी जा सकोगे। बार-बार जाने क्या आज वह यही सोचता रहा कि वह ईशम की नाव में जा बैठेगा। उस नाव में जाकर बैठने पर उसे लगेगा कि वह अपने गांव खेत के नगीच है।

जसीम ने सोना को जवाब न देते देख कर कहा मां के लिए आपका मन उतावला है।

जसीम ने ठीक ही कहा है। मां के लिये उसका दिल अजीब तरह से भारी बना हुआ है।

जसीम ने कहा फिर जाऊंगा आपके जवार। जाड़ा आते ही हाथी लेकर चला

आऊंगा। आपकी मा का बना पुआ खीर खा आऊंगा।

सोना यह सब कुछ भी सुन नही रहा है। वह घोडे की ओर मुह किये बठा है। दो घोडे, सफेद रग के घोडे टाप की क्लप-क्लप आवाज, पीछे राजा के वेश मे रामसुदर, सिर के ऊपर कितने ही पेड पौधे चिडिया चुनमुन और निरतर ये घोडे मानो उसे दूरदेश ले जाना चाहते हैं। उसने देखा अमला एकटक चोरी से देख रही है। रात की घटना सोच लजा कर अमला की ओर देख उसने मुस्करा दिया।

अमला भी मुस्करायी।—मेरे बगल म बैठोगे ?

सोना ने ताऊजी के मुख की ओर देखा। वहा कोई सम्मति नही है मानो। उसने *कहा, नही।*

अमला बोली, कल दशमी है। बाबा शाम को फ्लूट बजायेंगे। तू और मैं हम लोगो की बालकनी पर बैठे बाबा का फ्लूट बजाना सुनेंगे।

सोना अब भी निमल आकाश देख रहा है। उसको कुछ भी सुनाई नही पड रहा है।

अमला ने फिर कहा बाबा फ्लूट बजायेंगे। कितने ही लोग हजार-हजार लोग नदी किनारे आयेंगे। बाबा का फ्लूट बजाना सुनने आयेंगे। अपनी बालकनी पर तू मैं और कमला। क्यो आओगे न ?

सोना बोला, बुआ, पुरानी कोठी कितनी दूर है।

कमला बोली, यह कैसी बात है रे दीदी सोना तुझे बुआ कह कर बुला रहा है।

अमला ने गुम्मी साध ली। सक्षेप मे बोली बहुत दूर।

सोना ने मानो अमला का दु ख भाप लिया। वह बोला मैं सझा को आऊगा।

कमला बोली सझा नही रे, कह शाम को।

—मैं जानता हू।

—तो बता क्यो नही पाता ?

—याद नही रहता।

—तू हमारे साथ कलकत्ता जायेगा तो बोलेगा कसे ?

सोना चुप किये रहा तो कमला ने फिर कहा तू अगर इस तरह बात करेगा तो लोग तुझे देहाती कहगे।

कलकत्ते का जिक्र आते ही किसी राजा का देश याद आ जाता है। कितने बडे बडे महल जसे हजारो मकान, गाडी, घोडे, किला, रैंपट, जादूघर (*अजायबघर*),

हुबडा व्रिज —यह सब सोचते सोचते वह एक समूचे साम्राज्य का अदाजा लगा लेता। राजा पृथ्वीराज याद आ जाते। राजा जयचद भी। स्वयवर सभा। वह मानो किसी वन उपवन मे अपना घोडा छिपाकर रख आया है। राजकन्या डयोढी पर आकर मूर्ति पर माल्यदान करते ही उसे घोडे की पीठ पर सवार कर वह तेज रफ्तार भागेगा। और जाने क्यो इस दश्य म एक सफेद घोडा है घोडे की पीठ पर वह और उसके सामने अमला बठी हुई है। वह मानो अमला को लेकर नदी जगल मदान पार कर ताऊजी के नीलकठ पक्षी की टोह म निकल पडा है। सोना ने अब बगल के व्यक्ति की ओर देखा। व चुपचाप निरीह सादे सीधे व्यक्ति की तरह बठे हैं।

सोना बोला अमला तुम घोडे की सवारी कर लेती हो।

कमला बोली वाह तू तो अच्छा-खासा बोल लेता है।

सोना बोला मेरी ताईजी कलकतिया बोली मे बतियाती हैं।

—तो तू फिर इतने दिन क्यो नही बोलता रहा।

—मुझे शम लगती है।

कमला बोली दीदी को बहुत अच्छी घुडसवारी आती है। सबेरा होते ही खिदिरपुर के मदान म घोडा लेकर निकल जाती हैं।

सोना चुप हो गया। कोठी कोठी म मूर्ति देखने के बाद बडे मदान मे जाकर उतरे। मदान भर म सफद जुन्हाई बगल म नदी का कछार और कासफूल। नदी का जल धुधला धुधला। आकाश म बेशुमार सितारे। नदी के जल म उनकी परछाई। घोडे उस दुधिया चान्दनी म दौडते जा रहे थे। उनके गल म घटिया बज रही थी। सवार का कुत्ता घटियो की उस ध्वनि पर नाचता हुआ चला आ रहा है। वे मदान म उतर जाते ही उस ओर बसवारी स कुछ पछी उड कर आते मालूम हुए। व गाडी म बठे हैं। बड बडे पछी सफेद चादनी म उडते हुए आखो से ओझल हुए जा रहे हैं। कक कक कर बोल रहे हैं। कसा भयावह-सा लगता है। असख्य विहग इस रात का माना विश्व चराचर म उड उड कर किसी बात पर शोक व्यक्त कर रहे हैं।

तभी लगा कि नदी के कछार पर घुमरी-सी चल पडी है। कितने ही कास के फूल उडते चले आ रहे हैं। सारे पछी वन म खो गय। अब पछियो के कोई शब्द नहीं। केवल कासफूल के बेशुमार धूए असख्य धूए बफ के गोल गिरने की तरह उन पर झरते जा रहे हैं।

रग का गाउन पहन रखा था पलिन ने। चपक फूल जैसी उसकी मखमनी उगलिया कितनी तेज चल रही हैं। अधीर उन्मादी एक इच्छा—उस रात को पलिन रात-भर सो नही सकी थी। मुझे घर जाना है पलिन। पिताजी ने टेलिग्राम भेजा है। उनकी तबीयत बहुत खराब है। इस बार तुम्हारे साथ शायद मेरा जाना नही हो सका। उसके बाद क्या हुआ, उसके बाद सोच नही पा रहे हैं—फिर सब कुछ धुध से भर गया अस्पष्ट हो गया। वे किसी तरह से भी कुछ याद नही कर सके।

अमला अब कान के और नजदीक मुह लाकर बोली, किसी से बताया तो नही।

सोना बेवकूफ की तरह आखें फाडे देखता रहा। जसीम हाथी लेकर पीछे-पीछे लौट रहा है। रामसुदर ने घर की ओर गाडी मोड दी है। वे हाथी लेकर घाडे लेकर जलस बनाये राजा जस लौट रहे हैं।

—तू सोना कुछ भी नही समझता।

तभी पागल आदमी एक रहस्यमय कविता पाठ करने लग गये—

Still, still to hear her tender taken breath

And to live ever —or else swoon to death

Death Death Death—

बार बार डेथ शब्द का दुहराना और घोडे की टाप की क्लप-क्लप ध्वनि। हाथी सबसे पीछे आ रहा है। क्वार का कुत्ता सबसे आगे चला जा रहा है। बीच मे दो सफेद घोडे गाडी मानो राजा महल मे लौट रहे हो। सोना आज अपने को लोककथा के नायक के रूप म पा रहा है।

सबेरे से ही विसजन का बाजा बज रहा है। देवी का मुख विषादमग्न। व फिर हिमालय वापस जा रही हैं। आगमनी गीत जिनका जिनको गाना था इतने दिना तक गाते रहे हैं। अब गाने का कुछ न रहा

इस दिन सभी कुछ पर वेदना की छाप। ऐसा धूप स झिलमिलाता आकाश ऐसा उज्ज्वल दिन कही कोई मलिनता नही—फिर भी जाने लोग क्या गवाय दे रहे हैं। इस मडप के सामने सभी आकर निश्चल हा खडे रह रहे हैं। बडे हुजूर

सबेर से ही नाट मंदिर में एक बाघ छाल पर बठे हैं। रक्ताम्बर पहन। माथे पर रक्त-चन्दन का तिलक। इस दिन—हे मां भुवनमयी, भुवनमोहिनी हे मां जग दीश्वरी, तू एक बार नयन भर देख ले मां—ऐसी प्रार्थना इस व्यक्ति की होगी।

मसले बाबू हर बार की तरह इस बार भी फ्लूट बजायेंगे। नगन डुग्गीवाला अपना ढोलक लेकर आया था। कल कन हाट-बाजार-घाट में डुग्गी पीट आया है।

गांव-गांव में यह खबर पहुंच जाने पर किसान वधू के चेहरे की रंगत बदल जाती है। हांली-हांली खाना खा लेना होगा। शीतलक्षा के तट के गांव। जमींदार बाबुओं की सारी दालान-कोठियां नदी के किनारे किनारे। आंचल में एक चौवन्नी बांधकर पान में होंठ लाल कर घूंघट तान दशहरा में आयेंगी, आने से पूर्व बावड़ी के किनारे बैठकर मसले बाबू का फ्लूट सुनेंगी। हांली-हांली खाना न होने पर जगह नहीं मिलेगी। नदी के किनारे जितने दरख्त हैं उनके नीचे रात रहते ही लोग आकर जमा होने लगे हैं। सैखिहर किसान या उनके महत्तम शामियाना के नीचे नहीं आ सकेंगे। सभी कृषक-वधुओं की अभिलाषा है मसले बाबू को निकट से देखने की। लेकिन सिपाही-संतरी ऐसा करने लगते हैं, लाठी लेकर भगाते कि किसकी मजाल जो शामियाना के नीचे आकर बैठ सके। कितनी ही बार कृषक-वधु ने सोचा है कि वह चोरी छिपे शामियाने के नीचे चली जायगी, गरीब से मसले बाबू का फ्लूट बजाना सुनेगी—लेकिन उसका मर्द बड़ा ही डरपोक है वह किसी तरह से भी अपनी दुलहन को भीतर घुसने नहीं देगा। किस्सा साऊ के दरख्त के नीचे बैठकर वे मसले बाबू का फ्लूट बजाना सुनेंगे। जितनी देर तक नदी के जल में सारी प्रतिमायें विसर्जित नहीं हो जायेंगी तब तक मसले बाबू लगातार फ्लूट बजाते रहेंगे। एक पर एक सुर सभी तान-सुर उस समय कानों में लगते किसी एकांत अन्तःसंसार में जाने क्या निरंतर बजाता रहता है—फ्लूट सुनते हुए वे तल्लीन हो जाते हैं।

सवेरे से ही जगह पर कब्जा जमाने के लिए दूर-दूर गांवों से लोग आने लगे हैं। अमर रसवादियों को फुरसत नहीं मिल रही। मंच बनाया गया है। बावड़ी के किनारे एक मंच बना है जिसमें शहनाई-चौकी बजेगी। शीतलक्षा के उस पार सूर्य अस्त होते ही वे उस मंच पर जा चढ़ेंगे। कलकत्ते से उनके दो चेले भी आये हैं। वे भी बजायेंगे। इस समय मालिक वहां है। मालिक बीमार है। कचहरी-बाड़ी पार करके दाएं एक अस्तबल पाता है। कुछ घोड़े हैं उनमें सफेद और काले

रग के घोडे वही अस्तबल के किनारे खालिक की छोटी-सी कोठरी है। न रोशनी न हवा आती उसम। सूय दिखाई नही पडता। खालिक उस कमरे म मरियल सा बना अनाहार, दुख से पीडित और चेहरे पर क्लेश के चिह्न। खालिक मिया अपने शरीर को सख्त किये पडा है। आज ही सर्यास्त के समय खालिक मर जायेगा। वह कुछ देख नही पा रहा है। सास की तक्लीफ हो रही है उसे, हाथ पर सुन पडे हैं। सभी कुछ पत्थर जसे भारी लग रहे हैं। दशमी के दिन वह भी फ्लूट बजाता है। वह भी मझले बाबू के बगल म बठा रहता है। आज इस दिन वह अपनी उगलिया को हिला हिला कर देख रहा है—नाकाम हैं। भारी हो गई है—पत्थर जसी। इब्राहीम एक बार आकर देख गया है। भूपेंद्रनाथ दो बार आकर देख गए हैं। दवा या पथ्य वह कुछ भी नही ले रहा है। उसे पता चल गया है कि सूर्यास्त के समय फ्लूट बजते ही वह एक अदभुत स्वर लहरी के भीतर डूबता चला जायेगा और ससार के सारे दुख-दद को भूल जायेगा। वह मर जायेगा। फिर भी इस दु समय पर दु समय है या सुसमय वह मन ही मन इसको सुसमय मानता है, मानो वह किसी के चरणो के तले बठकर सारी जिंदगी फ्लूट बजाता रहेगा इसी के लिए तयार हो रहा है।

जब एक आदमी मरने के लिए अस्तबल के बगल मे अटाचित्त पडा है उह समय एक आदमी आदिकाल की एक ताड पर लिखी पोथी के सामने बठे पढते चले जा रहे हैं—जय देहि यशो देहि। यह व्यक्ति महालय के दिन चडीपाठ नही करते। विसजन के दिन चडीपाठ। ऐसी उल्टी बात किसने इस भू भारत मे देखी होगी। वे पद्मासन किये बठे हैं। बाघछाल पर। सामने देवी प्रतिमा। विसजन का बाजा बज रहा है। वे उच्च स्वर मे बोले हे जगदवे हे मा ईश्वरी कहकर सस्वर वे बोलते ही रहे अपराध क्षमा करने की आना हो मा। तू आज चली जायेगी अरी मा उमा, यही शायद तेरी इच्छा थी कहकर व बच्चे की तरह हाथ जोडकर रोने लगे। और रोत रोते व शुभ निशभ वध म चले आए। तो कभी मधुकैटभ वध म देवी के अग-अग से कितना तेज निगत हो रहा है। बदन के रोयें खडे हो रहे हैं। क्यो री मा तू डर गई, पाठ करते समय वे ऐसा एकालाप भी कर रहे हैं।—ऐ मा तुम अब मधुपान करो। रुककर वे बोले मधुपान के निमित्त शरीर मे अपार शक्ति सचित कर चुकी हो— या देवी सवभूतेषु देवी तुम्हारी सास सास म हजार हजार देव स य का ज म हो रहा है वे सब क्षण भर म विनष्ट हो

ाये मा। महिषासुर उनका क्षणभर मे ध्वश कर रहा है। मा क्या तेरी नियति ऐसी ही थी मायापाश म उनको आवद्ध न कर सकी। कहकर वे जो भक्त बगल मे बठे चडी की व्याख्या सुन रहे थे उनको व्याख्या सुनाते समय ही उन्होने देखा एक बालक नाट मदिर के पश्चिम के बरामद के खभे की आड मे खडे ईशम की कहानियों की तरह ध्यान से चडीपाठ सुन रहा है। वही एक किंवदती, गरजे गरजे कौन गरज रहा है! देवी का गजन है या असुर का?

इस वहद ससार मे वही सब कुछ हैं। अमला कमला के पितामह बडे ही रोब दाब वाले व्यक्ति हैं। केवल देवी के सम्मुख आकर वे बच्चे बन जाते है। बच्चे जसा ही रोते हैं। क्षमा भिक्षा करता हुआ चेहरा। उस मुख से चडीपाठ के समय गरजे-गरजे ऐसा शब्द का उच्चारण सुनकर सोना हस पडा था। फौरन एक चिल्लाहट। मानो सारी हवेली थर्रा उठी। सभी दौडते हुए आ गये।—कौन हस रहा है। सोना ने सोचा था कि भाग जायेगा। लेकिन लाल लाल आखें, ईगल पक्षी जसी नाक माथे पर लाल चदन का टीका और कापालिक जसा मुखडा—प्रतिपल उस पर परिवतन की छाया—सोना हिल न सका। बोले ओह तू है। देवी महिमा सुनना अच्छा लग रहा है?

सोना ने गदन हिला दी।

—तो ठहर।

सोना एक खभे की तरह खडा रहा।

बहुत देर बाद वह होश मे आया जब कमला ने उसे पीछे से चुपके-चुपके पुकारा।—सोना यहा तू क्या कर रहा है।

वह कह न सका कि वह चडीपाठ सुन रहा है। ऋषि मुनि ताडपत्ते की पोथियो म कितनी ही किंवदतिया लिख गये हैं जो कि देवी महिमा बन गई हैं। उसके तइ सभी कुछ ईशम का बताया हुआ वह जो सूरज है एक ओर पानी के नीच रुपहली मछली है मछली के मुह म सूरज है या वह मछली क्या जलाली है? जो बस झील पार कर नदी पार कर समदरको चली जाती है मुह म सूरज लिये। सवेरा होते ही सरज को पूरब दिशा म लटका कर फिर वह पानी मे डुबकी लगा लेती। सागर महासागरो मे उसकी गतिविधि।

वह कह सकता था ऋषि लोग ताडपत्ते की पोथियो म किंवदतिया लिख गये हैं। मैं वही सुन रहा हू। कह सकता था, हमारा ईशम इनस बेहतर किंवदतियो

का आकार है। उसका सोचना, बड़ा होने पर वह भी इसी तालाब की सीढ़ियों में छिप जायगा। इसलिए वह गठरी-पाठ सुन रहा है इस बार का यह इस कमला नामक लड़की के सामने प्रकट न कर सका।

सोना कुछ भी कह नहीं रहा है देखकर कमला फिर बोली पीठ पर हाथी आयेगा। हाथी पर हम लोग दशहरा देखने जायेंगे। तू हम लोगों के साथ जायगा।

वस्तुत सोना इस समय ईशम की उस कालरात्रि (महारात्रि भी कहा जा सकता है) में जलाली का झील से निकाल लाया जा रहा है ऐसा एक दृश्य झील के किनारे खड़ा देख रहा है। चान्दनी रात, सफेद पानी ताऊ का चेहरा एक सफेद—बिलकुल चान्दनी जैसा ही रंग का हो गया है यह सब याद आ जाने से कमला की बातें वह बिलकुल सुन नहीं रहा है।

—ऐ सुन रहा है कि मैं क्या कह रही हू ?

—क्या ?

—हमारे साथ हाथी की पीठ पर दशहरा देखने जायगा।

—जाऊगा।

—जरा जल्दी-जल्दी अदर चल आना। हम लोग तुझे सुर्मा-जिन कर देंगे। पौडर लगा देंगे।

—सोना चलने लगा।

—क्यों रे याद भी रहेगा ?

उसने गर्दन हिलाकर बताया कि उसे याद रहेगा। फिर बोला और कौन-कौन जायेगा।

—मैं दीदी सोनादी रमा, बच्चू।

—और कोई नहीं जायेगा ?

—और कौन जायगा मुझे नहीं मालूम। लेकिन तू जरा पहले ही आ जाना। तेरे मुख पर पौडर लगा दूगी।

साना ने अपनी इस उम्र तक कभी पौडर नहीं लगाया। वह मर्द बच्चा है। मर्द बच्चा पौडर नहीं लगाता घर घर ऐसा ही एक नियम है। मा ताईजी भी शायद ही कभी-कभार पौडर लगाती हैं। कहा जा सकता है कि उसने कभी उनको पौडर लगाते नहीं देखा। दूर किसी रिश्तेदारी में जाना हो तो हेजलीन स्नो लगाया है जाड़े में मा ने उसके मुख पर स्नो लगा दिया है। लेकिन इस गरमी में वह पौडर

लगायेगा और मुख और भी सुदर दीखेगा सोचते ही वह शम से सिमट गया।

वह बोला ताऊजी नही जायेंगे ?

—नही।

—ताऊजी नही जायेंगे तो मैं भी नही जाऊगा।

—तू क्या है रे सोना। जो छोटे हैं वही जायेंगे। बडे पदल जायेंगे। दादीजी ने तुझे ले जाने को कहा है। यह कह कर वह जिस फुर्ती स सीढी से उतर आई थी उसी फुर्ती से ऊपर उठ गई। सीढी के मुख पर अमला खडी थी। वह बोली क्या री सोना मिला ?

—हा।

—क्या बोला ?

—बोला जायगा।

—कह दिया है न जल्दी आने को। पौडर लगा दूगी यह भी कहा है न ?

—सब कुछ बताया। तू भी दीदी क्या कहने को होकर वह चुप हो गई। बाबा इधर आ रहे हैं। ये चद दिन धोती चदरे म बाबा बिलकुल बगला देश के आदमी बन जाते हैं। फिर कलकत्ता जाने का दिन आते ही बिलकुल साहब बन जाते हैं। उस समय वे बगला म भी बातें नही करते। बल्कि तभी उन लोगो को बाबा अधिक परिचित से लगते हैं। वे तब बझिझक बाबा से बातें कर सकती हैं।

लेकिन इस समय व भागने का रास्ता ढूढ रही थीं। ऐसे ववक्त व नाटमदिर के निकट चली आई हैं—यह कोई ठीक बात नही। देखते ही बाबा घुडकी लगायेंगे। इसलिए जितनी ही बार व सोना को ढूढने कचहरी बाडी गई हैं बडी सावधानी से गई है। कही अदर डयाढी की दासी नौकरानियो की नजर मे भी न पड जायें। बिलकुल आख मिचौली खेल जसे चोरी छिपे जाना और साना को न पाकर उदास हो लौट आना।

बाबा इस वक्त कारीडोर पार कर जा रहे हैं वे अब अपने कमरे म जाकर दरवाजा बद कर देंगे। बाबा जब नही रहते उस समय उनका कमरा तालाबद रहता है। बडी-बडी आलमारिया—कितनी सारी किताबें काच के बन खिडकियो और दरवाजा के पल्ला पर तरह-तरह की पच्चीकारी। बाबा क कमरे म पुराने जमाने की आबनूस की बनी लबी पलग। बाबा आने पर इस पलग पर न लेट कर एक छोटे-से तख्तपोश पर लेटते हैं। दाहिने ओर के कमरे मे बिलियर्ड-टेबल। अवसर

के वक्त बाबा अकेले ही लाल और नीले रग के गेंद लेकर खेला करते हैं। और दीवार पर बाबा का कोट वाला चित्र है। गवनर के साथ बाबा का दावत खाने का चित्र। विलायत मे लिंकन हाल म पढते समय का चित्र। मा के साथ उतारा हुआ फोटो—शायद वेल्स के किसी गाव म लिया हुआ। ननिहाल जाने के रास्ते एक *बडा सा कस्ल मिलता है। एक कस्ल का चित्र भी* इस कमरे मे है। छात्र जीवन म बाबा का रोबीला चेहरा देखन के लिए दोना बहनें चोरी स इस कमरे म घुस जाती हैं। बाबा स पकडे जाने पर दोना भाग जाती है। सोना ने कहा था बाबा का कमरा देखेगा। अमला ने वादा किया था दिखायेगी। लेकिन कस दिखाया जा सकता। सोना को जरा भी अक्ल नही। बातें करो तो हसता ही रहता। चुपके *चुपके देखकर चला जाय ऐसा तो होगा नही। यह क्या है, वह क्या है लाल और* नीले रग के गेंदा से क्या होता है? मैं दो गेंद लूगा। या वह यह सब देखने-दखते ऐसा अन्यमनस्क हो जायगा कि पकड लिया जायगा। सोना ऐसा लडका है कि उसक साथ कुछ भी किया नही जा सकता। भागा नही जा सकता। वह बुद्ध की तरह बार बार पकड मे आ जाता है।

सोना ने तब भूपेंद्रनाथ से कहा *ताऊजी, मैं दशहरा मे जाऊगा कमला मुझे ले* जायगी। हाथी पर सवार होकर जायेंगे कहा है।

दशमी के दिन तिपहर को यह हाथी आता है। जसीम जरी का काम किया पोशाक पहनता है। सिर पर जरी टोपी। घर क लडक लडकियां दशहरा देखने जाते हैं। हाथी की सूड पर श्वेत चन्दन से बल-बूटे बने रहते हैं। माथे पर पान का पत्ता और शरीर पर तरह तरह क बूटेदार *नक्शे धान की बाली या लक्ष्मी जी के* पैरो की छाप अकित रहते। गले म कदब फूल की माला। ज्यो ही मझले बाबू का पन्टूट बजाना शुरू होगा त्याही हाथी को लेकर जसीम फीलखाने के मदान स रवाना होगा। फिर सीधे अदरूनी डयोढी के फाटक पर। वही हाथी खडा रहेगा। माथे पर चादमाना। उस समय घर की बहूरानिया प्रतिमा स सुहाग माग लेंगी। प्रतिमा के परों पर सेंदूर उडेल कर अपनी अपनी डिबिया म भर रखेंगी। सारा वष यही सेंदूर लगायेंगी। और मझली बहूरानी के लिए भी सान का डिबिया म सेंदूर आता। उस मझले बाबू कलकत्ता जाते समय साथ ले जाते हैं। मझली बहूरानी माथे पर सेंदूर नही लगाती। लबा गाउन पहनती हैं। गिरजे जाती हैं। फिर भी इस परिवार की एक इच्छा ही है यह—खासतौर स बहूमाता रानी का यानी

मझले बाबू की माँ का मन मानता नहीं। सभी बहुओं के लिए जिस प्रकार प्रतिमा के परों से सेंदूर समेट कर डिबियों में रखती हैं उसी तरह मझली बहूरानी के लिए भी समेट कर रखती हैं। मझले बाबू को देते वक्त वे अनुरोध करेंगी कि वह एक बार कम से कम अपने माथे से वह छुवा ले। उस समय मझले बाबू हल्के मुस्कराते हैं। इसके बाद जिसके लिए प्रतिमा के परो से यह सेंदूर समेटा जाता है वह है यह हाथी। इस परिवार की साक्षात माँ लक्ष्मी हैं वह। दशमी के दिन बहूमाता रानी अपने हाथों उसके माथे पर सेंदूर लगा देतीं। फूलमाला पहना देती। इसके बाद ही बाजा बजने लगता है। ढाक का बाजा, विसर्जन का बाजा। परिवार के सारे बालक बालिकायें सजधज कर हाथी पर सवार हो जाते। प्रतिमा निरंजन करने वाले लोग जय जगदीश्वरी जय मा जगदम्बा और जय घर के बड़े हुजूर की—यही सब जय-जयकार करते हुए प्रतिमा निकाल कर ले जाते हैं। इस जय-जयकार के बीच ही सुनाई पड़ता मझलेबाबू मच पर बैठ कर फ्लूट बजा रहे हैं। दक्षिण के दरवाजे से प्रतिमा जाती और उत्तर के दरवाजे से हाथी। और बीच में बड़ा सा चत्वर। उसके बाद बावड़ी। बावड़ी के किनारे रोशन चौकी जैसा मच बना हुआ—वहां से एक के बाद एक तान अलापी जा रही है। नदी में एक एक, दो-दो प्रतिमायें उतर रही हैं। धीरे धीरे नदी तट के काँसवन के सिर पर साझ उतर रही है। आकाश में दशमी का चाँद। और ढाक बज रहे हैं—ढोलक बज रहे हैं। नावों पर देवी प्रतिमाओं की पाँत विसर्जन का वाद्य-वादन हो हल्ला उजियाले अंधेरे की आँख मिचौली। हवाई आतशबाजी आसमान में रंग बिरंगी रोशनियां खिला रही है। वह रह कर मझले बाबू का फ्लूट बजाना—एक करुण-तान इस विश्व चराचर में अपनी महिमा महित विराज रही है। मझले बाबू शायद इसी तान के माध्यम फ्लूट बजाते हुए अपनी पत्नी के प्यार के लिए ही रोते रहते हैं।

आज फिर वही दिन आ गया है। रोजाना की तरह भूपेंद्रनाथ जल्दी जल्दी नदी से नहा कर आ गये हैं। रोज की तरह मोर का घर शेर का पिंजड़ा हिरनों का घेरा—जो जहां पर भी रहता है उन जगहों पर भूपेंद्रनाथ चक्कर लगा आये हैं। ठीक ठीक सफाई हुई है या नहीं हालांकि यह सब देखने का काम नहीं उनका—फिर भी इस हवेली में इतने सारे जीव पाले पोसे जाते हैं हर व्यक्ति की तरह उनका दुख सुख समय बूझकर भूपेंद्रनाथ स्वयं देखभाल कर विधिवत उसकी व्यवस्था करते हैं। इसके अलावा देवी आज हिमालय चली जा रही हैं। कोई

वेदना उनको हर बार की तरह सबेरे स उन्माग बनाये हुए है। फिर प्रत्यह की भांति मठ की सीढ़ियों को तय कर गिवजी के फिर पर जल फूल के पैरों पर जल और सौरभ सीन मीथ कर सी बार घन ध्वनि की उन्हाने।

गानिक बीमार है। कुमीर टोमा स बाजार जाकर देख न्या है। और इस समय जो मान विदाई मांग रहे हैं वे और दूसर भी बढ़न सारे मान कचहरी-बाड़ी म भूपेन्द्रनाथ की प्रतीक्षा म बठ हैं। इसके अलावा निछली गाम को जा सोग कल भता से गय थ वे नय मनाहा के लिए आयेंगे। जिन प्रजाओं को जमीन बांटने बक्त यह तय हुआ था कि वे मां की पूजा म बकरे या भैंस या दूध या केले या मछली देंगे—उन लोगों न ठीक-ठीक दिया है या नहीं न दिया हो तो उनको बुलावा भेजना—यह सब काम भी भूपेंद्रनाथ का ही है। और ऐसे ही सारे कामों म भूपेंद्रनाथ की दोपहर बीत गई। कुछ भी भाव उनको आ नहीं रहा है। विसर्जन प्रतिमा के परों के पास वह चुपचाप बहुत देर तक बैठा रहा था। उसने बड़ी बहू और धनबहू के लिए देवी के परों से सेंदुर समेट लिया है। फिर से बड़ी खामोशी इस हवेली को लीलने लगी। य कई दिन कितनी दौड़धूप। कितना समारोह। सारी हवेली दिनभर गुलजार बनी रही। आज किसी म कोई उत्साह नहीं। सभी बावड़ी के चारों पास जमा हो रहे हैं।

शाम ही को जसीम हाथी की पीठ पर पीलवान के मचान म सवार हो गया। उस समय मझले बाबू गरद की धोती पहन रहे हैं। गरद का कुर्ता। उगलियों में हीरे की अगूठी। लाल रंग के पम्पू जूते। मझले बाबू अपने कमरे से निकल रहे हैं। वे धीरे धीरे चले जा रहे हैं। आगे पीछे परिवार के अमले-कारिंदे। सभी के कपड़ों म अतर की सुगंध। सबके आगे-आगे भूपेंद्रनाथ। उनके बाद रसिक लाल जी और सबसे अंत म बाबू का खास खानसामा हरिपद। मानो दक्खिन दरवाजे से एक जलूस निकल रहा हो। वे नाटमंदिर म आ गये। यहां मझले बाबू दडवत हो गये। देवी के परों की बेल-पत्तियां अंजुरी भर कर ले ली। बड़े-बड़े खंभों के उस पार जब वे अदृश्य हो गये तो सोना को लगा देवी इस समय उनकी ओर नहीं देख रही हैं। देवी उन लोगों की ओर देख रही हैं। उनका सारा मुखड़ा कांप रहा है। चेहरा यों चमक रहा है मानो पसीना चुह चुहा आया हो। वह और भी नजदीक चला गया। दुर्गा देवी की आखों से आंसू निकल रहा है या नहीं यह देखने के लिये वह बिलकुल मंडप के भीतर दाखिल हो गया।

उसने पहलेपहल एक बार सिंह को छूकर देखा। इस समय बावडी के किनारे सभी अपनी अपनी जगह बना रहे थे इसलिए मडप में कोई है नहीं। इस मौके पर इस अच्छा मौका ही कहा जा सकता है, एक बार देवी को वह छूकर देखेगा छूकर देखेगा असुर या उस नन्हे चूहे को। गणेश के परा क पास जो एक कटीले बल पर बठा है। सिंह के मुह के भीतर पहले उसने हाथ डाल दिया। असुर के सीने स जो खून य कई रोज चूता रहा है उस पर हाथ लगा कर उसन देखा—खून सूख गया है और सिंह ने गोश्त के बड़े बड़े लोथड़े नोच लिये हैं। जाने क्या उसे असुर के लिए तरस आन लगा। वह असुर के सिर पर हाथ रख उसके घुघराल बालो को सहलान की मुद्रा म खडा रहा। अब मजा चखाता हू। उसन सिंह की आखो म एक चिकोटी काट दी। नाखून पर कुछ रग उठ आया। देवी की महिमा स सिंह मोना स डर नहीं रहा है। उसने अब झाक कर देखा देवी की आखो स आसू गिर रह हैं। तो तुमको जब जान म इतना दुख है तो यहीं रह जाती। उसन देवी के साथ मन ही मन बात करना चाहा। उसको भय था कि नजदीक जाने पर देवी नाराज होगी। लेकिन कितनी प्यार भरी आखें हैं। उसन कहा क्या मा फिर तेरा वाहन ऐसा जानवर क्या है। मैं उसकी नाक म गुदगुदी करूगा। यह कह कर ज्या ही वह एक काठी उसकी नाक क पास ले गया कि त्यो ही एक आवाज आई—आक छी। आस-पास तो कोई है नही तो छींका किसने। तो क्या सिंह न ही सचमुच छींक मारी। वह सकपका कर भागने को हुआ तो देखा पागल ताऊ मडप की सीढ़ी पर। उन्होंने छींका है। पागल आदमी को ठड नही लगती। ताऊजी क पहली बार ठड लगने स मोना ने सोचा कि तब तो वे चगे होते जा रहे हैं। उसन ताऊजी का हाथ पकड कर कहा मैं हाथी पर चढ कर नदी किनारे जाऊगा।

बावडी के किनारे उस वक्त मझले बाबू पटाखे बजा रहे हैं। सोना को लगा कि उसे देर हो गई है। वह पागल ताऊजी को वहीं छोड कचहरीबाडी भाग गया। झटपट कमीज पेंट बदल डालना है।

जो लोग प्रतिमा निरजन हेतु नाटमदिर आये हैं व कमर म अगोछा बाधे हैं। वे मूर्ति को कधे पर लेकर जा रहे हैं। रामसुदर सिर पर मगल-कलश ले जा रहा है। मूर्ति नदी के कछार पर उतारी जायेगी। वहा आरती होगी—धूप-गुग्गुल जलाये जायेंगे। बडेदा, मझलदा मूर्ति के साथ नाचते हुए जा रहे हैं। वह जा नही पा रहा है। उसके लिए अमला-कमला बठी होंगी। वह हाथी पर जायगा।

भूपेंद्रनाथ ने सोना को पेंट कमीज पहना दिया। बालों में कंघी कर दी। सोना ठहर नहीं पा रहा है। वह बस दौड़कर पहुंचना चाहता है। सभी लोग सब कुछ लिये चले जा रहे हैं। उसके लिए शायद कोई भी कुछ रखे नहीं जा रहा है।

अब धूप उतर गई है। वे हजार हजार लोग नदी के किनारे पाकवन या झाऊ गाछ के नीचे बैठ तल्लीन हो फ्लूट का बाजा सुन रहे हैं। हजार हजार लोग, लोगों के सिरों की गिनती कर बताना मुश्किल है कि कितने लोग हैं—आते ही अपनी अपनी ठाँव चुनकर मझले बाबू का फ्लूट का बाजा सुनने बैठते जा रहे हैं।

अश्वशाला के बगल में एक आदमी है—शायद अब उसका इंतकाल होगा। वह भी तन्मय हो एक हाथ सीने पर रख कर उस सुर में डूबता जा रहा है। वह चित्त पड़ा गंज शहर में जिस प्रकार फ्लूट बजाया करता था वैसे ही सीने पर दोनों हाथ रखे हिला रहा है। वह भी शायद आखिरी बार मझले बाबू के साथ मन ही मन फ्लूट बजा रहा है। आश्विन की ऐसी सध्या में इस धरती पर यदि वह फ्लूट न बजाते तो कौन बजायेगा। बड़ी तकलीफ से वह दोनों हाथ ऊपर उठाये रहा। *यथार्थ में वह आज फ्लूट बजा रहा है।* फिर उसके दोनों हाथ धीरे धीरे सुन्न पड़ते जा रहे हैं। सीने पर हाथ आखें बंद—इस शख्स का दुनिया में कोई अपना नहीं केवल दो घोड़े एक लड़ो और एक फ्लूट है। मझले बाबू जब नहीं होते तो वह चोरी से आधी रात को नदी किनारे अकेले बैठ फ्लूट बजाता था। विभिन्न सुर-तान में वह तन्मय हो जाता था। आज भी वह वैसा ही तन्मय होता जा रहा है। चारो दिशायें बावड़ी का किनारा, शीतलक्षा का कछार, नदी खेत मैदान सब कुछ इस तान के माध्यम हाहाकार कर रहे हैं। मझले बाबू का फ्लूट वादन सुनते सुनते वह आखें मूदे एक अल्लाह जिनका कोई शरीक नहीं—शरीक नहीं—नहीं—अब और उससे सास नहीं ली जा रही है। भीतर एक असह्य दर्द है। हाथों को ऊपर नहीं रख सका। सब कुछ सुन्न पड़ता जा रहा है। आश्विन का एक ढलता दिन यों ही मरता जा रहा है। कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है।

तभी सोना भाग रहा था। हाथी अंदर आ गया है। जसीम बेशक हाथी की पीठ पर बैठा इंतजार कर रहा है। सभी लोग बस उसी के लिये हाथी की पीठ पर सवार कछार पर जा नहीं पा रहे हैं। हाथी शायद उसे बुला रहा है। फ्लूट बज रहा है। बावड़ी के किनारे हजारों लोग। विचित्र वर्णों का मेला लगा हुआ।

इब्राहीम मशीन वाले कमरे म बैठा है। वक्त होते ही रोशनी जला देगा।

अपने पागल ताऊ को ढूढने म सोना ने देर लगा दी है। गोया पागल ताऊ को वह जो कहगा वही वह सुनेंग। ताऊजी अकेल मेले म चल जायेंगे। वह ताऊजी क साथ मेले म घूमेगा। हाथी की पीठ पर वह बैठा नही रहगा। लौटत वक्त पदल लड्डू खाते हुये वह लौट आयगा।

लेकिन न ताऊजी बावडी के किनार न उन लागा की भीड म। इधर सूय अस्त हो रहा है। हाथी इस वक्त अदल्नी डयाऱ्ी म खडा सूड हिला रहा है। कान फटक रहा है। अमला-कमला ऊब रही हैं। शायद जसीम को हाथी छाडने का मना कर रही हैं। वह कचहरी बाडी का मैदान दौडकर पार कर आया। दरवाना क घर पार कर नाटमदिर का वह आगन। यहा पहुच कर उसन सास ली। देख लिया जेब क पस गिर गय हैं या नही। उसे ताव क चमकन हुए चौदह पस मिल हैं। दश हरा देखने क लिए घर की बहूरानिया न घर क अय लड़क-लडकिया की तरह उस भी एक एक पसा दिया है। उसन कहा है कि वह अकला नहीं है। वह और उसके पागल ताऊ। उसन पागल ताऊ के लिए पस दूसरी जेब म रख दिय हैं। मला देखना खत्म हाने ही उन पैसो का वह ताऊजी की जेब म डाल देगा। लेकिन ताऊजी कहीं भी नहीं मिले। उनको ढूढन म उसे देर हो गइ। वह सीढ़िया तय कर रहा है। उसे बडी देर हो गई। वह रसाई घर का लबा बरामदा पार कर गया। इस रास्त स जान पर जल्दी उत्तर दरवाजे म दाखिल हा सकगा। वे उसक मुख पर पौडर पोत देंगे वह पागल ताऊजी पर मन ही मन वेहद खफा हैं। मुह पर वह पौडर नहीं पोत सका। मार अफसोस के उस रुलाई आ रही है। और ठोकर खान या गिरन की परवाह किय बिना वह सरपट दौडन लगा। और पहुच कर देखा कोई नहीं है। न हाथी न जसीम और न अमला-कमला। घर की सारी रोशनिया जल उठी। शायद सब लाग उस छाडकर ही चले गय हैं। वह अकेला पीछे रह गया। अब वह करे भी ता क्या। फिर भी एक बार अमला-कमला के कमर स पता लगाना है। दासी-बादी कोई भी नही जिसस वह कि व कहा गय ? वह जीना चढकर ऊपर आ गया। मकान खाली-सा लगा। दो चार अजनबी चेहरे। कोई उस देखकर भी उससे कुछ बोल नहीं रहा है। उस डर लग रहा है। किसी कदर अमला के कमर तक पहुच जान पर उसे कोई अफसोस नहीं रहेगा। अमला-कमला उस छोड हाथी पर चढकर मेला देखने नहीं जायेंगी। ऐस ही समय

उसने देखा हवेली की सारी रोशनियां गुल हो गई हैं। इतने सारे झाड फानूस, इतना सा वैभव सभी कुछ क्षण भर में अंधेरे में अदृश्य हो गया। बावडी के किनारे फ्लूट नहीं बज रहा है। वह मना उस वक्त भी अंधेरे में बोल रहा है सोना तुम कहां जाते हो। कोई नहीं है सोना। अंधियारा अंधियारा।

ऐसा अंधियारा सोना ने अपने जीवन में कभी नहीं देखा। एक हाथ फासले का आदमी भी दिखाई नहीं पडता। केवल छाया छाया सी। छाया की तरह लोग भागदौड रहे हैं। उसके बगल से एक आदमी दौडकर निकल गया। वह मानो किसी अदृश्यलोक में पहुंच गया है। उसने डरते सहमते पुकारा अमला। तब अंधेरे में से एक सख्त हाथ ने उसका हाथ दबोचकर कहा—किसे बुला रहे हो ?

—अमला को।

— तुम कौन हो ?

—मैं सोना हूं।

—कहां जाओगे।

—अमला के पास। वे मुझे बतायें कि दशहरा में ले जायेंगे। कमला ने कहा है कि मेरे मुह पर पौडर लगा देगी।

—उनके कमरे मे तुम नहीं जा सकोगे। मना है। कोई भी नहीं जा सकता।

सोना बोला नहीं, मैं जाऊगा।

—नहीं। वह मजबूत हाथ किसका है सोना को मालूम नहीं। फिर भी वह इतना समझ सका कि वह किसी औरत का हाथ है। वे दावनी हो सकती है। सोना भय के मारे भौचक्का रह गया। वह रेलिंग पर आकर खडा हो गया। काश कोई उसे देखकर कचहरी-बाडी पहुंचा आवे। उसे लगा सीढी के मुह पर लालटेन। अंधेरे में खडे खडे उसने देखा मझले बाबू ऊपर आ रहे हैं। सामने उनका खास खानसामा हरिपद। उसने फिर वहां से भागना चाहा। मझले बाबू को सहारा देकर लाया जा रहा है। शोक विह्वल चेहरा। सोना दंग रह गया। यह वही आदमी है जिसको उसने कुछ देर पहले ही तल्लीन होकर फ्लूट बजाते सुना है। अब वे एक मूर्छित प्राण हैं। सोना का अंतर हाहाकार कर उठा। अमला-कमला को तो कुछ हो नहीं गया। उनके कमरे का दरवाजा भीतर से बंद है। लग रहा है अंदर अमला कमला भी फफक-फफक कर रो रही हैं।

अंधेरी हवेली से हाथी अकेला लौट गया। कोई भी दशहरा में जा नहीं सका।

कोई बुरी खबर इस घर म आ पहुची है। वह बुरी खबर क्या है कोई भी बता नहीं पा रहा है। परिवार के खास-खास एकाध लोगा को यह बात मालूम है। और भूपेंद्रनाथ उनम हैं। वे द्रुत चल जा रहे हैं। अधकार महल म सभी कुछ का विम जन हो चुका है, अब अकेले एक जनशून्य मैदान म पैदल चलन चल जाना है।

सोना न जिद्दी लडक की तरह कहा अमला के पास जाऊगा।

व न्दावनी बोली नहीं नहीं।

इसलिए सोना बाहर निकल आया और उनकी खिडकी की ओर मुख कर मदान म बठा रहा। रोशनी जल उठन ही वे मैन्शन म सोना को देख ले सकेंगी। देखेंगी वह घुटने माडे घास पर उनके साथ भेंट करने के लिए बठा हुआ है। इन दो लडकियो क प्रति जान क्या आकषण है। सोना मन ही मन सोच रहा है—इनको कुछ हो गया है—बिना सब जान वह यहा स हिलेगा नही।

उस समय भी हाथी जा रहा है। अधेरे पेड-पाला के बीच स हाथी जा रहा है। मशीन घर म इब्राहीम एक टाच लिय बठा है। जान कहा क्या हो गया। रोशनी का कमरा अधेरा किय वह बैठा रहा। केवल हाथी के कान फटकन की आवाज आ रही है। हाथी इस समय चुपचाप नदी के कछार पर चला जा रहा है।

और कही शायद प्रतिमा विसर्जित हो रही थी। पागल ताऊजी जाने कहा हैं। सोना किसी के लिए भी इस जीवन म कुछ खरीद न सका। उसकी दोना जेबों में चमचमाते पसे। ऊपर खिडकी बद है। उस समय नदी म आखिरी प्रतिमा का विसजन हो रहा है। नदी पर जो रोशनी धूप-गुग्गुल और ढाक का वादन—वे सब कुछ बुझ गय स्तब्ध हो गये। कही पर भी कुछ जल नही रहा है। सिफ अधेरा ही अधेरा। ऊपर आकाश—उस निमल आकाश म अनत हजारा सितार। सितारा की रोशनी म माना ससार क सार कल्याण-बोध को बनाय रखना चाहता। खिडकी खुलन पर ही वह उनक लिए कुछ कर सकता है। वह उनका मुख देखने के लिए ही घास पर बठा है। दोना घुटना म सिर छिपाये बठा है।

विसजन क बाद भूपेंद्रनाथ को होश आया। सोना कहा ? वह मिल नहीं रहा। अधेरे म फिर दौड धूप शुरू हो गई। रामसुदर ने आविष्कार किया कि सोना मझले बाबू की ड्योढी के नीचे लेटा हुआ है। सोना वहा सो गया है।

सवेरे सोना को अदर से एक चिट्ठी मिली।—हम लोग भिनसारे के स्टीमर में चल जा रहे हैं सोना। तेरे साथ भेंट नहीं हो सकी।

कचहरीबाड़ी की सीढ़ी पर यह सारा सवेरा अकेला चुपचाप बैठा रहा। आज उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। उसे लगा नदी की चाली पर और बाग के मन में कोई आज चोरी छिपे बस पन्नूट बजाये जा रहा है।

अब उनके लौटने की बारी है। ईशम ने तड़र उठाकर कुछ पता कर या लिया है। अल सवेर उसने नाव का पटवतर धो डाला है। नन्ही के नीचे पेंदे में कुछ पानी जमा हो गया था उसे सबका सं उलीच डाला है। नाव पेंच पाक कर नाव को बिलकुल हल्की बना रखा है। बाल्वान जहां जहां थोड़ा बहुत फटा था—सुई डोरे से कल दिन भर उसकी मरम्मत करता रहा है। कहीं भी किसी वजह से नाव चलाने में कोई दिक्कत न हो। गोन की रस्सी ठीक ठाक कर बठ रहते समय उसने देखा मझले मालिक सबसे आगे आगे आ रहे हैं। बीच में सोना लालटू पलटू पागल मालिक और सबसे पीछे क्वार का कुत्ता।

इस समय स्टीमर घाट पर बड़ी भीड़ है। पूजा की छुट्टी अपने अपने ढंग से गाव में बिता कर लोग चले जा रहे हैं। यह गाव शहर जैसा ही है। यहां हाई स्कूल है। पोस्ट-आफिस है। बाजार हाट आनंदमयी की कालीबाड़ी और बड़-बड़े जमींदारों की हवेली कोठियों में ये पूजा के चंद दिनों की तड़क भड़क—फिर बाबुओं में कोई तो ढाका चले जाते हैं तो कोई कलकत्ता। गाव से सभी एक एक कर चल जाने पर सारी पुरी भाय भाय करने लगती।

भूपेंद्रनाथ का ऐसा ही लग रहा था। वे चले जा रहे हैं। सवेर सवेर व भात और उबली सब्जी खा लिये हैं। किनारे खड़े होकर भूपेंद्रनाथ ने उनको विदा किया। जितनी देर नाव शीतलक्षा पर खड़ी दिखाई देती रही वे किनारे खड़े रहे। जाने क्यों उन्हें इस समय कचहरी बाड़ी लौटने का मन नहीं हुआ। वे सीधे वाली बाड़ी चले गये। सोचा बरामदे पर चुपचाप बैठ के मां का दर्शन करेंगे। पुरोहित कालू चक्रवर्ती बीच बीच में आकर कुशल क्षेम पूछने पर हां हूं करते रहेंगे। और बरामदे पर बैठते ही उस टूटे प्राचीन काई लगे दुर्ग जैसी इमारत में मंदिर का कोई सादृश्य मिलता या नहीं यह देखेंगे। मौलवी साहब की हिम्मत भी क्या खूब कि

यहा हजार-लाख आदमी लाकर नमाज पढना चाहता है। कुर्बानी चढाना चाहता है। यह सब करते ही इस इलाके म आग भडक उठेगी। उन्होंने कहा, मा तुम शक्तिदायिनी हो। तुम ही शक्ति देना मा। वे मन ही मन किसी धम युद्ध का सपना देख रहे हैं। मानो यह मा, आनदमयी शक्तिनायिनी मा अपने शरीर स हजार-हजार देव सैन्य उत्पन्न करेंगी। और महिषासुर वध जसा ही सब वध म उद्यत होगी। हे मा, युग-युग म तुम मुडमाला धारिणी हो।

इसके बाद भूपेंद्रनाथ मन ही मन हसे। उपेक्षा से उनका मुख सिकुड गया। थाने का दरोगा, सदर पुलिस साहब यहा तक कि मजिस्ट्रेट भी बाबुओ के हाथो म हैं। एक तार भेज देने ही स्टीमर म सिपाही मतरी भर कर आ पहुचेंगे। उन्होने उपेक्षा स मुह फिरा रखा। भीतर ही भीतर व इतने उत्तेजित हो उठे कि अपने साथ स्वय ही बातें करने लग। मानो वे एक रणभूमि पर चले जा रहे हो।

उस समय ईशम पतवार पर बठे सोना से बोला क्या जी मालिक मुह काहे लटकाये हो ?

सोना मुह फेरे ही रहा। कहीं ईशम उसका मुख न देख सके।

—अब क्या, अब पहुच कर नाव को घाट पर लगा ही दूगा। आपकी मा जरूर घाट पर खडी रहेगी। जाते ही आपको गोद म उठा लेंगी।

पागल आदमी मणीद्रनाथ नाव की गलही पर बठे हैं। धूप सिर के ऊपर है। ईशम उनसे बार-बार चिरौरी कर रहा है छाजन के नीचे बठने के लिए—वे नही बठे। बिलकुल अचचल पुरुष। पद्मासन किये बठे हैं। धूप स मुह लाल हो गया है। सोना को इस समय यह सब कुछ भी अच्छा नही लग रहा है। वह घर जा रहा है। अमला-कमला अब कितनी दूर होगी। वह घर जाकर मा को किस हालत म देखेगा सो भी नही जानता। एक पापबोध उसे तभी स कचोट रहा है। अमला कमला की रुलाई या वह रात उसे मानो और भी अधिक सचेतन बनाये हुई है। कोई मानो कह रहा हो तुमने यह कोई अच्छा काम नही किया सोना। इसीलिए सारा वक्त वह नाव पर चुपचाप बठा रहा।

घर के घाट पर नाव की आवाज पाते ही धनबहू लपक कर आइ। बडी बहू आईं। उनको यह समाचार मिल चुका है कि पागल मानुस तैर कर या पदल चल कर मुडापाडा चला गया है। जिस दिन सोना लौटेगा उस दिन वे भी लौटेंगे।

नाव से कूदकर उतरते ही सोना अपनी मा से लिपट गया। इतनी देर स मन

जो भारी था अब बिलकुल हल्का हो गया है।

बडी बहू ने कहा क्या सोना, माँ के लिए रोया था नहीं।

सोना ने गरदन हिलाकर नाहीं कर दी।

—जरूर रोया होगा। तेरी शक्ल सूरत ही बता रही है। क्या र लालटू, सोना रोया कि नहीं?

--नहीं ताई जी।

—तो फिर क्या, अब तू अपने ताऊजी जैसा हो हो गया। और पागल मानुष मणीन्द्राथ भी मानो इस उलाहने को समझकर बडी बहू की ओर देखने लगे।

बडी बहू ने कहा, आओ। मानो उन्हें कहना चाहा तुम कहीं चले जाते हो तो मुझे बडी तकलीफ होती है। डर लगता है। मेरा कौन है और।

सोना मानो विश्व विजय कर लौटा हो। अपना नया तजरबा [illegible] मोर और बायस्कोप का बक्स यह सब, सब लोगों को बिना सुनाये और दिखाये उसे सुकून नहीं मिल रहा है। उसने सोचा मालती बुआ को यह पहले वह सब दिखायेगा। फातिमा कछार पर आये तो उसे भी दिखायेगा।

सोना को लगा कि एक लंबे अरसे के बाद वह यहाँ लौट आया है मानो मुद्दत से वह यहाँ नहीं था। सब लोगों से बिना मिले उसे सुकून नहीं मिल रहा। पहले ही बडे कमरे में घुस कर उसने दादा दादी को प्रणाम किया। फिर आंगन में उतर आने के बाद बडी बहू ने कहा सोना, पेंट कमीज खोल आओ और खाना खा लो।

सोना ने यह सब नहीं सुना। वे जाने कब खाना खाकर निकले हैं इसलिए भूख लगने की बात ही है। वे हाथ-पैर धोकर आते ही बडी बहू खाना देगी। लेकिन कोई भी खाने नहीं आ रहा है। सोना दौडकर पोखर के भिड पर पहुंच गया। अर्जुन वृक्ष के नीचे खडा हो गया। दक्खिन के कमरे में आबिद अली बैठा है। छोटे चचा घर पर नहीं हैं। पालबाडी में सुभाष के बाबा नहीं। हारानपाल का घर खाली है। अर्जुन वृक्ष के नीचे खडे खडे सोना ने सब कुछ गौर किया।

सिर्फ पानी में इस वक्त मालती बुआ के बत्तख तर रहे हैं। वह पोखर के किनारे किनारे बेल के पेड के नीचे चला गया। यहाँ से शोभा बाबू का घर दिखाई पडता। घुटना डुबान पानी हल कर वह उनके घर जा पहुंचा तो देखा नरेनदास घर पर नहीं हैं। घर भाय भाय कर रहा है। शोभा आबू नहीं हैं। उनकी मां भी

नहीं। यहां तक कि मालती बुआ भी नहीं दिखाई पडी। सिर्फ उसे लगा कि उन लोगों के करघे घर में बैठा कोई तबाकू काट रहा है।

सोना को सारा मामला अजीब भूतहा-सा लगा। कोई नहीं। वह अकेला है। सूर्य अस्त हो चुका है। लेकिन कितने ही मकान खाली पडे। उसमे एक डर-सा समा गया। झटपट आगन पार कर उसने घर की ओर दौड भागने की सोचा। और तभी उसने देखा मालती बुआ एक मटकोला पेड के नीचे खडी हैं। अकेली। निर्जन में जाने किसके साथ बातें कर रही हैं।

वह नजदीक गया। और कोई दिन होता तो मालती बुआ उसे बाहों मे समेट लेती, दुलारती। लेकिन आज मालती बुआ की आखें कठोर हैं। बाल नही सवारे हैं। सूरत रूखी रूखी। बीच-बीच म थूक रही हैं। बीच-बीच म नहीं, मानो सारा समय ही—कोई अशुचि उसके शरीर मे है तभी हर वक्त थूकती हुई अपने शरीर को पवित्र बनाये रखना चाहती हैं। और जाने किसके साथ बुदबुदाती बोल रही हैं। सोना को देखने के बाद कुछ बोल नहीं रही। खडी हैं तो खडी ही हैं। ऐसा नहीं लगता कि वह सोना को पहचानती भी हो। इसलिए सोना पेड के नीचे जाकर खडा हो गया। सोना अपना बायस्कोप का बक्स दिखाने आया था लेकिन अब ऐसा रूप देखकर वह कुछ बोल भी नही सका। मालती बुआ को कोई बीमारी हो गई है। बीमार हो जाने पर लोगो का चेहरा ऐसा हो जाता है। सोना फिर ठहर न सका। वह दौड कर आया और ताईजी से कहा मालती बुआ पेड के नीचे—वह बात खत्म भी न कर सका कि ताईजी ने कहा उसके पास मत जाना। उसको *तंग* मत करना।

उसने ताई जी से पूछा छोटे चाचा कहा? शोभा आबू नरेनदास कहा? पालवाडी मे सुभाष के बाबा नहीं हैं। यह सब सुन कर बडी बहू ने बताया कि किसी फकीर की दरगाह पर मेला लगा है। सारा का सारा गाव उसी मेले म टूट पडा है।

ताईजी की बात सुनकर सोना को लगा कि इस दुनिया म फिर एक किंवदती का जन्म हो रहा है।

यह एक अलौकिक क्रिया सी है। क्योंकि एक रात म दो घटनायें कैसे घटित हो सकती हैं। न घटित होती हैं और न हो सकती हैं। आधी रात के वक्त नरेनदास के घर मे फकीर साहब का अलौकिक आविर्भाव। साक्षात मा लक्ष्मी या जननी की

भाति मालती को फकीर साहब सौंप गये। और ताज्जुब है कि दरगाह के लोग या जो लोग फकीर सहाब को दफनाने आये थे उन्होंने देखा है कि फकीर साहब की बीवी लप जलाय उस रात को बठी है। बगल म तावूत के अंदर फकीर साहब का शव। अलौकिक के सिवा यह घटना क्या है। दस कोस का फासला—नदी-नाला का इलाका। ज्वार कब आता कब जाता किसी को पता नही चलता। उसी ज्वार मे फकीर साहब की बीवी ने दिन भर का रास्ता लमहे भर म तय कर डाला था। लोगो के मन म अनास्था घरन कर सकी। गाव मदान नदी नाला या देश—खबर पहुचने म देर नही लगी। नरेनदास ने सभी से फकीर साहब क अलौकिक आविर्भाव की बात प्रचारित कर दी थी। आधी रात को अल्लाह रहमान रहीम कहकर उस ऊचे लबे पुरुष का आगमन और मृत्यु का समाचार सुनते ही नरेनदास को लगा था कि फकीर साहब का सिर योजन भर ऊचे उठ गया था। और दुखियारी मालती को उन्होंने अपने चोगे के भीतर से छोटी सी गुडिया की तरह निकाल कर लमहे भर मे हवा म लीन हो गय थे इस घटना से फकीर रातो रात पीर बन गये। फिर किवदती। धम की नाइ या उस ताड पत्र की पोथी की तरह बस किवदती ही। आस्था को लेकर निरतर विवादग्रस्त दो साम्राज्य। उसके एक बगल म वह है। मदान पार करते ही चरागाह और चरागाह के उस ओर फातिमा।

फातिमा के आते ही उस दिन उसी शाम को सोना ने उसे बायस्कोप का बक्स दे दिया।

—किसने दिया सोना बाबू।

—अमला ने।

—क्यो दिया ?

—मुझसे बहुत प्यार करती है।

फातिमा अर्जुन वक्ष के नीचे खडे चुपचाप सोना बाबू का मुख देखती रही। फिर बोली बायस्कोप का बक्स मुझे नही चाहिये।

—सोना बोला क्यो नही चाहिये।

—नही चाहिये। मैं नही लूगी।

सोना बोला क्यो नही लोगी ?

फातिमा कुछ न बोली। सोना बाबू मुडापाडा से लौट आया है सुनते ही पानी हल कर वह यहा आ गई है। अब चरागाह पर ज्यादा पानी नही। बस पर के पजे

भर डूबते हैं। फातिमा सोना बाव से आगे कोई बात न कर साड़ी जरा ऊपर उठा कर पानी म उतर गई तो सोना ने कहा, अमला मेरी बुआ लगती है।

फातिमा ने गदन मोडकर देखा और उल्टे पर लौटकर बायस्कोप के बक्से के लिए हाथ पसार दिया।

देने से पहले सोना न फातिमा को शीशे पर आख रखने को कहा। वह चित्र बदल बदल कर दिखाने लगा। इन चित्रों म फातिमा अलीफ लला की भेदभरी दुनिया का आविष्कार कर हक्का बक्का बनी रह गई। मानो इस बार आखें उठाकर कहने की इच्छा हो उसे—सोना बाबू इतने दिन कहा थे। फिर उसकी आखें देखने पर ही पता चल जाता कि दिन ढलते ही वह पोखर किनारे अमरूद के नीचे आकर खडी रहती थी। उस पेड के नीचे से इस किनारे का अर्जुन वक्ष साफ नजर आता है। अजुन के नीचे आकर कोई खडा हो जाय तो वह भी स्पष्ट दिखाई पडता। सिर्फ जेठ आसाढ म पटसन के बिरवे बडे हो जाने पर दोनों ही पेड के नीचे के हिस्से ढक जाते हैं। कोई किसी को देख नहीं पाता। अमरूद के नीचे खडे होने पर इस पार अजुन की छाया म कोई खडा है या नही समझ में नहीं आता। पटसन कट जाते ही फिर सब बाधायें हट जाती। दिन ढले फातिमा अमरूद के नीचे खडे होते ही जान लती कि सोना बाबू कहा हैं? वह तिपहर को पेड के नीचे खडी रहती रही। फिर भी उस बाबू की सूरत एक बार भी दिखी नहीं। कुछ रूठी हुई सी थी। बायस्कोप का बक्स देते ही उसका रूठना पानी पानी हो गया।

फातिमा बोली, नानी कहिन एक बार जायेक।

सोना बोला, कहना चाहिए नानी ने जाने का कहा है।

—यह तो किताबी बोली है।

—किताबी बोली म बात करना सीख ले।

—मुझे लाज लगती है।

—मुझे भी। कहकर वह हा हा हस पडा। अमला बुआ ताईजी की तरह बातें करती। मुझसे कहती सोना जाव क्या है रे, जाऊगा कहा करना।

—आपने क्या कहा?

—कहेन लाज लगती।

—मुझे भी। कहकर ही फातिमा पानी मे उतर गई, फिर सारे मदान म पानी छिडकाती मदान के उस ओर जाकर अमरूद के नीचे पहुच हाथ उठाया।

सोना ने भी हाथ उठाया। सिगनल पाकर अपनी अपनी गाड़ी म अपने-अपन घर की ओर वे चल दिये।

दक्खिन क कमरे म घुस कर सोना ने देखा कि अलीमद्दी भी नही है। सिफ आबिद अली बठा है। अलीमद्दी और छोटे चाचा क लौटन म देर लगेगी। वे फकीर की दरगाह गये हैं। इसलिए इतन बडे मकान म कोई मद मानुस नही रहगा रात को चोर चाइयो का उत्पात है। इसलिए शचीन्द्रनाथ आबिद अली को घर पहरा देने छोड गये हैं। आबिद अली रहगा खायगा और घर की रखवाली करेगा। सोना न खुद एक लालटेन लाकर बठक क बरामदे पर रख दी।

सोना ने आबिद अली से कहा, आप नहीं गये ?

—कहा ?

—फकीर साहब की दरगाह ?

—कल जाव।

क्योकि ईशम जब आ गया है तो उसके रहने की कोई जरूरत नही। सभी दरगाह जायेंगे। फुसत मिलते ही चले जायेंगे।

कही भी जाने की चर्चा हो तो सोना का मन भी जाने का होने लगता। मेले की याद आते ही सकस की बात याद आ जाती और दोनो शेर क बारे म भी। जाने क्या सोच कर अब वह लालटेन पर झुक गया। आज भी पढाई स उनकी छुट्टी है। कल से कल से भी नही कोजागरी लक्ष्मी पूजा खत्म होत ही रात दिन जाग कर पढना। स्कूल खुलते ही इम्तहान। इसलिए जरा समय पाकर वह आबिद अली का मुख निहार रहा है।

आबिद अली अब एक निर्जीव सा व्यक्ति बन गया है। जब्बर अब भी लापता है। आबिद अली का अग-अग अब ढीला पडने लगा है।

जलाली के घर जाने के बाद उसकी दूसरी ब्याही बीबी उसकी तगी गरीबी को महसूस नही करना चाहती। हर वक्त एक खाऊ खाऊ सा रख। जो पकाएगी खुद अकेली खाएगी उसे पेट भर खाने भी नही देगी। इस घर म रात को उस पेट भर खाने को मिलगा। उसकी खिचडी दाढ़ी के भीतर भर पेट खाने की लालच स भरा चेहरा उभर आया है। सिफ आखें देखते ही पता चल जाता है कि जब्बर उसको सब की नजरो से गिरा गया है। थाना-पुलिस की कारवाई हुई होती लेकिन

फकीर साहब के ऐसे करिश्मे के बाद सभी लोग सभी कुछ भूल भाल कर दरगाह के मेले म मस्त हो गये हैं।

और सबसे आश्चर्यजनक है यह मालती। उस रात को मालती के लौट आन पर हो-हल्ला मचाकर नरेनदास ने लोगों को इकट्ठा किया था। शोर शराबे म सब कुछ समझना तो मुहाल था—लेकिन जसा कि उसने बताया उससे यही बात निकलती कि फकीर साहब कोई मामूली इसान नही थे। छू मतर स आग की एक लौ लपलपा उठी थी—और उस शिखा के प्रचड प्रकाश म ऋषियो के सहस्र मुख इस आगन म प्रतिभात हो उठे थे—फकीर साहब मानो कह रहे हो मेरी जननी को कोई असती नही बना सका नरेनदास। उसको तुम उठा ला। सारा का सारा मामला नरेनदास को सीता का वनवास जसा ही लगा था।

मालती अधेर म चुप्पी साधे। वह कुछ भी बोल नही रही थी। पत्थर के बुत जैसा ही कठोर चेहरा है उसका। केवल आखें धधक रही थी। वह खामोश सूनी निगाह लिये बरामदे मे चिड़ियाखान के जीव जैसी बैठी रही। अडोसी पडोसी आकर उसे देखकर जा रहे हैं और अलग अलग मतव्य प्रकट करते जा रहे हैं। फकीर साहब जसा कोई आदमी नहीं। वे अल्लाह के बदे हैं।

इस तरह एक दिन गुजरा। दो दिन भी। जाने क्यो नरनदास अपनी बहिन को फिर से चौके या रोटी पानी म शामिल न कर सका। जाति से यवन ये इसान नही वे चुरा ले गये थे इसलिए शेर छव ता अठारह घाव और यवन छून पर छत्तीस। उसने मालती के लिए घनकुट्टी के छप्पर म कोने म एक कोठरी बना दी। उसी कोठरी म बत्तख की तरह एक दिन सवेरे मालती हेल गई।

और ताज्जुब है कि ऐसी कोठरी म ऐसी एक सुदरी विधवा को अकेली रहने का हौसला मिल गया। उसके शरीर म अब क्या रह गया जो आदमी जबरन छीन सकता हो। इतने दिनो तक वह लाड प्यार जतन से उसका लालन कर रही थी। और आकाश मे विभिन्न प्रकार के नक्षत्रो की छवि देखन पर जो उसे याद आ जाता था, वही रजित एक युवक उसे बिना बताये वह कही चला गया है उसे वह कुछ भी नहीं दे सका। इस जूठे जिस्म की बात सोचते ही उसके मुह म थूक आ जाता। वह दिन भर पानी म डूबे रहना चाहती है। पानी म उतरते ही उस लगता कि उसका शरीर पवित्र हुआ जा रहा है। जल म डूबे रहने पर लगता, अहा गगा मायी की गोद म कितनी शाति है। वह डूब गई या नही, उसका आचल या बाल

कही पानी के ऊपर तर तो नही रहा, जाडे की रात या गरमी की तपन मे यही उसका अकेला प्रश्न है।

पडोसी बालको के लिये यह एक तमाशा-सा बन गया। मालती बुआ उदबिलाव की तरह बस पानी मे डूबती-उतराती रहती हैं। वे किनारे खडे खेला करते या हसी मजाक किया करते बताना बुआ का आचल पानी के ऊपर उठ आया है। या बाल, नही नही बाल नही तुम्हारे पर की उगलिया दिखाई पड रही हैं, हाथ की उगलिया भी तुम्हारी धोती पानी के भीतर हवा पाकर बादवान बनी जा रही है। तुम्हारा सब कुछ डूबा नही, कुछ न कुछ तुम्हारा जल के ऊपर तिर रहा है, ऐसा जब सारे बालक कहने थे तो मालती का मुखडा बिलकुल करुण हो जाता। तो फिर मरा सब कुछ नही डवता कुछ न कुछ तिरता ही रहता। सोना देख देख मैं डूबी हुई हू या नही।

सोना कहता बुआ तुम डूब गई हो।

इसके बाद ही सारे घाट पर पानी छिडक कर मालती ऊपर उठ आती थी। चारा ओर एक अपवित्र-सा भाव। वह बाल्टी से पानी छिडकाती और घर की आर चलती जाती। शचिता की सनक स ग्रस्त मालती पानी म डूबे रहते रहते बिलकुल श्री-हीन रूखी और पागल सी बन गई। रात भर मारे अभिमान के उसकी आंखा म आमू आ जाते। आखा म नीद नही। सोना जब भी आया है देखा है मालती बुआ पानी म तर रही हैं। पानी से किसी तरह निकलना ही नही चाहती। मुख बडा करुण है। उसके शरीर स जाने कौन लोग प्राणपाखी लेकर भाग गये हैं। नरेनदास हाट परवार कर पानी स उसे निकाल ल जा रहे हैं।

इस प्रकार सोना की शरद ऋतु बीत गई। पूजा की छुट्टियां खत्म होते ही शशीभूषण आ जायेंगे। हेमत क दिना म पढ़ाई तगडी होती है। सवेर और शाम ज्यादा देर तक शशीभूषण अपन पास पढ़ाने क लिए उस बिठा रखेगा। कुछ दिन हुए पागल ताऊजी कहीं जा नहीं रह हैं। सोना का ख्याल है कि वही ताऊजी को शांत और धीर स्थिर बनाये दे रहा है। वह बीच-बीच म ताऊजी का चिलम भर देता है। व तमाखू पान हैं। बठ बठे अपन मन वही कविता दोहराते रहत हैं। नहाने क वक्त नहाना खान क वक्त खाना। रात को उनक पलग की मज के एक किनारे छोटे बह का माइ मगन बगला व्याकरण लिय बठ रहत हैं। मानो पढ़ाई म बडा ध्यान है। कभी व सोना का स्लट लकर उस पर पेंसिल स तरह-तरह की तितलियां

बनाते या सूना-सा वास का एक पुल या मैदान का चित्र बनाते किसी को भी अब परेशान नहीं करते। लक्ष्मीपूजा के लिए साना टुनीफूल लेन गया था। ताऊजी नाव खे रहे थे। और जहा वह दुलभ टुनीफूल मिलता है बिलकुल वही उनको पहुचा दिये थे। ऐसी जीवनधारा देखकर बडी ताईजी बेहद खुश हैं। वे रातोदिन गिरस्ती के लिए सुबह से रात तक जागर तोड रही हैं। ताऊजी घर पर रह तो उनको कोइ भी दु ख नही। माथे पर बडा-सा गोल सेंदूर का टीका लाल किनारी की धाती कितनी बगाबग साफ और सफेद। और सावले रग की ताईजी की तुलना रामायण म वर्णित नारी चरित्र के साथ करने का जी करता।

इसी तरह से कार्तिक पूजा के दिन आ गये। फातिमा अजुन वक्ष के नीचे आकर एक दिन बना गई है उसे दो श्रीघट चाहिए। उसन मा से कह रखा है ताईजी से कह रखा है। वह उन दोनो स श्रीघट लेकर रख लेगा। और कार्तिकपूजा के अगले दिन जब फातिमा आएगी तब दो नहीं इस बार वह चार देगा। जसे अमला कमला न तरह-तरह के चीज-वस्त देकर उस खुश करने की कोशिश की है यह भी वसी ही एक लडकी है—क्या खूब लडकी है परो म पायल नाक म बेसर धारीदार साडी पहने वह लडकी उसकी प्रतीक्षा म रहती है—वह उसको कुछ दे सकने स ही ऐसा सोचता है कि महान कुछ कर डाला है।

और कार्तिकपूजा के दिन ही वह घटना घटी।

वे तियहर को खेता मे गये। गाम को चारो ओर खेतो मे आग जलाई गई। 'भालोबुडा (अलया-बलया) म सब लोग आग लगा रहे हैं। ससार के सारे पाप पोछकर परिवार के सारे लोग हेमत के खेत से पुण्य बटार लाने गये हैं। अलक्ष्मी को फेंक कर सब लोग लक्ष्मी लाने गये हैं। सोना लालटू पलटू तीन भालोबुडा म आग लगाकर अब खेता मे दौड रहे हैं। उन लोगा ने, जो खेत सबसे उम्दा फसल देता है वहा आग की सटिया गाड दी। अब कार्तिकपूजा के लिए सबसे पुष्ट धान की बाली चाहिये। अब व तीना हेमत के इन खेना म उस पुष्ट झपा के लिए खेत से खेत क्रमश सुनहरे रेत वाली नदी की चाकी पार कर चले जायेंगे। जो जितना बडा थपा लायेगा वह गिरस्ती क लिए उतना ही अधिक पुण्य लायेगा। इस तरह एक होड-सी है। सोना न एक बडा सा झपा काटकर कहा, देख दादा कितना बडा झपा है। और तब पलटू न कहा देखें कहा? दखकर बाला, बडा नहीं तो और। कहकर उसने एक बडा सा झपा दिखाया। और इस तरह धीरे धीरे वे झपा के

लिए दूर के खेतो मे चले गये। कोई भी पसद नही आ रहा है। लगता है, यह जमीन पार करते ही बडे मिया का खेत है सबसे आला फसल होती है या और कही जहा उनके लिए पुष्ट धान की बाली लिए लक्ष्मी मायी प्रतीक्षा कर रही हैं। वे इस समय खेतो म लक्ष्मी मायी को ढूढ रहे हैं।

इस तरह स वे तीनो बहुत दूर चले आये। धान की पुष्ट और बडी बाली न ले जा सकने से गर्व नही किया जा सकेगा। बडी ताईजी नही कहगी, देख धनबहू तेरा बेटा कितना बडा झबा लेकर आया है। इन खेतो म वे धान की पुष्ट बाली के लिए खेत खेत मे चक्कर लगात फिर रहे है। धुधला-सा अधेरा। हेमत के खेत पर हल्का सा कुहरा। गगन म पवन म धुधली सी जुहाई। व झुक-झुक कर एक एक बाली हाथ म लिए देख रहे हैं और छोड दे रहे हैं। हाथ से नाप रहे हैं। नही बहुत छोटी है। करीब हाथ भर लबी न हो तो कार्तिक भगवान के गले म माला की तरह डाली नही जा सकेगी।

उस समय हाथ म लालटेन लिये कुछ लोग नदी के किनारे किनारे इधर चले आ रहे हैं। लालटेन की रोशनी देखते उनको लगा कि वे बहुत दूर चले आय हैं। उनको ध्यान ही नही कि वे नदी के कछार से होकर हाइजादी के मदान मे आ पहुचे हैं। लालटेन की रोशनी देखकर उनको घर लौटने की सुधि आयी।

वे नजदीक आने पर सोना ने देखा फेलू जा रहा है। सिर पर एक बडा-सा ट्रक लिये। एक हाथ वाला फेलू सिर पर ट्रक लिये जा रहा है। पीछे शम्सुद्दीन। और सबसे पीछे फातिमा। आज फातिमा ने शलवार पहन रखी है। सुनहले रग का पूरी बाह वाला फ्राक। कल अजुन वृक्ष के नीचे फातिमा का आने का वादा है। वह फातिमा के लिए चार चार श्रीघट रख देगा। इस समय फातिमा सजधज कर जा कहा रही है। फातिमा को देखकर वह कुछ कह न सका।

इतन बडे मदान म उन तीनो को देखकर शम्सुद्दीन को कुछ आश्चय हुआ। उसने कहा आप लोग ?

—धान की बाली ढूढने आए हैं।

इतनी देर मे शम्सुद्दीन को याद आया कि आज कार्तिकपूजा है। सभी लोग धान की पुष्ट बाली ढूढन निकल पडे हैं। उसने पूछा, मिली भी ?

उन लोगो न जो इकट्ठी की थी दिखाई।

शम्सुद्दीन हसा।—लक्ष्मी मायी इतनी छोटी कसे होगी। आइए हमारे साथ।

वे चलने लगे। सोना बिलकुल कुछ भी नही बोल रहा है। वह फातिमा के बगल मे चल रहा है लेकिन फिर भी बोल नही रहा है। फातिमा भी कुछ नही बोल रही। लेकिन वह ज्यादा देर रुठा नही रह सका। बोला, तू छिरीघट नही लेगी।

—रख दीजिएगा। ढाका से आन पर लूगी।

—तू ढाका जायगी?

—हम सभी ढाका जायेंग। मैं स्कूल म पढ़ूगी। घर नानी अकेली रहगी।

सोना बोला, लेकिन तूने पहले तो कुछ बताया नहीं।

—बतायें क्या? अब्बा ने सुबह ही तो बताया। सोना फिर चुप हो गया। फातिमा भी कुछ बोल नही रही है। वह बोली, सोना बाबू आप मुझे खत लिखेंगे।

—खत। खत क्या लिखें।

—आप कैसे रहते हैं लिखिएगा।

—छोटे चाचा डाटेंगे।

फातिमा वाली सझा को मैं रो रही थी तो अब्बा ने पूछा, तू रोती क्यो?

—तेरे रोने का क्या हो गया?

—क्या कुछ भी रोने का नहीं?

तब शम्सुद्दीन ने कहा यह देखिए धान की मोटी गदराई बाली। वह झील के पानी म अगोछा पहन कर उतर गया। इतनी बड़ी धान की बाली आपको कही ढूढे नहीं मिलेगी। यह कहकर उसने तीनो के हाथो म तीन बड़े बड़े धान के झप दिये और कहा, 'बिना उतरे पानी मे किसे परना आया। क्या ख्याल है मालिक? लक्ष्मी को लाने म काफी मेहनत करनी पडती है। यह कहकर अगोछे से बदन पोछकर फेलू स कहा तुम लोग चलते रहो। मैं इनको पहुचा आऊ। य लाग रास्ता चिन्ह कर घर नही पहुच सकेंगे।

शम्सुद्दीन अर्जुन वक्ष तक आया। पूरब का घर सामने है और वहा मालती है—जब्बर मालती को चुराने के फिराक म था फकीर साहब उस यहा रख गये हैं—और जब्बर उसकी पार्टी का एक मुखिया है—लिहाजा इस जुर्म के लिए वह भी कुछ जिम्मेवार है ऐसा ही उसको देखने से लगता है। इस बेइज्जती की वजह शम्सुद्दीन भीतर ही भीतर कुछ दुःखी है। उसने अपने को बडा बेबस पाया। वह तरह-तरह से मुसलमानो के भीतर आत्मविश्वास लौटा लाने की कोशिश कर रहा

जौ। नीचे थीपट पत्तियां में लगे हुये। पट में अरवा चावल और उस पर जैतून का पत्र। उसने अपनी धान की थाली माँ को दी। माँ ने दोनों हाथों से सोना के हाथ से धान की थाली का वरण कर लिया।

लेकिन शशीभूषण को देखते ही माना का दिल धड़क उठा था। अब इस पूजा में उस खास कोई उत्साह न रह गया था। मास्टरजी बड़े सख्त मिजाज के हैं। वे बहुत सवेरे उठेंगे। सबके दरवाजे पर जा पहुँचेंगे और पुकारने लगेंगे, सोना उठो। लालटू उठो। पलटू उठो। मुँह हाथ धो लो। सब लोगों को नींद से जगाकर वे मदार में ले जायेंगे। दिखा मदार के बाग व सब को मटरौला की टहनियाँ देंगे। दातौन करने को कहेंगे। वे मुँह में रख कर दातौन हो जाने के बाद कहेंगे चल आओ। उनके शचीद्राथ ने एक तख्तपोश दे रखा है। बड़ा-सा तख्तपोश। उस पर तरह-तरह की जड़ी-बूटियाँ इकट्ठी कर रखी हैं। पेट दर्द दाँत में दर्द सर दर्द और तरह-तरह की बीमारियों में वह दवा देगा। वे मुँह धोकर आते ही उनको भीगा हुआ चना देंगे वह। गिन गिन कर देगा। और गिन गिन कर फ्री हैंड एक्सरसाइज (कसरत) करायेगा। पढ़ाई खतम होने पर स्नान। सोना के सिर में वह तेल लगा देगा। सभी को लेकर वह पोखर में तैरेगा। फिर गरम गरम भात दाल और तला हुआ बगैर खाकर वे पैदल स्कूल जायेंगे। शशीभूषण के आते ही वे एक नियम से बंधकर इसान बनेंगे ऐसा तय रहता है।

इस नियम के भीतर शशीभूषण का सारा गुस्सा लालटू पर। लालटू का दंड बैठक एक सौ दस बार। माना का पचास बार। और पलटू का एक सौ बीस बार। पलटू अपना कसरत ढंग से निभा लेगा। सोना भी। लेकिन लालटू देर लगाकर उठक-बैठक करेगा। कभी कभी उठक बैठक के दरम्यान उसका निकर सर सर नीचे सरक आयेगा। उस समय शशीभूषण उसे कान में पकड़ कर उठाता है। और चिल्लाने लगता, धनभाभी धनभाभी।

चीख-पुकार सुनकर धनबहू दौड़कर आती तो देखती कि लालटू उलंग खड़ा है। उठक-बैठक में उसका निकर खुल गया है। उसके निकर में नारा नहीं।

—यह क्या।

—मैं क्या कह बताइए। इसके निकर में कभी नारा नहीं रहता।

—ठहरो, देखती हूँ। यह कहकर वह सन को अच्छी तरह से बटकर सुतली बनाती और निकर में भर देती। डर के मारे लालटू बाद में निकर से नारा नहीं

घोलता था। इस मास्टरजी से लालटू का छमरा छूगा हुआ है।

शशीभूषण को देखते ही सोना यह सब याद कर सकता है।

एक हवाई-जहाज के बारे में भी याद कर सकता है। वही पहला बार इस इलाके के ऊपर से हवाई-जहाज उड़ा जा रहा था। ढाका के पास कुर्मी टोला में लड़ाई का अड्डा बना है। मझले ताऊजी घर आने पर लड़ाई की कहानियां सुनाया करते हैं। मैदान से हवाई जहाज देखकर जब वह घर लौट रहा था तभी रास्ते में भेंट हो गई थी।

—ऐ मुन्ना, सुनो।

अटपटा शब्द सुनते ही वह ठहर गया था।

—ठाकुरबाड़ी किधर है ?

—उसने उंगली उठाकर दिखा दिया।

इस आदमी के बाल छोटे छोटे कतरे हुए। वे नवद्वीप के थे। यहां वे हाई स्कूल के हेडमास्टर बनकर आये है। बारदी से पैदल चले आए हैं इसलिए हाथ पैर धूल से सने हुये। घर दिखा कर ही सोना सीधे दौड़कर हारानपाल के घर के भीतर चला गया और छोटे चाचा को इत्तला दी। फिर दौड़कर बाहरी ड्योढ़ी के आंगन मे आकर खड़ा हो गया—कितनी देर में वह आदमी यहां आ जाता है।

घर में दाखिल होकर शशीभूषण ने कहा था यह तुम्हारा घर है।

उसने सिर हिलाकर सम्मति सूचित की थी।

—शचीन्द्रनाथ तुम्हारे कौन लगते हैं ?

—चाचा।

— एक बार चाचा को बुलाना तो जरा।

तब तक शचीन्द्रनाथ बाहरी ड्योढी के आंगन में आ पहुंचे थे। उसे देखते ही शशीभूषण ने नमस्कार किया था। कहा था आ गया।

—आइए। शचीन्द्रनाथ ने उनको बैठक में बिठाया।—यह रहा आपका कमरा और यह रहा तख्तपोश। और ये रहे तीन बालक।

तब तक सोना ताड़ चुका था कि यह उसके स्कूल के हेडमास्टर हैं—जिनके आने की चर्चा बहुत दिनों से है, जो बरीसाल के किसी इलाके में सकेंड मास्टर की हैसियत में शिक्षकता करते थे, यहां हैडमास्टर की नौकरी पाते ही चले आए हैं। शचीन्द्रनाथ ने ही इस सिलसिले में परवी—मेहनत की है। और यह कहा हुआ कि

हैडमास्टर उसी के घर मे रहेंगे, खायेंगे। और इन तीन बालका पर नजर रखेंगे।

शचीन्द्रनाथ ने कहा था, तुम लोग मास्टरजी को प्रणाम करो।

वे उस दिन कौन पहले प्रणाम करेगा — सभी उसके परा पर टूट पडे थे।

छूते ही उन्होंने कहा था, देखें तुम लोगा के दात।

सोना ने दात दिखाये।

—अच्छी तरह दात साफ नही करते। कहते हुए अपने हाथ पर धाकर आते वक्त ढेर सी मटकीला की टहनिया तोड लाय। और सभी का एक एक देकर— इस तरह दात माजना चाहिए दात नीचे स ऊपर की ओर माजना चाहिए इस तरह दात माजना हम लोग जानते ही नही खाना स ही सारी बीमारिया आती हैं यह सब कहते हुए उन्होंने प्रयोग द्वारा प्रदर्शित किया था।

साना लालट, पलटू बाहर आकर हसते हसते लाट पोट हो गये थ।

वही मास्टरजी आ गय हैं। अब सोना जब-तब पढाई छोड अर्जुन वृक्ष के नीचे भाग नही सकेगा। लालटेन लेकर सोना हाथ पैर धोने घाट की ओर चला गया। वह कुछ उदास-सा। फातिमा नही है। और वह अनमना है। अनमना न होता ता लालटेन लेकर अकेले घाट पर वह नही आ सकता था। उसे डर लगा होता।

वह घाट पर उतर गया। लालटेन उसने इमली के नीचे रख दी है। पर धोने के लिए पानी निकालते ही कुछ देखकर वह डर गया। पानी से ऊपर बिलकुल मत्स्य रक या रामचिरया जस पर के दो तलवे तिर रहे हैं। लाल। माना पैर के तलवो म सेंदूर पोत कर कोई लक्ष्मी मायी को पानी मे बहा गया है। लक्ष्मी के परो जसे दो पर पानी पर उतरा कर कोई डूबा हुआ है। देखते ही कूद कर वह भागा। परो स टकरा कर लालटेन गिर गई। हाफते-हाफते दक्खिन कमरे म हेलते ही वह हकलाने लग गया।

शशीभूषण ने क्षण भर की देर नही लगाई। शचीन्द्रनाथ और नरेनदास भी दौड पडे। शशीभूषण पानी म कूद पडे। नीचे लगा सिर के पास कोई सख्त सी चीज है। वह डुबकी लगाकर उठा लाया और देखा मालती है। गले म घडा बाधकर पानी म डूब कर आत्महत्या की कोशिश की है उसने। परो मे आलता लगाया है। माथे पर सेंदूर और हाथ और गले म जितने सारे गहने थे पहन कर उसने पानी के नीचे लुप्त हो जाना चाहा है।

शचीन्द्रनाथ ने नब्ज देखकर जान लिया कि प्राण अभी भीतर ही है। आखें बद

है। मालती बेहोश है और मल मल उल्टी कर रही है। पर पड़ा मुंह। माथे पर बड़ी-सी सेंदूर की बिंदी। माग म सेंदूर की रख माटी सी, परो म आलता। चारो ओर इतनी भीड है लकिन शचीन्द्रनाथ ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह एकटक उस अभागिन लडकी की ओर देख रहा है। व नमक से धीरे धीरे उसका सारा शरीर ढक देने लगे। यह नारी अब आखें बद किये नमक क नीचे शायद एकात नीद म बेखबर है। सवेरा होते ही जाग उठेगी। इसी आशा म सभी बत्ती जलाये चारो ओर बैठ रहे। उस रात को सोना सो नहीं सका। सिरहाने वह भी जाग उठा रहा। बार-बार उसे रजित मामा याद आ रहे थ। जाने क्यो उस रजित मामा पर बडा गुस्सा आ रहा था।

ऊपर हेमत का आकाश है। नीचे धान खेत। और रात के अनगिनत सितारो की आभा और चारो ओर लोगबाग की भीड। मालती नमक क नीचे लेटी हुई मानो सो रही है। रात भीगने लगी तो सोना फिर जागता रह न सका। दक्खिन के कमरे मे जहा दरी बिछी थी वही आकर वह लेट गया था। लकिन जाने क्यो उसे नीद नही आई। और अब वह फिर वहा जाकर खडा हुआ ताज्जुब करते हुए उसने देखा रजित मामा हाथ म एक लाठी लिये भीड म खडे हैं। छोटे चाचा मामा से क्या कुछ कह रहे हैं।

रजित मालती के पैरो के पास जाकर बैठ गया। उनका अटेची सोना न लाकर बडी ताईजी को दे दी। उनके मुख पर खसखसी दाढी। कई रात जाग जाग कर पैदल ही इतनी दूर आया है। थकान से सोने का इरादा लेकर यहा चला आया था। भीड और गैस बत्ती की रोशनी देखकर रजित आश्चर्य करने लगा था लेकिन इस विस्मय ने प्रचड रूप से उसे हिला दिया है। उसे लगा नरेनदास ही इस आत्म हत्या के लिये जिम्मेवार हैं। नरेनदास ने उसे एक कोठरी म रख दिया है। या वह जब्बर। कहा है वह अब? हालाकि यह सब सोचने के लिए उसके पास ज्यादा फुर्सत नही। दाहिने हाथ का नमक के भीतर से उसने निकाला। नब्ज देखा। हाल बेह तरी की ओर। पैर के तलवे कितने गर्म हैं देखने के लिए उसने नमक हटाया।

तनदे पर अपना के दाग। रजित का अंतर किसी ने झकझोर दिया। मालती का मुख देखने का जी कर रहा है। उसने मुख के ऊपर से नमदा हटा दिया।

अब रात की अंतिम घडियां हैं। इस समय वह अकेले पहर पर है। नमदा हटाते ही उस जाने क्या लगा कि वह जोर-जोर से सास ले रही है। उसके माथे पर सेंदूर माग में सेंदूर। कौन कहता है कि मालती विधवा है। मालती का यह सुदर मुखडा और शरीर देखकर रजित भौंचक सा बना बैठा रहा। उसने उसके माथे को छूकर देखा। दोनों देखी। गनीमत कि उसने सबको समझा-बुझाकर सोने को भेज दिया है। सभी लोग एक साथ जागते रहने से क्या फायदा। घुरा कर मालती से प्यार करने की चेष्टा करते ही उसने आकाश की ओर देखा और उसे लगा भोर होती जा रही है। अब मालती का नमदा से बिलकुल अलविदा कर वह उसे दक्षिण के कमरे में ले गया और दरी पर लिटा दिया। पुकारा मालती, मैं आ गया हू।

वस्तुत इस दलदली गाव-देश की मिट्टी और इसान पानी के नीचे पनाह तलाशते हैं। प्राणधारण में मालती को कोई उत्साह नहीं मिल रहा है। पानी के नीचे अपने उस प्रिय लापता बत्तख को ढूढने के लिए ही शायद उसने डुबकी लगाई थी। अब मैं पानी पर उतराऊगी नहीं, पानी के नीचे डूब जाऊगी यही उसकी आशा थी।

सवेरे रजित ने थाना-पुलिस के बखेडे के डर से शचींद्रनाथ को एक बार थाना जाने के लिए कहा। छह कोस का रास्ता है। इसलिए पदल चल थाना जाने के लिए वह तैयार हुआ।

शचींद्रनाथ के थाने चले जाने के बाद रजित नरेनदास के पास गया। बोला उसे इस कोठरी में क्या रखा है आपने ?

नरेनदास ताना-पाई कर रहा था। मालती अब उसके लिए गलग्रह बन गई है। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

रजित ने समझ लिया कि नरेनदास नहीं चाहता कि मालती बडे कमरे में रहे। लक्ष्मीजी का पट है—धर्माधर्म है। नरेनदास अब इन सब बातों में माथा-पच्ची करना नहीं चाहता। रजित को और कुछ कहने का हौसला न पडा। कौन है वह मालती का ? मालती का रहने का ठाव अब वही दरवानुमा कोठरी है। उसको अब घर के भीतर लिया नहीं जा सकता। जिंदगी मे अब वह खुली हवा, मुक्त मदान से

वंचित रहेगी, अब वह बारिश मे उघरे बदन भीग नही सकती। उसने सब कुछ गवा दिया है।

स्टीमर म भी एक आदमी बहुत अ यमनस्क होता जा रहा है। रेलिंग के पास खडे विशाल मघना नदी को देखते हुए वह बस मालती के बारे म ही सोच रहा है। दोना ओर कितने ही पेड पालव। स्टीमर जितना ही आगे बढता जा रहा है उतना ही मानो किशोर वय की एक बालिका पेड-पालव के नीचे नदी क कगार से दौडती जा रही है। उसके बाल उड रहे है। नगे बदन। लपेट कर साडी पहन रखी है। वह लगातार दौड रही है। दामोदरदी का मदान पीछे है। सामने उद्धवगज पडेगा। लेकिन वह आदमी कुछ भी नही देख रहा है—देख रहा है एक बालिका निरतर मदान पार करती चली जा रही है। जाने क्या छूना चाहती है—छू नही पा रही है। मालती के लापता हो जाने के बाद ही शम्सुद्दीन जाने कसा टूट सा गया था। ज बर उसकी जात बिरादरी का है लीग का भी नेता है। मामूली धन के लोभ स उसने ऐसा काम किया है। फूल जस एक जीवन को उसने नाश कर दिया है। जिसन उसके किशोर वय के सारे समय म तरह तरह के फूल खिलाये थे वह अब बेजान उन्मादी-सी। और मानो कोई दुघटना घटित हो जायगी—उसन मारे डर के निगाह फेर फेर ली है।

उस समय फेलू अपन बछड को लेकर मदान मे निकला जा रहा है। हेमत का सवेरा। चारो ओर धान ही क खेत। इन धान खेतो के लिए ही वह बछडे को छुट्टा छोड नही पा रहा है। छुट्टा छोडते ही धान खेत या उडद के खेत म मुह डाल देगा। इसी महीने दो-दो बार गौर सरकार का करिंदा अ दुल बछडे को काजीहौस दे आया है। वह अपग है इसलिए कोई उससे अब डरता नही। जिंदगी मे उसने बहुत सारे गुनाह किये हैं। अ लाह स उसका यह अजाम मिल रहा है। सारे इसान इसी ढग से सोचते हैं। तब उसके दिमाग म आता इस दुनिया म जितने भी साले माझी मल्लाह हैं सभी का कोच कर जरा देख लिया जाय—लेकिन हाय उससे नही बनेगा। उसके हाथा म अब कोई ताकत नही। काल डोरे से कौडी बधा हाथ मुर्दे की तरह जिस्म के एक तरफ झूलता रहता है। कभी कभी जी करता उस एक ही बार म काट कर फेंक दे। गले का सफाया करने जसा ही जिस्म स इस हाथ को अलहिदा कर देगा। लकिन कर नही पाता। इस मरे हाथ के प्रति उसका बडा मोह है। धूप म हाथ लकर बठ रहने पर यह हाथ उसे अपनी औलाद-सा लगने लगता।

हाथ म पगहा लिये वह चलने लगा। बछडा आगे बढना ही नही चाहता। हड्डी उभर आये इस बछडे का पेट वह किसी तरह से भी भर नही पाता। उसका लूला हाथ और यह बिर्रा बछडा उस बौराय द रहे हैं। और अन्नू भी। अब वह, वह फ्लू तो रहा नही, कबड्डी का खिलाडी भी नही—उसकी बीवी अब बिराने घर जाता है—किसका वह क्या करे। रात को बीवी बगल म होती तो नीद नही आती। बीवी उसकी कही रगरस म डूबी हुई। हाजी साहब का छोटा बेटा आकालू बसवारी म छिपा रहता। वह जब बछडा लेकर बाहर निकलता या अनाज चुरान जाता या रजोगम से कही दूर जगल म निकल जाता। उस समय यह युवती अपने रागरग म मस्त हो जाती है।

या अब वह कैसे पेट भर, दो पेट की ही तो गिरस्ती है—किसी किसी दिन तो रजोगम से नदी के किनारे टहलता रहता है—बछडा साथ होन पर वह दौड नही पाता। बछडे को लेकर चलता और अनाज की बाली काट लेना—बिलकुल ओटन जमा ही। रात के उडद को बिरवे उखाड लाता। जौ गहू के दिना मे जौ गहू। अकेले बनता नहीं। कभी-कभी बीवी भी उसके साथ रहती। चादनी रात म उसकी बीवी खेतो म घुस कर फसल काट लेती और वह मेड पर खडा रहता। कभी कभी खेत की मेड से हाक आती कौन जागे? सिटकारी-सी आवाज आती मैं जागू।

—साथ म कौन जागे।

—मिया साहब जागे। अन्नू का मिजाज माफिक रहे तो वह फेलू को मिया साब कहकर पुकारती है। इस समय अन्नू मानो उसकी अपनी अन्नू है। किसके साथ इश्क लडाती है—यह उसे याद नही रहता। इस अन्नू को लेकर फसल चुरान निकलने पर फेल को अहसास होता, बीवी उसके घर ही मे है। लेकिन जब अकेली खेत म चली जाती तो उसका शुबहा बढ जाता है। उसकी बीवी उससे चुराकर जब बिराने घर जाता है तब वह मारे अफसोस और अपनी नातवानी के बिर्रा बछडे के चूतड पर लात जमा देता।—साल कौवे, मुझसे खौफ नही खाते। और चारो ओर खेत मैदान खेतो की ओर देखो एक आदमी चला जा रहा है। उसके सिर पर तरह-तरह के परिंद उडते। तब वह खुरखुरी आवाज म हाक लगाता, ठाकुर, तुमन मुझे काना बना दिया।

केवल अपने दाहिने हाथ के बल पर वह बछडे को घसीटता ले जा रहा है।

उठेगी—मैं कसे बताऊं। किसने मन्नार की डाली उखाड़ कर फेंक दी है मुझे क्या मालूम।

—साली। क्या नहीं जानती है तू। फत्त उस वक्त शोर मचा सकता था। लेकिन किसस बताय। अब वह साला हाथ लिए बीवी स डरता है। जाने कब जब्बर हरे रंग की धारीदार साड़ी फुलल-तन खरीद कर द गया था—बदल म जब्बर अनू स क्या ल गया है कौन जान। फिर भी लूला होन की वजह स उसने सब कुछ बरदाश्त कर लिया है। इस समय बीवी के पास एक अंगोछा और एक फटी साड़ी ही सबल है। खेतों में फसल चुराने जाते वक्त वह फटी साड़ी पहन कर जाती है। और दिन भर भीतरी बाढ़ की आड़ म जब तक वह रहती तब तक एक छोटा-सा अंगोछा ही सबल है। कभी कभी अंगोछा जब भीग जाता तो बाड़ पर सुखाने दे देती। उस समय अनू प्राय नग्न हो जाती। प्राय कभी पूरपूर उलग। बाढ़ की आड़। सामने झुरमुट झाड़ी। आंगन स कोई जाय तो उसे पता ही नहीं चलता कि अंदरूनी बाढ़ के उस ओर फत्तू की बीवी मादरजाद नंगी बैठी है धान उबाल रही है, गेहूं भून रही है या सौंरन ज्वार भिगो रही है। जब जैसा मिल जाता यानी जो सार अनाज वह चुराकर लाती है उसी से साल भर गुजारा करना है इसलिए दिन भर बीवी अपने काम म लगी है।

जब तक बीवी इस तरह नंगी होकर अन्दर घूमती फिरती रहेगी तब तक वह आंगन म बैठे गुड़-गुड़ हुक्का गुड़कता रहेगा—और मनोहर मारे दृश्य बाड़ के भीतर बीवी की जवानी केले के कन्न के समान। अनाड़ी हाथों के इस्तेमाल से फत्तू न सब खराब कर डाला है। बीवी के बालों म तेल नहीं। आंखों म सुर्मा नहीं लगा सकता। त्योहार के दिन बीवी अगर किसी से उधार माग कर बालों मे या मुंह पर कुछ लगा लेती तो फत्तू जैसा आदमी भी अनू को लेकर नाव म निकल पड़ना चाहता है।

जितना देर वह घर रहेगा ओसार म बैठा रहेगा। पहर पर। कोई आते ही वह चुटकी बजाएगा। दो बार चुटकी बजाते ही अनू को पता चल जाता है। चटपट हाथ का काम छोड़ धारीदार साड़ी पहने बैठी रहती। सारा अनाज हांडी-पतीली म ढक कर रख देती। किसी को भी पता न चले कि रात को वह फसल चुरा लाती है।

यह सब दृश्य देखने म बड़ा मजा आता है। वह चोरी चोरी अंदरूनी बाढ़ के इस

ओर से देखता और मजा लेता। कभी तो बीवी के बदन पर तार-तार अगौछा—बिलकुल चिक चिलमन हो गया। हाजी साहब के घाट उस पार झाडी में जिस तरह फन उठाये वह मछली बीवी को देखने के लिये बैठा था, कमरे के भीतर भी वह कभी-कभी उसी अंदाज से बैठा रहता है। अपनी बीवी का मादरजाद नंगा जिस्म देखने मे फेलू को बडा मजा आता है।

इस तंगदस्ती और फटेहाली में भी यह बीवी अपनी लुनाई को कम बरकरार रखे हुई है - हाय उस समय फेलू आकालू का गराडील शरीर, चौडा चकला सीना और लाल रंग फज टोपी ही मरीचिका सी देख पाता है। आकालू अपनी दाढी में महमहाता अतर चुपड लेता है। आकालू बडा चालाक है। वह जब रास्ते से जाता है तो अपनी दाढी में अतर लगाकर जाता है। इत्र फुलेल की सुगंध पाते ही अंदरूनी बाढ के पीछे बीवी झूम उठती। उसका आदमी आ गया है। इत्र फुलेल की सुगंध से एक आदमी इस रास्ते यह जता गया है कि वह बसवारी की ओर जा रहा है। बीवी तब जब्बर की दी हुई हर रंग की साडी पहन कर चल देती। कहा चल दिये तुम। मतिउर के घर जा रही हू। चिउडा के लिए धान भिगो रखा है। चिउडा कूट दू तो दो दोरी चिउडा मिल जायेगा।

—और कुछ नही देगा?

—और क्या देगा?

—क्या तुझे एक बोसा नही देगा?

बीवी समझ जाती कि यह आदमी उस पर शक कर रहा है। अतर की खुशबू उसे मिल गई है। अल्लाह ने इस शख्स की सारी कूवत ले ली इसकी सूघने की शक्ति क्यो नही ले ली। जान ही क्यो नही ले ली। अन्नू कभी-कभी प्यार मुहब्बत के लिए तुल जाती है।

फेलू को पता चल जाता है कि आकालू इस तरह से उसकी बीवी की मुहब्बत चुराये ले रहा है। वह उस वक्त कुरबानी वाले छूरे की तलाश मे रहता है। लेकिन किसी दिन दोपहर की धूप में वह देख पाता कि आकालू सिर पर लंबी लाल रंग की फज टोपी पहन कर काले रंग का अद्धी का बारीक कुरता और चारखाने की लुगी पहने—आकालू एक दूसरा खुदाई साड बन गया है। मानो तीन साड उसे तीन ओर से पागल बनाये दे रहे हैं। एक तो आकालू है दूसरा हाजी साहब का साड तीसरा पागल ठाकुर। वह बछडे को फिर घसीटने लगा।

बीच बीच में फेनू कुरबानी वाला छुरा छप्पर के फूस में कभी यहां तो कभी वहां छिपा कर रखता है। अनू उसका गला काटकर तिड़ी हो जा सकती है। रोजो दिन घर के भीतर एक बेलदारी छप्पर के फूस में कभी कभी झांक कर वह देख लेता—वह ठीक है या नहीं, या आशानू बीबी के द्वारा उसका भी हरण कर लिया है।

बछड़े को इस तरह घसीट कर भी वह टस से मस न कर सका। वह खुदाई साड़ एक ही जगह पर चार पैरों पर अकड़ा खड़ा है। मानो कोई महान जीव हो। किसी ओर भी हरकत नहीं। बीच-बीच में वह साड़ उसकी आंखों के सामने मिया आफालुद्दीन बना जा रहा है। उसके बछड़े पर झपटने के लिए यह साड़ बीच-बीच में अपनी पूछ ऊपर उठाये ले रहा है।

अब वह साड़ सींग तानकर इधर झपट सकता है। साड़ के झपटने ही बछड़ा भी भागने लगेगा। भाग कर घर की ओर चला जायेगा। फेलू अगर पगहा थामे रहेगा तो उसे भी घसीट कर घर ले आयेगा। साला साड़ एक महाजीव है मानो जीव की आंख लाल-लाल—मानो उसके सामने या दूर जितने चरागाह खेत हैं, जितनी फसलें और घास है सब उसी के भोजन के वास्ते हैं। कौन है इस महापृथ्वी पर जो मेरे भोजन में हिस्सा बटाने का हौसला रखता है। मेरे सामने से गुजरता है। फेलू ने फोहश गालियां दीं, साला बछड़ा उसके सामने से जाने में डरता है।

बछड़े का क्या कसूर। फेलू खुद भी खौफ खा रहा है। उसने झट छिटकीला की एक टहनी तोड़ डाली। एक ही हाथ से उसने टहनी की पत्तियां फेंक कर उसे सटी-सी बना डाला। वह हाथ से सटी को ऊपर घुमाने लगा। साड़ देख ले कि फेलू में कितनी हिम्मत और ताकत है। लाठी घुमाकर अब वह साड़ को डरा रहा है। और अपने बछड़े से उसकी धाक कितनी ज्यादा है वह फेलू है एक हाथ चले जाने के बाद भी वह फेलू ही रह गया है यही जताना चाहता है। वह जानवर नजदीक आते ही उसके थोबड़े को थोथरा बना देगा।

एक दिन फेलू ने देखा कि साड़ उसके बछड़े का पीछा करता दौड़ रहा है। लूला होने की वजह से उससे कुछ बन नहीं रहा है। बछड़ा उसको घसीट कर घर ले आया है। साड़ उस समय महामारी-सा झपटता हुआ सहन में आ पहुंचा है। बछड़े को वह चोरी से घास चरा रहा था। साड़ की कितनी धाक है उसके सहन में आ धमकते ही हाय हाय मचने लगी। गया गया। चीख पुकार कुहराम। बछड़ा कमरे में

घुस गया। शायद साड एक हुरथे मे फेलू की झोंपडी उठाकर फेंक देता। लेकिन अनू के हाथो मे था गरम माड का गमला। जानवर की यह गुस्सल शक्ल-सूरत देखकर उसने सारा माड उस साड के मुख पर फेंक दिया। और तभी वह जानवर रभा उठा। मुह जल गया है। महापड पूछ उठाये मदान की ओर भाग रहा है। तभी से वह जानवर अपने दायरे म। फेलू अपने दायरे म। दो जीव। साड का मुह जल गया है। एक आख गलकर माथे मे घुस गई है। फेलू की भी एक आख चेचक से जाती रही। दो जीव अब एक एक आख लिये मौका मिलते ही लडते हैं।

फेलू को बेहद भय। फिर भी हाथ म सटी होन की वजह से कुछ डर कम हो गया। वह बछडे को लेकर फिर टहलने लगा। वह अच्छी घास की टोह म है। देखा माझी के खेत की मेड पर नरम घास। बछडे का पगहा थामकर वह बैठ गया। चारो ओर धान के खेत। वह बछडे को मेड पर घास चरा रहा है। घास चरते वक्त बछडे का छप छप और फत फत शब्द। पूछ हिला हिला कर बछडा बेफिक्री से चर रहा है। उसका घास चरना देखकर फेल त मय हुआ जा रहा है। और जाने क्यो पिछली रात की बात उसे बार बार याद आ रही है। कल सारी रात वह डर के मारे सो नही सका है। अनू शाम के बाद घर मे नही थी। फटी धारीदार साडी पहने जाने कहा उसकी बीवी चली गई। उसे वह दो चार घरो म ढूढता रहा। हाजी साहब के घर वह नही जा सकता। जाते ही मझली बीवी 'अरी ओ गुइया वाला गाना गाती है। हाजी साहब सटी मार सकते हैं। वह लौट आया था। नही, कही भी नही। अनू जब आई तब काफी रात हो गई थी। उसक सिर पर उडद के बिरवो का एक बोझ। हाजी साहब के खेत से वह चुरा लाई है। लाई है या कसर पर पर्दा डालने के लिए आकालू ने उडद के बिरवो का एक बोझ दे दिया है—यह उसकी समझ म नही आता।

बिना कह सुने चले जाने पर फलू को लगता बीवी कही मसखरी करने गई है। या आकालू क साथ वन जगल म इश्क लडाने चली गई हो। पिछली रात को कही जान की बात नही थी फिर भी बिना कुछ बताये वह चली गई। पेट मे हवस ही हवस। फेज टोपी सिर पर डाले अधेरी रात म दाढी म खुशबू चुपड कर आकालू निकल पडा है। किम अधेरे मे चारखाने की लुगी पहने आकालू खडा रहता बीवी सूघकर पता लगा लेती। वह उस दिन गौर चद के घर था। लौटते मे रात हो

जायेगी ऐसा कहा था। और इसी दरम्यान बीवी वन जगल में निकल गई।

या उसकी बीवी कार कारोबार से निबटन के बाद बछड़े को घास नहीं कहकर अधरे म खेत से सारा उड़द उखाड़ लाई है। जाने क्या-कुछ हो रहा है। गाव के लोग भी जानते हैं कि धावड फेलू की बीवी इन दिनो इश्क लड़ा रही है। धावड फलू की यह दुगन। उसकी बीवी गर क साथ इश्क लड़ाती है। भीतर ही भीतर आग-बबूला हो जाता है वह। सिर से बीवी पाश भी नही उतार सकी। कमर के सीधान एक लात जमा दी। पैर तो कोई लगडा नही। बल्कि हाथो की सारी ताकत अब परो म आ समाई है। लात खाकर अनू सभल नही सकी। उलट कर मुह के बल जा गिरी। पहले अनू को पीटन पर अनू ओसार म बठी घिघियाती रोती रहती थी। ऐसी रुलाई मानो घर पर कोई मर गया हो। रोने के साथ फोहश अलफाज तरन्नुम से गाते रहना। खेत क पास स कोई गुजरता तो जान जाता कि साला फेलू फिर बौखलाया हुआ है।

रोजमर्रे की बात है तभी कोई आता नही। फिर भी देखो इन दोनो म कितनी इश्क मुहब्बत है।

लेकिन आजकल मानो सबको पता चल गया है कि अनू मतिहारी (तबाकू) की पत्ती दात म मल रही है। फल गिरने के बाद भी अनू रोयी नही। कही पर उस पर रखन की ठास जमीन मिल चुकी है। रोने धोने गरियाने स फलू को डर नही रहता। आज कतई कोइ गाली-गलौज नही। अब बशक वह कहीं न कहीं चली जायेगी। फेलू इतना ही जानता है कि तलाक न देने पर बीवी कही भी जा नही सकेगी। आकालू चाहता है कि फेलू तलाक दे द। तलाक दे दे तो कुछ पसा भी मिल जायगा फेलू को—ऐसा प्रस्ताव भी आकाल ने फेलू के सामने रखा है। फेलू की सूरत उस वक्त देखो तो लगे बात-बात म यह मार-पीट महज दाम बढ़ाने के लिये। कितना दाम दोगे मिया ? लेकिन फेलू का दिल जानता है उससे यह नहीं होगा। अनू के न रहने पर वह मर जायगा।

लेकिन फेलू जब अनू क दाम-दर के बारे से सिर खपाता है तो वह एक आख से मुस्कराता रहता चेचक के दाग मुख के चारों ओर चारखाने की लुगी जसे और दाढ़ी क नीचे उसका सारा चेहरा कितना वीभत्स-सा—तो मिया हो जाय एक फसला। युवती के विनिमय म रुपया आता है। जितने दिन बीवी है उतने दिन तगन्स्ती फटेहाली में भी रुपया उधार मिल जाता है—अनू न रहने पर साल

हरामी के पिल्ले भी फेनू को इतने दिनों में बूढ़ोवास से उखाड़ कर फेंक दिये होते। सिर्फ बीच-बीच में उसका सहन के बीच से जाना बरदाश्त कर लेना पड़ता है। उस वक्त फेलू का बार बार जी करता टूटी हुई ठूठ की एक चोट जमा दे। साले कमीने में बच्चे की इश्कबाजी हवा हो जाय। अगले ही क्षण उसे याद पड़ जाता—उसका एक ही हाथ सबल है। अगर झपटे तो हरामी का पिल्ला उसकी गर्दन पकड़ लेगा और ऐसा मरोड़ेगा कि फेलू एक पागल कुत्ते की तरह रिरियाने लगेगा। इस लिए आबाल जाने पर वह चेहरे पर मुस्कराहट लाकर कहता—कहां जा रहे हैं भाई साहब? धान की उपज कैसी हुई खेतों में। हां, जाने कितने दिनों से कानिकशाली धान का भात नहीं खाया। धान कटे तो अनू को भेज दूंगा। दो कटटे धान दे दीजिएगा।

आबालू की आंखों के सामने भुनगे से उड़ने लगे। फेलू घात लगाये बैठा है कि कब धान कटेगा। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे। अनू कहां है? अंदर रनी वाली कटरियों में वह आंखें डाल देता। क्या उस दाढ़ी के अतर की खुशबू नहीं मिली? अनू को देखने के लिए ही वह मजबूरन सहन में खड़ा हो गया। कुछ बोलना ही पड़ेगा। उसने इधर उधर आंखें दौड़ाते हुए कहा बीबी को भेज देना मियां। दो कटटे धान दे दूंगा। डली सुपारी दूंगा। तम्बाकू पान जो भी लगे दूंगा। फिर वह धारों में अनू का स्पर्श व क्विार में है यह ताड़ लेते ही उसके जी में आता कि मियां के मुंह पर थूक कर चला जाय। अनू इस आदमी के पीछे कितनी तकलीफ उठाती है। किसी तरह छोड़कर भी नहीं आ पा रही है। जाने कैसे, कहीं से इतनी हसीन बीवी फांस कर ले आया है। कोई नहीं जानता यह कहना तो गलत होगा—माना जानवर भी नहीं जानते—इतने दिनों में फेलू की बीवी अनू है यही शादी का सबूत है। फिर अगर शरियत के मुताबिक तलाक न दे तो वह उसे अपने घर नहीं ले जा सकता। किसी और जगह बसाकर जा सकता है। अनू को मगर किसी गांव घर जाने पर किसी को भी पता नहीं चल सकेगा।

गोया फेलू को पता चल ही जाता कि उसकी बीवी भगाकर ले आएगा ही। फिर उड़ता हा तरा उसने पत्थर जिस तरह उसने लिया साहब के गले को गर्दन से टुकड़े कर दिया था उसी तरह से उसकी बीवी उसका गला भी टुकड़े करने के बाद ही भागती। और यही मारने बठ-बठ कर सिर्फ बीबी का मुंह देख रहा था। बीबी एक बार भी रोयी नहीं। तीन बार रात भर कृष्णा की रागनी में सिर झुकाय बैठ

कर बैठी रही। मारे डर के फेलू रात की शुरू घड़ियों में सो नहीं सका। चटाई बिछाये लेटे-लेटे चुपचाप बीबी का चेहरा देखता। कठोर चेहरा, आँखें अनम और बेरस। आँखें धधक रही हैं। बाहर उस समय कोई पछी बोल रहा था। हेमत के खेतों पर ओस गिर रही है। कुरूर के अड्डे फूटकर बेशक अब तक छाने आ गए होंगे। फेलू ने एक लबी सास ली तो उसे लगा बीबी हिलडुल कर बैठ गई है। और अबकी बार उसे कुछ तरस आया। बडे जोर से उसने मारा है। उसने कहा कहा गई थी ?

—मरने गई थी।

—मरने कहा गई थी ?

—खेतों में।

—क्या, क्या जरूरत थी खेतों मे ?

—घास न लाने पर तेरा प्यारा बछडा खाता क्या। दिन भर उसे खाने को क्या दिया है।

लगता है बीबी का गुस्सा कुछ ठडा पड रहा है। वह उठकर बैठ गया।—ला कुछ खाने को दे।

—नहीं दे सकती।

—क्या नहीं सकेगी। तुझे कौन भात देता है। कहकर उसने झपटने को सोचा। लेकिन उसी तरह अडी बैठी देखकर उसको उठने की हिम्मत नहीं पडी। छाजन में जहा उसने कुरबानी का छुरा रखा था वह वहा है या नहीं देखा। लेकिन छुरा वहा नहीं है। वह उतावला सा चेहरा लिये देखने लगा। एक ही आख से देखना पडता इसलिए पूरी गर्दन न घुमाने पर उसे दिखाई नहीं पडता। एक बार लगा कि उसने कहीं और रख दिया है। वह नाहक बीबी पर खफा हो रहा है। ढूढ लिया जायगा। फिर उसने अपनी बीबी को भला कौन सा सुख दिया। छिन छिन तरसाता ही रहा। छिन छिन उस पर नाएतबारी। तरस आ जाने पर वह उसके बगल में जाकर बैठ गया। पीठ पर हाथ रखकर दुलारना चाहा। लिपट कर प्यार करना चाहा। अन्नू अब मानो गले में दात गडा देगी—साप की तरह फुफकार रही है। मियां तुम मुझे छूना मत। तुम इबलीस हो। ना पाक हो।

—क्या कहा। मैं इबलीस हू ना-पाक हू। फेलू सड से कूद कर खडा हो गया। उसको मानो बीबी इतने दिनों के बाद पहचनवा रही है—तुम इबलीस हो तुम

शैतान हो। तुम्हे दीन ईमान से कोई सरोकार नहीं।

फेलू के परा का खून सड से ऊपर चढ़ गया। शायद वह अब कुछ कठोर कठिन कर ही डाले। वह बाहर के अधेरे म उतर आया। कमरे म रहने पर अभी कोई हत्याकाड हो जायेगा। उसने छावन के फूस म उस दूढा। नही, है नहा। मैं इब लीस हू, मैं ना पाक हू—ढूढते हुए उसने दुहराया है। नमाज नहीं पढ़ता हू अल्लाह का नाम नही लेता हू, मेरे गुनाह की कोई इतहा नहीं। लकिन यह सब क्या तू कहेगी इस वक्त। कहकर ही छलाग मार कर कमरे म घुस गया और बीवी के सामने धप्प से बठ गया। फिर बायें हाथ को दाहिने हाथ स उठाकर मरे हुए सांप की तरह बीवी की आखो के सामने डुलाता रहा। बोला बीवी तरी हिम्मत की दाद देता हू। यह मेरा मुर्दा हाथ है यह हाथ तुझे हौसला दे रहा है। तून मुझे ना पाक कहा। वर्ना किसकी इतनी हिम्मत है कितने ही लोग बाग झीकते फिरते हैं—तू तो औरतजात की है अन्नू। हसुआ कहा रख दिया। कुरबानी का छुरा।

—क्यो तुम मेरा गला काटोगे?

—दे तो बता सकता हू कि तेरा गला कटता है या नही।

अन्नू इस बार और भी सख्त हो गई। यह था तेरे मन म। यह कहकर ही वह पुआल के भीतर से हसुआ और कुरबानी का छुरा फर से निकाल कर ले आई।—ला दिया। अब जरा चलाओ तो देखें। तो जान लू कि तुमने एक काम किया। कहकर दोनो आखा को फलाये मानो रणरगिनी हो धारीदार साडी खोल उलग सी अनू ने उसके सामने गला बढा दिया।—मिया, हिम्मत नही। काटो न गला रेत रेत कर। कहकर ही वह कडी पड गई। फेलू के तेवर भी ऐसे कि अभी गला पकडकर नली ही काट डाले। अभी अभी फौरन ही वह कुछ करके रहेगा। लकिन अनू तनिक भी डर नही रही। क्योकि आँखें देख उसे मालम हो गया है कि इस आदमी पर दहशत हावी है। वह पहले की ही तरह आखें फाडे मानो आखो म शोले धधक रहे हों—खेत म शौहर के कत्ल की बात सुनकर जसा हहा कर कहकहा लगाने लगी थी भाग आते वक्त आज फिर उसी तरह पागल जसी ठहाका मारने लगी।

साथ ही साथ फेलू अपने मुर्दे हाथ की तरह बेजान हो गया। झटपट उसने दोनो हथियारो को हाथ के पीछे छिपा लिया। उसने चुपके से पुआल के ढेर मे अधेरे म दोनो हथियारो को छिपा कर रख दिया। अन्नू कडी आखो से देख रही है कि यह

धाकड़ आदमी धीरे धीरे रात का बौड़ा बनता जा रहा है। उसने कड़ी आवाज मे कहा, नहीं मार सके मियां। अब दिल म कोई हिम्मत नही।

—नहीं बीवी।

—तो फिर अपना काला मुह किसी को दिखाना मत।

फेनू को लगा कि वाकई अब उसके जीने का कोई अथ नहीं रह जाता। अपना मुह स्वय काटकर सजा दे सकने स या दोनो हाथो म मुड लेकर नाच सकने स मानो बीवी की बातो का माकूल जवाब दिया जा सकता था। लेकिन अधेरा उस ओर के गोठ म बछडे की आखें और चोरी स धान या दूसरी कोई फसल काट लाना—सभी कुछ अजीब-सा मायामय है—किसी तरह से भी कटामुड लेकर अब वह नाच नही सकता है। अपनी बीवी क अनदेख, पुआल के ढर म हथियार छिपा कर वह चटाई पर लबा पड गया था। फिर रात भर वह सो नही सका है। क्या जाने उसके सो जाते ही बीवी घर म आग लगाकर भाग खडी होगी। एक झुलसा हुआ आदमी आग के बीच सिकुडा सिमटा पडा रहगा—आग, हत्या का चित्र—फेनू का दिमाग फिर गया होता अगर वह न देखता कि बीवी आचल बिछाकर एक अलग लेटी हुई है। वह सावधानी से नजदीक चला आया। देखा अनू वाकई सो रही है या नींद का बहाना बनाय मसट्ट साधे पडी है। उसन कुप्पी की रोशनी म देखा कि अनू सचमुच सो रही है। उसका मन सहसा उदास हो गया। बीवी स प्यार करने का बडा जी कर रहा है। मुह को बढाकर फिर पीछे हटा लिया उसने। डर बडा डर। नागिन स डर। प्यार करते ही गल म दात गडा देगी। वह बीवी के बगल म अगोछा बिछाकर लेट गया था। और सवेरे अनू न ही उसे जगाया—जाओ बछडे को मदान म चरने छोड आओ।

मदान म बछडा लेकर आने के बाद यह माजरा। यह साड चार पैरो पर अकड कर खडा है। विशाल मदान, धान खेत सुनहरे रेतवाली नदी की कछार की उपक्षा कर फेनू को डरा रहा है।

और हाजी साहब का छोटा बेटा, जितना लबा है नही उसस ज्यादा लबा बनने का शौक है उस। लाल रग की टोपी सिर पर। चारखाने की लुगी पहने ताजे धूप मे खडा है। दाढी मे अतर की महक। बीवी पिछली रात की लात को निपट बिसर कर बसवारी मे चली जा रही होगी।

वह और साड और आकालूद्दीन पागल ठाकुर सभी क्रमश परस्पर प्रतिपक्ष

बनते रहे हैं। एक महिमामडित मनुष्य हेमत व सवेरे सुनहरे रतयानी नदी के कछार पर लेटे हैं। केवल वही जानते हैं साड कितनी तेजी स झपट तो फेलू का पट इस ओर स उस ओर तक छिद जाय।

मानो वह साड फेलू को देखत ही परा पर मौत का नाच नाचन लगा हो। इस बार साड शायद झपट पडे।

उस समय मालती हस रही थी। रजित की बातें सुनकर हस रही थी। हसी म भी इतना रज रहता है। मालती का मुख न देखन पर रजित का पता ही नही चलता होता। मालती का चेहरा कितना करुण और बेबस है। कितनी कठोर हसी।

दरबेनुमा कोठरी के भीतर मालती एक बत्तख की तरह बठी थी। हेमत की अतिम धूप उसकी कोठरी क टट्टर पर। हेमत क आखिरी दिन होने क कारण कुछ सरदी सी लग रही है। एक पतली सी कथरी ओढे मालती कबल की एक आसनी पर बठी है। अशौच का शरीर है मानो। चारो ओर उपेक्षा। नरेनदास धूप से पुआल उठाकर एक जगह बटोर रहा है। आभारानी धान पछोर रही है। शोभा आबू घर पर नही हैं।

आजकल आसानी स मालती घर स नही निकलना चाहती। बीच-बीच म घर के पास जो गाव का दरख्त है उसके नीचे आकर बठी रहती है।

रजित के आते ही मालती ने टट्टर खोल दिया था। क्योकि टट्टर गिराने के बाद चारो ओर अधेरा छाया रहता है। उसे क्रमश अधेरे से प्यार होन लगा है। चिडियाखाने की प्राणी की तरह अब वह जिन्दा नही रह पा रही है। क्या करे अब वह। जाने क्या हो गया है उसके भीतर। हर वक्त सरदी-सी और डर डर सा। दिल लरजता रहता। कडा ठहाका लगाने पर नरेनदास को डर लगने लगता। रजित स भेंट होत ही कहता जाइए देख आइए पागल की तरह हस रही है।

ऐसा सुनकर ही रजित आया था। उसके आते ही मालती एक विनीत और वश्य युवती बन गई। उसने एक जलचौकी बाहर ठल दी। सिर झुकाये उससे बठने को कहा। रजित के बठते ही मालती को मानो शरीर मे बल मिल जाता। यही

उसका एकमात्र पुण्य है जिससे उसने वह बात बताने को सोचा है। उसकी समझ में नहीं आ रहा है कि वह क्या करे। समझ में नहीं आ रहा था इसीलिए चेहरे पर यह बेबसी और दीनता। वह किसी तरह से भी वह बात बता नहीं सकी। इस व्यक्ति का मुंह देखते-देखते वह कैसी कुम्हला सी गई।

रजित बोला तुम ऐसा पागलपन करोगी तो कैसे चलेगा मालती।

—कैसा पागलपन ठाकुर ?

—कभी-कभी तुम गांव के पेड़ के नीचे भाग जाती हो। वहां चुपचाप बैठी रहती हो। कुछ भी खाती-पीती नहीं।

—कुछ भी खाना अच्छा नहीं लगता ठाकुर।

—अच्छा न लगने से कैसे चलेगा। खाना पड़ेगा। जिन्दा तो रहना है।

—तुम से ठाकुर मैंने एक छुरा दे जाने को कहा था। तुमने किसी तरह से भी नहीं दिया।

—फिर तुम्हारी वही एक बात।

—मेरी और कोई बात ही नहीं।

—तुम ऐसा करोगी तो करेगा क्या कर तुम्हें लेकर ?

—मेरे बारे में किसी को भी कुछ नहीं करना है।

—ऐसा नहीं कहते। कहना नहीं चाहिए। मानो बीमार मालती को रजित तसल्ली दे रहा हो।

—क्या तुमको ऐसा लगता है ठाकुर कि मुझ पर भूत सवार है ?

—तुम तो जानती हो मालती मैं इस सब में विश्वास नहीं करता।

—तो फिर तुम दादा की बातों पर यकीन क्यों करते हो ?

—करता हूं इसलिए कि तुम्हारा मुंह देखने पर मुझे डर लगता है।

—कैसा डर ?

—तुम्हारी शक्ल-सूरत कितनी अस्वाभाविक है। तुम तो ऐसी नहीं थी मालती। मन ही मन ईश्वर को पुकारो। वे तुम्हें भली चंगी कर देंगे।

—ठाकुर क्या तुम्हें भगवान में इतना विश्वास है ?

—अब मैं तुमसे क्या बताऊं। मुझे केवल यही डर सताता है कि तुम फिर मर जाओगी।

—मैं मरना नहीं चाहती ठाकुर। यकीन मानो, मैं मरना नहीं चाहती। तुम

नजरों से दूर रहते हो तो मुझे मरने की हिम्मत भी नहीं पड़ती। इसके बाद कुछ देर चुपचाप रहने के बाद वह बोली, अगर यह छुरा दे दिया होता। तुम लोगों ने मुझे मरने भी नहीं दिया। अब भला मैं क्या करूं।

रजित के सिर पर इस समय हेमंत की धूप आ पड़ी है। और कहीं किरण परिमित पट्टी की तरह। कमर के भीतर युवती नारी अधर में पड़ी है। मानो सदियों अरसा से रजित से कुछ कहना के लिए वह सो नहीं पा रही है। आंखों के नीचे काले हलके। हाथ-पैर दुबले-दुबले। चेहरे पर पसीना। और चारों ओर अद्भुत सन्नाटा। लेकिन बार बार वह छुरे के प्रसंग में चली आ रही है।

उसने कहा मालती तुमने माथे में सेंदूर लगाया था और पैरों में अलता। कितनी सुन्दर लग रही थी।

मालती ने कोई जवाब नहीं दिया।

—कितनी सुंदर आंखें हैं तुम्हारी मालती। तुम्हारे लिए मैं कुछ भी कर नहीं पा रहा हूं। तुमसे भला और क्या बताऊं।

मालती सिर झुकाये रही। मानो कुछ सोच रही हो।

रजित बोला, मैं चला जाऊंगा मालती। तुम्हारे साथ फिर मुलाकात होगी या नहीं मालूम नहीं। कब मुलाकात होगी यह भी नहीं बता सकता। मेरा अज्ञातवास खत्म हो गया। जाने से पूर्व तुमसे मिल गया।

मालती की आखें बड़ी-बड़ी लग रही हैं। उसने कहा तुमने पूछा नहीं कि क्या मैं पागल की तरह जोर जोर से हसती हू।

—पूछू भी क्या। कुछ कर जो नही पा रहा हू। पूछने से क्या फायदा।

मालती बोली, तुम्हारा अज्ञातवास समाप्त हुआ। कहते हुए मालती का दिल धड़क उठा।

—समाप्त। पुलिस को इत्तला मिल चुकी है कि मैं इस इलाके मे हू। आज या कल पुलिस के साथ एनकाउटर (मुठभेड) हो जा सकती है यही सोचकर भाग रहा हू।

'एनकाउटर शब्द मालती की समझ में नही आया। अब वह अपना अतीव क्लेश भूलती जा रही है। वह केवल अपने प्रियजन का मुखड़ा देख रही है। यह आदमी उसके पास आने पर किसी को कुछ सदेह नही होता। क्योकि वह इसी नारी को कितने ही दिन लाठी छुरे का खेल सिखाता रहा है। रजित एक महान आदर्श

में पता हुआ है। मालूनी सी एक विधवा युवती उसके लिए कुछ भी नहीं। बल्कि मालती की कठोर मुखमुद्रा उसके आने ही सहज बन जाती है। नरेनदास की धारणा है और अन्य लोगों की भी धारणा है कि मालती रजित से डरती है। अब वही युवक फिर लापता हो जायगा। वह लापता हो जायगा तो मालती के पास रह क्या जायेगा। अभी वह उससे सब कुछ बता दे सकती है। लेकिन किस तरह से बताये। ऐसी एक बात जो जानकर भी नरेनदास तोपे ढाप है। मालती ने अब रुआसी आवाज में कहा ठाकुर, मैं मरना नहीं चाहती। मुझ तुम कहीं ले चलो।

रजित ने देखा मालती की आखो से आसू टपक रहे हैं।

धीरे धीरे निजहरी ढलती जा रही है। खेता म धान की गध आ रही थी। मानो लगता है, ये जो चारो ओर खेत हैं हर कहा फसल है और उडद के खेत म नीलाभ रग के फूल, और धान की कटनी शुरु हो गई है, दूर के खेता म धान काटने का गीत सुनाई पड रहा था—सभी कुछ मालती के लिय बेमाने है। इस समय मालती क्या कर सुनने के लिए वह अधीर प्रतीक्षा म बठा है।

इतने दिनों तक रजित अपनी समिति के आदेश से कितने बड-बड कामो को अनायास निबटाता रहा है। कुमिल्ला म हडसन साहब को मारकर वह भागा हुआ है। पुलिस वाले जानते हैं कि अगरतल्ला होकर शिलचर और शिलचर स आसाम म कहीं वह रूपोश है। फरार। उसके बचपन का परिचय लबे अरसे तक कोशिश करने के बाद भी पुलिस को नही मिल सका। वह रजित है वही सुखमय दास है और वही कभी चरण मडल बन जाता है—और नदी पार कर गोपाल सामन्त का नाम अपना कर उसने नील-पूजन का बाजा बजाया था—ये सारी बातें पुलिस को मालूम होने पर भी रजित नाम का एक बालक यहा किशोरवय बिताकर भगोडा है यह उनको मालूम नहीं। इस जवार के लोग बस इतना जानते हैं कि रजित देश का काम करता फिरता है—बस इतना ही। इस समय मालती उसके सामने गुम्मी साधे बठी है और जीवनभर का जो आदर्श है वह सभी निरर्थक है। मालती का इस तरह गुम्मी साधे बठना वह बरदाश्त नही कर पा रहा है। अपने को बडा कमजोर पाने लगा।

उसके सामने कितना बडा मदान है फसल से भरे खेत हैं। थोडी-सी फसल की जमीन लेकर वह क्या करेगा। मालती को वह कही पहुचा नही पा रहा है। यह मालती की नियति है। कुछ भी वह बोल नहीं सका। सिर झुकाये चलते हुए वह

पेड-पाला के बीच अदृश्य हो गया।

मालती जिस तरह दबे पांव बत्तख की तरह निःशब्द आई थी उसी तरह धीरे धीरे भीतर चली गई। थोड़ी देर बाद ही आभा आई। उसके बाएं हाथ में लालटेन है। दाहिने हाथ में कसई की हुई थाली में खीर और गुड़। मामी का रात का भोजन। थाली रखते ही मालती टटोल कर खाने लगी। फिर वह अंधकार सहित, कोटर में धंसी हुई आंख लिए वह पड़ी रहेगी। आंखों में नींद नहीं। फिर यही लगता कि किसी रेगिस्तान में गिरे पर पत्र-पुष्प से शून्य कोई वन उन सा रहा है।

चलते चलते रंजित पोखर के भिड़ पर आ गया। वह जो अजाना वृक्ष है वह पत्तियों शाखा सहित बड़ा होता जा रहा है। चारों दिशाओं में धीरे धीरे अंधियारा उतरता आ रहा है। दक्खिन के कमरे में शशीमास्टर लड़कों को पढ़ा रहा है। सोना काफी जोर जोर से पढ़ता है। रंजित इस घर में आते ही वह अपने बड़े-बड़े शब्दों को सुना-सुना कर पढ़ता है। वह कितना बड़ा हो गया है और कितने कठिन कठिन शब्द इसी उम्र में जान गया है यह रंजित मामा को जताना चाहता है। इतनी उदासी में भी वह मन ही मन हंसा। वह चला जायगा। यह सब छोड़कर जाने में उसे हमेशा ही तकलीफ होती है। दीदी के पास वह बड़ा हुआ इसलिए सारा आकर्षण इसी दीदी से है। और पति उसका पागल है तभी तो मन में सदा एक ही चिंता—यह व्यक्ति सारी जिन्दगी इसी तरह से जियेगा और कविता पढ़ता रहेगा—दीदी का जीवन बड़े दुःख में बीता। यहां आने पर उसे लगता कि अपने ही घर वह वापस आ गया है। सारे खेत मैदान उसके परिचित। शायद इसीलिए जाने से पूर्व सब कुछ देख भाल कर जा रहा है। पोखर के भिड़ से ही उसने दक्खिन के कमरे की रोशनी देखी। शशीमास्टर आगे पीछे डोल डोल कर पढ़ाते हैं। इतिहास पढ़ाते वक्त—बालकों से जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी कहते समय उनको मिट्टी और मनुष्य के निमित्त एक गरमाई सी मिलती है। शशीमास्टर को इन तीन लड़कों से अपनी संतान के समान नेह है।

वह अंधेरे से अब निकल आया। संसार में अपना कहने को बस यही एक दीदी है। और कोई भी नहीं। पति पागल है। वह अब सीधे घर आ गया। अपने कमरे में जाकर पोशाक बदल डाला। उसके सूटकेस में जो कुछ रहना चाहिये सब सही सलामत है या नहीं यह देख लिया। महेन्द्रनाथ अपने कमरे में बैठे हैं। इस समय

वे थाड़ा-सा गम दूध लेते हैं। दीदी बेशक महेंद्रनाथ के पैरों के पास बैठी होगी।

दीदी से कहकर उसने थोड़ा सा खाना खा लिया। महेंद्रनाथ के कमरे में घुस कर प्रणाम करते वक्त उसने कहा, मैं आज ही चला जा रहा हूं।

आजकल बड़ी बहू इन बातों से विस्मित नहीं होती। वह कब कहां रहेगा या जायगा कोई जानना चाहे तो वह चुप रहती है। पहले इन बातों को लेकर बड़ी बहू रंजित से खटपट करती थी। अब नहीं करती। बेवक्त कहीं चला आ रहा है कहने पर भी उसे अचंभा नहीं होता। बल्कि वह उसके सामान सरिया देती है। ज्यादा बोलती नहीं। रंजित महसूस करता कि उसके जाने में दीदी भीतर ही भीतर कष्ट पा रही है। दीदी खामोश रहे तो उसे पता चल जाता है कि उसके जाने के बाद दीदी उसकी जरूर रोयगी। जाने से पूर्व जैसा वह प्रणाम करता है वैसा ही इस बार किया। फिर उदास चेहरा देखकर जैसा कहा करता, क्यों तुम मुस्कायी नहीं। मैं जाऊंगा और तुम मुस्काती नहीं। नहीं मुस्काओगी तो जाऊंगा कैसे?

तब बड़ी बहू जबरन हंसती। हंसकर छोटे भाई को विदा करती।

यह रही मेरी दीदी। कहकर सभी से विदा लेने के लिये पहले वह नविन के कमरे में हेल गया। शशीमास्टर से कहा चला जा रहा हूं। सोना के सिर पर कितने घने बाल हैं बालों में हाथ डालकर उसने सोना को दुलारा। बोला मैं जा रहा हूं। तुम लोग नेक बने रहना। मां का कहना मानोगे। ताऊजी का ध्यान रखोगे।

शशीमास्टर ने कहा तो फिर आप अज्ञात सफर पर जा रहे हैं?

—जाना पड़ रहा है।

—कब लौटेंगे?

—शायद अब और यहां लौट नहीं सकूंगा।

—क्यों?

—दिक्कत है।

—आप स्वदेशी आंदोलन वाले हैं। आप लोगों के बारे में सब कुछ जानने का सौभाग्य हमें नहीं मिलता। लेकिन बीच-बीच में आपकी तरह अज्ञात सफर पर निकल जाने का जी करता है। जाति की सेवा करने का मन करता है।

—जाति की सेवा तो आप कर रहे हैं। इससे बढ़कर सेवा और क्या हो सकती

है। इससे बढ़कर सेवा और कौन-सी हो सकती है।

—लेकिन जानते हैं कहकर शशीमास्टर उठ कर खड़ा हो गया। जाने कब देश स्वतन्त्र होगा।

—हो जायेगा।

—होगा जरूर। लेकिन देर हुई जा रही है। हम सभी लोग इसम कू नहा पडत इसीलिए देर हो रही है।

इस बात का रजित कोई जवाब नहीं दे सका।

—आपका क्या ख्याल है?

—किस सिलसिले म?

—यही देश की आजादी के सिलसिले म।

—सब लोग कूद पडेंगे तो घर गिरस्ती का काम कसे चलेगा?

- हा यह आपने ठीक ही कहा है। लेकिन लोग जसी सरगर्मी से जुटी है उससे आखिरकार जाने क्या होगा।

इस बात का जवाब देना ही पडेगा इसलिए रजित दूसरी बात पर आ गया।
—ये बच्चे आपसे बेहद हिले हैं। आजकल बडे ही जतन से दात साफ कर रहे हैं।

शशीमास्टर बोले दात ही सब कुछ है। देखू आपके दात।

कोई दूसरा मौका होता तो रजित क्या करता बताया नहीं जा सकता। लेकिन अब वह चला जा रहा है इसलिए बहुत सरल सहज बन गया है। इसलिए बिना कोई कुठा प्रकट किये उसने शशीमास्टर को अपने दात दिखाए।

लालटेन उठाकर शशीमास्टर ने सारे दात देखे। मानो कोई दक्ष डाक्टर उसके दात देख रहे हैं। मसूडे दबा-दबा कर उसने देखा। फिर लालटू से लोटा भर पानी लाने को कहकर उसने रजित के मूह की ओर देखा।—आपके नीचे वाले दात लेकिन अच्छे नहीं।

रजित हसते हसते बोला, क्या करने पर अच्छे होंगे?

—रोजाना रात को एक हड खाया कीजिए। कहकर वह बाहर गया। हाथ धोया। फिर लौट कर बोला हड से दात मजबूत होते हैं। लिवर बेहतर काम करने लगता है। अच्छी नीद आएगी। और हाजमे म इतनी मदद करेगी—कह कर जरा रुक गया। बहीखातानुमा पोथी म जाने क्या ढूढते हुए पन्ना उलटता रहा। ह शब्द के पष्ठ से हड किस पन्ने पर है ढूढकर हड के सारे गुण वह

बखानने लगा।

रजित ने देखा उस लंबी कापी पर कितने ही किस्म के आयुर्वेदीय फल फूल के नाम लिखे हैं। उनके उपकार के बारे में विस्तृत ब्योरा।

रजित ने कहा यह सब इनसे कहिए। इस देश की मिट्टी में जो कुछ होता है संसार में और कहीं वह मिलता नहीं।

शशीमास्टर बोले क्यों लालटू-पलटू मामा क्या कह रहे हैं। तुम्हारे मामा तो आज चले जायेंगे। प्रणाम करो।

सभी लोग एक साथ उठकर कौन पहले प्रणाम करे और प्रणाम खत्म कर फिर अपनी जगह जा बैठे इसी की प्रतियोगिता है मानो। रजित बोला, परीक्षा पास करते वक्त ऐसी ही होड़ होनी चाहिए। सबसे आगे निकलना है। सभी कुछ में जीतना है। और ऐसे ही समय रजित ने देखा उस ओर के अंधेरे बरामदे पर घर के पागल आदमी चुपचाप बैठे हैं। वह उनके पास जाकर बोला जीजा जी, मैं आज जा रहा हूं। कहकर उनके दोनों पैरों से सिर छुआकर उसने प्रणाम किया। प्रणाम करते वक्त बोला आशीर्वाद करें मैं कोई अच्छा काम कर सकूं।

वे बैठे थे। बैठे रहे। कोई बोल चाल नहीं। उनकी आंखें अंधेरे में दिखाई नहीं पड़ रही हैं। फिर भी महसूस किया जा सकता है कि जीवनभर यह आदमी एक सोने के हिरन के पीछे दौड़ रहे हैं। इस व्यक्ति की ओर देखते ही रजित की आंखें छलछला उठती हैं।

वह झटपट पश्चिम के कमरे में चला गया। धनबहू का चरण स्पर्श करते समय बोला धनदीदी, आज चला जा रहा हूं।

धनबहू ने कहा सावधानी से रहना।

इसके बाद शचीन्द्रनाथ से मिलकर गाढ़े अंधेरे में मैदान में उतर गया। शशी मास्टर साथ लालटू पलटू लालटेन लेकर पोखर के भिंड तक आये थे। आगे नहीं गये। रजित ने खुद ही कहा आप लोग लौट जायें मास्टर जी। अंधेरे में मैं रास्ता बेहतर देख लेता हूं। रोशनी रहने पर ही धुंधला-सा लगने लगता है।

अंधकार में उतर आते ही फिर वही मैदान, सुनहरे रेतवाली नदी तरबूज का खेत और ऊपर गगन चित्र विचित्र सारे सितारे और मैदान की वीरानी उसे बचपन की याद दिलाये दे रही हैं। बचपन में वह, शम्सुद्दीन और मालती—

मालती को लेकर वे नदी म तरते थे। तर कर दूसरे किनारे पहुच जाते थे। गहोना नाव के नीचे रजित कभी छिप जाता तो मालती डर जाती थी। वह पुकारती थी ठाकुर।

लग रहा है इस वक्त भी पीछे स कोई उसी तरह पुकार रहा है। ठाकुर तुम मुझे किसके पास छोडे जा रहे हो। तुम देश का काम करते फिरते हो क्या मैं भी तुम्हारा देश नही ? तुम्हारी इस जन्म भरी भूमि की मिट्टी म ही क्या मैं नहीं पनपी। मेरा सुख दुख क्या तुम्हारा सुख दुख नही। ठाकुर ठाकुर तुम बोलते क्यो नही ?

रजित ने जिस रफ्तार से जाने को सोचा था उतनी जल्दी वह चल नही पा रहा है। कोई उस लगातार पुकारता चला जा रहा है। मैं क्या करू ठाकुर। लगा कि चलते चलते वह अनमना सा किसी दरख्त के नीचे खडा हो जा रहा है। जितनी जल्द इस जवार को छाडकर जाने को उसन सोचा था जाने क्या उतनी जल्द वह जा नही पा रहा है। दरअस्ल उसके पर चल नही रहे थे। उसके सिर के ऊपर आकाश की तरह पवित्रता लिए मालती जाग रही है। वह पगभर भी आग नही बढ सका।

उसने जीवन मे जो कुछ सोचा नही था जो कुछ सपना ही था मन ही मन सब कुछ को झूठा साबित कर वह दूसरे जीवन म कूद पडेगा। देश के उद्धार स जाने क्यो यह काम कम महान नही लग रहा था।

वह उस पीपल क नीचे खडा रहा। अधेरा कितना गाढा है। और ये पेड पौधे कितने प्राचीन लगते हैं। अधरे मे खडे वह कुछ प्रत्यक्ष करने का प्रयास कर रहा है। गाव के भीतर सारी रोशनी की बुदकिया जल बुझ रही हैं। रात अब भी कोई गहरी नही। भुजग और कविराज स लाठी छुरे के खेल की सारी हिदायतें कौन कौन से नये अखाडे खोलने हैं वहा जाने पर किसके साथ उनको सबध सूत्र बना रखना है ये सारी बातें उसने ठीक ठीक बताइ या नहीं सब उस पेड के नीचे खडे खडे उसने सोच लिया। उस वक्त कहीं कोई कुत्ता भक रहा है। गीदड फेंकर रहे हैं। जलाली के कब्र पर इतन दिनो म कासफूल की एक झाडी उग आई है। कास के सफेद फूल इस अधेरे म जुहाई की एक फाक जसे आखो के सामने डोल रहे है। जीने क लिये जलाली का जीवन सग्राम ताजिदगी रहा। मृत्यु के बाद एक खड जमीन पाकर वह कितना मनोरम हस रही है। क्योकि

रजित को लग रहा था, अंधेरे म, न काम के फूल और न जुहाई मानो चप्पेभर जमीन क प्रति जलाली का प्यार था। वह मिल गई है इसलिए वह छोट बच्चे की तरह हस रही है। कासफूल जसी ही पवित्र हसी जलाली के मुख पर बनी हुई।

अंधेरे म खडे-खडे उसे भी लगा कि यह एक एक चप्पा जमीन सभी का प्राप्य है। सभी को यह देना है। भूखे और भूमिशून्य मनुष्य। भूमिशून्य का मायने पैरा के नीचे जमीन नहीं एस आदमी क बार मे वह सोच नही सकता। उसके पास घर होगा खेती किसानी के लिए जमीन होगी वह कुछ खायगा, खाने को मिलेगा उस, खाना न मिल तो मनुष्य की स्वतत्रता का कोई अथ नही रह जाता। मनुष्य की स्वतत्रता का अथ वह इसी को समझता है। जान क्या इस बार उसके दिमाग में आया कि चप्पाभर जमीन वह मालती को भी देगा।

या इस अंधेरे म गाढे अंधेरे म खडे होते ही वह एक साहसी व्यक्ति बन जाता है। उस मौत का डर नहा रह जाता। कितनी ही रातें ऐसे सारे वन-जगल, नदी मदान कहीं पहाड हो तो सिह शावक सा पहाड पर चढ जाना मानो निरतर एक ग्रह स दूसर ग्रह की ओर अभियान—य सार दुस्सह अभियान उस कभी-कभी जीवित रहने के लिये अधिक प्रेरित करत रहत हैं। कुछ भी न कर सकन मे उसे लगता है कि वह मुर्दा है। जीवन एकरस बन जाता। जिंदा रहन की कोई प्रेरणा नहीं रह जाती। उत्साह रहित व्यक्ति जसा वह अधार्मिक बन जाता। हडसन साहब की हत्या क बाद वह फिर कुछ नया काम करन जा रहा है। एक ग्रह से दूसरे ग्रह तक जान की भाति ही यह घटना है। अंधेरे म नरेनदास का घर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। अब भी रोशनी की बुदकिया दिपदिपा रही है। शायद नरेन दास गोठ मे गाय बाध रहा है। और आमागनी घाट से बरतन माज कर लौटते ही वह बढ सकेगा। अब उनका लेटन भर की देर है। मालती क बार म अब उनका भय-डर घट गया है। क्योकि मालती के शरीर म अब घुड दौड जमी ताजगी नहीं। मालती बीमार दुबली मरियल और लस्त-पस्त सी। और मालती के शरीर के भीतर इस समय धर्माधम का नगाडा बजा रहा है। मालती को नरेनदास घर म जगह नहीं द रहा है। मालती यहा रहेगी तो पागल हो जायगी।

क्रमश रात बढ रही है। मिनसारे पुलिस ठाकुरबाडी को घेर लेगी। ऐसी ही इत्तला उसे मिली है। सतोष दरोगा आमड फास के लिए नारायणगज गया है। एक मामूली आदमी को पकडने के लिये सतोष दरोगा ने पौशीदा ढग से मशोम्मत

जसा इतजाम कर डाला है। दरोगा को इतना डर है सोचकर उसे हसी आई।

कौन हैं ये लोग, उसकी समझ म नहीं आ रहा है जो उनको पकडाय दे रहे हैं। यहां उसकी किसके साथ दुश्मनी है ? कई कोस दूर थाना है। आन जाने म काफी वक्त लग जाता है। जल-जगल वाली जगह होने के कारण इधर खास कोई आना नहीं चाहता। यहा वह मज म अज्ञातवास कर रहा था। लेकिन चुपचाप भी बठे नहीं रहा जा सकता। समिति स उसने निर्देश मांगा। उनके निर्देश क अनुसार वह गाव गांव म अखाडे खोलता जा रहा था। फिर एक सूचना मिली—एक आदमी बाउल बनकर चिट्ठी दे गया—पुलिस उसका सुराग लगान म लगी हुई है। उसे भागना है।

अब उसे लगा कि नरेनदास के घर की रोशनी की बूदकियां जो जल रही थी बुझ चुकी हैं। उसने गेरु रग का कुरता पहन रखा है। उसके ऊपर जवाहर कट सदरी। सदरी के नीचे हाथ से टटोल कर देखा—नहीं ठीक ही है। वह अब साव धानी से आगे बढने लगा। उसको अब और कोई डर नही। देखा सामने के अंधेरे मे कोई जानवर घो घो कर रहा है। रिवालवर को कस कर पकडते ही उसे लगा वह तो घर का बवार का कुत्ता है। वह चला जा रहा है इसलिए विदा करने आया है।

रजित बोला घर जा। यहा क्या है ?

कुत्ता फिर भी पीछे पीछे आने लगा।

उसने कहा, तू जा बेटा। इतने दिनो मे मैं एक नेक काम करने जा रहा हू।

लेकिन कुत्ता बगल मे चलता ही आ रहा है।

—क्या कह रहा हू सुन नही पाता है क्या ?

अबकी बार कुत्ता परो पर लोट गया।

—हा, हा ठीक है। काफी हुआ। अब जा भी।

अबकी बार कुत्ता सचमुच भागकर पोखर के भिंड पर चढ गया। फिर अजुन वक्ष के नीचे खडे खडे देखने लगा रजित किधर जा रहा है।

रजित सावधानी से मालती के दरवाजे के सामने आकर खडा हो गया। टट्टर का दरवाजा। टाच जलाकर उसने देख लिया कि टट्टर के दरवाजे मे कोई सध है या नही। उस कोई सध ढूढे नही मिली। इसलिए बाहर खडे उसने धीरे धीरे पुकारा, मालती। लगा कि भीतर वाला प्राणी तब भी जाग रहा है। थोडी सी

पुकार पर ही आहट मिल गई। वह उठ कर बैठ गई है। गले का स्वर पहचान कर मालती का दिल धड़क रहा था। उसने कांपते हाथों से ही टट्टर खोल दिया।

—मैं।

मालती बोली नहीं।

अब हम चलेंगे।

मालती कुछ भी समझ नहीं पा रही है—हम चलेंगे कहकर रंजित क्या बताना चाह रहा है। वह सिर झुकाये वैसी ही खड़ी रही।

—मेरे साथ तुम चलोगी।

—कहां? सहसा मालती ने रंजित जैसा ही प्रश्न कर डाला।

जिधर दोनों आखें ले जायें।

—लेकिन मुझे तो कुछ कहने को था ठाकुर।

—अब कोई और बात नहीं मालती। देर करने पर हम पकड़ लिये जायेंगे।

—लेकिन मुझे डर लग रहा है। तुमको सब कुछ बता न सकने से

—रास्ते में तुम्हारा सब कुछ मैं सुन लूंगा। तुम झटपट आओ।

मालती अब कोठरी में घुसकर दो सफेद धोती, सेमिज और पत्थर की थाली ले आई।

—इतना सारा लेकर रास्ता नहीं चल सकोगी।

उसने पत्थर वाली थाली रख दी।

रंजित बोला, हमें रातोंरात गजारी के जंगल में घुस पड़ना है।

नदी के कछार पर उतर आते ही उन लोगों ने देखा टोडरबाग के उस ओर से कौन लोग टार्च जलाये चले आ रहे हैं। घोड़े की टाप की आवाज। रंजित समझ गया कि रातोंरात संतोष दरोगा ने गांव घेर लिया है। उसने मालती से कहा, पानी में कूद पड़ो।

पुलिस के लोगों ने अब टार्च बुझा दिये। वे चले जा रहे हैं।

रंजित बोला, पानी में डूबे रहो।

वे पानी में जैसे ही डुबकी लगायें वैसे ही लगा किसी को पता चल गया है। उसने कहा, मालती हम तैरना है। जितनी फुर्ती से मुमकिन हो। यह कह परकर नदी के दूसरे किनारे उठ उन्होंने देखा टार्च की रोशनी इधर आ पड़ी है। शायद रंजित गिरफ्त में आ जाए। टार्च रोशनी में शायद उसी को ढूंढा जा रहा था।

ऐसा भयानक मामले म भी रजित को मानो कोई फिक्र न हो। मालती का केवर ही थोडी सी असुविधा है। उसन मालती स कहा, समझ रहा हो ये कुछ गाड गये हैं। व कुछ पहन ही आ धमके हैं।

मालती कुछ भी समझ नहीं पा रही है। वह बठी-उठी आर रही है।

—क्या हुआ है तुम्हें ?

मालती बोली ठाकुर तुम भाग जाओ। देर लगान पर व तुम्ह पकड लेंगे।

रजित जिस प्रकार स्वाभाविक ढग स मुस्कराता है वसा ही मुस्कराया। उसने कहा यह तुम पहन लो। इसने मुझ विपत्तियो से कितनी ही बार बचाया है।

मालती ने देखा काल रग का एक कुरता है। उन्होंने जगल म घुमकर पोशाक बदल डाली। उसने अपने सूटकेस स एक एक कर सब कुछ निकाला। वाला यहा स्थान पर गाली निकलती है। यही ट्रिगर है। अच्छी हाल्डिंग होनी चाहिय। निशाना भी उम्दा होना चाहिये। लेकिन यह क्या मालती तुम उलटी क्या कर रही हो। कै करती हुई मालती बोल नहीं पा रही है।

रजित बोला तुमको क्या हुआ है मालती सब कुछ तुम बता दो। मरी समझ म कुछ भी आ नही रहा है।

जो कुछ इतने दिनो से मालती ने कहना चाहा था लेकिन मारे घृणा के कह नही सकी थी अब इस दुस्समय रो म आकर उसने रजित से कह दिया।

—ठाकुर मैं मा बन रही हू। तीन वहशियो ने मिलकर मुझे जननी बना दिया। है। आगे कुछ और वह कह नही सकी। मालती बार-बार बस ओकती ही रही।

अधेरे मे रजित कुछ भी देख नही पा रहा है। परो के पास बठी मालती ओक रही है। उस पार अनगिनत टाच की रोशनिया। जगल के भीतर रोशनी पठ नही रही। रोशनियो के कण केवल बारिश की तरह पत्तियो की सध से आ रहे हैं। रजित अब घुटने माडकर बठ गया। मालती के सिर पर उसने हाथ रखा और बोला, हमे बहुत सारा रास्ता पदल चलना है मालती। हम लोग कहा जायेंगे हमे नही मालूम। तुम उठो।

इस प्रकार नदी किनारे जो जगल है जिस जगल को सोना ने एक बार ताऊजी क साथ हाथी पर सवार होकर पार किया था उसी जगल म मालती और रजित रातभर सुबह होने के इतजार म पेड-तले अगल बगल लेटे रहे। रजित ने फिर एक भी बात नही की। मालती ने मारे डर के घास मे मुह छिपा रखा है। दोनो

हा रात भर जागते रहे। इसके बाद कान-सी बात कर फिर स स्वाभाविक बना जा सकता है यह रजित साच ही नही पा रहा है। कहा जाय, किसके पास ले जाये और एसी एक नारी को लेकर अब वह करे भी क्या ? पेड की शाखें और टहनिया हवा में हिल रही हैं। अतिम रात की चादनी पेडो की पत्तियो पर। मानो वही पत्ते-पत्ते पर झर रहे निशा के ओस। या कोई फिर से ऊची आवाज म पढ रहा हो—एट लास्ट द सलफिश जायट केम। तडके सबेरे उजास दिखने से पहले मालती ने हा उसे आवाज दी। रात की अतिम घडियो म रजित की आखें लग गई थी।

रजित हडबडा कर उठ बैठा। उसने खुद एक लुगी पहन ली। अपने सूटकेस से कुछ गाद और रगीन सन लेकर वह अब बिलकुल दूसरा ही एक आदमी बन गया। बुरके मे बीवी और रजित एक मिया साहब। बगल म टूटी छतरी। मिया-बीवी कुम्मती म जा रहे हैं एमा भान किये रजित लगडा लगडा कर चलने लगा।

चलते चलत मालती ने कहा ठाकुर तुम मुझे जोटन के पास छोड आओ।

रजित कुछ भी न बोला। ऐसी हालत मे उसे और कहा ले जाया जा सकता था। वह दरगाह की ओर चलने लगा। दिनभर चलने पर वह मालती को जोटन की दरगाह तक पहुचा देगा। उसने सोचा फिलहाल मालती को जोटन के पास पहुचाकर वह कही चला जायेगा।

और चलत चलते अचानक ही जाने किसके प्रति क्रुद्ध होकर जगल के भीतर ही चिल्ला उठा, वदेमातरम। क्रोध का प्रतिपक्ष ज्वर है या सतोष दरोगा, उसका चेहरा दखकर यह भापा न जा सका।

ऐसे भयानक मामले में भी रजित को मानो कोई चिन्ता न हो। मालती को लेकर ही थोड़ी सी असुविधा है। उसने मालती से कहा, समझ रही हो ये कुछ ताड़ गये हैं। ये कुछ पहले ही आ धमके हैं।

मालती कुछ भी समझ नहीं पा रही है। वह बैठी-बैठी कांप रहा है।

—क्या हुआ है तुम्हें ?

मालती बोली ठाकुर तुम भाग जाओ। देर सवेरे पर ये तुम्हें पकड़ लेंगे।

रजित जिस प्रकार स्वाभाविक ढंग से मुस्कराता है, वैसा ही मुस्कराया। उसने कहा, यह तुम पहन लो। इसने मुझे विपत्तियों में कितनी ही बार बचाया है।

मालती ने देखा काले रंग का एक कुरता है। उन्होंने जंगल में घुसकर पोशाक बदल डाली। उसने अपने सूटकेस से एक एक कर सब कुछ निकाला। घोड़ा यहां दबाने पर गोली निकलती है। यही ट्रिगर है। अच्छी होल्डिंग होनी चाहिये। निशाना भी उम्दा होना चाहिये। लेकिन यह क्या मालती तुम उलटी क्या कर रही हो। कै करती हुई मालती बोल नहीं पा रही है।

रजित बोला तुमको क्या हुआ है मालती सब कुछ तुम बता दो। मेरी समझ में कुछ भी आ नहीं रहा है।

जो कुछ इतने दिनों से मालती ने कहना चाहा था लेकिन मारे घृणा के कह नहीं सकी थी अब इस दुस्समय में आकर उसने रजित से कह दिया।

—ठाकुर मैं मां बन रही हूं। तीन वहशियों ने मिलकर मुझे जननी बना दिया। है। *आगे कुछ और वह कह नहीं सकी। मालती बार-बार बस औकती ही रही।*

अंधेरे में रजित कुछ भी देख नहीं पा रहा है। पैरों के पास बैठी मालती ओक रही है। उस पार अनगिनत टार्च की रोशनियां। जंगल के भीतर रोशनी पैठ नहीं रही। रोशनियां के कण केवल बारिश की तरह पत्तियों की सांध से आ रहे हैं। रजित अब घुटने मोड़कर बैठ गया। मालती के सिर पर उसने हाथ रखा और बोला हमें बहुत सारा रास्ता पैदल चलना है मालती। हम लोग कहां जायेंगे हमें नहीं मालूम। तुम उठो।

इस प्रकार नदी किनारे जो जंगल है जिस जंगल को सोना ने एक बार ताऊजी के साथ हाथी पर सवार होकर पार किया था उसी जंगल में मालती और रजित रातभर सुबह होने के इंतजार में पेड़-तले अगल-बगल लेटे रहे। रजित ने फिर एक भी बात नहीं की। मालती ने मारे डर के घास में मुंह छिपा रखा है। दोनों

हा रात भर जागते रहे। इसके बाद कान-मी बात कर फिर से स्वाभाविक बना जा सकता है यह रजित साच ही नही पा रहा है। कहा जाय, किसके पास ले जाये और ऐसी एक नारी को लेकर अब वह कर भी क्या ? पेड की शाखें और टहनिया हवा म हिल रही हैं। अतिम रात की चादनी पेडा की पत्तियो पर। मानो वही पत्ते पत्ते पर झर रहे निशा क ओम। या कोई फिर मे ऊची आवाज मे पढ रहा हो— एट लास्ट द सेलफिश जायट कम। तडके सवेरे उनास दिखने से पहले मालती ने ही उसे आवाज दी। रात की अतिम घडिया म रजित की आखें लग गई थी।

रजित हडबडा कर उठ बठा। उसन खुद एक लुगी पहन ली। अपने सूटकेस से कुछ गाद और रगीन सन लेकर वह अब बिलकुल दूसरा ही एक आदमी बन गया। बुरके में बीवी और रजित एक मिया साहब। बगल म टूटी छतरी। मिया-बीवी कुटमती म जा रहे हैं एसा भान किये रजित लगडा-लगडा कर चलने लगा।

चलत चलत मालती ने कहा ठाकुर तुम मुझे जोटन के पास छोड आओ।

रजित कुछ भी न बाला। ऐसी हालत म उसे और कहा ले जाया जा सकता था। वह दरगाह की ओर चलन लगा। दिनभर चलने पर वह मालती का जाटन की दरगाह तक पहुचा देगा। उसन सोचा फिलहाल मालती का जाटन के पास पहुचाकर वह कहीं चला जायेगा।

और चलत चलते अचानक ही जाने किसके प्रति क्रुद्ध होकर जगल के भीतर ही चिल्ला उठा वदेमातरम्। क्रोध का प्रतिपक्ष जब्बर है या सतोष दरोगा, उसका चेहरा देखकर यह भापा न जा सका।